हृदन्तरज्ञान-तमो-वितान-निवारण पण्डित-मण्डलीड्यम्। 卐 त्रिकालदर्शी प्रसरन्मयूखं 'मार्त्तण्ड पञ्चांग' मिदं चकास्तु।

श्री शंकरः शं करोतु।

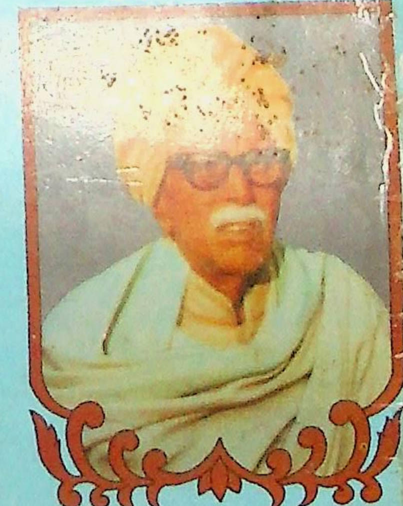
भारतीय एवं पाश्चात्त्य ज्योतिष के विषयों से अलंकृत

पंचांग-प्रवर्तकः





32



लग्न विशेषांक

अखिल भारतोपयोगी

विक्रम संवत् २०६४, शक संवत् १९२९
सन् २००७-२००८, जय हिन्द संवत् ६०-६१

भीमाय व्योमरूपाय शब्दमात्राय ते नमः।
महादेवाय सोमाय अमृताय नमोऽस्तु ते॥

दैवज्ञरत्न राजज्योतिषी
स्व॰ पं॰ श्री मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषाचार्य

श्री मार्त्तण्ड पञ्चांगम्

राजा चन्द्र

मंत्री शनि

पञ्चांगप्रवर्तक
अनेक ग्रंथों के यशस्वी लेखक स्व॰ पं॰ श्री मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषाचार्य

सम्पादक मण्डल
श्री प्रियव्रत शर्मा, M.A., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य (बनारस), साहित्याचार्य, स्वर्ण-रजत पदक प्राप्त
दृक्सिद्धान्तभास्कर डॉ॰ शक्तिधर शर्मा M.Sc., Ph.D. (Nuclear Physics), (U.S.A.), F.R.A.S. (LONDON), M.A., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य (बनारस), तीन स्वर्ण पदक प्राप्त
ज्योतिर्भूषण श्री इन्दुशेखर शर्मा शास्त्री, M.A., ज्योतिषाचार्य,

[illegible] ४० वीं प्रकाशन वर्ष
स्थापित[illegible]
संवत् १[illegible]४

प्रकाशक : रुचिका पब्लिकेशन्स
टाइटल पर होलोग्राम लगा हुआ देखकर ही पंचांग खरीदें।

मूल्य
६०.००

इस पञ्चाङ्ग में प्रयुक्त ज्ञातव्य सांकेतिक शब्द

अ.- अस्त, अश्विनी, अनुराधा (नक्षत्र), अतिगण्ड (योग), अग्नि (बाण)।
अं.- अंग्रेजी (तारीख, मास), अंश।
आव.- आवश्यकता में।
उ.- उपरान्त, उदित, उत्तर।
उ. गो.- उत्तर गोल।
क.- करण, कर्क, कला।
कृ.- कृष्णपक्ष, कृत्तिका (नक्षत्र)
क्रां. सा.-क्रान्तिसाम्य (महापात)
गोधू.- गोधूलि (लग्न)
घ.- घड़ी।
घं. घण्टा।
चौ.- चौर (बाण)
ति.- तिथि।
द.- दक्षिण।
द. गो.- दक्षिण गोल।
दा.- दान पूजन।
दि.- दिन।
दि. मा.-दिनमान।
दि. ल.- दिन का लग्न।
न.- नक्षत्र।
निं.- निम्बार्कों के लिए।
ने.- नेप्च्यून।
नृ.- नृप (बाण)।
प.- पल, परिघ (योग), पश्चिम।
प्र.- प्रविष्टा (पंजाबी तारीख)।
प्रा.- प्रारम्भ।
भ.- भद्रा, भरणी (नक्षत्र)।
भा.- भाद्रपद।
मा.- मार्गी।
मि.- मिनट, मिथुन।
मृ.- मृगशिरा, मृत्यु (बाण)।
या.- यावत् (=तक)।
रा.- रात्रि, राशि।
रो.- रोग (बाण), रोहिणी।
ल.- लग्न।
व.- वक्री, वक्रगति से, वणिक्, वज्र, वरीयान् (योग)
वा.- वार
वि.- विकला, विष्टि (करण), विष्कम्भ, विशाखा।
वि. मु.- विवाह मुहूर्त।
वै.- वैष्णवों के लिए, वैधृति (योग), वैशाख।
व्र. स.- व्रत सबके लिए।
शु.- शुक्लपक्ष, शुक्रवार, शुक्र (ग्रह), शुभ, शुक्ल (योग)।
श.- भारत सरकार द्वारा संचलित शक संवत्, तारीख-मास।
स.- समाप्त।
सं.- संक्रान्ति, संवत्।
सां. का.-साम्पातिक काल।
सा.- सायन।
स्मा.- स्मार्तों के लिए।
ल.- लग्न

इस पंचाग के तिथि, नक्षत्र, योग, ग्रह भोगांश और ग्रहों के क्रान्ति-शर की गणित डा. शक्तिधर शर्मा द्वारा विकसित Computer Program से की जाती है।

इस पञ्चाङ्ग के लिए आवश्यक निर्देशन

(1) इस पञ्चाङ्ग का निर्माण ग्रीन्विच से पूर्व रेखांश ७६° ।५२' एवं उत्तर अक्षांश ३०° ।४४' के आधार पर किया गया है, अत: यहां जहां विशेष निर्देश न किया गया हो वहां 'सूर्योदय' से हमारा अभिप्राय इसी स्थल के सूर्योदय से रहता है।

(2) यहां सर्वत्र निरयणपद्धति को अपनाया गया है। जहां सायनगणना की गई है, वहां निर्देश कर दिया गया है। चित्रापक्षीय अयनांश प्रामाणिक माने हैं। इस पञ्चाङ्ग में दिए गए अयनांश धूनन-संस्कार-संस्कृत (स्पष्ट) हैं।

(3) तिथि, नक्षत्र एवं करणों के सम्मुख दिए गए घटी.पल उनका सूर्योदय से समाप्तिकाल बतलाते हैं।

(4) इस पंचाग में केवल सूर्योदयव्यापी ही करण लिखे गए हैं, दूसरे नहीं।

(5) चन्द्रसञ्चार वाले कालम में राशियों के साथ दिए गए घड़ी-पल चन्द्रमा के राशिप्रवेश का काल बतलाते हैं।

(6) चन्द्रसंचार के आगे वाले कालमों में सूर्य के उदयास्त, जोकि भा.स्टै.टा में हैं, उपरोक्त स्थल के ही हैं।इसका सम्बन्ध सूर्यकेन्द्र से है। ये सूर्योदयास्तकाल किरण-वक्री-भवन संस्कार रहित हैं। प्रत्यक्ष देखने के लिए दो मिनट सूर्योदय में घटाएं एवं सूर्यास्त में जोड़ें।

(7) घड़ी-पलों वाले २४ पक्षों के लस्टर में पंचक-भद्रा की प्रारम्भ-समाप्ति, ग्रहों के उदयास्त, वक्र-मार्ग तथा राशि-नक्षत्र-प्रवेश आदि के सभी काल भी घड़ीपलों में ही हैं। यह घड़ीपल उपरोक्त स्थल के सूर्योदय से बीता काल बतलाते हैं।

(8) पंक्तियों (अष्टमी, पूर्णिमा, अमावस्या) के स्पष्टग्रहों के नीचे दैनिक-गति, उसके नीचे मार्गी या वक्री, उसके नीचे उदित या अस्त, फिर चरण सहित नक्षत्र का (जिस में ग्रह है उसका) निर्देश किया गया है।

(9) पंक्तियों की सभी कुण्डलियां सूर्योदय-कालिक हैं।

(10) पञ्चाङ्ग की गणित, आचार्यों एवं ऋषियों द्वारा अनुमोदित सूक्ष्म दृक्तुल्य पद्धति द्वारा की गई है।

(11) यहां दिए गए ग्रह एवं शर भूमध्य दृश्य हैं।

(12) जिस घटीपलात्मक तिथि, योग नक्षत्र के आगे (६०/०) लिखा है, उस तिथि योग नक्षत्र की वृद्धि समझे। घण्टामिनटात्मक तिथि, नक्षत्र योग के आगे (............) ऐसा चिह्न उस तिथि, नक्षत्र योग की वृद्धि बतलाता है।

(13) यहां दिया गया भा. स्टै. टा ८२° /३०' पूर्व-रेखांश के स्थल का स्थानीयमध्यमकाल है।

(14) दैनिक लग्न सारणियां चण्डीगढ़ के लिए हैं, ये सारणियां चित्रा-पक्षीय निरयणलग्नों का समाप्तिकाल बतलाती है।

(15) पञ्चाङ्ग में क्षीणतिथि, नक्षत्र, योग के समाप्तिक्षण ही दिए गए हैं, पूर्ण भोग नहीं।

हृदन्तरस्थान-तमो-वितान-निवारणं पण्डित-मण्डलीऽयम्। 卐 त्रिकालदर्शि प्रसरन्मयूखं 'मार्तण्ड पञ्चांग' मिदं चकास्तु॥

श्री शंकरः शं करोतु।

भारतीय एवं पाश्चात्त्य ज्योतिष के विषयों से अलंकृत

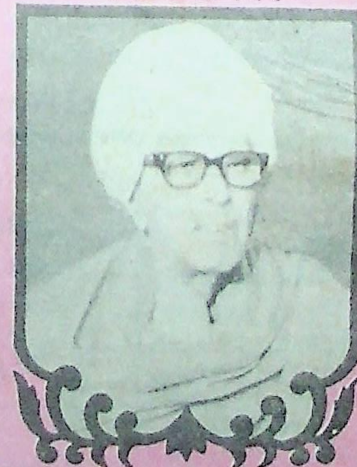
पंचांग-प्रवर्तकः



भीमाय व्योमरूपाय शब्दमात्राय ते नमः।
महादेवाय सोमाय अमृताय नमोऽस्तु ते॥



लग्न विशेषांक



दैवज्ञरत्न राजज्योतिषी
स्व. पं. श्री मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषाचार्य

विक्रम संवत् २०६४, शक संवत् १९२९
सन् २००७-२००८, जय हिन्द संवत् ६०-६१

श्री मार्त्तण्ड पञ्चांगम्

राजा चन्द्र

मंत्री शनि

पञ्चागप्रवर्तक
अनेक ग्रंथों के यशस्वी लेखक स्व. पं. श्री मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषाचार्य

सम्पादक मण्डल

श्री प्रियव्रत शर्मा, M.A., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य (बनारस), साहित्याचार्य, स्वर्ण-रजत पदक प्राप्त

दृक्सिद्धान्तभास्कर डॉ. शक्तिधर शर्मा M.Sc., Ph.D. (Nuclear Physics), (U.S.A.), F.R.A.S. (LONDON), M.A., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य (बनारस), तीन स्वर्ण पदक प्राप्त

ज्योतिर्भूषण श्री इन्दुशेखर शर्मा शास्त्री, M.A., ज्योतिषाचार्य,

गौरवशाली 80 वाँ प्रकाशन वर्ष
स्थापित संवत् १९८४

प्रकाशक : ... केशन्स
459, खारी ... 09868157271

मूल्य
६०.००

विशेष नोट : टाइटल पर होलोग्राम देखकर ही पंचांग खरीदें।

संक्षिप्त विषयसूची (सं. २०६४ वि.)

इस वर्ष की विशेष सामग्री

लग्न विशेषांक※

※ इस विशेषांक की विस्तृत विषयसूची के लिए पृष्ठ 259 देखें।

अनन्त श्रीविभूषित श्रीकांचीकामकोटि- पीठाधिपति, जगद्गुरु श्रीशंकराचार्य जी का शुभाशीर्वाद

(मुद्रा)

श्रीमत्परमहंस – परिव्राजकाचार्यवर्य – श्रीमच्छंकर– भगवत्पाद – प्रतिष्ठित – श्रीकांचीकामकोटिपीठाधिप – जगद्गुरु – श्रीमच्चन्द्रशेखरेन्द्र – सरस्वती – श्रीपादैः क्रियते नारायणस्मृतिः।

श्रीसदाशिव आप्टे- महोदयस्य शिष्यैः श्रीमुकुन्दवल्लभशर्मभिः प्रवर्तितम् अधुना श्रीप्रियव्रतशर्म– श्रीशक्तिधरशर्म – श्रीमदिन्दुशेखर– शास्त्रिभिः तन्त्रद्वारा शुद्ध–स्फुट– गणितरीत्या परिशोध्य स्वीकृतया दृग्गणितपद्धत्या सम्पाद्यते। एतत्पञ्चांगं धर्मशास्त्रसम्मतैकमात्र – दृग्गणितपद्धत्यनुसारि–व्रत-पर्वादि – धार्मिक – कृत्यानुष्ठाने धार्मिकैः प्रयोज्यम्–इति सम्मन्यामहे। एतस्य सम्पादकः डॉ.शक्तिधरशर्मा ज्योतिष–गणितादि–विषयेषु महत्प्रागल्भ्यं भजते, इति अस्माभिः सः सप्रसादं " दृक्सिद्धान्तभास्करः " इति विरुदेन पूर्वमेव समाजितः। अधुना श्रीमार्त्तण्ड–पंचांगमेतत् स्वर्णजयन्ती–महोत्सवमनुभवत्, अशेषास्तिक–लोकोपकारकं सत् श्रीचन्द्रमौलीश – कृपया प्रचुरं प्रचारं प्राप्नुयादित्याशास्महे।

काञ्चीक्षेत्रम् नारायणस्मृतिः

'अनल' चैत्रामावस्या (सन् १९७६ ई.)

'श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग' का आगामी विशेषांक– 'आयुसाधन–विशेषांक'

'श्रीमार्त्तण्ड' पञ्चांग की विशेषांक परम्परा में अगले वर्ष (सं. 2065 वि. में) हम पाठकों को आयुसाधन के विविधप्रकारों से अवगत कराएंगे। जन्मकालीन ग्रहस्थिति आदि के आधार पर जातक की जीवनावधि कितनी होगी?– इस विषय पर जैमिनि, यवन, सत्य, वराह आदि आचार्यों के मत–मतान्तरों का इस विशेषांक में सरल, विस्तृत विवेचन होगा। आयुसाधन की सुदीर्घ गणितप्रक्रियाओं से दैवज्ञ को पूरी मुक्ति देने वाले मौलिक विविध कोष्ठक इसमें दिए जाएंगे।

प्रमुख–प्रमुख व्रतपर्व (1 जनवरी, सन् 2007 ई. से 6 अप्रैल, सन् 2008 ई. तक)

व्रतपर्व (सन् 2007 ई.)	तारीख	वार
इंग्लिश नववर्ष (2007 ई.) प्रारम्भ	1 जन.	च.
माघ स्नान प्रारम्भ	3 जन.	बु
संकष्ट चतुर्थी	6 जन.	श.
लोहड़ी (पं.)	13 जन.	श.
मकर–संक्रान्ति	14 जन.	र.
मौनी अमावस	19 जन.	शु
अर्धकुम्भी प्रयागराज	19 जन.	शु.
गौरी तृतीया (गौंतरी)	21 जन.	र.
तिल–वरद–कुन्द चतुर्थी	22 जन.	चं.
श्रीपंचमी, वसन्त पंचमी	23 जन.	मं.
रथसप्तमी,	25 जन.	गु
आरोग्य सप्तमी (पूर्वारुणोदय वाली)	25 जन.	गु.
भीष्माष्टमी	26 जन.	शु.
भीष्म द्वादशी	29 जन.	च.
माघस्नान समाप्त, माघी पूर्णिमा	2 फर.	शु.
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	16 फर.	शु.
होलाष्टक प्रारम्भ	24 फर.	श.
गोविन्द द्वादशी	28 फर.	बु
होलिका दहन, होलाष्टक समाप्त	3 मार्च	श.
चन्द्रग्रहण	3 मार्च	श.
वसन्तोत्सव	4 मार्च	र.
महावारुणी पर्व	17 मार्च	श.
खण्डग्रास सूर्यग्रहण	**19 मार्च**	**चं.**
चान्द्रसंवत् 2063 वि. पूर्ण	19 मार्च	चं.
वि. संवत् 2064 प्रारम्भ,	19 मार्च	चं.
वासन्त नवरात्र प्रारम्भ	19 मार्च	चं.
गौरी तृतीया (गणगौर)	21 मार्च	बु.
महाविषुवदिन	21 मार्च	बु.
श्री (लक्ष्मी) पंचमी	23 मार्च	शु.
नाग पंचमी,	23 मार्च	शु
स्कन्द षष्ठी (पंचमी विद्धा)	23 मार्च	शु.
श्रीदुर्गाष्टमी, अशोकाष्टमी	26 मार्च	चं.
श्रीराम नवमी	27 मार्च	मं.
वासन्त नवरात्र समाप्त	27 मार्च	मं.
अनंग त्रयोदशी	30 मार्च	शु
वैशाख स्नान प्रारम्भ	2 अप्रै.	चं.
वैशाखी (पंजाब)	14 अप्रै.	श.
श्रीपरशुराम जयन्ती	19 अप्रै.	गु.
अक्षय तृतीया	19 अप्रै.	गु
श्रीगंगा जन्म	23 अप्रै.	चं.

व्रतपर्व (सन् 2007 ई.)	तारीख	वार
श्रीजानकी जयन्ती	25 अप्रै.	बु.
श्रीकूर्मजयन्ती	1 मई	मं.
श्रीबुद्ध पूर्णिमा, वैशाखी पूर्णिमा	2 मई	बु.
वैशाख स्नान समाप्त	2 मई	बु.
भद्रकाली एकादशी (पं.)	13 मई	र.
वट सावित्री व्रत (अमापक्ष)	16 मई	बु.
भावुका अमावस	16 मई	बु.
श्रीगंगा दशहरा	26 मई	श.
रम्भा तृतीया	17 जून	र.
अरण्य षष्ठी	20 जून	बु.
निर्जला एकादशी व्रत	26 जून	मं.
वट सावित्री व्रत (पूर्णिमा पक्ष)	30 जून	श.
रथयात्रा (पुरी)	16 जुला.	चं.
कुमार षष्ठी	20 जुला.	शु
विवस्वत् सप्तमी	21 जुला.	श.
कोकिला व्रत	29 जुला.	र.
गुरु पूर्णिमा (व्यास पूजा)	29 जुला.	र
चातुर्मास्य व्रत–नियमादि प्रारम्भ	30 जुला.	चं.
हरियाली अमावस	12 अग.	र.
मधुश्रवा तृतीया, संधारा तीज	15 अग.	बु.
नागपंचमी	18 अग.	श.
श्रीदुर्गाष्टमी, दूर्वाष्टमी	21 अग.	मं.
ऋक् उपाकर्म	27 अग.	चं.
शुक्ल–कृष्ण–यजु उपाकर्म	28 अग.	मं.
रक्षाबन्धन (राखी)	28 अग.	मं.
चन्द्रग्रहण	28 अग.	मं.
बहुला चतुर्थी, संकष्ट चतुर्थी	31 अग.	शु
चन्द्रषष्ठी व्रत	2 सितं.	र.
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (स्मार्त=गृहस्थियों के लिए)	3 सितं.	चं.
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (वैष्णव=सन्यासियों के लिए)	4 सितं.	मं.
श्रीगुग्गा नवमी	5 सितं.	बु
पिठोरी अमावस	10 सितं.	चं.
कुशोत्पाटिनी अमावस	11 सितं.	मं.
सामउपाकर्म	13 सितं.	गु.
हरितालिका तृतीया	14 सितं.	शु
गौरी तृतीया	14 सितं.	शु.
कलंक चतुर्थी / सिद्धिविनायक व्रत	15 सितं.	श.
हरितालिका चतुर्थी	15 सितं.	श.

व्रतपर्व (सन् 2007 ई.)	तारीख	वार
ऋषि पंचमी	16 सितं.	र.
सूर्य षष्ठी व्रत	17 सितं.	चं.
श्रीमहालक्ष्मी व्रत प्रारम्भ	19 सितं.	बु.
श्रीराधाष्टमी	19 सितं.	बु
श्रीचन्द नवमी (उदासीन सम्प्रदाय)	21 सितं.	शु.
श्रवण द्वादशी (विष्णुशृंखल योग)	23 सितं.	र.
श्रीवामन जयन्ती	23 सितं.	र.
अनन्त चतुर्दशी	25 सितं.	मं.
प्रोष्ठपदी श्राद्ध, पूर्णिमा श्राद्ध	26 सितं.	बु.
महालय श्राद्ध, श्राद्ध प्रारम्भ	27 सितं.	गु.
श्रीमहालक्ष्मी व्रत समाप्त	3 अक्तू.	बु.
गजच्छाया पर्व	10 अक्तू.	बु.
महालय श्राद्ध समाप्त	11 अक्तू.	गु.
शारद नवरात्र प्रारम्भ	12 अक्तू.	शु.
उपांगललिता व्रत	16 अक्तू.	मं.
सरस्वती आवाहन	17 अक्तू.	बु.
सरस्वती पूजन	18 अक्तू.	गु.
सरस्वती बलिदान	19 अक्तू.	शु.
श्रीदुर्गाष्टमी, महाष्टमी	19 अक्तू.	शु
महानवमी (पूजा / बलिदान के लिए)	20 अक्तू.	श.
सरस्वती विसर्जन	20 अक्तू.	श.
नवरात्र समाप्त	20 अक्तू.	श.
विजयादशमी (दशहरा)	21 अक्तू.	र.
भरत मिलाप	22 अक्तू.	चं.
कोजागर व्रत	25 अक्तू.	गु.
शरत्पूर्णिमा,	25 अक्तू.	गु.
महर्षि वाल्मीकि जयन्ती	26 अक्तू.	शु.
कार्त्तिक स्नान प्रारम्भ	26 अक्तू.	शु.
करक चतुर्थी (करवा चौथ)	29 अक्तू.	चं.
अहोई अष्टमी (पं.)	1 नवं.	गु.
गोवत्स द्वादशी	6 नवं.	मं.
धन त्रयोदशी	7 नवं.	बु.
नरक चतुर्दशी,	8 नवं.	गु.
श्रीहनुमान् जयन्ती (पूर्वारुणोदय वाली)	8 नवं.	गु.
दीपावली	9 नवं.	शु.
अन्नकूट, गोवर्धन पूजा, बलिपूजा	10 नवं.	श.
यमद्वितीया,	11 नवं.	र.
भाई दूज, विश्वकर्मा पूजा	12 नवं.	चं.
सूर्यषष्ठी	15 नवं.	गु.
गोपाष्टमी	18 नवं.	र.

व्रतपर्व (सन् 2007 ई.)	तारीख	वार
अक्षय नवमी, कूष्माण्ड नवमी	19 नवं.	चं.
भीष्म पंचक प्रारम्भ	20 नवं.	मं.
तुलसी विवाह	21 नवं.	बु.
वैकुण्ठ चतुर्दशी	23 नवं.	शु.
कार्त्तिक पूर्णिमा	24 नवं.	श.
श्री गुरुनानक जयन्ती	24 नवं.	श.
कार्तिकस्नान समाप्त	24 नवं.	श.
भीष्म पंचक समाप्त	24 नवं.	श.
चातुर्मास्य व्रत–नियमादि समाप्त	24 नवं.	श.
श्रीकालाष्टमी (भैरवाष्टमी)	1 दिसं.	श.
स्कन्द–गुह षष्ठी, चम्पा षष्ठी	15 दिसं.	श.
मित्र सप्तमी	16 दिसं.	र.
श्रीगीता जयन्ती	20 दिसं.	गु
श्रीदत्त जयन्ती	23 दिसं.	र.
(सन् 2008 ई.)		
इंग्लिश नववर्ष (2008 ई.) प्रारम्भ	1 जन.	मं.
लोहड़ी (पं.)	13 जन.	र.
मकर–संक्रान्ति	14 जन.	चं.
माघस्नान प्रारम्भ	22 जन.	मं.
संकष्ट चतुर्थी	25 जन.	शु.
मौनी अमावस	7 फर.	गु.
महोदय योग (7वें–48वें तक)	7 फर.	गु.
गौरी तृतीया (गौंतरी)	9 फर.	श.
तिल–वरद–कुन्द चतुर्थी	10 फर.	र.
श्रीपंचमी, वसन्तपंचमी	11 फर.	चं.
रथसप्तमी (पूर्वारुणोदय वाली)	13 फर.	बु.
आरोग्य सप्तमी	13 फर.	बु.
भीष्माष्टमी	14 फर.	गु.
भीष्म द्वादशी	17 फर.	र.
माघस्नान समाप्त, माघी पूर्णिमा	21 फर.	गु
चन्द्रग्रहण	21 फर.	गु.
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	6 मार्च	गु.
होलाष्टक प्रारम्भ	14 मार्च	शु
गोविन्द द्वादशी	17 मार्च	चं.
महाविषुव दिन	20 मार्च	गु
होलिका दहन, होलाष्टक समाप्त	21 मार्च	शु
वसन्तोत्सव	22 मार्च	श.
वारुणी पर्व	3 अप्रै.	गु.
चान्द्र–संवत् 2064 वि. पूर्ण	6 अप्रै.	र.
वासन्त नवरात्र प्रारम्भ	6 अप्रै.	र.

वर्गीकृत व्रत-पर्व (1 जनवरी, सन् 2007 ई. से 6 अप्रैल, सन् 2008 ई. तक)

एकादशी व्रत

(सन् 2007 ई.)	
माघ कृष्ण	15 जन.
माघ शुक्ल	29 जन.
फाल्गुन कृष्ण	13 फर.
फाल्गुन शुक्ल	27 फर.
चैत्र कृष्ण	15 मार्च
चैत्र शुक्ल	29 मार्च
वैशाख कृष्ण (स्मा.)	13 अप्रै.
वैशाख शुक्ल (स्मा.)	27 अप्रै.
प्र. ज्येष्ठ कृष्ण	13 मई
प्र.(अ.) ज्येष्ठ शुक्ल	27 मई
द्वि.(अ.)ज्येष्ठ कृष्ण	11 जून
द्वि.(शुद्ध) ज्येष्ठ शुक्ल	26 जून
आषा. कृष्ण (स्मा.)	10 जुला.
आषा. शुक्ल	26 जुला.
श्रावण कृष्ण	9 अग.
श्रावण शुक्ल	24 अग.
भाद्रपद कृष्ण	7 सितं.
भाद्रपद शुक्ल	23 सितं.
आश्विन कृष्ण	6 अक्तू.
आश्विन शुक्ल	22 अक्तू.
कार्तिक कृष्ण	5 नवं.
कार्तिक शुक्ल	21 नवं.
मार्गशीर्ष कृष्ण	5 दिसं.
मार्गशीर्ष शुक्ल	20 दिसं.
(सन् 2008 ई.)	
पौष कृष्ण	4 जन.
पौष शुक्ल (स्मा.)	18 जन.
माघ कृष्ण	3 फर.
माघ शुक्ल	17 फर.
फाल्गुन कृष्ण	3 मार्च
फाल्गुन शुक्ल	17 मार्च
चैत्र कृष्ण	2 अप्रै.

(स्मा. = स्मार्तों का व्रत)
वैष्णवों का व्रत स्मार्तों के व्रत के दिन से दूसरे दिन होता है। जिसके आगे "स्मा." नहीं लिखा है वह व्रततिथि स्मार्त्त और वैष्णवों दोनों के लिए है।

पक्षों का प्रारम्भ

(सन् 2007 ई.)	
माघ कृष्ण	4 जन.
माघ शुक्ल	20 जन.
फाल्गुन कृष्ण	3 फर.
फाल्गुन शुक्ल	18 फर.
चैत्र कृष्ण	4 मार्च
चैत्र शुक्ल	19 मार्च
वैशाख कृष्ण	3 अप्रै.
वैशाख शुक्ल	18 अप्रै.
प्र. ज्येष्ठ कृष्ण	3 मई
प्र.(अ.) ज्येष्ठ शुक्ल	17 मई
द्वि.(अ.)ज्येष्ठ कृष्ण	2 जून
द्वि.(शुद्ध)ज्येष्ठ शुक्ल	16 जून
आषाढ़ कृष्ण	1 जुला.
आषाढ़ शुक्ल	15 जुला.
श्रावण कृष्ण	30 जुला.
श्रावण शुक्ल	13 अग.
भाद्रपद कृष्ण	29 अग.
भाद्रपद शुक्ल	12 सितं.
आश्विन कृष्ण	27 सितं.
आश्विन शुक्ल	12 अक्तू.
कार्तिक कृष्ण	26 अक्तू.
कार्तिक शुक्ल	10 नवं.
मार्गशीर्ष कृष्ण	25 नवं.
मार्गशीर्ष शुक्ल	10 दिसं.
पौष कृष्ण	24 दिसं.
(सन् 2008 ई.)	
पौष शुक्ल	9 जन.
माघ कृष्ण	23 जन.
माघ शुक्ल	8 फर.
फाल्गुन कृष्ण	22 फर.
फाल्गुन शुक्ल	8 मार्च
चैत्र कृष्ण	22 मार्च

उत्तरी भारत में कृष्णादि एवं दक्षिणी भारत में शुक्लादि मासों का प्रचार है। ऊपर दिए गए पक्ष कृष्णादि हैं।

श्री सत्यनारायण व्रत

(सन् 2007 ई.)	
पौष	3 जन.
माघ	1 फर.
फाल्गुन	3 मार्च
चैत्र	2 अप्रै.
वैशाख	1 मई
प्र. (अ.) ज्येष्ठ	31 मई
द्वि.(शुद्ध) ज्येष्ठ	30 जून
आषाढ़	29 जुला.
श्रावण	27 अग.
भाद्रपद	26 सितं.
आश्विन	25 अक्तू.
कार्तिक	24 नवं.
मार्गशीर्ष	23 दिसं.
(सन् 2008 ई.)	
पौष	22 जन.
माघ	20 फर.
फाल्गुन	21 मार्च

अमावस्याएं (स्नान-दानार्थ)(2007 ई.)

माघ	19 जन.
फाल्गुन (शनैश्चरी)	17 फर.
चैत्र (सोम)	19 मार्च
वैशाख (भौम)	17 अप्रै.
प्र. ज्येष्ठ	16 मई
द्वि.(अधिक) ज्येष्ठ	15 जून
आषाढ़ (शनैश्चरी)	14 जुला.
श्रावण	12 अग.
भाद्रपद (भौम)	11 सितं.
आश्विन	11 अक्तू.
कार्तिक	9 नवं.
मार्गशीर्ष	9 दिसं.
(सन् 2008 ई.)	
पौष (भौम)	8 जन.
माघ	7 फर.
फाल्गुन	7 मार्च
चैत्र	6 अप्रै.

श्री गणेश चतुर्थी व्रत

(सन् 2007 ई.)	
माघ	7 जन.
फाल्गुन	5 फर.
चैत्र	7 मार्च
वैशाख	6 अप्रै.
प्र. ज्येष्ठ	6 मई
द्वि.(अधि.) ज्येष्ठ	4 जून
आषाढ़	3 जुला.
श्रावण	2 अग.
भाद्रपद (संकष्ट चतुर्थी)	31 अग.
आश्विन	29 सितं.
कार्तिक	29 अक्तू.
मार्गशीर्ष	27 नवं.
पौष	27 दिसं.
(सन् 2008 ई.)	
माघ (संकष्ट चतुर्थी)	25 जन.
फाल्गुन	24 फर.
चैत्र	25 मार्च

संक्रान्तियां (सन् 2007 ई.)

माघ	14 जन.
फाल्गुन	12 फर.
चैत्र	14 मार्च
वैशाख	14 अप्रै.
ज्येष्ठ	15 मई
आषाढ़	15 जून
श्रावण	16 जुला.
भाद्रपद	17 अग.
आश्विन	17 सितं.
कार्तिक	17 अक्तू.
मार्गशीर्ष	16 नवं.
पौष	16 दिसं.
(सन् 2008 ई.)	
माघ	14 जन.
फाल्गुन	13 फर.
चैत्र	14 मार्च

दशावतार जयन्तियां

(सन् 2007 ई.)	
श्रीमत्स्य जयन्ती	21 मार्च
श्रीरामनवमी	27 मार्च
श्रीपरशुराम जयन्ती	19 अप्रै.
श्रीनृसिंह जयन्ती	30 अप्रै.
श्रीकूर्म जयन्ती	1 मई
श्रीबुद्ध जयन्ती	2 मई
श्रीकल्कि जयन्ती	18 अग.
*श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	3 सितं.
श्रीवराह जयन्ती	14 सितं.
श्रीवामन जयन्ती	23 सितं.

* अर्धरात्रि व्यापिनी अष्टमी के दिन ही श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का व्रत करना चाहिए। श्रीमद् भागवत एवं स्कन्द - विष्णु पुराण आदि इसी का समर्थन करते हैं।

आश्विन कृष्ण पक्ष के श्राद्ध

(सन् 2007 ई.)	
पूर्णिमा	26 सितं.
प्रतिपदा	27 सितं.
द्वितीया	28 सितं.
तृतीया	29 सितं.
चतुर्थी	29 सितं.
पंचमी	30 सितं.
षष्ठी	1 अक्तू.
सप्तमी	2 अक्तू.
अष्टमी	3 अक्तू.
नवमी / सौभाग्यवती श्राद्ध	4 अक्तू.
दशमी	5 अक्तू.
एकादशी	6 अक्तू.
द्वादशी	7 अक्तू.
त्रयोदशी	8 अक्तू.
चतुर्दशी✡	9 अक्तू.
अमावस	10 अक्तू.
सर्वपितृश्राद्ध	10 अक्तू.

✡शस्त्र-विष आदि से मृतों (अर्थात् अपमृत्यु वालों) का श्राद्ध चतुर्दशी के दिन होता है, भले ही उनकी मृत्यु किसी भी तिथि में हुई हो। चतुर्दशी तिथि में सामान्य मृत्यु वालों का महालय श्राद्ध अमावस्या में करना चाहिए।

प्रदोष व्रत

(सन् 2007 ई.)	
पौष शुक्ल (सोम)	1 जन.
माघ कृष्ण (भौम)	16 जन.
माघ शुक्ल (भौम)	30 जन.
फाल्गुन कृष्ण	15 फर.
फाल्गुन शुक्ल	1 मार्च
चैत्र कृष्ण	16 मार्च
चैत्र शुक्ल	30 मार्च
वैशाख कृष्ण	15 अप्रै.
वैशाख शुक्ल	29 अप्रै.
प्र. ज्ये. कृष्ण (सोम)	14 मई
प्र.(अ.)ज्ये. शुक्ल (भौम)	29 मई
द्वि.(अ.)ज्ये. कृष्ण (भौम)	12 जून
द्वि.(शुद्ध) ज्ये. शुक्ल	27 जून
आषाढ़ कृष्ण	12 जुला.
आषाढ़ शुक्ल	27 जुला.
श्रावण कृष्ण	10 अग.
श्रावण शुक्ल	26 अग.
भाद्रपद कृष्ण (शनि.)	8 सितं.
भाद्रपद शुक्ल (सोम)	24 सितं.
आश्विन कृष्ण (सोम)	8 अक्तू.
आश्विन शुक्ल	24 अक्तू.
कार्तिक कृष्ण	7 नवं.
कार्तिक शुक्ल	22 नवं.
मार्गशीर्ष कृष्ण	6 दिसं.
मार्गशीर्ष शुक्ल	21 दिसं.
(सन् 2008 ई.)	
पौष कृष्ण (शनि)	5 जन.
पौष शुक्ल	20 जन.
माघ कृष्ण (सोम)	4 फर.
माघ शुक्ल (सोम)	18 फर.
फाल्गुन कृष्ण	5 मार्च
फाल्गुन शुक्ल	19 मार्च
चैत्र कृष्ण	3 अप्रै.

सोम = सोम प्रदोष व्रत
भौम = भौम प्रदोष व्रत
शनि = शनि प्रदोष व्रत

वर्गीकृत व्रतपर्व (1 जनवरी, सन् 2007 ई. से 6 अप्रैल, सन् 2008 ई. तक)

मासिक शिवरात्रिव्रत (सन् 2007 ई.)

माघ	17 जन.
फाल्गुन	16 फर.
चैत्र	17 मार्च
वैशाख	15 अप्रै.
प्र. ज्येष्ठ	15 मई
द्वि. (अधिक) ज्येष्ठ	13 जून
आषाढ़	12 जुला.
श्रावण	11 अग.
भाद्रपद	9 सितं.
आश्विन	9 अक्तू.
कार्तिक	8 नवं.
मार्गशीर्ष	7 दिसं.
पौष (सन् 2008 ई.)	6 जन.
माघ	5 फर.
फाल्गुन	6 मार्च
चैत्र	4 अप्रै.

मासिक कालाष्टमी व्रत (2007 ई.)

माघ	11 जन.
फाल्गुन	10 फर.
चैत्र	12 मार्च
वैशाख	10 अप्रै.
प्र. ज्येष्ठ	10 मई
द्वि. (अधिक) ज्येष्ठ	8 जून
आषाढ़	7 जुला.
श्रावण	5 अग.
भाद्रपद	4 सितं.
आश्विन	3 अक्तू.
कार्तिक	1 नवं.
मार्गशीर्ष	1 दिसं.
पौष	31 दिसं.
माघ (सन् 2008 ई.)	30 जन.
फाल्गुन	29 फर.
चैत्र	29 मार्च

पूर्णिमा व्रत (स्नान-दानार्थ, उदयव्यापिनी पूर्णिमा में)

पौष (सन् 2007 ई.)	3 जन.
माघ	2 फर.
फाल्गुन	3 मार्च
चैत्र	2 अप्रै.
वैशाख	2 मई
प्र. (अधिक) ज्येष्ठ	31 मई
द्वि. (शुद्ध) ज्येष्ठ	30 जून
आषाढ़	30 जुला.
श्रावण	28 अग.
भाद्रपद	26 सितं.
आश्विन	26 अक्तू.
कार्तिक	24 नवं.
मार्गशीर्ष	23 दिसं.
पौष (सन् 2008 ई.)	22 जन.
माघ	21 फर.
फाल्गुन	21 मार्च

अरुणाय त्रयोदशी (2007 ई.)

(श्रीसंगमेश्वर महादेव अरुणाय (पिहोवा) के शिवत्रयोदशी पर्व) (उदयव्यापिनी कृष्ण त्रयोदशी)

माघ	17 जन.
फाल्गुन	15 फर.
चैत्र	17 मार्च
वैशाख	15 अप्रै.
प्र. ज्येष्ठ	15 मई
द्वि. (अधिक) ज्येष्ठ	13 जून
आषाढ़	12 जुला.
श्रावण	10 अग.
भाद्रपद	9 सितं.
आश्विन	8 अक्तू.
कार्तिक	7 नवं.
मार्गशीर्ष	7 दिसं.
पौष (सन् 2008 ई.)	6 जन.
माघ	5 फर.
फाल्गुन	5 मार्च
चैत्र	4 अप्रै.

जैन व्रतपर्व। (सन् 2007 ई.)

श्रीमेरुत्रयोदशी	17 जन.
मर्यादा महोत्सव	25 जन.
आचार्य भिक्षु अभिनिष्क्रमण	27 मार्च
श्रीजैन महावीर जयन्ती	31 मार्च
श्रीमहावीर केवलज्ञान दिवस	26 अप्रै.
श्रीमहावीर च्यवन दिवस	20 जुला.
तेरापन्थ स्थापना दिवस	30 जुला.
चातुर्मास्य प्रारम्भ	30 जुला.
श्रीजयाचार्य निर्वाण	8 सितं.
पर्युषण पर्व प्रारम्भ	9 सितं.
संवत्सरी महापर्व	16 सितं.
श्रीकालू निर्वाण दिवस	18 सितं.
श्रीतुलसी पट्टारोहण	21 सितं.
आचार्य भिक्षु निर्वाण दिवस	25 सितं.
श्रीमहावीर निर्वाण दिवस	9 नवं.
आचार्य श्रीतुलसी जन्म	12 नवं.
ज्ञानपंचमी	15 नवं.
चातुर्मास्य समाप्त	24 नवं.
श्रीमहावीर दीक्षा दिवस	4 दिसं.
आचार्य श्रीतुलसी दीक्षा दिवस	28 दिसं.
(सन् 2008 ई.)	
जन्म श्रीपार्श्वनाथ जी	3 जन.
श्रीमेरुत्रयोदशी	5 फर.
मर्यादा महोत्सव	13 फर.

क्रिश्चियन त्योहार (सन् 2007 ई.)

नया साल प्रारम्भ	1 जन.
गुड फ्राई डे	6 अप्रै.
ईस्टर सण्डे	8 अप्रै.
क्रिसमस डे	25 दिसं.
(सन् 2008 ई.)	
नया साल प्रारम्भ	1 जन.
गुड फ्राई डे	21 मार्च

महापुरुषों के जन्मदिन (सन् 2007 ई.)

स्वामी विवेकानन्द	10 जन.
श्रीरामानन्दाचार्य	10 जन.
योगीराज बा. श्रीलालदयाल जी	20 जन.
श्री नेताजी सुभाषचन्द्र बोस	23 जन.
लाला लाजपतराय	28 जन.
श्री गुरु रविदास जी	2 फर.
महर्षि दयानन्द सरस्वती	16 फर.
श्रीरामकृष्ण परमहंस	19 फर.
श्रीचैतन्य महाप्रभु	3 मार्च
डॉ. अम्बेडकर	14 अप्रै.
श्रीवल्लभाचार्य	14 अप्रै.
श्रीछत्रपति शिवाजी जयन्ती	19 अप्रै.
आद्य जगद्गुरु श्रीशंकराचार्य	21 अप्रै.
श्रीरामानुजाचार्य	22 अप्रै.
श्रीरवीन्द्रनाथ टैगोर	9 मई
श्रीमहाराणाप्रताप	17 जून
लो. मा. बालगंगाधर तिलक	23 जुला.
गोस्वामी तुलसीदास जी	20 अग.
स्वामी शिवानन्द जी	8 सितं.
श्रीमहात्मा गांधी	2 अक्तू.
श्रीलालबहादुर शास्त्री	2 अक्तू.
महाराज अग्रसेन जयन्ती	12 अक्तू.
श्रीमाध्वाचार्य	21 अक्तू.
स्वामी रामतीर्थ	22 अक्तू.
श्रीजवाहर लाल नेहरु	14 नवं.
श्रीवीर बैरागी	22 नवं.
भगवान् श्रीसत्यसाईं बाबा	23 नवं.
(सन् 2008 ई.)	
श्री नेता जी सुभाषचन्द्र बोस	23 जन.
लाला लाजपतराय	28 जन.
स्वामी विवेकानन्द	29 जन.
श्रीरामानन्दाचार्य	29 जन.
योगिराज बा. श्रीलालदयाल	9 फर.
श्री गुरु रविदास जी	21 फर.
महर्षिदयानन्द सरस्वती	2 मार्च
श्रीरामकृष्ण परमहंस	9 मार्च
श्रीचैतन्य महाप्रभु	21 मार्च

मुस्लिम त्योहार (सन् 2007 ई.)

इदुलज्जुहा	1 जन.
मुहर्रम (ताजिया)	30 जन.
चेहलम	10 मार्च
आखिरी चहार शम्बा	14 मार्च
शहादत–ए–इमाम हसन	19 मार्च
ईद–ए–मिलाद	1 अप्रै.
ईद–ए–मौलाद	6 अप्रै.
फतिहायज़दहुम	29 अप्रै.
जन्म श्री हज़रत अली	28 जुला.
शब–ए–मिराज	11 अग.
शब–ए–बरात	29 अग.
रमज़ान का पहला दिन	14 सितं.
शहादत–ए–हज़रत अली	4 अक्तू.
शब–ए–कद्र	10 अक्तू.
जमतुल विदा	12 अक्तू.
ईद–उल–फित्र	14 अक्तू.
इदुलज्जुहा	21 दिसं.
(सन् 2008 ई.)	
मुहर्रम (ताजिया)	19 जन.
चेहलम	27 फर.
आखिरी चहार शम्बा	5 मार्च
शहादत–ए–इमाम हसन	7 मार्च
ईद–ए–मिलाद	21 मार्च
ईद–ए–मौलाद	26 मार्च

सूचना

सभी मुस्लिम-त्योहार चन्द्र- दर्शन (नया चाँद दिखाई देने) पर ही निर्भर करते हैं। कई बार स्थानभेद या आकाशीय वातावरण के कारण चन्द्रदर्शन की तारीख आगे-पीछे हो जाने पर, इन मुस्लिम त्योहारों के दिन में एक दिन का अन्तर संभव है।

सिक्ख पर्व (2007–08 ई.)

नाम श्रीगुरु साहिबान	पुरातन परम्परा अनुसार तारीख			नानकशाही कैलेण्डर अनुसार			संक्रान्ति	
	ता. प्रकाश दिवस	ता. गुरयाई मिली	ता. जोतीजोत समाए	ता. प्रकाश दिवस	ता. गुरयाई मिली	ता. जोतीजोत समाए	महीना	अंग्रेज़ी ता.
श्री गुरु नानकदेव जी	24 नवम्बर	— —	5 अक्तूबर	24 नवम्बर	अवतार दिन से	22 सितम्बर	चैत्र	14 मार्च
श्री गुरु अंगददेव जी	18 अप्रैल	1 अक्तूबर	21 मार्च	18 अप्रैल	18 सितम्बर	16 अप्रैल	वैशाख	14 अप्रै.
श्री गुरु अमरदास जी	1 मई	19 मार्च	26 सितम्बर	23 मई	16 अप्रैल	16 सितम्बर	ज्येष्ठ	15 मई
श्री गुरु रामदास जी	27 अक्तूबर	25 सितं.	14 सितम्बर	9 अक्तूबर	16 सितम्बर	16 सितम्बर	आषाढ़	15 जून
श्री गुरु अर्जुनदेव जी	10 अप्रैल	13 सितम्बर	18 जून	2 मई	16 सितम्बर	16 जून	श्रावण	16 जुला.
श्री गुरु हरगोबिन्द जी	1 जुलाई	10 मई	23 अप्रैल	5 जुलाई	11 जून	19 मार्च	भाद्रपद	16 अग.
श्री गुरु हरिराय जी	20 फर. (2008 ई.)	21 मार्च	3 नवम्बर	31 जनवरी	14 मार्च	20 अक्तूबर	आश्विन	15 सितं.
श्री गुरु हरकिशन जी	7 अगस्त	3 नवम्बर	1 अप्रैल	23 जुलाई	20 अक्तूबर	16 अप्रैल	कार्तिक	15 अक्तू.
श्री गुरु तेग़बहादुर जी	8 अप्रैल	1 अप्रैल	14 दिसम्बर	18 अप्रैल	16 अप्रैल	24 नवम्बर	मार्गशीर्ष	14 नवं.
श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी	15 जन.(2008 ई.)	12 दिसम्बर	15 नवम्बर	5 जनवरी	24 नवम्बर	21 अक्तूबर	पौष	14 दिसं.
खालसापंथ साजना दिवस	वैशाख 1, मुताबिक	14 अप्रैल, 2007 ई.		1 वैशाख / 14 अप्रैल, 2007 ई.			माघ	13 जन.
प्रथम प्रकाश गुरुग्रन्थ साहिब जी	भाद्रशुक्ल 1, मुताबिक	12 सितम्बर, 2007 ई.		17 भाद्रपद / 1 सितंबर, 2007 ई.			फाल्गुन	12 फर.
गुरुग्रन्थ साहिब जी को गुरयाई मिली	कार्तिक शुक्ल 2, मुताबिक	11 नवम्बर, 2007 ई.		6 कार्तिक / 20 अक्तूबर, 2007 ई.				

भारत सरकार के अवकाश (1 जनवरी, सन् 2007 ई. से 6 अप्रैल, सन् 2008 ई. तक)

(सूचना :– अवकाश की इस सूची को भारत सरकार के गज़ट की सूची से मिला लेना चाहिए।)

इंग्लिश नववर्ष (2007 ई.) प्रारम्भ	1 जन.	गुड फ्राई डे	6 अप्रै.	जन्म श्रीमहात्मा गांधी	2 अक्तू.	(सन् 2008ई.)	
इदुलज्जुहा	1 जन.	वैशाखी (पंजाब)	14 अप्रै.	जमतुलविदा	12 अक्तू.	इंग्लिश नववर्ष (2008 ई.) प्रारम्भ	1 जन.
अ. दिन श्री गुरु गोबिन्दसिंह जी	5 जन.	विशु (केरल)	15 अप्रै.	इदुलफित्र	14 अक्तू.	अ. दि. श्री गुरु गोबिन्दसिंह जी	5 जन.
मकर संक्रान्ति (बंगाल)	14 जन.	गुड़ी पड़वा	19 अप्रै.	श्रीदुर्गाष्टमी	19 अक्तू.	मकर संक्रान्ति (बंगाल)	14 जन.
पोंगल	15 जन.	श्रीबुद्ध जयन्ती	2 मई	दशहरा	21 अक्तू.	पोंगल	14 जन.
भारत गणतन्त्र दिवस	26 जन.	रथयात्रा (पुरी)	16 जुला.	श्रीवाल्मीकि जयन्ती	26 अक्तू.	मुहर्रम (ताज़िया)	19 जन.
मुहर्रम (ताज़िया)	30 जन.	जन्म श्रीहजरत अली	28 जुला.	दीपावली	9 नवं.	भारत गणतन्त्र दिवस	26 जन.
जन्म श्री गुरु रविदास जी	2 फर.	भारत स्वतन्त्रता दिवस	15 अग.	भाई दूज	11 नवं.	जन्म श्री गुरु रविदास जी	21 फर.
श्री महाशिवरात्रि व्रत	16 फर.	रक्षाबन्धन (राखी)	28 अग.	श्रीगुरुनानक जयन्ती	24 नवं.	श्री महाशिवरात्रि व्रत	6 मार्च
श्रीराम नवमी	27 मार्च	ओनम (केरल)	29 अग.	बलि. दि. श्रीगुरु तेग़बहादुर जी	24 नवं.		
श्रीमहावीर जयन्ती	30 मार्च	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (वै.)	4 सितं.	इदुलज्जुहा	21 दिसं.		
ईद–ए–मिलाद	1 अप्रै.	श्रीगणेश चतुर्थी	15 सितं.	क्रिसमस डे	25 दिसं.		

पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू–काश्मीर व उ.प्र. के मेले (1 जन., सन् 2007 ई. से 6 अप्रैल, 2008 ई. तक)

नाम मेला/पर्व (सन् 2007 ई.)	ता.
लोहड़ी (दांऊ,बिंदरख) रोपड़, पंजाब	14 जन.
मुक्तसर (पंजाब)	14 जन.
ब. सं. बा. अतर सिंह जी, रेरु साहिब प्रा.	20 जन.
वसन्त पंचमी	23 जन.
ब. सं. बा. बख्शीश सिंह जी	26 जन.
ज.दि.गु. हरिराय जी, सिंहपुरा– कुराली	31 जन.
ब.सं.बा. अतर सिंह जी मस्तुआणां (पं.)	2 फर.
बलिदान दिवस बाबा दीप सिंह जी शहीद	10 फर.
श्रीमहाशिवरात्रि (मण्डी, हि.प्र.) प्रारम्भ	16 फर.
नीलकण्ठ महादेव (पौड़ी–गढ़वाल)	16 फर.
होला श्री आनन्दपुर साहिब (पं.)	4 मार्च
श्री वीरमदास, बधौछी (पटियाला)	6 मार्च
शीतला माता (कुराली) पं.	8 मार्च
श्री गुरु रामराय (देहरादून)	9 मार्च
ज.दि.सं.बा. अतर सिंह जी (नानकसर चीमा)	15-17मार्च
पिहोवा तीर्थ (हरियाणा)	18 मार्च
सूर्यग्रहण– मेला कुरुक्षेत्र	19 मार्च
माईसर खाना (पं.)	24 मार्च
ज. दि. सं. बा. निधान सिंह जी, (श्री हजूर साहिब वाले) ढींडसा (लुधि.)	25 मार्च
श्री मनसादेवी (हरि.)	26 मार्च
बहुफोर्ट (जम्मू–काश्मीर)	26 मार्च
ज्वालामुखी (हरचोवाल, गुरदासपुर) पं.	26 मार्च
नरीसैंमरी, मथुरा (उ.प्र.)	26 मार्च
माता कांसादेवी (कांसल, मोहाली) प्रारम्भ	31 मार्च
देवी मेला हथीहरा (कुरुक्षेत्र)	1 अप्रै.
मेला माता नैनादेवी, दाचर (करनाल)	1 अप्रै.
कशाधा, नहयाणी सह (कुल्लू) प्रा.	16 अप्रै.
पिंजौर (हरि.)	17 अप्रै.
समागम (8 दिन) हरिहरघाट, मणिकर्ण, प्रा.	26 अप्रै.
पीपल जातर (कुल्लू) प्रा.	29 अप्रै.
आनी आऊटर सिराज (कुल्लू) प्रा.	7 मई
डूंगरी जातर (मनाली) प्रा.	15 मई
बजार (कुल्लू) प्रा.	15 मई
ज.दि.सं.बा. तेजा सिंह जी, बदरीपुर, पावंटा सा.	15 मई
साढ़ी जातर, नगर (हि.प्र.) प्रा.	19 मई
श्रीगंगा दशहरा	26 मई
पाण्डवों का बाड़ी मेला (सरयांझ) सोलन,	15 जून
मुन्तर (कुल्लू) प्रा.	15 जून

नाम मेला/पर्व (सन् 2007 ई.)	ता.
क्षीर भवानी (जम्मू–काश्मीर)	23 जून
सपोर यात्रा– घारलदा (उधमपुर)	25 जून
नमाणी एकादशी, नौवें गुरु, बरहे (बठि.),पं.	26 जून
पीपलू , ऊना (हि.प्र.)	26 जून
याद. दि. बी. शरण कौर जी, गु. अमर गढ़ साहिब, श्रीचमकौर साहिब	29 जून
शुद्ध महादेव यात्रा (उधमपुर)	30 जून
ब. सं. बा. तेजा सिंह जी,नानकसर चीमा (पं.)/ बड़ू साहिब (हि. प्र.)	1 जुला.
ब.बा. सन्तोख सिंह जी/भा. दर्शन सिंह जी गुरुद्वारा जन्मस्थान नानकसर, चीमा	9–11जुला.
शरीक भवानी (जम्मू–काश्मीर)	23 जुला.
गुरु पूर्णिमा, नदीपार आश्रम (कुराली)	29 जुला.
मुड़िया पूनौ, (गोवर्धन), मथुरा (उ.प्र.)	30 जुला.
ब.सं.बा. निधान सिंह जी, ढींडसा (लुधि.)	4 अग.
ज.दि.सं.बा. ईशर सिंह जी (राड़ा सा. वाले)	5 अग.
बरसी सं. बाबा प्यारा सिंह जी, (झाड़ साहिब वाले) चमकौर साहिब	5–7 अग.
नागपंचमी (जैत), मथुरा (उ.प्र.)	18 अग.
ब. सं. बा. हरचन्द सिंह लौंगोवाल	20 अग.
श्रीनैना देवी/ श्री चिन्तपूर्णी (हि. प्र.)	21 अग.
ब.सं.बा. ईशर सिंह जी (राड़ा सा. वाले)	24-26 अग.
मेला पीरमीखनशाह (घड़ाम, पटियाला)–प्रा.	25 अग.
श्री अमरनाथ यात्रा (काश्मीर)	28 अग.
जन्माष्टमी, मथुरा (उ.प्र.),	4 सितं.
कैलाशयात्रा (काश्मीर) प्रा.	9 सितं.
श्रीगुसाईआणां, कुराली (पंजाब)	13 सितं.
श्रीगणेशोत्सव (मण्डी) हि.प्र. प्रारम्भ	15 सितं.
मेला पट्ट (काश्मीर) प्रारम्भ	16 सितं.
मेला श्रीबलदेव छठ, पलवल, हरियाणा	18 सितं.
गरुणगोविन्द (छटीकरा, मथुरा) (उ.प्र.)	20 सितं.
श्रीवामन द्वादशी (अम्बाला,पटियाला)	24 सितं.
बाबा सोढल (जालन्धर)/ छपार (पं.)	25 सितं.
श्रीगोईंदवाल साहिब, (तरनतारन), पं.	26 सितं.
श्री आशापति यात्रा (काश्मीर) प्रा.	9 अक्तू.
श्रीज्वालामुखी,/ श्रीतारादेवी (हि.प्र.)	19 अक्तू.
ज्वालामुखी (हरचोवाल,गुरदासपुर) पं.	19 अक्तू.
दशहरा (कुल्लू) प्रा.	21 अक्तू.
मेला माता नैनादेवी, दाचर (करनाल)	25 अक्तू.

नाम मेला/पर्व (सन् 2007 ई.)	ता.
श्रीशाकम्भरी देवी (उ.प्र.)	25 अक्तू.
देवीमेला हथीहरा (कुरुक्षेत्र)	25 अक्तू.
दीपावली (अमृतसर)	9 नवं.
भण्डारा श्री हरिओम् जी (माणकपुर शरीफ)	4 नवं.
बाल मेला,	14 नवं.
बाबा रुद्रानन्द, नारी (ऊना, हि.प्र.) प्रा.	21 नवं.
रेणुका (नाहन) हि.प्र.	21 नवं.
ज. दि. श्रीवीर वैरागी (नकोदर) (पं.)	22 नवं.
श्रीरामतीर्थ (अमृतसर, पं.)	24 नवं.
कपालमोचन (हरि.)	24 नवं.
श्रीपुष्करराज (राज.)	24 नवं.
उर्स माणकपुर शरीफ (मोहाली) प्रारम्भ	25 नवं.
ब. बा. वैशाखा सिंह, दुदेहर सा. (तरनतारन)	5 दिसं.
पुरमण्डल, देविका स्नान (जम्मू)	8 दिसं.
ब. बीबी तेज कौर जी, मानपुर फतेहगढ़ सा.	24 दिसं.
ज. दि. सं. बा. किशन सिंह जी, (राड़ा सा. वाले) मसीतां, जि. सिरसा–हरि.	24 दिसं.
जोड़मेला, फतेहगढ़ साहिब (पं.) प्रा.	26 दिसं.
संगीत मेला बाबा हरबल्लभ (जालन्धर) प्रा.	28 दिसं.
ब. सं. बा. किशन सिंह जी, गु. कर्मसर साहिब, राड़ा साहिब (लुधि.) प्रा.	30 दिसं.
(सन् 2008 ई.)	
लोहड़ी (दांऊ,बिंदरख) रोपड़, पंजाब	14 जन.
मुक्तसर (पंजाब)	14 जन.
ब. सं. बा. अतर सिंह जी (रेरु साहिब) प्रा.	20 जन.
ब. सं. बा. बख्शीश सिंह जी	26 जन.
ब. सं. बा. अतर सिंह जी (मस्तुआणा) (पं.) प्रा.	30 जन.
वसन्त पंचमी	11 फर.
ज.दि.गु. हरिराय जी, सिंहपुरा– कुराली	19 फर.
श्रीमहाशिवरात्रि (मण्डी, हि.प्र.) प्रारम्भ	6 मार्च
नीलकण्ठ महादेव (पौड़ी–गढ़वाल)	6 मार्च
होला श्री आनन्दपुर साहिब (पं.)	8 मार्च
ज. दि. सं. बा. अतर सिंह जी (नानकसर चीमा)	15–17मार्च
श्री वीरमदास, बधौछी (पटियाला)	25 मार्च
ज. दि. सं. बा. निधान सिंह जी, ढींडसा (लुधि.)	25 मार्च
श्री गुरु रामराय (देहरादून)	27 मार्च
शीतला माता (कुराली) पं.	27 मार्च
पिहोवा तीर्थ (हरियाणा)	5 अप्रै.

आगामी वर्ष (विक्रमी संवत् 2065) के प्रमुख–प्रमुख व्रतपर्व

नाम मेला/पर्व (सन् 2008 ई.)	ता.
वासन्त नवरात्र प्रारम्भ	6 अप्रै.
श्रीदुर्गाष्टमी	13 अप्रै.
श्री रामनवमी व्रत	13 अप्रै.
श्री महावीर जयन्ती (जैन)	18 अप्रै.
मेष संक्रान्ति (वैशाखी)	13 अप्रै.
श्री परशुराम जयन्ती	7 मई
श्री बुद्ध जयन्ती	19 मई
श्री गंगा दशहरा	12 जून
गुरु पूर्णिमा	18 जुला.
रक्षाबन्धन	16 अग.
संकष्ट चतुर्थी	20 अग.
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (स्मा.)	23 अग.
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (वै.)	24 अग.
श्राद्ध प्रारम्भ	15 सितं.
शारद नवरात्र प्रारम्भ	30 सितं.
श्री दुर्गाष्टमी	7 अक्तू.
दशहरा (विजया दशमी)	9 अक्तू.
शरत् पूर्णिमा	14 अक्तू.
श्री वाल्मीकि जयन्ती	14 अक्तू.
करक चतुर्थी (करवा चौथ)	17 अक्तू.
दीपावली	28 अक्तू.
भाई दूज	30 अक्तू.
श्री गुरु नानक जयन्ती	13 नवं.
श्री भैरवाष्टमी	19 नवं.
(सन् 2009 ई.)	
मकर संक्रान्ति	13 जन.
वसन्त पंचमी	31 जन.
श्री गुरु रविदास जयन्ती	9 फर.
श्री महाशिवरात्रि व्रत	23 फर.
होलिका दहन	10 मार्च

यदि आप चाहते हैं कि आपके नगर/ग्राम में होने वाले मेलों आदि को इस पृष्ठ पर प्रकाशित सूची में प्रविष्ट किया जाए, तो तिथि, प्रविष्टा या अंग्रेजी तारीख जिसके अनुसार उसे मनाया जाता हो–पूर्ण विवरण सहित लिख भेजें– धन्यवाद।

गण्डमूल नक्षत्रों का प्रारम्भ एवम् समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.)

(1 जनवरी, सन् 2007 ई. से 6 अप्रैल, सन् 2008 ई. तक)

प्रारम्भ 2007 ई.	घं.	मि.	समाप्त 2007 ई.	घं.	मि.
5 जन.	22	34	8 जन.	2	09
15 जन.	19	48	17 जन.	20	19
24 जन.	10	11	26 जन.	7	25
2 फर.	6	45	4 फर.	10	22
12 फर.	5	02	14 फर.	6	23
20 फर.	17	49	22 फर.	13	40
1 मार्च	13	18	3 मार्च	17	26
11 मार्च	13	00	13 मार्च	15	38
20 मार्च	4	01	21 मार्च	22	27
28 मार्च	18	57	30 मार्च	23	29
7 अप्रै.	19	29	9 अप्रै.	22	58
16 अप्रै.	15	10	18 अप्रै.	9	10
25 अप्रै.	1	11	27 अप्रै.	5	24

प्रारम्भ 2007 ई.	घं.	मि.	समाप्त 2007 ई.	घं.	मि.
5 मई	1	14	7 मई	4	47
14 मई	1	11	15 मई	19	55
22 मई	8	59	24 मई	12	15
1 जून	7	24	3 जून	10	28
10 जून	8	52	12 जून	4	56
18 जून	18	04	20 जून	20	18
28 जून	14	37	30 जून	17	14
7 जुला.	14	37	9 जुला.	11	40
16 जुला.	3	18	18 जुला.	5	02
25 जुला.	22	50	28 जुला.	1	28
3 अग.	20	08	5 अग.	17	04
12 अग.	11	31	14 अग.	13	25
22 अग.	7	19	24 अग.	10	36

प्रारम्भ 2007 ई.	घं.	मि.	समाप्त 2007 ई.	घं.	मि.
31 अग.	3	20	1 सितं.	23	07
8 सितं.	18	08	10 सितं.	20	40
18 सितं.	15	11	20 सितं.	19	26
27 सितं.	12	56	29 सितं.	7	25
5 अक्तू.	23	41	8 अक्तू.	2	43
15 अक्तू.	21	55	18 अक्तू.	2	53
25 अक्तू.	0	01	26 अक्तू.	18	03
2 नवं.	5	42	4 नवं.	8	23
12 नवं.	3	52	14 नवं.	8	56
21 नवं.	10	33	23 नवं.	5	22
29 नवं.	13	39	1 दिसं.	15	06
9 दिसं.	9	59	11 दिसं.	14	39
18 दिसं.	18	41	20 दिसं.	15	07

प्रारम्भ 2007- 08 ई.	घं.	मि.	समाप्त 2007- 08 ई.	घं.	मि.
26 दिसं.	23	40	28 दिसं.	23	43
5 जन.	17	01	7 जन.	21	24
15 जन.	0	28	16 जन.	22	04
23 जन.	10	07	25 जन.	9	33
2 फर.	1	01	4 फर.	5	34
11 फर.	6	04	13 फर.	3	27
19 फर.	19	01	21 फर.	18	55
29 फर.	9	21	2 मार्च	14	25
9 मार्च	13	40	11 मार्च	9	47
18 मार्च	1	37	20 मार्च	2	27
27 मार्च	17	12	29 मार्च	22	47
5 अप्रै.	23	30			

पंचकों का प्रारम्भ एवम् समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.)

(1 जनवरी, सन् 2007 ई. से 6 अप्रैल, सन् 2008 ई. तक)

प्रारम्भ 2007 ई.	घं.	मि.	समाप्त 2007 ई.	घं.	मि.
21 जन.	4	12	25 जन.	8	42
17 फर.	14	06	21 फर.	15	36
17 मार्च	1	03	21 मार्च	1	09
13 अप्रै.	10	54	17 अप्रै.	12	11
10 मई	18	27	14 मई	22	40

प्रारम्भ 2007 ई.	घं.	मि.	समाप्त 2007 ई.	घं.	मि.
7 जून	0	10	11 जून	7	02
4 जुला.	5	44	8 जुला.	13	13
31 जुला.	12	46	4 अग.	18	36
27 अग.	21	50	1 सितं.	1	11

प्रारम्भ 2007 ई.	घं.	मि.	समाप्त 2007 ई.	घं.	मि.
24 सितं.	8	07	28 सितं.	10	10
21 अक्तू.	17	58	25 अक्तू.	21	08
18 नवं.	1	48	22 नवं.	8	10
15 दिसं.	7	38	19 दिसं.	17	08

प्रारम्भ 2008 ई.	घं.	मि.	समाप्त 2008 ई.	घं.	मि.
11 जन.	13	14	15 जन.	23	26
7 फर.	20	29	12 फर.	4	49
6 मार्च	5	42	10 मार्च	41	46
2 अप्रै.	15	37	6 अप्रै.	21	08

रविवार कैलेण्डर (1 जनवरी, सन् 2007 ई. से 6 अप्रैल, सन् 2008 ई. तक)

2007 ई.	रविवार की तारीखें				
जनवरी	7	14	21	28	—
फरवरी	4	11	18	25	—
मार्च	4	11	18	25	—
अप्रैल	1	8	15	22	29

2007 ई.	रविवार की तारीखें				
मई	6	13	20	27	—
जून	3	10	17	24	—
जुलाई	1	8	15	22	29
अगस्त	5	12	19	26	—

2007 ई.	रविवार की तारीखें				
सितंबर	2	9	16	23	30
अक्तूबर	7	14	21	28	—
नवंबर	4	11	18	25	—
दिसंबर	2	9	16	23	30

2008 ई.	रविवार की तारीखें				
जनवरी	6	13	20	27	—
फरवरी	3	10	17	24	—
मार्च	2	9	16	23	30
अप्रै.	6	13	20	27	—

ग्रहण विवरण (संवत् २०६४ वि.)

इसवर्ष (वि.सं. २०६४ में भूगोल पर निम्नांकित) चार ग्रहण होंगे–

(i) **खग्रास चन्द्रग्रहण (२८ अगस्त, २००७ ई.)**
(ii) **खण्डग्रास सूर्यग्रहण (११ सितंबर, २००७ ई.)**
(iii) **कंकण सूर्यग्रहण (७ फरवरी, २००८ ई.)**
(iv) **खग्रास चन्द्रग्रहण (२१ फरवरी, २००८ ई.)**

दोनों सूर्यग्रहण भारत में दृश्य नहीं हैं; जबकि शेष दोनों चन्द्रग्रहण भारत में दिखाई देंगे।

भारत में अदृश्य सूर्यग्रहणों का संक्षिप्त विवरण

(1) खण्डग्रास सूर्यग्रहण (११ सितंबर, २००७ ई.; भाद्र. अमा, मंगलवार)- यह ग्रहण भूगोल पर भा. स्टैं. टा. के अनुसार १५^{घ} ५६$^{मि}$ से प्रारम्भ होकर २०^{घ} ०६$^{मि}$ पर समाप्त हो जाएगा और इसका परमग्रास १८^{घ} ०१$^{मि}$ पर दिखाई देगा। इस ग्रहण को दक्षिणी अमेरिका के ब्राज़ील, वोल्विया, पेरागाय, उरुगाय और अर्जेण्टाइना तथा फॉकलैण्ड द्वीप–समूह में खण्डग्रास के रूप में देखा जा सकेगा।

(2) कंकण सूर्यग्रहण (७ फरवरी, २००८ ई., माघी अमा, गुरुवार)– यह ग्रहण भूगोल पर भा. स्टैं. टा. के अनुसार ७ घं. ०८ मि. से प्रारम्भ होकर ११ घं. ४१ मि. पर समाप्त होगा और इसकी कंकणाकृति भा. स्टैं. टा. अनुसार ८ घं. ५४ मि. से ९ घं. २५ मि. तक भूगोल पर दृश्य होगी। इस ग्रहण को एन्टार्कटिका, प. ऑस्ट्रेलिया तथा न्यूज़ीलैण्ड में खण्डग्रास के रूप में देखा जा सकेगा। इसका कंकणस्वरूप केवल एन्टार्कटिका के कुछ भाग में ही दिखाई पड़ेगा।

भारत में दृश्य ग्रहणों का विस्तृत विवरण

(1) ग्रस्तोदय खग्रास चन्द्रग्रहण (२८ अग., २००७ ई., श्रावणी पूर्णिमा, मंगलवार)–यह ग्रहण भारत में केवल अरुणाचल, मणिपुर, आसाम, नागालैण्ड, मिज़ोरम तथा मेघालय में चन्द्रोदय के समय कुछ ही मिनटों (अधिक से अधिक २५ मिनट) के लिए दिखाई देगा। इस समय यह इन प्रदेशों में समाप्त होने को होगा। भारत के शेष किसी भी प्रान्त में यह दिखाई नहीं पड़ेगा। पृष्ठ **१४** पर दिए गए इस ग्रहण के चित्र में जो (क) (ख) रेखा अंकित की गई है, इस रेखा द्वारा भी यह स्पष्ट किया गया है। आगे पृष्ठ **१२** पर २८ अगस्त, २००७ ई. के दिन लगभग सवा दो सौ भारतीय नगरों का चन्द्रोदयकाल दिया गया है। जिस नगर में चन्द्रोदय १७घं. ५४मि. (भा. स्टैं. टा.) से पहले होगा, उसी नगर में यह ग्रहण दिखाई पड़ेगा, अन्यत्र नहीं। इस ग्रहण की खग्रास आकृति जापान, कोरिया, ऑस्ट्रेलिया आदि देशों में दिखाई पड़ेगी।

ग्रहण प्रारम्भ	**१४ घं. २१ मि.**	(२८ अगस्त, सन् २००७ ई. (भा.स्टैं.टा.))
खग्रास प्रारम्भ	**१५ घं. २२ मि.**	
ग्रहणमध्य	**१६ घं. ०७ मि.**	
खग्रास समाप्त	**१६ घं. ५३ मि.**	
ग्रहण समाप्त	**१७ घं. ५४ मि.**	

पर्वकाल ३$^{घं}$ ३३$^{मि}$
परम ग्रासमान १.४८१

ग्रहणवेध (सूतक)– इस ग्रहण का सूतक २८ अगस्त को सूर्योदय के समय ही प्रारम्भ हो जाएगा।

ग्रहण का राशिफलः– यह ग्रहण शतभिषा नक्षत्र एवं कुम्भ राशिस्थ चन्द्र के समय सम्पन्न हो रहा है; इसलिए यह ग्रहण शतभिषा नक्षत्रोत्पन्न एवं कुम्भ राशि वाले व्यक्तियों के लिए विशेष कष्टप्रद रहेगा। विभिन्न राशि वाले व्यक्तियों के लिए इस ग्रहण का फल नीचे दिया गया है–

जन्म/नामराशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	लाभ	सुख	अपमान	महाकष्ट	स्त्री/पतिकष्ट	सुख	चिन्ता	कष्ट	धनलाभ	हानि	दुर्घटना, चोटभय	हानि

ग्रहण का अन्य फलः– यह ग्रहण श्रावणी पूर्णिमा, मंगलवार, शतभिषा नक्षत्र एवम् कुम्भस्थ चन्द्र के समय घटित हो रहा है। हाथी, घोड़ा आदि चतुष्पद पशुओं में रोग से कष्ट व्याप्त हो। स्त्रियों में गर्भक्षय की घटनाएं अधिक हों। पर्वतवासी जनों को नानाविध पीड़ा और रोगों से ग्रस्त होना पडे। जलतटवर्ती लोग भी प्राकृतिक प्रकोप से त्रस्त रहें।

व्यापारिक दृष्टि से – चना आदि अनाज, सूत, सण एवम् कपास के व्यापारी विशेष तेजी से लाभ प्राप्त करेंगे।

(2) ग्रस्तास्त खग्रास चन्द्रग्रहण (२१ फरवरी, २००८ ई., माघी पूर्णिमा, गुरुवार)– यह ग्रहण भारत में केवल जम्मू–काश्मीर के पश्चिमोत्तरी भाग, पश्चिमी राजस्थान एवम् पश्चिमी गुजरात में अधिक से अधिक १२ मिनट के लिए चन्द्रास्त के समय स्पर्श (प्रारम्भ) होता हुआ दिखाई देगा। भारत के शेष भाग में इसे नहीं देखा जा सकेगा। पृष्ठ १४ पर दिए गए इस ग्रहण के चित्र में खींची गई (च) (छ) रेखा द्वारा भी यह स्पष्ट किया गया है। पृष्ठ १३ पर २१ फरवरी, २००८ ई. को लगभग सवा दो सौ भारतीय नगरों का चन्द्रास्तकाल दिया गया है। जिस नगर में चन्द्रास्त ७घं. १३मि. (भा. स्टैं. टा.) से पहले होगा, वहां यह ग्रहण दिखाई नहीं पड़ेगा।

इस ग्रहण की खग्रास आकृति अफ्रीका, अमेरिका, यूरोप आदि में दिखाई पड़ेगी।

ग्रहण प्रारम्भ	७ घं. १३ मि.	२१ फरवरी, २००८ ई. (भा.स्टैं.टा.)
खग्रास प्रारम्भ	८ घं. ३० मि.	
ग्रहणमध्य	८ घं. ५६ मि.	
खग्रास समाप्त	६ घं. २१ मि.	
ग्रहण समाप्त	१० घं. ३६ मि.	

पर्वकाल ३घं. २६मि.
परम ग्रासमान १.१११

ग्रहणवेध (सूतक)– इस ग्रहण का सूतक २० फरवरी को ही सूर्यास्त के समय प्रारम्भ हो जाएगा।

ग्रहण का राशिफलः– यह ग्रहण मघा नक्षत्र एवम् सिंहस्थ चन्द्र के समय घटित हो रहा है। मघा नक्षत्र एवम् सिंहराशि वाले व्यक्तियों के लिए यह विशेष कष्टप्रद है। विभिन्न राशि वाले जातकों के लिए इसका फल इस प्रकार है–

जन्म/नामराशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	चिन्ता	कष्ट	धनलाभ	हानि	दुर्घटना, चोट	हानि	लाभ	सुख	अपमान	महाकष्ट	स्त्री/पति कष्ट	सुख

ग्रहण का अन्य फलः– वर्षा पर्याप्त हो। अन्न की पैदावार भी अच्छी रहे। हल्दी, जीरा, तेल, तिलहन, गुड़ के संग्रह से लाभ रहे। क्रूर ग्रह शनि के साथ चन्द्र का सम्बन्ध होने से राजनीतिज्ञों एवम् प्रतिष्ठित व्यक्तियों के लिए यह ग्रहण नेष्टफलप्रद है–

"क्रूरसंयुक्त–सूर्येन्द्वोर्ग्रहणे नृपतिक्षयः।
राष्ट्रभंग इति प्राहुर्भप्रज्ञा वै मुनीश्वराः।।"

नोट– ध्यान रहे, ये दोनों ग्रहण भारत के कूछ ही भागों में दिखाई देंगे, अतः इनमें जप, दान आदि का माहात्म्य उसी भाग में माना जाएगा, जहां ये दिखाई देंगे।

*****

*ग्रस्तास्त खग्रास चन्द्रग्रहण (4 मार्च, सन् 2007 ई.)

भारत के प्रमुख-प्रमुख नगरों में चन्द्रास्तकाल (भा.स्टै. टा.)

[जिन नगरों में 4 मार्च को चन्द्रास्त प्रातः 6 घं. 42 मि. (भा. स्टै. टा.) से पहिले होगा, वहां चन्द्रमा ग्रस्तास्त होगा और वहां ग्रहण का पर्वकाल भी चन्द्रास्त के समय ही समाप्त हो जाएगा।]

नगर	चन्द्रास्त काल घं. मि.	नगर	चन्द्रास्त काल घं. मि.	नगर	चन्द्रास्त काल घं. मि.	नगर	चन्द्रास्त काल घं. मि.	नगर	चन्द्रास्त काल घं. मि.	नगर	चन्द्रास्त काल घं. मि.	नगर	चन्द्रास्त काल घं. मि.
अकोला	6 47	कटनी	6 35	चण्डीगढ	6 54	दरभगा	6 14	पालमपुर	6 56	भागलपुर	6 09	रोपड	6 55
अगरतला	5 51	कटुआ (का.)	7 00	चम्बा	6 58	दार्जिलिंग	6 05	पाली	7 05	भिवानी	6 55	रोहतक	6 54
अजमेर	7 00	कन्नौज	6 39	चित्तौडगढ	6 59	दिल्ली	6 51	पिलानी	6 58	भीनमाल	7 09	लखनऊ	6 35
अनन्तनाग (का.)	7 02	कपूरथला	7 00	चूरू	7 00	देवबन्द	6 50	पुंछ	7 07	भुज(गु.)	7 19	लुधियाना	6 58
अनूपशहर (उ.प्र)	6 47	करनाल	6 52	चीरापूंजी	5 50	देवरिया	6 23	पुणे	6 59	भुवनेश्वर	6 11	वडोदरा (गु.)	7 04
अमरावती (म.)	6 44	कलकत्ता	6 02	चेन्नई	6 30	देवास (म.प्र.)	6 52	पुरनिया	6 07	भोपाल	6 47	विजयवाडा	6 31
अमरोहा (उ. प्र.)	6 46	कांगडा	6 57	छतरपुर	6 39	देवप्रयाग	6 46	पुरी	6 11	मण्डी (हि.प्र.)	6 54	विशाखापत्तनम्	6 20
अमृतसर	7 02	कांचीपुरम्	6 32	छपरा	6 19	देहरादून	6 49	पोरबन्दर	7 17	मथुरा	6 48	शाहदरा	6 51
अमेठी (उ.प्र.)	6 31	काठियावाड़	7 13	जबलपुर	6 37	द्वारिका	7 21	पोर्टब्लेअर	5 38	मदुरै	6 37	शिमला	6 53
अम्बाला	6 54	कानपुर	6 37	जम्मू	7 03	धनबाद	6 10	प्रतापगढ (उ.प्र.)	6 30	मन्दसोर	6 57	शिलांग	5 49
अयोध्या	6 30	कारगिल	6 59	जयपुर	6 56	धर्मशाला	6 57	प्रयाग	6 30	मसूरी	6 49	श्रीनगर (का.)	7 04
अर्की (हि.प्र.)	6 54	कालका	6 53	जामनगर	7 17	धूरी	6 58	फरीदकोट	7 03	महेन्द्रगढ	6 55	संगरूर	6 57
अलवर	6 53	काशी	6 26	जालन्धर	6 59	नरेना	7 02	फरीदाबाद	6 50	मारवाड ज.	7 04	सरहिन्द	6 56
अलीगढ	6 47	किशनगढ (रा.)	7 18	जालोर	7 08	नवलगढ	6 58	फाजिल्का	7 05	मालेरकोटला	6 57	सहारनपुर	6 51
अल्मोड़ा	6 42	कुराली (पं.)	6 55	जोरहाट	5 41	नागपुर	6 39	फिरोजपुर	7 03	मिर्जापुर	6 27	सागर	6 42
अहमदाबाद	7 07	कुरुक्षेत्र	6 54	जींद	6 55	नागौर	7 05	फुलेरु	6 58	मुंगेर	6 11	सांगानेर	6 56
आगरा	6 47	कुल्लू	6 54	जैसलमेर	7 16	नाथद्वारा	7 03	बंगलोर	6 41	मुजफ्फरनगर	6 49	सिरसा	7 00
आजमगढ़	6 25	कैथल	6 55	जोधपुर	7 07	नाभा	6 56	बदायूं	6 43	मुम्बई	7 03	सीकर	6 59
आबू	7 07	कोटखाई	6 51	झरिया	6 10	नारनौल	6 55	बलिया	6 21	मुरादाबाद	6 45	सूरत	7 05
आरा (बि.)	6 19	कोटा	6 55	झांसी	6 43	नालागढ	6 55	बाड़मेर	7 13	मेरठ	6 49	सूरतगढ	7 05
इटारसी	6 45	कोहिमा	5 40	झालरापाटन	6 53	नाहन	6 52	बांसवाडा	7 00	मैसूर	6 45	सोलन	6 53
इटावा	6 43	खन्ना	6 56	झालावाड	7 01	नासिक	7 00	बिजनौर	6 48	मोगा	7 01	हमीरपुर (उ.प्र.)	6 37
इन्दौर	6 53	खुर्जा	6 48	झुंझुनु	6 58	नीमच	6 58	बिलासपुर (म.प्र.)	6 27	रतनगढ	7 01	हमीरपुर (हि.प्र.)	6 56
इम्फाल	5 40	गंगटोक	6 04	टोंक	6 55	नैनीताल	6 42	बिलासपुर (हि.प्र.)	6 54	रतलाम	6 57	हरिद्वार	6 48
उज्जैन	6 54	गया	6 17	डिब्रूगढ	5 38	पंचकूला	6 54	बीकानेर	7 06	राजकोट	7 14	हाथरस	6 47
उदयपुर (रा.)	7 03	गाजियाबाद	6 50	डीडवाना	7 01	पंजिम	6 58	बीजापुर	6 50	रांची	6 15	हापुड़	6 49
उन्नाव	6 36	गुड़गांव	6 52	डूंगरपुर	7 03	पटना	6 17	बुलन्दशहर	6 48	रामपुर बुशहर	6 51	हांसी	6 56
ऊधमपुर (का.)	7 02	गुरदासपुर	7 00	तिरुपति	6 34	पटियाला	6 55	बून्दी	6 55	रामेश्वरम्	6 32	हिसार	6 57
ऊना	6 57	गुआहाटी	5 50	थानेसर	6 53	पठानकोट	6 59	वृन्दावन	6 48	रायपुर (म.प्र.)	6 29	हैदराबाद	6 40
एटा	6 45	गोरखपुर	6 25	त्रिवेन्द्रम् (के.)	6 42	पाण्डिचेरी	6 31	बठिण्डा	7 01	रिवाड़ी	6 53	होशंगाबाद	6 46
कटक	6 19	ग्वालियर	6 46	दतिया	6 44	पानीपत	6 52	भरतपुर	6 49	रीवां	6 32	होशियारपुर	6 58

- **हमें खेद है– गत वर्ष (सं. 2063 वि.) के मार्त्तण्डपंचाङ्ग में पृष्ठ 13 पर 4 मार्च '07 के स्थान पर गलती से 3 मार्च '07 का चन्द्रास्त छप गया था। कृपया उसके स्थान पर इस पृष्ठ पर दिया गया चन्द्रास्तकाल प्रयोग में लाएं।**

ग्रस्तोदय चन्द्रग्रहण (28 अगस्त, 2007 ई.)

भारत के प्रमुख–प्रमुख नगरों में 28 अगस्त 2007 ई. को चन्द्रोदयकाल (भा. स्टैं. टा.)

[जिस नगर में चन्द्रोदय 17[घं] –54[मि] (भा. स्टैं. टा.) से पहले होगा, उसी नगर में यह ग्रहण दिखाई देगा।]

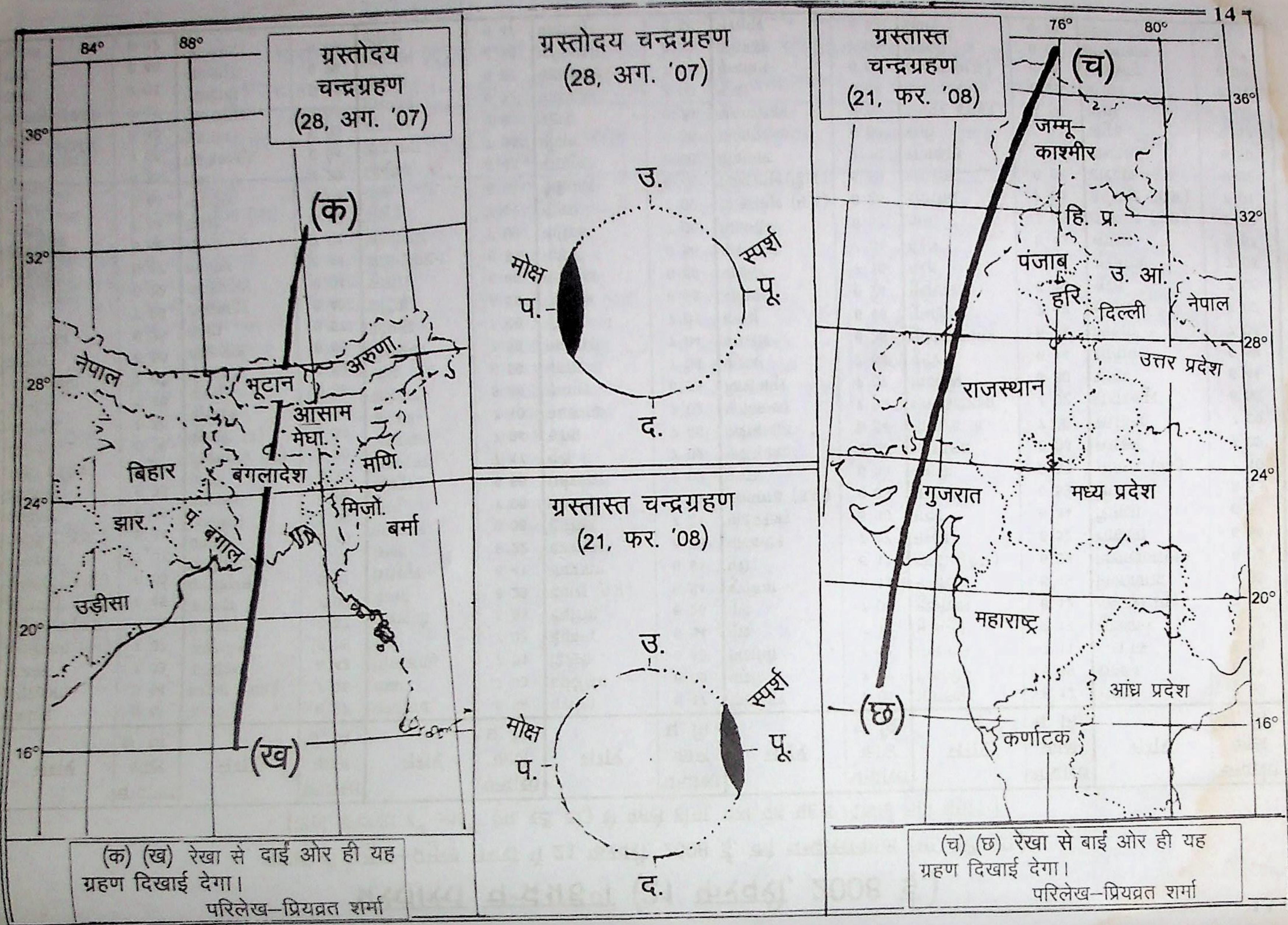
नगर	चन्द्रोदय-काल घं. मि.	नगर	चन्द्रोदय-काल घं. मि.	नगर	चन्द्रोदय-काल घं. मि.	नगर	चन्द्रोदय-काल घं. मि.	नगर	चन्द्रोदय-काल घं. मि.	नगर	चन्द्रोदय-काल घं. मि.	नगर	चन्द्रोदय-काल घं. मि.
अकोला	18 45	कटनी	18 33	चण्डीगढ	18 53	दरभंगा	18 13	पालमपुर	18 56	भागलपुर	18 08	रोपड़	18 55
अगरतला	17 50	कठुआ (का.)	19 00	चम्बा	18 58	दार्जिलिंग	18 04	पाली	19 03	भिवानी	18 54	रोहतक	18 52
अजमेर	18 59	कन्नौज	18 37	चित्तौडगढ	18 57	दिल्ली	18 50	पिलानी	18 56	भीनमाल	19 07	लखनऊ	18 34
अनन्तनाग (का.)	19 03	कपूरथला	19 00	चूरू	18 58	देवबन्द	18 49	पुंछ	19 06	भुज(गु.)	19 15	लुधियाना	18 57
अनूपशहर (उ.प्र)	18 45	करनाल	18 52	चीरापूंजी	17 49	देवरिया	18 22	पुणे	18 56	भुवनेश्वर	18 09	वडोदरा (गु.)	19 00
अमरावती (म.)	18 42	कांगडा	18 57	चेन्नई	18 26	देवास (म.प्र.)	18 50	पुरनिया	18 07	भोपाल	18 45	विजयवाड़ा	18 27
अमरोहा (उ.प्र.)	18 45	कांचीपुरम्	18 28	छतरपुर	18 37	देवप्रयाग	18 46	पुरी	18 08	मण्डी (हि.प्र.)	18 54	विशाखापत्तनम्	18 17
अमृतसर	19 02	काठियावाड	19 09	छपरा	18 18	देहरादून	18 48	पोरबन्दर	19 14	मथुरा	18 47	शाहदरा	18 49
अमेठी (उ.प्र.)	18 30	कानपुर	18 36	जबलपुर	18 34	द्वारिका	19 17	पोर्टब्लेअर	17 35	मदुरै	18 37	शिमला	18 52
अम्बाला	18 53	कारगिल	18 59	जम्मू	19 03	धनबाद	18 09	प्रतापगढ (उ.प्र.)	18 29	मन्दसोर	18 55	शिलांग	17 49
अयोध्या	18 29	कालका	18 53	जयपुर	18 54	धर्मशाला	18 57	प्रयाग	18 29	मसूरी	18 48	श्रीनगर (का.)	19 04
अर्की (हि.प्र.)	18 53	काशी	18 24	जामनगर	19 13	धूरी	18 57	फरीदकोट	19 02	महेन्द्रगढ	18 53	संगरूर	18 57
अलवर	18 51	किशनगढ (रा.)	19 15	जालन्धर	18 59	नरैना	19 00	फरीदाबाद	18 49	मारवाड जं.	19 02	सरहिन्द	18 55
अलीगढ	18 45	कुराली (पं.)	18 55	जालोर	19 06	नवलगढ	18 57	फाज़िल्का	19 04	मालेरकोटला	18 57	सहारनपुर	18 50
अल्मोडा	18 41	कुरुक्षेत्र	18 53	जोरहाट	17 41	नागपुर	18 36	फिरोज़पुर	19 02	मिर्ज़ापुर	18 26	सागर	18 40
अहमदाबाद	19 03	कुल्लू	18 54	जींद	18 54	नागौर	19 03	फुलेरा	18 56	मुंगेर	18 10	सांगानेर	18 54
आगरा	18 45	कैथल	18 54	जैसलमेर	19 13	नाथद्वारा	19 01	बंगलोर	18 36	मुज़फ्फरनगर	18 49	सिरसा	18 59
आजमगढ	18 24	कोटखाई	18 51	जोधपुर	19 05	नाभा	18 56	बदायूं	18 41	मुम्बई	18 59	सीकर	18 57
आबू	19 05	कोटा	18 53	झरिया	18 09	नारनौल	18 53	बलिया	18 20	मुरादाबाद	18 44	सूरत	19 02
आरा (बि.)	18 18	कोलकाता	18 00	झांसी	18 42	नालागढ	18 54	बाड़मेर	19 11	मेरठ	18 48	सूरतगढ	19 03
इटारसी	18 43	कोहिमा	17 40	झालरापाटन	18 51	नाहन	18 51	बांसवाड़ा	18 57	मैसूर	18 40	सोलन	18 52
इटावा	18 42	खन्ना	18 56	झालावाड	18 59	नासिक	18 57	बिजनौर	18 47	मोगा	19 00	हमीरपुर (उ.प्र.)	18 36
इन्दौर	18 51	खुर्जा	18 47	झुंझुनु	18 56	नीमच	18 56	बिलासपुर (म.प्र.)	18 24	रतनगढ	18 59	हमीरपुर (हि.प्र.)	18 56
इम्फाल	17 40	गंगटोक	18 03	टोंक	18 54	नैनीताल	18 41	बिलासपुर (हि.प्र.)	18 54	रतलाम	18 54	हरिद्वार	18 47
उज्जैन	18 51	गया	18 16	डिब्रूगढ	17 38	पंचकूला	18 53	बीकानेर	19 05	राजकोट	19 10	हाथरस	18 45
उदयपुर (रा.)	19 01	गाजियाबाद	18 49	डीडवाना	18 59	पंजिम	18 53	बीजापुर	18 47	रांची	18 13	हापुड़	18 47
उन्नाव	18 36	गुडगांव	18 50	डूंगरपुर	19 00	पटना	18 16	बुलन्दशहर	18 47	रामपुर बुशहर	18 51	हांसी	18 55
ऊधमपुर (का.)	19 02	गुरदासपुर	19 00	तिरुपति	18 31	पटियाला	18 55	बून्दी	18 54	रामेश्वरम्	18 27	हिसार	18 56
ऊना	18 56	गुआहाटी	17 50	थानेसर	18 52	पठानकोट	18 59	वृन्दावन	18 47	रायपुर (म.प्र.)	18 27	हैदराबाद	18 36
एटा	18 43	गोरखपुर	18 24	त्रिवेन्द्रम् (के.)	18 37	पाण्डिचेरी	18 26	बठिण्डा	19 00	रिवाड़ी	18 52	होशंगाबाद	18 43
कटक	18 09	ग्वालियर	18 45	दतिया	18 43	पानीपत	18 51	भरतपुर	18 47	रीवां	18 30	होशियारपुर	18 58

ग्रस्तास्त चन्द्रग्रहण (21 फरवरी, 2008 ई.)

भारत के प्रमुख–प्रमुख नगरों में 21 फरवरी, 2008 ई. को चन्द्रास्तकाल (भा. स्टैं. टा.)

[जहां चन्द्रास्त 7 घं –13 मि (भा. स्टैं. टा.) से पहले होगा, वहां यह ग्रहण दिखाई नहीं देगा।]

नगर	चन्द्रास्त काल घं. मि.	नगर	चन्द्रास्त काल घं. मि.	नगर	चन्द्रास्त काल घं. मि.	नगर	चन्द्रास्त काल घं. मि.	नगर	चन्द्रास्त काल घं. मि.	नगर	चन्द्रास्त काल घं. मि.	नगर	चन्द्रास्त काल घं. मि.
अकोला	6 48	कटनी	6 37	चण्डीगढ़	6 58	दरभंगा	6 17	पालमपुर	7 01	भागलपुर	6 12	रोपड़	7 00
अगरतला	5 54	कठुआ (का.)	7 05	चम्बा	7 03	दार्जिलिंग	6 09	पाली	7 07	भिवानी	6 59	रोहतक	6 57
अजमेर	7 03	कन्नौज	6 42	चित्तौड़गढ़	7 01	दिल्ली	6 55	पिलानी	7 01	भीनमाल	7 11	लखनऊ	6 38
अनन्तनाग (का.)	7 07	कपूरथला	7 05	चूरू	7 03	देवबन्द	6 54	पुंछ	7 12	भुज(गु.)	7 19	लुधियाना	7 02
अनूपशहर (उ.प्र.)	6 50	करनाल	6 57	चीरापूंजी	5 53	देवरिया	6 26	पुणे	7 00	भुवनेश्वर	6 12	वड़ोदरा (गु.)	7 04
अमरावती (म.)	6 45	कांगड़ा	7 02	चेन्नई	6 28	देवास (म.प्र.)	6 54	पुरनिया	6 11	भोपाल	6 49	विजयवाड़ा	6 30
अमरोहा (उ. प्र.)	6 50	कांचीपुरम्	6 31	छतरपुर	6 41	देवप्रयाग	6 51	पुरी	6 11	मण्डी (हि.प्र.)	6 59	विशाखापत्तनम्	6 20
अमृतसर	7 07	काठियावाड़	7 13	छपरा	6 22	देहरादून	6 53	पोरबन्दर	7 17	मथुरा	6 52	शाहदरा	6 54
अमेठी (उ.प्र.)	6 34	कानपुर	6 40	जबलपुर	6 38	द्वारिका	7 21	पोर्टब्लेअर	5 38	मदुरै	6 34	शिमला	6 57
अम्बाला	6 58	कारगिल	7 05	जम्मू	7 08	धनबाद	6 13	प्रतापगढ (उ.प्र.)	6 33	मन्दसोर	6 59	शिलांग	5 53
अयोध्या	6 33	कालका	6 58	जयपुर	6 58	धर्मशाला	7 02	प्रयाग	6 33	मसूरी	6 53	श्रीनगर (का.)	7 10
अर्की (हि.प्र.)	6 58	काशी	6 28	जामनगर	7 17	धूरी	7 02	फरीदकोट	7 07	महेन्द्रगढ़	6 58	संगरूर	7 02
अलवर	6 56	किशनगढ़ (रा.)	7 20	जालन्धर	7 04	नरैना	7 05	फरीदाबाद	6 54	मारवाड़ जं.	7 06	सरहिन्द	7 00
अलीगढ	6 50	कुराली (पं.)	6 59	जालोर	7 10	नवलगढ	7 02	फाजिल्का	7 09	मालेरकोटला	7 02	सहारनपुर	6 55
अल्मोड़ा	6 46	कुरुक्षेत्र	6 58	जोरहाट	5 45	नागपुर	6 39	फिरोजपुर	7 07	मिर्जापुर	6 30	सागर	6 44
अहमदाबाद	7 07	कुल्लू	6 58	जींद	6 59	नागौर	7 08	फुलेरा	7 01	मुंगेर	6 14	सांगानेर	6 59
आगरा	6 50	कैथल	6 59	जैसलमेर	7 18	नाथद्वारा	7 04	बंगलोर	6 38	मुजफ्फरनगर	6 54	सिरसा	7 04
आजमगढ	6 28	कोटखाई	6 56	जोधपुर	7 09	नाभा	7 01	बदायूं	6 46	मुम्बई	7 02	सीकर	7 02
आबू	7 09	कोटा	6 57	झरिया	6 13	नारनौल	6 58	बलिया	6 24	मुरादाबाद	6 49	सूरत	7 05
आरा (बि.)	6 22	कोयम्बटूर	6 40	झांसी	6 46	नालागढ़	6 59	बाड़मेर	7 15	मेरठ	6 53	सूरतगढ़	7 08
इटारसी	6 47	कोलकाता	6 04	झालरापाटन	6 55	नाहन	6 56	बांसवाड़ा	7 01	मैसूर	6 43	सोलन	6 57
इटावा	6 46	कोहिमा	5 44	झालावाड	7 03	नासिक	7 00	बिजनौर	6 52	मोगा	7 05	हमीरपुर (उ.प्र.)	6 40
इन्दौर	6 54	खन्ना	7 01	झुंझुनु	7 01	नीमच	7 00	बिलासपुर (म.प्र.)	6 28	रतनगढ़	7 04	हमीरपुर (हि.प्र.)	7 01
इम्फाल	5 44	खुर्जा	6 52	टोंक	6 58	नैनीताल	6 46	बिलासपुर (हि.प्र.)	6 59	रतलाम	6 58	हरिद्वार	6 52
उज्जैन	6 55	गंगटोक	6 08	डिब्रूगढ़	5 43	पंचकूला	6 58	बीकानेर	7 10	राजकोट	7 14	हाथरस	6 50
उदयपुर (रा.)	7 05	गया	6 20	डीडवाना	7 04	पंजिम	6 56	बीजापुर	6 50	रांची	[illegible] 17	हापुड़	6 52
उन्नाव	6 40	गाजियाबाद	6 54	डूंगरपुर	7 04	पटना	6 20	बुलन्दशहर	6 52	रामपुर बुशहर	6 56	हांसी	7 00
ऊधमपुर (का.)	7 07	गुड़गांव	6 55	तिरुपति	6 32	पटियाला	7 00	बून्दी	6 58	रामेश्वरम्	6 29	हिसार	7 01
ऊना	7 01	गुरदासपुर	7 05	थानेसर	6 57	पठानकोट	7 04	वृन्दावन	6 52	रायपुर (म.प्र.)	6 29	हैदराबाद	6 39
एटा	6 48	गुआहाटी	5 54	त्रिवेन्द्रम (के.)	6 38	पाण्डिचेरी	6 29	बठिण्डा	7 05	रिवाड़ी	6 57	होशंगाबाद	6 47
कटक	6 12	गोरखपुर	6 28	दतिया	6 47	पानीपत	6 56	भरतपुर	6 52	रीवां	6 34	होशियारपुर	7 03
		ग्वालियर	6 49										



ग्रस्तोदय चन्द्रग्रहण (28, अग. '07)
84°
88°
36°
32°
28°
24°
20°
16°
(क)
(ख)
नेपाल
भूटान
अरुणा.
आसाम
मेघा.
मणि.
बिहार
बंगलादेश
मिज़ो.
बर्मा
झार.
प. बंगाल
उड़ीसा
(क) (ख) रेखा से दाईं ओर ही यह ग्रहण दिखाई देगा।
परिलेख–प्रियव्रत शर्मा
ग्रस्तोदय चन्द्रग्रहण (28, अग. '07)
उ.
स्पर्श
मोक्ष
प.
पू.
द.
ग्रस्तास्त चन्द्रग्रहण (21, फर. '08)
उ.
स्पर्श
मोक्ष
प.
पू.
द.
ग्रस्तास्त चन्द्रग्रहण (21, फर. '08)
76°
80°
(च)
(छ)
जम्मू–काश्मीर
हि. प्र.
पंजाब
उ. आं.
हरि.
दिल्ली
नेपाल
उत्तर प्रदेश
राजस्थान
गुजरात
मध्य प्रदेश
महाराष्ट्र
आंध्र प्रदेश
कर्णाटक
(च) (छ) रेखा से बाईं ओर ही यह ग्रहण दिखाई देगा।
परिलेख–प्रियव्रत शर्मा

शनि की साढेसाती (बृहत्कल्याणी), ढैया (लघुकल्याणी) और गुरु–राहु का गोचरफल (सं. 2064 वि.)

जन्मकुण्डली में शनैश्चर का शुभग्रह से सम्बन्ध हो अथवा महादशा का अंतर शुभ चल रहा हो, तो ढैया और साढेसाती का अशुभफल कम होता है। यदि चन्द्र, शनि जन्म में अशुभ ग्रहों से युक्त हों तो साढेसाती व ढैया महान् अशुभ, चिंता, अवनति, धनहानि, झगडा, कार्य में विघ्न, रोजगार में कमी, व्यर्थ कलह एवं रोग, पशु–पीड़ा आदि का कारण बनती है। यदि जन्मकुण्डली में शनि अष्टमेश या मारकेश हो तो भी ढैया, साढेसाती विशेष अनिष्ट फलप्रद होती है। यदि जन्म में शनि लग्नेश, पंचमेश, नवमेश होकर 3, 6, 11 में स्थित हो तो सुख–सम्पत्ति मिलती है, व्यापारादि में लाभ होता है। शनि के अष्टकवर्ग में अधिक रेखाएं हों तो शुभ, कम रेखाएं हों तो अशुभ फल निश्चित होता है। **शनिग्रहजन्य नेष्टफल शान्त्यर्थ**–सतनाजा को तेल का हाथ लगाकर पक्षियों को डालना चाहिए या शनिवार को तेल में मुख देखकर उसमें मिष्ठान्न, गुलगुले आदि बनाकर गरीबों को, भैंसे या कुत्ते को दें या बन्दरों को गुड़–चने डालते रहें। अष्टगंध से शुभमुहूर्त्त में बना हुआ शनियंत्र धारण करना **विशेष शांतिप्रद है।**

साढेसाती में प्रत्येक राशि के लिए शनि का अशुभ फल इस प्रकार है–

मेष राशि वालों को बीच के अढाई वर्ष खराब हैं। **वृष** को पहिले अढाई वर्ष, **मिथुन** को अंत के अढाई वर्ष, **कर्क** को बीच के अढाई वर्ष, **सिंह** को पहिले 5 वर्ष, उसमें भी मध्य के अढाई वर्ष खराब हैं। **कन्या** को पहिले 5 वर्ष, उसमें भी मध्य के अढाई वर्ष विशेष अशुभ हैं। **तुला** को आखिर के अढाई वर्ष, **वृश्चिक** को अंतिम 5 वर्ष नेष्ट हैं, उसमें भी मध्य के अढाई वर्ष विशेष अशुभ हैं। **धनु** को प्रारंभ के अढाई वर्ष, **मकर** को पहिले 5 वर्ष, उसमें भी पहिले अढाई वर्ष विशेष खराब हैं। **कुंभ** को आदि एव अन्त के पांच वर्ष, विशेषतः अन्त के अढाई वर्ष अधिक अशुभ हैं। **मीन** को पूरे साढेसात वर्ष नेष्ट हैं, उनमें भी अन्त के अढाई वर्ष विशेष अशुभफल देने वाले होते हैं। **नोटः– नीचे दिए गए कोष्ठकों में जिन राशियों का निर्देश नहीं किया गया है, उन राशि वाले जातकों के लिए कर्क/सिंहराशिस्थ शनि की कालावधि में साढ़ेसाती या ढैया नहीं है,– यह समझ लें।**

विगत संवत् 2063 वि. में 10 जनवरी, सन् 2007 ई. को हस्त नक्षत्र एवं कन्या राशिस्थ चन्द्र के समय शनि 18 घं. 10 मि. (भा. स्टैं. टा.) पर वक्रगति से कर्कराशि में प्रविष्ट हुआ था, जो कि संवत् 2064 वि. में 16 जुलाई, सन् 2007 ई. तक कर्कराशि में ही संचार करेगा।

सं. 2064 वि. में 16 जुलाई, सन् 2007 ई. को आश्लेषा नक्षत्र एवम् कर्क राशिस्थ चन्द्र के समय 4 घं. 38 मि. (भा. स्टैं. टा.) पर शनिदेव सिंह राशि में प्रविष्ट होकर सं. 2064 वि. के अन्त तक सिंह राशि में ही विचरण करेंगे।

कर्क–राशिस्थ शनि की साढ़ेसाती एवं ढैय्या का फल

(सं. 2064 वि. के शुरु से 16 जुलाई, सन 2007 ई. तक)

राशि	ढैया या साढेसाती	पाद	साढेसाती		फल
			किस अंग पर	चढ़ती या उतरती	
मिथुन	साढेसाती	लौह	पाद	उतरती	शारीरिक कष्ट, रक्तपित्त विकार, स्त्रीकष्ट, पशु–हानि, सन्तति कष्ट, व्यवसाय में हानि, राजभय।
कर्क	साढेसाती	ताम्र	हृदय	– –	धन-धान्य समृद्धि, स्त्री-पुत्र सुख, सुख–सम्पत्ति–लाभ, व्यवसाय में प्रगति, शारीरिक सुख।
सिंह	साढेसाती	रजत	मस्तक	चढ़ती	कारोबार में प्रगति, प्रभाव बढ़े, मान मिले, धन–सम्पदा लाभ, मांगलिक कार्य हों, मन प्रसन्न ।
धनु	ढैय्या	ताम्र	– –	– –	धन-धान्य वृद्धि, स्त्री-पुत्र सुख, सुख-सम्पदा-लाभ, कारोबार बढ़े, शारीरिक सुख।
मेष	ढैय्या	सुवर्ण	– –	– –	पारिवारिक कलह, रोगों से कष्ट, घरेलू झंझट, अशान्ति, भारी धनहानि, निजीजन विरोध।

सिंह–राशिस्थ शनि की साढेसाती एवं ढैय्या का फल

(16 जुलाई, सन् 2007 ई. से संवत् 2064 वि. के अन्त तक)

राशि	ढैय्या या साढेसाती	पाद	साढेसाती		फल
			किस अंग पर	चढ़ती या उतरती	
कर्क	साढेसाती	सुवर्ण	पाद	उतरती	पारिवारिक कलह-क्लेश, अनेकविध रोगों से कष्ट, प्रतिदिन उलझनें बढ़ें, मन अशान्त, भारी धनहानि, निजीजन विरोध।
सिंह	साढेसाती	लौह	हृदय	– –	शारीरिक कष्ट, रक्तपित्त विकार, स्त्रीकष्ट, पशु एवं सन्तान को कष्ट, व्यापार में हानि, राजभय।
कन्या	साढेसाती	सुवर्ण	मस्तक	चढ़ती	निजीजन विरोध, शत्रु बढ़ें, गृहक्लेश, अनेकविध रोगों से परेशानी, वृथा व्यय, धननाश।
मकर	ढैय्या	ताम्र	– –	– –	धन-धान्य समृद्धि, स्त्री-पुत्र सुख,सुख-सम्पत्ति लाभ, व्यवसाय में प्रगति,शारीरिक सुख।
वृष	ढैय्या	ताम्र	– –	– –	धन-धान्य समृद्धि, स्त्री-पुत्र सुख, सम्पत्ति लाभ, कारोबार में प्रगति,शारीरिक सुख।

शनि–शान्त्यर्थ शास्त्रीय उपाय

शनि की साढ़ेसाती/ढैय्या के नेष्टफल की शान्ति के लिए शनि के बीज मन्त्र या वैदिक मन्त्र का 23,000 की संख्या में विधिपूर्वक जाप करें। तदुपरान्त दशांश हवनादि करें। शनिवार के दिन सतनाजा दान, लौहपात्र में तैलदान, शनिस्तोत्र का पाठ करना/कराना भी श्रेयस्कर रहता है। इसके अतिरिक्त शुभवेला में 'नीलम' रत्न एवं 'शनियन्त्र' धारण करना भी आश्चर्यजनक रूप से लाभप्रद रहता है। परन्तु रत्नधारण करने से पूर्व शनि के अंशादि का अध्ययन करवाकर किसी दैवज्ञ का परामर्श ले लेना श्रेयस्कर रहेगा।

शनि का बीज मन्त्र– "ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः"।

शनि का वैदिक मन्त्र– "ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये,
शंय्योरभिस्रवन्तु नः"।

शनिजन्य नेष्टफल शान्त्यर्थ शनैश्चर स्तोत्र

पिप्पलाद उवाच–

"ॐ नमस्ते कोण–संस्थाय पिंगलाय नमोऽस्तु ते। नमस्ते बभ्रुरूपाय कृष्णाय च नमोऽस्तु ते।।
नमस्ते रौद्र – देहाय नमस्ते चांतकाय च। नमस्ते यम–संज्ञाय नमस्ते सौरये विभो।।
नमस्ते मन्द – संज्ञाय शनैश्चर नमोऽस्तु ते। प्रसादं कुरु देवेश दीनस्य प्रणतस्य च।।"

इस स्तोत्र को प्रातः पढने से साढेसाती व ढैया की दुःखद पीडा नहीं होती– अनुभूत है।

अथ नवग्रह स्तोत्रम्

जपाकुसुम संकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।।
दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णव संभवम्।
नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम्।।
धरणीगर्भसंभूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं च मंगलं प्रणमाम्यहम्।।
प्रियङ्गु कलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्।।
देवानां च ऋषीणां च गुरुं कांचन–सन्निभम्।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्।।
हिमकुन्द–मृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्।।
नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्त्तण्डसंभूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।
अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्।
सिंहिकागर्भसंभूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्।।
पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम्।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्।।
इति व्यासमुखोद्गीतं यःपठेत्सुसमाहितः।
दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशांतिर्भविष्यति।।
नर –नारी–नृपाणां च भवेद् दुःस्वप्ननाशनम्।
ऐश्वर्यमतुलं तेषामारोग्यं पुष्टिवर्धनम्।।

गुरु के संचार का शुभाशुभ फल

विगत सं. 2063 वि. में 27 अक्तू. 2006 ई. को 22 घं. 21 मि. (भा. स्टैं. टा.) पर **मूल** नक्षत्र एवं धनुस्थ चन्द्र के समय गुरुदेव **वृश्चिक** राशि में प्रविष्ट होकर संवत् 2064 वि. में 22 नवम्बर, 2007 ई. तक **वृश्चिक** राशि में ही संचार करेंगे।

वृश्चिक–राशिस्थ गुरु का शुभाशुभ फल

(27 अक्तूबर, सन्. 2006 ई. से 22 नवम्बर, 2007 ई. तक के लिए)

राशि→	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	धननाश	सम्मान	रोग	सुख	धनहानि	शरीर–कष्ट	धनलाभ	भय	आधि–व्याधि	प्रगति	धनहानि	धनलाभ

संवत् 2064 वि. में 22 नवम्बर, 2007 ई. को 5 घं. 4 मि. (भा. स्टैं. टा.) पर रेवती नक्षत्र एवम् मीनराशिस्थ चन्द्र के समय गुरुदेव धनु राशि में प्रविष्ट होकर संवत् 2064 वि. के अन्त तक धनु राशि में ही विचरण करेंगे।

धनु–राशिस्थ गुरु का शुभाशुभ फल

(22 नवम्बर, सन् 2007 ई. से संवत् 2064 वि. के अन्त तक के लिए)

राशि→	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	धनलाभ	धनहानि	सम्मान	रोग	सुख	धनहानि	शरीर–कष्ट	धनलाभ	भय	आधि–व्याधि	प्रगति	धनहानि

राहु के संचार का शुभाशुभ फल

गत संवत् 2063 वि. में 12 अक्तू. 2006 ई. को 7 घं. 35 मि. (भा. स्टैं. टा.) पर मृगशिरा नक्षत्र एवं मिथुन राशिस्थ चन्द्र के समय राहु कुम्भराशि में प्रविष्ट हुआ था, जो कि संवत् 2064 वि. के अन्त तक कुम्भ राशि में ही रहेगा।

कुम्भ–राशिस्थ राहु का शुभाशुभ फल

(12 अक्तूबर, सन् 2006 ई. से सं. 2064 वि. के अन्त तक के लिए)

राशि→	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	धनलाभ	कलह	दुःख	धननाश	राजभय	महासुख	धनक्षय	अपमान	सौभाग्य	कलह	भय	विनाश

आकाशी कौंसिल का विचार(सं. 2064 वि.)

(संसार की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक स्थिति का ग्रहगोचर के आधार पर सर्वेक्षण)

- इस संवत् का राजा चन्द्र एवं मन्त्री शनि होने से उग्रवादजन्य अशान्ति का साम्राज्य विकरालरूप धारण करेगा।
- 2 जून से 16 सितम्बर तक भूकम्प, समुद्री तूफान से विनाश एवं मुस्लिमराष्ट्रों में हिंसक घटनाओं से राज्य परिवर्तन व रक्तपात के योग हैं।
- बंगलादेश, पाकिस्तान, नेपाल से उग्रवादियों के प्रवेश से भारत के सीमावर्ती क्षेत्रों में भारी हानि के योग हैं। भारत सरकार विशेष प्रावधान एवं उपाय सोचने पर मजबूर हो।
- विधानसभा के निर्वाचन क्षेत्रों में भाजपा की स्थिति कमज़ोर, भाजपा के सहयोगी अंगों का 'भाजपा से मोहभंग।
- अफगानिस्तान, पाक, इराक, बंगलादेश में राजनैतिक हत्याकाण्ड एवं कहीं आंतरिक क्रान्ति से सत्तापरिवर्तन।
- राष्ट्रीय जनतांत्रिक–गठबन्धन, सत्तारूढ़–दल में मतभेद एवं असन्तोष बढ़े; प्रधाननेता को जटिल–चक्रव्यूह से निकलना पड़ेगा।
- कहीं बाढ़ तो कहीं भारी सूखे से जनता परेशान। किसी रोग–विशेष, यानदुर्घटना से भी जनता को कष्ट उठाना पड़े।
- इसवर्ष राजनैतिक अप्रिय घटनाचक्र में किसी नेता के अवसान की व्यथा को झेलना पड़े।
- सीमाप्रान्तों पर शत्रुदेश की कुनीति से सावधान सैन्यबल को मज़बूत करना पड़े।

परस्पर आकर्षण–विकर्षण से प्रभावित ये अनन्तकोटि खगोलीय पिण्ड अपनी वक्र–मार्ग गति द्वारा इस पृथ्वी किंवा सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के क्रिया–कलाप को प्रभावित करते हुए, प्रतिपल ग्रहगतिजन्य प्रभावों से पृथ्वी के अन्तर्गत परिवर्तनों से ज्योतिषशास्त्र की वैज्ञानिकता का साक्षित्त्व अनन्तकाल से प्रस्तुत करते आ रहे हैं। भूगर्भशास्त्री, वनस्पति–प्राणीशास्त्र–विज्ञानी एवं खगोलशास्त्री भारतीय तथा विदेशीय–वैज्ञानिक भी पृथ्वी एवं प्रत्येक पिण्ड की आकर्षण–विकर्षण शक्ति को नकार नहीं सकते। पृथ्वी की आकर्षण–शक्ति का ज्ञान न्यूटन से पहिले श्री भास्कराचार्य जी को था, जिन्होंने **"आकृष्ट शक्तिश्च महीतया यत् खस्थं गुरुः स्वाभिमुखं स्वशक्त्या"**–कहकर पृथ्वी की आकर्षण शक्ति का सिद्धान्त स्थापित किया था।

जगतपिता की अदृश्य अलौकिक शक्ति ही ब्रह्माण्ड को प्रभावित करती है, संचालित करती है। ग्रहगतिजन्य इस परिणाम को हम "भवितव्यता" किंवा **"ईश्वरेच्छा"** कहकर स्वीकार करते हैं;–

**"अवश्य–भव्येष्वनवग्रह–ग्रहाः यया दिशा धावति वेधसः स्पृहा।
तृणेन वात्येव तयानुगम्यते लोकस्य चित्तेन भृशावशात्मनः।।"**–(*नैषधचरित*)

अर्थात्– ग्रहगतिवश प्रभावित समाज, व्यक्ति एवम् देश की स्थिति तीव्र वायुवेग से प्रभावित तृण की भान्ति होती है, जो कि एक क्षण में ही अपने अस्तित्व को खोकर वायुवेग से प्रताडित होकर तदनुसार चलने को विवश हो जाता है। स्पष्ट है– उस अज्ञात–परोक्ष अलौकिक शक्ति के परिचायक अनन्तकोटि तारों एवम् ग्रहों के अदृश्य संकेत से संचालित–ब्रह्माण्ड में समय–समय पर भूकम्प, उल्कापात, समुद्री तूफान, ज्वालामुखी–विस्फोट, जन–जीवन में उग्र–विनाशक–घटनाएं आदि स्पष्ट अनुभव की गई हैं। ये घटनाएं क्यों घटित होती हैं ? इसके पीछे कौन सी शक्ति है, जो ग्रहनक्षत्रों को संचालित करती है एवम् वह ग्रहजन्य आकृष्ट–शक्ति, जो मनुष्य के कर्माकर्म को नियन्त्रित करती है– इस जिज्ञासा ने ही आदिकाल से मानव को चिन्तन के लिए विवश किया है। परिणामतः **'ज्योतिषशास्त्र'** का उद्गम हुआ।

यह बात भी नितांत सत्य है, कि ग्रहों की प्राकृतिक व्यवस्था में तनिक भी रूपान्तर होने से दिग्दाह, उल्कापात, भूकम्प, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, युद्ध, महामारी, अराजकता आदि उपद्रवों से संसार त्रस्त हो जाता है। अतः स्पष्ट है, कि– **आकाशीय पिण्डों (ग्रहों) का विश्वजनीन घटनाचक्र से कुछ सम्बन्ध अवश्य है। इस तथ्य को वैज्ञानिक, विचारक एवं बुद्धिजीवियों का एक बड़ा वर्ग स्पष्ट स्वीकार करता है।**

इस पृथ्वी पर जो कुछ भी घटित होता अनुभव करते हैं, वह सब ग्रहों के वक्र-मार्ग आदि का ही परिणाम है। इस ग्रहगणितजन्य संकेत के आधार पर ही अपनी मति के अनुसार विश्व में जो भी प्रतिवर्ष घटित होता है, " श्रीमार्त्तण्ड पंचांग " के माध्यम से प्रिय पाठकों के समक्ष उपस्थित करते हैं और यह इस प्रकाशन का 80वां गौरवपूर्ण वर्ष प्रारम्भ हो रहा है।

श्री वि. संवत् 2064 की ग्रहस्थिति के अनुसार विश्वजनीन घटनाओं की भविष्यवाणी प्रस्तुत करने से पहिले हम अपने विद्वान् प्रबुद्ध पाठकों का आभार व्यक्त कर देना उचित समझते हैं, जिन्होंने लगातार 79 वर्षों तक हमारी भविष्यवाणियों का सही मूल्यांकन करके हमें आज 80वें वर्षप्रवेश पर भी इस बारे में कुछ लिखने को प्रोत्साहित किया है। पाठको ! आपका यह पंचांग अपनी सर्वांगशुद्ध गणित एवं आश्चर्यजनक भविष्यवाणियों के लिए भारत में ही नहीं, विदेशों में भी विश्रुत हो चुका है।

आपके इस लोकप्रिय पंचांग में प्रतिवर्ष प्रकाशित होने वाली आश्चर्यजनक अव्यभिचरित भविष्यवाणियों में साधारणवर्ग के व्यक्ति से लेकर प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, भारतरत्न श्री जवाहरलाल नेहरु, श्रीमती इन्दिरा गांधी एवं अन्य गण्यमान्य प्रतिष्ठित ऐतिहासिक महापुरुषों की अभिरुचि रही है। आज भी यह पंचांग अपनी सफल, आश्चर्यचकित कर देने वाली भविष्यवाणियों के कारण तथा ग्रहण आदि पंचांग-गणित की सूक्ष्मता एवं शुद्धि के कारण भारत में ही नहीं, विदेशों में भी लोकप्रिय है और भारत में अग्रणी स्थान प्राप्त कर चुका है।

भारत-पाक विभाजन; बंगलादेश का अस्तित्व में आना; श्री जवाहरलाल नेहरु, श्रीलालबहादुर शास्त्री, श्रीमती इन्दिरागांधी के शासन का अंत एवं मृत्यु की सूचना; भारत-पाक युद्ध; भारत-चीन युद्ध; विदेशों में घटित होने वाले महत्त्वपूर्ण घटनाचक्र; समय-समय पर भारत की राजनीति में विशेष परिवर्तनों एवं अन्य घटनाचक्र की सूचना किंवा ऐतिहासिक भूकम्प; गुजराल सरकार का अपदस्थ होना, भाजपा सरकार के विरुद्ध अविश्वास प्रस्ताव पारित होना; पाक में श्री नवाज़शरीफ की सरकार का तख्तापलट; अमेरिका में वर्ल्डट्रेड सेंटर एवं पेंटागन पर उग्रवादियों का हमला, अमेरिका की कोलम्बिया आन्तरिक शटलयान दुर्घटना; इराक पर अमरीकी हमला और सद्दाम हुस्सैन शासन का अन्त; नेपाल में माओवाद से अशान्ति एवं राजशाही का अन्त; अमेरिका के भूतपूर्व राष्ट्रपति श्री रीगन की मृत्यु; संवत् 2061 वि. में भाजपा एवम् N.D.A. शासन का तख्तापलट एवम् भारत के लोकसभा निर्वाचनों में त्रिशंकु शासनसत्ता की भविष्यवाणी के अतिरिक्त असंख्य अवाक् कर देने वाली सफल भविष्यवाणियां कर देने का शीर्षस्थ स्थान केवल 'श्रीमार्त्तण्ड पंचांग' को ही प्राप्त हुआ है। इस प्रकार अव्यभिचरित भविष्यवाणियों के लिए यह पंचांग सम्पूर्ण भारत किंवा विदेशों में भी ख्यातनामा हो चुका है।

सं. 2064 वि. की ग्रहस्थिति के आधार पर भावी घटनाओं पर विचार करने से पूर्व सभी स्तब्ध कर देने वाली भविष्यवाणियों की चर्चा करना तो स्थानाभाव के कारण संभव नहीं है, लेकिन गत एक-दो वर्षों की कुछ भविष्यवाणियों की चर्चा करना प्रासंगिक समझते हैं, ताकि फलितशास्त्र की प्रामाणिकता को स्थापित किया जा सके।

सं. 2063 वि. के श्रीमार्त्तण्ड पंचांग के प्रकाशित होने के बाद घटित सं. 2062 एवम् 2063 वि. की आश्चर्यचकित कर देने वाली अव्यभिचरित भविष्यवाणियों की चर्चा हम किए बिना नहीं रह सकते, क्योंकि निम्नांकित भविष्यवाणियों की सफलताओं ने फलितशास्त्र पर आक्षेप करने वाले व्यक्तियों को भी अवाक् कर डाला है। संक्षेपण उन भविष्यवाणियों में कुछेक की चर्चा कर देना प्रासंगिक समझते हैं—

(1) तामिलनाडु, आन्ध्रप्रदेश, अण्डेमान-निकोबार में प्रलयंकारी समुद्री तूफान ने 26 दिसम्बर, 2004 ई. को मानवता को दहला दिया। भारत, श्रीलंका, इण्डोनेशिया, मलेशिया, मालदीप, म्यांमार, सोमालिया में सुनामी लहरों से भारी प्रलयंकारी तबाही से लाखों व्यक्तियों का जीवन समाप्त हो गया एवम् अरबों रुपये की आर्थिक हानि उठानी पड़ी है। इस ऐतिहासिक भविष्यवाणी को **श्रीमार्त्तण्ड पंचांग** सं. 2061 वि. के पृष्ट 33 पर कॉलम 1 की प्रारम्भिक पंक्तियों में इस प्रकार लिखा गया था—

भविष्यवाणी— " 27 नवम्बर से 26 दिसम्बर '04 ई. तक की अवधि में अमेरिका, चीन, जापान, किसी मुस्लिम देश एवं भारत के दक्षिण या उत्तरी भूभाग में भूकम्प, समुद्री तूफान आदि प्राकृतिक प्रकोप से भारी जनधनहानि के योग हैं।"

ठीक, इस भविष्यवाणी के अनुसार **'26 दिसम्बर, 2004 ई.' को सुनामी लहरों के कहर से तबाही** होने पर पंचांग में उल्लिखित भविष्यवाणी को पढ़कर हजारों व्यक्तियों ने टेलीफोन द्वारा **'श्रीमार्त्तण्ड पंचांग'** की इस भविष्यवाणी पर आश्चर्यपूर्वक फलितशास्त्र की सत्यता को स्वीकारा है।

(2) भविष्यवाणी— " 24 मार्च (2005 ई.) को राहु मीन में प्रवेश करके शुक्र-सूर्य-बुध के साथ मेल करेगा। यह सारी ग्रहस्थिति संवत् 2061 वि. के अन्तिम मासों में अघटित घटनाओं को जन्म देगी। कुछ प्रतिष्ठित व्यक्ति दुर्घटनाग्रस्त होंगे। भयंकर प्राकृतिक आपदा, भूकम्प आदि से भारी कष्ट, जनधनहानि का संकेत मिलता है।

(श्रीमार्त्तण्ड पंचांग सं. 2061 वि., पृष्ठ 33, कॉलम 1, अन्तिम संदर्भ)

(i) इस भविष्यवाणी की सत्यता 28 मार्च, 2005 ई. को इण्डोनेशिया के सुमात्रा द्वीप पर भयंकर भूकम्प से प्रमाणित हुई, जिसमें लगभग 20 हजार से भी अधिक व्यक्तियों की जीवनलीला समाप्त हुई।

(ii) इन्हीं दिनों में **22, 23 फरवरी को ईरान में भूकम्प** से 400 से अधिक व्यक्ति कालवश हुए और लाखों को घरबार छोड़ना पडा।

(iii) 1 फरवरी (2005 ई.) को **नेपाल में इमर्जेंसी लागू की गई, राजा** ने शासनसत्ता अपने हाथ में ली।

इस प्रकार सं. 2061 वि. का अन्तिम चरण अघटित एवम् दुःखद घटनाओं वाला सिद्ध हुआ। इन उल्लिखित भविष्यवाणियों से भी फलित ज्योतिष की प्रामाणिकता सन्देह से परे हो जाती है।

(3) भविष्यवाणी— "24 जून से 17 जुलाई तक शनि, मंगल, शुक्र— तीनों **कर्क राशि में संचार करेंगे। 5 जुलाई को शनि अस्त होगा एवं 6 जुलाई को बुध, शुक्र— दोनों**

आश्लेषा नक्षत्र में प्रविष्ट होंगे। 23 जुलाई को बुध वक्री होगा एव 29 जुलाई को वक्री बुध अस्त हो जाएगा। अतः जून–जुलाई मास विश्व में अघटित घटनाओं को जन्म देंगे। अफगानिस्तान, अमेरिका, भारत, चीन, पाकिस्तान, ब्रिटेन में कुछ विशेष उलझनें पेश होंगी। कहीं किसी विशिष्ट व्यक्ति के निधन का समाचार मिलेगा। कहीं सत्तापरिवर्तन भी संभव है।"

(श्रीमार्त्तण्ड पंचांग स. 2062 वि. पृष्ठ 26, कॉलम 1)

इस भविष्यवाणी के अनुसार –

(i) 7 जुलाई को बम्बधमाकों से लण्डन कांप उठा– लगभग 45 की मृत्यु और 3000 के करीब घायल।

(ii) 21 जुलाई को लण्डन मे पुनः बम्बधमाके, लगभग 58 लोगो की मृत्यु।

इस प्रकार की घटनाओं से उक्त भविष्यवाणी सत्यापित हुई।

(4) भविष्यवाणी– अमेरिका, चीन, जापान किंवा कहीं पर्वतीय भूभाग पर भूकम्प, भूस्खलन आदि प्राकृतिक प्रकोप से भारी हानि हो।

(श्रीमार्त्तण्ड पंचांग स. 2062 वि., पृष्ठ 106, पाक्षिक फलादेश–भाद्रपद कृष्ण पक्ष, 30 अग. से 3 सित. तक)

30 अगस्त को चक्रवाती तूफान कैटरीना से अमेरिका में भारी विनाश हुआ। चक्रवाती तूफान के कारण न्यू ओरलियंस और दूसरे स्थानों पर बाढ का पानी घरों की छतों तक पहुच गया, 10 लाख से ज्यादा लोग प्रभावित हुए।

(5) भविष्यवाणी– जुलाई 2005 ई. से फरवरी 2006 ई. तक की गोचर ग्रहस्थिति के मुताबिक (विशेषतः 3 अक्तूबर से 7 दिसम्बर 2005 ई. की अवधि के अन्तर्गत त्रयोदश दिनात्मक पक्ष में) इस वर्ष सेनाधिकारी मंगल का वक्रत्व एवं गुरु का अतिचारी होना भारत में भयावह परिस्थितियों को जन्म देगा। इसी मध्य 22 नवम्बर को शनि का वक्र होना एवं 6 दिसम्बर को प्लूटो का धनुराशि में संचार भी अघटित घटनाओं को जन्म देगा। इस वर्ष नेपाल (भारत के सीमावर्ती मित्रदेश) के गृहयुद्ध की चपेट में आ जाने के योग हैं। यहां पूर्व सत्ताभोगी कोइराला की पार्टी राजशाही के उन्मूलन की प्रक्रिया में लगेगी। नेपाली कम्यूनिस्ट पार्टी मिली–जुली सरकार में भागीदार होने पर भी सिद्धान्त–भिन्नता नज़र आएगी। राजशाही यहां खतरे में पड़ सकती है। इस प्रकार नेपाल की आन्तरिक अशान्ति से भारत का सीमाप्रान्त भी अशान्त हो उठेगा। अपने पड़ौसी देशों से सम्बद्ध अन्तर्राष्ट्रीय हितों को मद्देनज़र रखते हुए अपने बल पर आतंकवाद का दलन करना होगा।

(श्रीमार्त्तण्ड पंचांग सं. 2062 वि. पृष्ठ 31, कॉलम 2)

ठीक, इस भविष्यवाणी के अनुसार नेपाल मे गृहयुद्ध जैसी स्थिति बनी एवम् राजशाही समाप्त हुई और नेपाल एक प्रजातन्त्र के रुप में सामने आया है।

(6) "मुस्लिम राष्ट्र" शीर्षक के अन्तर्गत (**'श्रीमार्त्तण्ड पंचांग'** सं. 2062 वि., पृष्ठ 27, कॉलम 2 पर) लिखा था– **"मुस्लिमराष्ट्रों की नववर्ष कुण्डली में शनि–मंगल का परस्पर दृष्टिसम्बन्ध एवं जुलाई, 2005 ई. से फरवरी, 2006 ई. के मध्य शनि–मंगल का दशम–चतुर्थ–दृष्टिसम्बन्ध होने से मुस्लिमराष्ट्रों बंगलादेश, पाकिस्तान, इराक, ईरान, फिलिस्तीन आदि में कहीं प्रधान नेता की हत्या का सफल प्रयास हो सकता है।"**

ठीक, इस भविष्यवाणी के अनुसार निम्नांकित घटनाएं स्पष्ट उभर कर सामने आई–

(i) 23 जुलाई को मिश्र मे बम्बधमाके हुए। लगभग 88 लोगों की मृत्यु हुई और 200 से अधिक घायल हुए।

(ii) 14 अगस्त को श्रीलंका मे इमर्जेसी घोषित की गई एवम् विदेशमन्त्री की हत्या कर दी गई।

(iii) 1 सितम्बर को बगदाद में भगदड में 1000 से भी अधिक व्यक्ति मारे गए।

(7) भविष्यवाणी– प्रधानमन्त्री श्री मनमोहन सिंह जी की शपथग्रहणकालीन कुण्डली के अनुसार दशमभावेश चन्द्र शनि–मंगल एवं शुक्र तीन–तीन क्रूरग्रहों से आक्रान्त है। अतः गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार कांग्रेस पार्टी एवं प्रधान नेता के लिए जुलाई 2005 ई. से फरवरी सन् 2006 ई. तक की ग्रहस्थिति चुनौतीपूर्ण रहेगी।

स्पष्ट है, कि कुछ वामपन्थी दलों द्वारा कार्यशैली में अनेक बाधाएं उपस्थित हो रही हैं, चुनौतीपूर्ण समय का सामना करना पड रहा है। परन्तु भगवान् इन्हें सफल यशस्वी ही रखेंगे।

(8) भविष्यवाणी– श्रीमती सोनिया गांधी के बारे में लिखा था– **"श्रीमती सोनिया गांधी के जन्माङ्ग में भाग्येश गुरु की कर्मस्थान पर दृष्टि है एवं कर्मेश मंगल की भाग्यस्थान पर विशेष दृष्टि होने से ग्रहस्थिति लघुपाराशरी के अनुसार कांग्रेस पार्टी एवं कांग्रेस अध्यक्षा के लिए विशेष गरिमामय छवि को बनाने वाली है।"**

इस भविष्यवाणी की सफलता के बारे में कुछ कहने या लिखने की आवश्यकता नही। श्रीमती सोनिया गांधी की छवि राजनैतिक जगत् में आज सर्वोच्च है– ' लाभपद' के मसले पर पदत्याग करके पुनः विजयश्री का वरण करके ये अधिक गरिमा को प्राप्त कर गए है, इसमें सन्देह नहीं।

विश्व परिपेक्ष्य में की गई सं. 2062–63 वि. में सत्यसिद्ध कुछेक भविष्यवाणियां

(1) श्री प्रमोद महाजन (भाजपा नेता) की हत्या।

भविष्यवाणी–" वैशाख मास में पांच शुक्रवार एवम् पांच शनिवार होने से .... किसी विशिष्ट व्यक्ति की हत्या व निधन से वातावरण क्षुब्ध हो।"

(श्रीमार्तण्ड पंचांग सं. 2063 वि., पृष्ठ 29, कॉलम 2, प्रथम स्टैंजा)

इस भविष्यवाणी के अनुसार भाजपा नेता और भूतपूर्व केन्द्रीयमन्त्री श्री प्रमोद महाजन पर 22 अप्रैल, 2006 को कातिलाना हमला हुआ एवम् वैशाख मास में ही श्री महाजन के स्वर्ग सिधारने से राजनैतिकदल स्तब्ध रह गए।

(2) हरियाणा के भूतपूर्व मुख्यमन्त्री श्री बंसीलाल जी का मार्च में निधन।

भविष्यवाणी– " 2 से 25 मार्च सन् 2006 ई. तक बुध, गुरु, शनि– ये तीनों ग्रह वक्री रहेंगे।........... किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति का निधन, हत्या अथवा सत्ता परिवर्तन संभव है।

(श्रीमार्तण्ड पंचांग सं. 2062 वि., पृष्ठ 31, कॉलम 2, अन्तिम पंक्तिया)

(3) 27 मई, 2006 ई. को इण्डोनेशिया में भूकम्प, 550 व्यक्तियों की मृत्यु।

भविष्यवाणी–"मई से 13 जुलाई तक कुछ देशों में भारी वर्षा, समुद्री तूफान, जलाप्लाव, अग्निकाण्ड किंवा यानदुर्घटना या अन्यविध कुदरती आफात से भारी जनधन–हानि के योग बनते हैं।"

(श्रीमार्तण्ड पंचांग सं. 2063 वि., पृष्ठ 25, कॉलम 2,)

(4) 11 जुलाई, 2006 ई. को मुम्बई में ब्लास्ट, 200 व्यक्तियों की मृत्यु– 800 से अधिक घायल।

भविष्यवाणी–" मई से जुलाई (2006 ई.) की समयावधि में कहीं भयंकर अग्निकाण्ड (बमकाण्ड)........से भारी जनधनहानि के योग हैं।"

(5) 17 जुलाई, 2006 ई को इण्डोनेशिया में **सुनामी लहरों (समुद्री तूफान)** से विनाश, 525 से अधिक की मृत्यु, सैकड़ों लापता।

भविष्यवाणी–"13 जुलाई को मंगल सिंह राशि में आकर शनि से अलग हो जाता है। लेकिन 16 जुलाई को सूर्य कर्क राशि में आकर अपने परम शत्रु शनि के साथ एकराशिसम्बन्ध बना लेता है। मंगल–राहु का षडष्टकयोग भी बन रहा है। 5 से 23 अगस्त तक कर्कराशि में चतुर्ग्रहीयोग भी बन रहा है। इस समय किसी देश/भूभाग पर शक्तिशाली भूकम्प/प्राकृतिक प्रकोप या यानदुर्घटना से हानि के योग हैं– ईश्वर रक्षा करें। सिंह संक्रान्ति एवम् भाद्रपदी अमावस दोनों बुधवार को होने से भाद्रपद कृष्ण पक्ष में 'खप्पर योग' बन रहा है, जो कि जनधनहानि एवम् प्राकृतिक प्रकोप से फसलों को नुक्सान पहुंचाएगा–"

(श्रीमार्तण्ड पंचांग सं. 2063 वि., पृष्ठ 30, कॉलम 1, पैरा 4)

इसी दौरान चीन में TROPICAL तूफान में सैंकड़ो कालकवलित हुए।

9 अग., 2006 ई. को गुजरात में बाढ़ से एक करोड़ लोग प्रभावित हुए। लगभग पांच हजार करोड़ रु. से अधिक की फसलों एवम् अन्य सम्पत्ति का नुक्सान हुआ।

(6) 27 सितम्बर, 2005 ई. को चीन में भयंकर तूफान, एक लाख, सत्तर हजार व्यक्ति बेघर हुए।

भविष्यवाणी– "6 सितम्बर से 2 अक्तूबर 2005 ई. तक शुक्र–मंगल एवं गुरु–राहु का समसप्तकयोग चल रहा है। शनि–मंगल का दशमचतुर्थ–दृष्टिसम्बन्ध चल ही रहा है। .... कहीं भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोप से जनधनहानि का योग बनता है।"

(श्रीमार्तण्ड पंचांग सं. 2062 वि., पृष्ठ 31, कॉलम 2, दूसरा स्टैंजा)

(7) 8 अक्तूबर, सन् 2005 ई. को ज़बरदस्त तूफान से भारी विनाश, पाकिस्तान में 30,000 एवम् भारत में 600 से अधिक की मृत्यु।

भविष्यवाणी– "मुस्लिमराष्ट्रों की नववर्ष कुण्डली में शनि–मंगल का परस्पर दृष्टिसम्बन्ध एवं जुलाई, 2005 ई. से फरवरी, 2006 ई. के मध्य शनि–मंगल का दशम–चतुर्थदृष्टिसम्बन्ध मुस्लिमराष्ट्रों, पाकिस्तान, ईरान, आदि में कहीं प्रधान नेता की हत्या का सफल प्रयास हो सकता है। इस अवधि में प्राकृतिक प्रकोप से जनधनहानि भी सम्भव है।"

(श्रीमार्तण्ड पंचांग सं. 2062 वि., पृष्ठ 27, कॉलम 2, पहले स्टैंजे की 8 लाईन से आगे।)

(8) **भविष्यवाणी–"इस वर्ष की गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार भारत की प्रगति कठिन परिस्थितियों में भी अवश्यंमावी है। लेकिन यूरेनस, नेप्च्यून, प्लूटो, शनि, राहु, मंगल की गोचर ग्रहस्थिति से पड़ोसी देशों में पनप रहा आतंकवाद भयंकर परिणामों वाला सिद्ध होगा। जेहादी नेता पाक, बंगलादेश, अफगनिस्तान सीरिया, इराक, ईरान में प्रधान नेताओं के लिए खतरा बन जाने के योग हैं। दक्षिणी एशिया में कोई भी देश ऐसा नहीं, जिसे आतंकवाद का खतरा न हो परन्तु सबसे अधिक खतरा पाकिस्तान, बंगलादेश, नेपाल को है। यहां प्रमुख हत्याकाण्ड होने की सम्भावना है। "** *(श्रीमार्तण्ड पंचांग सं. 2063 वि., पृष्ठ 30, कॉलम 1, स्टैंजा 3)*

इस भविष्यवाणी की सत्यता का परिणाम मुम्बई एवम् दिल्ली में सीरीयल ब्लास्ट हैं। इराक में अब भी प्रतिदिन अमेरिका के विरुद्ध उपद्रव होते रहते हैं। प्रतिदिन सैंकड़ों व्यक्ति विस्फोटों से मर रहे हैं। एशिया आतंकग्रस्त है।

(9) भविष्यवाणी– " 6 जुलाई गुरुवार को स्वाती नक्षत्र में गुरु मार्गी हो रहा है। ध्यान दें;– गुरु ग्रह, जो कि संवत् का राजा है, संवत् के शुरु से ही वक्री चल रहा था। यह बात भी नोट करने लायक है, कि– इस संवत् की शुरुआत सूर्यग्रहण से लगभग एक घंटा पहले ही हो रही है, अतः वर्षेश गुरु की राशि में सूर्यग्रहण होने से प्रधान नेता को काफी विषम परिस्थितियों में से निकलना पड़ेगा– यह संकेत स्पष्ट है। संवत् के मध्य में इराक का मसला फिर उभरेगा और वहां गृहयुद्ध न होकर अमेरिका के खिलाफ चक्रव्यूह रचा जा सकता है, जिसमें भारत को भी शान्त्यर्थ प्रयास करने होंगे। शनि–मंगल के इस एकराशिसम्बन्ध में बंगलादेश के जेहादी आतंकवादी एवम् नेपाली माओवादी सीमाप्रान्तों पर

शान्तिभंग करेंगे किंवा मिज़ोरम, नागालैण्ड, आसाम आदि में भी वातावरण अशान्त होगा। शान्त्यर्थ सरकार को कठोर पग उठाने पड़ेंगे।

(श्रीमार्तण्ड पंचांग सं. 2063 वि. पृष्ठ 30, कॉलम 1, स्टैंजा 2)

प्रधानमन्त्री श्री मनमोहन सिंह जी के समक्ष वामपन्थी दलों द्वारा अमेरिका के साथ न्यूक्लीयर डील के बारे विषम स्थिति पैदा की गई। इराक एक समस्या अभी भी बना हुआ है। आतंकवाद को दबाने के लिए कठोर पग उठाने पर मजबूर होना पडेगा।

इस प्रकार प्रतिवर्ष अनेकों आश्चर्यचकित कर देने वाली अव्यभिचरित भविष्यवाणियों की सफलता का श्रेय 79 वर्षों से आपके इस लोकप्रिय पंचांग को प्राप्त होता आ रहा है। सभी सफल भविष्यवाणियों का उल्लेख/चर्चा करना स्थानाभाव के कारण यहां संभव नहीं।

पाठको ! श्रीमार्तण्ड पंचांग के माध्यम से की गई या की जा रही भविष्यवाणियों की सफलता का श्रेय जो आप हमें दे रहे हैं, वह सब पूर्वाचार्यों एवं ज्योतिषशास्त्र के मर्मज्ञ गुरुचरणों की कृपा ही है या जनताजनार्दन के सौहार्द का परिणाम। हम उन पाठकों के भी आभारी हैं, जो विभिन्न प्रान्तों से पत्राचार द्वारा भविष्यवाणियों की सफलता पर बधाई भेजकर हमें भावी वर्षों में ग्रहगतिजन्य संकेतों के आधार पर कुछ न कुछ लिखने के लिए प्रेरित करते रहते हैं।

संवत् 2064 वि. की ग्रहपरिषद् के अधिकारियों का विश्व पर प्रभाव

विज्ञान कार्य–कारण के सिद्धान्त पर आधारित है। परन्तु असंख्य घटनाएं ऐसी हैं, जिनका कारण समझने एवं समझाने में चोटी के वैज्ञानिक अपने आपको सर्वथा असमर्थ पा रहे हैं। सिद्धांतों के व्यभिचारमात्र से ज्योतिष शास्त्र की वैज्ञानिकता का प्रतिवाद नहीं किया जा सकता। ज्योतिष चिरन्तन सत्य–सिद्धांतों पर आधारित एक विज्ञान है, जिसमें अभी अत्यधिक अनुसंधान की आवश्यकता है।

जिस तरह पृथ्वी पर लोकतांत्रिक राज्य की स्थापना के लिए प्रधानमंत्री आदि के चुनाव होते हैं और उन निर्वाचित व्यक्तियों के गुण–कर्म–स्वभाव–योग्यता का प्रभाव उनके अधिकृत क्षेत्रों एवम् शासनतंत्र पर पडता है, इसी प्रकार अखिलेश्वर प्रभु की इच्छा **से निर्मित आकाशीय शिशुमार चक्रस्थ ग्रहों की परिषद् में संसारचक्र को चलाने के लिए प्रतिवर्ष दिव्य एवं अद्भुत शक्तिमती आकाशी कौंसिल का निर्माण होता है। इस आकाशीय कौंसिल में ग्रहों की शुभाशुभ प्रकृति के अनुकूल संसार में जो उलट–फेर एवं अघटित घटनाएं होती हैं,** इस घटनाचक्र को त्रिकालज्ञ दैवज्ञों द्वारा लिखित ग्रन्थों के आधार पर वि. सं. 2064 कहीं ग्रहस्थिति के अनुसार कुछ लिखने की चेष्टा कर रहे हैं।

संवत् 2064 वि. में पांच पद शुभ ग्रहों को एवम् पांच पद क्रूर ग्रहों को प्राप्त हुए है। पदगणना के आधार पर यह परिषद् सन्तुलित सत्ता वाली मालूम देती है। लेकिन शुभग्रह चन्द्र को ही चार पद प्राप्त हैं। शुभग्रहों में केवल एक सीट ही बुध ग्रह को प्राप्त है। कहने का तात्पर्य यह है कि– शुभग्रहों का बल बहुत क्षीण है। अशुभ ग्रहों में दलितवर्ग का प्रतिनिधि शनि, जो मन्त्री पद पर आसीन है एवम् सूर्य एवम् शुक्र– ये तीनों ग्रह चन्द्र–बुध से अधिक शक्तिशाली हैं।

अब इन ग्रहों की गतिविधि एवम् क्रिया–कलाम पर दृष्टिपात करते हैं।

चन्द्रमा को यद्यपि संवत् अधिप, सस्येश, नीरसेश एवम् धनेश–ये चार पद प्राप्त हैं। शुभ ग्रह बुध को केवल रसेश पद ही प्राप्त है। इस ग्रहपरिषद में शनि, सूर्य एवम् शुक्र– ये तीनों विपक्षी ग्रह बहुत सशक्त एवम् प्रभावशाली हैं।

मन्त्री पद पर शनि का आधिपत्य भारी उलट–फेर कर सकता है। शनि के मित्रग्रह शुक्र को मेघेश, फलेश, दुर्गेश– ये तीन पद प्राप्त हैं। शनि के पिता किंवा शत्रु ग्रह सूर्य को केवल धान्येश पद ही प्राप्त है। संकेत मिलता है, कि– **शुक्र वामपन्थी दलों का एवम् शनि दलितवर्गों का प्रतिनिधित्व करके सत्ता के भागीदार होने पर भी प्रधान नेता के समक्ष सिद्धान्त–भिन्नता एवम् राजनैतिक स्वार्थपरकता के कारण कहीं शासनसत्ता में परिवर्तन ला सकते हैं। अनेक राष्ट्रों में राजनैतिक मतभेद, उलट–फेर किंवा कटुतामय वातावरण बनेगा। कहीं आन्तरिक शान्ति भंग होगी। शुक्र–शनि की स्थिति मुस्लिमराष्ट्र–विशेष में कहीं उग्रवादजन्य राजनयिक हत्याकाण्ड, कहीं युद्धपरक नीति, आन्तरिक अशान्ति का कारण बनेगी।**

इस वर्ष मंगल एवम् गुरु को कोई पद प्राप्त नहीं है। शनि ग्रह मन्त्री पद पर रहते हुए संवत्सरेश चन्द्र की सत्ता एवं सामर्थ्य को क्षीण कर देता है। सेना आयुध प्रक्षेपणास्त्र के स्वामी दुर्गेश शुक्र की स्थिति भी शनि के साथ मेल खाती है। सत्तासम्पन्न देश मुस्लिम राष्ट्रों को शस्त्रास्त्र प्रदान करके युद्धाग्नि में झोंकने की ताक में रहेंगे। मुस्लिमराष्ट्रों में उग्रवाद भयंकर रूप धारण करेगा, जिसका समाधान सहज संभव न होगा।

इस संवत् का राजा चन्द्र सस्येश, नीरसेश एवम् धनेश भी है, अतः प्रजा में आनन्द मंगल रहे, वर्षा पर्याप्त होगी। प्रधान नेता का मन्त्रीपरिषद् के साथ विशेष तालमेल न होगा।

इस संवत् का मन्त्री शनि होने से उग्रवाद एवम् अनैतिक तत्त्व अधिक जोर पकड़ेंगे। मुस्लिम राज इराक, अफगानिस्तान, पाक, ईरान, फिलस्तीन आदि में आन्तरिक उपद्रव, हत्याकाण्ड, भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोप से विशेष हानि होगी। कहीं वर्षा की कमी रहे; अकाल की स्थिति बने।

इस वर्ष धान्येश सूर्य होने से मूंग, मोठ, बाजरा आदि फसल खराब हों, मंहगाई जोरदार होगी। राजनीतिज्ञों में परस्पर वैमत्य, जनता में नानाविध रोगों से परेशानी रहे।

इस संवत् में मेघेश, फलेश एवम् दुर्गेश शुक्र होने से वर्षा बहुत हो, जड़ी–बूटियों की उपज एवं फल–फूल प्रचुरमात्रा में होंगे। व्यापारी वर्ग विशेष लाभान्वित रहेगा।

इस संवत् का मन्त्री शनि एवम् दुर्गेश (सेनाधिपति) शुक्र होने से संवत् के राजा चन्द्र के प्रभाव को क्षीण कर रहे हैं। कहीं परस्पर नीतिसम्बन्धित मतभेद, कहीं मन्त्रिमण्डल में मतभेद पैदा होंगे। परिणामस्वरूप, कहीं किसी राष्ट्रविशेष के मन्त्रिमण्डल के भंग होने के योग भी हैं।

संवत् 2064 वि. की गोचर ग्रहस्थिति एवं जगत्लग्न कुण्डली के अनुसार विश्वजनीन घटनाओं पर एक नज़र

वर्षेश(जगत्) लग्न कुण्डली

5 के.
3
6
4 श.
2शु.
7
1 सू.
8गु.
10
12 बु.
9
11मं.रा.चं.

जगत लग्न का उदय कर्क लग्न में हुआ है। लग्नेश-चन्द्र अष्टम भाव में मंगल, राहु के साथ शत्रुक्षेत्र में है। लग्नेश एवं अष्टमेश का राशिव्यत्यय है। लग्नस्थ शनि गुरुदृष्ट है। शनि इस संवत् का मन्त्री है एवम् चन्द्र संवत् का राजा है। संकेत प्राप्त होता है कि- इस वर्ष **विश्व के प्रमुख राष्ट्राध्यक्ष उग्रवादजन्य हत्याओं से क्षुब्ध रहेंगे। किसी मुस्लिम देश में आन्तरिक अशान्ति से गृहयुद्ध जैसी स्थिति बनेगी। विश्वशान्ति के सम्मिलित प्रयास होंगे।** आर्थिक उदारीकरण से नई योजनाएं कार्यान्वित होने के योग भी हैं। **जगत्लग्न कुण्डली में दशम-भावस्थ उच्च सूर्य पर शनि की नीच दृष्टि है। मुस्लिमराष्ट्र-विशेष में राजनैतिक हत्याकाण्ड होंगे। सिंह, मेष, वृष, कन्या एवम् मकर, कुम्भ नामराशि वाले राष्ट्राध्यक्षों के लिए यह वर्ष भयावह घटनाओं को लेकर उपस्थित होगा।** वैशाख, ज्येष्ठ, आश्विन, कार्त्तिक, मार्गशीर्ष मास विशेष घटनापूर्ण रहेंगे। भारत की प्रभावराशि मकर होने से यह वर्ष भारत की संप्रभु-सत्ता एवम् प्रगति के लिए तो अच्छा है, लेकिन प्रधान-नेता वामदलों के चक्रव्यूह में फंस सकते हैं, जहां से निकलना सहज नहीं।

संवत् 2064 वि. के राजा, मन्त्री एवम् दुर्गेश के विचार से यह संवत् काफी कठिन समस्याओं से घिरा रहेगा। 10 जनवरी, 2007 ई. से संवत् के अन्त तक कर्क-सिंहराशिस्थ शनि की दृष्टि दक्षिण दिशा की तरफ ही रहेगी। दक्षिणी गोलार्ध के देशों में कहीं भयंकर अकाल, रक्तपात एवम् सत्ताहस्तान्तरण के योग बनते हैं। इस अवधि में कहीं भयंकर भूकम्प, समुद्री तूफान या यानदुर्घटना से भारी जनधनहानि के योग बनते हैं। किसी मुस्लिमराष्ट्र में राजनैतिक हत्या, विस्फोट किंवा यानदुर्घटना में विशिष्ट व्यक्ति की अकालिक मृत्यु या अपदस्थता से वातावरण अशान्त होने के योग भी हैं।

गत संवत् 2063 वि. में 17 फरवरी, 2007 ई. को मंगल शनैश्चरी अमावस वाले दिन मकर राशि में आ रहा है। मंगल का वक्री शनि के साथ समसप्तकयोग संवत् 2064 वि. में 29 मार्च, सन् 2007 ई. तक बना रहेगा। इस प्रकार शनि-मंगल का परस्पर दृष्टिसम्बन्ध अघटित घटनाओं वाला सिद्ध होगा। पाकिस्तान, इराक, ईरान, पाकाधिकृत ब्लूचिस्तान-सिन्धक्षेत्र, अफगानिस्तान, हॉलैण्ड, थाईलैण्ड, नेपाल, चीन, जापान, इण्डोनेशिया किंवा भारत के किसी भाग में उग्रवादजन्य बम-विस्फोट, ज्वालामुखी-विस्फोट, भारी भूकम्प आदि प्राकृतिक आपदा किंवा यानदुर्घटना में भारी जानमाल नुक्सान होने का योग है। इस समयावधि में कहीं सीमाप्रान्तो पर या किसी मुस्लिमराष्ट्र के अन्दर भारी प्राकृतिक आपदा या आन्तरिक क्रान्ति जैसी स्थिति से राष्ट्राध्यक्ष को भारी कठिन परिस्थिति का सामना करना पड़ सकता है। कहीं सत्ता-हस्तान्तरण करने पर भी प्रधान नेता को मजबूर होना या राजनैतिक हत्या का शिकार होना पड़े।

29 मार्च, 2007 ई. को मंगल कुम्भ राशि में आकर राहु के साथ मेल करेगा। इस समय वक्री शनि के साथ राहु एवम् मंगल का षडष्टकयोग बनेगा। 6 अप्रैल को शुक्र वृषराशि में आकर देवगुरु वक्री बृहस्पति के साथ दृष्टिसम्बन्ध बना रहा है। गुरु 6 अप्रैल को दिन में ही वक्री हुआ है। 29 मार्च से 18 अप्रैल, 2007 ई. तक अल्जीरिया, अमेरिका के किसी विशेष भाग, नॉर्वे, ईरान, साईप्रस, ब्रिटेन, आयर्लैण्ड, रूस, इटली, टर्की, फ्रांस में कहीं समुद्री-तूफान, भूकम्प एवम् कहीं राजनैतिक विप्लव, कहीं आन्तरिक कलह से जनता को कष्ट उठाना पड़ेगा। शासकों को भी स्थिति-नियन्त्रण के लिए विशेष पग उठाने पड़ें।

14 अप्रैल, 2007 ई. को शनिवारी मेष संक्रान्ति, 17 अप्रैल को भौमवती अमावस एवम् 19 अप्रैल को शनि मार्गी होगा। 20 अप्रैल को बुध पूर्व में अस्त होगा। इस समय बुध अतिचारी भी है। नेपाल में 7 दलों के सत्ताधारी गठबन्धन एवम् माओवादिओं के मध्य मतभेद गहरा जाएंगे, कुण्ठाएं उभरेंगी। देश के संवैधानिक ढांचे के निर्माण की प्रक्रिया में बाधा आएगी। देश में अशान्ति एवं अस्थिरता का माहौल इस वर्ष (2007 ई. में) पुनः बन जाने का योग है।

वैशाख चान्द्रमास में पांच मंगलवार होने एवम् 24 अप्रैल से 6 मई की ग्रहस्थिति के अनुसार किसी विशिष्ट व्यक्ति के निधन से शोक व्याप्त होगा। '**मंगले महदभयम्**' के अनुसार आतंकवादियों की गतिविधियां तीव्र हो जाएंगी। और महानगरों में विस्फोटजन्य हत्याएं अधिक होंगी। जापान, चीन, जर्मनी, श्रीलंका, इराक, अफगानिस्तान, पाक एवम् अमेरिका में आतंकवादी गतिविधियां प्रबल होंगी; कहीं भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोप से भारी जनधनहानि के योग भी बनते हैं।

7 मई को मंगल मीनराशि में आकर शनि के साथ नवपंचमयोग बनाएगा। इस समय मंगल पर बृहस्पति की विशेष दृष्टि है। 14 मई को बुध पश्चिम में उदित होगा। 15 मई को मंगलवारी वृषसंक्रान्ति है। ज्येष्ठ अधिकमास होने से कहीं युद्ध का वातावरण बने- **"द्विज्येष्ठे नृप-विग्रहः"**। बुध अतिचारी होने के कारण प्राकृतिक आपदा से **7 से 24 मई तक भारी जनधनहानि के योग बनते हैं।**

30 मई को शुक्र कर्कराशि में आकर शनि के साथ दृष्टिसम्बन्ध बनाएगा। यह दृष्टिसम्बन्ध 3 जुलाई, सन् 2007 ई. तक बना रहेगा। इन (शु. श.) पर वक्री बृहस्पति की विशेष दृष्टि भी है। इस समयावधि में इस वर्ष ब्लूचिस्तान में पाकराष्ट्राध्यक्ष के खिलाफ बगावत का रुख बने। मुस्लिमराष्ट्र जन-आन्दोलन को सुलझाने में निष्क्रिय रहेंगे। पाकिस्तान की विरूपता उसकी जमीन पर पल रहे आतंकी संगठनों से और विकृत हो जाएगी। साऊदीअरब घृणा और नफरत की पौधशाला के रूप में पनपेगा। अलकायदा गल्फ देशों के लिए भयंकर खतरा सिद्ध होंगे। इण्डोनेशिया में वोल्केनो आदि प्राकृतिक प्रकोप से हानि होगी। इराक में इस अवधि में गृहयुद्ध जैसी स्थिति से संभलना कठिन होगा।

द्वि.(अधिक) ज्येष्ठ कृष्णपक्ष, द्वि. (शुद्ध) ज्येष्ठ शुक्लपक्ष (2 जून से 30 जून तक)- इस चान्द्रमास में पांच शनिवार होने से द्वि. (अधि.) ज्येष्ठ कृ. पक्ष प्रतिपदा (2 जून) को शनिवार होने से किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति (नेता) की मृत्यु का योग बनता है या कहीं

राज्यसत्ता में परिवर्तन हो। कहीं भयंकर प्राकृतिक आपदा से भारी जनधनहानि भी संभव है। भारी जलबाढ़ या कहीं सूखे से कृषकों को हानि उठानी होगी–

" अथवा सौरिवारेण संयुक्ता प्रतिपदभवेत्।
दुर्भिक्षं–रोग पीड़ास्यात् छत्रभंगश्च नान्यथा।।"

16 जून को मंगल अपनी राशि मेष में आकर 15 जुलाई, 2007 ई. तक शनि–शुक्र के साथ दशम–चतुर्थसम्बन्ध बनाएगा। इस प्रकार शनि की मंगल पर एवं मंगल की शनि पर विशेष दृष्टि होगी। अमेरिका, पाक की गहरी दोस्ती से पूरे दक्षिण–पूर्वी एशिया को भारी कठोर कीमत चुकानी पड़ेगी। पाकिस्तान ने तालिबान एवं लादेन की पीठ पर जो हाथ रखा है, उसका भयंकर परिणाम पाक–जनता को आगामी दो वर्षों में जल्दी ही भोगना पड़ेगा। आने वाले दिनों में पाक की हकूमत अमेरिका की कठपुतली बन कर रह जाएगी और पाकिस्तान में उग्रवादी कभी भी रक्तपात की प्रक्रिया शुरु कर सकते हैं, प्रधान नेता को भारी चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार रहना होगा।

भारत के साथ चीन की मैत्री एक प्रदर्शनमात्र है। जापान, वियतनाम, फिलिपीन्स और मलेशिया के साथ चीन के गम्भीर सीमाविवाद रहेंगे। अरुणाचल प्रदेश में भी चीन की नीयत ठीक नहीं। उत्तर में स्थित इस ताकतवर पड़ौसी के साथ कोई भी समझौता भारी पड सकता है। भारत सरकार को सावधान रहना चाहिए। ग्रहस्थिति का सावधानी से चिन्तन करने पर एक बात यह भी सामने आती है कि– इस वर्ष भारत, चीन महादेशों के रूप में उभर रहें हैं। भारत–तिब्बत सीमा के मसले को चीन लेन–देन के माहौल से सुलझाने की कोशिश करेगा, फिर भी बाधाएं उपस्थित होंगी।

16 जुलाई को प्रातः शनि सिंह राशि में आकर रूस से अलग छिटके देशो अफगानिस्तान, इराक–पाक में खास घटनाचक्र को जन्म देगा। 27 जुलाई को शुक्र वक्री हो रहा है, गुरु पहले ही वक्री चल रहा है। 29 जुलाई को मंगल वृषराशि में आकर फिर से शनि के साथ दशम–चतुर्थसम्बन्ध बनाएगा। शनि–मंगल का यह सम्बन्ध 16 सितम्बर तक चलेगा। **ध्यान दें–** इसी मध्य श्रावण कृष्ण पक्ष त्रयोदश दिन का पक्ष भी आ गया है। श्रावण चान्द्रमास में पांच मंगलवार एवम् बुध, शुक्र, शनि– ये तीन ग्रह इसी चान्द्रमास में अस्त हो रहे हैं। शनि, शुक्र, केतु पर मंगल की दृष्टि भी है। बुध अतिचारी है। पूर्वी–दक्षिणी प्रान्तों एवम् देशों में भयंकर अग्निकाण्ड, रेल व वायुयानदुर्घटना, दुर्भिक्ष, भयंकर समुद्रीतूफान, भूकम्प, खान–दुर्घटना आदि से भारी जनधनहानि के योग हैं। इस त्रयोदश दिनपक्ष में कहीं भयंकर अकाल–बीमारी से जनता को कष्ट हो, कहीं प्रतिष्ठित व्यक्ति के निधन से शोक व कहीं सत्ताहरस्तान्तरण भी संभव है–

" श्रावणे शुक्लपक्षे च प्रतिपच्चन्द्रयोगतः।
जलशोषं प्रजानाशं छत्रभंगं तदादिशेत्।।"

भाद्रपद कृष्ण पक्ष में बुध का उदय, 7 सितम्बर को प्लूटो मार्गी, 8 सित. को शुक्र मार्गी एवम् शनि उदित हो रहा है।–"नाशः प्रकाशनमधार्मिक–शासनस्य" प्रमाणानुसार किसी मुस्लिमराष्ट्र के शासक के लिए समय बहुत खराब रहे या मृत्युतुल्य कष्टप्राप्ति का योग बने।

16 सितम्बर को मंगल ग्रह मिथुन राशि में आकर संवत् के अन्त तक वक्र–मार्ग गति द्वारा मिथुनराशि में ही स्थिर रहता है। इस प्रकार मिथुन राशिस्थ मंगल की दृष्टि कन्या, धनु एवम् मकर राशि पर पड़ेगी। साथ ही शनि–राहु का समसप्तकयोग बना ही रहेगा। टर्की, अफगानिस्तान, इराक, पाकिस्तान, अरबराष्ट्र, ऑस्ट्रेलिया, स्पेन एवम् भारत के कुछ क्षेत्रों में अघटित घटनाएं घटेंगी। अग्निकाण्ड, ज्वालामुखी–विस्फोट, तूफान, भूकम्प आदि से विनाशकारक समाचार मिलेंगे। कार्तिक में कहीं उग्रवादजन्य विस्फोट आदि से वातावरण अशान्त होने का योग है।

कार्तिक शुक्ल पक्ष में 15 नवम्बर को मंगल के वक्री होगा, 21 नवम्बर को गुरु धनुराशि में पदार्पण करेगा पर, प्लूटो–गुरु का एकराशिसम्बन्ध तथा वक्री मंगल के साथ समसप्तकयोग बनेगा। मुस्लिमराष्ट्र पाकिस्तान में बेनजीर भुट्टो एवम् नवाजशरीफ की पार्टियों का साथ छोटी पार्टियां देंगी और मुशर्रफ संरक्षित "मुस्लिम–लीग" सकटग्रस्त हो सकती है। परिणामस्वरूप, सत्ता–परिवर्तन संभव है।

मार्गशीर्ष कृष्णपक्ष में नवमी तिथि–वृद्धि होने से कहीं राजनीतिज्ञों में परस्पर वैमत्य रहे, कहीं आतंकवाद–दमन के लिए देश एकजुट हों।

10 दिसम्बर को गुरु अस्त होगा, 16 दिसम्बर को सूर्य धनुराशि में आकर गुरु के साथ मेल करेगा और गुरु–सूर्य पर वक्री मंगल की दृष्टि रहेगी। 19 दिसम्बर को शनि वक्री हो जाता है और संवत् के अन्त तक वक्री रहता है। इस प्रकार शनि–मंगल दोनों वक्री हैं। गुरु–शुक्र दोनों अस्त हैं। ग्रहस्थिति मध्य एशिया के प्राकृतिक तेल–भण्डार क्षेत्रों पर रूस, अमेरिका और चीन की नजर होने से रूस–अमेरिका दूर होते नजर आएंगे। कहीं युद्ध किंवा किसी देश के अशान्त वातावरण से मुक्ति पाने के लिए जनता स्थानान्तरण के लिए विवशता अनुभव करेगी–

" गुरु–शुक्रोदयश्चास्तो यदा वै मार्गमासके।
देशान्तरं च गच्छन्ति तदा वै क्षुत्पीड़िता जनाः।।"

पौष चान्द्रमास में मंगलवारी अमावस, गुरु का उदय, मकरसंक्रान्ति एवम् शुक्र का धनु राशि में आकर गुरु के साथ राशि–सम्बन्ध, मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष में एकादशी तिथि का क्षय–यह ग्रहस्थिति 24 दिसम्बर, 2007 ई. से 22 जनवरी, सन् 2008 ई. तक कहीं भयंकर हिमपात, भूकम्प, बाढ़ एवं किसी विशिष्ट व्यक्ति के पद रिक्त होने से वातावरण अशान्त हो।

23 जनवरी, से 21 फरवरी, 2008 ई. की ग्रहस्थिति के अनुसार (विशेषतः 30 जनवरी के लगभग) प्राकृतिक प्रकोप से दुर्भिक्ष की स्थिति बने, अग्निकाण्ड एवम् फसलों की हानि से जनता परेशान हो–

"चतुर्थी माघमासस्य शनिवारेण संयुता।
दुर्भिक्षं मृत्यु–चौराग्निभयं धान्य–विनाशनम्।।"

13 फरवरी, से 13 मार्च, 2008 ई. तक सूर्य–राहु का शनि के साथ समसप्तक, 10 से 13 मार्च तक सू., बु., शु., रा. का चतुर्ग्रहीयोग एवं 1 अप्रैल से संवत् के अन्त तक चल रहा चतुर्ग्रहीयोग भी राजनैतिक कारणों से घोर अशान्ति, भूकम्प, तूफान व यानदुर्घटना या कहीं युद्धज्वाला से भारी विनाश के साथ रोग–पीडा से जनता में परेशानी पैदा करे।

यूरोप के देश

यूरोपीय देशों की कुण्डली (1)
1 जनवरी, 2007 ई.,
मध्यरात्रि 0 घं. 00 मि.

7 / श. 5 के. / 8 मं गु. / 6 / 4 / बु. 9 सू. / 3 / 10 शु. / 12 / 2 चं. / 11 रा. / 1

यूरोपीय देशों की कुण्डली (2)
1 जनवरी, 2008 ई.,
मध्यरात्रि 0 घं. 00 मि.

7 चं. / श. 5 के. / 8 शु. / 6 / 4 / गु. बु. 9 सू. / 3 मं. / 10 / 12 / 2 / 11 रा. / 1

कुण्डली नं. (1) की ग्रहस्थिति एवम् गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार 9 जनवरी, 2007 ई. तक शनि–राहु का समसप्तक, 11 फरवरी तक सूर्य–शनि का समसप्तक एवम् 16 फरवरी तक शनि–मंगल का षडष्टकयोग यूरोपीय देशों में प्राकृतिक आपदा से विनाश एवम् आतंकवादी, मुस्लिम जेहादियों द्वारा जनधनहानि का योग बनाता है। पाकिस्तान, ईरान, इराक, अफगानिस्तान के आतंकियों पर लगाम डालने के लिए विशेष प्रयास, नीति एवम् कानून बनाने पड़ेंगे। पाक में उग्रवादियों के ठिकानों को ध्वस्त करने के लिए अमेरिका ठोस पग उठा सकता है। इस वर्ष लादेन एवम् जेहादी उग्रवादी विशेषरूप से लक्ष्य पर होंगे। पाक एवं इराक में विध्वंसक तत्त्व उग्र रहेंगे। कहीं सत्तापरिवर्तन का कारण भी बनेगा।

कुण्डली नं. (2) में मंगल एवं शनि दोनों वक्री हैं। बुध एवं गुरु अस्त हैं। शनि की चन्द्र पर विशेष नजर है। शनि–राहु का समसप्तक योग भी बना हुआ है। प. जर्मनी, फ्रांस, इटली, रोम, स्पेन, ब्रिटेन, अमेरिका आदि में इस वर्ष विशेष घटनाएं घटित होंगी। कहीं आन्तरिक समस्याएं उलझें। विशेष परिस्थितिवश ब्रटेन–अमेरिका का रूस से वैमत्य बढ़े। प. जर्मनी, हॉलैण्ड, फ्रांस, डेन्मार्क में बेरोजगारी बढ़ेगी। औद्योगिक संकट बढ़ेंगे। विशेषतः शनि के सिंह में रहते एवं गुरु के धनुराशि में आने पर उग्रवादियों पर नकेल डालने के प्रयास होंगे। प्रमुख उग्रवादी इस वर्ष हतोत्साहित होंगे, कुछ मृत्यु की गोद में पहुंच जाएंगे। पश्चिमी एशिया में कहीं युद्धज्वाला भड़केगी। इजराइल, जॉर्डन के पश्चिम भाग में अपने डेरे समाप्त नहीं करेगा। फिलस्तीन–जॉर्डन–इजराइल में अशान्ति बढ़ेगी। प्रच्छन्नरूप से अमेरिका युद्धाग्नि को हवा दे सकता है। ग्रहस्थिति के अनुसार कहीं भूकम्प, समुद्री–तूफान, कहीं अतिवृष्टि आदि प्राकृतिक प्रकोप से भयंकर जनधनहानि के योग बन रहे है। थाइलैण्ड आदि में अशान्ति रहे।

अमेरिका के राष्ट्रपति जनाब जॉर्ज W. Bush

जॉर्ज W.Bush जी की जन्म कुं.

मं. 5 / सू. 3 / गु. 6 चं. / बु. शु. 4 श. / रा. 2 / 7 / 1 / के. 8 / 10 / 12 / 9 / 11

की यथालब्ध जन्मकालिक ग्रहस्थिति के अनुसार सिंहस्थ शनि का जन्मकालिक मंगल के साथ राशिसम्बन्ध बनने पर 15 जुलाई, 2007 ई. के बाद एवम् गुरु के शत्रुस्थान अर्थात् छठेभाव में धनुराशि में आने पर 21 नवम्बर, 2007 ई. के लगभग से संवत् के अन्त तक का समय जनाब जॉर्ज बुश के लिए कठिन स्थितियों वाला है। रूस, चीन एवं कुछ अन्य राष्ट्रों से ईरान के मसले पर सम्बन्ध बिगड़ेंगे। शत्रु एवं उग्रवाद से अमेरिका में भारी संकट एवं विनाश का योग भी बन सकता है। इस वर्ष मिथुन राशि के मंगल की जॉर्ज बुश के जन्मकालिक चन्द्र पर दृष्टि 16 सितम्बर से संवत् के अन्त तक बनी रहेगी। कुछ प्रमुख उग्रवादी पकड़ने में सफलता अवश्य मिलेगी। राष्ट्रपति जी को अपनी सुरक्षा–व्यवस्था को सुदृढ बनाने की ग्रहगोचर के अनुसार सलाह दी जाती है।

मुस्लिम राष्ट्र

20 जनवरी, चन्द्रदर्शन वाले दिन से अगले दिन यानी 21 जनवरी, सन् 2007 ई., रविवार को 1 मुहर्रम (यकम मुहर्रम), हिजरी सन् 1428 का शुभारम्भ होगा। इस्लामी मतानुसार हिजरी सन् 1428 का बादशाह सूरज है।

मुस्लिम देशों की नववर्ष कुं.

7 / 5 के. / 8 गु. / 6 / 4 श. / 9 मं. / 3 / सू. 10 शु. बु. / 12 / 2 / चं. / 11 रा. / 1

हिजरी सन् 1428

मुस्लिम देशों की वर्षगत ग्रहस्थिति के अनुसार शनि–मंगल का षडष्टकयोग बना हुआ है। इस समय बुध अस्त है, शनि वक्री है। शनि–सूर्य का समसप्तकयोग भी बना हुआ है। लेकिन शनि गुरुदृष्ट भी है। कुछ यावनराष्ट्रों में 15 जुलाई से पूर्व भूकम्प, आन्तरिक कलह, उग्रवादजन्य अशान्ति किंवा अग्निकाण्ड, ज्वालामुखी–विस्फोट आदि प्राकृतिक प्रकोप से जन–धनहानि के योग हैं। अफ्रीकन देशों में भी घोर अशान्ति का वातावरण बनेगा। इजराइल के साथ फिलस्तीन–लीबिया आदि मुस्लिम राष्ट्रों के सम्बन्ध तनावपूर्ण ही रहेंगे। लीबिया, अंगोला की स्थिति बिगड़ेगी। इस वर्ष मुस्लिम राष्ट्रविशेष के शासनाध्यक्ष के अपदस्थ होने किंवा मृत्यु का योग है। इराक आदि में रक्तक्रान्ति जैसा वातावरण रहे, गृहयुद्ध जैसी स्थिति से अमेरिका हतोत्साहित होगा। सिंह का शनि 15 जुलाई, 2007 ई. के बाद मुस्लिम देश–विशेष में अघटित घटनाचक्र चलाएगा। उग्रवादजन्य हिंसक घटनाओं से अफगानिस्तान, इराक, पाक का ब्लूचिस्तान एवम् अरब गणराज्य देशों में जनता त्रस्त रहेगी। कहीं सत्तापरिवर्तन भी संभव है।

पाकिस्तान की कुण्डली में स्थित ग्रहस्थिति के अनुसार कर्कराशि का शनिकाल (लगभग मध्य जुलाई तक) इसवर्ष प्रधान–शासक के लिए बहुत नेष्टफलप्रद रहेगा। पाक–कुण्डली में कर्कराशि में बुध–सूर्य, शनि, प्लूटो हैं। यह भारत के साथ कुटिलचाल से सम्बन्ध ठीक न रख पाएगा। इस समय केतु की महादशा में बुधान्तर 29 दिसम्बर, 2006 ई. से प्रारम्भ होगा। समय यहां निर्वाचन सैनिकशासन के प्रभाव में ही होंगे, परिणाम जनता के लिए हितकर न होगा।

आगे शुक्र की महादशा में प्राकृतिक प्रकोप से भारी हानि के योग हैं।

संवत् 2064 की गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार भारत एवं भारत सरकार में घटित होने वाले घटनाचक्र का आकलन

" संसार का प्रत्येक परमाणु एक निर्धारित नियम से विलग नहीं हो सकता । एक सूक्ष्मतम परमाणु में यदि तनिक अव्यवस्था किंवा अनुशासनहीनता आ जाए, तो विराट् ब्रह्माण्ड एक क्षण के लिए भी न टिक सके। एक क्षणिक विस्फोट से अनन्त प्रकृति अग्नि–ज्वालाओं से अतिरिक्त कुछ न रहे।" इस प्रकार समस्त घटनाचक्र एवं सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को संचालित करने वाला ग्रहपुञ्ज प्रकृति किंवा ईश्वर के अनुशासित कार्यक्रम का एक निदर्शन है, जो कि– गोचर ग्रहगति के संकेतानुसार हमें प्रतिवर्ष कुछ लिखने को प्रेरित करता है।

जन्मकुण्डली स्वतन्त्र भारत
15 अग., 1947 (0घं 00मि.)

यूरे. 3 मं.
1
प्लू. सू.बु.श.4 शु.चं.
रा. 2
12
5
11
ने.6
8 के.
10
7 गु.
9

इससे पहिले कि संवत् 2064 वि. की ग्रहस्थिति का परिशीलन करें, हम गत संवत् 2063 वि. के अन्तिम चरण की ग्रहस्थिति पर एक नजर डालना उचित समझते हैं।

संवत् 2063 वि. के अन्तिम तीन मास राजनैतिक दृष्टि से विशेष उठापटक वाले रहेंगे। फरवरी, 2007 ई. में उ. प्र. में धर्मिक स्थान को लेकर विवाद खड़ा होगा। भारत के धार्मिकस्थल असुरक्षित होंगे। विशेष राजनैतिक परिवर्तन–परिवर्धन सत्तारूढ़दल में आएंगे। यदि निर्वाचन की चर्चा की गई तो पुनः राजनैतिक पटल पर केन्द्र में प्रमुखदल के रूप में कांग्रेस प्रबल सत्ता का दावा करेगी।

अब हम सं. 2064 की ग्रहगति के अनुसार स्वतन्त्र भारत के वर्षाङ्क पर कुछ लिखना चाहेंगे।

भारत स्वतन्त्रता लग्न में भाग्येश एवं कर्मेश शनि, सूर्य, बुध, प्लूटो, शुक्र एव चन्द्र के साथ तृतीय भाव में है। यह पराक्रम भाव है। विदेशी–विरोधी देशों के षड़यन्त्र किंवा पाक के आतंकवादी तत्त्वों द्वारा भारी विस्फोट आदि से महानगरों में जनधनहानि के योग बनेंगे, लेकिन भारत आतंकवादियों को सबक सिखाने में अग्रेसर रहेगा। मेदिनी ग्रहसंचार के अनुसार स्वतन्त्र भारत की जन्मकुण्डली में धनु में प्लूटो, मकर में नेप्च्यून एवं कुम्भ में यूरेनस की स्थिति एवं मकर (नवम भाव) पर मंगल एवं शनि की दृष्टि राजनैतिक क्षेत्र में वर्ष को समस्यापूर्ण बनाती है।

स्वतन्त्र भारत का 60 वां वर्ष

स्वतन्त्र भारत के 60वें वर्ष की ग्रहस्थिति के अनुसार मुंथेश मंगल मित्रक्षेत्र में प्रबल है। मंगल आयेश एवम् षष्ठेश होकर छठे भाव को देख रहा है। नवमेश शनि अष्टमेश होकर अष्टमभाव को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है। यह ग्रहस्थिति अनेकविध राजनैतिक कठिनाइयों में से भारत को निकालकर प्रगति की ओर ले जाने वाली है। **वर्षलग्न के द्वितीयभाव में शनि, सूर्य, शुक्र, बुध का सान्निध्य एवम् संवत् के स्वामी गुरु का मन्त्री शुक्र (शत्रु) के क्षेत्र में होना प्रधाननेता को राजनैतिक चक्रव्यूह में फंसा सकता है। पाकिस्तान के साथ राजनैतिक सम्बन्धों में सुधार के आसार एवम् व्यापारिक सम्बन्ध बनने पर भी आन्तरिक कूटनीतिक चाल से सीमाप्रान्त अशान्त हो सकते हैं। नेपाल में पनप रहा उग्रवाद भी भारतीय सीमाओं को अशान्त करेगा। मेदिनीग्रहों की गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार 11 अक्तूबर, सन् 2006 ई. के बाद संवत् के अन्त तक की ग्रहस्थिति प्राकृतिक आपदाओं एवम् राजनैतिक दृष्टि से काफी चिन्तनीय घटनाप्रद मालूम देती है।**

स्वतन्त्र भारत का 60 वां वर्ष
14 / 15 अग., 2006 ई. (27 घं. 01 मि.)

श. सू. शु.बु. 4
2
5 मं.
3
1चं.मुं.
6 के.
12 रा.
7 गु.
9
11
8
10

लग्नेश–दशमेश एवम् पंचमेश के गोचर में स्थितिस्थापक–सम्बन्ध से ज्ञात होता है कि–भारत का सशक्त नेतृत्व देश को आत्मनिर्भरता की ओर ले जाएगा। परमाणु–ऊर्जाक्षेत्र में विशेष प्रगतिप्रद योजनाएं बनेंगी; देश आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ेगा। आगामी कुछ वर्षों में ही ऊर्जाविकास की योजनाएं कार्यान्वित होंगी, जिससे देश महाशक्ति के रूप में पहचाना जाने लगेगा।

स्वतन्त्र भारत का 61 वां वर्ष

स्वतन्त्र भारत के 61 वर्ष की ग्रहस्थिति के अनुसार अष्टमेश मंगल नवम भाव में, दशमेश बुध एकादश भाव में, एकादशेश चन्द्र व्यय भाव में एवं मुंथेश– शुक्र भी व्यय भाव में हैं। चतुर्थेश गुरु भी अपनी (धनु) राशि में व्ययस्थानगत है;– यह ग्रहस्थिति राजनैतिक दृष्टि से भारी उथल–पुथल करने वाली है। सरकार के घटकदल सत्तासीन प्रधान नेता को स्वतन्त्र प्रगतिप्रद निर्णय लेने में बाधक रहें। पाक द्वारा पोषित आतंकवादियों को भारत की सशक्तता का भान इस वर्ष कराना ही पडेगा। भारत की प्रभावराशि मकर पर सूर्य, बुध की दृष्टि है, जो कि प्रधान नेता को स्वतन्त्र पग उठाने में अशक्त बनाएगी। राहु का शनि–शुक्र के साथ समसप्तक घटकदलों को बिखरने का भय पैदा कर सकता है। इस वर्ष सीमाप्रान्तों पर सैन्यसत्ता को एवं सीमा पार से घुसपैठियों, आतंकवादियों व विध्वंसक तत्त्वों से निपटने के लिए गुप्तचर व्यवस्था को चुस्त–दुरुस्त रखना होगा, अन्यथा राजस्थान, बाड़मेर, केरल, बिहार, आसाम, बंगाल, मिजोरम, काश्मीर में शत्रुदेश की कुनीती से यहां विस्फोट, रक्तपात, राजनैतिक हत्याकाण्ड आदि से जनधनहानि सरकार के लिए सरदर्द बन जाएगी। इस वर्ष की ग्रहगति के अनुसार इटली, जापान, चीन, टर्की, इण्डोनेशिया, रूस, अफगानिस्तान– पाक में प्राकृतिक प्रकोप से भयंकर प्राकृतिक आपदा के योग हैं। लगभग 15 जुलाई से 15 सितंबर तक की अवधि में कुछ प्रान्तों एवं देशविशेष में भारी राजनैतिक घटनाचक्र किंवा परिवर्तन होने के योग हैं। इस अवधि में उग्रवादजन्य हत्याकाण्ड एवं प्रमुख राजनैतिक पद में रिक्तता किंवा हत्याकाण्ड संभावित हैं। 16 सितंबर से संवत् के अन्त तक का समय भारत एवं पाक के शासन–तन्त्र के लिए विशेष ऐतिहासिक राजनैतिक घटना वाला सिद्ध होगा।

स्वतन्त्र भारत का 61 वां वर्ष
14 / 15 अग., 2007 ई. (27 घं. 01 मि.)

7
श.चं.शु.के.
5 बु.
4 सू.
8 गु.
6
9
3
10
12
2 मं.
11 रा.
1

भारतीय गणतन्त्र का 58वां वर्ष

महान् देश भारत के 58वें गणतन्त्र की ग्रहस्थिति का परिशीलन करने से स्पष्ट ज्ञात होता है कि– मकर राशिस्थ सूर्य, बुध पर शनि की दृष्टि होने एवं संवत् के राजा चन्द्र पर मन्त्री शनि की नीच दृष्टि होने से, यह वर्ष प्रधान नेतृत्व के लिए अघटित घटनाओं वाला सिद्ध होगा। राजनैतिक दृष्टि से काफी संकटापन्न–स्थितियों में प्रधान नेता को उलझना पड सकता है। पुनरपि शनि पर बृहस्पति की विशेष दृष्टि होने से स्थिति संभल जाएगी। 16 जून से अगस्त तक की ग्रहस्थिति में गणतन्त्र के लिए प्रधान नेता को कठोर पग उठाने होंगे। सत्तारूढदल के घटकतत्त्व बिखराव की स्थिति में आ सकते हैं। लेकिन भारत गणतन्त्र की गरिमा एवं प्रधान नेता का यश बना रहेगा।

भारत का 58 वां गणतन्त्र वर्ष
26 / 27 जन., 2007 ई. (25 घं. 02 मि.)

गु. 8
6
9 मं.
7
5 के.
सू. 10 बु.
4 श.
शु. रा. 11
1 चं.
3
12
2

भारतीय गणतन्त्र के राष्ट्रपति महामहिम श्री ए. पी. जे. अब्दुलकलाम जी

महामहिम की नामराशि एवं गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार शनि वक्री पोजीशन से 15 जुलाई तक कर्क राशि में ही रहेगा। इस अवधि में कई प्रकार राजनैतिक की समस्याएं इनके समक्ष उपस्थित होंगी। तत्पश्चात् सिंहराशि का शनि एवं त्रयोदश दिन का पक्ष भी भारत के लिए चुनौतीपूर्ण समस्याओं को पैदा करेगा, लेकिन महामहिम श्री की प्रखर प्रतिभा एवं प्रयास से इन समस्याओं का हल मिलेगा। सुधारात्मक प्रक्रिया एवं स्वच्छ राजनैतिक प्रतिष्ठा प्रदान करना इनकी प्राथमिकता रहेगी। भारत गणतन्त्र को वर्तमान महामहिम राष्ट्रपति जी एक सशक्त गणतन्त्र के रूप में स्थापित करने से यशस्वी रहेंगे।

संवत् 2064 वि. की गोचर ग्रहस्थिति का भारत पर प्रभाव

स्वतन्त्र भारत का उदय 15 अगस्त, 1947 को मध्यरात्रि में 0 घं. 00 मि. पर कालसर्पयोग में हुआ था। परिणामस्वरूप, इस लम्बी समयावधि में भारत की राजनीति में अनेक उतार–चढ़ाव आए। आज सं. 2064 वि. की प्रारम्भिक गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार भारत की प्रभावराशि मकर पर कर्कराशिस्थ शनि की पूर्ण दृष्टि चल रही है। भारत की प्रभावराशि के स्वामी शनि पर वृश्चिक राशिस्थ गुरु की विशेष दृष्टि भी है। भारत ने विश्व के प्रमुख देशों में अपना विशेष स्थान बना लिया है। देश सर्वतोभावेन आत्मनिर्भरता की ओर बढ रहा है। लेकिन इस समय शनि 19 अप्रैल तक वक्री पोजीशन में रहेगा। इससे पहिले 29 मार्च को मंगल कुम्भराशि में आकर राहु के साथ मेल करेगा। इस प्रकार 7 मई तक शनि का राहु–मंगल के साथ षड़ष्टकयोग बना रहेगा। आतंकवाद सिर उठाएगा। आतंकवाद के स्रोतों को समाप्त करना अनिवार्य हो जाएगा। भारत को असम व पूर्वोत्तर के अन्य राज्यों में भी आतंकवाद से निपटने के लिए गंभीरता से विचार करना होगा। क्योंकि, आतंकवाद की समाप्ति के लिए एक विश्वस्तरीय युद्ध हमारे देश को प्रभावित कर रहा है।

नववर्षप्रवेश कुण्डली

2
चं. 12 सू. बु.
3
1 शु.
11 रा.
4 श.
10 मं.
के. 5
7
9
6
8 गु.

सीमापार से भारत में घुसपैठ के लिए प्रयुक्त किए जाने वाले मार्ग पुनः सक्रिय रूप धारण करेंगे– सरकार सावधान रहे।

वर्षारम्भ मेष लग्न में होने से –"मेषे लग्ने तु पूर्वस्यां दुर्भिक्षं राजविग्रहः। उत्तरस्यां सुभिक्षं स्यात् राज्ञामुद्वेगकारणम्।।" "मध्यदेशे महावृष्टिर्निष्पत्तिर्धान्य–संततेः।" महंगाई से जनता परेशान रहे, पूर्व में दुर्भिक्ष एवं राजनीतिज्ञों में परस्पर वैमत्य बढे एवं सत्तारूढ दल के घटकतत्वों में विघटन की संभावना बढ़ेगी। दक्षिण एवं उत्तर मे सुभिक्ष रहे। शासकों में सिद्धान्तवैमत्य के कारण उद्वेग बने। मध्यप्रदेश में भयंकर वर्षा से हानि हो, कहीं अनाज की उपज अच्छी हो। संवत् का आरम्भ वक्री शनि एवं मंगल के परस्पर दृष्टिसम्बन्ध से हो रहा है। लग्नेश मंगल की लग्न पर विशेष दृष्टि है। शनि की भी मेष लग्न पर पूर्ण दृष्टि है।

6 अप्रैल को गुरु वक्री होकर वक्री शनि पर दृष्टिपात करेगा एवं वैशाख चान्द्रमास में 5 मंगलवार होने से कहीं अग्निकाण्ड व भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोप से हानि हो, आगे कहीं वर्षा के अवरोध से दुर्भिक्ष की स्थिति बने। रोग किंवा अन्यप्रकार के कष्टों से जनता में परेशानी बढे। वर्ष में कमरतोड महंगाई से जनता परेशान रहें– " (पञ्च) मंगले म्रियते राजा"– प्रमाणानुसार कहीं प्रतिष्ठित व्यक्ति का पद रिक्त हो।

वैशाख शुक्ल पक्ष में पंचमी शनिवारी होने से आगे कहीं वर्षा न हो, कहीं अतिवर्षा से भारी हानि हो। सीमांप्रान्तों पर कहीं युद्धभय व्याप्त हो। कहीं तूफान, कहीं राजनैतिक–गतिविधि से चिन्ताजनकस्थिति बने। नानाविध रोगों से जनता परेशान रहे।

इस वर्ष ज्येष्ठ 'अधिकमास' एवं मंगलवारी वृषसंक्रान्ति होने से "द्विज्येष्ठे नृप–विग्रहः" प्रमाणानुसार पड़ौसी राष्ट्रों में सामरिक चुनौतियों को देखते हुए हमें दूर मार करने वाले शस्त्रास्त्रों की क्षमता प्राप्त करने पर सोचना पडेगा।

7 मई को मंगल मीन मे आकर शनि के साथ नवपंचम–सम्बन्ध बना रहा है। मंगल, शनि पर गुरुदृष्टि भी है। द्वि. (अधि.) ज्येष्ठ चान्द्रमास में पांच शनिवार हैं। द्वि. (अधि.) ज्येष्ठ कृ. पक्ष में प्रतिपदा शनिवारी है, जो कि कहीं दुर्भिक्ष रोग, भूकम्प आदि प्रकोप एवं यानदुर्घटना में विशिष्ट व्यक्ति के निधन का संकेत देती है– " अथवा सौरि–वारेण संयुक्ता प्रतिपद्भवेत् । दुर्भिक्षं रोगपीड़ा स्याच्छत्रभंगश्च नान्यथा।।"

16 जून को मंगल के मेष राशि में आने पर शनि–मंगल का दशम–चतुर्थदृष्टि सम्बन्ध बन जाएगा। यह दृष्टिसम्बन्ध 14 जुलाई तक बना रहेगा। आतंकवादी सक्रिय रहेंगे। भारत सरकार को पक्ष–विपक्ष में स्थित राजनैतिक संगठनों के परिपक्व व्यवहार व सहयोग से आतंकवाद पर काबू पाने के लिए निर्णायक पग उठाने होंगे। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर 'आतंकवाद की फैक्टरी– पाकिस्तान' पर दबाव बनाना होगा। 14 जुलाई के लगभग कहीं यानदुर्घटना, तूफान, भूकम्प आदि प्रकृतिक प्रकोप से जनधनहानि के प्रबल योग हैं।

15 जुलाई को शनि सिंह राशि में राहु के साथ समसप्तकयोग बनाएगा। 29 जुलाई को मंगल वृषराशि में आकर फिर से शनि के साथ चतुर्थ–दशमदृष्टिसम्बन्ध बना लेगा। यह दृष्टिसम्बन्ध 15 सितंबर तक बना रहेगा। इसी बीच 16 जून द्वि. (शुद्ध) ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा को शनिवार होने से कहीं सत्ताहस्तान्तरण व कहीं दुर्भिक्ष आदि घटनाओं से जनता स्तब्ध रहे।

15 जुलाई से 15 सितंबर के मध्य श्रावण कृष्ण तेरह दिन का (त्रयोदश दिनात्मक) पक्ष भी आ रहा है;– यह पक्ष 'विश्वघस्र पक्ष', नाम से भी जाना जाता है। त्रयोदश दिनात्मक पक्ष एक ही पक्ष में दो तिथियों के क्षय से बनता है। यह त्रयोदश दिनात्मक पक्ष श्रावण कृष्ण पक्ष में होने से विशेष भयावह लिखा है एवं विशेष विचारणीय है–

" एकत्र पक्षे द्वितिथिप्रपाते महर्घमन्नं जनमध्यवैरम्।"

अर्थात् जनजीवनोपयोगी खाद्य वस्तुओं (अनाज आदि) में भारी मंहगाई होने से जनता में असन्तोष भडकेगा। राजनीतिज्ञ–सत्ताधारी एवं विपक्षी नेताओं में भारी विचार–वैमत्य हो, आम जनता एवं राजनीतिक पार्टियों में परस्पर विरोध से राजनैतिक अस्थिरता नज़र आएगी। भविष्यफल भास्कर का वचन है–

" यदा च जायते पक्षस्त्रयोदश–दिनात्मकः।
भवेल्लोकक्षयो घोरो रुण्डमालायुता मही।।"

मेघमहोदय में इस त्रयोदश दिनपक्ष का फल इस प्रकार लिखा है–

" त्रयोदशदिनः पक्षो भवेद् वर्षाष्टकान्तरे।
तदा नगरभंगः स्यात् छत्रभंगो महर्घता।।"

" अनेकयुग–साहस्रयाद् देवयोगात् प्रजायते।
त्रयोदशदिनैः पक्षस्तदा संहरते जगत्।।"

इस त्रयोदश दिनपक्ष का फल विश्व के राष्ट्रों के लिए भयावह परिस्थितियों वाला प्रतीत होता है। इस समय सूर्य कर्कराशि मे है। शनि–मंगल का परस्पर दृष्टिसम्बन्ध भी है, अतः यह त्रयोदश दिनपक्ष पाकिस्तान, श्रीलंका, नेपाल, अमेरिका एवं भारत की शासनसत्ता एवं राजनीतिज्ञों को प्रभावित करेगा। कहीं सत्तापरिवर्तन, उग्रवादजन्य हिंसक घटनाओं से जनमानस त्रस्त होगा। कहीं किसी विशिष्टव्यक्ति की हत्या, निधन व नाटकीय घटना से सत्ताहस्तान्तरण होगा। काश्मीर क्षेत्र के लिए इस वर्ष समय विशेष उलझनपूर्ण रहेगा। इस समय सीमाप्रान्तों पर विशेष सतर्क रहना होगा। शत्रुदेश की गतिविधि अशान्ति का कारण बनेगी। शनि–शुक्र का राहु के साथ समसप्तकयोग भी बन रहा है। यहां अस्त बुध अतिचारी है एवं अस्त शुक्र वक्री है। अतः कहीं भारी भूकम्प से या अन्य प्राकृतिक प्रकोप से जनता त्रस्त रहे।शासकों में परस्पर युद्धमय वातावरण रहे–" यदा क्रूरग्रहो वक्री शुभश्चैवातिचारगः। तदा भवति दुर्भिक्षं राज्ञां युद्धं परस्परम।।"

इस त्रयोदश दिनात्मक पक्ष में क्रूर–मंगल का गुरु के साथ समसप्तकयोग बन रहा है। कहीं वर्षा की भारी कमी, कहीं भारी वर्षा से खेती को हानि पहुंचे, राजनीतिज्ञों एवं जनता को भारी कष्टों का सामना करना पड़ेगा–" क्रूराणां सह सौम्यैश्च यदि स्यात् समसप्तकम्। अनावृष्टिस्तदा ज्ञेया लोकपीड़ा–महत्यपि।।"

पाक, नेपाल, बंगलादेश, म्यांमार से आतंकवादी घुसपैठ करके भारत में हिंसा का वातावरण बनाकर अशान्ति करेंगे। आसाम, भूटान, सिक्किम आदि कई प्रान्तों में नक्सली हिंसा से जनधनहानि के योग भी इस वर्ष बन रहे हैं।

इस पक्ष में श. बु. सू. केतु– ये चारों ग्रह सिंहराशि में ही एकत्र हैं। कहीं भयंकर प्राकृतिक आपदा से जन–धनहानि के योग भी बनते है। मुस्लिमराष्ट्रों पर इस योग का प्रभाव विशेषरूप से दिखाई देगा।

30 अगस्त; 1, 7, 8 सित. एवं 11 सितंबर (मंगलवारी अमावस) भारी कष्टदायक सिद्ध हो सकते हैं।

16 सितंबर को मंगल मिथुन राशि में आकर संवत् के अन्त तक मिथुन राशि में ही चलता रहेगा। मंहगाई बहुत हो जाएगी। अग्निकाण्ड, भूकम्प, समुद्री–तूफान, दुर्भिक्ष आदि प्रकृतिक प्रकोप किंवा उग्रवाद से भयंकर जनधनहानि के योग बन रहे हैं। सरकार को विशेषतः 12 अक्तूबर से 9 नवम्बर के मध्य महानगरों में सुरक्षाप्रबन्धों को सुदृढ करना पडेगा, अन्यथा सरकार एवं सुरक्षाप्रबन्धों की अहमियत पर काला धब्बा लग सकता है। इस अवधि में लेफ्टपार्टियों के शिकायतनामे के कारण जनहित के कुछ बिल प्रधाननेता पास न कर सकेंगे। घटकदलों की आपसी दूरी स्पष्ट उभर कर सामने आने लगेगी। ऐसी स्थिति में समस्याओं को ठण्डे बस्ते में डालना संभव नहीं होगा और न ही सहयोगी दलों की कुण्ठाओं को बढाना सरकार के हित में रहेगा।

इस वर्ष की ग्रहस्थिति पर विहंगम दृष्टिपात करने से संकेत मिलता है कि– मंहगाई के जोर पकडने एवं कुछ विवादित बिल उपस्थित होने पर वामपन्थियों के तीखे तेवर केन्द्रीय शासन को अस्थिर कर सकते हैं। इसके अलावा बृहस्पति का धनुराशि मे संक्रमण, शनि का मंगल के साथ दशम–चतुर्थसम्बन्ध होने से लगता है कि–कहीं वामपन्थी कोई राजनैतिक धमाका न कर दें, जिससे मध्यावधि चुनाव कराने पर केन्द्र को विवश होना पडे। भारत विभाजनकारी शक्तियों के जाल से बचे और देशव्यापी उज्ज्वल भविष्य के लिए राजनेता अपनी रणनीति एवं दृष्किोण पर पुनर्विचार करें।

मार्गशीर्ष कृष्णपक्ष में (25 नवंबर से 9 दिसंबर तक) नवमी तिथिवृद्धि कहीं भारत के समीपी मुस्लिम राष्ट्र की आन्तरिक स्थिति बिगाडेगी। 10 दिसंबर को गुरु अस्त हो रहा है, जो कि 4 जनवरी तक अस्त रहेगा। 19 दिसंबर को शनि वक्री हो रहा है। कहीं दुर्भिक्ष व युद्धाग्नि–प्रसार के भय व भयंकर प्राकृतिक प्रकोप से जनता स्थानान्तरण करने पर विवश हो सकती है– **" गुरु–शुक्रोदयश्चास्तो यदा वै मार्गमासके। देशान्तरं च गच्छन्ति तदा क्षुत्पीड़िता जनाः।।"**

8 जनवरी, सन् 2008 ई. के लगभग भूकम्पादि प्राकृतिक प्रकोप से जनधनहानि के योग हैं। पौषशुक्ल पक्ष में 9 से 22 जनवरी, सन् 2008 ई. के लगभग तक किसी विशिष्ठ नेता/व्यक्ति के निधन से शोक व्याप्त होगा। जनवरी के अन्त तक किसी प्रान्त या देश विशेष में सत्तापरिवर्तन के योग हैं।

13 जनवरी, 2008 ई. को सूर्य मकर राशि में आकर राहु के साथ मेल करेगा एवं शनि के साथ समसप्तकयोग बनाएगा। यह याग 13 मार्च तक चलेगा। 10 मार्च से बुध, शुक्र, राहु के साथ शनि, केतु का समासप्तक योग एवं 30 मार्च से पक्षान्त तक चतुर्ग्रहीयोग बन रहा है। यह समय भारत की शासनसत्ता के समक्ष भारी कठिनाइयों को लेकर आएगा। सत्तापार्टी के सहयोगीदल अपने सिद्धान्तवैमत्य एवं स्वार्थपरक कुछ कारणों से सत्ता से अलग होकर राजनैतिक हिलडुल पैदा कर सकते हैं– सर्वज्ञ प्रभु हैं।

प्रमुख राजनैतिक दलों की ग्रहस्थिति पर एक विहंगम दृष्टि

कांग्रेस पार्टी–10 जनवरी, 2007 ई. को शनि कर्क राशि में आकर 15 जुलाई तक कर्क राशि में ही चलेगा। कांग्रेस पार्टीकुण्डली में चन्द्र अष्टमेश होकर पंचम भाव में नीच शनि के साथ मेल करता है। साम्प्रदायिक, धार्मिकस्थलविवाद मार्च, 2007 ई. [illegible] पार्टी के घटकतत्त्वों को एकसाथ लेकर चलना कठिन प्रतीत होगा। 16 जून से 29 जुलाई तक की ग्रहस्थिति के अनुसार उग्रवादजन्य परेशानियों को दूर करने एव प्रगतिप्रद योजनाओं को कार्यान्वित करने मे भारी दिक्कत आएगी। समय प्रधाननेता के लिए कठिन है। 31 जुलाई से सितंबर तक पार्टी का जनाधार मजबूत बनाने के लिए भारी मेहनत करनी होगी। आगे निर्वाचनक्षेत्र में भारी उथल–पुथल के बावजूद भी कांग्रेस का जनाधार 2009 ई. तक प्रबल हो जाएगा और केन्द्र में प्राथमिकता एवं बडी पार्टी के रूप में पुनः स्थापित होने के योग भी बनेंगे। लेकिन जुलाई से सितंबर, 2007 ई. तक की ग्रहस्थिति सत्तारूढदल में दरार से प्रधानपार्टी–नेता को कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड सकता है। मध्यावधि चुनाव की आवाज से सभी पार्टियों की नीद हराम हो सकती है, परन्तु समय पर समस्या का हल निकल भी सकता है।

कांग्रेस पार्टी की कुण्डली

10 मं.		सू. 8 बु.
11 रा.	9	7 गु.शु.
12		6 प्लू. यू.
चं. श. 1	3	5 के.
2		4

प्रधानमन्त्री श्री मनमोहन सिंह जी–जन्माङ्ग में शनि–मंगल का दृष्टिसमबन्ध 16 सित. तक राजनैतिक दृष्टि से विशेष उलझनपूर्ण प्रतीत होता है। सहयोगी सत्तारूढदल भारत की राजनीति में यदि कोई धमाका कर दे तो कोई आश्चर्य नहीं। लेकिन ग्रहस्थिति–अनुसार प्रधानमन्त्री श्री मनमोहन सिंह जी की छवि स्वच्छ एवं पारदर्शी रहेगी। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक आदि समस्याओं में से निकलना ग्रहगोचर के अनुसार संभव है।

16 सितंबर को मंगल मिथुन राशि में आकर संवत् के अन्त तक मिथुन राशि में ही रहेगा। 21 नवम्बर, 2007 ई. को गुरु धनु राशि में आकर प्रधानमन्त्री जी के जन्मलग्न में आएगा। आगे इनकी प्रतिभा–विवेक एवं राजनैतिक निपुणता इन्हें सर्वोच्च सफल नेता के रूप में स्थापित कर देगा। जिससे इन्हें पुनः प्रधान नेता के रूप में पार्टी स्वीकार करेगी।

श्रीमती सोनिया गान्धी–इनके जन्माङ्ग अनुसार कर्कराशि का शनि राजनैतिक समस्याओं में उलझा सकता है। लेकिन शनि पर गुरु की विशेष दृष्टि इन्हें सब तरह से यशस्वी एवं सफल राजनीतिज्ञ के रूप में स्थापित कर देगी। 15 जुलाई से 16 सितंबर तक पुनः पार्टी एवम् सत्तापार्टी के घटकदलों में विघटन से समस्या संगीन हो सकती है, लेकिन मंगल पर गुरु की दृष्टि इन्हें अढिग रखेगी। यश–वर्चस्व से पार्टी को एकत्र रखने में सफलता मिलेगी। तत्पश्चात् संवत् के अन्त तक का समय पार्टी के प्राणपण को ऊँचा उठाने में समर्थ

जन्माङ्ग श्रीमती सोनिया गांधी

जन्म 9 दिसम्बर, 1946,
21 घ. 15 मि. (स्टैं.टा.) TURIN (ITALY)

5		3 चं.
नेप. 6	प्लू. 4 श.	2 रा. यूरे.
शु. 7 गु.		1
बु. सू. 8 के.	10	12
9 मं.		11

राजनीतिज्ञता से यशोलाभ मिलेगा। इन्हें अपने पुत्र एवं अपनी सुरक्षाव्यवस्था को सुदृढ रखना होगा। क्योंकि, सिंहस्थ शनि इनकी जन्मकुण्डली में सप्तमेश एवं अष्टमेश भी है, जो कि 15 जुलाई, 2007 ई. से संवत् के अन्त तक इनकी इनकी सुरक्षा-व्यवस्था पर विशेष ध्यान देने का संकेत देता है।

भारतीय जनता पार्टी— की उदयकालिक कुण्डली के अनुसार शनि, राहु, मंगल (महाक्रूरत्रयी) की बुध पर दृष्टि भाजपा के लिए इस वर्ष किंवा आगामी अढाई वर्ष के लिए संकटापन्न स्थिति का संकेत देती है। भाजपा को आरक्षण के मुद्दे एवं मध्यवर्गीय वोट हथियाने के लिए अपनी नीतियों को बदलना पड़ेगा।

कुण्डली भारतीय जनता पार्टी

4
2 शु.
गु.श. मं.रा.
3
1
5
6
12 सू.
7
9
11 के. बु.
8 चं.
10

गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार सिंह का शनि एवं वृष-मिथुन का मंगल इस पार्टी के सदस्यों में अनिश्चितता का वातावरण बनेगा। पार्टी के सदस्य ही पार्टी से मूह मोड़ते नज़र आएंगे। जनाधार क्षीण हो एवं राजसत्ता हाथ से जाती नजर आएगी। 15 जुलाई से संवत् के अन्त तक का समय इस पार्टी प्रभाव एवं राजनैतिक क्षमता तथा जनाधार को कमजोर बनाने वाला है।

पार्टी अध्यक्ष श्री राजनाथ सिंह जी के यथालब्ध जन्माङ्ग के अनुसार यद्यपि वृश्चिक एवं धनुराशि का गुरु पार्टी में प्राणपण फूंकने का प्रयास करेगा, लेकिन वृद्ध पार्टीनेता गणों की अक्षमता एवं पार्टी में पुराने नेता, जो कि पार्टी से अलग हो गए हैं, भी पार्टी एवं अपने आपको राजनैतिक पटल पर कुछ सक्रिय करने में सक्षम नही रहेंगे, जिससे जनता में पार्टी की छवि पूर्ववत् प्रबल नहीं हो पाएगी। आगामी दो वर्ष इस पार्टी के लिए अग्निपरीक्षा के रहेंगे।

भारत के कुछ प्रान्त

पंजाब— पंजाब की प्रभावराशि मीन है। 6 दिसंबर, सन् 2006 ई. को शनि वक्री होकर 10 जनवरी, 2007 ई. से फिर कर्कराशि में पदार्पण करेगा। **17 फरवरी, 2007 ई. से 29 मार्च, 2007 ई. तक शनि, मंगल का समसप्तकयोग यहां की रूलिंग– 'कांग्रेस पार्टी' के लिए काफी परेशानियों वाला है।** कांग्रस-पार्टी की कुण्डली में कर्कराशि अष्टम भाव की है एवं मकरराशि द्वितीय भाव की है, ये दानों मारकभाव है।, अतः सत्तारुढ दल को पुनः सत्ता हथियाने के लिए भारी प्रयत्त्न करने पड़ेंगे, वरना भाजपा-अकाली गठबन्धन भारी पड़ जाने का योग है।

पंजाब की प्रभावराशि के अनुसार 16 जून से 28 जुलाई तक यहां राजनैतिक उलझनों, उग्रवादजन्य कुछ घटनाओं एवं राजनैतिक हत्याकाण्डों से परेशानी का वातावरण बन सकता है। लेकिन तात्कालीन सत्तारुढ़दल स्थिति पर नियन्त्रण पा लेंगे। प्रान्त में नई प्रगतिप्रद योजनाएं कार्यान्वित होंगी। कुछ राजनीतिज्ञों को राजनैतिक बदले की भावना एवं षडयन्त्रों का शिकार होना पड़ेगा।

हरियाणा—प्रभावराशि कर्क एवं नामराशि मिथुन है। कर्कराशि के शनि में (15 जुलाई तक) यहां की शासनसत्ता को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। पार्टी की साख में कमजोरी अनुभव होने लगेगी। औद्योगिक एवं पर्यटन की दृष्टि से प्रान्त सम्पन्न रहेगा। 15 जुलाई से संवत् के अन्त तक के समय में अन्य प्रमुख पार्टियों के नेता अपना प्रभाव- वर्चस्व बढ़ाने में समर्थ होंगे। जून, 2007 ई. तक यहां प्राकृतिक प्रकोप एवं उग्रवादजन्य परेशानियों से हानि के योग हैं 15 जुलाई से शनि के सिंह में आने पर संवत् के अन्त तक का समय राजनीतिज्ञों के लिए भारी उलझनपूर्ण है।

हिमाचल प्रदेश—प्रभावराशि मीन एवं नामराशि कर्क है। 16 जून से 15 जुलाई तक एवं 31 जुलाई से सितंबर तक की ग्रहस्थिति यहां यान-दुर्घटना, प्रकृतिक प्रकोप, भूकम्प, भूस्खलन आदि से हानि का संकेत देती है। प्रधान नेता श्री वीरभद्र सिंह जी की. नामराशि के आधार पर गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार वृश्चिक राशि का गुरु इनकें राजनैतिक भविष्य को और अग्रेसर रखेगा। प्रभावक्षेत्र बढेगा। यह प्रदेश निर्विवाद रूप से औद्योगिक एवं पर्यटन के क्षेत्र में भारी प्रगति करेगा। आगामी वर्ष राजनैतिक दृष्टि से यहां सत्तारूढ़दल के लिए प्रतिष्ठा एवं वर्चस्व को बढाने वाले हैं।

उत्तर प्रदेश—नामराशि वृष एवं प्रभावराशि धनु है। संवत् के प्रारम्भ से पूर्वकालिक ग्रहस्थिति के अनुसार कुम्भ राशि में से शुक्र 16 फरवरी, 2007 ई. को मीन (उच्च) राशि में आकर बृहस्पति की दृष्टि में आ जाएगा। क्योंकि, शुक्र उच्च अवश्य है, लेकिन शत्रु के क्षेत्र में शत्रु ग्रह से दृष्ट है। फरवरी, 2007 ई. में किसी साम्प्रदायिक एवं धार्मिकस्थल व उग्रवादजन्य हत्याकाण्डों से जनजीवन अस्त-व्यस्त होने के योग हैं। सरकार को बड़े विवेक से काम लेना होगा, वरना प्रधान नेता को इसके कुपरिणाम भोगने होंगे।

संवत् 2064 वि. से पहिले ही राजनैतिक शक्ति परीक्षण में वर्तमान सत्तारूढ़दल को विपक्षी पार्टियों से भारी टक्कर लेनी पड़ेगी। परिणामस्वरूप, यहां कांग्रेस अपना वर्चस्व बढ़ाने में सफल तो होगी, लेकिन प्रमुख पार्टी का स्थान न पा सकेगी। समाजवादी पार्टी को भी झटका लगेगा। बसपा को अधिक लाभ मिलेगा। मिलीजुली सरकार ही यहां बन पाएगी। यदि यहां बसपा भाजपा के साथ गठबंधन कर ले तो सत्ता हथिया सकेगी, वरना समाजवादी पार्टी ही सत्ताभोगी होगी। यहां जुलाई से सितंबर तक प्राकृतिक-प्रकोप से भारी जनधनहानि के योग हैं।

जम्मू-काश्मीर—प्रभावराशि तुला है। नामराशि मकर है। मकर राशि पर कर्कराशिस्थ शनि की दृष्टि है। **15 जुलाई, 2007 ई. तक इस प्रान्त में भारी हत्याकाण्डों एवं उग्रवादियों द्वारा भारी उत्पात की संभावना है।** 6 अप्रैल को शुक्र वृष राशि में आकर गुरु के साथ समसप्तकयोग बनाएगा-" **क्रूराणां सह सौम्यैश्च यदि स्यात् समसप्तकम्। अनावृष्टिस्तदा ज्ञेया लोकपीड़ा-महत्यपि।।" भूस्खलन-भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोप से जनता परेशान रहे।** मई से सिमंबर तक की समयावधि सबसे अधिक संकटापन्न रहेगी। सरकार को भारी समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। 29 सितंबर से 3 नवम्बर तक काश्मीर में रक्तपात एवं राजनैतिक हत्याकाण्डों से सरकार सकते में आ जाएगी और यहां की प्रगति के कार्य अवरुद्ध होंगे। पाकप्रेरित आतंकवाद इस प्रान्त में भयंकर रूप धारण

कर लेगा। सीमाप्रान्तों पर सैन्यसंघर्ष के योग बनेंगे। भारत सरकार को इस दृष्टि से सतर्क रहना चाहिए।

भारतवर्ष की जलवायु एवं वर्षा

संवत् 2064 वि. में द्वितीय (शुद्ध) ज्येष्ठ शुक्ल सप्तमी (तात्कालिक अष्टमी) शुक्रवार, तदनुसार 22 जून, 2007 ई को 15 घं. 27 मि. (भा. स्टैं. टा.) पर उ.फा. नक्षत्र, व्यतिपात योग एवं कन्याराशिस्थ चन्द्र के समय सूर्यदेव आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश करेंगे।

आर्द्राप्रवेश कुण्डली

8 गु.
5 चं.
9
7
5 के.
10
शु. 3 श.
बु.
11 रा.
1 मं.
सू. 3
12
2

शास्त्रानुसार अष्टमी में आर्द्रा नक्षत्र में सूर्य का गमन शुभ नही। कहीं अतिवर्षण, कही वर्षा का अभाव रहेगा। आर्द्रा नक्षत्र का सम्बन्ध वर्षा–पानी से है। आर्द्राप्रवेश दिन में एवं व्यतिपात योग में होने से अनेक प्रान्तों में वर्षा की भारी कमी रहेगी, सूखाग्रस्त क्षेत्र परेशानी का कारण बनेंगे। आर्द्राप्रवेश कुण्डली में लग्नेश शुक्र जलराशि कर्क में शनि के साथ एवं सप्तमभावस्थ मंगल पर शनि की नीचदृष्टि होने से देश के महाराष्ट्र एवं गंजरात में कहीं भयंकर बाढ एवं कहीं अवर्षण से हानि के योग बनते हैं।

इस वर्ष वायु–वर्षा का स्वामी ग्रह शुक्र है, जोकि अधिक वर्षा से कई स्थानों पर बाढ़ की स्थिति बनाता है। **मेघचतुष्टय** के विचार से अनेकत्र बाढ से विनाशकारी दृश्य उपस्थित होंगे। **नवमेघों** के अनुसार वर्षा पर्याप्त होगी। **इस वर्ष जलस्तम्भ** 3 प्रतिशत होने से कुछ प्रान्तों में वर्षा की भारी कमी से किसान परेशान रहेंगे।

इस वर्ष **रोहिणी का वास** समुद्र में होने से वर्षा बहुत होगी, जलबहुल अन्न चावलादि की उपज अधिक होगी। न्यूनवर्षा वाले बागड आदि राजस्थानीय क्षेत्रों में भी वर्षा होने से कृषकवर्ग को सहारा मिलेगा। आवह आदि सप्तवायु विचार से आंधी–तूफान आदि प्राकृतिक प्रकोप, समुद्र–तटवर्ती भूभाग किंवा दक्षिणी–पश्चिमी भूभाग पर भूकम्प ज्वालामुखी–विस्फोट, समुद्री–तूफान आदि प्राकृतिक आपदा से भारी जनधनहानि के योग बनते हैं। भूमध्यगत तरंगें कहीं विशेष हानि का कारण बनेंगी।

अब हम गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार वर्षाविचार लिख रहे हैं; जिन तारीखों में हमने वर्षा का निर्देश किया है, उन तारीखों मे वर्षा यत्र–तत्र होगी। स्थानविशेष के लिए वर्षा का विचार करने हेतु सूक्ष्म विचार की आवश्यकता होती है, जो कि– समयाभाव के कारण संभव नहीं है।

मार्च (2007 ई.)– 1, 2, 8, 12, 14, 17, 18, 20, 23 से 25 मार्च तक उ.भारत में तापमान बढेगा। 29, 30, 31 मार्च को भूटान, सिक्किम, बंगलादेश, पूर्वी आसाम एवं पूर्वी बिहार में वर्षा के योग हैं। लेकिन उत्तरी भारत का तापमान बढेगा।

अप्रैल– 6, 7, 8, 14, 17 से 21 अप्रैल तक एवं 24, 27 अप्रैल को राज. उ.प्र. के किसी भाग में, हि. प्र., आसाम, महाराष्ट्र, विशेषतः मुम्बई में बादलचाल एवं वर्षा क योग बनते हैं।

मई–2, 7, 8, 9, 12, 13, 15, 17, 24, 25, 29, 30, 31 मई को मुंबई, आसाम, उडीसा, हि.प्र., बिहार में वर्षा के योग हैं।

जून– 3, 8, 13, 14, 15, 16, 17, 19, 20, 21, 23, 30 जून को हि.प्र., उ.प्र., म. प्र., आसाम, भूटान, शिलांग में जोरदार वर्षा के योग हैं। पंजाव एवं हरियाणा में लू और गर्मी का जोर रहे। 19 और 20 जून को कहीं आंधी–तूफान से हानि के योग हैं।

जुलाई– 2 से 6, 8, 10, 14, 15, 16, 20, 23, 24, 26, 28, 29 एवं 30 जुलाई को पंजाब, हरियाणा, हि. प्र., दिल्ली, चण्डीगढ एवं उत्तरी भारत में बादल–वर्षा के योग हैं। राजस्थान, उड़ीसा एवं आसाम में कहीं सूखा व बाढ से हानि के समाचार मिलेंगे। **नोट**– सिंह राशि का शुक्र 3 जुलाई से 19 अगस्त तक कुछ प्रान्तों में सूखे का वातावरण बना देगा।

अगस्त– 1 से 10 अगस्त तक, 12, 13, 14, 16, 17, 19, 20, 22, 23, 25, 30, 31 अगस्त को पंजाब, हि. प्र., जम्मू–काश्मीर, चण्डीगढ़, दिल्ली आदि के अधिकांश भागों में वर्षा के योग हैं। कहीं बाढ़ से हानि का योग भी है। 28 अगस्त को वायुवेग के साथ बुंदाबांदी, बादलचाल हो।

सितंबर– 1 से 4, 7, 8, 9, 16, 17, 22, 23 एवं 27 से 30 सितंबर को नेपाल, सूरत, दार्जीलिंग, उ.प्र. के कुछ भागों में कहीं बादलचाल व खण्डवृष्टि के योग हैं। उत्तरी भारत में मौसम साफ रहेगा।

अक्तूबर– 5, 6, 12, 16, 17, 18, 19, 23, 24, 30 और 31 अक्तूबर को उ. प्र., हि. प्र. एवं पंजाब के कुछ भागों में वायुवेग के साथ बादलचाल, खण्डवृष्टि पडे। हि. प्र., उत्तर–पूर्वी लंका एवं चिरापूंजी में भारी वर्षा संभव है।

नवम्बर–1 से 8 नवं. तक, 11, 12, 15, 16, 21, 22, 27, 28, 30 नवंबर को जम्मू–काश्मीर, हि. प्र. में जोरदार हिमपात के योग हैं। उत्तरी भारत में शीतप्रकोप बढ़ने लगेगा।

दिसम्बर– 3, 6, 7, 8, 10, 16, 17, 19, 20, 21, 22, 25, 26, 28, 29 एवं 30 दिसंबर को भयंकर शीत लहर चलेगी; उत्तरी भारत में धुन्ध का वातावरण रहेगा।

जनवरी (2008 ई.)–4, 5, 8, 10, 11, 12, 14, 15, 19, 20, 26, 27, 28, 29, 30, 31 जनवरी को उत्तरी भारत शीतलहर की चपेट में रहेगा। कुछ भागों में धुन्ध का वातावरण दुर्घटना का कारण बनेगा।

फरवरी –6, 12, 13, 18, 19, 20 को लंका के पूर्वी छोर, शिलांग व अन्य कुछ प्रान्तों में बादलचाल व बूंदाबांदी के योग हैं। उत्तरभारत में हवा का जोर रहेगा। ऋतु–परिवर्तन अनुभव होगा।

मार्च—2, 4, 6, 8, 10, 11, 14, 17, 20, 24 एवं 30 मार्च को हवा का जोर रहे। म. प्र., बंगाल, आसाम आदि में कहीं बादलचाल व बूंदाबांदी हो। उत्तर भारत में आसमान साफ रहे, गर्मी अनुभव होने लगेगी।

अप्रैल—1, 2, 3, 5 अप्रैल को पूर्वी आसाम, पू. बिहार, बंगाल और बर्मा के कुछ भागों में खण्डवृष्टि हो। उत्तर भारत में तापमान बढ़ेगा।

पाठको ! आतर्क्य भविष्य देखने की क्षमता तो इस कलियुग में कठिन ही है। पुनरपि, ज्योतिष–विज्ञानदृष्ट्या एवं श्रीप्रभुकृपावशात् राष्ट्रीय–अन्तर्राष्ट्रीय, जो शुभाशुभ घटनाएं मेरी अल्पविषया मति में प्रस्फुरित हुई हैं, आपके समक्ष उपस्थित कर दी हैं। आगे 'कर्तुमकर्तुमन्यथा कर्तुम् समर्थ' भविष्य के निर्धारक तो स्वयं प्रभु ही हैं। उनकी प्रबल मायाशक्ति के सम्मुख मुझ जैसे अल्पज्ञ की भविष्यलेखन में प्रवृत्ति बाल–चापल ही तो है–

"तत्त्वं चात्रेश्वरो वेत्ति नाहं वेद्मि कदाचन।"

लेख पूर्ण होने की तिथि–
सितं. 6, सन् 2006 ई.
(अनन्त चतुर्दशी)

शुभचिन्तक–

पं. इन्दुशेखर शर्मा,
श्री मार्त्तण्ड भवन, मु.पो. कुराली,
अजीत नगर (मोहाली), (पंजाब)।
PIN - 140 103
PHONE – 0160-2641277
FAX-2641577

आभार प्रदर्शन

हमारे परम सहयोगी मित्रवर ज्ञानी श्री करतार सिंह जी 'गढ'

(मालिक, कंवल फोटोस्टेट, चौक माता रानी, कुराली PH. 0160-2641274)

श्री करतार सिंह जी ज्ञानी, सन् 1992 ई. से हमारी 'शिरोमणि तिथपत्रिका' (पंजाबी) और 'श्री मार्त्तण्ड आलम जन्त्री' (उर्दू) के अनुवाद, पाण्डुलिपि–लेखन, प्रूफरीडिंग आदि का श्रमसाध्य पूरा कार्य अत्यन्त आत्मीयभाव, तन्मयता, परिश्रम तथा निःस्वार्थभाव से करते चले आ रहे हैं; जिससे ये दोनों प्रकाशन प्रतिवर्ष उत्तरोत्तर समृद्ध कलेवर में हमारे पाठकों को उपलब्ध होने लगे हैं। अब तक **श्रीमार्त्तण्डपंचांग** (हिन्दी) की ही संस्कार–समृद्धि की ओर हमारा अधिक झुकाव रहा । अतः एव ज्योतिष से सम्बद्ध विशेष लेखमाला तथा अन्य ज्ञानवर्धक स्तम्भ हम इसी (हिन्दी) पंचांग में प्रकाशित करते रहे हैं। उर्दू एवम् पंजाबी की इन जन्त्रियों में ऐसे लेख एवम् स्तम्भों को समाविष्ट करने से, हम अनुवाद आदि के लिए समय की कमी के कारण, आज तक कतराते रहे हैं । लेकिन अब **प्रियमित्र ज्ञानी करतार सिंह** जी की हमसे निःस्वार्थ घनिष्ठता एवम् उर्दू–पंजाबी भाषाओं में इनकी प्रशस्य दक्षता के कारण इन दोनों प्रकाशनों को भी हम ऐसे लेख–स्तम्भों से श्री मार्त्तण्डपंचांग की ही भान्ति अलंकृत करने में अपने आप को समर्थ पा रहे हैं। विगत कुछ वर्षों से दिए जा रहे नए–नए आकर्षक, ज्ञानवर्धक विषयों से वर्धमान कलेवर वाली **'शिरोमणि तिथपत्रिका'** का श्रेय आपको ही है। इन उर्दू–पंजाबी जन्त्रियों के अनुवाद आदि के भारी उत्तरदायित्त्व को पूरी तरह निभाते हुए आप जेसै–तैसे समय निकालकर हिन्दी के श्रीमार्त्तण्डपंचांग की प्रूफ–रीडिंग आदि में भी हाथ बंटाने में हर्ष अनुभव करते हैं। अपने प्रति इस निःस्वार्थ सौहार्दातिशय के लिए हम सभी हृदय से ज्ञानी जी के ऋणी हैं। आप अपने व्यस्त जीवन के क्षणों में भी हमारे लिए प्रचुर पर्याप्त समय सहर्ष निकाल लेते हैं। आपके इस सौहार्दभरे स्पृहणीय सहयोग से हमारा प्रकाशन–कार्यभार काफी कुछ हल्का हुआ है। एतदर्थ हम आपके प्रति विनम्रतापूर्वक आभार प्रकट किए बिना सचमुच नहीं रह सकते।

आपका सहयोग भी हमारे लिए कम महत्त्वपूर्ण नहीं है

श्रीमार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय कुराली के प्रबन्धक, हमारे पूज्य पिताजी के प्रियशिष्य, हमारे अनुजकल्प *चि. प्रेमचन्द्र शर्मा;* एवम् इनके पुत्र *चि. सचिन शर्मा,* चि. *श्रीकृष्णशर्मा,* **M.A.(संस्कृत), वेदाचार्य, साहित्याचार्य (निवासी– ग्राम सुन्हाड़, सौर–सोलन, हिमाचल प्रदेश),** *चि. दिलबाग शर्मा* सुपुत्र श्री रामचन्द शर्मा, ग्राम एवं डा. **सिनन्द (कैथल– हरि.) तथा नालाबलोग (पंचकूला) के निवासी** *चि. सुरेशानन्द शर्मा,* बी.ए., सुपुत्र श्री सुन्दरराम शर्मा एवम् *श्री रविसन्धु,* भी 'श्रीमार्त्तण्डपंचांग' (हिन्दी) की पाण्डुलिपि लेखन, प्रूफरीडिंग आदि का काम बड़ी तत्परता, सावधानी, अपनापन और आदरभाव से करते हैं। इस पंचांग के प्रकाशनकार्य का हमारा भार इन युवाओं के स्वत्व भरे उत्साहपूर्ण सहयोग से हल्का हुआ है। एतदर्थ इनके निरन्तर प्रगतिमय, परमोज्वल भविष्य के लिए हमारा इन्हें सस्नेह–आशीर्वाद है।

सम्पादक मण्डल

व्यापार–विमर्श

(संवत् 2064 वि. की ग्रहस्थिति के आधार पर व्यापारिक वस्तुओं में आने वाली तेजी एवम् मन्दी का मासिक विवरण)

लेखक :– इन्दुशेखर शर्मा-संयमी शर्मा,

संसार के सभी पदार्थों पर ग्रहों का नियंत्रण है, सभी पदार्थों का समावेश बारह राशियों में है। जब ग्रह भ्रमण करता हुआ राशिभोग करता है, तो उस राशि में समाहित सभी व्यापारिक वस्तुएं ग्रह की प्रकृति के अनुसार प्रभावित होती रहती हैं। प्रभावित वस्तुओं में परिवर्तन आते हैं और इन्हीं परिवर्तनों से बाजारों में घटाबढ़ी होती है, जिसे हम ' तेजी–मंदी ' कहते हैं। व्यापारी 'तेजी–मन्दी'– इन दो शब्दों से अपने भाग्य को आजमाता है। परन्तु मनुष्य का भाग्य कर्मफल किंवा ग्रहचाल के मुताबिक आर्थिक स्थिति को कभी बिगाड़ता है तो कभी सुधारता है। रथ के पहिए में लगे आरों की भांति मनुष्य को समाज में कभी ऊपर उठाता है तो कभी नीचे गिराता है – "चक्रारपंक्तिरिव गच्छति भाग्यपंक्तिः"। कहने का तात्पर्य यह है कि, जो व्यक्ति आज व्यापार में घाटा खा चुका है, वह सदा के लिए डूबा ही रहेगा–यह धारणा भ्रामक है। व्यापार में बहुत ही आश्चर्यजनक उतार–चढ़ाव आते हैं, न जाने आपको कब शीघ्र उत्तम धनलाभ हो जाए। जो व्यक्ति धनाढ्य होकर सट्टे का काम विचारपूर्वक नहीं करते, वे शीघ्र ही डूब सकते हैं । व्यापार तो किस्मत के सिकन्दर का ही प्रत्यक्ष साथ देता है। अतः किसी भी तरह का व्यापार करने से पहिले आप पत्राचार द्वारा या प्रत्यक्ष मिलकर ग्रहस्थिति पर विचार करा लें। विश्वास रखें, ग्रहस्थिति के आधार पर किए गए व्यापार से आप हानि में न रहेंगे। आप भारी हानि से भी बच सकते हैं।

जीवन में ग्रहस्थिति के प्रभाव का अध्ययन करने से यह निःसन्देह सत्य सिद्ध हो चुका है, जितना लाभ आपको होना है, उतना ही होगा, अधिक नहीं– "यदस्मदीयं नहि तत्परेषाम्" अर्थात् जो मेरा है, वह मिलेगा ही, उसे और कोई नहीं ले सकता। अतः जीवन पर ग्रहों का संकेत समझकर ही व्यापार करना बुद्धिमत्ता है।

खुलकर व्यापार करने से पहिले अप्रत्याशित हानि से बचने के लिए अपनी व्यक्तिगत ग्रहचाल को ध्यान में रखना सतर्कता है । हानिप्रद ग्रह से संबंधित वस्तु का व्यापार न करें। वर्ष में जो ग्रह लाभप्रद हैं, उन ग्रहों के अधिकारक्षेत्र में आने वाली वस्तुओं का ही व्यापार करें, तभी आप लाभ ले सकेंगे। हाज़र एवं वायदा व्यापारी जो अपने व्यापारिक जीवन से निराश हो चुके हैं, उनके लिए हम यहां व्यापार–विमर्श में ग्रहों का पूर्ण अध्ययन करके तेजी–मन्दी का मशवरा देते हैं। व्यापारियो ! निराश न हों । हमसे प्रत्यक्ष मिलें, आपकी उलझी हुई व्यापारिक समस्या का समाधान हम करेंगे ।

संवत् 2064 में गुरु, शनि, राहु, मंगल, यूरेनस, नेप्च्यून और प्लूटो आदि के चार एवं युति–प्रतियुति के आधार पर यह स्पष्ट घोषणा की जाती है कि, इस साल व्यापार जगत् में विशेष लम्बे तेजी एवं मन्दे के रिएक्शन्ज़ आएंगे। इस वर्ष गुड़, खाण्ड, घी, तेल, तिलहन एवं रुई में विशेष लाभ के चांस हैं, तुरन्त फीस भेजकर टेलीफोन से सम्पर्क स्थापित करें । विदेशी व्यापारी पत्र द्वारा या टेलीफोन द्वारा सम्पर्क स्थापित करें, उत्तर मिलेगा। कहने का तात्पर्य है, कि– इस वर्ष व्यापारिक क्षेत्र में रंक से राजा एवं राजा से रंक बना देने वाले विशेष योग हैं । अतः प्रत्यक्ष मिलकर या वर्षभर की फीस भेजकर टेलीफोन के जरिये समय–समय पर ताजा परामर्श प्राप्त करके उत्तम लाभ प्राप्त करें। व्यापार–विमर्श लेख में जिस जगह हम ताजा मशवरा हासिल करने की बात लिखते हैं, वहां व्यापारी अगर प्रत्यक्ष मिलकर मशवरा लें, तो अच्छा रहे । 'व्यापार–विमर्श 'लेख में हम ग्रहचाल के मुताबिक सभी व्यापारियों को प्रतिवर्ष बाजारों के उतार–चढ़ाव से सावधान करते रहे हैं ।

सं. 2046 वि. में चना के व्यापारी हमारे परामर्श से भारी लाभ उठा चुके हैं । सरसों, तेल, तिलहन में तेजी से सं. 2048 वि. में तो जो व्यापारी हमारे संपर्क में रहे, लाखों का लाभ उठा गए। हमने तेल, सरसों, बिनौला, अलसी, सूरजमुखी, मूंगफली एवं रुई में अपने व्यापारियों को भयंकर तेजी बताई थी, उस साल व्यापारियों को हमारे परामर्श से छः गुणित लाभ प्राप्त हुआ। सं. 2049 वि. में तेल, घी एवं शेयरों के बाजार में जो उथल–पुथल हुई– उसका खुलासा हम निजी व्यापारियों को देते रहे हैं । सं. 2052–53 वि. में रुई एवं दालवाना के व्यापारी हमारे साथ मशवरा करके लाखों रुपये का लाभ प्राप्त कर चुके हैं ।

सं. 2054 वि. में सरसों के व्यापारी हमारे ताजा मशवरे से भारी हानि से बचे एवं गुड के व्यापारी लाखों कमा गए। सं. 2055 वि. में तेल के व्यापारी 24 अगस्त तक Rs. 5450/– तेल के भाव में सौदा सैटल करके पूरा लाभ ले गए। सं. 2056–57 वि. में तेल, गुड़, सरसों, सोना–चांदी एवं अनाजों के व्यापारी हमारे मशवरे से विशेष लाभ प्राप्त कर चुके हैं । संवत् 2060 में वायदा व्यापारी एवं हाजर का काम करने वाले व्यापारी दालवाना, सरसों एवं ग्वार में पहले भयंकर तेजी से और बाद में आश्चर्यजनक लगातार मन्दे से भरपूर लाभ हमारे ताजा मशवरे से उठा चुके हैं। आगे भी व्यापारियों से अनुरोध है, कि– व्यक्तिगतरूप से आकर व्यापारिक जानकारी लेने में भारी लाभ ले सकेंगे। दूर–दराज से आने वाले व्यापारी टेलीफोन से समय निश्चित करके आएं या एक मास की फीस एक जिन्स के लिए 2500 + 50 रु. डाकव्यय सहित भेजकर टेलीफोन से ही तेजी–मन्दी जान सकेंगे। प्रत्येक

मैटल [सोना, चांदी, कापर आदि की फीस Rs. 5000/– (पांच हजार रुपये) प्रतिधातु प्रतिमास के हिसाब से भेजें।]

ठस वर्ष हम अपने व्यापारियों (जिन्होंने 2500+ 50 रु. डाकव्यय सहित प्रति मास प्रति जिन्स के हिसाब से फीस जमा करवाई है) को टेलीफोन पर सं. 2064 वि. में ग्रहों के वक्रमार्ग, युति, गति के अनुसार तेजी–मन्दी की विशेष लाइनों का संकेत देंगे, साथ ही सामयिक तेजी–मंदी का विवेचन भी करेंगे ।

व्यापारियों से निवेदन है, कि वे अपनी ग्रहचाल के अनुकूल होने पर ही व्यापार करें। व्यापार में किसी प्रकार की हानि के लिए सम्पादक/लेखक जिम्मेदार न होंगे।

नोटः– वायदा व्यापार या हाजर सौदा के व्यापार की लाईन अगर लिखे या बताए गए विचार के विपरीत चले तो तुरन्त सौदा काटकर नुक्सान से बचें, तुरन्त प्रत्यक्ष मिलकर या टेलीफोन से ताजा मशवरा हासिल करें। किसी प्रकार के नुक्सान (हानि) की जिम्मेदारी हम नहीं लेते अर्थात्– व्यापार में हानि होने पर हम जिम्मेदार न होंगे ।

संवत् 2064 वि. में ग्रहस्थिति के अनुसार तेजी–मन्दी

संवत् 2064 वि. में तेजी–मन्दी का सुविस्तृत विवरण देने से पहिले हम इस संवत् के नाम, वर्ष के राजा, मन्त्री, धान्येश, सस्येश एवं रसेश का व्यापार पर क्या प्रभाव पड़ता है– संक्षेपेण यहां दिग्दर्शन करा देना प्रासंगिक समझते हैं। संवत् 2064 वि. को **'शर्वरी'** नामक संवत्सर कहा गया है। इसका फल शास्त्रों में इस प्रकार से लिखा गया हैः–

"शर्वरी–वत्सरे पूर्णा धरा सस्यार्घ–वृष्टिभिः।
जनाश्च सुखिनः सर्वे राजानः स्युर्विवैरिणः।।"

अर्थात् – पृथ्वी हर्ब एवम् खाद्यान्न से समृद्ध रहे; वर्षा पर्याप्त हो, जनता में सुख–समृद्धि रहे, शासकवर्ग परस्पर वैर रहित रहे।

संवत् 2064 का **'स्वामी ग्रह'** चन्द्र होने से वर्षा काफी हो, जनता एवम् देश में प्रगतिपद योजनाएं बनें तथा मांगलिक कार्य बहुत हों। देश की जनता में सौहार्द रहे, रोग–व्याधि एवम् मृत्युदर को कम करने के लिए शासन विशेष कार्यक्रम बनाए।

इस वर्ष का **मन्त्री शनि** होने से अनेकत्र वर्षा की कमी रहे, शासक निर्दयी हों एवम् जनता में आक्रोश रहे। धन–धान्य की कमी से निर्धन अधिक परेशान रहें, उपद्रव हों तथा व्यापार प्रभावित हो।

इस वर्ष का **सस्येश चन्द्र** होने से धन–धान्य अधिक हों। **धान्येश सूर्य** होने से मूंग, मोठ, बाजरा आदि की फसल बहुत कम होने से महंगाई बढ़े। शासकों में तालमेल कम रहे, जिससे व्यापार प्रभावित होगा। धान्य मंहगे होंगे। जनता में नानाविध रोगों से एवम् फल–कपास आदि की फसलों में विशेष प्रकार के रोगों से मंहगाई विशेष होगी।

नोट–राजा, मन्त्री, सस्येश में से इस वर्ष मन्त्री शनि का प्रभाव अधिक होने से मन्त्री शनि के फल को प्राथमिकता दी जाएगी। सूर्य (धान्येश) एवम् शनि मन्त्री होने से भी मंहगाई के कारण व्यापार प्रभावित होता मालूम देता है।

इस वर्ष **मेघेश शुक्र** अधिक वर्षा का संकेत देता है। कुछ प्रान्तों में, विशेषतः महाराष्ट्र, उड़ीसा, बंगाल में वर्षा–पानी से हानि होगी, जिससे मंहगाई बढ़ेगी।

इस वर्ष **"द्रोण" नामक मेघ** पर्याप्त वर्षा का संकेत देता है। नवमेघों में 'नील' नामक मेघ भी पर्याप्त वर्षा करेगा। रुई, कपास एवम् दालवाना से लाभ मिलेगा।

संवत् **2064 वि. की शरत्–सस्य–जातक कुण्डली** में सूर्य से द्वितीय शुक्र एवम् सूर्य–बुध का एकत्र होना शरद ऋतु की उपजों में काफी अच्छे आसार का सूचक है। मक्का, जीरी, गन्ना, गुड़, अरहर, कुल्थ, ग्वार, कपास की फसल अच्छी होगी।

ग्रीष्म–सस्यजातक कुण्डली में सूर्य–गुरु की सन्निधि एवम् लग्न पर लग्नेश एवम् गुरु–चन्द्र की दृष्टि है। जौ, चना, गेहूं आदि की फसल पर्याप्त होने पर भी प्राकृतिक प्रकोप से हानि के योग हैं। परिणामतः– मसरी, दालवाना, सरसों, चना आदि की खड़ी फसलों को हानि पहुंचेगी। मंहगाई उत्तरोत्तर बढ़ेगी।

ग्रहों के वक्रमार्ग, युति–प्रतियुति के अनुसार इस वर्ष चावल, गेहूं, चना, गुड़, ग्वार, दालवाना, रुई, नरमा, मैथा एवं तेल, तिलहन में तेजी–मन्दी के भयंकर रिएक्शन्ज आएंगे। ***व्यापारियों से अनुरोध है, कि– टेलीफोन नं. 0160–2641277 पर समय निश्चित करके प्रत्यक्ष मिलें या दो हजार पांच सौ रु. (Rs. 2,500/-) प्रतिमास एक जिन्स के हिसाब से फीस जमा करवाकर टेलीफोन से तेजी–मन्दी के बारे में चांस प्राप्त करें। सोना–चांदी एवम् कॉपर (मैटल्स) के व्यापारी Rs. 5000/– (पांच हज़ार रुपये) प्रतिमैटल प्रतिमास के हिसाब से फीस भेजकर प्रतिमास की दैनिक तेजी–मन्दी Telephone द्वारा प्राप्त कर सकते हैं।***

अप्रैल (सन् 2007 ई.)

(मासारम्भ से पूर्वकालीन ग्रहस्थिति पर विहंगम दृष्टिपात कर लेना ठीक रहेगा। 29 मार्च को मंगल कुम्भ में आया है। इस से पूर्व शुक्र मेष में है, शनि कर्क का है। ग्रहस्थिति–अनुसार चना, जौ, दालवाना, गुड, घी, तेल, सोना–चान्दी, रुई एवं सूत में तेज़ी रहेगी।)

अप्रैल के प्रारम्भिक दिनों में चना, मूंग, मोठ, ज्वार, बाजरा, तूआर में घटा–बढ़ी के बाद तेज़ी आए। 2 अप्रैल सोमवार को, हस्त नक्षत्र, सायन संक्रान्ति वायदा बाज़ारों में तेजी से लाभ देंगे।

4 अप्रैल को **मेषराशिस्थ शुक्र कृत्तिका नक्षत्र** में प्रवेश करेगा। जौ, चावल, हींग, तिल, तेल, सरसों, रुई, सूत, चान्दी में मन्दी बने। गुड़, सोना और लालमिर्च मे कुछ तेजी रहे।

6 अप्रैल को शुक्र वृष राशि में एवम् गुरु वक्री पोजीशन में आता है। वृष राशि के शुक्र पर गुरु और मंगल की नजर है। गेहूं, जौ, चना, चावल आदि अनाजों, अलसी और घी में मन्दे का वातावरण बने। रुई और कपास में अच्छी मदी आकर तेजी का झटका आए। सोना, चान्दी आदि धातु व ऊनी कपड़े में अच्छी तेजी बने। रुई में पहले तेज़ी आकर बाद में अच्छी मन्दी बने।

7 अप्रैल को बुध मीन राशि में आकर सूर्य के साथ मेल करेगा। बुध पर बृहस्पति की विशेष नजर है, अतः रुई, गुड़, खाण्ड, शक्कर में मन्दा बने। सोना, चान्दी में घटाबढी के बाद पहले तेजी, बाद में उतनी ही मन्दी बने।

नोट– क्योंकि बुध जब सूर्य के साथ मेल करता है तो क्रूर होकर तेजीकारक हो जाता है। लेकिन 7 अप्रैल को बुध और सूर्य पर बृहस्पति की खास नजर होने से यहां तेजी न बनकर मन्दा ही रहेगा, ऐसा हमारा विचार है। 7 अप्रैल को ही मंगल शतभिषा में आ रहा है, अतः रुई, सोना, चांदी के भावों में अच्छी तेज़ी–मन्दी के रिएक्शन्ज़ बनेंगे– सावधानी से काम करें।

9 अप्रैल को बुध उ.भा. में आकर चांदी में घटाबढ़ी और वायदा बाज़ार में 13 अप्रैल तक अनिश्चितता रख सकता है।

14 अप्रैल को सूर्य अश्विनी नक्षत्र और मेष राशि में दाखिल होगा। इस समय मेष राशि के सूर्य पर शनि की खास नज़र है। सूर्य शनि दोनों शत्रु हैं। सूर्य का सम्बन्ध रुई, एरण्ड, अलसी, मूंगफली, कपास, अनाज, सोना, चांदी, हल्दी, कालीमिर्च आदि पर विशेष रूप से देखा गया है। मेष राशि सूर्य की उच्च राशि है। इसलिए अलसी, एरण्ड, तिल, तेल, सोना, चान्दी, लोहा, तांबा, लालचन्दन, सुपारी, हींग, सूत, मेथी, लौंग, इलायची, रुई, कपास, घी, तिलहन, गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेज़ी रहेगी। लेकिन दालवाना, गेहूं, चावल आदि में कुछ मन्दा रहे।

15 अप्रैल को रोहिणी नक्षत्र का शुक्र एवम् 17 अप्रैल को रेवती नक्षत्र में बुध के आने से चान्दी, सोना आदि धातुओं, लालमिर्च, केसर, मजीठ, कुसुम्भ, लाल चन्दन, अलसी, एरण्ड, घी, तेल में तेजी–मन्दी के रिएक्शन्ज़ बनेंगे। 17 अप्रैल को मंगलवारी अमावस भी वायदा बाज़ारों में तेजी का संकेत देती है।

[वायदा व्यापारियों को 6, 7 और 14 तारीख को तेजी और मन्दी की प्रतिक्रियाओं से अच्छा लाभ मिलेगा।]

18 अप्रैल को राहु शतभिषा के चतुर्थ चरण में और पू. फा. के 2 चरण में केतु का प्रवेश होगा। राहु इस समय मंगल के साथ राशिसम्बन्ध बना रहा है, जो कि राजनैतिक दृष्टिकोण से वायदा और हाजर बाज़ारों में कुछ तेजी का कारण बनेगा।

19 अप्रैल को कर्कराशिस्थ शनि मार्गी हो रहा है। 6 दिन में रुई में मन्दा आकर फिर तेजी बने। तिल, तेल, सरसों, हींग और लालमिर्च में तेजी रहे।

20 अप्रैल को बुध पूर्व में अस्त हो रहा है। इस समय बुध अतिचारी और नीच राशि में है। जब बुध अतिचारी होता है उस समय इसमें तेजी और मन्दी लाने की ताकत बढ़ जाती है। तिलहन बाज़ारों में इसका तेज़ीकारक विशेष प्रभाव देखा गया है। हाजिर व्यापारियों को आने वाले 1½ महीने में बहुत बड़ा लाभ प्राप्त होगा।

24 अप्रैल को बुध अश्विनी नक्षत्र और मेष राशि में आकर सूर्य के साथ मेल करेगा और इसी दिन मंगल पू. भा. में प्रवेश करेगा। तिल, तेल, मूंगफली, एरण्ड, अलसी, नारियल, सूत, रुई, कपास, सोना, चान्दी में भारी तेज़ी का योग है। क्योंकि मेष राशि के बुध और सूर्य पर इस समय शनि की खास नज़र भी है, इसलिए मेष राशि का बुध विशेष मन्दीकारक मालूम नहीं देता।

[नोट– अगर इस दिन बाज़ार मन्दे हों तो स्टॉक करें, आगे अच्छा लाभ मिलेगा।]

26 अप्रैल को मृग. नक्षत्र का शुक्र अनाजों में मन्दा और गुड़, खाण्ड, शक्कर में भी मन्दा करेगा। 27 से 29 अप्रैल तक की ग्रहचाल के अनुसार अलसी में मन्दा; सोना, चान्दी, तांबा, पीतल, गेहूं, जौ, चना, चावल, मूंग, मोठ आदि अनाजों और गुड़, खांड, घी में तेज़ी कर सकता है। 30 अप्रैल को अनाज तेज़ रहें।

मई

1 मई से 5 मई तक ग्रहचाल के मुताबिक हाज़िर और वायदा बाज़ार में उथल–पुथल रहेगी, लेकिन बाज़ारों में तेज़ी का प्रभाव प्रधान रहेगा। इसलिए तेज़ी में बेचकर और मन्दे में खरीदकर लाभ लेते रहें।

6 मई को कृत्तिका नक्षत्र का बुध चांदी में घटाबढ़ी के बाद मन्दी; रुई में तेज़ी और अनाजों में कुछ तेज़ी करेगा।

7 मई को मंगल मीन राशि में आकर बृहस्पति की नजर में आ जाएगा। सोना, चांदी में घटाबढी के बाद तेज़ी बने। लेकिन इस समय बृहस्पति की मंगल पर नज़र होने से बाज़ारों में ज़ोरदार मन्दा भी आ सकता है– सावधानी से काम करें।

8 मई को बुध वृष राशि में आकर बृहस्पति के साथ समसप्तकयोग बनाएगा, जो कि बाज़ारों में मन्दी कर सकता है। रुई और अनाजों में मन्दे का वातावरण बन सकता है। रुई में विशेष मन्दा आकर तेज़ी बन सकती है। दालवाना, तिल, तेल आदि के भाव में तेज़ी बने। 10 मई तक बाज़ार कुछ तेजी की तरफ रहेंगे।

11 मई को कृत्तिका नक्षत्र का सूर्य घी, रुई, सोना, चांदी, अलसी, एरण्ड, गेहूं, जौ, चना, मूंग, मोठ, चावल में तेजी बनाए।

12 मई को मंगल उ. भा. में आकर एक महीने में चन्दन, कपूर आदि सुगन्धित चीजों में तेजी करेगा। सोना, चान्दी, रुई, गेहूं, जौ, चना के भाव में तेज़ी बने।

13 मई को बुध रोहिणी नक्षत्र में आकर रुई, सूत, कपास, तिल, तेल, सरसों, सोना, चान्दी, चावल, गुड, खाण्ड में तेज़ी लाएगा। राई, तूअर, सण, ऊनी व रेशमी वस्त्रों में मन्दा बने। रुई में पहले तेज़ी फिर मन्दा करे।

[नोट– 7, 8 मई एवम् 11 से 13 मई तक वायदा बाज़ारों में तेज़ी प्रधान रहने के योग हैं।]

14 मई को बुध पश्चिम में उदित होगा। बुध इस समय अतिचारी है। बुध, बृहस्पति से दृष्ट भी है। सूत, रुई में मन्दा बने और तेल व तिलहन में भी मन्दे का रुख रहे।

15 मई को सूर्य वृष में आकर बृहस्पति के साथ मेल करेगा। चान्दी, सोना, गुड, खाण्ड, शक्कर, कपास, रुई, सूत, बादाम, सुपारी, नारियल, तिल, तेल, सरसों आदि में तेजी बनेगी। जौ, चना, गेहूं, मटर, अरहर, मूंग, चावल में कुछ मन्दे का रुख रहेगा।

17 मई को गुरु वक्री पोजीशन में ज्येष्ठा नक्षत्र के दूसरे चरण में दाखिल होगा। चान्दी में मन्दी एवम् अनाजों में घटाबढ़ी चलेगी। **18 मई को मिथुन राशि एवम् कृत्तिका नक्षत्र में चन्द्रदर्शन होगा।** तेल, तिलहन और अनाजों में मन्दे का रुख रहे। रुई और चान्दी में घटाबढ़ी के बाद तेज़ी बने। गुड़, खाण्ड, चावल भी तेज रहें। 18–19 मई को बाज़ार सामान्य रहें।

20 मई को मृगशिर नक्षत्र में बुध के आने से रुई में तेज़ी, चान्दी में घटाबढ़ी बने। अनाजों और दालवाना में मन्दा बने। 21 मई को पुर्नवसु नक्षत्र का शुक्र अनाज, बिनौला में तेज़ी ला सकता है। 24 मई तक बाजार उत्तम–मध्यमरूप से तेज रहेंगे।

24 मई को बुध मिथुन राशि में आकर मंगल की नज़र में आ जाता है। मिथुन राशि बुध की अपनी राशि है। मिथुन राशि रुई, कपास और तेलवाना के बाज़ारों में तेज़ी का संकेत देती है। सोना, चान्दी में मन्दा आकर तेजी बने और रुई, कपास, तेल, तिलहन के बाज़ार तेज रहें।

25 मई को रोहिणी नक्षत्र का सूर्य तिल, तेल, सरसों एरण्ड, अलसी, गुड, खाण्ड, घी, गेहूं, जौ, चना, ज्वार, बाजरा, ऊन, सूत, सण, सुपारी, लालमिर्च और राई में तेज़ी करे। चान्दी में कुछ मन्दा और रुई में कुछ तेजी रहे। 28 मई तक बाजार कुछ तेज रहेंगे।

29 मई को बुध आर्द्रा नक्षत्र में आकर बाज़ारों का रुख बदल सकता है– सावधानी से काम करें। गेहूं, तिल, उड़द, जौ, चना, मूंग, मोठ, ज्वार, बाजरा में मन्दा रहे। **चान्दी में विशेष तेज़ी आने का योग है।** रुई में घटाबडी के बाद तेज़ी बने। सोना कुछ मन्दा रहे।

30 मई को शुक्र कर्क में आकर शनि के साथ मेल करेगा। इन पर बृहस्पति की खास नज़र भी है। व्यापारियों को हिदायत है कि– अनाज, दालवाना का स्टॉक 20, 21 या 29 मई को करें। क्योंकि कर्क राशि का शुक्र अनाज, दालवाना, गुड़, खाण्ड, घी में अच्छी तेज़ी ला देगा। कर्क के शुक्र में आगे मासान्त तक ज़ोरदार तेज़ी आने का योग है।

जून

2 जून को शुक्र का पुष्य नक्षत्र में प्रवेश रुई, सूत, सण, रेशम व अनाजों में कुछ तेजी का रुख बनाएगा। लाख, चमड़ा, कपूर, पारा, शिंगरफ, हींग, गुड़, खाण्ड, शक्कर में मन्दे का वातावरण बनाएगा। यह तेजी–मन्दी 7 जून तक प्रभावी रहेगी।

8 जून को मृगशिर नक्षत्र का सूर्य रुई, सूत, रेशम, सण, कपूर, चन्दन, सोना, चान्दी, उड़द, मूंग, मोठ, चना, बाजरा, अलसी में तेज़ी करेगा। यह तेजी उत्तम–मध्यम रूप से 12 जून तक चलेगी।

13 जून को शनि आश्लेषा के चतुर्थ चरण में आकर रुई, तिल, तिलहन और अन्य व्यापारिक वस्तुओं में तेजी का रुख रखेगा। 13 जून को ही बृहस्पति वक्री पोजीशन में ज्येष्ठा के पहले चरण में दाखिल होगा। अनाजों में घटाबढी चलेगी; चान्दी में मन्दी बने।

15 जून को सूर्य मिथुन में दाखिल होकर बुध के साथ मेल करेगा। इसी दिन बुध वक्री हो रहा है और इन पर मंगल की विशेष नजर भी है। बुध सूर्य का एक राशि में होना तेजी कारक माना गया है। तेल, तिलहन, गुड़, घी, और दालवाना में अच्छी तेजी का योग है। पाट, बारदाना, रेशम, सूत, कपास, रुई, सरसों, लोहा, तिल, तेल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, चीनी, घी, उड़द, मूंग, गेहूं, चना, चावल, सोना, चान्दी में अच्छी तेजी का योग है।

16 जून को मंगल मेष राशि में आकर शनि को देखेगा और शनि मंगल को देखेगा। इसप्रकार गेहूं आदि प्रत्येक प्रकार के अनाज; सोना, चांदी आदि धातु, मूंगा, मोती, रुई, कपास, बारदाना, गुड़, शक्कर, चीनी, ज्वार, बाजरा, चना में अच्छी तेजी का योग है। 18 तारीख से पहले ही लाभ प्राप्त करें।

19 जून को बुध पश्चिम में अस्त होकर रुई में ज़ोरदार मन्दे का झटका ला सकता है। चान्दी तेज़ रहेगी; पाट, हैसियन और शेयर मन्दे रहेंगे।

[नोट– क्योंकि यहां बुध वक्री होकर अस्त हुआ है, इसलिए अनाज तेज़ रहेंगे।]

20 जून को राहु शतभिषा के तृतीय चरण में और केतु पू. फा. के प्रथम चरण में दाखिल होगा। गुड़, खाण्ड, दालवाना, गेहूं, जौ, चना, उड़द, मूंग, सरसों और

तिलहन में तेज़ी, रुई में घटाबढी चले।

22 जून को सूर्य आर्द्रा में दाखिल होगा। इस समय बुध भी आर्द्रा नक्षत्र में ही चल रहा है। बुध अस्त भी है। शनि और मंगल का इन दिनों परस्पर दृष्टिसम्बन्ध होने के कारण कुछ प्रान्तों मे वर्षा की बहुत कमी अनुभव होगी। महाराष्ट्र आदि में वर्षा के प्रकोप से फसल को नुक्सान होने का योग है। रुई, सूत, कपास, खल, अलसी, एरण्ड, मोती, गेहूं, चावल, चना, जौ, चान्दी, तेज़ रहेंगे। सोने के भाव में घटाबढी चलेगी।

23 जून को यूरेनस वक्री होगा। जिससे जलवायु पर प्रभाव पड़ेगा और बाज़ार प्रभावित होंगे। 22 जून से लेकर 30 जून तक बाजार अनिश्चित रूप से चलेंगे, जिसमें बायदा व्यापारी घाटे में आ सकते है– समझ से काम लें।

जुलाई

2 जुलाई को प्लूटो वक्र पोजीशन में मूल नक्षत्र के पहले चरण में दाखिल होगा। वक्री बुध और सूर्य के साथ उसका समसप्तकयोग बनेगा कुछ प्रान्तों में भारी वर्षा के कारण खड़ी फसलों को नुक्सान पहुंचेगा एवम् कुछ प्रान्तों में वर्षा की भारी कमी के कारण बाजार तेज़ रहेंगे।

3 जुलाई को शुक्र मघा नक्षत्र और सिंह राशि में दाखिल होगा। सिंह राशि में शुक्र केतु के साथ मेल करेगा। शुक्र खासकर पाट, बारदाना, और तिलहन आदि में अच्छी घटाबढी करता है और जब यह राहु, केतु और मंगल के साथ मेल करता है तो रुई, चान्दी और सोने के बाजारों में विशेष तेज़ी का जोश बना देता है। गेहूं, जौ, चना, दालवाना आदि अनाजों में तेजी रहे। सोना, तांबा, गुड, लालमिर्च, मजीठ, रुई, कपास, पाट, बारदाना, घी और तिलहन में भी तेज़ी बने। चान्दी में पहले मन्दी आकर बाद में तेजी बने। रुई भी इसी प्रकार रहे।

5 जुलाई को भरणी नक्षत्र में मंगल का प्रवेश होगा। इस समय गेहूं आदिक अनाज, सोना, चान्दी आदि धातु और रुई तेज़ रहें। 6 जुलाई को सूर्य पुर्नवसु नक्षत्र में आकर रुई, सोना, चान्दी, गुड़, खाण्ड, कपास, बिनौला, एरण्ड, अलसी, सरसों, लाख, देवदारु, तिल, ज्वार, मोठ, बाजरा, उड़द, चावल, हरड, सुपारी, नारियल, माजू, केसर, नील, मजीठ और गुग्गुल आदि सुगन्धित चीजों में 8 तारीख तक अच्छा लाभ दे सकता है।

8 जुलाई को बुध पूर्व में उदित होगा। रुई में तेजी शुरु होकर 25 दिन में 15 टका के करीब तेजी बनेगी। गेहूं, चना आदि में भी तेजी का ही वातावरण रहेगा। तेल, घी, तिल, पाट, हैसियन, लालमिर्च और दालवाना– सब तेज रहेंगे।

[नोट–क्योंकि आषाढ़ में बुध का उदय हो रहा है, इसलिए अनाज तेज रहेंगे। हाजर के व्यापारी अच्छा लाभ प्राप्त करेंगे।]

11 जुलाई को बाजार का रुख अचानक बदल सकता है– सावधानी से काम करें। 11 जुलाई को बुध मार्गी हो रहा है। रुई में पहले मन्दी, बाद में तेजी हो। चान्दी में घटाबढ़ी के बाद तेज़ी बने। गेहूं, दालवाना में तेजी बने। रेशम, तेल, अलसी, एरण्ड, बिनौला, मूंगफली एवम् कपूर, चन्दन आदि सुगन्धित चीजों में मन्दी रहे। गुड, खाण्ड, घी भी मन्दे रहें। सोना तेज रहेगा। 14 जुलाई तक मार्कीट इसी तरह चलेगी। 14 जुलाई को शनैश्चरी अमावस भी तेजी का ही संकेत देती है।

15 जुलाई को शनि मघा नक्षत्र एवं सिंह राशि में प्रवेश करेगा। यह योग बहुत महत्त्वपूर्ण है। इस समय फोन द्वारा सम्पर्क करें– उत्तम लाभ मिलेगा। इस समय सिंह राशि का शनि शुक्र एवम् केतु के साथ राशि–सम्बन्ध बना रहा है। सिंहराशि सूर्य की राशि है, सूर्य–शनि परस्पर शत्रु हैं। शनि ग्रह मूंगफली, अलसी, एरण्ड, सरसों, कपास एवम् सभी प्रकार के खाद्य तेलों पर अपना विशेष प्रभाव रखता है। शेयर बाजार, लौहखण्ड, लौह–यन्त्रों पर भी इस ग्रह का वर्चस्व विशेष अनुभव किया गया है। शनि का असर कच्ची फसलों पर भी विशेषतः अनुभव होता है। तेल–तिलहन की फसलें खराब हो जाती हैं। जिससे पैदावार कम होने से बाजार तेजी की तरफ बढ़ने लगते हैं।

जब शनि क्रूर ग्रहों के सम्पर्क में आ जाता है तो महाक्रूर हो जाता है। राजनैतिक उलझनें एवम् राजनैतिक ऐलान भी इस समय व्यापार में तेजी का कारण बनेंगे। कहने का तात्पर्य यह है, कि– इस समय से पहले ही सावधानी से व्यापार शुरु करें–उत्तम लाभ प्राप्त होगा। इस राशि का शनि चावल, चना, गेहूं, उड़द, मूंग, मोठ, ग्वार, बाजरा एवम् अन्य सभी अनाजों में अच्छी तेजी करेगा। घी, गुड़, खाण्ड, सरसों, तोड़िया, एरण्ड, मूंगफली, सोयाबीन आदि तिलहनों में भयंकर तूफानी तेजी ला सकता है। अपने राशिभोग में शनि सरसों एवम् आगे तोड़िया में कभी दोगुणी तो कभी चौगुणी तेजी भी करता देखा गया है– इस समय ताजा मशवरा प्राप्त करें।

सरसों, तोड़िया आदि तिलहनों में तेजी शनि के सिंह राशि में आने से 2/4 मास पहले भी शुरु हो सकती है। स्टॉक पहले ही करें, उत्तम लाभ होगा। सिंह राशि का शनि 7–8 अंश पर आकर (अर्थात् लगभग अगस्त–सितंबर में) रुई में तूफानी तेजी करता है– लाभ लें।

नोट–क्योंकि शनि–शुक्र–केतु सिंह राशि में ही हैं, अतः 18 अगस्त तक

कहीं वर्षा की भारी कमी अनुभव होने एवम् कहीं बाढ़ से फसलों के तबाह होने की खबरों से बाजारों में उफान आएगा।

16 जुलाई चन्द्रवार को कर्कस्थ चन्द्र के समय सूर्य कर्क राशि में प्रवेश करेगा। इस समय सूर्य पर गुरु की उच्च दृष्टि भी है। गेहूं, चना, जौ, मटर, अरहर, उड़द, मूंग, एवम् चावलों में कुछ मन्दा बने। रुई, सूत, बादाम, सुपारी, फल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, तिल, नारियल, सरसों एवं चान्दी–सोना में तेजी बनेगी। यह प्रभाव 19 जुलाई तक रहेगा।

20 जुलाई को सूर्य पुष्य नक्षत्र में प्रवेश करेगा। तिल, तेल, सरसों, मघ, गुड, खाण्ड, चावल, गेहूं, जौ, ज्वार, बाजरा, सुपारी, सोंठ, गुग्गुल, सोना, चान्दी तेज रहें। रुई में पहले तेजी फिर मन्दी आए।

24 जुलाई को कृत्तिका नक्षत्र का मंगल अनाज, दालवाना, तेल, तिलहन, घी, चान्दी, सूत, वस्त्र, में तेजी बनाएगा। यह रुई में तेजी के बाद मन्दा करे। यह तेजी का खेल प्रायः 25 जुलाई तक चलेगा।

26 जुलाई को पुनर्वसु नक्षत्र का बुध चान्दी, सूत, कपास, सण में खासी मन्दी करेगा। सम्भलें–यदि इस समय 26–27 जुलाई को मन्दा बने तो खरीद करें, आगे जल्दी ही लाभ मिलेगा।

28 जुलाई को शुक्र वक्री हो जाता है। इस समय शुक्र का मेल क्रूरग्रह **शनि एवम् केतु के साथ है। स्पष्ट है कि– बाजार और तेज होंगे।** घी, तेल, तिलहन, गुड, खाण्ड, शक्कर, गेहूं, जौ, चना, ग्वार आदि अनाज तेज रहेंगे। रुई में पहले तेजी आकर बाद में मन्दा आए।

29 जुलाई को मंगल वृष राशि में आ जाता है। इस समय मंगल की नज़र शनि पर है एवम् शनि की नज़र मंगल पर है। लेकिन गुरु ग्रह भी मंगल को पूरी नज़र से देख रहा है। एक मास में गुड, घी, शक्कर, लालचन्दन, लालमिर्च, दालवाना, मोटे अनाज, रुई, कपास, सूत, चन्दन, कुसुम्भ, कपूर, केसर, तेल, तिलहन, सोना–चान्दी, तांबा, जस्ता आदि धातु में तेजी रहे। शेयर बाजार भी तेज रहेंगे। **इस प्रकार मासान्त (31 जुलाई तक) बाजार प्रायः तेज ही रहेंगे।**

अगस्त

अगस्त के प्रारम्भ में बाजार कुछ अनिश्चित रहेंगे। अगस्त मास का प्रारम्भ त्रयोदश दिनपक्ष में हो रहा है। गुरु–शुक्र वक्री हैं। इस मास में विश्व की राजनीति में अघटित घटनाचक्र के कारण व्यापारक्षेत्र में भारी उठापटक हो सकती है, अतः सावधानी से काम करें।

1 अगस्त को बुध कर्क राशि में आकर सूर्य के साथ मेल करेगा। बुध अतिचारी है। जब सूर्य के साथ बुध का मेल होता है तो बुध तेजीकारक क्रूर स्वभाव का हो जाता है। इस समय तिलहन, रुई एवम् दालवाना के व्यापारी धमाके की मन्दी या तेजी से लाभ ले सकेंगे। बाजार के रुख को देखकर काम करें। हमारे विचार से बुध कर्क राशि में मन्दे का सूचक है। रुई में करीब 20 पैसे की मन्दी आए। चान्दी में घटाबढ़ी से कुछ तेजी बनेगी। गुड, शक्कर, घी, तेल, मूंगफली, सरसों आदि तेलवाना एवम् सोने में पहले तेजी आकर पीछे मन्दी बने।

3 अगस्त को सूर्य आश्लेषा में एवम् बुध पुष्य में आएगा किंवा बुध पूर्व में अस्त होगा। साथ ही इसी दिन रात्रि में 4 अगस्त को प्रातः शनि भी अस्त हो रहा है। ध्यान दें– सूर्य इस समय आश्लेषा नक्षत्र में है। शुक्र, शनि भी दोनों मघा नक्षत्र में ही हैं। शुक्र, शनि केतु के साथ खलयुत है। परिणामस्वरूप सोना, चान्दी, रुई, बिनौला, गेहूं, चावल, उडद, चना, गुड, शक्कर, घी, तिल, तेल, सरसों, एरण्ड, लालमिर्च, मजीठ, नील, ऊनीवस्त्र, मणि, मोती, जवाहरात में अच्छी तेजी और मन्दे के झटके आएंगे। सोना–चान्दी और रुई के व्यापारी समझ से काम करें। क्योंकि मन्दे के झटके के बाद तुरन्त तेजी बनेगी। घी में मन्दा रह सकता है। रुई में घटाबढ़ी इसप्रकार चलेगी,– पहले तेज, बीच में मन्दी, अन्त में फिर तेज। सोने में घटाबढ़ी के बाद तेजी। **4 अगस्त को बाजार जोरदार मन्दे या जोरदार तेजी में खुलेंगे– सावधानी से काम करें। 6 अगस्त तक मन्दे में खरीदते रहें, तेजी में बेचते रहें।**

7 अगस्त को शुक्र पश्चिम में अस्त होगा। इसी दिन बृहस्पति अपनी टेढ़ी चाल को छोड़कर मार्गी हो जाता है। सोना, चान्दी, गुड, सूत, कपड़ा, घी, तेल, अलसी, एरण्ड, बिनौला, मूंगफली, सोयाबीन में मन्दे का वातावरण रहे। रुई में मन्दी आकर तेजी रहे।

8 अगस्त तक तेजी–मन्दी के अच्छे झटके आएंगे, विचारपूर्वक काम करके लाभ लेते रहें।

9 अगस्त को बुध आश्लेषा में आएगा। सूर्य भी इस समय आश्लेषा नक्षत्र में ही चल रहा है। 15 दिन में तिल, तेल, सरसों, गुड, खाण्ड, उडद, मूंग, मूंगफली में तेजी आती है। यह तेजी उत्तम–मध्यमरूप से 11 अगस्त तक चल सकती है।

12 अगस्त से शनि मघा के दूसरे चरण में आएगा। शनि का मित्र शुक्र भी इस समय मघा नक्षत्र में ही चल रहा है, दोनों एक राशि में केतु के साथ मेल कर रहे है। सण, दाख, हींग, घी, गुड, खाण्ड, नमक आदि रस प्रायः तेज रहेंगे।

13 अगस्त को मंगल रोहिणी नक्षत्र मे आएगा। कपास, सूत, वस्त्र, रेशम, सरसों तिल, तेल, लालमिर्च, हींग एवम् शेयर बाजार तेज रहेंगे। अनाज भी तेज रहें। रुई और चान्दी में घटाबढ़ी के बाद तेजी। 15 अगस्त तक वायदा व्यापारी तेजी से लाभ ले सकेंगे।

16 अगस्त को बुध सिंह राशि में प्रवेश करेगा। 17 अगस्त को सूर्य भी सिंह राशि में आ जाता है। इस प्रकार अब सिंह राशि में सूर्य–शनि–बुध– केतु–शुक्र– इन पांच ग्रहों की सन्निधि से व्यापार प्रभावित होगा। बुध अतिचारी है। रुई, सोना, चान्दी, मूंग, ज्वार, बाजरा, सरसों, तिल, एरण्ड, दाख, काली/लालमिर्च, गुड, खाण्ड, शक्कर, तिल, तेल, सरसों, तोड़िया, ग्वार, मूंगफली, बिनौला में तेजी से लाभ मिले।

19 अगस्त को वक्री शुक्र आश्लेषा 4 कर्क में प्रवेश करेगा। इस समय शुक्र अकेला एवम् गुरु से देखा गया है। रुई में पहले अच्छी मन्दी आएगी, फिर तेजी बनेगी। सरसों, अलसी, एरण्ड, तिल, तेल, घी, मूंगफली, गुड, खाण्ड, शक्कर तेज

रहेंगे। चान्दी, गेहूं, जौ, चना, उडद, मूंग, मटर, अरहर मन्दे रहेंगे। 22 अगस्त तक अलसी एवम् तेल, तिलहन में अच्छी तेजी के योग हैं।

23 अगस्त को बुध पू. फा. में आकर गुड़, खाण्ड, गेहूं आदि अनाजों में मन्दा बना सकता है। 25 अगस्त को वक्री यूरेनस पू. भा. 1 में प्रवेश करेगा एवम् 27 अगस्त को शुक्र का पूर्व में उदय होगा। रुई, सूत, चान्दी, चावल, घी, सोना, तेल, तिलहन में झटके की तेजी या मन्दा बन सकता है– बाजार के रुख को देखकर काम करें।

28 अगस्त को गुरु ज्येष्ठा 1 में आएगा। चान्दी में मन्दा बने, अनाजों में भी घटा–बढ़ी के साथ मन्दा रहे। 28 अगस्त मंगलवार, शतभिषा नक्षत्र, श्रावणी पूर्णिमा को चन्द्रग्रहण यद्यपि भारत के पूर्वोत्तरी छोर पर अत्यल्प समय के लिए ही घटित होगा; परन्तु इसका फल व्यापारिक दृष्टि से इसप्रकार लिखा है–

"श्रावणी पूर्णिमायां तु यदीन्दुग्रहणं भवेत्।
घृते तैले तथा धान्ये संग्रहे लाभमादिशेत्।।"

अर्थात्– इस समय घी, तेल, तिलहन, अनाज, दालवाना आदि के स्टॉक से लाभ की उम्मीद रखें।

30 अगस्त को बुध उ. फा. में प्रविष्ट होगा। इसी दिन (30 अगस्त को ही) बुध का उदय पश्चिम में होगा। शेयर, उड़द, मूंग, मोठ, मसूर, अरहर में तेजी; रुई में घटाबढ़ी होकर मन्दी, चान्दी में भी घटाबढ़ी के बाद मन्दी रहे।

31 अगस्त को सूर्य पू. फा. में आकर जीरा, सोना, गुड़, खाण्ड, शक्कर, सरसों, तिल, तेल, गेहूं, घी, ज्वार, बाजरा, चावल, ऊनीवस्त्र, रुई, सूत में तेजी लाए। चान्दी में घटाबढ़ी चले।

सितम्बर

1 सितम्बर को बुध कन्या राशि में प्रवेश करेगा। जब बुध अकेला कन्या राशि में आता है तो मन्दी की अफवाहें फैलाकर बाजार के रुख को मन्दे की तरफ कर देता है। बुध अफवाहें फैलाने वाला ग्रह है। इसलिए बाजार के रुख को देखकर ही काम करें। कन्या राशि में बुध अपनी उच्च राशि में माना जाता है। हमारे विचार से रुई और चान्दी में अच्छे मन्दे के झटके आएंगे। गेहूं, जौ, चना, चावल, गुड़, शक्कर, खाण्ड, हल्दी में तेजी का रुख रहेगा। कुछ विद्वान् बुध को कन्या राशि में मन्दीकारक मानते हैं। इसलिए अगर बाजार मन्दे की तरफ जाने लगें तो मन्दा भी बन सकता है–सावधानी से काम करें। 3 सितम्बर तक एकतरफा तेजी या मन्दे का योग बनेगा।

4 सितम्बर को मंगल मृगशिर नक्षत्र में आकर तिल, चान्दी में तेजी; रुई में पहले मन्दी, बाद में तेजी, अन्य व्यापारिक वस्तुओं में प्रायः मन्दे की ओर झुकाव बनाएगा। 6 सितंबर तक बाजार डावांडोल रहेंगे।

7 सितम्बर को शनि मघा नक्षत्र के तृतीय चरण में प्रवेश करेगा और उसी दिन प्लूटो (मेदनी ग्रह) मार्गी हो रहा है। शनि इस समय सूर्य के नक्षत्र में, सूर्य की राशि में एवम् सूर्य और केतु के साथ ही है। यह तेल, तिलहन, घी, लोहे की चीजों एवम् खाद्य तेलों में तेजी करेगा। रुई, कपास भी तेज रहेंगे।

8 सितम्बर को सिंह राशि में शनि उदित होगा, बुध हस्त में आएगा और शुक्र मार्गी होगा। गेहूं आदि अनाजों में मन्दे का रुख रहेगा। 9 सितम्बर को रुई, शेयर बाजार, अलसी, सरसों, एरण्ड, बिनौला, मूंगफली में मन्दा रहेगा। सज्जी, लौह, जस्ता, रंग, सीसा आदि काले पदार्थ, लकड़ी, लहसुन, चावल, गुड़, खाण्ड में तेजी बने।

11 सितम्बर को मंगलवारी अमावस भी गुड़, खाण्ड, तेल, तिलहन और दालवाना में तेजी का संकेत देती है। 13 सितम्बर को सूर्य उ.फा. नक्षत्र में दाखिल होगा। 14 दिन में रुई, कपास, रेशम, सूत, सोना, चान्दी, लोहा, घी, तेल, अलसी, सरसों, एरण्ड, चावल, उड़द, ज्वार, सुपारी, नारियल, मूंज, बाण और नील में तेजी बने। कदाचित् अनाज यहां सस्ते हों तो स्टॉक करें; तीन महीने में अच्छा लाभ मिलेगा। चान्दी, गुड़, खाण्ड में मन्दे के बाद तेजी बने। 15 सितम्बर तक बाज़ार अनिश्चित रूप में चलेंगे।

16 सितम्बर को मंगल मिथुन राशि में दाखिल होगा। इन दिनों रुई, गुड़, खाण्ड, शक्कर, अलसी, अफीम, तांबा, मजीठ एवम् लाललमिर्च आदि लाल चीजों में अच्छी तेजी बनेगी। क्योंकि मंगल मौसम, हवा पर विशेष प्रभाव डालता है, कभी–कभी मंगल ग्रह के कारण वर्षा की कमी होने से बाजारों में तेजी आ जाती है। तेलवाना, रुई, कपास, जूट, सोना, चान्दी और शेयर बाज़ारों में यह ग्रह विशेष तेजी करता है।

17 सितम्बर को बुध चित्रा नक्षत्र में और सूर्य कन्या राशि में दाखिल होगा। इस समय इन पर मंगल की विशेष नज़र भी है। सूर्य कन्या राशि में आकर उच्च बुध के साथ मेल करेगा। रुई, नारियल, सुपारी, तिल, तेल, मजीठ और लाल रंग की चीजों में तेज़ी बनेगी। रुई, चान्दी और शेयरों में घटाबढ़ी के बाद तेजी बने। अनाज भी कुछ तेज़ रहेंगे।

[नोट–16 से 21 सितम्बर तक बाज़ार प्रायः तेज़ी की तरफ रहेंगे।]

22 सितम्बर को बुध तुला राशि में प्रवेश करेगा। इस समय इस पर शनि की विशेष नज़र होगी तुला राशि का मालिक शुक्र, बुध की भान्ति ही मन्दे की तरफ इशारा करता है। चान्दी, अलसी, सरसों, एरण्ड, बिनौला, सोयाबीन, मूंगफली में मन्दा बने। रुई, गुड़, खाण्ड, सोना और अफीम में तेज़ी बनेगी। 22 से 26 सितम्बर तक बाज़ारों में तेज़ी–मन्दी के अच्छे रिएक्शन्ज़ बनेंगे। मन्दे में खरीदें और तेज़ी में बेचकर लाभ लेते रहें।

27 सितम्बर को सूर्य हस्त नक्षत्र में दाखिल होगा। सूर्य पर मंगल की खास नज़र है। गेहूं, जौ, गुड़, खाण्ड, कपास, रुई, सूत, जूट, लकड़ी, नमक, हरड़, हींग,

धनिया, हल्दी तेज़ होंगे। 28 सितम्बर को बुध स्वाती नक्षत्र में आकर रुई में अचानक मन्दा बना सकता है।

29 सितम्बर को बृहस्पति ज्येष्ठा नक्षत्र के द्वितीय चरण में आकर रुई और चान्दी में मन्दा और अनाजों के भावों मे घटाबढ़ी करे। 29 सितम्बर को शुक्र मघा नक्षत्र और सिंह राशि में पुनः आकर शनि के साथ एक राशिसम्बन्ध बनाएगा और राहु के साथ शनि, शुक्र दोनों समसप्तकयोग भी बनाएंगे। गेहूं, जौ, चना आदि अनाज, लालचन्दन, मजीठ, लालमिर्च, तेल, तिलहन एवम् सोना-चान्दी में अचानक तेजी का योग बनता है।

30 सितम्बर को आर्द्रा नक्षत्र में मंगल के दाखिल होने पर रुई, सूत, कपास, अलसी, एरण्ड, गुड़, खाण्ड, तिल, तेल एवम् नमक मे तेज़ी बनेगी। चान्दी में कुछ मन्दे का झटका आ सकता है।

अक्तूबर

अक्तूबर 1 से 4 तक बाज़ारों में कुछ चीज़ों में तेजी, कुछ में मन्दी रहेगी। बाज़ार अस्थिर रहेंगे। 5 अक्तूबर को शनि मघा के चतुर्थ चरण में आएगा। शनि का सीधा असर कच्ची चीजों की फसल पर और उनकी पैदावार पर अनुभव किया गया है। रुई, मूंगफली, अलसी, एरण्ड, कपास व सरसों आदि की फसल व पैदावार शनि के प्रभाव से खराब हो जाती है, जिससे बाज़ारों में तेज़ी अनुभव की जाती है। शनि के मघा के चतुर्थ चरण में आने से अनाज व दालवाना में तेज़ी बनेगी। रुई, मूंगफली, अलसी, एरण्ड, सरसों, कपास, घी, गुड़, खाण्ड, नमक में प्रायः तेज़ी रहेगी। यह तेज़ी लंबी जा सकती है। 9 अक्तूबर तक बाज़ार एकतरफा चल सकते है।

11 अक्तूबर को प्रातः सूर्य चित्रा नक्षत्र में आएगा। रुई, सूत, सोना, चान्दी, मोती आदि रत्न, गुड़, खाण्ड, अरहर, गेहूं, चना, तिल, नारियल, सण, केसर, कपूर आदि में तेजी बने। तेल, तिलहन में भी अच्छी तेज़ी आ सकती है।

12 अक्तूबर को बुध वक्री हो रहा है। बुध पर शनि की खास नज़र है। क्योंकि बुध तुला राशि में है, इसलिए तेजी और मन्दे की अफवाहों से बाज़ार में उथल-पुथल ला सकता है। हमारे विचार से रुई, कपास में झटके के साथ तेजी बनेगी, घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेज़ी और अनाज, दालवाना, तेल, तिलहन में भी तेजी का रुख रहेगा।

13 अक्तूबर को तुलारथ चन्द्र के समय शनिवार को चन्द्रदर्शन होगा। रुई, सूत, वस्त्र, चान्दी, सोना, सरसों, मूंगफली, तेल तेज़ होंगे। गेहूं, बाजरा, मूंग, ज्वार, उड़द, अलसी, गुड, खाण्ड में भी तेजी बनेगी। 15 तारीख तक यह तेजी उत्तम-मध्यमरूप से चल सकती है।

16 अक्तूबर को पू. फा. नक्षत्र का शुक्र शनि के साथ होने के कारण गेहूं, जौ, ज्वार, बाजरा, उड़द, मूंग, चना में कुछ मन्दा लाकर तेजी बनाएगा।

17 अक्तूबर को सूर्य अपनी नीच राशि तुला में प्रवेश करेगा। इस समय शनि की सूर्य पर विशेष नज़र होगी। साथ ही वक्री बुध का मेल तुला राशि में सूर्य के साथ बन रहा है। रुई और चान्दी में जोरदार घटाबढ़ी चलेगी, गेहूं, जौ, चना, अलसी, सोना, तांबा में अच्छी तेज़ी बनेगी। लाल-चन्दन, मजीठ, श्रीफल, सुपारी, गुड, शक्कर, तोड़िया, सरसों, एरण्ड, मूंगफली में भी अच्छी तेजी का योग है। 18 अक्तूबर को बुध पश्चिम में अस्त होगा। इस समय बुध, नीच सूर्य के साथ शनि से दृष्ट है। वस्त्र, रुई, शेयर 15 दिन में मन्दे होकर अच्छे तेज़ हो जाएंगे।

19 अक्तूबर को गुरु ज्येष्ठा के तृतीय चरण में आकर चान्दी में मन्दी, अनाजों में घटाबढ़ी करे। 19 से 22 अक्तूबर तक बाज़ारों मे अच्छी घटाबढ़ी रहे।

23 अक्तूबर को वक्री बुध चित्रा नक्षत्र में आकर रुई और चान्दी में घटाबढ़ी करेगा। अनाजों में कुछ तेजी रहेगी।

24 अक्तूबर को सूर्य स्वाती नक्षत्र में आएगा। इसी दिन राहु शतभिषा के पहले चरण में और केतु मघा के तीसरे चरण में दाखिल होगा। राहु कुम्भ राशि का है। राहु और सूर्य पर शनि की नजर है। खाद्य तेल, तिलहन, कपास, घी, गुड़, खाण्ड, सूत, ऊन एवम् नमक मे तेजी बने। सण, रेशम, कपडा, सोना, चान्दी, बिनौला, सुपारी, मिर्च, राई, हींग, गुग्गुल भी तेज़ होंगे। 24 से 30 तारीख तक वायदा व्यापार और हाज़िर चीज़ों में बड़ी अच्छी तेजी के चांस हैं।

30 अक्तूबर को वक्री बुध कन्या मे आकर मंगल की नजर में आ जाएगा। 30 तारीख को ही बुध पूर्व में उदित होगा और शुक्र उ.फा. में दाखिल होगा। रुई में पहले मन्दी होकर बाद में जोरदार तेज़ी बनेगी। सोना, चान्दी में घटाबढ़ी के अच्छे रिएक्शन्ज़ बनेंगे। गेहूं, जौ, चना, गुड, शक्कर, खाण्ड और हल्दी तेज होंगे। तिल, घी, पाट, हैसियन एवम् लालमिर्च में भी तेजी का तूफान आ सकता है।

31 अक्तूबर को नेप्च्यून मार्गी होगा। इसका प्रभाव खासकर रुई, कपास, तेल, गुड़, खाण्ड के बाज़ारों पर पड़ता है। इसलिए मास के अन्तिम दिनों में बाजारों में मन्दे का रुख बनने की उम्मीद है।

नवम्बर

1 नवम्बर को बुध मार्गी हो जाता है। इस समय बुध कन्या राशि में अकेला है। बुध पर मंगल की खास नज़र है। बुध का सबसे ज्यादा असर तिलहन बाजारों पर अनुभव किया गया है। तेल, अलसी, एरण्ड, गुड, बिनौला, मूंगफली, सोयाबीन, सरसों, तोड़िया, कपूर, चन्दन, अगर आदि सुगन्धित चीज़ [illegible] जोरदार तेजी या मन्दे के रिएक्शन्ज आएंगे। हमारे विचार से पहले मन्दा आकर बाद में तेज़ी बनेगी। रुई और चान्दी में पहले मन्दी आकर बाद में तेजी के योग हैं। गेहूं, जौ, चना, अनाज तेज रहेंगे।

3 नवम्बर को शुक्र कन्या राशि में आकर एक दिन के लिए बुध के साथ

मेल करेगा। जब शुक्र बुध के साथ मेल करता है, तो बाज़ारों में तूफानी मन्दी या तेजी बनती है। कहने का मतलब यह है कि– अगर बाज़ार तेज़ी की तरफ बढ़ रहे हों तो तूफानी तेज़ी बनेगी और अगर बाज़ार मन्दे में हों तो ज़ोरदार मन्दा बनेगा। हमारे विचार से चान्दी में कुछ घटाबढ़ी होकर जोरदार तेज़ी बने और अनाज, गुड़, खाण्ड, ऊनी वस्त्र भी तेज़ हों। इस समय चावलों में विशेष तेज़ी का झटका आएगा।

4 नवम्बर को बुध तुला राशि में आकर सूर्य के साथ मेल करेगा। इस समय सूर्य और बुध पर शनि की विशेष नजर है। चान्दी, अलसी, सरसों, एरण्ड, बिनौला, मूंगफली, तोड़िया, सोयाबीन, सूरजमुखी आदि में मन्दे की उम्मीद होने के बावजूद भी बाज़ार तेज़ी की तरफ रह सकते हैं। रुई, गुड़, खाण्ड, सोना और अफीम में भी अच्छी तेजी बने।

6 नवम्बर को गुरु ज्येष्ठा के चौथे चरण में और सूर्य विशाखा नक्षत्र में दाखिल होगा। चान्दी में घटाबढ़ी के बाद तेजी आए। जौ, चावल, गेहूं, मसूर, गुड़, खाण्ड, रुई, सूत, सरसों, तिल, एरंण्ड, अफीम तेज़ होंगे। अलसी, चान्दी में घटाबढ़ी के बाद तेज़ी बनेगी। 11 नवम्बर तक बाज़ारों में अच्छे उलट–फेर होंगे– सावधानी से काम करें।

9 नवम्बर को प्लूटो मूल नक्षत्र के दूसरे चरण में दाखिल होगा। इस समय प्लूटो और मंगल आमने–सामने हैं। यह योग गुड़, शक्कर, घी, तेल, तिलहन में अच्छी तेज़ी ला सकता है।

11 नवम्बर को बुध स्वाती नक्षत्र में दाखिल होगा और इसी दिन रविवार, अनुराधा नक्षत्र और वृश्चिक के चन्द्रमा के समय चन्द्रदर्शन भी होगा। गुड़, तेल, सोना, चान्दी आदि तेज होंगे। रुई में घटाबढ़ी के बाद मन्दा बनेगा। सभी प्रकार के अनाजों में मन्दे का रुख रहेगा।

12 नवम्बर को शनि पू. फा. के प्रथम चरण में और शुक्र हस्त में दाखिल होगा। गेहूं, जौ, चना, उड़द, मूंग, सरसों तिल, तेल में तेज़ी; रुई में घटाबढ़ी चले। इस समय अगर चावल आदि अनाज मन्दे हों तो स्टॉक करें, आगे जल्दी ही लाभ मिलेगा। सोना तेज़, चान्दी मन्दी; गुड़, खाण्ड और शक्कर में घटाबढ़ी चले।

[नोट– 11 से 15 नवं. को बाज़ारों में काफी उठा–पटक रहेगी– सावधानी से काम करें।]

16 नवं. को मंगल वक्री हो रहा है। मंगल मिथुन राशि में अकेला ही है। रुई, सोना, चान्दी, अलसी, लालमिर्च, लालचन्दन और अन्य लाल रंग की चीज़ों में तेज़ी बने। इस समय लालमिर्च में अच्छी तेजी आने का योग है।

[नोट–मंगल जिस राशि में वक्री होता है, उस राशि के अधिकार– क्षेत्र में आने वाली वस्तुओं में तेज़ी करता है। कहने का तात्पर्य यह है कि– तेल, तिलहन में भी इस समय अच्छी तेज़ी का योग बन सकता है।]

[यदि 15 से 20 नवंबर तक तेल, तिलहन, रुई, चान्दी, लालमिर्च में अच्छी तेजी बनती है तो तुरन्त सारा स्टॉक निकाल दें, क्योंकि आगे बहुत बड़ा मन्दा आने का योग है।]

21 नवम्बर को बुध विशाखा में और 21 नवम्बर की रात्रि के बाद 22 नवम्बर को प्रातः गुरु मूल नक्षत्र और धनु राशि में प्रवेश करेगा। यह विशेष योग है, इसको व्यापारी नोट करें। कुल्थ, मूंग, मोठ, ग्वार, ज्वार, बाजरा व अन्य अनाजों में मन्दा; चान्दी और रुई में घटाबढ़ी के बाद मन्दा बनेगा। गुड़, खाण्ड, शक्कर, घी अधिक मन्दे हो सकते हैं। पुराने रिकॉर्ड के मुताबिक कभी–कभी धनु राशि का बृहस्पति इतना मन्दा ला देता है कि– गुड़, खाण्ड के भाव में रुपये में से 30 पैसे रह जाते हैं। सफेद चीज़ों, रुई, चान्दी, नमक एवम् अनाज, पाट, सण, कुष्टा, तिल, तेल, घी, सोना, पीतल, लोहा, तांबा, कांसा, सिक्का में भी मन्दा आता है।

[नोट–धनु राशि पर बृहस्पति के रहते हुए अगर कार्तिक मास में घी मन्दा हो तो तुरन्त स्टॉक करें। चैत्र मास में अच्छी तेज़ी से लाभ मिलेगा।]

ध्यान दें–बृहस्पति और मंगल का समसप्तकयोग संवत् के आखिर तक चलेगा। इसलिए गुड़, शक्कर और घी में विशेष मन्दा न आए– यह सम्भव है।

24 नवम्बर को शुक्र चित्रा में आएगा एवम् बुध पूर्व में अस्त होगा। यूरेनस इसी दिन मार्गी हो रहा है। लगभग एक मास तक अनाज, घी, सोना, चान्दी में मन्दा बने। रुई में पहले तेज़ी, बीच में मन्दी, अन्त में फिर तेज़ी बने। सोने में घटाबढ़ी के बाद तेज़ी रहेगी।

27 नवम्बर को बुध वृश्चिक राशि में आकर सूर्य के साथ मेल करेगा। जब बुध का सूर्य के साथ मेल होता है तो यह तेज़ी कारक हो जाता है। घी, तेल, तिलहन, रुई और चान्दी में तेज़ी बने। गुड़, शक्कर, खाण्ड में भी कुछ तेज़ी बने। सोने का भाव समान रहे। अफीम और अनाज मन्दे रहें। 29 नवम्बर को बुध अनुराधा नक्षत्र में आकर सूत, सण, रुई, सोना, चान्दी में मन्दा करेगा। अनाज के भाव सम रहें।

30 नवम्बर को शुक्र अपनी राशि तुला में दाखिल होगा और इस समय शनि की इस पर उच्च दृष्टि होगी। एक मास में रुई, चान्दी और अफीम में पहले तेज़ी और पीछे मन्दी आए। सोने में तेज़ी; चान्दी में घटाबढ़ी चले। गुड़, खण्ड में तेज़ी का वातावरण बने। अनाज भी तेज़ रहें।

दिसम्बर

दिसम्बर मास के प्रारम्भ में कुछ जिन्सों के बाज़ार विशेष मन्दे में रहेंगे। रुई, चान्दी, सोने में अच्छी घटाबढ़ी एवम् गुड़, खाण्ड में कुछ तेज़ी रहे।

3 दिसम्बर को सूर्य ज्येष्ठा नक्षत्र में आएगा। 15 दिन में रुई, सोना, चान्दी,

चावल, गेहूं, जौ, चना, अलसी, सरसों, एरण्ड, हींग, गुग्गुल, पारा, गुड़ एवम् खाण्ड में तेज़ी बने। रुई में पहले मन्दी होकर बाद में तेजी बने। 5 दिसम्बर तक बाज़ार कुछ इसी प्रकार रहेगा।

6 दिसम्बर को गुरु मूल नक्षत्र के दूसरे चरण में एवम् शुक्र स्वाती नक्षत्र में प्रवेश करेगा। **शुक्र, गुरु– दोनों परस्पर शत्रु हैं। शुक्र रुई, गुड़, खाण्ड, तिलहन तथा चान्दी के बाज़ारों पर वर्चस्व रखता है। शुक्र अकेला कभी–कभी ज़ोरदार गन्दा बनाता है, लेकिन तुला राशि का शुक्र यहां शनि से दृष्ट है, अतः कुल्थ, मूंग, मोठ, ज्वार, बाजरा व सोना–चान्दी में मन्दे का झटका आएगा। लेकिन गुड़, खाण्ड तेज़ रहें।**

8 दिसम्बर को ज्येष्ठा नक्षत्र का बुध घी, गुड़, खाण्ड एवम् चावलों में तेजी बनाता है। क्योंकि बुध, सूर्य दोनों इस समय ज्येष्ठा नक्षत्र पर हैं और शनि की इन पर नज़र भी है इसलिए तेल, तिलहन में भी कुछ तेज़ी के आसार बन सकते हैं, बाज़ार का रुख देखकर काम करें।

10 दिसम्बर को धनुराशिस्थ गुरु अस्त होगा। रुई व शेयरों में तेज़ी, सोना, चान्दी और अनाज मन्दे हों।

11 दिसम्बर मंगलवार धनुस्थ चन्द्र के समय चन्द्रदर्शन अनाज एवम् सभी व्यापारिक वस्तुओं मे तेज़ी करेगा। रुई में मन्दे के बाद तेज़ी बनेगी। सोना, चान्दी, कपास, रुई, सूत एवम् अनाज मन्दे रहेंगे। बाज़ारों में तेज़ी–मन्दी का यह सिलसला 15 दिसम्बर तक चल सकता है।

16 दिसम्बर को सूर्य एवम् बुध दोनों मूल नक्षत्र एवम् धनु राशि में प्रविष्ट होंगे। इन पर मंगल की पूर्ण दृष्टि है। रुई, कपास, सोना, चान्दी, सूत, अलसी, तिल, तेल एवम् अन्य तिलहनों में तेज़ी बने। यह तेज़ी टिकाऊ नहीं; जल्दी ही लाभ लें, आगे जल्दी मन्दा आ सकता है।

17 दिसम्बर को शुक्र विशाखा नक्षत्र में आकर रुई व अनाजों में मन्दा करेगा।

19 दिसम्बर को सिंह राशि का शनि वक्री हो रहा है। इस समय शनि पर बृहस्पति की नज़र भी है। शनि–राहु का समसप्तकयोग भी बन रहा है। सिक्का, कली, गेहूं, ज्वार, चावल, घी, तेल, सीमेन्ट एवम् अलसी, सरसों आदि तिलहनों में घटाबढ़ी के बाद तेज़ी बनेगी। 20 दिसम्बर तक मन्दे में खरीदें एवम् तेजी में बेचकर लाभ लेते रहें।

21 दिसम्बर को मूल नक्षत्र के तीसरे चरण में गुरु के आने पर कुल्थ, मूंग, मोठ, ज्वार, बाजरा व सोना, चान्दी में मन्दा बने; रुई में घटाबढ़ी के बाद मन्दा आए।

24 दिसम्बर को पू. षा. में बुध के आने पर बिनौला तेज, अनाज मन्दे हों। इस समय सोना, चान्दी में विशेष मन्दा आने का योग है।

[21 से 24 दिसम्बर तक बाज़ार प्रायः मन्दे रहेंगे।]

25 दिसम्बर को शुक्र वृश्चिक में दाखिल होगा। रुई, शेयर, चान्दी, अफीम में पहले मन्दी होकर बाद में तेज़ी बने। गुड़ में घटाबढ़ी; गेहूं, जौ, उड़द, मूंग, मोठ, बाजरा आदि अनाजों में तेज़ी बनेगी। अलसी भी तेज़ रहेगी।

26 दिसम्बर को राहु धनिष्ठा के चतुर्थ चरण में और केतु मघा के दूसरे चरण में दाखिल होगा। राई, जौ, गेहूं, मोठ, चना, चावल, मूंग, उड़द, बाजरा, ज्वार मे तेज़ी बने। शक्कर, गुड, खाण्ड में भी तेज़ी रहे। दाख, घी, एवम् अलसी आदि तिलहन में विशेष तेज़ी का योग बनता है। 28 दिसम्बर को शुक्र अनुराधा में दाखिल होगा। 22 दिन में गुड़, खाण्ड, चावल आदि में मन्दा आने पर स्टॉक करें।

29 दिसम्बर को सूर्य पू. षा. में और 29 दिसम्बर को ही वक्री मंगल मृगशिर में दाखिल होगा। 14 दिन में तिल, सरसों, बिनौला, गुड़, खाण्ड, हल्दी, गुग्गुल, चमड़ा, ऊनी वस्त्र, कपूर, सोना, चान्दी में तेज़ी हो। 30 तारीख को तिल, चान्दी में तेज़ी; रुई में पहले मन्दी आकर बाद में तेजी बने। अन्य व्यापारिक वस्तुओं में प्रायः मन्दे की ओर झुकाव रहता है।

जनवरी (सन् 2008 ई.)

2 जनवरी को बुध उ.षा. में आता है। अनाजों में मन्दे का रुख रहे। 4 जनवरी को बुध मकर में आकर मंगल से दृष्ट है। रुई, सोना, चान्दी में तेज़ी रहे। दालवाना एवम् मोटे अनाजों का भाव मध्यम रहे। क्योंकि बुध जब मकर राशि में अकेला होता है तो मन्दी की अफवाहें बाजारों में फैलती हैं, इसलिए जो भी बाजारों का रुख बनता है, वह स्थाई नहीं होगा। **4 तारीख को ही बृहस्पति उदित होगा। इस समय बुध और बृहस्पति दोनों अस्त हैं।** वर्षा एवम् जलवायु के विचार से बाजार मे अचानक मन्दा भी बन सकता है। लेकिन चान्दी और अनाज तेज रहेंगे। सोना मे मन्दा रहे।

5 जनवरी को गुरु मूल नक्षत्र के चतुर्थ चरण में दाखिल होगा। कुल्थ, मूंग, मोठ, ज्वार, बाजरा व सोना–चान्दी मन्दे होंगे। रुई मे घटाबढ़ी के बाद मन्दा आए। 8 जनवरी को शुक्र ज्येष्ठा में आएगा और बुध पश्चिम में उदित होगा। अनाज कुछ तेज रहेंगे। सोना, चान्दी, चावल, सरसों, तिल, तेल, हींग में मन्दा बने। 8 जनवरी को ही भौमवती अमावस होने से आगे बाज़ार तेज होते प्रतीत होते हैं।

[जनवरी के प्रथम सप्ताह में बाज़ार अनिश्चित रूप में चलेंगे। कोई विशेष तेज़ी का योग नहीं बनता। बाज़ारों में मन्दी प्रधान रहेगी।]

10 जनवरी को श्रवण नक्षत्र का बुध एवम् गुरुवारी चन्द्रदर्शन होने से गुड, खाण्ड, अलसी, चना, चावल, रुई, सूत, सरसों, घी में तेजी, सोना, चान्दी मन्दे एवम् अनाजों में तेज़ी रहे।

11 जनवरी को उ. षा. नक्षत्र में सूर्य आकर उड़द, मूंग, चावल, चना, गेहूं,

गुड़, खाण्ड, लाल शक्कर, कपास, पिप्पलामूल, चमड़ा, सरसों, मूंज, पाट, सूत, तेज होंगे।

14 जनवरी रविवार को सूर्य मकर राशि में दाखिल होकर बुध के साथ मेल करेगा। इस समय सूर्य, बुध पर मंगल की खास नजर है। सूर्य ग्रह का असर रुई, एरण्ड, अलसी, मूंगफली, सोयाबीन, सूरजमुखी, कपास, अनाज, सोना, चान्दी, शेयर, हल्दी और कालीमिर्च पर विशेष अनुभव किया गया है। इस लिए घी, तेल, अलसी, गुड़, शक्कर, खाण्ड और रुई में तेजी बने एवम् गेहूं आदि अनाज व बारदाना में मन्दे की ओर रुख रहेगा।

19 जनवरी को बुध धनिष्ठा में तथा गुरु पू. षा. में आएगा और इसी दिन शुक्र मूल नक्षत्र और धनु राशि में आकर बृहस्पति के साथ मेल करेगा। बृहस्पति और शुक्र– दोनों जब एक राशि में आते हैं तो वर्षा–पानी से व्यापार को प्रभावित करते हैं। गुरु–शुक्र पर मंगल की विशेष नज़र भी है।

ध्यान दें– गुरु–शुक्र के साथ मेदिनी ग्रह प्लूटो भी मेल कर रहा है। गेहूं, जौ, चना आदि अनाज एवम् दालवाना किंवा, सोना, चान्दी आदि धातु और शेयर बाज़ार तेज़ रहेंगे। रुई, कपास, सूत में पहले मन्दी आकर बाद में तेजी बने।

[14 से 23 जनवरी तक बाज़ारों में अच्छी तेज़ी के रिएक्शन्ज़ आएंगे। मन्दे में खरीदें और तेज़ी में बेचें।]

24 जनवरी को सूर्य श्रवण नक्षत्र में आता है। 14 दिन में गेहूं, जौ, चावल, रुई, सूत, सण, सोना, चान्दी, गुड़, खाण्ड, अलसी, सुपारी, लौंग में तेज़ी बने। 25 जनवरी को सूर्य अभिजित् से निवृत्त होकर सुखद जलवायु बनाएगा और फलों के भाव सस्ते होंगे। 26 और 27 जनवरी को प्रायः बाज़ार तेज रहेंगे।

28 जनवरी को मकर राशिस्थ बुध वक्री हो रहा है। इस समय मंगल एवम् शनि भी वक्री हैं। 28 जनवरी को ही वक्री शनि मघा के चौथे चरण में दाखिल होगा। घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, नमक एवम् दालवाना, गेहूं, जौ, चना आदि अनाज तेज़ रहेंगे। रुई में भी झटके के साथ तेज़ी आने का योग है।

30 जनवरी को शुक्र पू. षा. नक्षत्र में दाखिल होगा। शुक्र बृहस्पति और प्लूटो के साथ चल रहा है। मंगल की इन पर पूरी नजर है। इसलिए 13 दिन में मूंग, मोठ, उड़द, तिल, तेल, सरसों व नमक आदि खारे पदार्थों में मन्दा आकर कुछ तेज़ी बने।

30 जनवरी को मंगल मार्गी होकर रुई में ज़ोरदार मन्दा करेगा और गुड़, खाण्ड में भी मन्दे का रुख बन सकता है। तेल, तिलहन और चान्दी भी तेज़ रहें।

नोट– 28 जनवरी को वायदा बाज़ार का जो रुख होगा, 30 तारीख को मंगल के मार्गी होने पर वह रुख बदल जाएगा। जिसका प्रभाव 31 जनवरी को देखा जाएगा।

31 जनवरी को बुध पश्चिम में अस्त होकर रुई में अच्छी मन्दी का झटका देगा। चान्दी तेज़ रहेगी। पाट, हैसियन, और शेयर मन्दे होंगे। क्योंकि बुध वक्री होकर अस्त हुआ है। इसलिए इस समय दालवाना, चना, गेहूं, चावल और तेल, तिलहन में अच्छी तेजी या मन्दे के रिएक्शन्ज आएंगे–सावधानी से काम करें।

जनवरी में हाजिर एवम् वायदा व्यापारियों के लिए कुछ चांस

1) **जनवरी 4, 5, 8 को बाज़ार मन्दी प्रधान रहेंगे।**
2) **जनवरी 10, 11, 14, 19 को तेल, तिलहन, गुड़, शक्कर, खाण्ड, घी, सोना, चान्दी के व्यापारी तेज़ी से लाभ लें।**
3) **जनवरी 24 एवम् 28 को घी, गुड़, खाण्ड, रुई, गेहूं, जौ, चना, सोना, एवम् चान्दी में तेज़ी रहे।**
4) **31 जनवरी को रुई में झटके की मन्दी और चान्दी में तेज़ी बने।**

फरवरी

फरवरी के प्रारम्भिक दिनों में बाज़ार कुछ मन्दे रह सकते हैं। 4 तारीख को गुरु पू. षा. के दूसरे चरण में दाखिल होगा। **ध्यान दें–** इस समय शुक्र भी पू. षा. नक्षत्र में ही चल रहा है। रुई, सोना, चान्दी आदि धातु व अनाज मन्दे रह सकते हैं।

6 फरवरी को सूर्य धनिष्ठा में एवम् वक्री बुध श्रवण नक्षत्र में दाखिल होगा। बुध अस्त भी है। सोना, चान्दी, मणि, मोती आदि जवाहरात, मूंग, चना, चावल, मसूर, गेहूं आदि अनाज एवम् गुड़, खाण्ड, अलसी में तेज़ी बनेगी।

8 फरवरी शुक्रवार को कुम्भस्थ चन्द्र के समय चन्द्रदर्शन का होना सरसों, तिल, तेल, गेहूं, चावल, उड़द, चना, रुई, सोना, चान्दी, दालवाना, राजमाह, मूंग, मोठ, अरहर, मसूर तेज़ रहेंगे। कपास और गुड़ में भी तेज़ी रहे। 10 फरवरी को शुक्र उ. षा. में दाखिल होगा। गुड़, खाण्ड, सोना, चान्दी, अलसी, एरण्ड मन्दे होंगे। अनाज तेज़; रुई में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी। यह तेज़ी 12 तारीख तक उत्तम–मध्यमरूप से चल सकती है। 12 तारीख को शुक्र मकर राशि में आकर बुध के साथ मेल करेगा। इस समय बुध और शुक्र पर मंगल की नज़र भी होगी। 12 फरवरी को ही बुध पूर्व में उदित होगा। शेयर, अफीम, गुड़, खाण्ड, घी, गेहूं, चना आदि सब अनाज तेज़ रहेंगे। रुई में पहले मन्दी, बाद में झटके के साथ तेज़ी आए। चान्दी में झटके के साथ घटाबढ़ी बनेगी। तेल, तिलहन, घी, लालमिर्च, पाट, हैसियन में भी तेज़ी रहेगी।

13 फरवरी को बुध कुम्भ में आकर राहु के साथ मेल करेगा। इस समय शनि की कुम्भस्थ सूर्य और राहु पर शनि की पूरी नजर होगी। घी, तेल, नमक, सरसों, मूंगफली, तोड़िया, सूरजमुखी, एरण्ड, अलसी और राई में अच्छी तेज़ी बने। रुई एवम् गेहूं आदि अनाज; गुड़, शक्कर, खाण्ड में मन्दा आ सकता है।

17 फरवरी तक बाज़ारों में तेज़ी–मन्दी के अच्छे रिएक्शन्ज़ आएंगे– समझ से काम करें; अच्छा लाभ मिल सकता है। 18 फरवरी को राहु धनिष्ठा के तीसरे चरण में और केतु मघा के पहले चरण में दाखिल होगा। इस समय मेदिनीग्रह प्लूटो मूल नक्षत्र के तीसरे चरण में प्रवेश कर रहा है अतः गेहूं, जौ, मोठ, चना, चावल, मूंग, उड़द, मसूर, बाजरा, ज्वार में तेज़ी बनेगी। इस समय अलसी में भारी तेज़ी का योग है। गुड़, खाण्ड, शक्कर भी में मन्दा रहे।

19 फरवरी को सूर्य शतभिषा नक्षत्र में प्रवेश करेगा और इसी दिन मकर राशि का बुध मार्गी हो जाएगा। सूर्य और बुध– दोनों शनि के क्षेत्र में हैं। सूर्य पर शनि की नज़र है और बुध पर मंगल की नज़र। 14 दिन में सोना, चान्दी, सूत, सण, कपड़ा, तिलहन, एरण्ड, सरसों, हींग, जायफल, दाख, हल्दी, गेहूं, गुड़ के भाव तेज़ रहें। रुई में पहले मन्दी, बाद में तेज़ी बने। चान्दी में घटाबढ़ी के बाद तेज़ी बने। गेहूं , जौ, चना आदि अनाज तेज़ हों। रेशम, गुड़, खाण्ड, बिनौला मूंगफली, कपूर, चन्दन आदि सुगन्धित चीज़ें मन्दी हों। सोना तेज़ रहे।

20 तारीख को शुक्र श्रवण में आकर चान्दी, सोना, गुड़, खाण्ड, शक्कर, मूंग, मोठ, उड़द तथा अनाजों में मन्दा करे। तिलहन में तेज़ी; रुई में मन्दी होकर तेज़ी हो।

21 फरवरी को गुरु पू. षा. के तीसरे चरण में दाखिल होगा। जो कि रुई, सोना, चान्दी, तांबा, दालवाना और सब तरह के अनाजों में मन्दा आने का संकेत देता है।

वायदा एवम् हाज़िर व्यापारियों के लिए तेज़ी–मन्दी के कुछ चांस–

1) फरवरी 6, 8, 10, 12 को सोना, चान्दी, रुई, गुड़, खाण्ड, अलसी, चावल, मूंग, मोठ, चना, कपास, तिल, तेल में तेज़ी से लाभ मिलेगा।

2) फरवरी 13 से 17 तक बाज़ार डावांडोल रहेंगे।

3) फरवरी 19 को बाज़ार अच्छे तेज़ रह सकते हैं। 20, 21 फरवरी को बाज़ारों में मन्दे का रुख रहे।

4) 21 फरवरी से 29 फरवरी तक ग्रहण के प्रभावस्वरूप बाज़ार पहले 23 तारीख तक तेज़ रहेंगे। 25 से 29 तारीख तक बाज़ारों में उठा–पटक चलती रहेगी।

मार्च

2 मार्च को शुक्र धनिष्ठा में आकर चावल, मूंग, मोठ, उड़द, ज्वार, बाजरा, चान्दी, सोना, रुई, कपास में तेज़ी करेगा।

4 मार्च को सूर्य पू. भा. एवम् बुध धनिष्ठा में आकर रेशम, सोना, चान्दी, गेहूं, चना, उड़द, स्वांक, ज्वार, बाजरा, घी, सरसों, तिल, तेल, गुड़, खाण्ड, गुग्गुल, पिप्पलामूल एवम् रुई में घटाबढ़ी के साथ तेज़ी का रुख करे। क्योंकि इस समय सूर्य एवम् बुध– दोनों शनि की विभिन्न राशियों में हैं; सूर्य पर शनि एवम् बुध पर मंगल की दृष्टि भी है, अतः यह योग तेज़ीकारक ही रहेगा। 5 मार्च तक तेज़ी चलेगी।

6 मार्च को मंगल आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश करेगा। इस समय मंगल पर बृहस्पति की दृष्टि है। रुई, सूत, कपास, खल, अलसी, एरण्ड, मोती, गेहूं, चावल, चना, जौ एवम् चान्दी में तेज़ी आकर मन्दा बने। सोने में घटाबढ़ी चलेगी। 7 मार्च को भी घटाबढ़ी के साथ बाज़ार मन्दे रहें।

8 मार्च को शुक्र कुम्भ में आकर राहु एवम् सूर्य के साथ मेल करेगा। इस समय इन पर शनि की नज़र है। यद्यपि कुम्भ राशि का शुक्र मन्दे के रिएक्शन्ज़ दे सकता है, परन्तु शनि की दृष्टि एवम् राहु के साथ शुक्र का राशि सम्बन्ध होने से यहां कुछ तेज़ी बन सकती है। बाज़ार का रुख देखकर काम करें। हमारे विचार से रुई, चान्दी, गुड़, खाण्ड, गेहूं, चना, जौ, मूंग, ज्वार, बाजरा एवम् श्वेतवस्तु में अच्छी मन्दी एवम् तेज़ी का चांस है। मन्दी प्रधान रह सकती है।

9 मार्च को रविवार, रेवती नक्षत्र एवम् मीनस्थ चन्द्र के समय चन्द्रदर्शन होने से गुड़, खाण्ड, शक्कर मन्दे रहें। सोना, चान्दी तेज़ एवम् रुई में घटाबढ़ी के बाद मन्दी रहे।

10 मार्च को वक्री शनि मघा 3 में आएगा एवम् 10 मार्च को ही बुध कुम्भ राशि में दाखिल होकर सूर्य, शुक्र एवम् राहु के साथ मेल करेगा। मघा नक्षत्र तिलहन बाज़ारों, कालीमिर्च, जीरा, सोना, चान्दी को प्रभावित करता है। रुई, चान्दी, गेहूं, चना, जौ, मूंग, ज्वार, बाजरा, चीनी, तिलहन, तेल, कालीमिर्च, जीरा, सोना, चान्दी, गुड़, खाण्ड में तेज़ी से अच्छा लाभ मिले।

11 मार्च को पू. षा. के चतुर्थ चरण में गुरु रुई, धातुओं, दालवाना एवम् मोटे अनाजों में मन्दी करेगा। 13 मार्च को शतभिषक नक्षत्र का शुक्र गेहूं, गुड़, खाण्ड, चावल, घी, सरसों, रुई, सोना, चान्दी में तेज़ी करे।

14 मार्च को शुक्र मीन राशि में आकर तिल, तेल, अलसी, सरसों, खाण्ड, गुड़, शक्कर, रुई, सोना तेज़ करे एवम् प्रत्येक जाति के अनाजों में पहले कुछ तेज़ी, बाद में मन्दे की ओर झुकाव रहे। इस समय चान्दी में कुछ मन्दे का रुख बने।

15 मार्च को शतभिषा नक्षत्र का बुध दालवाना एवम् अनाजों में कुछ तेज़ी, परन्तु सोना–चन्दी में मन्दे का रुख करे।

17 मार्च को सूर्य उ.भा. में आएगा। 15 दिन में चावल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, गेहूं, तेल को तेज़ करेगा।

[10 से 23 मार्च तक बाज़ारों में ज़ोरदार मन्दे–तेज़ी के रिएक्शन्ज़ आएंगे। मन्दे में खरीदें, तेज़ी में लाभ लेते रहें।]

24 मार्च को बुध एवम् शुक्र– दोनों पू. भा. में प्रवेश करेंगे। बुध अस्त है। सोना, चान्दी, ताम्बा, लोहा तथा अनाज मन्दे रहें। रुई में घटाबढ़ी के बाद तेज़ी रहे।

[25 से 29 मार्च तक बाज़ार अस्थिर रहेंगे।]

30 मार्च को सूर्य रेवती में एवम् बुध मीन राशि में प्रविष्ट होगा। रुई, गुड़, खाण्ड, शक्कर में मन्दी, सोना, चान्दी में घटाबढ़ी, पहले तेज, बाद में उतनी ही मन्दी बने। यद्यपि मीन राशि का बुध मन्दा करता है, परन्तु यहां 30 मार्च को बुध का सूर्य से मेल हो रहा है, इसलिए मीन का बुध यहां रुई, गुड़, खाण्ड, अलसी, सरसों, तोड़िया, मूंगफली, एरण्ड, सोयाबीन, सूरजमुखी, लहसुन, मोती, लाख, सज्जी, गेहूं, जौ, चना, चावल में तेज़ी देगा– ऐसा हमारा विचार है, समझ से काम करें।

31 मार्च को भी 30 मार्च की ग्रहस्थिति बल करेगी।

सज्जनों ! हमने ग्रहचाल को पूरी तरह जांचकर तेजी–मन्दी के रुख का बेरवा इस पंचांग में दिया है, फिर भी ग्रहचालवश यदि किसी प्रकार से आपको व्यापार में हानि होती है तो हम उसके लिए उत्तरदायी न होंगे। वैसे, हमारी प्रभु से प्रार्थना है, कि– आपको व्यापार में हमेशा उत्तम लाभ प्राप्त होता रहे।

यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र साधना के लिए महत्त्वपूर्ण काल

(1 जनवरी, सन् 2007 ई. से 6 अप्रैल, सन् 2008 ई. तक)

जप एवं यन्त्र-मन्त्र आदि की साधना के लिए शास्त्रों द्वारा बारह सायन संक्रान्तियों के पुण्यकाल तथा सूर्य-चन्द्र के क्रान्तिसाम्य (महापात) के काल को ठीक सूर्य-चन्द्रग्रहण के समान ही महत्त्वपूर्ण माना गया है। संहिता और ज्योतिष ग्रन्थों में इस विषय के अनेक वचन उपलब्ध हैं। क्रान्तिसाम्य को तन्त्रादि की सिद्धि के लिए ऋषियों ने स्पष्ट रूप से फलप्रद माना है। आचार्य भास्कर ने भी 'सिद्धान्तशिरोमणि' में कहा है, कि-क्रातिसाम्य के काल में विवाहादि मंगलकृत्य करना तो निषिद्ध है, लेकिन यदि इस समय जप, अनुष्ठानादि किया जाए तो उसकी वृद्धि होती है- *"पातस्थितिकालान्तर्गतमंगलकृत्यं न शस्यते तज्ज्ञैः। स्नान-जप-होमदानादिकमत्रोपैति खलु वृद्धिम्।।"* यन्त्र-मन्त्र-तन्त्रों की साधना मे विशेष रुचि रखने वाले पाठकों के लिए हम नीचे 1 जनवरी, 2006 ई. से 19 मार्च, सन् 2007 ई. तक की सायन संक्रान्तियों के पुण्यकाल तथा क्रान्तिसाम्य के प्रारभ और समाप्तिकाल (भा.स्टैं.टा.) दे रहे हैं। इन कालों में यत्र-तत्रो के निर्माण से एवम् मंत्रजाप से वे अभीष्ट सिद्धि प्राप्त कर सकेंगे।

सूर्य और चन्द्रमा के ग्रहण के पर्वकाल को भी मन्त्रादि साधना के लिए साधकों को उपयोग में लाना चाहिए। सायन संक्रान्तिपुण्यकाल, क्रान्तिसाम्य और सूर्य-चन्द्रग्रहण के अलावा मन्त्रादि साधना के लिए अर्धोदय, महोदय, महामहावारुणीपर्व, महावारुणीपर्व, वारुणीपर्व और षडशीतिमुख पुण्यकाल भी महत्त्वपूर्ण माने गए हैं। षडशीतिमुख पुण्यकाल प्रतिवर्ष चार बार घटित होता है, जबकि शेष अर्धोदय आदि योग कभी-कभी आते हैं।

सावधान-यंत्र-मंत्र-तंत्रों के प्रयोग को प्रभावशाली रूप में सद्यः फलप्रद बनाने के लिए शास्त्रविहित काल में साधना कीजिए, अन्यथा आगमशास्त्र पर साधक की निराधार अनास्था होने की पूर्ण आशंका है।

सायन संक्रान्ति पुण्यकाल (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ तारीख	घं.	मि.	समाप्त तारीख	घं.	मि.
सन् 2007 ई.					
20 जन.	10	31	20 जन.	22	31
19 फर.	0	39	19 फर.	12	39
20 मार्च	23	39	21 मार्च	11	39
20 अप्रै.	10	37	20 अप्रै.	22	37
21 मई	9	41	21 मई	21	41
21 जून	17	37	22 जून	5	37
23 जुला.	4	29	23 जुला.	16	29
23 अग.	11	38	23 अग.	23	38
23 सितं.	9	20	23 सितं.	21	20
23 अक्तू.	18	46	24 अक्तू.	6	46
22 नवं.	16	19	23 नवं.	4	19
22 दिसं.	5	38	22 दिसं.	17	38
सन् 2008 ई.					
20 जन.	16	14	21 जन.	4	14
19 फर.	6	20	19 फर.	18	20
20 मार्च	5	19	20 मार्च	17	19

निरयण संक्रान्तियों के पुण्यकाल

सायन संक्रान्तियों के पुण्यकाल की भान्ति निरयण संक्रान्तियों के पुण्यकाल में भी यंत्र-मंत्रादि की साधना की जा सकती है, लेकिन सायन संक्रान्तियों का पुण्यकाल इसके लिए विशेष महत्त्व रखता है।

क्रान्तिसाम्य का प्रारम्भ और समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ तारीख	घं.	मि.	समाप्त तारीख	घं.	मि.
सन् 2007 ई.					
13 जन.	21	22	14 जन.	3	29
26 जन.	9	59	26 जन.	14	41
8 फर.	18	47	8 फर.	23	39
21 फर.	7	53	21 फर.	11	34
6 मार्च	8	30	6 मार्च	12	48
19 मार्च	8	06	19 मार्च	11	20
31 मार्च	20	28	1 अप्रै.	0	40
14 अप्रै.	8	26	14 अप्रै.	12	12
26 अप्रै.	9	36	26 अप्रै.	14	10
10 मई	5	48	10 मई	10	15
22 मई	5	30	22 मई	10	52
5 जून	7	12	5 जून	13	10
17 जून	19	15	18 जून	1	52
27 जून	1	32	27 जून	8	38
10 जुला.	5	27	10 जुला.	11	09
23 जुला.	12	29	23 जुला.	18	20
5 अग.	9	37	5 अग.	14	00
18 अग.	6	57	18 अग.	13	22
31 अग.	8	15	31 अग.	12	02
13 सितं.	0	02	13 सितं.	4	20
26 सितं.	8	05	26 सितं.	11	31
8 अक्तू.	13	17	8 अक्तू.	17	25

प्रारम्भ तारीख	घं.	मि.	समाप्त तारीख	घं.	मि.
सन् 2007 ई.					
22 अक्तू.	7	00	22 अक्तू.	10	38
3 नवं.	2	28	3 नवं.	7	00
17 नवं.	1	39	17 नवं.	6	50
29 नवं.	0	15	29 नवं.	5	53
13 दिसं.	3	30	13 दिसं.	10	42
सन् 2008 ई.					
3 जन.	21	28	4 जन.	4	55
17 जन.	6	50	17 जन.	12	12
29 जन.	23	19	30 जन.	5	02
12 फर.	4	49	12 फर.	9	05
24 फर.	16	20	24 फर.	20	36
9 मार्च	0	56	9 मार्च	4	28
21 मार्च	7	35	21 मार्च	10	40
3 अप्रै.	22	00	4 अप्रै.	2	08

सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य

सूर्य-चन्द्र की राशियों के अनुसार निर्धारित किये जाने वाले क्रान्तिसाम्य का प्रारम्भ-समाप्तिकाल नितान्त स्थूल होता है। यहां दिया गया क्रान्तिसाम्य का प्रारम्भ-समाप्तिकाल महापात गणित द्वारा स्पष्ट किया गया है। यह सर्वथा सूक्ष्म है। विवाहादि मुहूर्तों में इसी सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य के काल को ही वर्जित किया गया है।

षडशीतिमुख संक्रान्ति पुण्यकाल (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ तारीख	घं.	मि.	समाप्त तारीख	घं.	मि.
(सन् 2007ई.)					
10 जन.	13	54	11 जन.	1	54
6 अप्रै.	3	00	6 अप्रै.	15	00
4 जुला.	6	53	4 जुला.	18	53
1 अक्तू.	12	11	2 अक्तू.	0	11
(सन् 2008 ई.)					
10 जन.	20	03	11 जन.	8	03
महोदययोग (सन् 2008 ई.)					
6 फर.	9	26	7 फर.	7	48
महावारुणी पर्व (सन् 2007 ई.)					
17 मार्च	12	02	17 मार्च	14	56
वारुणी पर्व (सन् 2008 ई.)					
3 अप्रैल	16	38	4 अप्रैल	2	51
गजच्छाया पर्व (सन् 2007 ई.)					
10 अक्तू.	8	17	11 अक्तू.	5	34

सूर्य-चन्द्रग्रहण

जैसा कि ऊपर लिखा है- यन्त्र- मन्त्र-तन्त्र साधना के लिए सूर्य एवम् चन्द्र ग्रहणों का पर्वकाल विशेष महत्त्व रखता है। इसवर्ष केवल चन्द्रग्रहण ही घटित हो रहे हैं। पर्वकालों के लिए पृ. 9 देखिए।

यन्त्र-मन्त्र एवम् तन्त्रों का चमत्कार

इस स्तम्भ के अन्तर्गत अनुभूत यन्त्र–मन्त्र–तन्त्र गतवर्षों से देते आ रहे हैं। इस स्तम्भ के अन्तर्गत दिए गए मन्त्रों को शुभमुहूर्त्त में गुरुमुख से प्राप्त करके ग्रहणवेला, क्रान्तिसाम्य या सायन–संक्रान्तियों के पुण्यकाल में दृढ़–निश्चयपूर्वक अनुष्ठान करके सिद्ध कर लेना चाहिए। **ध्यान रहे–** दीपमाला के समय एवं महाशिवरात्रि की महत्वपूर्ण रात्रियों में किंवा **'यन्त्र–मन्त्र–तन्त्रों के लिए साधनाकाल'** में उल्लिखित समयावधियों में इन मन्त्र–तन्त्रों को सिद्ध करके, इनका चमत्कार आप अविलम्ब देख सकेंगे। यन्त्र–मन्त्रों के बल पर ही दैवज्ञ अपने वैदुष्य से अक्षुण्ण यश प्राप्त कर सकता है,–**"सिद्धिर्भूषयते विद्याम्।"**

मन्त्र ऐसे दिव्यशब्दों का समूह है, जिसे दृढ़ इच्छाशक्तिपूर्वक उच्चारण एवं मनन से ही हम अलौकिक काम कर सकते हैं। चुने हुए गुप्त शब्द ही मन्त्र हैं। इनमें शब्दों को ऐसा क्रम दिया जाता है, कि उनके मौन या अमौन अवस्था में उच्चारणमात्र से शून्य–महाकाश में एक विचित्र कम्पन उत्पन्न होता है, जिसमें अभीप्सित कार्यसिद्धि एवं रचनात्मक प्रबल–प्रछन्नशक्ति होती है।

" मननात् त्रायते यस्मात्तस्मात् मन्त्रः प्रकीर्तितः। जपात् सिद्धिर्जपात्. सिद्धिर्जपात् सिद्धिर्न संशयः।।"

मन्त्रशास्त्र के अनुसार वेदमन्त्रों को ब्रह्मा ने शक्ति प्रदान की थी। तान्त्रिकं प्रयोगों को भगवान् शिव ने शक्ति–सम्पन्न किया। इसी प्रकार कलियुग में शिवावतार श्री शाबरनाथ जी ने शाबरमन्त्रों को अद्भुत शक्ति प्रदान की। शाबरमन्त्र अनमिल बेजोड़ शब्दों का एक समूह होता है, जो कि अर्थहीन मालूम देते हैं, परन्तु भगवान् शंकर जी के प्रताप से ये मन्त्र अवन्ध्य प्रभाव रखते हैं– **" अनमिल आखर अर्थ न जापू। प्रकट प्रभाव महेश प्रतापू।।"** अतः शाबरमन्त्रों को यथावत् उच्चारण करें, किसी प्रकार से इनमें न्यूनाधिकता न करें। **नोटः–** मन्त्र का पुरश्चरण गुरु की देखरेख में गुप्तरूप से करें। प्रकट होने पर पुरश्चरण अर्थहीन हो जाता है– **" गोपनीयं गोपनीयं गोपनीयं प्रयत्नतः।"**

आश्चर्यजनक भविष्यकथन हेतु 'मुखवार्तालि नामक' कर्णपिशाचनी मन्त्रप्रयोग

यह प्रयोग एक महात्मा द्वारा अनुभूत है। इस प्रयोग से आश्चर्यजनक भूत–भविष्यत्–वर्तमान को प्रत्यक्षवत् बयान करते हुए देखा गया हैः–

मन्त्रः– **''ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नृं ठं ठं हुं नमो देवपुत्रि स्वर्गवासिनि सर्वनरनारिमुख–वार्तालि वार्ता कथय सप्तसमुद्रान् दर्शय दर्शय ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नृं ठं ठं हुं फट् स्वाहा।।''**

विधानः– जंगल में रहने वाली सेह के दो शूल (कांटे) एवम् जंगली सूअर का एक दांत लेकर सामने रखकर एक लाख 32 हजार उल्लिखित मन्त्र का जाप करे तो यह मन्त्र सिद्ध हो जाएगा। प्रतिदिन मन्त्रजाप नित्यकर्म के तौर पर करता रहे। ध्यान रहे– मन्त्र सिद्ध करते समय सेह के शूलों एवं सूअर के दांत पर सिन्दूर लगावें एवं अपने मस्तक पर भी मन्त्रजाप करते समय सिन्दूर अवश्य लगावें। ऐसा करने पर कर्णपिशाचिनी साधक के कानों में भूत–भविष्यत्–वर्तमान तीनों कालों की वार्ता स्पष्टरूप से कह देती है।

जलाशय एवं घर–जंगल में सर्वतोभावेन रक्षा हेतु एवं चोरों के भय से मुक्ति के लिए अनुभूत मन्त्र

मन्त्रः–''जले रक्षतु वाराहः स्थले रक्षतु वामनः।
अटव्यां नारसिंहश्च सर्वतः पातु केशवः।।
जले रक्षतु नन्दीशः स्थले रक्षतु भैरवः।
अटव्यां वीरभद्रश्च सर्वतः पातु शंकरः।।
अर्जुनः फाल्गुनो जिष्णुः किरीटी श्वेतवाहनः।
बीभत्सुर्विजयः कृष्णः सव्यसाची धनंजयः।।
कफल्लकः कफल्लकः कफल्लकः नन्दीश्वराय।
नमः नन्दीश्वराय नमः नन्दीश्वराय नमः।।''

प्रतिदिन प्रातः, सायं एवं रात्रि में सोते समय इस मन्त्र का जाप करने से घर में चोर नहीं आ सकेगा। समुद्री यात्रा में रक्षा पूर्ण रहेगी। जंगल में शत्रु–चौर एवं हिंसक जन्तुओं का भय नहीं रहता;– यह अनुभूत है। इस मन्त्र का जाप करते समय गुग्गुल, लौंग–लोबान को कूटकर रखें। अभिमन्त्रित इस धूप को घर में करने से सर्वविध व्याधि भी शान्त हो जाती है एवम् सुख–समृद्धि बनी रहती है।

नज़र झाड़ने का मन्त्र

बाल्यावस्था में छोटे बच्चों को प्रायः नजर लग जाती है, बच्चा रोने से नहीं हटता, दूध नहीं पीता या बीमारी से ग्रस्त रहने लग जाता है,– इस स्थिति में मोरपंख लेकर नीचे लिखे साबर मन्त्र का उच्चारण करते हुए बच्चे को झाड़ दें– नजर दूर हो जाएगी एवम् बच्चा स्वस्थ, प्रसन्न अनुभव करेगा।

मन्त्रः–"ॐ सत्यनाम आदेश गुरु को, ॐ नमो नजर जहां पर पीर न जानी बोले छल सों अमृतवाणी, कहो नज़र कहां ते आई, यहां की ठौर तोहि कौन बताई, कौन जात तेरो कहां ठाम, किसकी बेटी कहा तेरो नाम, कहां से उड़ी कहां को जाय। अबही बस करले तेरी माया, मेरी बात सुनो चित्त लाय, जैसी होय सुनाऊं आय; तेलन–तमोलन–चूहड़ी–चमारी–कायथनी–खतरानी–कुम्हारी– महतरानी–राजा की रानी; जाको दोष, ताही के सिर पड़े, जाहरपीर नज़र से रक्षा करे, मेरी भक्ति गुरु की शक्ति, फुरा मन्त्र ईश्वरो वाचा।"

नेत्रपीड़ा निवारणार्थ मन्त्र

नीम की डाली से २१ बार दुःखती आंख को निम्नांकित मन्त्र पढ़ते हुए झाड़ दें, आंख की पीड़ा शान्त हो जाएगी,– इसमें सन्देह नहीं।

मन्त्रः– "ॐ श्रीराम की धनुही लक्ष्मण का बाण।
आंख दर्द करे तो लक्ष्मण कुमार की आन।।"

कन्या का वास पति के घर में ही रहे

आजकल नवोढा कुछ कन्याएं पति के घर से झगड़ा करके पिता के घर में आ बैठती हैं। जिससे पिता एवम् ससुरपक्ष में विरोध एवम् परेशानी बन जाती है। इस विरोधशान्ति हेतु एवम् कन्या पतिघर में ही मन लगाकर रहे, एतदर्थ यह निम्नांकित साबरमन्त्रप्रयोग रामबाण का काम करता है;– अनुभव करें।

मन्त्रः–"ॐ भोगराज भयंकर परिभूय उत उधरई जोई जोई देखे। मारकर तासो सो दीखै पांव परन्ता ॐ नमो ठः ठः स्वाहा।।"

विधान– सांभर नमक की १०८ कांकरी इस साबरमन्त्र से अभिमन्त्रित करके लड़की को किसी तरह खिला दें, तो लड़की ससुराल में ही रहे,– रूठकर पिता के घर कभी न जाएगी।

दुकान में बिक्री बढ़ाने के लिए अनुभूत प्रयोग

[इस मन्त्र का प्रयोग हम पहले भी पंचांगों में दे चुके हैं, लेकिन जनता के अनुरोध पर पुनः लिख रहे है।]

मन्त्र–"भंवर वीर तू चेला मेरा, खोल दुकान कहाकर मेरा।
उठै जो डंडी बिकै जो माल, भंवरवीर सोखे नहीं जाए।।"

विधि– इस मन्त्र को दीवाली की रात को पढ़कर सिद्ध कर लें। फिर आवश्यकता पड़ने पर रविवार के दिन काले उड़द लेकर 21 बार इन उड़दों पर इस मन्त्र को पढ़कर अभिमन्त्रित कर लें एवम् दुकान में इधर–उधर उक्त मन्त्र पढ़ते हुए डाल दें। तीन रविवारों को बिक्री चौगुणी हो जाएगी।

वशीकरणार्थ कुछ मन्त्र

[इन मन्त्रों का प्रयोग शत्रु को वश में करने के लिए एवम् रूठी हुई अपनी धर्मपत्नी किंवा रूठे हुए पति को वश में करने के लिए ही करें। अनुचित अर्थ में प्रयोग करने से आपको हानि पहुंचेगी।]

(i) घोररूपिणी मन्त्रप्रयोग

मन्त्रः– " ॐ नमः कट विकट घोररूपिणि स्वाहा।"

विधिः—इस मन्त्र को शुभ मुहूर्त्त में पहले सिद्ध कर लें। फिर इसी मन्त्र द्वारा सात बार अभिमन्त्रित करके भोज्य पदार्थ को जिसका नाम लेकर ७ दिन तक खाएंगे, वह निश्चय ही वश में हो जाता है।

(ii) वश्यमुखी मन्त्रप्रयोग

मन्त्र—"ॐ वश्यमुखि राजमुखि स्वाहा।"

विधिः—दाएं हाथ में तेल लेकर, अनामिका अंगुली से तीन बार मन्त्र से अभिमन्त्रित करके फिर तीन बार उल्लिखित मूलमन्त्र को पढ़कर, मुख पर एवम् सिर पर तेल मले। राजा, जज एवम् विरोधी भी वश में आ जाते हैं।

(iii) चामुण्डा मन्त्रप्रयोग

मन्त्र—"ॐ चामुण्डे जय जय, स्तम्भय स्तम्भय, भंजय भंजय, मोहय मोहय, सर्वसत्त्वे नमः स्वाहा।"

विधिः—शुभ मुहूर्त्त में इस मन्त्र को सिद्ध करें। तत्पश्चात् इस मन्त्र को लाल पुष्प पर तीन बार पढ़कर, फूंक मारकर जिसे देंगे, वशीभूत हो जाएगा।

राजदरबार में विजयार्थ कुछ तन्त्रप्रयोग

(i) तुलसी के बीज सहदेवी के रस के साथ पीसकर इतवार को तिलक करे, सारे व्यक्ति अनुकूल वातावरण वाले रहेंगे—

" तुलसी– बीज– चूर्णस्य सहदेवी– रसैः सह।
तिलकं यो रवौ कुर्यात् स जगन्मोहकृद् भवेत्।।"

(ii) हरिताल (हड़ताल), असगन्धा को केले के रस में पीसकर गोरोचन के साथ मिलाकर तिलक करके कोर्ट—कचहरी जाएं; सभी वशंवद हो जाएंगे—

"हरितालाश्वगन्धा तु कदली रसपेषिता।
गोरचन–युतास्तिलको राजमोहनः।।

विद्या में सर्वोत्तम सफलता एवम् प्रखर—वैदुष्य प्राप्ति के लिए सरस्वती मन्त्र एवम् स्तोत्र

आजकल डॉक्टरी—इंजीनियरिंग एवम् अन्य सभी क्षेत्रों में भारी प्रतियोगिता है। निराश छात्रों की ओर से आत्महत्या तक करने की खबरें पढ़ने/सुनने में आ रही हैं। अतः इस निराशा से मुक्ति पाने के लिए हम सरस्वती मन्त्र एवम् स्तोत्र यहां दे रहे हैं; इस मन्त्र का जाप करने से विद्या—विवेक जाग्रत होगा, एवम् सफलता का मार्ग प्रशस्त रहेगा।

मां सरस्वती का ध्यान—

ॐ शुक्लां ब्रह्मविचारसार—परमामाद्यां जगद्व्यापिनीम्,
वीणा—पुस्तक—धारणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम्।
हस्ते स्फटिक—मालिकां विदधतीं पद्मासने संस्थिताम्,
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम्।"

मन्त्रः— " ॐ ह्रीं ऐं ह्रीं ॐ वाग्देव्यै नमः।"

इस मन्त्र की एक माला प्रतिदिन करने से मन पढ़ाई में लगेगा, नशा आदि से मन दूर रहेगा, सफलता अवश्य मिलेगी। इस मन्त्र का जाप करके निम्नांकित सरस्वतीस्तोत्र का पाठ अवश्य करें—

स्तोत्रः—

"ॐ ह्रीं ह्रीं हृद्यैक—विद्ये शशिरुचि—कमला—कल्पविस्पष्ट शोभे,
भव्ये भव्यानुकूले कुमति—वनदहे विश्ववन्द्यांघ्रि—पद्मे!
पद्मे पद्मोपदिष्टे प्रणतजन—मनोमोद—सम्पादयित्रि,
प्रोत्प्लुष्टाज्ञानकूटे हरि—निजदयिते देवि संसारसारे।।१।।
ऐं ऐं ऐं इष्टमन्त्रे कवलभवमुखांभोजरूपे स्वरूपे,
रूपारूप—प्रकाशे सफलगुणमये निर्गुणे निर्विकारे।
न स्थूले नैव सूक्ष्मेऽप्यविदित—विषये नापि विज्ञानतत्त्वे,
विश्वे विश्वान्तराले सुरवर—नमिते निष्कले नित्त्य—शुद्धे।। २।।

ह्रीं ह्रीं ह्रीं जापतुष्टे हिमरुचि–मुकुटे वल्लकी–व्यग्रहस्ते,
मातर्मातर्नमस्ते दह दह जड़तां देहि बुद्धिं प्रशस्ताम्।
विद्ये वेदांग–गीते श्रुति–परिपठिते मोक्षदे मुक्तिमार्गे,
मार्गातीत प्रभावे भव भव वरदा शारदे शुभ्रहारे।।३।।

धीं धीं धीं धारणाख्ये धृति–मति–नुतिभिर्नामभिः कीर्तनीये,
नित्ये नित्ये निमित्ते मुनिगण–नमिते नूतने वै पुराणे।
पुण्ये पुण्यप्रभावे हरिहर–नमिते वर्णशुद्धे सुवर्णे,
मन्त्रे मन्त्रार्थसत्त्वे मतिमति–मतिदे माधव–प्रीतिनादे।।४।।

ह्रीं क्षीं धीं ह्रीं स्वरूपे दह दह दुरितं पुस्तकव्यग्रहस्ते,
सन्तुष्टाकार–चित्ते स्मितमुखि सुभगे भंजनि–स्तम्भविद्ये।
मोहे मुग्धप्रबोधे मम कुरु सुमतिं ध्वान्त–विध्वंस–नित्ये,
गीर्दाग् गौर्भारती त्वं कवि–वृषरसना सिद्धिदा सिद्धिसाध्या।।५।।

सौं सौं सौं शक्तिबीजे कमलभव–मुखांभोज–भूत–स्वरूपे,
रूपारूपप्रकाशे सकलगुणमये निर्गुणे निर्विकारे।।
न स्थूले नैव सूक्ष्मेऽप्यविदित विभवे जाप्यविज्ञान सत्वे,
विश्वे विश्वान्तराले सुरगण–नमिते निष्कले नित्यशुद्धे।। ६।।

स्तौमि त्वां त्वां च वन्द्ये भज मम रसनां मा कदाचित्त्येजेथा,
मा बुद्धिर्मे विरुद्धा भवतु न च मनो देवि मे जातु पापम्।
मा मे दुःखं कदाचिद् विपदि च समयेऽप्यस्तु मेऽनाकुलत्वम्,
शास्त्रे वादे कवित्वे प्रसरतु मम धीर्मास्तु कुण्ठा कदाचित्।।७।।

इत्येतैः श्लोकमुख्यैः प्रतिदिनमुषसि स्तौति यो भक्तिनम्रो,
देवीं वाचस्पतेरतिमतिविभवो वाक्पटुर्नष्टपंकः।
सः स्यादिष्टार्थलाभः सुतमिव सततं याति तं सा च देवी,
सौभाग्यं तस्य लोके प्रसरति कविता विघ्नमस्तं प्रयाति।।८।।

ब्रह्मचारी व्रती मौनी त्रयोदश्यां निरामिषः।
सारस्वतो नरः पाठात् स स्यादिष्टार्थ–लाभवान्।।९।।

पक्षद्वयेऽपि यो भक्त्या त्रयोदश्येकविंशतिम्।
अविच्छेदं पठेद्धीमान् ध्यात्वा देवीं सरस्वतीम्।।१०।।

शुक्लाम्बरधरां देवीं शुक्लाभरणभूषिताम्।
वांछितं फलमाप्नोति स लोके नात्र संशयः।।११।।

इति ब्रह्मा स्वयं प्राह सरस्वत्याः स्तवं शुभम्।
प्रयत्ने पठेन्नित्यं सोऽमृतत्त्वं प्रयच्छति।।१२।।

इस स्तोत्र के नित्यपाठ से साधक परम् वाचस्पति हो जाता है।

सर्वसिद्धिप्रद हनुमान् यन्त्र

इस यन्त्र को भोजपत्र पर अष्टगन्ध से सवा लाख बार लिखकर रखें।

"ॐ आंजनेयाय नमः"–इस मन्त्र से पूजन करता रहे। यह यन्त्र 'सर्वकार्य सिद्धिकारक' है। इस यन्त्र का धूप, दीप करके नैवेद्यसहित पूजन करें। चांदी या तांबे में मढ़ाकर लाल धागे से गले में डालें या दाईं भुजा में बांधें– सब काम जल्द ही सफल होंगे।

श्री हनुमान् यन्त्र			
नं.	छं.	जं.	चं.
दं.	दं.	चं.	चं.
जं.	छं.	जं.	वं.
छं.	नं.	जं.	हं.

बुरे स्वप्नों से मुक्ति मिले

इस यन्त्र को अष्टगन्ध से भोजपत्र पर लिखकर गुग्गुल की धूप दें और कण्ठ में धारण करें; बुरे स्वप्न न आवें।

दुःस्वप्न नाशक यन्त्र			
गं.	छं.	जं.	चं.
छं.	नं.	जं.	ठं.
ठं.	जं.	ठं.	चं.
नं.	छं.	जं.	टं.

वाक्‌सिद्धि यन्त्र

इस वाक्‌सिद्धि यन्त्र को कुलिंजन से भोजपत्र पर लिखकर चांदी में मढ़ाकर कण्ठ में धारण करें, तो जो भी उच्चारण करेंगे, सत्य सिद्ध होगा।

वाक्‌सिद्धि यन्त्र			
६६	९३	२	८
७	३	९०	८९
९१	८६	९	१
४	६	८७	९८

इच्छा प्राप्तिकर यन्त्र

इस यन्त्र को चन्दन से बिल्ववृक्ष के पत्र पर १०८ बार लिखकर श्रावण मास में ३० दिन शिवलिंग पर श्रद्धापूर्वक चढ़ाएं। भगवान् श्रीशंकर के प्रसाद से सारी मनोकामनाएं पूर्ण होंगी।

इच्छा प्राप्तिकर यन्त्र			
वं.	वं.	वं.	वं.
मं.	पं.	पं.	पं.
दं.	दं.	दं.	दं.
लं.	लं.	लं.	लं.

कुछ टोटके

(१) पिशाचग्रस्त व्यक्ति को राहत मिले

काले धतूरे को रविवार के दिन सफेद सूत से ३ गाठें लगाकर दाईं बाजू पर बांधें। डाकिनी, पिशाचिनी आदि से ग्रस्त व्यक्ति को राहत मिलेगी।

(२) मिरगीरोग शान्त्यर्थ

ब्रह्मबूटी की जड़ को उखाड़कर काले सूत की गांठ लगाकर रोगी के गले में पहिना दें। असाध्य मिरगीरोग से मुक्ति मिलेगी।

(३) बवासीर से मुक्ति

काले धतूरे की जड को काले डोरे से कमर में बांध दें, पुरानी से पुरानी बवासीर ठीक हो जाएगी।

कलहनाशक तन्त्र

घर में झगड़े से मुक्ति पाने के लिए दत्तात्रेय तन्त्रोक्त इस तन्त्र का प्रयोग करें;–

"तालकं तक्रपिष्टेन मृत्तिका–युक्तपुत्तलीम्।
निखनेद् यद्गृहे भूमौ कलहो नाशमाप्नुयात्।।"

अर्थात्– ताड़वृक्ष के पत्तों को लस्सी डालकर पीसे एवं मिट्टी की एक पुत्तली बनावें। पिसे पत्तों एवम् मिट्टी की पुत्तली को घर की धरती में दबा देने से गृहकलह शान्त हो जाता है।

वर्षाकारक प्रयोग

'पर्जन्यादन्न संभवः।' बिना वर्षा अन्नोत्पत्ति नहीं होती, अतः यदि कहीं वर्षा का अभाव हो एवम् अकाल की स्थिति बनने लगे तो निम्नांकित मन्त्र का जाप करना तुरन्त भारी वर्षाकारक सिद्ध होगा।

मन्त्रः–"ॐ काली काली स्वाहा"

विधि– पीपल की समिध (लकड़ी) लेकर घी की एक हजार आहुति इस मन्त्रोच्चारणपूर्वक डालें, तत्पश्चात् शिवमन्दिर में शिवलिंग तक पानी भरें। तुरन्त महावर्षा से खेती हरीभरी रहे एवम् अकाल की स्थिति समाप्त हो जाएगी।

पत्नी की प्राप्ति के लिए

मन्त्रः–" ॐ पत्नीं मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम्।
तारिणीं दुर्गसंसारसागस्य कुलोद्भवाम्।। "

इस मन्त्र का सवा लाख जप करने से शीघ्र पत्नी की प्राप्ति (विवाह) हो जाती है और इसी मन्त्र के सम्पुट से दुर्गा सप्तशती के १०० पाठ अर्थात् शतचण्डी कराने से शीघ्र विवाह हो जाता है।

वरप्राप्ति के लिए

(i) मन्त्रः–"ॐ देवेन्द्राणि नमस्तुभ्यं देवेन्द्रप्रियभामिनि।
विवाहं भाग्यमारोग्यं शीघ्रलाभं च देहि मे।।"

उपर्युक्त मन्त्र का १०८ बार कन्या को जाप करना चाहिए। जाप

करने की विधि यह है कि तुलसी के पौधे का पूजन करके उसके सामने तुलसी की माला पर १०८ बार जाप हररोज़ करें। जाप पूर्ण होने पर तुलसी के पौधे की १२ बार परिक्रमा करनी चाहिए। प्रत्येक परिक्रमा में दुग्ध और जल से भगवान् सूर्यनारायण को अर्घ्य देते हुए **"ॐ देवेन्द्राणि नमस्तुभ्यं.........."** मन्त्र को भी पढना चाहिए। कन्या को चाहिए कि वह अपने दाहिने हाथ में दूध और बांए हाथ में जल से अर्घ्य दे। दूध और जल से एकसाथ अर्घ्य एक साथ ही १२ बार देना चाहिए। जो कन्या उपर्युक्त विधि से जप और सूर्य को अर्घ्य प्रदान करती है, उसको बहुत शीघ्र वर की प्राप्ति हो जाती है।

(ii) मन्त्रः—"ॐ शं शंकराय सकल—जन्मार्जितपापविध्वंसनाय।
पुरुषार्थचतुष्टयलाभाय च पतिं देहि कुरु कुरु स्वाहा।।"

इस मन्त्र का जाप तुलसी की माला पर तीन माला प्रतिदिन 41 दिन या तीन मास तक करने से कन्या का विवाह शीघ्र हो जाता है।

जाप की विधि— भगवान् शंकर और अन्नपूर्णा की फोटो सामने रखकर, उनका प्रतिदिन पूजन करके धूप—बत्ती जलाकर जाप करे। जाप जहां किया जाए, वहां मिट्टी के गमले में अथवा टीन में केले के स्तंभ को रखकर, उसको मौजी (खमणी) से ६ अथवा ११ बार लपेट कर उस केले के वृक्ष की पूजा प्रतिदिन करनी चाहिए और जाप के बाद केले के स्तंभ की ४ वार अथवा ६ बार परिक्रमा करनी चाहिए। जो कन्या उपर्युक्त अनुष्ठान नित्य करती है, उसका शीघ्र विवाह हो जाता है।

भूत—प्रेत बाधा की निवृत्ति के लिए

मन्त्रः—"ॐ स्थाने हृषिकेष तव प्रकीर्त्या जगत्प्रहृष्यत्यनु।
च रक्षांसि भूतानि दिशो द्रवन्ति सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसंघाः।।"

श्रीमद्भगवद् गीता के इस मन्त्र का सवा लाख जाप करके सर्वप्रथम सिद्ध करना आवश्यक है। पश्चात् उपर्युक्त मन्त्र काम करता है। भूत—प्रेत का आवेश होने पर मिट्टी के किसी शुद्ध पात्र में गंगाजल लेकर अथवा कूप का जल लेकर ७ बार उपर्युक्त मन्त्र को बोलकर उसमें दाहिने हाथ की तर्जनी को फिरा (घुमा) दें। फिर उस जल में से थोड़ा सा रोगी को पिला देना चाहिए। बचा हुआ जल रोगी के समस्त अंगों पर छिड़क देना चाहिए। जब तक रोगी की भूत—प्रेत बाधा शांत न हो, तब तक प्रतिदिन दो बार प्रातः और सायंकाल इस प्रयोग को करना चाहिए।

मित्रता के लिए

मन्त्रः—"ॐ दमयन्ती—नलाभ्यां च नमस्कारं करोम्यहम्।
अभिवादो भवेदत्र कलिदोष—प्रशान्तिदः।।
ऐकमत्यं भवेदेषां ब्राह्मणानां पृथग्धियाम्।
निर्वैरता च जायेत संवादाग्ने प्रसीद मे।।"

उपर्युक्त मंत्र द्वय से अलग—अलग पायस (खीर) में घृत डालकर हवन करने से शत्रुता हटकर मित्रता हो जाती है। यह अनुष्ठान कम से कम ६१ दिन का है।

सुख से प्रसव होने के लिए

मन्त्रः—"ॐ मुक्ताः पाशाविपाशांश्च मुक्ताःसूर्येण रश्मयः।
मुक्त—सर्वभयाद् गर्भ त्राहिहि मारीच स्वाहा।।"

इस मंत्र द्वारा पवित्र जल को आठ बार अभिमंत्रित करके गर्भिणी स्त्री को जल पिलाने से उसको सुख से प्रसव होगा।

पति को वश में करने के लिए

मन्त्रः—"ॐ नमो महायक्षिणि पतिं में वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।"

इस मंत्र को दीपावली अथवा ग्रहण के दिन १०८ बार जप करके सिद्ध कर लें। पश्चात् ३१ दिन १०८ बार जप करने से स्त्री का पति उसके वश में हो जाता है।

सर्प विषनाशक औषधि

गाय के ताजे दूध से निकाले गए मक्खन, गाय का दही, शहद, पीपल, अदरक, मिर्च को कूट, बराबर मात्रा में मिलाकर सांप से डसे हुए व्यक्ति को पिला देने से विष उतर जाता है– अनुभव करें।

धनधान्य पूर्णकर अन्नपूर्णा मंत्र

मन्त्रः– ''ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमो भगवति माहेश्वरि अन्नपूर्णे स्वाहा क्लीं श्रीं ह्रीं ॐ।''

इस मंत्र के प्रभाव से धन–धान्य पूर्ण रहता है। दो लक्ष जाप कर, तिल, लाल धान की लाई, खीर, दाख, गोघृत से हवन करना चाहिए। उससे धन–धान्य बढ़ता है।

सर्वसिद्धि हनुमान् जी का अष्टादशाक्षर मंत्र

मन्त्रः–''ॐ नमो भगवते आंजनेयाय महाबलाय स्वाहा''।

एक लक्ष जापोपरान्त खीर, दाख, पीपल, खैर की लकड़ी से हवन करें। विशेष कामना के लिए अनुकूल द्रव्य वस्तु होनी चाहिए।

पशुरोग दूर भगाने के लिए

गांव में पशुओं की बीमारी न आवे इसके लिए गुरुपुष्य, हस्तार्क अथवा उत्तम पर्व में मिट्टी के बड़े सकोरे के भीतर मंत्र लिखकर गोशाला में लटका दें तो बीमारी नहीं होगी।

मन्त्रः–''ॐ अर्जुनः फाल्गुनो जिष्णुः किरीटी श्वेतवाहनः।
बीभत्सुर्विजयी पार्थः सव्यसाची धनंजयः।।
कपिध्वजो गुड़ाकेशो गांडीवः कृष्णसारथिः।
एतान्यर्जुननामानि गवां गोष्ठे च यो लिखेत्।।
न तत्र पशुरोगादि शुभं शीघ्रं प्रजायते।।''

झाड़ फूंक शाबरमंत्र

सिरपीड़ा दूर करने के लिए

मन्त्रः– ''लंका में बैठ के माथ हिलावै हनुमंत। सो देखिके राक्षसगण पराय दुरंत।। बैठी सीता देवी अशोकवन में। देखि हनुमान् को आनन्द भई मन में।। गई उर विषाद देवी स्थिर दरशाय। 'अमुक' के नहीं कछु पीर नहीं कछु भार। आदेश कामाख्या हरिदासी चण्डी की दोहाई।।''

सिर की पीड़ा से पीड़ित व्यक्ति को दक्षिण की ओर मुख करके बैठा दें। सिर को हाथ से पकड़कर उक्त मंत्रोच्चारण करते हुए झाड़ें। 'अमुक' के स्थानपर रोगी का नाम लें।

आधासीसी दूर करने के लिए

मन्त्रः– (१) बन में ब्याई कच्चे बनफल खाय। हाँक मारी हनुमंत ने इस पिंड से आधाशीसी उतर जाए।।

(२)''ॐ नमो वन में ब्याई बानरी, उछल वृक्ष पै जाय।
कूद–कूद शाखनरी, कच्चे बनफल खाय।।
आधा तोड़े आधा फोड़े, आधा देय गिराय।
हंकारत हनुमान् जी, आधासीसी जाय।।

किसी एक मंत्र का उच्चारण करते हुए भस्म से झाड़ें।

नए ग्रहों की खोज और प्लूटो की पदच्युति

लेखकः– प्रियव्रत शर्मा,

24 अगस्त सन् 2006 ई. को International Astronomical Union ने नवज्ञात ग्रह प्लूटो का 'ग्रहपद' वापिस ले लिया और उसे वामन ग्रह घोषित किया है। प्लूटो की इस पदावनति का कारण क्या है ?– यह लेख पूर्णतः स्पष्ट करता है।

प्राचीनकाल से मानव को केवल पांच ताराग्रहों (मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि) से ही परिचय था, क्योंकि ये नग्न दृष्टि से ही दिखलाई पड़ते हैं। खगोलशास्त्र द्वारा प्रतिपादित आधुनिक ग्रहपरिभाषा के अनुसार जो गोलपिण्ड सूर्य के चारों ओर निरन्तर भ्रमण कर रहे हैं, वे हमारे सौर परिवार के ग्रह हैं। इस परिभाषा के अनुसार हमारे सौर परिवार के प्राचीन विदित ग्रह केवल ये छः ही हैं– बुध, शुक्र, पृथ्वी, मंगल, गुरु और शनि[1]। विज्ञान की सभी शाखाओं की प्रगति के साथ खगोलशास्त्र ने भी इस युग में भारी प्रगति की है। परम शक्तिशाली दूरदर्शकों (Telescopes) के आविष्कार ने खगालशास्त्रियों (Astronomers) को खगोल के रहस्य उदघाटित करने की प्रेरणा तथा शक्ति दी। इसलिए विश्व के सभी देशों में आधुनिकतम परमोन्नत दूरदर्शकों से सुसज्जित वेधशालाएं (Observatories) अहर्निश क्रियाशील हैं।

क्या हमारे सौरपरिवार के इन छः सदस्यों के अतिरिक्त और भी कोई सदस्य इस खगोल में है ?– इस प्रबल जिज्ञासा से विश्व के खगोलविदों ने अन्तरिक्ष के प्रत्येक ज्यामितीय बिन्दु को परम शक्तिमान वेधयन्त्रों द्वारा गम्भीरता से खोजना शुरू किया हुआ है। परिणामस्वरूप, खगोल के अन्य असंख्य रहस्यों के साथ–साथ हमारे सौरपरिवार के भी रोचक रहस्य उदघाटित हो रहे हैं। सौरपरिवार के असंख्य छोटे–बड़े नए–पुराने सदस्यों के बारे में अब हमारा ज्ञान उत्तरोत्तर गम्भीर से गम्भीरतर होता जा रहा है।

सन् 1780 ई. में अंग्रेज खगोलशास्त्री William Hershel ने शनि की कक्षा से ऊपर सौरपरिवार के एक नए सदस्य यूरेनस का अविष्कार किया। तदनन्तर गुरुत्वाकर्षण सिद्धान्तों के आधार पर भ्रमणवृत्त में निर्धारित यूरेनस की गति, स्थिति में कुछ विचलन होता देख 1845 ई. में अंग्रेज नक्षत्रविद् John Couch Adams और फ्रांस के नक्षत्रविद् Jean Joseph ने यूरेनस की कक्षा से ऊपर किसी अन्य ग्रह के अस्तित्व की घोषणा की, जिसे उन्होंने यूरेनस के विचलन का कारण बताया। 1846 ई. में ग्रहगणितानुसार उस ग्रह के स्थितिबिन्दु का निर्धारण कर जब वेध किया गया, तो उसी स्थान पर वस्तुतः एक ग्रह पाया गया, जिसे नेप्च्यून की संज्ञा दी गई। इस प्रकार सन् 1846 ई. तक हमारे सौरपरिवार के 8 सदस्य (ग्रह) हो गए। पुनश्च, सभी संभव अपेक्षित ग्रहगति, स्थिति–निर्धारक आकर्षणादि सिद्धान्तों द्वारा निर्धारित यूरेनस एवम् नेप्च्यून की गतिस्थिति में भी विक्षोभ–विचलन पाया गया, तब Dr. Lowell ने नेप्च्यून की कक्षा से ऊपर किसी अन्य ग्रह के अस्तित्व की भविष्यवाणी की, जिसे इन दोनों की स्थित्यादि में विक्षोभ का कारण माना गया। सन् 1930 ई. में गणनानुसार इस विक्षोभक ग्रह की खगोल में स्थिति निर्धारित की गई। खगोलशास्त्री Cyde Tombaugh ने इस विक्षोभक ग्रह को Lowell Observatory में वेधद्वारा उस निर्धारित बिन्दु के लगभग पास ही पाया। इस ग्रह को प्लूटो संज्ञा दी गई और इसे I.A.U. (International Astronomical Union) द्वारा ग्रह घोषित किया गया। इस प्रकार अब हमारे सौर परिवार के ग्रहों की संख्या 9 हो गई।

प्लूटो को ग्रह स्वीकार करने के कुछ वर्ष बाद शक्तिशाली दूरदर्शकों द्वारा पता चला कि– प्लूटो का पिण्ड, जिसे भ्रान्तिवश पृथ्वी के समान समझ लिया गया था, परिमाण में चन्द्रमा एवम् सौर परिवारीय ग्रहों के 7 उपग्रहों से भी छोटा है और इससे खगोलशास्त्री यह भी जान गए कि– इतने छोटे–से ग्रह के आकर्षण से यूरेनस और नेप्च्यून की गतिस्थिति में विचलन की बात भ्रामक थी– अतः यूरेनस और नेप्च्यून का विचालक कोई अन्य ही अज्ञात ग्रह होना चाहिए। इसलिए खगोलशास्त्रियों को तभी से प्लूटो को ग्रहपद देने की गलती का आभास होने लगा। किञ्च– प्लूटो के भ्रमणवृत्त की केन्द्रच्युति (Eccentricity of the orbit) असामान्य (सामान्य से कहीं अधिक) है। पता चला है कि– भ्रमणवृत्त में घूमते हुए कुछ वर्षों के लिए इसका सूर्य से अन्तर अपने अधोवर्ती ग्रह नेप्च्यून के सूर्य से अन्तर से भी कम हो जाता है। अन्य 8 ग्रहों में किसी के भी भ्रमणवृत्त में ऐसी अव्यवस्था, असामान्यता नहीं है। इसके भ्रमणमार्ग की इस असामान्य प्रकृति से भी खगोलशास्त्रियों को इसे ग्रहपद देने की अपनी गलती का आभास हुआ और खगोलशास्त्रियों में इस खगोलचारी पिण्ड को ग्रहपद से च्युत करने के बारे में यत्र–तत्र वाद–विवाद होने लगा। अपि च– इसके ग्रहपद पर बने रहने से एक भारी समस्या भी खगोलशास्त्रियों को धर्मसंकट में डालती रही है। यह समस्या ग्रह की परिभाषा से सम्बद्ध है। यदि प्लूटो को ग्रहपद से मुक्त न किया गया तो ग्रहपरिभाषा अनियन्त्रित हो जाएगी, जिससे ग्रहों की संख्या सैकड़ों, हजारों– कुछ भी हो सकती है। **इसके स्पष्टीकरण के लिए निम्नांकित विवरण पढ़िए–**

प्लूटो की पदावनति की अनिवार्यता को समझने के लिए सूर्य के चारों ओर घूमते हुए इन नौ ग्रहों के मध्य फैली इन दो पट्टियों (Belts) के बारे नें पाठक को समझ लेना ज़रूरी है, जिनमें प्लूटो जैसे अनेकों गोलपिण्ड सूर्य की अनवरत परिक्रमा

---

[1] ध्यान रहे– इस लेख में इस आधुनिक परिभाषानुसारी गोलपिण्डों को ही 'ग्रह' संज्ञा से पुकारा गया है। भारतीय ज्योतिषानुसार तो पृथ्वी ग्रह नहीं, पंचतारा, सूर्य, चन्द्र एवम् राहु–केतु ग्रह हैं।

कर रहे हैं। वे पट्टियां हैं:–

(i) Asteroid Belt (क्षुद्रग्रह पट्टी)

(ii) Kuiper Belt (कुईपर पट्टी)

आगे पृष्ठ 55 पर " **हमारा सौर परिवार**" चित्र देखिए– सूर्य के चारों ओर पहिला (सूर्य के समीपतम) बुध, तदनन्तर क्रमशः शुक्र, पृथ्वी, मंगल, गुरु, शनि, यूरेनस, नेप्च्यून और प्लूटो के भ्रमणवृत्त हैं[2]।

इसी चित्र में देखिए– मंगल और गुरु के भ्रमणवृत्तों के मध्य Asteroid Belt (क्षुद्रग्रह पट्टी)है। इस पट्टी में लाखों की संख्या में छोटे–बड़े प्रस्तरखण्ड तथा उनके बीच कुछ ऐसे गोलपिण्ड भी सूर्य की परिक्रमा कर रहे हैं। जो आकृत्या छोटे--छोटे ग्रह लगते हैं, उन्हें क्षुद्रग्रह (Minor Planets) कहा जाता है। इस पट्टी में एक मील से 670 मील तक Diameter वाले असंख्य क्षुद्रग्रह हैं। अभी तक ज्ञात इन क्षुद्रग्रहों में Ceres, Vesta, Pallas, Juna आदि मुख्य हैं। Ceres इनमें सबसे बड़ा है, जो ग्रहों के लगभग सभी उपग्रहों से बड़े परिमाण वाला है। इसका व्यासार्ध 450 कि. मी. है। अतः इसे अनेक खगोलशास्त्री ग्रह का पद देने के पक्ष में भी थे।

दूसरी Kuiper Belt (कुईपर पट्टी) नेप्च्यून के भ्रमणवृत्त से काफी ऊपर स्थित है। यह पट्टी लगभग 70 Au[3] चौड़ी है। इसका भीतरी छोर सूर्य से 30 Au दूरी पर है। इस पट्टी में अभी तक हमें 800 के लगभग पदार्थ प्राप्त हुए हैं, जिन्हें संक्षेप मे KBOs (Kuiper Belt Objects) कहा जाता है। इनमें से अनेक ऐसे गोलपिण्ड हैं, जिनके व्यासार्ध (Radius) का मान 250 से 1250 कि. मी. तक है। (पृ. 56 पर दिए चित्र में कुईपर पट्टी के सात प्रमुख वामन ग्रहों के व्यासार्ध और उनके भगणकाल दिए गए हैं।) इन KBOs को Dwarf Planets (वामन ग्रह) कहा जाता है। **ध्यान रहे**– प्लूटो ग्रह भी कुईपर पट्टी का एक वामन ग्रह है, जो पहली बार खगोलविदों की दृष्टि में 1930 ई. में पड़ा। तभी इसे परिपूर्ण (Major) ग्रह का पद I.A.U. द्वारा दिया गया। अभी 21 अक्तूबर, 2003 ई. को कुईपर पट्टी में एक 2003 UB 313, वामन ग्रह (Dwarf Planet) Mike Browin, Chad Trujillo और David Rabinowitz खगोलविदों द्वारा खोजा गया, जिसे बाद में Xena नाम दिया गया। यह वामन ग्रह प्लूटो से कुछ बड़ा है। इसका व्यासार्ध 1250 कि. मी. है, जबकि प्लूटो का 1190 कि. मी.। इसके कक्षावृत्त की eccentricity तो प्लूटो से भी अधिक है।

अब प्लूटो से बड़े इस वामन ग्रह Xena की खोज के बाद I.A.U. के सदस्यों के सामने यह प्रश्न उपस्थित होने लगा कि–जब प्लूटो ग्रह बन सकता है, तब Xena को भी, जो परिमाण में उससे (प्लूटो से) बड़ा है, ग्रह के अन्य सभी लक्षणों (सूर्य के चारों ओर भ्रमण, गोलाकार पिण्ड आदि) से प्लूटो की भान्ति समन्वित है, ग्रह बनने का पूर्ण अधिकार है। Xena की कक्षा असामान्य रूप से eccentric है तो क्या, प्लूटो की भी तो है (पृ. 56 पर प्लूटो, Xena की असामान्य eccentric कक्षाएं देखें)। यह समस्या I.A.U. के सामने बुरी तरह उपस्थित हुई। इस समस्या को. समाहित करने के उद्देश्य से I.A.U. यदि Xena को भी ग्रहत्व देती है, तो अन्य KBOs, जो ग्रहलक्षण–लक्षित हैं, वे भी ग्रह बनने का पूरा अधिकार रखते हैं। यही नहीं कुईपर पट्टी में अन्य सैकडों ऐसे ही वामनग्रह की भविष्य में उपलब्धि प्रत्याशित है। वे भी ग्रह बनेंगे और तो और Asteroid Belt के Ceres, Vesta, Juna, Pallas जैसे क्षुद्रग्रह भी ग्रहत्व पद मांगेगे। उन्हें भी उनके व्यासमान की अल्पता का बहाना लगाकर ग्रहपद से वञ्चित नहीं रखा जा सकेगा, क्योंकि 'केवल इतने कि. मी. तक के व्यास वाला खगोलीय पिण्ड ही ग्रह बनन का अधिकारी है ; इससे कम व्यास वाला नहीं'– ऐसा प्रतिबन्ध लगा सकना सम्भव नहीं है। परिणामस्वरूप, ग्रहों की संख्या सैकड़ों, हजारों तक कुछ भी हो सकती है, इस प्रकार के धर्म संकट में बुरी तरह फंसे I.A.U. के विचारशील सदस्यों ने इस उलझी समस्या के समाधानार्थ एक मध्यमार्ग सिद्धान्तरूप में स्वीकार किया। इसके अनुसार ग्रहत्व की परिभाषा को सन्तुष्ट करने वाला वह Individual (एकाकी, स्वतन्त्र) पिण्ड ही परिपूर्ण, वास्तव Major ग्रह होगा, किसी विशाल समूह, सम्प्रदाय (Large population) का सदस्य पिण्ड इस पद का अधिकारी नहीं होगा। उसे तो क्षुद्रग्रह (Minor Planet) या वामनग्रह (Dwarf Planet) का पद ही दिया जाएगा। इस सिद्धान्त के अनुसार पृथ्वी पंचताराग्रह एवं यूरेनस, नेप्च्यून जो स्वतन्त्र, एकाकी (Individual) किसी विशाल सम्प्रदाय से असम्बद्ध पिण्ड हैं, स्पष्टतः निर्विवादरूप से ग्रह (Major Planets) हैं। Ceres, Vesta, Pallas, Juna आदि पिण्ड Asteroid Belt और Xena, प्लूटो आदि पिण्ड Kuiper Belt जैसे विशाल कुल (Large population) के सदस्य होने के कारण ग्रहपद के अधिकारी नहीं हैं। ये क्षुद्रग्रह या वामनग्रह की कोटि में ही रहेंगे।

I.A.U. के सदस्यों का यह निर्णय सुदीर्घ, प्राचीन परम्परा से भी समर्थित है, इससे ग्रहपरिभाषा की उन्मुक्त प्रवृत्ति भी नियन्त्रित होगी। अतः इस निर्णय का प्रस्ताव 24 अग., सन् 2006 ई. को बहुमत से पारित हो गया। तदनुसार बेचारे प्लूटो को उस ग्रहपद के सिंहासन से I.A.U. को ही उतारने के लिए बाधित होना पड़ा, जिस पद पर I.A.U. ने ही आज से 76 वर्ष पूर्व अभिषिक्त कर उसे बैठाया था।

इस प्रकार प्लूटो अब ग्रहपरिषद् का सदस्य नहीं रहा। वह **'वामन ग्रह'** बनकर रह गया है।कुछ भावुक वैज्ञानिक एवं अन्य विद्वान् लोग I.A.U. के इस निर्णय को दौर्भाग्यपूर्ण कहते हैं। लेकिन किसी पूर्वानुसन्धान के परिणाम का परवर्त्ती अनुसंधान द्वारा प्राप्त परिणाम के सन्दर्भ में संशोधन, परिवर्धन एवम् परिवर्तन यथार्थ ज्ञान के लिए अनिवार्य है। उपरोक्त ठोस कारणों से अपने पूर्व निर्णय को संशोध्य मानकर, इसे पदच्युत करने के लिए I.A.U. बाधित थी। यह तो प्लूटो के साथ होना ही था– इसे कोई भी रोक नहीं सकता था।

Sorry Pluto, Sorry ! तुम्हारी इस अवनति पर मेरी हार्दिक समवेदना है।

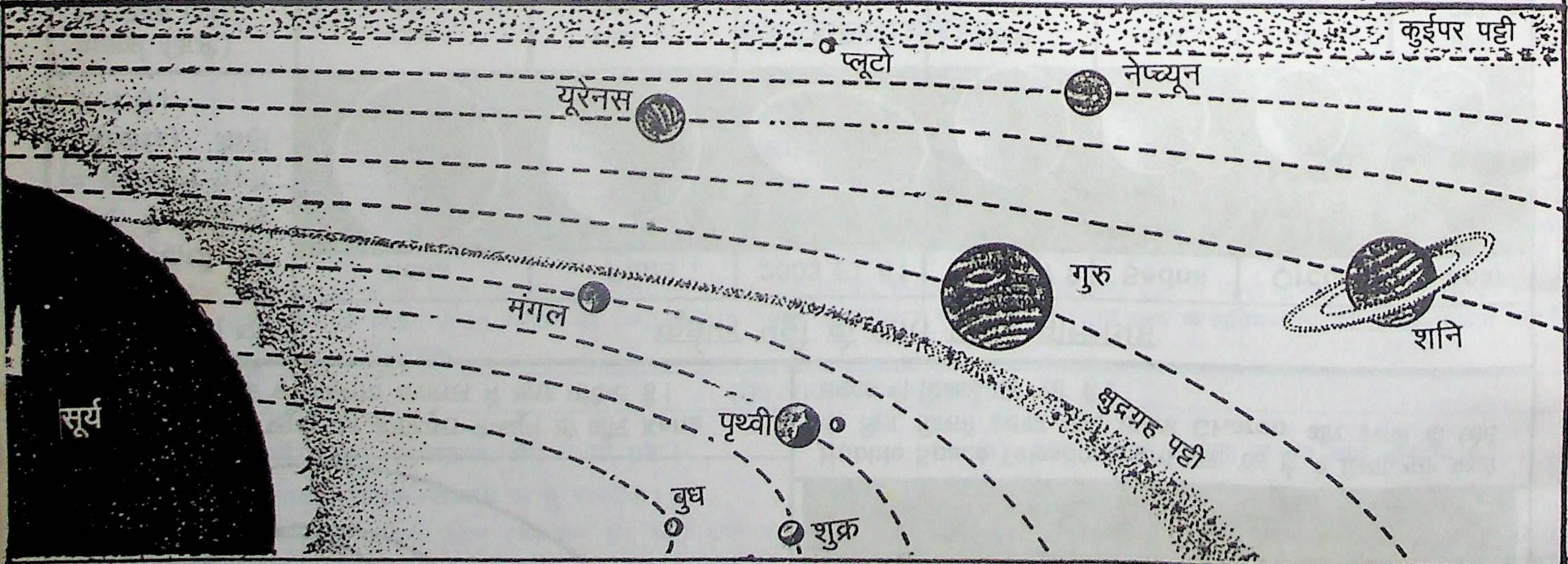
---

[2] [इन बुध आदि ग्रहों का व्यासार्ध, सूर्य से मध्यम दूरी, भगणकाल (सूर्य के चारों ओर पूर्ण भ्रमणकाल) और इन ग्रहों के उपग्रहों की संख्या, इसी चित्र के नीचे " **ग्रहों की अपेक्षित तुलनात्मक जानकारी** " शीर्षक के अन्तर्गत दर्शाई गई है।]

[3] *AU= Astronomical Unit = सूर्य से पृथ्वी का मध्यमअन्तर = 15,00,00,000 कि. मी.।*

हमारा सौर परिवार

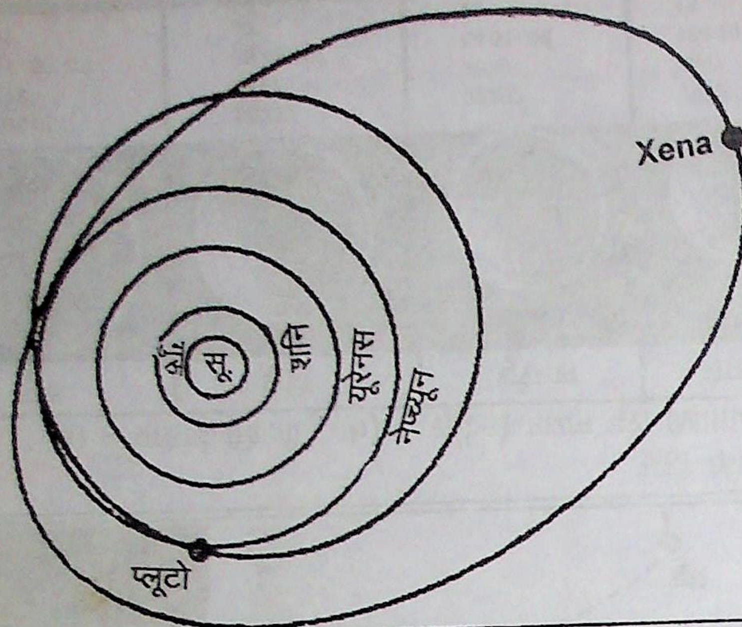
[सूर्य के चारों ओर नौ ग्रहों के भ्रमणवृत्तों, क्षुद्रग्रह पट्टी (Asteroid Belt) और कुईपर पट्टी (Kuiper Belt) का स्थितिक्रम]



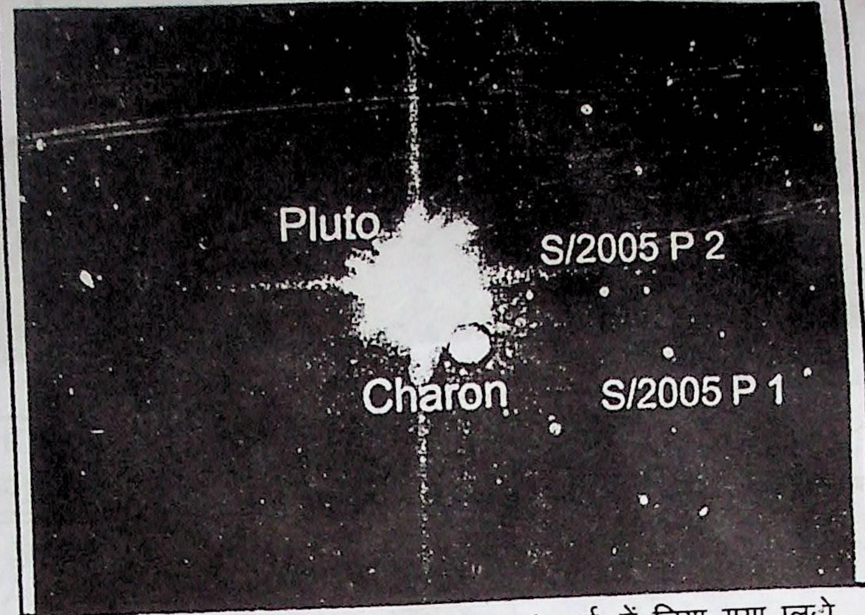
ग्रहों की अपेक्षित तुलनात्मक जानकारी

(a) =व्यासार्ध (कि.मी.), (b) = सूर्य से मध्यम दूरी (Million K.M.), (c) = भगणकाल (वर्ष/दिन), (d) =उपग्रह संख्या।

	गुरु	शनि	यूरेनस	नेप्च्यून	पृथ्वी	शुक्र	मंगल	बुध	प्लूटो
(a)	69912	58233	25362	24625	6371	6051	3389	2440	1195
(b)	778	1427	2870	4497	150	108	228	58	5900
(c)	11. 86 वर्ष	29.46 वर्ष	84.01 वर्ष	164.79 वर्ष	365.26 दिन	224.70 दिन	1.88 वर्ष	87.97 दिन	247.68 वर्ष
(d)	61	33	26	13	1	0	2	0	3



देखिए– प्लूटो का भ्रमणवृत्त नेप्च्यून के और Xena का प्लूटो के भ्रमणवृत्तीय धरातल में कुछ प्रविष्ट है।



Hubble Space Telescope द्वारा फर. '06 ई. में लिया गया प्लूटो का चित्र, जिसमें इसका मुख्य उपग्रह Charon और इसके दो छोटे उपग्रह भी दिखाई पड़ रहे हैं।

कुईपर पट्टी के सात प्रमुख वामनग्रह

कुईपर पट्टी में घूम रहे वामन ग्रह आदि पदार्थों को संक्षेप में KBOs (= Kuiper belt objects) कहा जाता है।	Xena	Pluto	2003 EL 61	2005 FY 9	Sedna	Orcus	Quaoar
व्यासार्ध (कि.मी.)	1250	1195	1000	1000	900	800	625
भगणकाल (वर्ष)	560	248	285	310	12000	247	286

श्लोकशतक

(लघुपाराशरी का सरलीकृत सुन्दर, श्लोकबद्ध–विवेचन)

अनुवादक– संयमी शर्मा, M.A., ज्योतिषाचार्य,

फलित ग्रन्थों में लघुपाराशरी गूढार्थक एवम् गम्भीर चिन्तनगम्य ग्रन्थ है, जिसके लेखक अज्ञात हैं। इसी ग्रन्थ को सुबोध बनाने का प्रयास अनेक विद्वानों ने किया है, जोकि विभिन्न भाष्य–टीकाओं के रूप में उपलब्ध है। लेकिन लघुपाराशरी के इन 42 श्लोकों को सुबोध श्लोकबद्ध शैली में प्रस्तुत करने का श्रेय **पं. श्री मिट्ठनलाल जी शुक्ल** को जाता है। उन्होंने 109 वर्ष पूर्व 'श्लोकशतक' लिखकर लघुपाराशरी के गूढ़ रहस्यों का सरलीकरण करके दैवज्ञों पर भारी उपकार किया है। यह ग्रन्थ जीर्ण–शीर्ण अवस्था में हमें प्राप्त हुआ है। इस महत्त्वपूर्ण फलित पुस्तिका को सुरक्षित रखते हुए बालबोध शैली में हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत करने का प्रयास क्रमशः किया जा रहा है। **प्रथमाध्याय के 20 श्लोकों का हिन्दी–अनुवाद गतवर्ष के पंचांग में दिया गया था। इस ग्रन्थ के अग्रिम–भाग का हिन्दी–अनुवाद आपके सामने इसवर्ष प्रस्तुत है। – सम्पादक**

अथ राजयोग–भंगाध्याय

(1) आयुस्त्रि–षष्ठ–लाभेशामसम्बंधी च यो ग्रहः।
पुनस्तादृश–केंद्रेश–सम्बंधी स तु राज्यदः।।

अर्थ– अष्टम, तृतीय, षष्ठ एवम् एकादश– इन चारों भावों के स्वामी का पूर्व चर्चित चार प्रकार के सम्बन्धों में से कोई सम्बन्ध न बनता हो, लेकिन केन्द्र के स्वामी से सम्बन्ध बनाता हो तो राजयोग कारक होता है।

चतुर्विध सम्बन्ध ये हैं–

"मुख्यश्चान्योन्यभे खेटौ चान्योन्यं यदि पश्यतः।
सम्बन्धो मध्यमश्चान्यो द्वयोरेकतरो यदा।।"
"भवेदेकतरस्थाने तं चापि यदि पश्यति।
एक राशौ यदा द्वौ चेत्तदा तेभ्योऽधमःस्मृतः।।"

(2) चंद्रज्ञ–गुरु–काव्यानां मध्ये यः केन्द्रनायकः।
स दुष्टोऽपि त्रिकोणेश–सम्बंधी राज्यदायकः।।

अर्थ– चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र– इन चारों ग्रहों में से जो ग्रह केन्द्र का स्वामी हो और दुष्ट भी हो (**"पतयस्त्रिषडायानां यदि पापफलप्रदाः"** अर्थात्– यदि कोई क्रूर ग्रह तीसरे, छठे या ग्यारहवें भाव का मालिक हो तो दुष्ट माने जाते हैं) तो त्रिकोणेश अर्थात्– (पंचम–नवम भावेश) से सम्बन्ध करने पर ग्रह राजयोगकारक हो जाता है।

(3) आयुस्त्रिषष्ठ लाभेशः स एव यदि केन्द्रपः।
दोषयुक्तोप्ययं राज्यं दत्ते सम्बन्धतस्ततः।।

अर्थ– अष्टम–तृतीय–छठे एवम् एकादश भावों के स्वामी ग्रह यदि केन्द्रेश (1, 4, 7, 10 भावों) के स्वामी भी हों तो ये दोषयुक्त होने पर भी स्वामित्व सम्बन्धमात्र से बलवान् होकर राजयोगकारक हो जाते हैं।

(4) एवं त्रिकोणनाथोऽपि दोषयुक्तोऽपि राज्यदः।
एवं त्रिकोण केन्द्रेशौ द्वावपीह तु राज्यदौ।।

अर्थ– त्रिकोण (नवम–पंचम भावों) के स्वामी दोषयुक्त (अर्थात् तृतीय–षष्ठ–अष्टम एवम् एकादश भावों के स्वामी) होने पर भी केन्द्रेश–त्रिकोणेश के स्वामित्व–सम्बन्ध से दोनों ही राजयोगकारक हो जाते हैं।

(5) भाग्य–राज्येश्वरौ भाग्ये राज्ये वान्योन्य–राशिगौ।
वा तौ स्व–स्व गृहे यातौ योगोऽयं प्रबलः स्मृतः।।

अर्थ –

(i) नवम एवं दशम भाव के स्वामी, दोनों नवमभाव में या दोनों दशम भाव में हों।

(ii) नवमेश दशम भाव में और दशमेश नवम भाव में हो।

(iii) नवमेश नवमभाव में एवं दशमेश दशमभाव में हो।

ये तीनों योग प्रबल राजयोगकारक हैं।

यही बात लघुपाराशरी में इस प्रकार लिखी है–

"निवसेतां व्यत्ययेन तावुभौ धर्मकर्मणोः।
राजयोगाविति प्रोक्तं विख्यातो विजयी भवेत्।।"

(6) पितृपुत्रपती चेत्थं प्रबलौ राज्यकारकौ।
अथ क्वापि स्थितौ चापि चेत्सम्बन्ध–चतुष्टये।।

अर्थ– दशमेश एवं पंचमेश भी यदि पूर्ववत् सम्बन्ध बनाए, अर्थात् दशमेश पंचम भाव में, पंचमेश दशमभावं में एवं पंचमेश–दशमेश दोनों दशमभाव में, एवं दशमेश एवं पंचमेश दोनों पंचम भाव में या दोनों अपने–अपने भाव में बैठे हों तो भी राजयोगकारक होते हैं। अर्थात्– पंचमेश–दशमेश कहीं भी बैठे हों (और चारों सम्बन्धों में से कोई भी सम्बन्ध बनाते हों) तो ये राजयोगकारक होते हैं।

(7) कुरुतोऽन्यतमं योगं राज्यं तौ यच्छतः प्रभू।
दशा चेद्राज्य–नाथस्य भवेदन्तर्दशा यतः।।

अर्थ–उल्लिखित राजयोगकारक स्थिति में दशमभावेश की महादशा एवम् पंचमेश की अन्तर्दशा में किंवा उल्लिखित स्थिति में राजयोगकारक–पंचमेश की महादशा एवं दशमेश की अन्तर्दशा में भी राजयोग फलप्रद ये ग्रह होते हैं।

(8) प्रायशो लभते राज्यं ध्रुवं सम्बन्धिनोऽस्य तु।
राज्यदात्प्रबलो यस्तु खलो मलिनलक्षणः।।

अर्थ– (उपरोक्त) राजयोगकारक ग्रह से पापलक्षण–लक्षित–खलग्रह बलवान् हो तो उससे सम्बन्ध करने वाले ग्रह की दशा और अन्तर्दशा में प्रायः राजयोग फल की प्राप्ति होती है।

(9) सम्बन्धी योगनाथस्य चेत्तस्यैव दशा भवेत्।
अन्तर्दशा यदा योगनाथस्य तु तदा नृपः।।

अर्थ– पूर्वोक्त चार प्रकार के राजयोगकारक ग्रह की महादशा एवम् राजयोगकारक ग्रह की अन्तर्दशा में राज्यलाभ प्राप्त होता है।

(10) केन्द्रेशान्यतमः कश्चित्कोणेशान्यतरेण चेत्।
सम्बंधमाचन् खेटो राज्यं यच्छति निश्चितम्।।

अर्थ– केन्द्रशों में से कोई एक ग्रह, नवमेश–पंचमेश में से किसी भी एक ग्रह के साथ सम्बन्ध करे तो अपनी दशा में निश्चय ही राजयोग कारक होता है।

(11) कोणनाथस्य सम्बंधी पापः कश्चिदुपग्रहः।
अथवा केन्द्रनाथस्य सम्बंधी यदि कोणगः।।

(12) सोऽपि राज्यप्रदो ज्ञेयः पराशरमुनीरितः।
लाभेशस्य च सम्बंधी राज्यभंगाय कर्मपः।।

अर्थ– राहु–केतु (उपग्रहों) में से कोई पापी ग्रह नवमेश किंवा पंचमेश से सम्बन्ध करे या नवम–पंचम भाव में बैठा हो तो राजयोगकारक होता है। अथवा राहु–केतु केन्द्रेश से सम्बन्ध बनाकर त्रिकोण (पंचम–नवम भाव) में हों तो राजयोगकारक होते हैं। लेकिन दशमेश यदि एकादशेश के साथ सम्बन्ध करे तो राजयोग को भंग करते हैं।

(13) धर्मायुषोस्तु कर्माप्त्योरेको राज्यहरोधिपः।
युग्मलग्नेऽथवा मेषे राज्यभंगाय भानुजः।।

अर्थ– अगर अष्टमेश एवम् नवमेश एक ही हो एवम् दशम–एकादश भाव का स्वामी भी एक ही हो तो राज्ययोग के फल का नाश करता है। जैसे मिथुन एवं मेष लग्न में शनि राजयोग का नाशक है।

(14) जन्मलग्नेश्वरःखेटो दशमे दशमेश्वरः।
लग्ने विख्यात–कीर्तिः स्याद्विजयी च नराधिपः।।

अर्थ– जन्मलग्न का स्वामी ग्रह दशमस्थान में हो किंवा दशम स्थान का स्वामी ग्रह लग्न में हो तो व्यक्ति महायशस्वी एवं सर्वत्र विजयी, राजा सदृश होता है।

समस्याएं और समाधान

लेखकः- प्रियव्रत शर्मा, 59/6 (अभिजित्), पंचकूला-134 109

फलित एवं गणित (सिद्धांत) ज्योतिष से सम्बद्ध अपनी समस्याएं मुझे भेजिए। आवश्यक समझने पर डाक से उत्तर देने का भी मेरा पूरा प्रयास रहता है। लेकिन इसके लिए कृपया जवाबी पत्र न डालिए। यदि मुझे आपकी समस्या का उत्तर पत्र द्वारा देना होगा, मैं अपने व्यय पर ही दे दूंगा। मुझे प्रतिदिन अनेक पाठकों की समस्याएं पत्रों द्वारा प्राप्त होती हैं। सीमित समय आदि के कारण मैं प्रत्येक पाठक को पत्र द्वारा समस्याओं का समाधान भेजने के लिए किसी भी तरह बाधित नहीं होना चाहता ।

ध्यान दें– मैं ज्योतिष का व्यवसाय नहीं करता हूँ। अतः अपनी ज्योतिषसम्बन्धी व्यक्तिगत समस्याओं के लिए मुझे कृपया पत्र न लिखें, और न ही इसके लिए मुझे कोई फीस वगैरह भेजिए। इस सम्बन्ध में मैं किसी से मिलता भी नहीं हूँ। कृपया कर्मकाण्डसम्बन्धी समस्याएं मुझे मत भेजिए। यह मेरा विषय नहीं है –

–प्रियव्रत शर्मा

यहां इन समस्याओं के समाधान पढ़िए

समस्या (i)– श्रीमार्त्तण्ड पंचांग के षड्बल विशेषांक में राहु का दीप्तिबल क्यों नहीं बतलाया गया ?

(ii) श्रीमार्त्तण्ड पंचांग में स्पष्ट ग्रहों के साथ मध्यम राहु देने का क्या कारण है ?

(iii) ग्रहों के षड्/सप्तबलयोग में 'युद्धबल संस्कार' का महत्त्व क्या है ?

(iv) ग्रहों के षड्/सप्तबल में 'गतिबल' की क्या कोई भूमिका है ?

(v) 'कालबल' के अन्तर्गत 'वर्षेशादि बल' साधन की विधि श्रीमार्त्तण्ड पंचांग (षड्बल विशेषांक) में निर्दिष्ट नहीं है। अतः जातक के जन्मसम्बन्धी विक्रमी संवत्विशेष के चान्द्रमास चैत्र की शुक्ल प्रतिपदा तथा उसके जन्मसम्बन्धी चान्द्रमास की शुक्ल प्रतिपदा का वारसाधन करने की विधि निर्दिष्ट करें, जिससे उस जातक के वर्षेश और मासेश का निर्णय किया जा सके। सृष्ट्यादि अहर्गण–पद्धति द्वारा वर्षेश एवं मासेश–निर्णय को तो आपने यहां अग्राह्य बतलाया है।

(vi) मंगलादि पांच ताराग्रहों के शीघ्रकेन्द्र (चेष्टाकेन्द्र) साधन के लिए इनके मध्यम भोगांश और शीघ्रोच्च–साधन की विधि निर्दिष्ट करें।

(vii) कालहोरा–साधन की प्रामाणिक विधि कौन–सी है ? अभीष्ट दिवसीय सूर्योदय से व्यतीत घण्टों के आधार पर जो होरेश का निर्णय किया जाता है, क्या वहां इष्ट–घट्यादि में चरसंस्कार और रेखांशसंस्कार देना चाहिए ?

इष्टकालिक स्पष्ट लग्न एवं स्पष्ट सूर्य के अंशात्मक अन्तर से साधित होरेश, उपरोक्त प्रक्रिया से साधित होरेश से अनेक बार मेल नहीं खाता; क्या कारण है ?

श्री.......................,
C/O श्री सतीश जैन,
अर्हन् हॉज़री, गांधीनगर, दिल्ली–31

समाधान– (i) दीप्ति बिम्ब की होती है। राहु का कोई बिम्ब नहीं है, वह तो सूर्य–चन्द्र के भ्रमणवृत्तों का सम्पातमात्र है।

(ii) हमारे सभी प्राचीन सिद्धान्तग्रन्थों में राहु (सूर्य–चन्द्र के भ्रमणवृत्तों के सम्पातबिन्दु) को 3′–11′′ दैनिक वक्रगति से ही चलता माना गया है। यह सम्पातबिन्दु कुछ–कुछ समय के अन्तराल पर मार्गगति से भी चलता है– ऐसा आज–कल के नक्षत्रविदों ने वेध एव आकर्षणसिद्धान्तों द्वारा जाना है। इसलिए मार्गी एवं वक्र–दोनों गतियों से चल रहे, इस स्पष्ट राहु के भोगांश भी यहां हमने देने शुरु किए हैं। क्योंकि, हजारों वर्षों की हमारी सैद्धान्तिक परम्परा के अनुसार इसे (राहु को) मध्यमगति वाला वक्र ग्रह ही माना है; अतः इसके मध्यम भोगांश भी यहां परम्परया देना उचित समझा गया है। ध्यान रहे– फलादेश के हमारे प्राचीन संहिता– जातकादि ग्रन्थों में 3′–11′′ मध्यमगति वाले वक्र राहु के आधार पर ही फलादेश निर्दिष्ट है।

(iii) जब दो ग्रह क्रान्तिवृत्त में एक ही स्थान पर होते हैं, तब जातकपद्धतिकारों का मत है कि– उन दोनों के सप्तबलों के आधार पर उनका तुलनात्मक बल अन्तिम बल नहीं मान लेना चाहिए। इस स्थिति में युद्धबल–संस्कार से संस्कृत ग्रह के बल को वास्तविक बल समझा जाए–ऐसा उनका निर्णय है।

एक ही स्थान पर स्थित ग्रहों में युद्ध की कल्पना एक ही स्थान पर स्थित मानवों की प्रतिद्वन्द्विता के सादृश्य से उपजी मालूम पड़ती हैं।

(iv) जातकपद्धतिकारों ने ग्रह के गतिबल का विचार साक्षात् तो नहीं किया। हां, उनके चेष्टाबल–साधन (बिम्बवृद्धि–बलसाधन) में गतिबल का काफी कुछ संकेत अवश्य मिलता है। क्योंकि गतिवृद्धि और गतिह्रास का बिम्बवृद्धि और बिम्बह्रास से सम्बन्ध है।

(v) अभीष्ट वर्ष का स्वामी (वर्षेश) जानने के लिए दृक्पक्षीय किसी करणग्रन्थ ('केतकी ग्रहगणित' या 'सर्वानन्दकरण') के अनुसार उस वर्ष की चैत्र शुक्ल प्रतिपदा का अहर्गण–साधन कीजिए। इस अहर्गण से उसी करणग्रन्थ द्वारा सूर्य और चन्द्र स्पष्ट करके यह जाना जा सकता है कि– उस दिन क्या सूर्य, चन्द्रमा के अन्तर से चैत्र शुक्ल प्रतिपदा सिद्ध होती है ? यदि यहां सूर्य–चन्द्रान्तर से द्वितीया सिद्ध हो तो अहर्गण में से एक घटाकर, चैत्रकृष्ण अमावस्या सिद्ध हो तो अहर्गण में एक जोड़कर, उसे वास्तविक अहर्गण माना जाए। यदि प्रागहर्गण हो तो द्वितीया सिद्ध होने पर एक जोड़ें, अमा सिद्ध होने पर एक घटाएं। इस अहर्गण से करणग्रन्थ के अनुसार वार का निर्णय आसानी से हो सकता है और इस वार का स्वामी ही उस वर्ष का राजा (वर्षेश) होगा– यह स्पष्ट है। जन्ममासेश का निर्णय भी इसी प्रकार जन्म के चान्द्रमास की प्रतिपदा के अहर्गण द्वारा करना होगा।

(vi) इसके लिए **'केतकी ग्रहगणित', 'ज्योतिर्गणित'** अथवा **'सर्वानन्दकरण'** के ग्रहगणिताध्याय देखें।

(vii) कालहोरा–साधन की अधिकतर सम्मत विधि सूर्योदयात् व्यतीत इष्ट घण्टादि पर आधारित है। ध्यान रहे– यहां सूर्योदयात् व्यतीत इष्ट घण्टादि में चर और रेखांशसंस्कार नहीं देना चाहिए; क्योंकि यह इष्ट घण्टादि (घट्यादि) काल स्थानीय स्पष्ट सूर्योदय से ही बीता काल है। इस होरासाधनविधि में प्रत्येक होरा एक घण्टे (60 मिनट) की ही होती है।

कालहोरा–साधन का दूसरा प्रकार, जिसमें इष्टकालिक स्पष्टलग्न और स्पष्ट सूर्य के अंशादि–अन्तर को 15 से भाग देकर व्यतीत होराएं ज्ञात की जाती हैं– प्रामाणिक नहीं है। क्योंकि, इस प्रक्रिया में 30 अंश में दो होराएं मानी गई हैं। राशियों के स्वोदयकाल मध्यममान से दो–दो घण्टे के अवश्य हैं; लेकिन स्पष्टमान से कभी दो

घण्टे से ज्यादा और कभी कम भी होते हैं। अतः एकराशि (30 अंशों) के स्वोदय में कल्पित दो होराएं, कभी दो घण्टे से कम और कभी दो घण्टे से ज्यादा होती हैं। यही कारण है– प्रथम प्रकार की होरा साधनपद्धति से प्राप्त होरेश और इस पद्धति से प्राप्त होरेश में अनेकदा अन्तर रहता है।

समस्या– 'मुहूर्त चिन्तामणि' में लिखा है– " ज्ञ–राहुपूर्णेन्दु–सिताः स्वपृष्ठे भं सप्तगोजातिशरैर्मितं हि। संलत्तयन्तेऽर्क–शनीज्य–भौमाः सूर्याष्टतर्काग्निमितं पुरस्तात्।।"– इसके अनुसार राहु पीछे की ओर 9वें नक्षत्र को लात मारता है। लेकिन 'श्रीमार्त्तण्ड पंचांग' के 'मुहूर्त विशेषांक' में दिए गए 'लत्ता कोष्ठक' में शेष ग्रहों की लत्ता तो ठीक है, लेकिन राहु के लत्तादूषित नक्षत्र विपरीत दर्शाए गए हैं। जैसे– यदि रोहिणी नक्षत्र में विवाह हो तो उपरोक्त श्लोकानुसार राहु के उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र पर होने से लत्तादोष होगा। किन्तु आपके इस कोष्ठक में धनिष्ठा नक्षत्र (यानी रोहिणी से 20वें नक्षत्र) को दिखाया गया है– ऐसा क्यों ?

श्री अवधेश तिवारी, हरिद्वार (उत्तरांचल)।

समाधान– राहु वक्रगति है। क्रान्तिवृत्त में नक्षत्रों की स्थिति पश्चिम से पूर्व की ओर है। क्रान्तिवृत्त में चलते हुए राहु का मुख पश्चिम में और पृष्ठ पूर्व की ओर रहती है। इस स्थिति में उसके पीछे 9वां नक्षत्र उसके द्वारा अधिष्ठित नक्षत्र से नक्षत्रगणना–क्रमानुसार वस्तुतः 9वां ही होगा। इस प्रकार स्पष्ट है, जब राहु धनिष्ठा में हो तो वह उस नक्षत्र से पृष्ठस्थ 9वें नक्षत्र रोहिणी को ही लात मारेगा। केशवार्क और दैवज्ञ नारायण ने अपने मुहूर्तग्रन्थों ('विवाहवृन्दावन' और 'मुहूर्त्तमार्त्तण्ड') में यह लिखा है कि– राहु अपने नक्षत्र (स्वाधिष्ठित नक्षत्र) से सम्मुखस्थ 20वें नक्षत्र को लात मारता है। यहां पाठक को भ्रान्त नहीं होना चाहिए, क्योंकि पृष्ठस्थ 9वां और अग्रस्थ 20वां नक्षत्र एक ही होता है। 'मुहूर्त्तचिन्तामणि' की "ज्ञराहु–पूर्णेन्दु सिताः..........." श्लोक की पीयूषधारा में यह स्पष्ट किया गया है।

मैं यहां यह विशेष बात स्पष्ट बतलाना चाहता हूँ– राहु की वक्रगति को दृष्टि में रखकर, उसके द्वारा लत्तित नक्षत्रों का जो निर्देश मैंने इस लत्ताकोष्ठक में किया है, वह यथार्थ है। अन्यत्र उपलब्ध लत्ताकोष्ठकों में भी ऐसा ही किया गया है। लेकिन इस कोष्ठक में पंचताराग्रहों (मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि) द्वारा जो लत्तित नक्षत्र दर्शाए गए हैं, वे इन पंचताराग्रहों को केवल मार्गी मानकर ही निर्धारित किए गए हैं। क्योंकि– ये ग्रह वक्र भी होते हैं। अतः वक्रता की स्थिति में इनके द्वारा लत्तित नक्षत्र इस कोष्ठक में निर्दिष्ट लत्तित नक्षत्रों से भिन्न होंगे। **किञ्च–** स्पष्ट राहु अक्सर थोड़े–थोड़े दिनों बाद मार्गी भी होता रहता है, इस (राहु) की मार्गस्थिति में भी इस द्वारा लत्तित नक्षत्र इस कोष्ठक में निर्दिष्ट नक्षत्रों से भिन्न होंगे। इस प्रकार स्पष्ट है– वक्री और मार्गी ग्रहों का लत्तादोष जानने के लिए दो भिन्न–भिन्न लत्ताकोष्ठक होने चाहिएं। सं. 2061 वि. के श्रीमार्त्तण्ड पंचांग के विशेषांक में दिया गया "लत्ताकोष्ठक" अधूरा है– यह मैं निःसंकोच स्वीकार करता हूँ। लेकिन यह जान लेना चाहिए– अन्य सभी मुहूर्तग्रन्थों में दिए गए 'लत्ताकोष्ठक'– परम्परया इसी रूप में मिलते हैं।

समस्या– व्रतपर्व–ग्रन्थों में गंगाजन्म की दो तिथियां भिन्न–भिन्न मिलती हैं– (i) वैशाख शुक्ल सप्तमी और (ii) ज्येष्ठ शुक्ल दशमी (जिसे गंगादशहरा भी कहा जाता है)। ऐसा क्यों ?

श्रीकृष्ण गोपाल गोस्वामी,
सैक्टर 27 A, चण्डीगढ़ (U.T.)।

समाधान– ब्रह्मपुराण में लिखा है कि– राजा भगीरथ की घोर तपस्या के परिणामस्वरूप गंगा स्वर्ग से ज्येष्ठ शुक्ल दशमी के दिन पृथ्वी पर उतर कर प्रवाहित होने लगी। यह गंगा का पृथ्वी पर प्रथम जन्म माना जाता है। गंगा के भारी प्रवाह ने जह्नु ऋषि के यज्ञ को अस्त–व्यस्त कर डाला, जिससे क्रुद्ध जह्नु ने गंगा के प्रवाह को पी लिया। भगीरथ के सानुनय प्रार्थना, अनुरोध के अनन्तर वर्षों बाद जह्नु ने इसे वैशाख शुक्ल सप्तमी के दिन अपने कर्णरन्ध्र से बाहर पृथ्वी पर उडेल दिया। यह गंगा का दूसरा जन्म माना जाता है।

समस्या– प्रतिपदा, पञ्चमी, षष्ठी, नवमी और दशमी तिथियों का क्रमशः मूल, भरणी, कृत्तिका, रोहिणी और आश्लेषा नक्षत्रों से योग होने पर ज्वालामुखीयोग माना जाता है। यह योग शुभकृत्यों के लिए वर्जित लिखा गया है। लेकिन आपके सं. 2063 वि. के पंचांग में आषाढ़ कृष्ण प्रतिपदा को मूल नक्षत्र और भाद्रपद कृष्ण पक्ष की नवमी को रोहिणी नक्षत्र में शुद्धविवाह लगा रखा है– क्या आप इसे उपयुक्त समझते हैं ?

पं. जयप्रकाश शर्मा,
गांव सारसा, (कुरुक्षेत्र)।

समाधान– ज्वालामुखी आदि कई कुयोगों के कुफल के बारे में प्रचलित अतिशयोक्तिपूर्ण प्रान्तीय उक्तियों का हमारे संहितादि मूलग्रन्थों में कोई निर्देश नहीं है।

किञ्च– तिथि–नक्षत्र, वार–नक्षत्र, वार–तिथि एवम् वार–तिथि–नक्षत्रों के योग से उत्पन्न ज्वालामुखी, क्रकच, यमघण्ट आदि कुयोगों में विवाहादि शुभकृत्य करने में गर्गादि ने कोई दोष नहीं माना–

" वारर्क्षतिथियोगेषु यात्रामेव विवर्जयेत्।
विवाहादीनि कुर्वीत गर्गादीनामिदं वचः।।"– (*लल्लः*)

अपि च– मुहूर्त्तकारों का यह भी मत है कि– इस प्रकार के दुष्टयोगों का कुफल तभी होता है, जबकि शुभकृत्य को शुद्ध लग्न में न किया जाए–

"यत्र लग्नं विना कर्म क्रियते शुभसंज्ञकम्।
तत्र तेषामयोगानां प्रभावाज्जायते फलम्।।"–(*दीपिका*)

समस्या–(i) 'श्रीमार्त्तण्ड पंचांग' एवम् 'विश्वलग्न सारणी' में दिए निर्देशानुसार मैने प्रातः 6 और सायं 18 बजे की सूर्यक्रान्ति व वेलान्तर से 21 मार्च को सूर्योदयास्त साधित किया तो कुछ अक्षांशीय स्थलों पर यह बिल्कुल समान आया एवम् कुछ स्थलों पर एक मिनट का अन्तर पाया गया, जबकि इस तारीख को सूर्योदयास्त सर्वत्र समान होना चाहिए ?

(ii) अनेकत्र विवाह दिन में भी होने लगे हैं, जबकि पहले केवल रात्रि में ही होते थे। क्या ब्राह्मण– वर–वधू का विवाह रात्रि के समय ही श्रेष्ठ माना जाता है ?

(iii) मैंने ''मराठी ग्रहगणित'' के अनुसार सूर्यादि स्पष्ट करने का अभ्यास किया है। मुझे समझ में नहीं आता– इस ग्रहगणित के निर्देश व उदाहरणों में अयनांशसंस्कार का उल्लेख नहीं है।

प्रो. अशोक शर्मा,
मण्डी रोड, अशोकनगर (म. प्र.)।

समाधान–(i) 21 मार्च को सूर्योदय व सूर्यास्त के समय क्रान्ति हमेशा शून्य होती है, ऐसी बात नहीं है। बहुत कम वर्षों एवम् स्थलों पर यह इस दिन शून्य उपलब्ध होती है। शून्यक्रान्ति की स्थिति में ही चर शून्य होने पर स्थानभेद से सूर्योदयास्तकाल में अन्तर नहीं होता। स्पष्ट है, जिस दिन 21 मार्च को आपने सूर्योदयास्तसाधन किया है, उस दिन सूर्योदय–सूर्यास्त के समय सूर्यक्रान्ति कुछ न कुछ ज़रूर थी।

(ii) मुहूर्त्तशास्त्रानुसार भद्रादि दोषरहित विवाहनक्षत्र के समय शुद्ध लग्न में विवाह कभी भी (रात्रि या दिन में) किया जा सकता है। इस विषय में जाति का कोई बन्धन नहीं है। लेकिन मुहूर्त्तशास्त्रकारों ने परामर्श दिया है कि– विवाह रात्रि के समय किया जाए तो अपेक्षाकृत अधिक शुभ होता है, क्योंकि यमघण्ट, यमदंष्ट्रा, क्रकच आदि अनेक अशुभ योगों का प्रभाव दिन में ही होता है, रात्रि में नहीं– **''दिवा मृत्युप्रदाः पापाः दोषास्त्वेषु न रात्रिषु।''– (*वशिष्ठः*)**

(iii) क्योंकि, **केतकर** रचित **'केतकी ग्रहगणित', 'मराठी ग्रहगणित'** आदि ग्रहगणित–ग्रन्थों में ग्रहों के भोगांश, मन्दोच्च, शीघ्रोच्च, गति आदि निरयण ही दिए गए हैं, इसलिए वहां अयनांशसंस्कार की अपेक्षा ही नहीं है।

समस्या–(i) अष्टगन्ध के पदार्थों में कुंकुम शब्द का क्या अर्थ है ? कहीं इसका अर्थ केसर (जाफरान, Saffron) और कहीं रोली या गुलाल बतलाया गया है– कौन–सा अर्थ ठीक है ?

(ii) किसी सरकारी या गैर सरकारी विभाग में नौकरी पाने या अपने किसी अन्य कार्य की सिद्धि के लिए अधिकारी की अनुकूलता प्राप्त करने की कामना से उस अधिकारी को दिए जाने वाले प्रार्थनापत्र या सर्विस प्राप्त करने के लिए या विपक्षी को हराने के लिए वाद (मुकद्दमा) दायर करने के लिए या विपक्षी द्वारा दायर मुकद्दमा का उत्तर देने के लिए दिए जाने वाले प्रार्थनापत्र क्या उसी मुहूर्त्त में दिए जा सकते हैं, जो मुहूर्त्त आपने अपने पंचांग में ''प्रार्थनापत्र (अर्जी) देने का मुहूर्त्त'' में लिखा है ? क्या उपर्युक्त इन्हीं कार्यों के लिए की जाने वाली यात्रा भी इन्हीं तिथि–वार–नक्षत्र और भद्रा में शुभ होगी ?

(iii) प्रश्नविचार में कभी–कभी पृच्छक के नाम के अक्षरों की संख्या जोड़ने की बात लिखी मिलती है। अक्षरों की संख्या कैसे गिनें ? (क) केवल व्यञ्जनमात्र गिनें, (ख) स्वर और व्यञ्जन दोनों गिनें ? स्वरगणना में क्या ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत का ध्यान रखा जाए ?

आचार्य श्री नरेन्द्रप्रताप सिंह गौर,
शारदानगर,, लखनऊ (उ.प्र.)।

समाधान– (i) संस्कृत में कुंकुम और केसर– दोनों शब्द भिन्न–भिन्न अर्थ रखते हैं। वहां कुङ्कुम शब्द काश्मीर में पैदा होने वाले एक विशेष प्रकार के सुगंधित फूल, जिसे उर्दू में जाफरान और English में Saffron कहा जाता है, के लिए [(''.....अथ **कुंकुमम्। काश्मीरजमग्निशिखम्।।''**)– (अमरकोषः)] तथा केसर शब्द किञ्जल्क (जिसे English में Filament कहा जाता है) के लिए प्रयोग में आता है। हिन्दी में कुंकुम का अर्थ लाल पाउडर, गुलाल, रोली के लिए और केसर शब्द जाफरान के लिए प्रयोग में आने लगा है। संस्कृत में कहीं भी केसर शब्द का जाफरान अर्थ नहीं है। इस शब्द का प्रयोग इस भाषा में फूलों के Filament, शेर और घोड़े के गले के बाल तथा बकुलफूल के लिए आता है। अष्टगन्ध (आठ सुगन्धित पदार्थों का संचय) शब्द भी यह बतलाता है कि– इसमें लिए जाने वाले पदार्थों में जो कुङ्कुम है, वह काश्मीरोत्पन्न सुगन्धित फूल ही हैं, रोली या गुलाल सुगन्धित पाउडर नहीं हैं, अतः उन्हें अष्टगन्ध पदार्थों में समाविष्ट करना उचित नहीं।

(ii) जी हां, सभी प्रकार के प्रार्थनापत्र Submit करने के लिए इस मुहूर्त्त का सामान्यतः प्रयोग किया जा सकता है, लेकिन प्रार्थनापत्र अर्पित करने के उद्देश्य से की जाने वाली यात्रा और प्रार्थानापत्र अर्पित करने का मुहूर्त्त दोनों भिन्न–भिन्न होंगे। लखनऊ से प्रार्थनापत्र देने के लिए की जाने वाली दिल्ली की यात्रा एवम् दिल्ली में दिए जाने वाले प्रार्थनापत्र के काल में भारी भेद है। **स्पष्ट है–** यात्रामुहूर्त्त को प्रार्थनापत्र अर्पित किए जाने वाले काल के मुहूर्त्त से सम्बद्ध नहीं किया जा सकता।

(iii) केरलीय ज्योतिष में व्यञ्जनों एवम् स्वरों को भिन्न–भिन्न अंक दिए गए हैं। पृच्छक के नाम के वर्णों के अंकों का योग केरलीय ज्योतिष से सम्बन्ध रखता है; अतः नाम के प्रत्येक व्यञ्जन एवम् स्वर के अंक अलग–अलग लेकर जोड़ने चाहिएं। स्वर चाहे ह्रस्व हो, दीर्घ या प्लुत–वह एक ही माना जाता है। इसके उच्चारणकाल में केवल न्यूनाधिक्ता रहती है। उदाहरणार्थ– 'सुरेन्द्र' नामक पृच्छक के नाम के कुल वर्ण आठ (स्+उ+र्+ए+न्+द्+र्+अ) हैं।

समस्या–(i) सौरवर्ष का वास्तविक मान सूर्य का क्रान्तिवृत्त पर 360° का

भ्रमणकाल है अथवा वसन्तसम्पात से चलकर, पुनः वसन्त वसन्तसम्पात पर पहुंचने का समय है, जो प्रतिवर्ष अयनविचलन के कारण 360° से 50´´ कम होता है ?

(ii) पंचांग में सौरवर्ष का मान 365 दिन 6 घण्टे 9 मिनट लिखा है। जबकि, विद्यार्थियों की पाठ्यपुस्तक में यह मान 365 दिन 5 घण्टे 48 मिनट 52 सेकण्ड लिखा है। कौन–सा सही है ?

(iii) क्या अयन–विचलन का कालान्तर में ग्रेगोरियन कैलेण्डर पर कोई प्रभाव पड़ेगा, जिससे आजकल की तारीखों में दिखाई देने वाली दिन–रात की समानता एवं वसन्त आदि मौसम में आगे चलकर अन्तर आ जाए ?

(iv) वेलान्तर किसे कहते हैं ?

श्रीधनीराम शर्मा,
गणिताध्यापक, किरमच (कुरुक्षेत्र)(हरि.)।

समाधान–(i) सौरवर्ष दो प्रकार का है– (a) निरयण सौरवर्ष– सूर्य किसी एक नक्षत्र से चलकर क्रान्तिवृत्त का पूरा (360°) भ्रमण करते हुए, पुनः उसी नक्षत्र पर जितने समय में आता है, वह निरयण सौरवर्ष कहलाता है। भारतीय ज्योतिष में मुख्यतः इसी का प्रयोग होता है। (b) सायन सौर वर्ष–वसन्त सम्पात से चलकर सूर्य जितने समय में पुनः वहीं आ जाता है, उसे सायन सौर वर्ष कहा जाता है। निरयण सौर वर्ष का ऋतुओं से सम्बन्ध स्थायी नहीं है, जबकि सायन सौर वर्ष का सम्बन्ध स्थायी है। ऋतुओं के निर्धारण के लिए भारतीय ज्योतिष में भी सायन सौर वर्ष का ही प्रयोग होता है।

(ii) 365 दिन 6 घण्टे 9 मिनट वाला निरयण और 365 दिन 5 घं. 48 मि. 52 से. वाला सायन वर्ष है। अयनचलन के कारण वसन्तसम्पात–बिन्दु प्रतिवर्ष लगभग 50´´ वक्रगति से पश्चिम की ओर खिसक रहा है, अतः सायन सौरवर्ष निरयण सौरवर्ष से लगभग 20 मिनट छोटा है (अगले पृष्ठ पर दिया गया "श्रीजय गुप्ता, कोटा" की समस्या (ii) का समाधान भी देखिए)। 365 दिन 5 घण्टा 48 मिनट और 52 सेकण्ड वाला वर्ष सायन गणनानुसारी है।

(iii) ग्रेगोरियन कैलेण्डर में प्रयुक्त होने वाला सौर वर्ष अयनविचलन को ध्यान में रखते हुए बनाया गया है। अर्थात्– इस कैलेण्डर में सायन वर्ष का ही प्रयोग है। अतः इस कैलेण्डर के मासों, तारीखों में आजकल जो वसन्त आदि ऋतुएं तथा अहोरात्र के स्थानीय मान आदि उपलब्ध हैं, उनमें किसी प्रकार का कोई अन्तर भविष्य में संभव नहीं है।

(iv) वेलान्तर स्पष्ट सूर्य एवम् मध्यम सूर्योदयकाल का अन्तर है। क्योंकि– स्पष्ट स्थानीयकाल के अनुसार एकरूपता से चलने वाली घड़ियों का प्रयोग सम्भव नहीं, अतः उन्हें मध्यम कालानुसार चलाया जाता है। वेलान्तरसंस्कार स्पष्ट एवम् मध्यमकाल का ही अन्तर है। इसे English में Equation of time कहा जाता है।

समस्या–(i) जिस दिन पृथ्वी पर अग्निवास न हो उस दिन अत्यावश्यकता में हवन करना पड़ जाए, तो इसका कोई उपाय है ?

(ii) "न मंगली केन्द्रगते च राहौ"– यह वचन कहां तक प्रामाणिक है ?

पारस शास्त्री, अम्बाला कैंट, (हरि.)।

समाधान–(i) हवन के लिए अग्निवास का विचार केवल शान्तिक एवम् पौष्टिक कर्म नैमित्तक होम में ही किया जाता है। इन कर्मों के लिए किसी प्रकार की आपात्‌स्थिति नहीं होती। यदि ऐसी स्थिति कभी आ पड़े तब केवल ग्रहादि पूजन उस दिन किया जाए, एतन्निमित्त हवन अग्निवास की अनुकूलता देखकर किसी दूसरे दिन करें।

(ii) मंगलीक दोष के परिहार में उद्धृत किया जाने वाला यह वाक्य प्रामाणिक ज्योतिषग्रन्थों में उपलब्ध नहीं है। किञ्च– केन्द्र मे राहु की स्थिति होने से मंगलीकदोष के निवारण की बात में कोई तर्क या उपपत्ति भी नहीं है।

समस्या–(i) नाड़ीदोष–परिहार के बारे में एक यह श्लोक मैने कहीं पढ़ा है–

" नाड़ीविवेधे यदि स्याद्विवाहः करोति वैधव्ययुतां च कन्याम्।
स एव माहेन्द्र–दिनादियुक्तो राशीशमैत्री–सहितो न दोषः।।"

यहां माहेन्द्र– दिनादि कूटों की चर्चा है। क्या अष्टकूटों के अतिरिक्त और भी कोई कूट हैं ? – कृपया बतलाएं।

(ii) हम जन्मदिन सौरमान या प्रविष्टा के अनुसार मनाते हैं, कुछ लोग तिथि (चान्द्रमास) के अनुसार। मैंने गीताप्रैस गोरखपुर की एक पुस्तक में पढ़ा है–

"तच्च वर्षपर्यन्तं प्रतिमासं जन्मतिथौ कार्यम्।
वर्षोत्तरं प्रत्यब्दं जन्मतिथौ कार्यम्।।"

यहां पर मैं भ्रान्त हूँ कि– जन्मदिन सौरमान के अनुसार मनाया जाए या तिथि के अनुसार ?

पं. रमेश कुमार शर्मा,
ग्राम कईल, P.O. सतलाई (शिमला)।

समाधान– (i) वशिष्ठ ने अपनी संहिता (वशिष्ठ–संहिता) में माहेन्द्र, भूत, लिंग, दिन आदि 18 कूटों का निर्देश किया है। लेकिन परवर्ती मुहूर्त्तशास्त्रियों ने केवल वर्ण, वश्यादि आठ कूटों का ही विचार करने के लिए लिखा है। मिलान में अब सभी लोग इन आठ कूटों का ही विचार करते हैं। वशिष्ठ के 18 कूटों का विचार आजकल कहीं भी नहीं किया जाता। 8 कूटों को ही मान्यता देने वाले मुहूर्त्तग्रन्थों के अनुसार नाड़ीदोष का परिहार केवल इन चार स्थितियों में ही माना गया है–

(1) दोनों (वर–वधू) के नक्षत्र एक और राशियां भिन्न–भिन्न हों।

(2) दोनों की राशि एक और नक्षत्र भिन्न–भिन्न हों।

(3) दोनों का नक्षत्र एक होने पर नक्षत्रचरण भिन्न–भिन्न हों।

(4) दोनों के नक्षत्रचरणों में वेध न हो।

(ii) आयु के गताब्दों का निर्णय सौरमान से ही किया जाता है, चान्द्रमान से नहीं। आपका जन्मदिन उस दिन माना जाएगा, जिस दिन सूर्य के राश्यादि आपके जन्मकालिक सूर्य--राश्यादि के बिल्कुल समान हों। ध्यान रहे– मृत्युदिन चान्द्रमान से मनाया जाता है। जिस चान्द्रमास–पक्ष–तिथि में मृत्यु हुई हो, उसी मास–पक्ष और तिथि में आब्दिक श्राद्ध किया जाता है। [illegible] गीताप्रैस वालों की पुस्तक में उद्धृत संस्कृतवाक्य श्राद्ध से सम्बद्ध है, जन्मदिन से नहीं।

समस्या– सूर्य–चन्द्रग्रहण के समय कई जगह पुजारी लोग मन्दिरों को बन्द करने लगे हैं। उनका कहना है कि– ग्रहण–सूतक एवम् ग्रहणकाल में प्रतिष्ठित मूर्ति का स्पर्श नहीं करना चाहिए।

डॉ. पी. आर. शर्मा,
7, I/249, फरीदाबाद (हरि.)।

समाधान– यह ठीक है, ग्रहण के समय मूर्ति का स्पर्श नहीं करना चाहिए। लेकिन, स्नानानन्तर मूर्ति के सम्मुख बैठकर पूजा करने का तो बहुत बड़ा माहात्म्य शास्त्रों में लिखा है। उस समय मन्दिर का दरवाजा बन्द कर श्रद्धालु भक्तजनों को मूर्तिदर्शन से वंचित करना शास्त्रविरुद्ध है।

समस्या–(i) ग्रहों के भोगांश व स्थानीय अक्षांशों तथा रेखांश भूकेन्द्रीय लिए जाएं या भूपृष्ठीय ?

(ii) भारतीय ज्योतिष में जब निरयण ग्रह व लग्न का प्रयोग होता है तो क्या कारण है– पंचांगों में उतरायण–दक्षिणायन एवम् वसन्तादि ऋतुओं के निर्णय के लिए सायन सूर्य को प्रयोग में लाया जाता है ?

(iii) पलभाज्ञान के लिए 12 अंगुल के ही शंकु का प्रयोग क्यों लिखा है ?

(iv) चरखण्डज्ञान के लिए स्थानीय पलभा को 10, 8 व 10/3 से ही क्यों गुणा किया जाता है ?

(v) चरपल या चरमिनट जानने का ऐसा प्रकार बतलाइए, जिसमें केल्कुलेटर (Calculator) या सारणी का प्रयोग अपेक्षित नहीं ?

श्री जयराज गुप्ता,
आदर्श कॉलोनी, कोटा (राजस्थान)।

समाधान–(i) युति एवम् ग्रहण को छोड़कर सर्वत्र ग्रहों के भूकेन्द्रिक भोगांशों का ही प्रयोग होता है। सभी ग्रह भोगांश–साधक सूत्रों से ग्रहों के भूकेन्द्रिक भोगांश ही प्राप्त होते हैं। पंचांगों में दिए जाने वाले भोगांश भी भूकेन्द्रिक ही होते हैं। लग्नादि स्पष्ट करने के लिए भूकेन्द्रिक अक्षांश का प्रयोग किया जाता है। रेखांश हमेशा भूपृष्ठीय ही होते हैं।

(ii) निरयण ग्रह एवम् लग्नों का सम्बन्ध अश्विनी, मेषादि नक्षत्रपुञ्जों से ही है। निरयण ग्रह एवम् लग्न से हमें पता चलता है कि– ग्रह और लग्न कौन–से तारामण्डल में है। निरयणगणना का ऋतु से कोई सम्बन्ध नहीं है। ऋतु का निर्णय विषुवद्वृत्त से उत्तर या दक्षिण में सूर्य के अन्तर पर निर्भर करता है। इस अन्तर का ज्ञान सूर्य के सायनभोगांशों से ही होता है। उत्तरायण एवम् दक्षिणायन–बिन्दुओं पर स्थित सायन सूर्य विषुवद्वृत्त से क्रमशः उत्तर एवम् दक्षिण की ओर परम दूरी पर होता है। इस प्रकार ये बिन्दु ऋतु के निर्णायक पदार्थ हैं।

(iii) शंकु का मान यथेच्छ (कुछ भी) रखा जा सकता है, इसे अंगुल इकाई, के अलावा अन्य किसी भी मापक इकाई (इंच, सेंटीमीटर आदि) के अनुसार भी बनाया जा सकता है। प्राचीन ज्योतिषियों ने इसका 12 अंगुल का मान, एक प्रादेश (बालिश्त) को दृष्टि में रखकर किया है।

(iv) 10, 8 व 10/3--ये चरखण्ड मेष, वृष, मिथुन के एक अंगुल–पलभा में निश्चित किए गए हैं। इन्हें एक अंगुल से न्यूनाधिक अन्य स्थानीय पलभा के अनुसार त्रैराशिक द्वारा अभीष्ट स्थानीय बनाया जाता है। **जैसे–** एकांगुल–पलभा में 10, 8, व 10/3 चरखण्ड मिलते हैं, तो अभीष्ट अंगुलपलभा में कितने मिलेंगे ? इस प्रकार इन चरखण्डों को अभीष्ट अंगुल की पलभा से गुणा कर, एक से भाग दिया जाता है। इस प्रकार अभीष्ट देश की पलभा के अनुसार राशियों के चरखण्ड प्राप्त हो जाते हैं।

(v) इसके लिए ग्रहलाघव के रवि–चन्द्राधिकार में चर–साधन प्रकार देखें।

समस्या– श्रीध्यानपुर धाम के आद्याचार्य योगीश्वर श्री बाबा लालदयाल जी ने योगबल से अपनी आयु तीन शताब्दियों तक बढ़ा ली थी–ऐसा माना जाता है। इनकी जन्मतिथि माघशुक्ल द्वितीया, विक्रम संवत् 1412 एवम् निर्वाणतिथि कार्तिक शुक्ल दशमी, विक्रमी संवत् 1712 मानी जाती है। इनकी यह जन्मकुण्डली इनके एक पीठस्थान रामपुर–हलेहर, दातारपुर (होशियारपुर) पंजाब के महंत श्रीरामप्रकाश दास जी ने अपने यहां से प्रकाशित एक पुस्तक 'शिवसंकल्प' में दी है। कृपया इस कुण्डली की प्रामाणिकता की परीक्षा करें।

जन्मकुण्डली योगेश्वर श्री बाबा लालदयाल जी

5
3
6 रा.
4 गु.
2 चं.
7 श.
1 मं.
8
सू. 10 बु.
12 शु.के.
9
11

समाधान– इस कुण्डली में चन्द्रमा, सूर्य से पांचवीं राशि में स्थित बतलाया गया

है, जो कि शुक्लपक्ष की द्वितीया के समय सर्वथा सम्भव नहीं है। शुक्ल द्वितीया में चन्दमा सूर्य से अधिकाधिक एक राशि आगे हो सकता है।

किञ्च– इस कुण्डली में चार ग्रह उच्च में स्थित बतलाए गए हैं। हमारे अनेक अवतारों एवम् महापुरुषों की इस प्रकार की कृत्रिम जन्मकुण्डलियां प्रचलित हैं। इन सबकी गणितीय परीक्षा मैने अपनी अप्रकाशित पुस्तक **"हमारे अवतार एवम् महापुरुषों की कृत्रिम जन्मकुण्डलियां"** में की है। परीक्षण में लगभग ये सभी कुण्डलियां अप्रामाणिक सिद्ध हुई हैं। इस पुस्तक में बाबा लालदयाल जी की इस कुण्डली की भी मैने समीक्षा की है, जिससे ज्ञात होता है कि–इसमें प्रदर्शित चार ग्रहों की उच्च में स्थिति सर्वथा कृत्रिम है।

इस प्रकार की सुदीर्घ आयु हमारे फलितग्रन्थों में निर्दिष्ट किसी भी ग्रहस्थिति से सिद्ध नहीं होती है। **'बृहज्जातक'** के आयुर्दायाध्याय में अमितायु देने वाली, जिस ग्रहस्थिति (**"गुरु–शशिसहिते कुलीरलग्ने.........।"**) का निर्देश है, वैसी ग्रहस्थिति में सामान्य एवम् अल्पायु वाले जातक प्रचुरता से पाए जाते हैं। हां, वहां 'वराहमिहिर' ने अवश्य लिखा है कि– धर्मनिष्ठ जातक की आयु सुदीर्घ होती है।

समस्या–(i) वर–कन्या के जन्मलग्न एवम् जन्मराशि से आठवें लग्न में विवाह वर्जित है; किन्तु वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर और मीन अष्टम लग्न हो तो उसे वर्जित नहीं माना गया। जन्मलग्न एवम् चन्द्रराशि से आठवें लग्न का स्वामी यदि विवाहलग्न के केन्द्र में शुभदृष्ट हो तो, वहां भी आठवें लग्न का दोष नहीं माना जाता। यहां पर मेरा यह प्रश्न है कि– जन्मराशि एवम् चन्द्रराशि से आठवें लग्न के उक्त परिहारों में से यदि कोई भी परिहार न मिले तो क्या सप्तमरहित केन्द्र में बुध, गुरु, शुक्र के स्थित होने पर उस लग्न को स्वीकार किया जा सकता है ?

(ii) मिथुन, कन्या, तुला, धनु और मीन के नवांश ही विवाहलग्न में विहित हैं। क्या इन नवांशों के अतिरिक्त किसी वर्गोतमनवांश में विवाह मान्य होगा ?

(iii) विवाहलग्न का स्वामी छठे, आठवें वर्जित है। क्या छठे, आठवें स्थित लग्नेश पर गुरु की पूर्ण दृष्टि होने पर विवाह किया जा सकता है ? किञ्च– उस लग्न में सप्तमहीन केन्द्र या त्रिकोण में गुरु, शुक्र या बुध की स्थिति में भी विवाह करना शुभ रहेगा ?

(iv) क्या विवाहाङ्गकृत्यों (सर्वारम्भ, तैलादि लापन आदि) के लिए परिहार रहित आठवां (जन्मलग्न या चन्द्रराशि से आठवां) लग्न ले सकते हैं ?

(v) क्या जन्मलग्न व चंद्रराशि से आठवें लग्न में अभिजित् के समय विवाह हो सकता है।

पं. जगदीश चन्द्र शर्मा,
ग्रा. म्यावण, P.O. शालाघाट, सोलन।

समाधान–(i) जन्मलग्न एवम् जन्मराशि से अष्टम लग्न में विवाह के समय सप्तमहीन केन्द्र एवम् त्रिकोण में गुरु, शुक्र या बुध की स्थिति में विवाह हो सकता है। क्योंकि, गुरु आदि की यह स्थिति सभी प्रकार के दोषों को दूर करने वाली मानी गई है–

"काव्यो गुरुर्वा सौम्यो वा यदा केन्द्र–त्रिकोणगः।
नाशं यान्त्यखिला दोषाः पापानीव हरौ स्मृते।।"

किञ्च– जन्म एवं चन्द्रराशि से अष्टम लग्न का दोष उस स्थिति में भी समाप्त हो जाता है, जब अष्टमेश केन्द्रस्थ और शुभदृष्ट हो। **गुरु का वाक्य है–**

"लग्नादष्टमराशीशः केन्द्रगः शुभवीक्षितः।
यद्यष्टमगतस्योक्त–दोषमाशु व्यपोहति।।"

(ii) वर्गोत्तम नवांश को नवांशों में सर्वोत्तम माना गया है। अन्तिम नवांश को शास्त्रकार यद्यपि सर्वथा वर्जित बतलाते हैं, लेकिन उनका यह भी कहना है कि– यदि अन्तिम नवांश वर्गोत्तम हो तो वह भी श्रेष्ठ है– **"अन्त्यांशका अपि श्रेष्ठाः यदि वर्गोत्तमा ह्वयाः।"** किञ्च– 'मुहूर्तचिन्तामणि' का यह पद्य स्पष्ट करता है कि– केन्द्र (सप्तमहीन केन्द्र) या त्रिकोण में गुरु, एकादश में सूर्य, लग्न या चन्द्र वर्गोत्तमनवांश में हों तो विवाहलग्नकालीन सभी दोष नष्ट हो जाते हैं। लाभस्थ चन्द्र से तो दुर्मुहूर्त्त तथा अग्राह्य नवांश का भी दोष नहीं रहता–

"केंद्रे–कोणे जीव आये रवौ वा लग्ने चन्द्रे वाऽपि वर्गोत्तमे वा।
सर्वे दोषाः नाशमायान्ति चन्द्रे लाभे तद्वद्दुर्मुहूर्त्तांशदोषाः।।"

(iii) विवाहलग्न से छठे, आठवें स्थित लग्नेश सर्वथा वर्जित माना गया है और इस स्थिति में पंचांगकार विवाहलग्न को अग्राह्य मानकर उस लग्न में विवाहमुहूर्त्त नहीं लगाते। लेकिन छठे, आठवें स्थित लग्नेश पर गुरु की पूर्ण दृष्टि होने से दोष का कुप्रभाव तो अवश्य कम होगा– यह तर्कसंगत है। पुनरपि, दैवज्ञपरम्परा इसको स्वीकार नहीं करती है।

(iv) विवाहाङ्गकृत्यों में वर–वधु के मात्र चन्द्रबल का विचार ही पर्याप्त है। चन्द्रबलशुद्धि के काल में, जहां तक हो सके शुभ लग्न में इन कार्यों का प्रारम्भ करना उचित है।

(v) 'अभिजित् मुहूर्त' में विवाहादि शुभकृत्य अत्यन्त संकोच–स्थिति (अत्यावश्यकता) में ही करने चाहिएं। ऐसी संकोच–स्थिति में 'अभिजित् मुहूर्त' में शुभकृत्य करने के लिए लग्न आदि का विचार अर्थहीन है।

प्रसूति-लग्न विचार

मेष- जन्म समय मेष लग्न हो, तो माता का पूर्व या पश्चिम में सिर,उपसूतिका दो या तीन, प्रसव में माता को कष्ट अधिक, पाद से प्रसव, भूमि में घर के पूर्व भाग में जन्म हुआ, बालक जन्मोपरान्त दीर्घ शब्द से रोया। माता ने लाल एवं मीठा भोजन किया था। वस्त्र लाल मलिन थे। ४।११।१६।४४।५८ वर्षों में बालक कष्ट पावे, इन वर्षों के प्रारम्भ में तुलादान, गोदान, मृत्युञ्जय जप कराना श्रेष्ठ है। इन वर्षों से बचे, तो १०० वर्ष जीवे।

वृष-माता का दक्षिण में सिर, उपसूतिका ३ या ४ जन्मोपरान्त दो और आईं, जन्मते ही बालक दीर्घ शब्द से रोया,गौरवर्ण, अधोमुख, पाद से प्रसव, घर से पूर्व में सूतिका स्थान, श्वेत स्वच्छ वस्त्र, जन्म से पहले माता ने शुष्क शाकादि भोजन किया। १।२८।३३।४४।६१ वर्षों में बालक कष्ट पावे। इन वर्षों के प्रारम्भ में महामृत्युञ्जय का जाप और ब्राह्मणभोजन करवाना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो ९० वर्ष जीवे।

मिथुन-माता का सिर पश्चिम में, उपसूतिका ३या ५ ,माता का हरा या जीर्ण वस्त्र, शिर से प्रसव,मुख ऊपर को , जन्मते ही दीर्घ शब्द किया, नाल छूटा था , घर के आग्नेय भाग में जन्म, माता ने पहले लवणयुक्त विचित्राल्प भोजन किया , दूध कम उतरे । ४।१०।१४।३८।५८ वर्षो में बालक कष्ट पावे, इन वर्षों के आरम्भ में शिवार्चन और मृत्युञ्जय का जप करवायें । यदि इन वर्षो से बचे तो ८६ वर्ष जीवे ।

कर्क- माता का उत्तर में सिर, उपसूतिका ५ या ४, बालक जन्मते ही छींका , नाल छुटा, भूमि पर जन्म , घर के दक्षिण भाग में प्रसवस्थान , माता के वस्त्र श्वेत व लाल , माता ने प्रसव के पहले मधुर व शीतल भोजन किया था, दीपक उठाया गया , बालक के वामांग में लहसन आदि का चिह्न , देर से रोया, ५।२५।४०।५८।६२ इन वर्षों में बालक कष्ट पावे । इनसे बचे तो १०० वर्ष जीवे । कष्टकारक वर्षो के प्रवेश के समय तुलादान ,छायादान और मृतसञ्जीवनी मन्त्र का जाप करवाना कल्याणप्रद है ।

सिंह- माता का पश्चिम या पूर्व में सिर , मलिन या लाल वस्त्र, शुष्क कसैला या खट्टा भोजन किया था, जन्म समय स्त्री ३, पीछे से १ आई, दीपक स्थिर रहा, बालक जन्मते ही तुरन्त रोया , घर के दक्षिण भाग में प्रसवस्थान , ५।१३।२८।३६।४८ इन वर्षों में बालक कष्ट पावे । इनसे बचे तो ६७वर्ष जीवे । कष्टकारक वर्षो के प्रवेश होते ही श्री सूर्यनारायण के मन्त्र का जाप या आदित्यहृदय का पाठ और मीठा भोजन करावे तो कल्याण रहेगा ।

कन्या- माता का दक्षिण में सिर , रक्त जीर्ण वस्त्र, मिष्टान्न बासी-चीज या बड़े आदि का भोजन,जन्म समय स्त्री ३या ५, दीपक हाथ में उठाया गया ,बालक ने जन्मते ही अर्द्ध शब्द किया,घर के नैर्ऋत्य कोण में सूतिका-स्थान , ४।१६।२३।३६।५५ वर्ष कष्टकारक है । यदि इन वर्षो से बचे तो १०० वर्ष जीवे ।

तुला -माता का सिर पश्चिम या पूर्व को , श्वेत जीर्ण वस्त्र , भुना हुआ अन्न , ठंडा जल , या कोइ मामूली चीज क्रोधपूर्वक खाई थी। जन्म समय स्त्री ३या ६, वहां १कन्या भी हो , दीपक उठाया गया,बालक जन्म समय कुछ ठहर कर अर्धशब्द करके रोया , घर के पश्चिम भाग में सूतिका स्थान , ८।१५।३१।३५।६२।६४ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में नवग्रह का दान , हवन, जप करवाना श्रेष्ठ है । यदि इन वर्षों से बचे तो ७५ वर्ष जीवे ।

वृश्चिक-माता का दक्षिण या उत्तर में सिर , रक्त या दग्ध वस्त्र , कष्ट अधिक,अमधुर मामूली क्रोधपूर्वक भोजन , जन्म समय स्त्री २ या ३, पीछे से भी दो आई , दीपक स्वस्थान में टिका रहा, बालक जन्मोत्तर देरी से रोया। छींक भी किया, दीर्घकेश, घर के पश्चिम भाग में प्रसवस्थान, ११।२८।३८।५२।६२ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में मृत्युञ्जय जप और तुलादान कराना श्रेष्ठ है । यदि इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीवे ।

धनु-माता का सिर पश्चिम या पूर्व को , पीत या रक्त वस्त्र, पक्कान्नादि भोजन, जन्म समय स्त्री १या ५,दीपक हाथ में उठाया गया, बालक जन्मोत्तर तत्काल दीर्घ शब्द से रोया और छींक भी किया, घर के वायव्य कोण में सूतिका स्थान २,१०,१८,३१,३८,४२,६७, इन वर्षो के आरम्भ में शिवार्चन, महामृत्युञ्जय जप , ब्राह्मण भोजन श्रेष्ठ है , यदि इन वर्षो से बचे तो ८१ वर्ष जीवे।

मकर-माता का सिर दक्षिण में ऊपर काला वा जीर्ण कमजोर वस्त्र, गुड़, दुग्ध, कसैला भोजन, ठण्डा जलपान किया था। जन्म समय स्त्रियाँ २, पीछे से एक आई । दीपक हाथ में उठाया गया। बालक जन्मोत्तर अर्धशब्द से रोया और छींक भी किया, घर के उत्तर भाग में पुराना सूतिकास्थान, ५।१३।२७।३६।५७।६३।८७ इन कष्ट कारक वर्षो से बचे, तो ९५ वर्ष जीवे।

कुम्भ-माता का सिर पश्चिम को, जीर्ण, धूम्रवर्ण वा कुरूप वस्त्र, मधुर शीत शाकादि कुभोजन, कष्ट अधिक, जन्म समय पास स्त्रियां ४, दो स्त्री पीछे से आई। उनमें एक स्त्री गर्भिणी भी हो। दीपक स्वस्थान में टिका रहा, बालक जन्मोत्तर अर्द्ध शब्द से रोया, वामांग में कोई चिह्न भी हो, घर के उत्तर भाग में सूतिका-गृह, २।२८।३३।४८।६४ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में तुलादान, गोदान, मृत्युञ्जय जप हितकारक है, इन वर्षो से बचे तो ९० वर्ष जीवे।

मीन-माता को सिर उत्तर में, पीत या मलीन वस्त्र, विचित्र अल्प भोजन, जन्म समय स्त्री २ या ५, दीपक हाथ में उठाया व जलाया गया था, बालक जन्मोत्तर देरी से रोया, घर के ईशान में सूतिका-स्थान, १।८।१३।३६।४८ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में ग्रह-शान्ति हवन मृतसञ्जीवनी मन्त्र का जप कराना श्रेष्ठ है, यदि इन वर्षो से बचे तो ८३ वर्ष जीवे। स्मरण रहे, अधिकांश जिस लग्न के लक्षण मिले-वहीं बालक का जन्मलग्न जानना, क्योंकि यह साधारण लग्न के फल बलाबल के कारण सभी नहीं मिल सकते।

पितृपरोक्ष ज्ञान- (१) जन्म लग्न को चन्द्रमा न देखे,(२) बुध-शुक्र के मध्य में चन्द्रमा हो,(३)लग्न में शनैश्चर चन्द्रमा से अदृष्ट हो,(४)भौम सप्तम, चन्द्रमा लग्न को न देखता हो -इन चारों योगों में से एक भी योग में उत्पन्न हुए बालक का पिता के परोक्ष में जन्म कहना।

जन्म कुण्डली में दिशा ज्ञान- प्रथम भाव पूर्व, द्वितीय,तृतीय ईशान। चतुर्थ-उत्तर। पञ्चम-षष्ठ-वायव्य। सप्तम-पश्चिम। अष्टम, नवम-नैर्ऋत्य। दशम-दक्षिण। एकादश तथा द्वादश भाव को आग्नेय समझना।

प्रसूति स्थान से पाकशालादि विचार

जन्म कुण्डली में सूर्य मंगल जिस दिशा में हो, वहाँ अग्नि स्थान(पाकगृह)जानना, इसी तरह चन्द्रमा से जलस्थान, बुध से भण्डार, गुरु से धनस्थान, शुक्र से देवस्थान और शनि से अशुभ मैला स्थान जानना चाहिए। दोहा- लग्ननाथ जो केन्द्र में तीन दिशा को द्वार। वा लग्न दिशि जानिए कहत बुद्धि आगार॥ केन्द्र(१।४।७।१०)स्थान में एक से अधिक ग्रह हो तो उनमें जो बली(स्वराशिमित्रोच्च व मूल त्रिकोण राशि का)केन्द्र स्थान में स्वमित्र शुभ के नवांश में स्थित ग्रह हो उसकी दिशा में वा-लग्न पति की दिशा में सूतिकागृह का द्वार होता है । **ग्रहों की दिशा-सूर्य की पूर्व, चन्द्र की वायव्य, भौम की दक्षिण, बुध की उत्तर, गुरु की ईशान, शुक्र की आग्नेय, शनैश्चर की पश्चिम, राहु केतु की नैर्ऋत्य।**

चन्द्रात्तैल-ज्ञानम्-चन्द्रमा से दीप के तैल को ज्ञान होता है, जैसे रात्रि का जन्म है और जन्मकाल पर चन्द्रमा के कम अंश व्यतीत हुए हैं, तो दीपक में तैल ज्यादा कहना। यदि चन्द्रमा आधी राशि भोग कर चुका हो, तो दीपक में आधा तैल कहना। यदि चन्द्रमा शीघ्र ही दूसरी राशि पर बदलने वाला हो तो बहुत ही कम तैल कहना। सो० तनुस्थान शशि जाई, वा शशि षष्ठे भवन में, शिशु जन्म तब आई, तब कही दीपक तैल नहीं। सित-शनि दशमें धाम, पंचम तनुपै चन्द्रमा, शिशु जन्म में तव वाम, दीपक तैल सौं युक्त कहि।

लग्नादीपवर्ति-ज्ञानम्-जन्म लग्न के कम अंश हो तो बड़ी बत्ती कहना, अधिक अंश हो तो छोटी कहें।

चन्द्रलग्नांतर्गतैर्ग्रहैः स्युरुपसूतिकाः:- यदि लग्न की निर्बलता के कारण लग्न फलानुसार उपसूतिका का पूरा पता न लगे तो जन्म काल में लग्न से चन्द्र पर्यन्त जितने ग्रह हों उतनी ही उपसूतिका कहना। परन्तु जब कोई ग्रह चन्द्रमा के साथ हो तो उसके अंश देखें। यदि उसके अंश चन्द्रमा से कम हो तो उसकी गणना करे अन्यथा उसे नहीं जोड़ें। इस प्रकार जो ग्रह लग्न में हो और उसके अंश लग्न से अधिक हों तब ही उसकी संख्या जोड़े अन्यथा नहीं जोड़ें। लग्नचन्द्रांतर्गत कोई ग्रह वक्र या उच्च का हो तो तीन गुणा करना और स्वराशि, स्वनवमांश, स्वद्रेष्काण में हो तो द्विगुण करना, इसी प्रकार जितने ग्रह नीचे राशि के अस्त होवें उनका आधा करके उपसूतिकाओं में जोड़ने से ठीक उपसूतिका स्त्रियों की संख्या का ज्ञान होगा। इसमें भी विशेष यह ध्यान में रखने योग्य है, कि वह लग्न चन्द्रांतर्गत ग्रह लग्न के भोगांश से सप्तम भाव पर्यन्त होवे तो सूतिकागृह से बाहर समीप में, और सप्तम भाव से लग्न के भुक्तांश पर्यन्त हों तो सूतिका के समीप में अन्दर जानना। उन ग्रहों में जो शुभ ग्रह वहाँ, धर्मशील सौभाग्यवती स्त्रियां कहना, अशुभ ग्रहों से विधवा दुश्चरित्रा कहें।

शय्या-शिर व पाद विचार

"लग्नदिशि शय्या शिरस्त्रिषट्क्रान्त्येपु पादाः।" लग्न की दिशा की तरफ पलंग का सिराहना कहना, अर्थात् १।२ लग्न में पूर्व, ३ में अग्निकोण, ४।५ में दक्षिण,६में नैर्ऋत्य,७।८ में पश्चिम, ९ में वायव्यकोण,१०।११ में उत्तर और १२ लग्न में ईशान कोण की तरफ जानना। तीसरा, छठा, नौवां, बारहवां, स्थान पाये जानना। इन स्थानों में से जिन स्थानों में पाप ग्रह हों वहाँ सूतिका के पलंग का पावा फटा टूटा समझना।

दो०-मीन-मिथुन-सिंह-तुला,मेष होय तत्काल। अन्तरिक्ष भयो बालक,शेषे भूमि विशाल।।

अथ चिह्नज्ञानम्-दोहा-षट्त्रिकोण वा लग्न रवि बुध भाषे धरि ध्यान। वामें कुछ लहसन अहै गर्गवचन परमाण॥ भानु तथा सौरी तनधन कुंज कण्टक चन्द। बालक के षट् अंगुली भाषत कविकुलवृन्द। तनु स्थान में शुक्र हो अष्टम जावे राह। वाम कर्ण वा मस्तके अवश चिह्न दरशाह॥ सुहृद भाव में कवि तव भौम वा सौरी लग्न। वाम पाद के चिह्न को भाषत ज्योतिषमग्न॥ नौमें पांचे भृगु बसे तनु वा चौथे मन्द। मृत्यु जावे बुध गुरु उदरे चिह्न भणंद।"

प्रसवकष्ट दूर--प्रसव काल से पहले शुक्लपक्ष के चतुदर्शी को प्रातः सूर्योदय से पहले सहदेवी या अपामार्ग (पुठकंडा) की जड़ें लाकर घृतयुक्त गुग्गुल की धूनी देकर कटि में बांधे और साथ ही "ओंमुक्ताः आशा विपाशाश्च मुक्ताः सूर्येण रश्मयः। मुक्ताः सर्वभयाद् गर्भमेहि माचिर-माचिर-स्वाहा॥" इस मंत्र से सात बार शुद्ध जल अभिमन्त्रित करके गर्भिणी स्त्री को पिलावे तो सुख से ही शीघ्र प्रसव होगा। अगर तीस का यंत्र भी अनार की कलम से कांसे की थाली में लिख धोकर पिला देवें तो गर्भिणी को कोई भय न होवे, बच्चा बिना कष्ट पैदा होवे। स्मरण रहे कि पहले उपरोक्त मंत्र तथा तन्त्र ग्रहण के समय या दीपमाला की रात्रि को मन्त्र का जाप करके तथा यन्त्र को लिखकर सिद्ध कर लेवें, तब कष्ट को मिटाता है।

बालक के लिए अरिष्ट

दो०:- धूनाष्टमतनु पाप खग, बरहै शशि जो खीन। कण्टक शुभ खगना बसै, वेगि ताहि यमलीन। बसै चन्द्रा द्वादसे अष्ट भवन दो पाप। एक मास में शिशु मरे मातु पिता संताप॥ लग्नाष्टम शशि राहुयुत जन्म समय जो पाप। एक मास में शिशु मरे मातु पिता संताप। लग्नाष्टम शशि राहुयुत जन्म समय जो पाव। बालक दशवासर जिये कहत बुद्धि गुण भाव॥"

अथ काणयोग--तनु धन व्ययपतियुक्त भृगु आई बसे त्रिकधाम। वा शशि धन कवि पाप युत, ताहि नेत्र बेकाम। सार्कशुक्र तनुनाथयुक्त भवन बसै त्रिक जाय। जन्म अन्ध यह योग है भाषत बुध समुदाय॥ तात मात भ्राता तनय मातुल त्रियधर नाथ॥ चन्द्र भौम जो द्वादशे वाम नैन की हान॥ भानु राहु दहनो नयन, बुधजन कहत बखान॥"

मूकयोग-"पञ्चमेश गुरु युक्त त्रिक मूक बाल तब होय। जौन भौमपतियुक्त गुरु त्रिकहि मूक कहि सोय॥ शुक्र त्रिके गुरु सिंह अज दशम भानु कुज वास। मूक होय संशय नहीं बुधजन करत प्रकाश।"

दुःखदयोग -रिपु मृत्यु द्वादश गेह में पाप युक्त लग्नेश । जन्म समय जाके परे ताको अंग कलेश ॥ पाप युक्त तनु भवन में रिपु मृत्युप के ईश । यथा जोग जाके परे तनु मुख विश्वाबीस॥ पापग्रहयुत लग्न पति परै लग्न में आय । वीर्यहीन नर होय तो अधिक व्याधि रुजताय॥

बन्धनयोग- क्रूर रहै धन नवम व्यय, और पञ्चम आगार। सो नर सूर कसूर करि निवसै कारागार॥

सर्पवेष्टितयोग- यदि अष्टमेश लग्न में राहु सहित हो तो बालक सर्पवेष्टित अर्थात् सर्प जैसे नाल से वेष्टित होता है ।

यमल जन्मयोग- चतुष्पद राशि (मेष, वृष, सिंह,मकर का पूर्वार्द्ध और धन के उत्तरार्द्ध)का सूर्य होवे , शेष ग्रह बलवान् होकर द्विस्वभावराशि के लग्न में स्थित हों तो यमल अर्थात् दो

बच्चों का इकट्ठा जन्म कहना। अथवा आधान लग्न (गर्भ वाले दिन का लग्न) का स्वामी लग्न में हो तो यमल का जन्म होता है।

माता बच्चे को त्याग दे-शनि मंगल से ५।७।९ स्थान में चन्द्रमा हो तो माता बालक को त्याग दे, यदि गुरु देखता हो तो त्याग देने पर भी दीर्घायु हो।

मृत्यु-समय-विचार-- जिन अरिष्ट योगों में मरण काल नहीं कहा गया, उन अरिष्ट योगकारक ग्रहों में जो ग्रह बली हो, वह जन्मकाल में जिस राशि में स्थित हो उस राशि में जब चन्द्रमा आता है तब मृत्यु कहना। अथवा-जन्मकाल में जिस राशि में चन्द्रमा स्थित हो जब फिर उसी राशि में चन्द्रमा आता है, तब मरण कहना। अथवा चन्द्रमा जब लग्न राशि में आता है, तब मरण कहना। अथवा वर्ष के भीतर जब जिस योगयुक्त स्थान में जाकर चन्द्रमा बली हो और पापग्रहों द्वारा देखा जाता हो, तब मरण कहना चाहिए। किन्तु जब तक आयु का विचार न हो सके तब तक अन्य विचार करना निरर्थक है, इसलिए आयु का प्रथम विचार करे, फिर मृत्यु कहें।

सुखदयोगाः-अंगधीश निज लग्न में बुध गुरु कवि के संग। या केन्द्र गृह दो परे तो जानो सुख संग॥ जन्म लग्न में उच्च ग्रह जो काहु के होय। मित्र दृष्टि ता पर परे सर्वसुखी नर होय॥

क्लीब (नपुंसक) योगाः-- दशम भवन भृगु मन्द दोउ क्लीब योग तब जान। शुक्र भवन से रिष्फ षट मन्द बसे क्लि भानु॥

कुष्ठयोगाः--लग्नप बुध कुज शशि युते राहुयुक्त या केतु। श्वेतकुष्ठ को योग यह वरणत गुणी सचेतु॥ भौम भास्कर मन्दयुक्त रक्तकृष्ण कह कुष्ठ। लग्नाधिप रविसाथ त्रिक तापगण्ड अति रुष्ट॥ जलजगंडयुत चन्द जो ग्रन्थिगंड कुज साथ। पित्त रोग तब जानियो बुध त्रिकयुत तनु नाथ॥ आमरोग गुरुयक्त त्रिक क्षयी रोग भगसून। यमतम शिखि वा युक्त त्रिक, दिन प्रति रुजि कहि दून॥

केमद्रुमः-आगे पीछे चन्द्र के जो ना परै ग्रह कोय। केमद्रुम यह योग है सब धन डारे खोय॥ उच्च चन्द्र शुभयुक्त दृग केन्द्रधाम में होय। तब केमद्रुम शुभ कहे दोष न मानो कोय॥

स्त्रीजातक

क्रूरलग्नयुक क्रूर जो, स्वामी दृष्टि नहीं होय। सो कन्या कुल गरल है, भूलि न व्याहेउ कोय॥ जाके कुज दशमे बसै ऋणी होय पति तासु। लग्न राहु शनि सातवें पति जीवै नहीं जासु। क्रूर युक्त लग्नेश जो पापग्रहों के बीच सो कन्या व्यभिचारिणी बुधवर कहै कुज नीच। राहु शुक्र जो लग्न में कन्या को पति और। पाप दृष्टि शनि सातवें कन्या वास कुठौर। लग्न बीच शनि कुज तमसि निर्धन स्वेच्छाचारि। सप्तम कुज राण्ड कहै पति को तजि तमारि। छटे आठवें चन्द्र जो क्रूर पर निज अङ्ग। भौम आठवे भवन में सो पति करै है भंग॥ राहु सातवें लग्न कुज कंटक शुभ सो हीन। ताको पति जीवित रहे वर्ष दो या तीन॥ द्वादशाष्ट कुज क्रूरयुत राहु बसै त्रिकधाम। राण्ड होय कुछ दिवस में कहत गणक गुणग्राम॥ पापग्रहों के बीच में लग्न होय वा चन्द। सो त्रिय नासे कुलो दुबो भाषत कविकुल वृन्द॥ सप्तम भृगु जाके बसै सो कुल दोषी नारि। रूपवती तनु भृग बसै बुधजन कहत विचारि॥

वैधव्य-विषकन्यायोगाः-चौ.- रविवार द्वितीया जो होय श्लेषा ताहि दिन में जोय॥ १॥ कृत्तिका होय शनिश्चर वार साते तिथि को करो विचार॥२॥ होय शतभिष मंगलवार कहो द्वादशी तिथि निर्धार॥ ३॥ इन योगन में कन्या होय निश्चय विधवा जाने सोय॥ ४॥ जन्मलग्न द्वै शुभग्रह होय एक पाप ग्रह नभ १० में जोय॥५॥ शत्रु क्षेत्र में द्वै गह मानो ता कन्या को विधवा जानो॥ ६॥ अश्लेषा द्वितीया को होय मंदवार युत लीजो जोय॥७॥ परे शतभिषा मंगलवार साते तिथि लीजो निर्धार॥ ८॥ रविवार द्वादशी जो होय नक्षत्र विसाखा जानो होय॥ ९॥ ऐसो योग लखो जो परै तो कन्या को विधवा करै॥ १०॥ दो० धर्म सदन में भूमिसुत जन्म सदन शनि जान। सूर्य होत सुत सदन में कन्या विधया मान॥ ११॥

वैधव्य- विषकन्याभंगयोगः-जन्मलग्न या चन्द्र ते शुभग्रह सप्तम होय। अथवा सप्तम लग्नपति सुभगा कन्या होय॥

काकवन्ध्यादियोगः- ज्ञे अष्टमे काकबन्ध्या। मन्दार्कावष्टमे बन्ध्या अष्टमे जीवे वा शुक्रे नष्टगर्भा वा मृतापत्या॥

स्त्रीणां राजयोगः--चौपाई- केन्द्रधाम नभगा शुभ होई नरतनु पाय कलत्र समोई। रानी होय बहुत धन ताके मन प्रसन्न होई है सुत वाके-चन्द्रज तुग बसे तनु जाई लाभ धन गुरु आवे भाई। सो तिय होय नृपति की नारी जन विख्यात होय सुकुमारी। जो षडवर्ग शुद्ध गुरु होई शशि दृग केन्द्र भवन में होई॥ ऐसे योग जन्म सुकुमारी रानी होय सदन धनभारी॥ दोहा....कर्क चन्द्रमा सातवें जीव दृष्टि परिपूर। पुत्र पौत्र धन भूरि युत ताको पति नृप शूर॥ लाभ भवन सित चन्द्र जो सोमज सप्तम भौम। सुरगुर परिपूर्ण लखे रानी होई है तौन॥

स्त्रीणां पुत्रभावविचारः--पञ्चमें शुभदृष्टे च पञ्चमाधिपतावपि। केन्द्रकोणे तदा नारी बहुपुत्रवती भवेत्''॥

अशुभ प्रसव मासः-कार्तिक में स्त्री, भाद्रपद में गौ, मार्गशीर्ष में हथनी, श्रावण में गधी व घोड़ी, माघ में भैंस, ज्येष्ठ में बिल्ली, बैसाख में ऊँटनी, पौष में बकरी, चैत में कुतिया के बच्चे जन्में तो ६ मास में पिता व घरवाले की मृत्यु अथवा महाभय होता है। माघ में बुधवार को भैंस, श्रावण में दिन में घोड़ी प्रसूति हो तो महाभय शीघ्र होवे। स्मरण रहे कि यहां सर्वत्र सौरमास ग्रहण है, प्रसूता गौ आदि का तत्क्षण दानकर व्याहृति मन्त्रों से घृतयुक्त श्वेत सरसों का हवन करें, बच्चा जन्में तो कार्तिक शान्ति करने से शुभ है।

त्रिखलजन्म फलः-यदि तीन कन्याओं के पश्चात् पुत्रोत्पत्ति हो अथवा तीन पुत्रों के पश्चात् कन्या का जन्म हो तो त्रिखल नामक दोष के कारण कन्या माता को, लड़का पिता को भय, धनहानि आदि कष्टप्रद होते हैं, कृपणता छोड़कर त्रिखल शांति करें तो शुभ होता है। तीन अन्न, तीन वस्त्र, तीन धातु (सोना, चांदी, तांबा) दान करें।

बालक की दन्तोत्पत्ति का फल

बालक के जन्मते ही दांत निकले हो तो माता-पिता को अरिष्ट, ऊपर की पक्ति में दांत से युक्त जन्म ले तो अधिक अरिष्ट, प्रथम ऊपर की पंक्ति में दांत निकले तो मातृपक्ष को भय हो, मामा शान्ति करे। पहले मास में दांत निकले तो शरीर नष्ट, द्वितीय में छोटा भ्राता नष्ट, तृतीय में भगिनी नष्ट, चुतुर्थ में भाई नष्ट, पांचवे में ज्येष्ठबन्धु नष्ट, छठे में बहुभोग, सातवें में पितृ सुख, आठवें में पुष्टि, ९वें में धनी, १०वें में सुख, ११वें में सुख, १२वे में धनी।

अथैकनक्षत्रजनन-फल:--वृद्ध गर्ग कहते हैं, कि- यदि भ्राताओं वा पिता-पुत्र, माता वा कन्या का एक नक्षत्र हो तो दोनों की अथवा एक की अवश्य मृत्यु होती है। स्वर्णदान से कल्याण होता है।

जन्म-कुण्डली से विशेष विचार

लघु-भ्राता का जन्म समय जानना-(१) जन्म लग्न स्पष्ट में दशम भाव का स्पष्ट जोड़ें,जो राशि हो उस पर जब गोचर में गुरु ग्रह आवे तो भाई या बहन का जन्म होता है।

(२) तृतीयेश, तृतीयस्थग्रह की दशा में छोटे भ्राता का जन्म होता है , यदि भ्रातृ-प्रतिबन्धक योग न हो तो ।

भ्राता के कष्ट (खतरे) का समय जानना-(१)जन्म लग्न के स्पष्ट में से तृतीयेश के स्पष्ट को घटावें, शेष राश्यादि का जो नक्षत्र हो उस नक्षत्र पर जब गोचर में शनि आता है तब भाई या बहन को कष्ट होता है।

(३)लग्नेश स्पष्ट में से तृतीयेश स्पष्ट घटावें, शेष में दशमेश स्पष्ट और मंगल-स्पष्ट घटावें - शेष राशि में जब गोचर का शनि आता है तब भ्रातृकष्ट होता है।

(४)लग्नेश, तृतीयेश, दशमेश,भौम, इन चारों स्पष्टों को जोड़कर जो राश्यादि हो उसके नवांश राशि में जब गोचर का शनि होता है उस काल में भ्रातृ-कष्ट होता है।

(५)लग्नेश,तृतीयेश, दशमेश ओर भौम को जोड़कर जो राश्यादि हो उसके द्रेष्काण राशि में जब गोचर का गुरु होता है, तब भ्रातृकष्ट जानियें।

माता की मृत्यु का समय जानना-(१)जन्म के सूर्य में से चन्द्रस्पष्ट को घटावे शेष की राशि में या त्रिकोण राशि में या उस शेष राशि के नवांश राशि में जब गोचर का शनि या गुरु होगा तब माता की मृत्यु का समय जानना।

अथ कन्याजन्मनि मूलचक्रम्

शीर्षे	मुखे	कण्ठे	हृदये	बाह्वो	हस्ते	गुह्ये	जंघा	जान्वो	पादे	स्थानम्
४	६	५	५	५	४	९	४	४	१०	घटी
पशुना.	धनना.	धनला.	कुटिला	धनला.	दयावती	कामिनी	मातृना.	भ्रातृना	वैधव्य	फलम

कन्याजन्मनि नक्षत्रफलम्

जन्म नक्षत्र	मूल (१।२।३ च.)	आश्लेषा (२।३।४ च.)	ज्येष्ठा	विशाखा (४च.)
फलम्	ससुरहानि	सास नाश	ज्येष्ठनाश	देवरनाश

सुत: सुता वा नियतं श्वशुरं हन्ति मूलज:। तदन्त्यपादजो नैव तथाश्लेषाद्यपादज:।

तिथिगण्डान्त-पूर्णा तिथियों के अन्त की ७ घड़ी, नन्दा तिथियों की शुरू की दो-दो घड़ी तिथि गण्डान्त होता है। यह गण्डान्त जन्म, यात्रा, विवाह में भयप्रद होता है।

अथ गण्डमूलनक्षत्राणि

अश्विनी	आश्लेषा	मघा	ज्येष्ठा	मूल	रेवती

उपरोक्त ये ६ नक्षत्र गण्डमूल कहलाते हैं, इन नक्षत्रों में उत्पन्न होने वाला बालक, माता, पिता, कुल और अपने शरीर का नाश करने वाला होता है। यदि अपना शरीर नष्ट होने से बच जाए, तो धन तथा घोड़ों का स्वामी होता है।

गण्डमूल में उत्पन्न पुत्र का ६ मास अथवा २७ दिन तक पिता को दर्शन नहीं करना चाहिए, तत्पश्चात शान्ति करके विधि से मुख देखना कल्याणप्रद है।

मूल और आश्लेषा नक्षत्र के चरण जन्मफल

मूल पाद	फल	आश्लेषा पाद	फल
१	पितृनाश	४	पितृनाश
२	मातृनाश	३	मातृनाश
३	धननाश	२	धननाश
४	शान्ति से सुख	१	शान्ति से सुख

मूलजनने वृक्षविभाग फलम्

मूल	स्तम्भ	त्वचा	शाखा	पत्र	पुष्प	फल	शिखा	विभाग
७	८	१०	११	१२	५	४	३	घटी
मूल नाश	वंश नाश	मातृ क्लेश	मातुल नाश	मन्त्री पद	मन्त्री पद	विपुल लाभ	अल्प जीवन	फल

अथ मूल पुरुष चक्रम्

मूर्ध्नि	मुख	स्कन्धे	बाह्वो:	हस्ते	हृदये	नाभौ	गुह्ये	जान्वो:	पाद	स्थान
५	७	४	८	४	९	२	१०	६	६	घटी
राजा	पि.मृ.	बली	बली	दानी	मन्त्री	ज्ञानी	कामी	मतिमा.	मतिमा.	फलम.

अथ मूलनिवासचक्रम्

जन्ममासानुसारेण	वै. ज्ये. मार्ग. फा.	चैत्र, श्रा. का. पौ.	आषा. आ. माघ. भा.
जन्मलग्नानुसारेण	२।५।८।११	३।६।९।१२	१।४।७।१०
मूलनिवासस्थानम्	पाताले	भूमौ	स्वर्गे
फलम्	शुभम्	कुलनाश:	शुभम्

मूल का निवास मास व लग्नानुसार दोनों प्रकार से भूमि पर आवे तो महाभयप्रद होता है,एक प्रकार से स्वल्पभय होता है। तृतीया,दशमी,षष्ठी शनिभौमसमन्विता। शुक्ला चतुर्दशी मूले जातः संहरते कुलम्॥ यत्र गण्डे क्रूरयुते महादोषकरो भवेत्। शुभग्रहसमायोगे ईषच्छुभकरंभवेत्॥ दिनक्षये व्यतीपाते व्याघाते विष्टिवैधृतौ। शूले गंडातिगडे च परिघे यमघण्टके॥ ब्रह्मदण्डे मृत्युयोगे प्राप्ते गंडदिने शिशु:। जातो हन्ति कुलं सर्वं तस्मात् कुर्वीत शान्तिकम्।।यथा सर्पविषंचैव मन्त्रश्रवणाद्विलीयते। तथैव गंडदोषोऽपि विधानेन विलीयते॥ रत्नैः शतौषधीमूलैः ससमृद्भिः प्रपूर्यते। शतच्छिद्रं घटं तस्मान्निःसुतेन जलेन हि।।बालकस्यापि तत्स्नाने विप्रैः सम्पादिते सति। जपहोमप्रदानेन कृते स्यान्मंगलं ध्रुवम्।।विरुद्धावयवे मूले विधिरेव स्मृतो बुधैः। मुनीनां वचनं सत्यं मन्तव्यं क्षेममीप्सुभिः॥

अथाभुक्तमूलविचार :- ज्येष्ठा नक्षत्र की अन्तिम चार घटी, किसी के मत से एक घटी एवं मूल नक्षत्र की आदि की चार घटी विशेष आधी, अभुक्तमूल कहलाता है। इस

समय में जो बच्चा जन्म ले उसका परित्याग कर दें या आठ वर्ष, असमर्थ हों तो ६ मास अथवा २७ दिन तक पिता मुख न देखे। धनगंडे दरिद्रोऽपि शांतिं कुर्यात्स्वशक्तितः। अन्यथा नाशमाप्नोति चाभुक्तर्क्षे विशेषतः॥

गण्डमूलोत्पन्न बालक का जन्मकाल फल

दिन में	रात्रि में	सन्ध्या	प्रातः	समय
मू.ज्ये. पिता को भय	मू. मू. माता को भय	रे. अश्वि. शरीर को भय	पशु-हानि	फल

अश्विनीजातस्य फलम्– अश्विनी नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म हो तो पिता को भय, द्वितीय में सुखेश्वर्य, तृतीय में मंत्री तुल्य, चतुर्थ में नृपति समान होता है।

मघाफलम्–मघा के प्रथम चरण में जन्म हो तो माता या मातृपक्ष को हानि, दूसरे में पिता को भय, तीसरे में सुख, चतुर्थ चरण में धन विद्या लाभ होंगे।

ज्येष्ठापाद फलम्– प्रथम चरण में बड़े भाई को नेष्ट, द्वितीय में छोटे का नाश, तृतीय में माता का नाश, चतुर्थ में अपने बाप का नाश होता है। ज्येष्ठाद्यपादजी ज्येष्ठं हन्ति बालो न बालिका। न बालिका तु मूलर्क्षै मातरं पितरं तथा।

रेवतीपाद फलम्–रेवती के प्रथम चरण में जन्म हो तो नृप समान, दूसरे में मंत्री या मुख्तार, तीसरे में सुख सम्पत्तियुक्त, चतुर्थ चरण में अनेक कष्ट हों।

अथ पुरुष जन्मकुण्डल्यां भावस्थ-ग्रह फलानि

भाव	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु १	अंगपीड़ा	कान्तिसुख	रक्तकोप	सुखी	विद्वान्	सुखी	दुखी	रोगी	सकाम
धन २	धननाश	सम्पत्तिवान्	ऋणी	धनी, गुणी	धनागम	धनी	धनहानि	निर्धन	खल
सहज ३	नीरोगी	कीर्तिमान्	विक्रमी	अरिमर्दन	पापी	पापी	पराक्रमी	विक्रमी	शूर
सुहृत् ४	दुखी	सुखभोगी	दुःखी	सुखी	सुखी	सुखी	दुखी	मातृहा	दुःखी
सुत ५	सुतहानि	धनी, पुत्रवान्	पुत्रहीन	अल्पपुत्र	प्रतापी	धीमान्	पुत्रहीन	कुमति	मूर्ख
शत्रु ६	शत्रुनाश	अल्पआयु	शत्रुनाश	रोगी	कामी	रोगी	शत्रुजित्	सबल	सबल
स्त्री ७	स्त्रीदुष्टा	सुभार्यावान्	स्त्रीनाश	धर्मज्ञ	सुभार्या	कामी	स्त्रीकुलटा	स्त्रीरोगी	स्त्रीहा
मृत्यु ८	अल्पायु	योगी	शरीरपी.	गुणी	नीचस्व.	नीच	नेत्ररोगी	रोगी	क्लेशयुक्त
धर्म ९	दुष्टमति	धर्मात्मा	पापरत	सुखी	धार्मिक	तपस्वी	दुष्टबुद्धि	दैन्ययुक्त	पापी
कर्म १०	शूर	तेजयुक्त	तेजस्वी	कीर्तिमान्	सम्पत्तिमान्	संपत्ति	पराक्रमी	मानी	पितृहीन
लाभ ११	धनी	धनी	धनी	धनी	सुलाभ	सुमति	धनवान्	सुख्यात	धनी
व्यय १२	दुष्टस्वभाव	कामी	पतितदार	दरिद्र	खल	रोगी	दुःखी	पतित	दुर्जन

अथ स्त्रीजन्मकुण्डल्यां भावस्थग्रहफलानि

भाव	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु १	क्रोधिनी	गतायुः	विधवा	सौभाग्य	सती	ससुखा	बन्ध्या	पुत्रहीना	दुखिनी
धन २	दरिद्रा	बहुधन	वन्ध्या	धनाढ्य	धनाढ्या	सुभगा	दुःखिनी	दरिद्रा	दुःखार्ता
सहज ३	सुसुता	सुखिनी	विसहजा	पुत्रवती	सुसहजा	धनाढ्या	सुदक्षा	सवित्ता	रोगिणी
सुहृत् ४	सपीड़ा	दुर्भगा	दुःखार्ता	सुगृहा	सुखिनी	सुखिनी	हृद्रोगा	रोगार्त्ता	मातृहा
सुत ५	विपुत्रा	ससुखा	विपुत्रा	धीकीर्तियुत्ता	सगुणा	पुत्रवती	विपुत्रा	विपुत्रा	अपुत्रा
शत्रु ६	सुखिनी	सरोगा	अरोगा	सकोपा	सापदा	दरिद्रा	गुणज्ञा	सधना	धनयुता
पति ७	दुःखार्ता	पतिप्रिया	विधवा	पतिव्रता	कीर्तियुता	पतिप्रिया	विधवा	दुःखिता	विधवा
मृत्यु ८	विधवा	रोगिणी	विधर्मा	कृतघ्ना	सरोगा	विसुखा	दुःखिनी	विधवा	दुःखिनी
धर्म ९	धर्मज्ञा	सुखिनी	दुःखिनी	सुभोगा	पुत्राढ्या	धर्मरता	वन्ध्या	वन्ध्या	शोकयुक्ता
कर्म १०	सुकर्मा	धर्मज्ञा	कुपुत्रा	सत्कर्मा	साध्वी	सधना	पापिनी	दुष्कर्मा	पापिनी
लाभ ११	सधना	गुणज्ञा	सुलाभा	पतिव्रता	सुपुत्रा	सुपुत्रा	सुलाभा	नीरोगा	सुभगा
व्यय १२	क्रोधिनी	हीनांगी	खला	कृशांगी	सुव्यया	सुव्यया	मूढा	दुष्टा	रोगिणी

अथ मातृसुखनाश योगा :-(१)पापग्रह युक्त चन्द्रमा सातवें भाव में होवे,(२) चन्द्रमा से सातवें पापयुक्त शुक्र हों, (३)पाप ग्रहों के बीच चन्द्रमा हो अथवा चन्द्रमा से चौथे सातवें पापग्रह हो,(४)तीसरे अथवा सातवें स्थान में सूर्य और लग्न में मंगल होवे,(५)चौथे भाव में शनि पापग्रहों से ही दृष्ट हो - इन पाँचों में से एक भी योग मिले तो माता को भय हो, जप दान करना चाहिए ।

पितृनाश योगा - (१) सूर्य मंगल दसवें वा नवम में गये हो(२) दशमेश रवि मंगल से युक्त हो,(३) शत्रु राशि का मंगल १०वें हो, (४)पापग्रह से युक्त सूर्य सातवें हो,इन चार योगों में से एक भी योग हो तो पिता को भय हो ।

भ्रातृनाश योगाः- भ्रातृ गृह को ईश जो भौम संगत्रिक होय। जाके ऐसे योग है भ्रातृहीन नर होय॥

सन्तानसुख नाशयोगाः- गुरु ते पञ्चम गेह पति, जाय परे त्रिक भाव। ऐसा योग जो लखि परे ताकि पुत्र अभाव । पुत्र धर्म अरु लग्नपति जाय परे, त्रिक धाम। जन्म समय या योग ते सदा पुत्र की हान।

रोगिणी स्त्रीयोग- शुक्र और सूर्य सप्तम, पंचम और नवम में हो तो उसकी स्त्री प्रायः रोगयुक्त रहती है ।

नीचयोगाः-सहज सप्तम धन सदन में क्रूर बसे खग आई। भवन पांचवें गुरु बसै नीच जाति मनसाई॥ सिंह लग्न जन्मे शिशु सप्तम शनि विकराल। म्लेच्छ होय कुछ दिवस में यदपि ब्रह्म को बाल। जिनके बुध भग राह सग सप्तम भाव विराज। लहे सर्वदा राजसुख होवे वेश्यावाज।

जारज योगा : -भानुचन्द्रतनु ना लखै लग्नप लखै न लग्न। सो शिशुहै पर पुरुष को भाषत ज्योतिषमग्न॥ रवि कुज गुरु तिथि अष्टमी चौथ चतुर्दशी सार। तीन उत्तर जन्म में तब शिशु कहो परार॥

गोचरग्रहाणां द्वादशभाव-फल बोध-चक्रम्

गृह	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्यः	स्थानना:	भय	श्री:	मानभंग	दैन्य	विजय:	यात्रा	पीड़ा	सुक़. ना.	सिद्धि:	धनलाभ	द्रव्यनाश
चन्द्रः	अन्नलाभ,	धननाश	सुख	रोग	कार्यनाश	धनलाभे	स्त्रीलाभ	रोग:	धर्मलाभ	सौख्यं	धनलाभ	धननाश
भौमः	शत्रुभीति,	धननाश	धनलाभ	शत्रुभय	धननाश	धनलाभ	द्रव्यनाश	शत्रुभीति	शत्रुभय	शोक.	धनलाभ	धननाश
बुधः	बन्धनं	धनलाभ	शत्रुभय	पशुलाभ	सुखं	स्थानलाभ	पीड़ा	धनला.	पीड़ा	सौख्यं	धनलाभ	धननाश
गुरु.	भयं	धनलाभ	क्लेश	धननाश	सुखं	शोक	राजमान	पीड़ा	सौख्य	दैन्यं	धनलाभ	पीड़ा
शुक्रः	शत्रुनाश,	धनलाभ	सौख्यं	धनलाभ	पुत्रलाभ	शत्रुभय	शोक:	धनलाभ	वस्त्रलाभ	दु:ख	धनलाभ	धनलाभ
शनिः	भय	धननाश	ऐश्वर्य	शत्रुभय	पुत्रनाश:	धनलाभ	दोष	पीड़ा	धर्मनाश	दौर्मनस्य	धनलाभ	धननाश
राहुः	हानि	धननाश	धनलाभ	वैर	शोक :	श्री:	कलह:	मृत्यु	दु:ख	वैर	सुखं	शोक
केतुः	रोग	वैर	सुख	भय	सुखं	धनलाभ	कलह:	रोग	पाप	शोक:	कीर्ति:	शत्रुभीति

अथग्रहाणामेक भोगफल-समयादि ज्ञानम्

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा. के	ग्रहा:
मा.१	दि. २।	मा१ ॥	मा. १	मा.१२	मा.१	मा.३०	मा.१८	एकार्थभोग
आदौ	अन्ते	आदौ	सदा	मध्ये	मध्ये	अन्ते	अन्ते	फलसमय:
भय.५	घ.३	दि.८	दि.७	मा.२	दि.७	मा.६	मा.३	गतव्यराशे:
								प्राक्फलम

अथ ग्रहतुष्ट्यर्थं धारणाय मणयः

सु.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
माणिक्यम्	मुक्ताफलम्	प्रवालम्	पन्ना	पुष्पराग	हीरा	नीलम्	गोमेदम्	वैदूर्यम्
विद्रुमम्	रौप्यम्	विद्रुमम्	सुवर्णम्	मुक्ताफलम्	लौहम्	वैदूर्यम्	लाजवर्तः	लाजवर्तः

पूतना-ग्रसित लक्षण एवं शांति

बहुत मैले बिछौने पर अकेली जगह में छोटे बच्चे को सुला देने से पूतना नाम राक्षसी का उसमें प्रवेश होने से बच्चा बीमार हो जाता है । तब पूतना की बली निकालने से अच्छा होता है । जब कभी बच्चा बैठे बैठे गिर पड़े, या यों मालूम हो कि किसी के पीटने से गिरा है और मूर्छा आ गई है अथवा एकाएक कोई रोग हो गया है तब जानो, कि उसे महापूतना ने ग्रसा है । यदि कोई लाभादि के वश में आकर वनदेवता या नाकदेवता का तिरस्कार कर दे तो उसके बालक में ऊर्ध्वपूतना प्रवेश कर लेती है । यदि कोई मनुष्य अपनी ऋतुस्नाता स्त्री का गमन करने के पश्चात् स्नान न करे या बिना ऋतु के संगम करके हाथ मुंह न धोवे और माता अपवित्र अवस्था में ही बालक के साथ सो जावे तो बालक्रांता नाम की राक्षसी का दोष होगा । बच्चे को इतर फुलेल और फूल माला पहिना कर बाहर जाने से रेवती ग्रही का दोष होता है । सिर खुले जूठे बाल को संध्या के समय सोने से भी रेवती का आवेश हो जाता है ! संध्या के समय जमीन पर सोने से अथवा खेलने से बालक को पुष्प रेवती का दोष होता है । कदाचित् बालक खेलता खेलता गिर जाये अथवा उसे उल्टी हो या हाथ पांव नहीं धुले हों तब उसे शुष्क रेवती का आवेश होता है। जूठा खाने और देवता के स्थान पर मल मूत्र करने से शकुनी ग्रही बालक को पकड़ लेती है । जो नित्य कर्म संध्या बंदनादि नहीं करते या जो लोग पक्षियों को पालते हैं जन्मान्तर में उनके बालकों पर शिशुमुण्डिका राक्षसी का दोष हो जाता है । फिर उसका पूजन और बलि धूपादि दान करने से शांति होती है ।

चेष्टा:- जिस बालक के नखों और दांतों में विकार हो, नींद नहीं आवे, डर लगे, मन में उद्वेग रहे, शरीर में दुर्गन्ध उठे, अनेक प्रकार की चेष्टा करे, बल अधिक हो जावे, उसे ग्रहाविष्ट जानना।

उद्वर्तनम् - दूर्वा, कुटकी, नीम के पत्ते, तज, इनका उबटना बालक के शरीर में मलकर पीछे पीपल के पत्ते मुलट्ठी, लसूडे के पत्ते इनका काढ़ा बनाकर स्नान करावे यह रोग दूर होगा ।

सर्वबालग्रहशान्त्यर्थं देवालये ज्योतिदर्शन निवासश्च तत्र रात्रौ- "ॐ हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत्। सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्यो नः सुतानिव ॥" इत्यस्य जपः, ततोऽनेनैव मन्त्रेण सदीप दधिमाषान्नबलिदाने घण्टाबन्धने च सर्वबालग्रहशान्तिः ॥

अथ बाल रक्षा विधि (प्रयोगसारे)

यदि दुष्टदृष्टि (नजरादिदोषों) के कारण बालक के शरीर में कोई रोग कष्ट हो जाये तो- ॐवासुदेवो जगन्नाथः पूतनातर्जनो हरिः । रक्षति त्वरितं बालं मुञ्च मुञ्च कुमारकम् ॥ १॥ कृष्ण, रक्ष शिशुं शंख-मधुकैटभ-मर्दन! प्रातः-सङ्गव मध्याह्न सायाह्नेषु च सन्ध्ययोः ॥ २ ॥ महानिशि सदा रक्ष कंसाराति निषूदन! यद्गोरजः पिशाचांश्च ग्रहान् मातृग्रहानपि ॥ ३॥ बालग्रहान्विशेषेण छिन्धि छिन्धि महाभयान् । त्राहि त्राहि हरे नित्यं त्वद्रक्षाभूषितं शिशुम् ॥ ४॥

इन चारों मंत्रों से अभिमंत्रित हुई गौ के गोबर की शुद्ध भस्म को बालक के मस्तक, कण्ठ, हृदयादि अंगों में लगाने से बालक का कष्ट दूर होगा।

बाल कष्टावली चक्रम्

किस समय कौन पूतना ग्रस्त करती है?	मूर्ति निर्माणार्थ द्रव्य	पूजन द्रव्य	बलि विधान व समय	स्नान पूजा मार्जन मंत्र	धूप
प्रथम दिन मास वर्ष में योगिनी	नदी के दोनों किनारों की भृतिका	श्वेत चन्दन, तिलक, श्वेतपुष्प ५ रंग की झंडी ५,५दीपक, ५आटे के सतिये,कपूर,लोहबान	श्वेत भात,५पूर्ण पोली(सुहाली) १प्रहर दिन चढ़े पूर्व दिशा में चौरास्ते पर रखना।	ॐ ब्रह्माविष्णुश्च रुद्रश्च स्कन्दो वै श्रवणस्तथा। रक्षन्तु त्वरितं बालं मुञ्च मुञ्च कुमारकम्।	राई, खस, आक के फुल, बिल्ली और मनुष्य के बाल, निम्ब पत्र, गौघृत
द्वितीय दिन मास वर्ष में सुनन्दना	एक सेर चावलों का आटा	१०दीपक,१०झण्डी,पुष्प, चावलों के आटे के सतिये १०	भात एक सेर, आटे के पूड़े, मत्स्य व बकरे का मांस, संध्या समय पश्चिम दिशा में चौरास्ते पर रखना	ॐ नमश्चामुण्डायै विच्चे ह्रां ह्रां ह्रीं ह्रीं हुं हुं स्थानाद्राज्ञया स्वाहा	
तृतीय दिन मास वर्ष में पूतना	एक सेर चावलों का आटा	रक्त चन्दन,रक्त पुष्प,श्वेत ध्वजा, दीपक१०,गेहूं केआट केसतिए१०	एक सेर लाल भात,आधा सेर पूर्ण पौली, पश्चिम दिशा में किसी वृक्ष के नीचे	सुनन्दना विधानोक्त	लहसुन,गाश्रृग,साप का काचली नीम के पत्ते, पुरुष और बिल्ली के बाल गोघृत
चतुर्थदिन मास वर्ष में मुख मंडिका	तिल -चूर्ण एक सेर	श्वेत पुष्प, श्वेत ध्वजा ५,दीपक, मिल सके तो अर्जुन वृक्ष के पुष्प	भात, सेर आटे के पूड़े आध सेर पूर्ण पौली, सांय,पश्चिम दिशा में वृक्ष के नीचे	सुनन्दना विधानोक्त	
पंचम दिन मास वर्ष में बिडालिका	एक सेर चावलों का आटा	श्वेत चन्दन, श्वेत पुष्प, दीपक ५,श्वेत ध्वजा ५,गेंहु के आटे के सतिये	श्वेत भात, ७ पूड़ियाँ, सांयकाल पश्चिम दिशा में वृक्ष के नीचे।	ओंभगवती ह्रीं ह्रीं ह्रीं हुं हुं मुञ्च रक्षां कुरु कुरु बलिं गृहाण अस्त्र ठ:ठ: चामुंडे सर्वारि चण्डिके ठ:ठ:स्वाहा।	
षष्ठ दिन मास वर्ष में, षट्कारिका	नदी के दोनों किनारों की मिट्टी	श्वेत चन्दन, श्वेत पुष्प, दीपक ५,श्वेत ध्वजा ५,	भात,५ मिठाई,५सुहाली,७पूड़ियां,१ प्रहर दिन चढ़े पूर्व में चौरास्ते पर	योगिनी विधानोक्त	कूठ, गुग्गल, राई, हाथीदांत,घृत।
सप्तमदिन मास वर्ष में में कालिका	चावल का आटा एक सेर	श्वेत चन्दन, श्वेत पुष्प, दीपक ५,श्वेत ध्वजा ५,	भात, ७ पूड़ियाँ, सांयकाल पश्चिम में चौरास्ते पर मौन होकर	बिडालिका विधानोक्त	
अष्टम दिन मास वर्ष में में कामिनी	जल के दोनों किनारों की मिट्टी	रक्त चन्दन, ५रंग की झण्डी ५, दीपक ५,	गेहूँ की रोटी,मसूर की दाल,हरा साग, छाग मांस संध्या में चौरास्ते पर	बिडालिका विधानोक्त	
नवम दिन मास वर्ष में, मदना	एक सेर गेहूं का आटा	चन्दन, पुष्प,५दीपक,५ रंग की झण्डी ५।	भात, मत्स्य मांस, पापडी, सुहाली उत्तर में प्रात: चौरास्ते पर	ॐ नमो भगवते वासुदेवा५ कृष्णाय मंडल बलिमादाय हन २हुं फट् स्वाहा	गोशृंग, लसुन, सांप की कांचली निम्बपत्र, मनुष्य और बिल्ली के बाल, राई, गोघृत।
दशमदिन मास वर्ष में में रेवती	एक सेर गेहूं का आटा	रक्त पुष्प २५, झंडी,२५ दीपक,२५ सतिये।	गुड़ के घी भुने चावल,गौ घृत, सांय,दक्षिण में चौरास्ते पर	ॐ नमो भगवते वैश्वदेवाय हन हुं फट् स्वाहा	
एकादश दिन मास वर्ष में, सुदर्शना	काले ठड़दों का आटा एक सेर	श्वेत पुष्प,२५ दीपक,२५ सफेद झण्डी,२५ आटे के सतिये।	श्वेत भात, ७ पूड़े, सुहाली ७,सांय व प्रात: दक्षिण में चौरास्ते पर	ॐ नमो भगवते रावणाय चन्द्रहास वज्रहस्ताय ज्वल २ दुष्ट ग्रहादीन् ॐ ह्रीं फट् स्वाहा	
द्वादश दिन मास वर्ष में अद्भुता	चावलों का आटा आटा एक सेर	१३ दीपक,१३झण्डी,१३ सतिये सतिये आटे के।	सुहाली,पूड़े ७,पूड़ियां ७, मत्स्य मांस, पापड़ी, सांयकाल दक्षिण में चौरास्ते पर।	ॐ नमो नारायणाय ज्वलद्धस्ताय हन हन शोषय२ मर्दय२ तापय२ हुं३ हन २ दुष्टानां ह्रां हुं स्वाहा	

अथ बाल पूतना विधान- यहां लिखे बाल कष्टावली चक्रोक्त हर एक बलिदान के पीछे मार्जन शिखास्थान-स्पर्श निम्नलिखित मंत्रों द्वारा एक ही प्रकार से होता है, बलिदान विधि तीन दिन निरंतर करें। चौथे दिन पलाश, अश्वत्थ, बिल्व, गूलर, मिल सके तो कपित्थ, इनके पत्तों को उबाल कर बालक को मंत्र पाठपूर्वक स्नान कराना। तदन्तर कल्याणार्थ यथा शक्ति भिक्षुकों को तथा कुत्ते आदि जीवों को मिष्ठान भोजन कराना तदनन्तर "ओं द्यौ: शांतिरन्तरिक्षं" इत्यादि शांतिमंत्रों व मार्जनमंत्रों से कुशा से छींटे देने के अनन्तर बालक की शिखा या शिखा-स्थान स्पर्श पूर्वक यह मंत्र पढ़ें- "ओं रक्ष रक्ष महादेव नीलग्रीव जटाधर। ग्रहैस्तु सहितो रक्ष मुञ्च मुञ्च कुमारकम् ॥ ओं सर्वमातर इमं ग्रहं संहरंतु हुं रोदय रोदय, स्फोटय स्फोटय स्वाहा। गर्ज २ स: गृहाण गृहाण आमर्दय २ ह्रीम् ह्रीम्, हन हन एवं सिद्धि रुद्रो ज्ञापय स्वाहा॥ इति रक्षामंत्र: ॥

अथ नक्षत्र -कष्टावली

रोग नक्षत्र	रोगशान्त्यर्थ दान	नक्षत्रपादवशाद् रोग दिन संख्या				रोगशांत्यर्थ जपनीयमन्त्र	रोगनिवृत्त्यर्थ बलि
अश्विनी	भोजनदान	९	११	१	२०	मृत्युञ्जयमंत्र:	घोड़ी के मुख में सात व्रीही धान्य देवे।
भरणी	गो-अन्नादिदान	०	८०	४०	११	यमायतवेति मंत्र	हाथी के मुख में तिल चावल
कृत्तिका	स्वर्णदान	९	११	१६	२८	अग्निर्मर्धेति	कछुए के मुख में घी दे
रोहिणी	घृतदान	३	९	१८	३०	ब्रह्मायवेति	सर्प को दूध-दही खिलावे
मृगशिरा	तिलदान	९	५	७	१०	इमंदेवेति मन्त्र:	खरगोश को दूध पिलावे
आर्द्रा	गोदान	०	१८	०	०	नमस्ते रुद्र इति मन्त्र	बकरे के मुख में रक्त डालें
पुनर्वसु	पीतलदान	७	१४	२	२१	अदितिद्यौ रितिमन्त्र:	सूअर को धान्य खिलावे
पुष्य	तैलान्नदान	६	७	१०	२१	बृहस्पतेति मन्त्र:	बकरे के मुख में दही डाले
आश्लेषा	गो-अजादिदान	०	०	४१	०	नमोस्तुसर्पेति मन्त्र:	बिलाव को दूध पिलावे
मघा	वस्त्राण्यदान	१५	७	१७	२०	पितृभ्य इति मन्त्र:	बन्दर को तिल उड़द खिलावे
पू. फा.	भोजनदान	०	१५	०	३०	भगम्प्रणेति मन्त्र:	ऊंट के मुख में शहद दें
ठ. फा.	अन्नदान	७	१४	७	६०	दध्यावद्धेति मन्त्र:	गाय को शाक खिलावे
हस्त	तैलदान	१५	१७	१५	०	उदत्यंजातवेदैति मन्त्र:	भैंसे को कमल के फूल खिलायें
चित्रा	दुग्ध दान	११	९	९	१६	त्वष्टा तुरिगति मन्त्र:	बाघ के लिए तगर धतूरे के फूल वन में रखें
स्वाती	गौघृत दान	६०	१७	३०	०	वायोरग्रेति मन्त्र:	भैंसे को गुड़ चावल खिलावें
विशाखा	गौ-स्वर्णदान	१५	०	४	१३	इंद्राग्नी इति मन्त्र:	बाघ के मुख में गुड़ भात की बलि दें
अनुराधा	गौघृत दान	६०	१२	३६	३०	नमोमित्रेति मन्त्र:	बकरे को कुलथी सहित भात गुड़ दें
ज्येष्ठा	तिलदान	६९	९	६	४	त्रातारमिन्द्रमिति मन्त्र:	बंदरों को गुड़ तिल डालें
मूल	रौप्यपात्रदान	०	९	१५	६	माता पुत्रेति मन्त्र:	बिलाव को दूध पिलावें
पू. षा.	गोमुक्तादान	०	१५	२४	१०	आपो धर्मेति मन्त्र:	कछुए के मुख में नागर मोथे की बलि दें
ठ.षा.	भोजनदान	३०	२४	२६	१६	विश्वेदेवेति मन्त्र:	गौ को धान्य डालें
श्रवण	श्रीफलदान	६०	२४	६	९	विष्णोररा. मन्त्र	भैंसे के मुख में रक्त, मीठा की बलि दें
धनिष्ठा	अश्वान्नादान	१५	४	२०	२१	वसो: पवित्रेति मन्त्र	मनुष्य के मुख में दही अन्न की बलि दें
शतभिषा	भोजनान्नदान	४	४५	३	२२	वरुणस्तम्भेति मन्त्र	गौ को चावल खिलावें
पू. भा.	भोजनदान	०	१२	२१	१९	अहिर्बुध्न्येति मन्त्र	कौए के मुख में फल की बलि दें
ठ.भा.	अन्नदान	१०	३	९	१५	अहिर्बुध्न्येति मन्त्र	गाय को चावल खिलावें
रेवती	फल दा.कन्यापूजन	१८	१०	९	२०	पूषन्नयेति मन्त्र	हाथी के मुख में पूरी-पूओं की बलि दें

ज्वालामुखी योग

तिथि	१	५	६	९	१०
नक्षत्र	मूल	भर.	कृत्ति.	रोहि.	आश्लेषा

जन्मे सो जीवे नहीं बसै जो उजड़ जाय। चूड़ा पहिरे कामिनी चटपट विधवा होय। गये गए ना बुहरे कूए नीर सुकाय।

पुत्रोत्पत्ति का समय जानना - (१) जन्मलग्नेश व पुत्रेश के स्पष्ट को जोड़े। योगफल के राश्यादि और नवांश की राशि में या इन दोनों के त्रिकोण राशि में जब गोचर का गुरु होता है तब संतान उत्पन्न होती हैं।

(२) चं. ल. गु. इन तीनों से पंचम स्थानेश या नवमस्थानेश की दशान्तर्दशा में संतानोत्पत्ति होती है।

विवाह (स्त्रीसुख)होने का समय जानना-(१)जन्म लग्नेश सप्तमेश को जोड़कर जो राशि हो उस राशि में जब गोचर का गुरु हो तब विवाह होता है॥

(२) चन्द्र राशीश और अष्टमेश को जोड़े, उस राशि में जब गोचर का गुरु आवे तब विवाह होता है।

(३) लग्नेश का नवांशेश जिस राशि में हो उस राशि से द्वितीय भाव में जब गोचर में गुरु चन्द्र होते हैं, तब विवाह होता है।

(४) शुक्र-चन्द्र व सप्तमेश की दशान्तर्दशा में विवाह होता है।

पिता के खतरे का समय जानना-(१) गुलिक स्पष्ट से सूर्य-स्पष्ट घटावें, शेष राशि के त्रिकोण में जब गोचर का शनि हो तब पिता की मृत्यु होती है।

(२) सूर्य से १।२।७।१२ भाव में जो पापग्रह हो उस की दशान्तर्दशा में पिता की मृत्यु होती है।

नोट -

इस कष्टावली में प्रत्येक नक्षत्र का जपनीय मंत्र पृथक् पृथक् लिखा है वह न कर सके तो महामृत्युञ्जय ही करे। जिस नक्षत्र के जिस चरण में पहले रोग उत्पन्न हुआ है उस चरणानुसार कष्ट व दिन जाने, शून्य से विशेष भय जाने, दान, जप करे।

जिस नक्षत्र में रोग पैदा हुआ है उसे यहां कष्टावली में रोग नक्षत्र का नाम दिया गया है।

रोग नक्षत्र को जानकर इन कोष्ठों में लिखा उपाय एवं यथाशक्ति दान करने से रोग शान्त होगा। 'रोग निवृत्यर्थ बलिदान'-वाले कालम में घोड़ी हाथी आदि के मुख में बलि देने के लिए लिखा है, वह गेहूं के आटे की वैसी ही आकृति बनाकर (मन में हाथी आदि की धारणा करके) उसके मुख में बलीद्रव्य देकर धूप-दीपादि करके आटे की आकृति को जल में प्रवाहित कर दें-ऐसा तीन दिन करें। साथ ही दान और जप भी करें।

रोगोत्पत्तौ कुयोगाः

(१)रोग के शुरु दिन में जन्मराशि नक्षत्र लग्न में या राशि व लग्न से आठवें चन्द्र वा यमघंट कुयोग हो।

(२)सूर्यवार को मघा, द्वादशी या भरणी अनुराधा नक्षत्र हो।

(३)सोमवार को आर्द्रा या उत्तराषाढा नक्षत्र हो।

(४) मंगलवार को कृ. मघा व शतभिषा या नन्दा (१।६।११)हो।

(५)बुधवार को अश्विनी व विशाखा या भद्रा(२।७।१२) आश्लेषा हो।

(६)गुरुवार छठ व शतभिषा या ज्येष्ठा व मृग. या जया (३।८।१३)व मघा, हस्त हो।

(७)शुक्रवार अष्टमी व अश्विनी या आश्लेषा श्रवण या रिक्ता(४।९।१४) आर्द्रा या धनिष्ठा हो।

(८) शनिवार को नवमी व पू. षा. या हस्त व पू. भा. या पूर्णा(५।१०।१५)व भरणी हो।

(९)सूर्य मंगल शनिवारों को ४।६।९।१२।१४।३० तिथि, भरणी, कृत्ति, आर्द्रा, आश्लेषा, पूर्वा ३, विशा, ज्ये, धनि, शत, नक्षत्र हो तो मृत्युतुल्य कष्ट होता है।

परञ्च जन्मपत्र में मारकेश का और भी विचार कर लेना। क्योंकि बिना मारकेश आये मृत्यु तो होती ही नहीं। हाँ, ऐसे योग में कष्ट जरूर मृत्युतुल्य होता है। उपरोक्त योगों में से किसी भी एक योग में रोगारम्भ होते ही तुला दान, गोदान तथा मृत्युञ्जय जप करना कल्याणप्रद है।

अथ रोगत्रिनाड़ी चक्रम्

आर्द्रा	पू.फा	उ.फा.	उ.फा.	ज्ये.	धनि.	शत.	भर.	कृ.	प्रथमा
पुन.	मघा	हस्त	विशा.	मूल	श्रवण	पू. भा.	अश्वि	रो.	मध्या
पुष्य	आश्ले	चि॰ा	स्वा.	पू.षा.	उ.षा.	उ. भा.	रेव.	मृ.	अन्त्या

सूर्य नक्षत्र, दिन नक्षत्र और जन्म नक्षत्र व नाम नक्षत्र रोगत्रिनाडीचक्र में एक ही नाडी पर हों तो असाध्य रोगी का मरण होता है। मरने को हो तो प्रतिदिन देखने से जिस दिन यह योग मिले उसी दिन निःसदेह रोगी की मृत्यु कहे। यह रोगत्रिनाडीचक्र यात्रा तथा रण के समय वर्जित करना।

कालस्य मुखदंष्ट्रा ज्ञानम्

दिन नक्षत्र से नाम नक्षत्र ५।१३।२३संख्या का हो तो काल का मुख होता है और उसी प्रकार १०।१८ वां, नक्षत्र दंष्ट्रा (दाढ़ा) होती है। काल के मुख में दाढ़ में जिस दिन गोचर में नक्षत्र प्राप्त हो उस दिन अत्यन्त रोगग्रस्त पुरूष की मृत्युपर्यन्त हालत होती है। रोग पर सर्पादि दर्शन पर,विग्रह - युद्ध में जाने पर काल के मुख दंष्ट्रा में नक्षत्र हो तो अशुभ होता है

कालांग चक्र से शुभाशुभ फलज्ञान

यदि किसी व्यक्ति के अंङ्ग विशेष में पीड़ा, कष्ट, घाव, फोड़ा आदि चर्म विकार किंवा वायु-विकारादिजन्य कोई कष्ट हो तो तात्कालिक प्रश्नकुण्डली लगा कर निम्नलिखित कालांग चक्र में दिए भावों के अनुसार उस पीड़ित भाव को देखें। यदि उस भाव में कोई अशुभ ग्रह हो, किंवा वह भाव खलदृष्ट, अस्त, नीच तथा शुभग्रह की दृष्टि से रहित हो तो समझें, कि उस अवयव में और विशेष कष्ट की संभावना है। शांति के लिए उस ग्रह की शांति करावें। यदि प्रश्नकुण्डली में पीड़ित-भाव शुभग्रह से युक्त किंवा शुभ ग्रह दृष्ट हो तो रोग (कष्ट)शीघ्र निवृत्त हो जाएगा।

कालांग चक्र

भाव	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
अंङ्ग	सिर	मुख	भुजाएं	हृदय	उदर	कटिभाग	बस्ति (मूत्राशय)	लिङ्ग गुदा	जांघाएं	घुटने	पिण्डलियां	पाद-युगल

तिथि कष्टावली यन्त्रम्

ति.	तिथीश	कष्टदिन	बलि	दान
१	अग्नि	१२	शर्कराज्यबलि	धृतदान
२	ब्रह्मा	५	पायसबलि	भोजनदान
३	काम	७	घृतान्नबलि	रक्तवस्त्रद.न
४	गणेश	१६	मोदकान्नबलि	मूंगादान
५	सर्प	२१	पायसबलि	दुग्धदान
६	स्कन्द	१२	मोदकान्नबलि	चित्रवस्त्र दान
७	सूर्य	८	पायसबलि	ताम्रपात्रदान
८	ईश्वर	१३	नानाभक्ष्यबलि	पीतवस्त्रदान
९	दुर्गा	१८	मिष्टान्न बलि	रक्तवस्त्रदान
१०	यम	२५	कृशरान्नबलि	नीलवस्त्रदान
११	विश्वेदेव	७	मोदकान्नबलि	पीतवस्त्रदान
१२	विष्णु	७	मोदकान्नबलि	श्वेत वस्त्रदान
१३	काम	१०	दधिशर्कराबलि	सुवर्णदान
१४	शिव	६०	मिष्टान्नबलि	क्षौद्रशाक भो.
१५	चन्द्र	३	दध्योदनबलि	रौप्यदान
३०	पितर	१८	अपूपकान्न बलि	उत्तमान्नभोजन

वारकष्टावली यंत्रम्

वा.	वारेश	क.दि.	बलि व दान
सू.	रुद्र	५	पायसबलि, सूर्यदान
चं.	गौरी	८	नानाभक्ष्यबलि, चन्द्रदान
मं.	स्कन्द	५	दुग्धबलि, भौमदान
बु.	विष्णु	७	मुद्गान्नबलि, बुधदान
बृ.	ब्रह्मा	५	घृतपक्वबलि,गुरुदान
शु.	इन्द्र	७	तिलयवाज्यमधुबलि, शुक्रदान
श.	यम	१५	माषान्नबलि, शनिदान

बाल-रक्षार्थ धूप

राई, लाख,नीम के पत्ते, बांस का छिलका, लहसुन, शिवजी पर चढ़े हुए फूल, अगर, गाय का घी, इन सब को मिलाकर धूप देने से सब पूतना तथा अन्य बालग्रह दूर हो जाते हैं। धूप देते समय "खुं खुर्दनं हुं फट् स्वाहा-" इस मंत्र का उच्चारण करें।

ग्रहगोचराद्यैर्दशा क्रमाद्यैर्ग्रह कृतानिष्ट-फल-शमनार्थ प्रत्येक-ग्रहाणां-दान-पदार्था:												जप संख्या	जपनीय-मंत्रा:	दान समय	हवन-समिध:
सूर्य	माणिक	सुवर्ण	ताम्र	गेहूं	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	रक्तपुष्प	केशर	मूंग, रक्तगाव	रक्तचन्दन	७०००	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः	उदय	अर्क
चन्द्र	मोती	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दही	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	शंख	कपूर, श्वेतबैल	श्वेतचन्दन	११०००	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्राय नमः	सन्ध्या	पलाश
भौम	मूंगा	सुवर्ण	ताम्र	मसूर	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	रक्तकनेर	केशर	कस्तूरी, रक्तबैल	रक्तचन्दन	१००००	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः	घ. २ शेष दिन	खदिर
बुध	पन्ना	सुवर्ण	कांसी	मूंग	खांड	घी	हरावस्त्र	सर्वपुष्प	हाथीदांत	कपूर, शस्त्र	फल	१९०००	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः	घ. ५ शेष दिन	अपामार्ग
गुरु	पुखराज	सुवर्ण	कांसी	दालचने	खांड	घी	पीतवस्त्र	पीतपुष्प	हल्दी	पुस्तक, घोड़ा	पीतफल	१९०००	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः	संध्या	अश्वत्थ
शुक्र	हीरा	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दूध	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	सुगंध	दधि, श्वेतघोड़ा	श्वेतचन्दन	६०००	ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः	सूर्य उ.	उदुम्बर
शनि	नीलम	सुवर्ण	लोहा	उदड़	कुलथी	तेल	कृष्णवस्त्र	कृष्णपुष्प	कस्तूरी	कृष्णांग, भैंस	उपानह	२३०००	ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः	मध्याह्ने	शमी
राहु	गोमेद	सुवर्ण	सीसा	तिल	सरसों	तिल	नीलवस्त्र	कृष्णपुष्प	खड्ग	कंबल, घोड़ा	शूर्प	१८०००	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः	रात्री	दूर्वा
केतु	लसनी	सुवर्ण	लोहा	तिल	सप्तधान्य	तेल	धूम्रवस्त्र	धूम्रपुष्प	नारियल	कंबल, बकरा	शस्त्र	१७०००	ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः	रात्री	कुशा
मुख्या	मोती	सुवर्ण	कांसी	चावल	सुवर्ण	घी	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	कपूर	मसरी, श्वेतचन्दन	हाथीदांत	मुख्येशवत्	ॐ मुख्येशमन्त्रः	मुख्येशकाले	

नवग्रहों के व्रत की विधि

यदि किसी व्यक्ति का कोई ग्रह गोचर से या दशा-अन्तर्दशा से खराब चल रहा हो तो निम्नलिखित प्रकार के उस ग्रह का शास्त्रोक्त व्रत-विधान ब्रह्मचर्य पूर्वक करने से अशुभ फल निवृति होती है।

रविवार के व्रत की विधि-सूर्य का व्रत रविवार को करें। यह व्रत शुक्लपक्ष के पहले (जेठी) रविवार से आरम्भ करके वर्ष पर्यन्त तीस या कम से कम १२ व्रत करें। उस रोज़ केवल गेहूं की रोटी की लाल खण्ड के साथ या गेहूं का गुड़ से बना दलिया या हलवा इलायची डाल कर दान करके शेष का दिन में ही सूर्यास्त से पहले भोजन करें। नमक बिल्कुल न खायें। भोजन से पूर्व हो सके तो लाल वस्त्र पहनकर ऊपर चक्रोकत बीज-मन्त्र की माला जप करें। तदनन्तर सूर्य को गन्धाक्षत रक्त पुष्पदूर्वायुक्त अर्घ्य प्रदान करें। अपने मस्तक में लाल चन्दन का तिलक करें। जब व्रत का अन्तिम रविवार हो तो हवन पूर्णाहुति के बाद ब्राह्मण को भोजन करावें। ऐसा करने से सूर्य का अशुभ फल शुभ फल में परिणत हो जावेगा। तेजस्विता बढ़ेगी। नेत्र रोग, चर्म रोग एवं अन्य शारीरिक रोग भी शान्त होंगे।

सूर्य शान्ति का सरल उपचार :- लाल वस्तुओं का विशेष उपयोग जैसे चादर, परना तथा तांबे की अंगूठी का पहनना।

सोमवार के व्रत की विधि-चन्द्रमा का व्रत शुक्ल-पक्ष के प्रथम (जेठे) सोमवार से प्रारम्भ करके ५४ या १० व्रत करें। व्रत के दिन श्वेत वस्त्र धारण करके चक्रलिखित बीज-मन्त्र की ११ माला या ३ माला जप करें। सफेद फूलों से पूजन करके सफेद चन्दन का तिलक करें। मध्यान्ह के समय नमक के बिना दही - चावल, घी, खण्ड का यथाशक्ति दान करके स्वयं भोजन करें। जब व्रत का अन्तिम सोमवार हो उस दिन हवन पूर्णाहुति करके खीर-खण्ड से ब्राह्मण व बटुकों को भोजन करावें। इस व्रत के करने में व्यापार में लाभ, मानसिक कष्टों की शान्ति होती है, विशेष कार्य सिद्धयर्थ भी पूर्ण फलदायक होता है।

चन्द्र शान्ति का सरल उपचार:-सफेद जुराब, रूमाल, सफेद वस्त्र, दूध, दहीं का उपयोग, चांदी की अंगूठी पहनना।

मंगलवार के व्रत की विधि-यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) मंगलवार से प्रारम्भ करके २१ या ४५ व्रत करने चाहिएं। हो सके तो यह व्रत आजीवन रखें। बिना सिला हुआ लाल वस्त्र धारण करके बीज-मन्त्र की १, ५ या ७ माला जप करें। नमक सेवन न करे, यह जरूरी है। उस दिन गुड़ से बने हलवे का या लड्डुओं का दान करें। और स्वयं भी खावें। गुड़ से बना कुछ हलवा आदि बैल को भी खिलावें। मंगलवार का व्रत ऋण-हर्ता तथा सन्तति-सुखप्रद है। जब व्रत का अन्तिम मंगलवार हो उस दिन हवन-पूर्णाहुति करके लाल वस्त्र, तांबा, मसूर, गुड़, गेहूं तथा नारियल का दान करें। ब्राह्मणों तथा बच्चों को मीठा भोजन करावें।

मंगल शान्ति का सरल उपचार:- लाल रंग की वस्तुओं का उपयोग रात को लाल वस्त्र पहनें, तांबे के बर्तन, तांबे की अंगूठी पहनना।

बुधवार का व्रत- यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम बुधवार (जेठे) से प्रारम्भ करें। २१ या ४५ व्रत करें। हरा वस्त्र धारण करके बीज-मन्त्र की १७ या तीन माला जप करना चाहिए। उस दिन भोजन में नमक-रहित खण्ड, घी से बने पदार्थ जैसे मूंगी का बना हुआ हलवा, मूंगी की बनी मीठी पंजीरी या मूंगी के लड्डूओं का दान करे। फिर तीन तुलसीपत्र, गंगाजल या चरणामृत के साथ लेकर स्वयं भी उपरोक्त पदार्थ खावें। व्रत के अन्तिम बुधवार को हवन पूर्णाहुति करके अङ्गहीन भिक्षुक को मूंगीयुक्त भोजन कराकर हरा वस्त्र, मूंगी आदि का दान भी करें। इस व्रत से विद्या, धन-लाभ, व्यापार में तरक्की तथा स्वास्थ्य लाभ होता है। अमावस का व्रत करने से भी बुध ग्रह जन्य नेष्ट फल से मुक्ति मिलती है।

बुध शान्ति का सरल उपचारः- हरा रंग, हरे वस्त्र तथा श्रृंगार की अन्य वस्तुएं हरा रूमाल आदि रखना, कांसी के बर्तन में भोजन, बुधाष्टमी व्रत।

बृहस्पति के व्रत की विधि-यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठ) गुरूवार से आरम्भ करें, तीन वर्ष पर्यन्त या १६ गुरूवार व्रत करें, उस दिन पीत वस्त्र धारण करके बीज-मन्त्र की ११ या तीन माला जप करें। पीत पुष्पों से पूजन-अर्घ्य दानादि के बाद भोजन में चने के बेसन की बनी घी-खण्ड से बनी मिठाई लड्डू या हल्दी से पीले या केसरी चावल आदि ही खावें और यही दान करें। जब व्रत का अन्तिम गुरूवार हो तो हवन पूर्णाहुति के बाद ब्राह्मण व बटुकों को लड्डू भोजन करावे। स्वर्ण, पीत-वस्त्र चने की दाल आदि का दान करें। यह व्रत-विद्यार्थियों के लिए बुद्धि तथा विद्या-प्रद है, धन की स्थिरता तथा यश-वृद्धि करता है। अविवाहितों के लिए स्त्री प्राप्तिप्रद सिद्ध होता है।

बृहस्पति शान्ति का सरल उपचार- पीले वस्त्र, रूमाल आदि पीले फूल धारण करना, सोने की अंगूठी पहनना।

शुक्र के व्रत की विधि- यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठ) शुक्रवार से प्रारम्भ होता है। २१ या ३१ व्रत करें। श्वेत वस्त्र धारण करके बीज-मन्त्र की ३ या २१ माला जपें। भोजन में चावल, खण्ड या दूध से बने पदार्थ ही सेवन करें। यही पदार्थ यथा-शक्ति सम्भव हो तो एकाक्षी (एक आंख वाले) भिक्षुक को या श्वेत गाय को दें। जब व्रत का अन्तिम शुक्रवार हो, हवन पूर्णाहुति के बाद खीर-खण्ड से बने पदार्थ ब्राह्मण बटुकों को खिलावें। चांदी, श्वेतवस्त्र, खाण्ड, चावल का दान करें। इस व्रत से स्त्री पुत्र एवं ऐश्वर्य की वृद्धि होती है।

शुक्र शान्ति का सरल उपचारः- सफेद वस्त्र, सफेद रूमाल , सफेद फूल धारण करना आदि गाय को हरा घास या पेड़ा देना, शिव पूजन।

शनि के व्रत की विधि-यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठ) शनिवार से आरम्भ करे, व्रत ५१ या ३१ करने चाहिएं। व्रत के दिन काला वस्त्र धारण करके बीज-मन्त्र की १९ या तीन माला का जप करें। फिर एक बर्तन में शुद्ध जल, काले तिल, काले फूल या लवंग (लौंग), गङ्गाजल तथा शक्कर, थोड़ा दूध डालकर पश्चिम की ओर मुंह करके पीपल-वृक्ष की जड़ में डाल दें। भोजन में उड़द के आटे का बना पदार्थ, पंजीरी, कुछ तेल से पका हुआ पदार्थ कुत्ते व गरीब को दें तथा तेलपक्व वस्तु के साथ केला व अन्य फल स्वयं प्रयोग में लाना चाहिए। यही पदार्थ दान भी करें। व्रत के अन्तिम शनिवार को हवन पूर्णाहुति के बाद तेल में पकी हुई वस्तुओं को देने के बाद काला वस्त्र, कंबल उड़द तथा देसी जूता, तेल लगाकर दान करें। इस व्रत से सब प्रकार की सांसारिक परेशानी दूर हो जाती है। झगड़े में विजय होती है। लोह-मशीनरी कारखाने वालों के व्यापार में उन्नति होती है।

शनि शान्ति का सरल उपचारः- घर के परदे, जूते, जुराब, घड़ी का पट्टा, रूमाल आदि काले रंग के धारण करें।

राहू केतु के व्रत की विधि- शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठ) शनिवार से यह व्रत शुरू करना चाहिए। यह व्रत १८ करें। काला वस्त्र धारण करके १८ या ३ बीज-मन्त्र की माला जपें। तदनन्तर एक बर्तन में जल, दूर्वा और कुशा लेकर पीपल की जड़ में डालें। भोजन में मीठा चूरमा, मीठी रोटी समयानुसार रेवड़ी, भुग्गा, तिल के बने मीठे पदार्थ सेवन करें और यही दान में भी दें। रात को घी का दीपक जलाकर पीपल की जड़ में रख दें। इस व्रत से शत्रुभय दूर तथा राजपक्ष से विजय मिलती है।

राहु, केतु शान्ति का सरल उपचारः- नीला रूमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन, लोहे की अंगूठी पहनें।

ग्रहों के अरिष्ट-निवृत्त्यर्थ स्नान-विधि

यथा सिद्धौषधैः रोगाः नश्येयुर्मन्त्रतो भयम्॥
तथा स्नान-विधानेन ग्रह-दोषः प्रणश्यति॥

रवि ग्रह के दोष की शान्ति के लिए कभी-कभी व्रत के दिन बिल्ववृक्ष की जड़, देवदारू, मुलेठी, लाल फूल, केसर, पानी में उबाल कर स्नान करे। सोमवार के व्रत के दिन खिरनी की जड़, श्वेत, चन्दन, सिप्पी, पञ्चगव्य उबाल कर स्नान करें। ऐसे ही मंगल के दिन अनन्त मूल, रक्त चन्दन, मौलश्री, लाल फूल ये सब उबाल कर, बुध के दिन गोबर, मधु, चावल, विधारा उबाल कर, गुरु के दिन भारंगी, मुलैठी, श्वेत सरसों, मालती पुष्प उबाल कर, शुक्र के दिन इलायची, मजीठ तथा शनि के दिन काले तिल, सौंफ, मुरमा, अमलबेत, सफेद बिनौला उबाल कर स्नान करें। ऐसे ही राहु केतु की शान्ति के लिए शनिवार के दिन देवदारू, सरसों तथा लोहवान उबाल कर स्नान करें, तो ग्रह शान्ति होती है।

नोट- स्नानोक्त कोई वस्तु उपलब्ध न हो तो जो वस्तु मिले उससे ही स्नान करें।

सर्वग्रह किंवा सर्वविध शान्ति के लिए सामान्य औषध स्नान

लाजवन्ती (छुई-मुई), कूट, खिला, कांगनी, जौं, सरसों, देवदारु, हल्दी, सर्वौषधि लोध इन औषधियों के जल एवं से मतीर्थोदिक स्नान करने से सब ग्रहों की पीड़ा नष्ट होती है तथा पूर्व ही जो दान कह चुके हैं उनके करने से शान्ति होती है। गुरु, वचन, देवता ब्राह्मणों की वंदना, वेदादि श्रवण, साधुओं से बातें, मन की शुद्धता, जप, दान, होम तथा यज्ञ के करने से दुष्ट स्थानों में स्थित ग्रह पीड़ा नहीं करते (श्रीपतिः)॥

शनि विचार-अथ लघु कल्याणी (ढैया) फलम्-कल्याणी प्रददाति वा रविसुते राशेश्चतुर्थाष्टमं व्याधिः बन्धु विरोध देशगमनं क्लेशं च चिन्ताधिकम्। मृत्युं चैव करोति चापि मनुजं दुःखादि वह्नेर्भयं लोह शस्त्रभयं सदैव-अमुखं कुर्यादिमं सर्वदा॥ १॥ बृहत्कल्याणी फलम् . . . . राशौ द्वादश (१२) मूर्ध्नि जन्म (१) हृदये पादौ द्वितीये (२) शनिः। नानाक्लेशकरोऽति दुर्जनभयं पुत्रान्पशूल्पीडयेत्॥ हानिः स्थान्मरणं विदेशगमनं सौख्यं च साधारणम्, रामाक्षद्विविनाशनं प्रकुरुते तुर्याष्टमे वाऽथवा॥ २॥

सप्तधान्य- उड़द १. मूंगी २. गेहूं ३. चने ४. जौ ५. धान्य (तंडुल) ६. कंगनी ७.

अष्टगंध-अगर, कस्तूरी, कुंकुम कर्पूर, चन्दन, टोपीदार लौंग, गोरोचन देवदारु।

अष्टगंध धूप- अगर, छरीला, जटामासी, कर्पूर-कचरी, गुग्गुल, देवदारु गोमूत सफेद चन्दन।

नक्षत्र-राशि ज्ञान चक्र

राशिज्ञाने विशेष :- नक्षत्र वा राशि में श और ष में, व और ब में कोई भेद नहीं होता। जिसके नाम का पहला अक्षर संयुक्त हो, वहां प्रथमाक्षर ग्रहण करें। (संयोगाक्षरं नाम्नि ग्राह्यं तत्रादिमाक्षरम्)

राशयः	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
नक्षत्राणि	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिर	मृगशिर	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू. फा.	उ. फा.	उ. फा.	हस्त	चित्रा
प्रथमचरण	चू	ली	अ	०	ओ	वे	०	कु	के	०	हु	डी	मा	मो	टे	०	पू	पे
द्वितीय च.	चे	लू	०	ई	वा	वो	०	घ	को	०	हे	डू	मी	टा	०	टो	ष	पो
तृतीय च.	चो	ले	०	उ	वी	०	क	ङ	ह	०	हो	डे	मू	टी	०	पा	ण	०
चतुर्थ च.	ला	लो	०	ए	वु	०	की	छ	०	हि	डा	डो	मे	टू	०	पी	ठ	०

राशयः	तुला			वृश्चिक			धनु			मकर				कुम्भ			मीन		
नक्षत्राणि	चित्रा	स्वाती	विशाखा	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पू. षा.	उ. षा.	उ. षा.	अभिजित्	श्रवण	धनिष्ठा	धनिष्ठा	शतभिषा	पू. भा.	पू. भा.	उ. भा.	रेवती
प्रथमचरण	०	रू	ती	०	ना	नो	ये	भू	भे	०	जू	खी	गा	०	गो	से	०	दू	दे
द्वितीय च.	०	रे	तू	०	नी	या	यो	धा	०	भो	जे	खू	गी	०	सा	सो	०	थ	दो
तृतीय च.	रा	रो	ते	०	नू	यी	भा	फ	०	जा	जो	खे	०	गू	सी	दा	०	झ	चा
चतुर्थ च.	री	ता	०	तो	ने	यू	भी	ढ	०	जी	खा	खो	०	गे	सू	०	दी	ञ	ची

ध्यान दें— नामों का प्रारम्भ ङ, ञ, ण इन अक्षरों से नहीं होता। यदि नक्षत्र के आधार पर इन अक्षरों से नाम प्रारम्भ हो रहा हो तो ङ की जगह घ, ञ की जगह द तथा ण की जगह पू से प्रारम्भ करें। ऐसा करने से भेद नहीं होता।

॥ १ ॥ बहूनि यस्य नामानि नरस्य स्युः कथञ्च। ततः पश्चादुध्वं नाम ग्राह्यं स्वर-विशारदैः ॥ २ ॥ प्रसुप्तो भाषते येन येनागच्छति शब्दितः। तस्य नामाद्यवर्णो या मात्रा स स्वर एव हि ॥ ३ ॥ अथ जन्मराशि नामराश्योः प्रधानता निर्णीयते - विवाहे सर्वमांगल्ये यात्रादौ ग्रहगोचरे ॥ जन्मराशेः प्रधानत्वं नामराशिं न चिन्तयेत् ॥ ४ ॥ देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके ॥ नामराशेः प्रधानत्वं जन्मराशिं न चिन्तयेत् ॥ ५ ॥ काकिण्यां वर्ग शुद्धौ च दाने द्यूते स्वरोदये। मन्त्रे पुनर्भूवरणे च नामराशेः प्रधानता ॥ ६ ॥ कुर्यात्षोडश कर्माणि जन्मराशौ बलान्विते। सर्वाण्यन्यानि कर्माणि नामराशौ बलान्विते ॥ ७ ॥ विवाह घटनं चैवं लग्नजं ग्रहजं बलम्। नामभाकृचिन्तयेत् सर्वं जन्म न ज्ञायते यदा ॥ ८ ॥

अभिजित्-निर्णय-वैश्यप्रान्त्याधिः श्रुति-तिथि-भागतोऽभिजित्स्यात् ॥

उत्तराषाढ़ा का चौथा चरण श्रवण का पहला १५वां भाग जोड़कर उसके चार भाग करो। उसको अभिजित का एक चरण मानकर नाम रखने आदि के विचार में उपयोग करो। उत्तराषाढ़ा के तीन चरणों के हो चार भाग करके उत्तराषाढ़ा का एक-एक चरण मानो। श्रवण का १५वां भाग छोड़कर जो शेष रहे उसके चार भाग करो, उसको श्रवण के १-१ चरण मानो। इस प्रकार को प्रायः सामान्य गणक नहीं जानते, एतदर्थ यहां लिखा गया है।

राशि ज्ञानम्- चू. ल. अ मेषः, इ वो वृषः, क घ ङ छ ह मिथुनम् ॥
हीडो कर्कः, माटे सिंहः, टो प ष ण ठ पो कन्या ॥
रातें तुला तो ना यू वृश्चिक ये धफढभे धनुः ॥
भोजा खागी मकरः गुसाऽदः कुम्भः दीथझञदचो मीनः ॥

उपरोक्त राशि- ज्ञान में प्रत्येक राशि के आदि और अन्त का अक्षर है और जहां जो अक्षर बदलता है, वहां वह भी ले लिया गया है। जैसे-मेष में पहला अक्षर 'चू' लेने से अश्विनी के तीन चरण (चू चे चो) का ग्रहण होता है और 'ल' से (ला ली लू ले लो) पांचो का ग्रहण हुआ अर्थात् एक चरण (चौथा चरण) अश्विनी का और चतुर्थ चरण भरणी का ग्रहण हुआ और उसे कृत्तिका के प्रथम चरण इन नौ चरणों की एक राशि मेष हुई। इसी तरह अन्य राशियों का ज्ञान करें।

विशेष- जहां 'ज्ञ' का उच्चारण 'ग्य' होता है वहां ज्ञान चन्द्र का नक्षत्र उ. षा. और जहां इसका उच्चारण 'ग्य' होता है, वहां ज्ञान चन्द्र का नक्षत्र धनिष्ठा माना जाएगा क्योंकि 'ज' और 'ग' वर्ण क्रमशः उ. षा. और धनिष्ठा नक्षत्र में पड़ते हैं।

नोट- चन्द्रमा की राशि एवं नक्षत्र के अनुसार जातक का नाम रखने से फलितज्ञ को काफी सुभीता रहता है। नाम जानने से ही ज्योतिषी जातक के जन्म समय चन्द्रमा की राशि एवं नक्षत्र जान लेता है तथा फलित-शास्त्र में काफी महत्त्वपूर्ण फलादेश चन्द्रमा की स्थिति पर ही निर्भर है। इसका एक वैज्ञानिक रहस्य भी है। निकटतम होने से चन्द्रमा का प्रभाव भू-स्थित-वनपति एवं प्राणियों पर अन्य सभी ग्रहों की अपेक्षा अधिक होता है। ज्वारभाटा लाने में भी चन्द्रमा की देन सूर्य की देन से दुगुनी है। चन्द्रमा का ज्वार-भाटांक सूर्य के ज्वार-भाटांक से दुगुना है। चन्द्रमा के भगणकाल का स्त्री के मासिक-धर्म से साक्षात् सम्बन्ध है। आजकल वैज्ञानिकों ने कुछ प्रयोग भी किए हैं, जिससे अचर-जगत् (वनस्पति आदि) पर चन्द्रमा का प्रभाव स्पष्ट रूप से ज्ञात होता है। अतः जन्म-पत्र आदि के अभाव में चन्द्रमा की स्थिति से ही फलादेश करने की पारिपाटी फलितज्ञों में है।

नवीन- फलितवेत्ता जन्म-पत्र की अंग्रेज़ी तारीखों के हिसाब से भी फलादेश करने लग गए हैं। **इस पद्धति में सायन सूर्य की राशि के आधार पर ही फलादेश होता है। चन्द्रमा की राशि के आधार पर फलादेश करना अधिक उपयुक्त है। अतः प्राचीन फलित-शास्त्रियों ने जन्म-कालीन चन्द्रमा की स्थिति को जन्म राशि के नाम से कहा है। हमारे ज्योतिष के अनुसार इसी का महत्त्व है।**

नक्षत्रचरण एवं नवांशराशि–बोधक सारणी

प्रियव्रत शर्मा

ग्रह या लग्न किस राशि, नक्षत्र एवं नक्षत्रचरण (नवांश) में विद्यमान है– यह इस सारणी से ग्रह एवं लग्न–राश्यादि द्वारा जाना जा सकता है। ध्यान रहे–यहां दिए गए राश्यादि वे हैं, जहां राशि एवं नक्षत्रचरण (नवांश) प्रारम्भ होता है। जैसे– स्पष्ट सूर्य 5 रा. 27 अं. 20 क. हो तो सारणी से ज्ञात हो जाता है कि– सूर्य कन्या राशि, चित्रा नक्षत्र–द्वितीय चरण तथा कन्या के नवांश में है। क्योंकि यहां सूर्य कन्या राशि के ही नवांश में है, अतः यह वर्गोत्तम नवांश में है। कोष्ठक में वर्गोतम नवांश के साथ स्टार (★) लगाया गया है। कन्या के नवांश का स्वामी बुध है– यह भी सारणी में निर्दिष्ट है।

इस सारणी की मदद से नवांशकुण्डली लगाना बहुत आसान है।

ग्रह या लग्न रा. अं. क.	राशि नक्षत्र चरण	नवांश–राशि	नवांश–स्वामी	ग्रह या लग्न रा. अं. क.	राशि नक्षत्र चरण	नवांश–राशि	नवांश स्वामी	ग्रह या लग्न रा. अं. क.	राशि नक्षत्र चरण	नवांश–राशि	नवांश–स्वामी	ग्रह या लग्न रा. अं. क.	राशि नक्षत्र चरण	नवांश–राशि	नवांश–स्वामी
0 00 00	मेष अश्वि. 1	★मेष	मं.	3 00 00	कर्क पुन. 4	★कर्क	चं.	6 00 00	तुला चित्रा 3	★तुला	शु.	9 00 00	मकर उ. षा. 2	★मकर	श.
0 03 20	,, ,, 2	वृष	शु.	3 03 20	,, पुष्य 1	सिंह	सू.	6 03 20	,, ,, 4	वृश्चि.	मं.	9 03 20	,, ,, 3	कुम्भ	श.
0 06 40	,, ,, 3	मिथुन	बु.	3 06 40	,, ,, 2	कन्या	बु.	6 06 40	,, स्वाती 1	धनु	गु.	9 06 40	,, ,, 4	मीन.	गु.
0 10 00	,, ,, 4	कर्क	चं.	3 10 00	,, ,, 3	तुला	शु.	6 10 00	,, ,, 2	मकर	श.	9 10 00	,, श्रव. 1	मेष	मं.
0 13 20	,, भर. 1	सिंह	सू.	3 13 20	,, ,, 4	वृश्चि.	मं.	6 13 20	,, ,, 3	कुम्भ	श.	9 13 20	,, ,, 2	वृष	शु.
0 16 40	,, ,, 2	कन्या	बु.	3 16 40	,, आश्ले. 1	धनु	गु.	6 16 40	,, ,, 4	मीन	गु.	9 16 40	,, ,, 3	मिथुन	बु.
0 20 00	,, ,, 3	तुला	शु.	3 20 00	,, ,, 2	मकर	श.	6 20 00	,, विशा. 1	मेष	मं.	9 20 00	,, ,, 4	कर्क	चं.
0 23 20	,, ,, 4	वृश्चि.	मं.	3 23 20	,, ,, 3	कुम्भ	श.	6 23 20	,, ,, 2	वृष	शु.	9 23 20	,, धनि. 1	सिंह	सू.
0 26 40	,, कृत्ति. 1	धनु	गु.	3 26 40	,, ,, 4	मीन	गु.	6 26 40	,, ,, 3	मिथुन	बु.	9 26 40	,, ,, 2	कन्या	बु.
1 00 00	वृष ,, 2	मकर	श.	4 00 00	सिंह मघा 1	मेष	मं.	7 00 00	वृश्चि. ,, 4	कर्क	चं.	10 00 00	कुम्भ ,, 3	तुला	शु.
1 03 20	,, ,, 3	कुम्भ	श.	4 03 20	,, ,, 2	वृष	शु.	7 03 20	,, अनु. 1	सिंह	सू.	10 03 20	,, ,, 4	वृश्चि.	मं.
1 06 40	,, ,, 4	मीन	गु.	4 06 40	,, ,, 3	मिथुन	बु.	7 06 40	,, ,, 2	कन्या	बु.	10 06 40	,, शत. 1	धनु	गु.
1 10 00	,, रोहि. 1	मेष	मं.	4 10 00	,, ,, 4	कर्क	चं.	7 10 00	,, ,, 3	तुला	शु.	10 10 00	,, ,, 2	मकर	श.
1 13 20	,, ,, 2	★वृष	शु.	4 13 20	,, पू.फा. 1	★सिंह	सू.	7 13 20	,, ,, 4	★वृश्चि	मं.	10 13 20	,, ,, 3	★कुम्भ	श.
1 16 40	,, ,, 3	मिथुन	बु.	4 16 40	,, ,, 2	कन्या	बु.	7 16 40	,, ज्येष्ठा 1	धनु	गु.	10 16 40	,, ,, 4	मीन	गु.
1 20 00	,, ,, 4	कर्क	चं.	4 20 00	,, ,, 3	तुला	शु.	7 20 00	,, ,, 2	मकर	श.	10 20 00	,, पू.भा. 1	मेष	मं.
1 23 20	,, मृग. 1	सिंह	सू.	4 23 20	,, ,, 4	वृश्चि.	मं.	7 23 20	,, ,, 3	कुम्भ	श.	10 23 20	,, ,, 2	वृष	शु.
1 26 40	,, ,, 2	कन्या	बु.	4 26 40	,, उ.फा. 1	धनु	गु.	7 26 40	,, ,, 4	मीन	गु.	10 26 40	,, ,, 3	मिथुन	बु.
2 00 00	मिथुन ,, 3	तुला	शु.	5 00 00	कन्या ,, 2	मकर	श.	8 00 00	धनु मूल 1	मेष	मं.	11 00 00	मीन ,, 4	कर्क	चं.
2 03 20	,, ,, 4	वृश्चि.	मं.	5 03 20	,, ,, 3	कुम्भ	श.	8 03 20	,, ,, 2	वृष	शु.	11 03 20	,, उ.भा. 1	सिंह	सू.
2 06 40	,, आर्द्रा 1	धनु	गु.	5 06 40	,, ,, 4	मीन	गु.	8 06 40	,, ,, 3	मिथुन	बु.	11 06 40	,, ,, 2	कन्या	बु.
2 10 00	,, ,, 2	मकर	श.	5 10 00	,, हस्त 1	मेष	मं.	8 10 00	,, ,, 4	कर्क	चं.	11 10 00	,, ,, 3	तुला	शु.
2 13 20	,, ,, 3	कुम्भ	श.	5 13 20	,, ,, 2	वृष	शु.	8 13 20	,, पूषा. 1	सिंह	सू.	11 13 20	,, ,, 4	वृश्चि.	मं.
2 16 40	,, ,, 4	मीन	गु.	5 16 40	,, ,, 3	मिथुन	बु.	8 16 40	,, ,, 2	कन्या	बु.	11 16 40	,, रेव. 1	धनु	गु.
2 20 00	,, पुन. 1	मेष	मं.	5 20 00	,, ,, 4	कर्क	चं.	8 20 00	,, ,, 3	तुला	शु.	11 20 00	,, ,, 2	मकर	श.
2 23 20	,, ,, 2	वृष	शु.	5 23 20	,, चित्रा 1	सिंह	सू.	8 23 20	,, ,, 4	वृश्चि.	मं.	11 23 20	,, ,, 3	कुम्भ	श.
2 26 40	,, ,, 3	★मिथुन	बु.	5 26 40	,, ,, 2	★कन्या	बु.	8 26 40	,, उ.षा. 1	★धनु	गु.	11 26 40	,, ,, 4	★मीन	गु.

बारह राशियों का मासिक फलादेश (सम्वत् 2064 वि.)

राशि	वैशाख (14 अप्रै. से 14 मई तक, सन् 2007 ई.)	राशि	ज्येष्ठ (15 मई से 14 जून तक सन्, '07 ई.)	राशि	आषाढ़ (15 जून से 15 जुला. तक, सन् '07 ई.)
मेष	स्थान परिवर्तन, धनलाभ, निजी लोगों से अनबन, भ्रातृ-सुख, नई योजना, स्त्रीसुख, कारोबार ठीक, आय से व्यय अधिक। अप्रै. 15,16,17,24,25; मई 4,5,13,14 अशुभ।	मेष	सेहत गड़बड़, अर्थलाभ, भ्रातृकष्ट, दोस्तों से अनबन, सन्तानपक्ष से चिन्ता, सत्रीसुख, कारोबार ठीक। मई 21, 22, 31; जून 1, 9, 10 अशुभ।	मेष	बन्धनभय, स्थानान्तरण का विचार, अर्थहानि, अचानक कष्ट, सम्पत्तिविवाद, गुप्त चिन्ता, कार्यान्तर से लाभ। जून 17, 18, 19, 27, 28; जुला. 6, 7, 8 अशुभ।
वृष	सेहत ठीक, अर्थलाभ, भ्रातृकष्ट, मित्रों से अनबन, सन्तानसुख, स्त्रीसुख, कारोबार में रद्दोबदल। अप्रैल 17, 18, 26, 27, 28; मई 6, 7, 8 अशुभ।	वृष	सेहत ठीक, अर्थहानि, अपमानभय, नई योजना, शत्रु प्रबल, स्त्रीसुख, कार्यान्तर से लाभ। मई 15, 16, 23, 24, 25, जून 2, 3, 4, 11, 12 अशुभ।	वृष	वात-पित्त विकार, आर्थिक परेशानी, सन्ततिसुख, स्त्रीपक्ष से सुख, कारोबार ठीक, मासान्त में खर्च अधिक। जून 20, 21, 30; जुलाई 1, 8, 9, 10 अशुभ।
मिथुन	सेहत ठीक, अर्थहानि, भ्रातृकष्ट, सन्तान से परेशानी, स्त्रीपक्ष शुभ, मासान्त में बिगड़े काम बनें। अप्रैल 19, 20, 21, 29, 30; मई 8, 9, 10 अशुभ।	मिथुन	रक्त-पित्तविकार, कर्जा चढ़े, बन्धुसुख, सन्तानपक्ष शुभ, स्त्री से सुख, कारोबार ठीक, नेत्रकष्ट-भय। मई 17, 18, 26, 27; जून 5, 6, 13, 14 अशुभ।	मिथुन	पेट में खराबी, अर्थलाभ, मन परेशान रहे, नई योजना, गुप्त चिन्ता, अपमान भय, कारोबार कमजोर। जून 22, 23, 24; जुलाई 2, 3, 11, 12 अशुभ।
कर्क	मानसिक परेशानी, राजपक्ष से भय, धनहानि, भ्रातृपक्ष से लाभ, नई योजनाएं, स्त्रीसुख, मासान्त में कष्ट। अप्रैल 14, 15, 21, 22, 23; मई 1, 2, 3, 11, 12 अशुभ।	कर्क	उदरविकार, धनहानि, अच्छे लोगों से मेल, सन्तानसुख, स्त्रीकष्ट, आय से व्यय अधिक। मई 19, 20, 28, 29, 30; जून 7, 8 अशुभ।	कर्क	सेहत ठीक, धनलाभ, स्त्रीकष्ट, शत्रु बढ़ें, कारोबार में परिवर्तन के योग, मासान्त शुभ। जून 15, 16, 17, 25, 26; जुलाई 4, 5, 13, 14, 15 अशुभ
सिंह	उदरविकार, धनलाभ, घरेलू झंझट, मित्रों से मदद, सन्तानपक्ष शुभ, शत्रु कमजोर, कारोबार ठीक। अप्रैल 15, 16, 17, 24, 25; मई 4, 5, 13, 14 अशुभ।	सिंह	वायुविकार, अर्थलाभ, भ्रातृसुख, सम्पत्तिविवाद, शत्रु कमजोर पड़ें, क्रोध बढ़े, कारोबार ठीक। मई 21, 22, 31; जून 1, 9, 10 अशुभ।	सिंह	धनलाभ, भ्रातृसुख, यात्रा में कष्ट, सन्तानपक्ष से चिन्ता, स्त्रीसुख, निजी लोगों से अनबन। जून 17, 18, 19, 27, 28; जुलाई 6, 7, 8 अशुभ।
कन्या	सेहत ठीक, अर्थहानि, भ्रातृसुख, मित्र से अनबन, शुभ समाचार, शत्रु हतप्रभ, स्त्रीलाभ, कारोबार कुछ ठीक। अप्रैल 17, 18, 26, 27, 28; मई 6, 7, 8 अशुभ।	कन्या	वायुविकार, अर्थलाभ होकर हानि, भाई से लाभ, सन्तति-चिन्ता, क्रोध बढ़े, स्त्रीपक्ष से लाभ। मई 15, 16, 23, 24, 25; जून 2, 3, 4, 11, 12 अशुभ।	कन्या	अरिष्टभय, अर्थलाभ होकर हानि, भाई से मदद, शोक समाचार, कार्यान्तर से लाभ। जून 20, 21, 30; जुलाई 1, 8, 9, 10 अशुभ।
तुला	वायुविकार, अर्थलाभ, घरेलू झंझट, मित्रों से मेल, असफल योजना, स्त्रीसुख, कारोबार गड़बड़। अप्रैल 19, 20, 21, 29, 30; मई 8, 9, 10 अशुभ।	तुला	सेहत ठीक, अर्थलाभ, भ्रातृसुख, शत्रु प्रबल, सम्पत्ति-विवाद, स्त्रीकष्ट, कारोबार गड़बड़। मई 17, 18, 26, 27; जून 5, 6, 13, 14 अशुभ।	तुला	यात्रा में कष्ट, धनहानि, वृथाविवाद, स्त्रीपक्ष शुभ, कारोबार कुछ कमजोर, मासान्त में विशेष वृथाव्यय। जून 22, 23, 24; जुलाई 2, 3, 11, 12 अशुभ।
वृश्चिक	सेहत ठीक, अर्थलाभ, बन्धुसुख, मित्रों से अनबन, सन्तति चिन्ता, स्त्रीपक्ष से लाभ, कार्यान्तर का विचार,। अप्रैल 14, 15, 21, 22, 23; मई 1, 2, 3, 11, 12 अशुभ।	वृश्चिक	कफविकार, अर्थलाभ, उत्साह बढ़े, बन्धुकष्ट, नई योजना से लाभ, स्त्रीसुख, मासमध्य में भारी कष्टभय। मई 19, 20, 28, 29, 30; जून 7, 8 अशुभ।	वृश्चिक	सेहत ठीक, अर्थहानि से परेशानी, उत्साह बना रहे, सन्तानपक्ष से सुख, स्त्रीकष्ट, कारोबार गड़बड़। जून 15, 16, 17, 25, 26; जुलाई 4, 5, 13, 14, 15 अशुभ
धनु	कफ-वायु विकार, अर्थलाभ होकर हानि हो, भाई से अनबन, अच्छे लोगों से मेल, स्त्रीकष्ट, कारोबार ठीक। अप्रैल 15,16,17,24,25; मई 4,5,13,14 अशुभ।	धनु	सेहत ठीक, नेत्रकष्टभय, वृथाव्यय, बन्धु से मदद, परीक्षा में सफलता, स्त्रीकष्ट, कारोबार कमजोर। मई 21, 22, 31; जून 1, 9, 10 अशुभ।	धनु	उदरविकार, अर्थलाभ, सम्पत्तिलाभ, नई योजना, कारोबार ठीक, अच्छे लोगों से मेल। जून 17, 18, 19, 27, 28; जुला. 6, 7, 8 अशुभ।
मकर	रक्त-पित्तविकार, कर्जा सिर चढ़े, बन्धु से मदद, सम्पत्तिविवाद, स्त्रीकष्ट, चोटभय, आय से व्यय अधिक। अप्रैल 17, 18, 26, 27, 28; मई 6, 7, 8 अशुभ।	मकर	सेहत गड़बड़, अर्थलाभ, उत्साह बढ़े, अच्छे लोगों से मेल, स्त्रीकष्ट, कारोबार ठीक। मई 15, 16, 23, 24, 25; जून 2, 3, 4, 11, 12 अशुभ।	मकर	सेहत ठीक, धनलाभ, मित्रों से मेल, सन्तानपक्ष से कष्ट, शत्रु प्रबल, स्त्रीकष्ट, कारोबार ठीक। जून 20, 21, 30; जुलाई 1, 8, 9, 10 अशुभ।
कुम्भ	उदरविकार, मन परेशान, क्रोध बढ़े, गृहक्लेश, स्त्रीकष्ट, मासान्त में कारोबार ठीक, उलझे काम बनें। अप्रैल 19, 20, 21, 29, 30; मई 8, 9, 10 अशुभ।	कुम्भ	सेहत ठीक, अर्थलाभ होकर हानि, यात्रा में कष्ट, असफल योजना, मन अशान्त, कारेबार कुछ ठीक। मई 17, 18, 26, 27; जून 5, 6, 13, 14 अशुभ।	कुम्भ	पित्तविकार, धनहानिभय, बन्धुकष्ट, गुप्त चिन्ता, कारोबार में रद्दोबदल, वृथाविवाद से बचें। जून 22, 23, 24; जुलाई 2, 3, 11, 12 अशुभ।
मीन	सेहत ठीक, अर्थ लाभ होकर हानि, बन्धुसुख, सन्तानपक्ष से चिन्ता, स्त्रीपक्ष से लाभ, कारोबार ठीक। अप्रैल 14, 15, 21, 22, 23; मई 1, 2, 3, 11, 12 अशुभ।	मीन	पित्तविकार, अर्थलाभ होकर हानि, भ्रातृसुख, सम्पत्तिविवाद, नई योजना असफल, मासान्त में लाभ। मई 19, 20, 28, 29, 30; जून 7, 8 अशुभ।	मीन	सेहत ठीक, अर्थलाभ होकर हानि, निजीजनों से अनबन, मित्रों से धोखा, स्त्रीसुख, आय से व्यय अधिक। जून 15, 16, 17, 25, 26; जुलाई 4, 5, 13, 14, 15 अशुभ

बारह राशियों का मासिक फलादेश (सम्वत् 2064 वि.)

राशि	श्रावण (16 जुला. से 16 अग. तक, सन् '07 ई.)	राशि	भाद्रपद (17 अग. से 16 सितं. तक, सन् '07 ई.)	राशि	आश्विन (17 सितं. से 16 अक्तू. तक, सन् '07 ई.)
मेष	सेहत ठीक, आय से व्यय अधिक, मित्र सुख, सन्तानपक्ष शुभ, शत्रु प्रबल, अचानक कष्ट, कारोबार ठीक। जुला. 16, 24, 25, 26; अग. 2, 3, 4, 11, 12, 13 अशुभ।	मेष	वृथाविवाद से बचें, बन्धनभय, धनहानि का योग, अपने भी पराए बनें, कुछ अच्छे लोगों से मदद। अग. 21, 22, 30, 31; सितं. 7, 8, 9 अशुभ।	मेष	बन्धनभय, स्थानहानिभय, अर्थलाभ, रक्त-चाप बढ़े, स्त्रीपक्ष से मदद, कारोबार ठीक। सितं. 17, 18, 19, 26, 27; अक्तू. 4, 5, 6, 14, 15, 16 अशुभ।
वृष	शत्रुपक्ष से चिन्ता, रोगभय, भाई से मदद, शुभ यात्रा, अपमानभय, वृथाविवाद से बचें। जुला. 17, 18, 19, 27, 28; अग. 5, 6, 13, 14, 15 अशुभ।	वृष	नीच से अपमानभय, कारोबार कुछ ठीक रहे, भाई-बन्धु से मदद, रोगभय, शत्रु प्रबल, स्त्रीसुख। अग. 23, 24, 25; सितं. 1, 2, 10, 11 अशुभ।	वृष	धनलाभ होकर हानि हो, सन्तानपक्ष से सुख, स्त्रीसुख, कार्यान्तर का विचार। सितं. 20, 21, 28, 29; अक्तू. 7, 8 अशुभ।
मिथुन	सेहत ठीक, अर्थहानि, बन्धुकष्ट, उत्साह बना रहे। कारोबार ठीक, आय से व्यय अधिक। जुला. 19, 20, 21, 29, 30, 31; अग. 7, 8, 16 अशुभ!	मिथुन	सेहत गड़गड़, अर्थलाभ होकर हानि हो, शत्रु प्रबल, यात्रा में कष्ट, आय से व्यय अधिक। अग. 17, 26, 27; सितं. 3, 4, 12, 13, 14 अशुभ।	मिथुन	कष्टभय, धनलाभ, सन्तानसुख, गुप्त चिन्ता, कारोबार में रुकावट, आय से व्यय अधिक। सितं. 22, 23, 30; अक्तू. 1, 2, 9, 10, 11 अशुभ।
कर्क	कफ-वायुविकार, धनलाभ, असफल योजना, स्त्रीसुख, अचानक धनहानि का कारण बने। जुला. 22, 23, 24, 31; अग. 1, 2, 9, 10 अशुभ।	कर्क	सेहत ठीक, अर्थलाभ हो, भाई-बन्धु से अनबन, सन्तानपक्ष शुभ, स्त्रीसुख, कारोबार में रद्दोबदल। अग. 18, 19, 20, 28, 29; सितं. 5, 6, 7, 15, 16 अशुभ।	कर्क	सेहत ठीक, कर्ज चढ़े, भाई व बन्धुकष्ट, स्त्री के लिए खर्च, कारोबार कुछ ठीक, वृथा-विवाद से बचें। सितं. 24, 25; अक्तू. 2, 3, 4, 12, 13, 14 अशुभ।
सिंह	सेहत ठीक, धनलाभ हो, निजी लोगों से अनबन, स्त्रीसुख, कारोबार में रद्दोबदल, मन चिन्तित। जुला. 16, 24, 25, 26; अग. 2, 3, 4, 11, 12, 13 अशुभ।	सिंह	कफ-वायुविकार, कर्जा बढ़े, निजी लोगों से अनबन, मन अशान्त, गुप्त चिन्ता, गुप्त शत्रु से भय। अग. 21, 22, 30, 31; सितं. 7, 8, 9 अशुभ।	सिंह	सेहत गड़बड़, वृथाव्यय, सन्ततिसुख, स्त्रीसुख, कारोबार में हानि से चिन्ता। सितं. 17, 18, 19, 26, 27; अक्तू. 4, 5, 6, 14, 15, 16 अशुभ।
कन्या	सेहत ठीक, आमदन से खर्च अधिक, बन्धुसुख, स्त्रीपक्ष से लाभ, कारोबार में रुकावट। जुला. 17, 18, 19, 27, 28; अग. 5, 6, 13, 14, 15 अशुभ।	कन्या	रक्त-पित्तविकार, अर्थहानि, बन्धुसुख, नई योजना से लाभ, स्त्रीपक्ष से चिन्ता, विरोधी पक्ष प्रबल। अग. 23, 24, 25; सितं. 1, 2, 10, 11 अशुभ।	कन्या	उदरविकार, वृथाधनहानि, सन्तान हेतु विशेष खर्च, स्त्रीकष्ट, कारोबार बेहतर। सितं. 20, 21, 28, 29; अक्तू. 7, 8 अशुभ।
तुला	रक्त-पित्तविकार, वृथाविवाद, धनहानि, सम्पत्तिलाभ, स्त्रीकष्ट, कारोबार कमजोर। जुला. 19, 20, 21, 29, 30, 31; अग. 7, 8, 16 अशुभ।	तुला	उदरविकार, धनलाभ, बन्धुसुख, सम्पत्तिसुख, स्त्रीपक्ष से झंझट, कारोबार ठीक। अग. 17, 26, 27; सितं. 3, 4, 12, 13, 14 अशुभ।	तुला	सेहत ठीक, सम्पतिविवाद, सन्ततिसुख, अचानक लाभयोग, स्त्रीपक्ष से चिन्ता, कारोबार ठीक। सितं. 22, 23, 30; अक्तू. 1, 2, 9, 10, 11 अशुभ।
वृश्चिक	उदरविकार, धनलाभ, भ्रातृपक्ष से शुभ, सफल योजना, नीच से अपमानभय, कारोबार ठीक। जुला. 22, 23, 24, 31; अग. 1, 2, 9, 10 अशुभ।	वृश्चिक	सेहत ठीक, धनलाभ, उत्साह बना रहे, गुप्त शत्रु प्रबल, स्त्रीपक्ष शुभ, कारोबार कुछ ठीक। अग. 18, 19, 20, 28, 29; सितं. 5, 6, 7, 15, 16 अशुभ।	वृश्चिक	क्रोध बढ़े, धनलाभ, सन्तान हेतु विशेष खर्च, आय से व्यय अधिक। सितं. 24, 25; अक्तू. 2, 3, 4, 12, 13, 14 अशुभ।
धनु	सेहत ठीक, अर्थलाभ हो, अच्छे लोगों से मेल, वृथाविवाद से बचें, कारोबार ठीक। जुला. 16, 24, 25, 26; अग. 2, 3, 4, 11, 12, 13 अशुभ।	धनु	अर्थहानिभय, असफल योजना, सन्तानपक्ष से चिन्ता, कारोबार में परेशानी, घरेलू झंझट। अग. 21, 22, 30, 31; सितं. 7, 8, 9 अशुभ।	धनु	सेहत ठीक, नेत्रकष्ट, सन्तानपक्ष से चिन्ता, स्त्रीपक्ष से सुख, द्रव्यलाभ, गुप्त शत्रु से सावधान रहें। सितं. 17, 18, 19, 26, 27; अक्तू. 4, 5, 6, 14, 15, 16 अशुभ।
मकर	सेहत ठीक, धनलाभ, बन्धुसुख, सम्पत्तिविवाद, वृथाव्यय, स्थानान्तर व कार्यान्तर का योग। जुला. 17, 18, 19, 27, 28; अग. 5, 6, 13, 14, 15 अशुभ।	मकर	क्रोध बढ़े, वृथाविवाद से बचें, यात्रा में कष्ट, स्त्रीपक्ष से लाभ, कारोबार कुछ कमजोर। अग. 23, 24, 25; सितं. 1, 2, 10, 11 अशुभ।	मकर	शरीरपीड़ा, धनलाभ, उत्साहवृद्धि, मासमध्य में कष्ट-भय, कारोबार में तरक्की। सितं. 20, 21, 28, 29; अक्तू. 7, 8 अशुभ।
कुम्भ	सेहत ठीक, धनलाभ, सम्पत्तिविवाद, निजी लोगों से अनबन, स्त्रीसुख, कार्यान्तर से लाभ। जुला. 19, 20, 21, 29, 30, 31; अग. 7, 8, 16 अशुभ।	कुम्भ	वायुविकार, आय से व्यय अधिक, शत्रु से भय, कारोबार ठीक, मासान्त में सुख व अर्थ लाभ। अग. 17, 26, 27; सितं. 3, 4, 12, 13, 14 अशुभ।	कुम्भ	शत्रु हतप्रभ, विशेष खर्च हो, घरेलू झंझट बढ़ें, बनते कार्य में रुकावट, अशुभ समाचार। सितं. 22, 23, 30; अक्तू. 1, 2, 9, 10, 11 अशुभ।
मीन	कफ-वायुविकार, अर्थलाभ होकर हानि, निजीलोगों से मनमुटाव, शत्रु प्रबल, स्त्रीसुख, कारोबार गड़बड़। जुला. 22, 23, 24, 31; अग. 1, 2, 9, 10 अशुभ।	मीन	मन चिन्तित, अच्छा लाभ होकर हानि हो, सन्तानपक्ष से शुभ समाचार, कारोबार में मन लगे। अग. 18, 19, 20, 28, 29; सितं. 5, 6, 7, 15, 16 अशुभ।	मीन	रोगभय, वायुविकार, धनहानि, वृथाकलह व विवाद से बचें, मासान्त में धनलाभ होकर हानि हो। सितं. 24, 25; अक्तू. 2, 3, 4, 12, 13, 14 अशुभ।

बारह राशियों का मासिक फलादेश (सम्वत् 2064 वि.)

राशि	कार्तिक (17 अक्तू. से 15 नवं. तक, सन् '07 ई.)	राशि	मार्गशीर्ष (16 नवं. से 15 दिसं. तक, सन् '07 ई.)	राशि	पौष (16 दिसं., '07 से 13 जन. सन् 2008 ई. तक)
मेष	राजभय, धनलाभ, भ्रातृसुख, सन्तानपक्ष से हानि, स्त्रीपक्ष से चिन्ता, मासान्त में धनलाभ। अक्तू. 24, 25; नवं. 1, 2, 11, 12 अशुभ।	मेष	राजभय, स्थानहानि, अचानक लाभ, निजी लोगों से अनबन, स्त्रीपक्ष शुभ, सन्तानसुख। नवं. 20, 21, 28, 29, 30; दिसं. 8, 9, 10 अशुभ।	मेष	कष्टभय, स्थानान्तरण का योग, धनलाभ, उत्साह बढ़े, पापकर्म में मन लगे, स्त्रीकष्ट, किस्मत साथ न दे। दिसं. 17, 18, 19, 26, 27; जन. 4, 5, 6 अशुभ।
वृष	कष्टभय, धनलाभ होकर हाथ से निकले, अशुभ समाचार, शत्रु प्रबल, कारोबार में परेशानी व रुकावट। अक्तू. 17, 18, 26, 27; नवं. 3, 4, 5, 13, 14, 15 अशुभ।	वृष	आय से व्यय अधिक, धनहानियोग, उत्साह बना रहे, गुप्त चिन्ता, स्त्रीकष्ट, कारोबार ठीक। नवं. 22, 23, 30; दिसं. 1, 2, 10, 11, 12 अशुभ।	वृष	आर्थिक तंगी, सेहत ठीक, शत्रु बढ़ें, वृथाविवाद से दूर रहें, आय से व्यय अधिक। दिसं. 20, 21, 28, 29; जन. 7, 8 अशुभ।
मिथुन	सेहत ठीक, मानसिक परेशानी बढ़े, अर्थहानिभय, स्त्रीकष्ट, आय से व्यय अधिक। अक्तू. 19, 20, 21, 28, 29; नवं. 6, 7 अशुभ।	मिथुन	लाभ होकर हाथ से निकले, सन्तानपक्ष शुभ, शत्रु हतप्रभ, रोगभय, आय–व्यय बराबर। नवं. 16, 17, 24, 25; दिसं. 3, 4, 5, 13, 14 अशुभ।	मिथुन	लाभ होकर हानि हो, गुप्त शत्रु से सावधान, नीच से अपमानभय, सन्तानपक्ष शुभ, स्त्रीकष्ट। दिसं. 22, 23, 29, 30, 31; जन. 9, 10, 11 अशुभ।
कर्क	रक्त–पित्तविकार, हाथ तंग रहे, शत्रु प्रबल, गुप्त चिन्ता, वृथाविवाद से बचें। अक्तू. 22, 23, 30, 31 ; नवं. 8, 9, 10 अशुभ।	कर्क	रोगभय, धनलाभ, भ्रातृसुख, बन्धुओं से मेल, सन्ततिचिन्ता, स्त्री से अनबन, कारोबार ठीक। नवं. 18, 19, 26, 27; दिसं. 5, 6, 7, 15 अशुभ।	कर्क	सेहत ठीक, धनहानि, बन्धुकष्ट, मन परेशान, शत्रु बढ़ें, लड़ाई–झगड़े से बचें, कारोबार कुछ ठीक। दिसं. 16, 17, 24, 25; जन. 2, 3, 11, 12, 13 अशुभ।
सिंह	हानि–कष्टभय, धनलाभ, बन्धुकष्ट, शत्रु से भय, नीच से अपमानभय, कारोबार गड़बड़। अक्तू. 24, 25; नवं. 1, 2, 11, 12 अशुभ।	सिंह	सेहत ठीक, धनलाभ होकर हानि हो, निजीलोगों से मदद, सन्तानपक्ष शुभ, कारोबार ठीक। नवं. 20, 21, 28, 29, 30; दिसं. 8, 9, 10 अशुभ।	सिंह	सुख और वित्तलाभ, सन्तानपक्ष से हानियोग, स्त्रीसुख, कारोबार कुछ ठीक, मासान्त समस्यात्मक। दिसं. 17, 18, 19, 26, 27; जन. 4, 5, 6 अशुभ।
कन्या	सेहत ठीक, अर्थहानि, वृथाविवाद से बचें, शत्रु बढ़ें, कारोबार कुछ ठीक नजर आए। अक्तू. 17, 18, 26, 27; नवं. 3, 4, 5, 13, 14, 15 अशुभ।	कन्या	सेहत गड़बड़, अर्थलाभ होकर हाथ से निकले, सम्पत्ति–लाभ का योग, विशेष कष्टभय। नवं. 22, 23, 30; दिसं. 1, 2, 10, 11, 12 अशुभ।	कन्या	नेत्रकष्ट, खर्च विशेष हो, निजीजनों से मनमुटाव, लड़ाई–झगड़े से बचें, कार्यान्तर से लाभ। दिसं. 20, 21, 28, 29; जन. 7, 8 अशुभ।
तुला	यात्रा में कष्ट, लड़ाई–झगड़े से बचें, शरीर में पीड़ा, उत्साह बना रहे; स्त्रीपक्ष से कलह। अक्तू. 19, 20, 21, 28, 29; नवं. 6, 7 अशुभ।	तुला	कफ–वायुविकार, आर्थिक चिन्ता, शत्रु बढ़ें, सन्तान व स्त्रीपक्ष ठीक, मासान्त में राजभय। नवं. 16, 17, 24, 25; दिसं. 3, 4, 5, 13, 14 अशुभ।	तुला	राजभय, अर्थलाभ, वृथाव्यय, सन्तानसुख, यात्रा में कष्ट, राजपक्ष से कष्ट। दिसं. 22, 23, 29, 30, 31; जन. 9, 10, 11 अशुभ।
वृश्चिक	सेहत ठीक, नेत्रकष्ट, धननाश, शत्रु बढ़ें, स्त्रीसुख, कार्यान्तर व स्थानान्तर का विचार। अक्तू. 22, 23, 30, 31 ; नवं. 8, 9, 10 अशुभ।	वृश्चिक	भयपीड़ा, अर्थलाभ होकर हानि हो, अशुभ समाचार, कार्यान्तर व स्थानान्तर का विचार। नवं. 18, 19, 26, 27; दिसं. 5, 6, 7, 15 अशुभ।	वृश्चिक	कष्टभय, कलह–धनहानि, आकस्मिक धनप्राप्ति का योग भी है, शत्रु प्रबल, कारोबार कमजोर। दिसं. 16, 17, 24, 25; जन. 2, 3, 11, 12, 13 अशुभ।
धनु	शत्रुभय, राजपक्ष से चिन्ता, धनलाभ, सन्तान हेतु खर्च, स्त्रीपक्ष ठीक, आय से व्यय अधिक। अक्तू. 24, 25; नवं. 1, 2, 11, 12 अशुभ।	धनु	सेहत ठीक, धननाश, वृथाविवाद, सफल योजना, पुत्रसुख, स्त्रीसुख, मासान्त में विशेष खर्च। नवं. 20, 21, 28, 29, 30; दिसं. 8, 9, 10 अशुभ।	धनु	रोगभय, कफ–पित्तविकार, अर्थलाभ, शुभ समाचार, स्त्रीपक्ष से चिन्ता, कारोबार ठीक। दिसं. 17, 18, 19, 26, 27; जन. 4, 5, 6 अशुभ।
मकर	धनलाभ, नेत्रकष्ट योग, सम्पत्तिविवाद, घरेलू झंझट, कारोबार गड़बड़, क्रोध बढ़े। अक्तू. 17, 18, 26, 27; नवं. 3, 4, 5, 13, 14, 15 अशुभ।	मकर	रोगभय, धनलाभ, शत्रु से भय, वृथाविवाद से बचें, अपमानभय, गुप्त शत्रु से भय। नवं. 22, 23, 30; दिसं. 1, 2, 10, 11, 12 अशुभ।	मकर	सुख, धनलाभ, बन्धुकष्ट, अचानक धनहानियोग, कारोबार ठीक। दिसं. 20, 21, 28, 29; जन. 7, 8 अशुभ।
कुम्भ	रोग से परेशानी, वृथाव्यय, निजीलोगों से अनबन, अच्छे लोगों से मेल, कारोबार कुछ ठीक। अक्तू. 19, 20, 21, 28, 29; नवं. 6, 7 अशुभ।	कुम्भ	कफ–वायुविकार, धनलाभ, बन्धुसुख, बनते कार्य में रुकावट, अशुभ समाचार। नवं. 16, 17, 24, 25; दिसं. 3, 4, 5, 13, 14 अशुभ।	कुम्भ	शत्रुहानि, धनलाभ, रोगभय, सन्तानपक्ष से चिन्ता, कार्यान्तर व स्थानान्तर का विचार। दिसं. 22, 23, 29, 30, 31; जन. 9, 10, 11 अशुभ।
मीन	अर्थलाभ होकर हानि हो, रोगभय, धर्म–कर्म में मन लगे, अचानक लाभ का योग। अक्तू. 22, 23, 30, 31 ; नवं. 8, 9, 10 अशुभ।	मीन	बन्धनभय, धनलाभ होकर हानि, अचानक कष्ट, मासान्त शुभ, कारोबार ठीक। । नवं. 18, 19, 26, 27; दिसं. 5, 6, 7, 15 अशुभ।	मीन	राजभय, धनलाभ होकर हानि, शत्रु बढ़ें, पापकर्म में मन लगे, निजीलोगों से अनबन। दिसं. 16, 17, 24, 25; जन. 2, 3, 11, 12, 13 अशुभ।

बारह राशियों का मासिक फलादेश (सम्वत् 2064वि.)

राशि	माघ (14 जन. से 12 फर. तक, सन् 2008 ई.)	राशि	फाल्गुन (13 फर. से 13 मार्च तक, सन् 2008 ई.)	राशि	चैत्र (14 मार्च से 12 अप्रै. तक, सन् 2008 ई.)
मेष	कष्टभय, वृथाविवाद से बचें, निजीलोगों से मेल, मासमध्य में सुख–अर्थलाभ होकर हानि हो। जन. 14, 15, 22, 23; फर. 1, 2, 10, 11 अशुभ।	मेष	वायुरोग, अकस्मात् हानिभय, स्त्रीकष्ट, कार्यान्तर का विचार, मासान्त में लाभ। फर. 18, 19, 20, 28, 29; मार्च 8, 9 अशुभ।	मेष	स्थानहानि, वृथाव्यय, अचानक कष्ट, शत्रुभय, मासमध्य में लाभ, अपमानभय। मार्च 17, 18, 26, 27, 28; अप्रै. 3, 4, 5 अशुभ।
वृष	उदरविकार, अर्थहानि, कष्टभय, सन्तान हेतु विशेष खर्च, स्त्रीकष्ट, कार्यान्तर से लाभ। जन. 16, 17, 24, 25, 26; फर. 3, 4, 5, 12, 13 अशुभ।	वृष	सेहत ठीक, अर्थलाभ, शत्रुभय, वृथाविवाद से दूर रहें, कारोबार ठीक, मासान्त उलझनपूर्ण। फर. 21, 22; मार्च 1, 2, 3, 10, 11, 12 अशुभ।	वृष	मान–सम्मान बना रहे, अर्थलाभ, सुखप्राप्ति, नई योजना असफल, स्त्रीपक्ष से अनबन। मार्च 19, 20, 29, 30; अप्रै. 7, 8 अशुभ
मिथुन	सेहत ठीक, धनहानि, मित्रों से अनबन, सन्तानपक्ष से चिन्ता, कारोबार ठीक, मासान्त में विशेष खर्च। जन. 18, 19, 27, 28; फर. 5, 6, 7 अशुभ।	मिथुन	लाभ हो, निजीजनसहयोग, नई योजना से हानि, स्त्रीसुख, कारोबार ठीक, आय से व्यय अधिक। फर. 14, 15, 16, 23, 24, 25; मार्च 4, 5, 12, 13 अशुभ।	मिथुन	सेहत ठीक, धनलाभ होकर हानि हो, शत्रु बढ़ें, सम्पत्तिविवाद, कारोबार ठीक। मार्च 14, 21, 22, 23, 31; अप्रै. 1, 2 अशुभ।
कर्क	सुखलाभ, निजीजन–सहयोग, सन्तानपक्ष से चिन्ता, कारोबार में रुकावट, शत्रु से हानि। जन. 20, 21, 29, 30, 31; फर. 8, 9, अशुभ।	कर्क	धननाश, नेत्रकष्ट, सम्पत्तिविवाद, घरेलू झंझट, अशुभ समाचार, कारोबार में परेशानी। फर. 16, 17,- 18, 25, 26, 27; मार्च 6, 7, अशुभ।	कर्क	गुप्तशत्रुभय, आय से व्यय अधिक, निजीजन–सहयोग, मित्र से अनबन, स्त्रीसुख। मार्च 14, 15, 16, 24, 25; अप्रै. 3, 4 अशुभ।
सिंह	धनहानि, रोगभय, सन्तान हेतु विशेष खर्च, स्त्रीसुख, कारोबार में रद्दोबदल का योग। जन. 14, 15, 22, 23; फर. 1, 2, 10, 11 अशुभ।	सिंह	उलझनें कम हों लेकिन निजीजनों से परेशानी, नई योजना, स्त्रीसुख, सांझेदारी में नुक्सान। फर. 18, 19, 20, 28, 29; मार्च 8, 9 अशुभ।	सिंह	धनहानियोग, वृथाविवाद से दूर रहें, असफल योजना, स्त्रीकष्ट, मासान्त में विशेष खर्च। मार्च 17, 18, 26, 27, 28; अप्रै. 3, 4, 5 अशुभ।
कन्या	राजभय, शत्रुपक्ष कमजोर, स्त्रीपक्ष से लाभ, कारोबार कुछ ठीक, अर्थलाभ। जन. 16, 17, 24, 25, 26; फर. 3, 4, 5, 12, 13 अशुभ।	कन्या	कष्टभय, लड़ाई–झगड़े से दूर रहें, धनहानियोग, सन्तानपक्ष से कष्ट, मन परेशान, गुप्त चिन्ता। फर. 21, 22; मार्च 1, 2, 3, 10, 11, 12 अशुभ।	कन्या	वायुविकार, शारीरक कष्टविशेष, गुप्त चिन्ता, सन्तानपक्ष ठीक, स्त्रीपक्ष से लाभ, कारोबार ठीक। मार्च 19, 20, 29, 30; अप्रै. 7, 8 अशुभ।
तुला	गुप्त चिन्ता, अर्थहानि से मन परेशान, नई योजना, स्त्रीकष्ट, कारोबार कुछ ठीक। जन. 18, 19, 27, 28; फर. 5, 6, 7 अशुभ।	तुला	रोगभय, शत्रु प्रबल, धनलाभ होकर हानि, सन्तानपक्ष शुभ, स्त्रीपक्ष से अनबन। फर. 14, 15, 16, 23, 24, 25; मार्च 4, 5 12, 13 अशुभ।	तुला	वायुविकार, धनहानिभय, शत्रु बढ़ें, स्त्रीपक्ष से चिन्ता, कारोबार में परेशानी। मार्च 14, 21, 22, 23, 31; अप्रै. 1, 2 अशुभ।
वृश्चिक	शरीरपीड़ा, अर्थलाभ, बन्धुसुख, सम्पत्तिलाभ का योग, मासान्त में विशेष कष्ट, धनहानि। जन. 20, 21, 29, 30, 31; फर. 8, 9, अशुभ।	वृश्चिक	वृथा धनहानिभय, सन्तान से सुख, स्त्रीसुख, कारोबार ठीक, मासान्त में अचानक कष्टयोग। फर. 16, 17, 18, 25, 26, 27; मार्च 6, 7, अशुभ।	वृश्चिक	शारीरक कष्ट, सन्तानपक्ष से सुख, स्त्री को कष्ट, आय से व्यय अधिक, मासान्त में अचानक खर्चयोग। मार्च 14, 15, 16, 24, 25; अप्रै. 3, 4 अशुभ।
धनु	सुख, अर्थलाभ, सम्पत्तिलाभ, सन्तानपक्ष से चिन्ता, स्त्रीसुख, कारोबार में रुकावट। जन. 14, 15, 22, 23; फर. 1, 2, 10, 11 अशुभ।	धनु	मन शान्त रहे, बन्धुकष्ट, सन्तान हेतु विशेष व्यय, मासमध्य में अच्छा लाभ, स्त्रीसुख। फर. 18, 19, 20, 28, 29; मार्च 8, 9 अशुभ।	धनु	मन परेशान, धनलाभ, कारोबार बढ़े, स्त्रीसुख, शत्रु बढ़ें, कार्यान्तर से लाभ। मार्च 17, 18, 26, 27, 28; अप्रै. 3, 4, 5 अशुभ।
मकर	सुख, धनलाभ, भ्रातृकष्ट, मित्रों से अनबन, सन्तानपक्ष से चिन्ता, स्त्री से अनबन, आय से व्यय अधिक। जन. 16, 17, 24, 25, 26; फर. 3, 4, 5, 12, 13 अशुभ।	मकर	परेशानी रहे, धनलाभ, भ्रातृसुख, किसी मित्र विशेष से परेशानी व धोखा, सम्पत्तिविवाद। फर. 21, 22; मार्च 1, 2, 3, 10, 11, 12 अशुभ।	मकर	कष्टभय, अर्थलाभ होकर हानि हो, शत्रु से भय, सम्पत्तिविवाद, मासमध्य में वृथाव्यय। मार्च 19, 20, 29, 30; अप्रै. 7, 8 अशुभ।
कुम्भ	शत्रुपक्ष कमजोर, धनलाभ, गुप्त शत्रु से भय, निजीजनविरोध, सन्तानपक्ष से खुशी, स्त्रीसुख। जन. 18, 19, 27, 28; फर. 5, 6, 7 अशुभ।	कुम्भ	सेहत ठीक, राजभय, निजीलोगों से अनबन, स्त्रीसुख, कारोबार ठीक, यश मिले। फर. 14, 15, 16, 23, 24, 25; मार्च 4, 5, 12, 13 अशुभ।	कुम्भ	सुख, धनलाभ, सन्तानपक्ष से खुशी, शत्रु कमजोर, कार्य व स्थानान्तर से लाभ। मार्च 14, 21, 22, 23, 31; अप्रै. 1, 2 अशुभ।
मीन	मन प्रसन्न रहे, आर्थिक संकट, निजीलोगों से मनमुटाव, नीच से हानिभय, कारोबार में रुकावट। जन. 20, 21, 29, 30, 31; फर. 8, 9, अशुभ।	मीन	शत्रु परास्त, राजभय, वृथाव्यय, बनते काम में रुकावट, आय से व्यय अधिक। फर. 16, 17, 18, 25, 26, 27; मार्च 6, 7, अशुभ।	मीन	बन्धनभय, वृथाविवाद से दूर रहें, अच्छी योजना से लाभ, मित्रों से मेल, स्त्रीपक्ष से चिन्ता। मार्च 14, 15, 16, 24, 25; अप्रै. 3, 4 अशुभ।

अथ वर्षराजादि फल विचार (संवत् २०६४ वि.)

(सन् २००७-०८ ई. की ग्रहपरिषद् का विवरण)

कल्पादि से गत वर्ष १९७२९४९१०८, सृष्टि संवत् १९५५८८५१०८, श्रीविक्रम संवत् २०६४, शक संवत् १९२९, श्रीकृष्ण जन्म संवत् ५२४३, कलि–संवत् ५१०८, सप्तर्षि–संवत् ५०८३, श्री जैन महावीर निर्वाण संवत् २५३२—३३, श्रीबुद्ध संवत् २६३०—३१, हिजरी सन् १४२८—२९, फसली सन् १४१४—१५, ईस्वी सन् २००७—०८।

वर्षारम्भ में गुरुमान से विष्णुविंशति का 'शर्वरी' नामक संवत्सर है। इसका फल शास्त्रों में इस प्रकार लिखा है;–

" शर्वरीवत्सरे पूर्णा धरा सस्यार्घवृष्टिभिः।
जनाश्च सुखिनः सर्वे राजानः स्युर्विवैरिणः।।"

अर्थात्– 'शर्वरी' संवत्सर में पृथ्वी धान्य (खाद्यान्न) से समृद्ध रहे एवं वर्षा पर्याप्त हो। सम्पूर्ण जनसमुदाय सुखी रहे, शासकों में परस्पर वैरभाव न रहे।

इस संवत् का राजा (ग्रहपरिषद् के प्रधान) **चन्द्र, मन्त्री शनि, सस्येश** (चौमासी फसलों के स्वामी) **चन्द्र, धान्येश** (शीतकालीन फसलों के स्वामी) **सूर्य, मेघेश** (मौसम, वर्षा–पानी के स्वामी) **शुक्र, रसेश** (गुड़–खाण्ड, रसकस आदि के स्वामी) **बुध, नीरसेश** (सर्वविध धातु आदि व्यापार के स्वामी) **चन्द्र, फलेश** (फल–फूल आदि के स्वामी) **शुक्र, धनेश** (धन–दौलत एवं खजाना के स्वामी) **चन्द्र** एवं **दुर्गेश** (सुरक्षा एवं प्रतिरक्षा के स्वामी) **शुक्र** हैं।

संवत् २०६४ वि. के उल्लिखित पदाधिकारियों का फल निम्नांकित है;–

(१) राजा चन्द्र का फल–

" चन्द्रे नृपे मंगल –शोभनानि प्रभूतवृष्टिः प्रचुरं च धान्यम्।
सौख्यं जनानामुदयो नृपाणां प्रशाम्यति व्याधिजरा नराणाम्।।"

अर्थात्– जनता में मांगलिक, शुभकार्य अधिक हों। वर्षा अधिक हो, धान्य (खाद्यान्न) प्रचुर मात्रा में हों। राजा लोगों किंवा शासकों का यश–प्रसार हो। जनता निरोग एवम् सुखी रहे।

(२) मन्त्री शनि का फल–

" रविसुते यदि मन्त्रिणि पार्थिवाः विनय–संरहिताः बहु–दुःखदाः।
न जलदा जलदा जनतापदा जनपदेषु सुखं न धनं क्वचित् ।।"

अर्थात्– शनि के मन्त्रिपद पर रहने से शासक निर्दयतापूर्ण (क्रूर) व्यवहार करें। वर्षा न हो; जनता धन–धान्यहीन एवम् दुःखी रहे।

(३) सस्येश चन्द्र का फल–

" सस्याधिपे शीतकरे प्रजासुखं मेघः पयो मुञ्चति गोप–गोधुक्।
देवद्विजाराधन–तत्परा नृपाः धराभवेद्धान्य–घनौघ– पूर्णा।।"

अर्थात्– यदि चन्द्रमा सस्येश हो तो प्रजा में आनन्द–मंगल रहे। वर्षा पर्याप्त हो; दूध सर्वसुलभ हो। देवता एवं द्विजवर्ग का मान–सम्मान शासकलोग करते रहें। पृथ्वी धन–धान्य से परिपूर्ण रहे।

(४) धान्येश सूर्य का फल–

" पश्चाद्धान्याधिपे सूर्ये पश्चाद्धान्यं तदा नहि।
विग्रहो भूभृतां धान्यं महर्घं ज्वरपीड़नम्।।"

अर्थात्– धान्य (अनाज) का स्वामी सूर्य हो तो पश्चाद्धान्य मूंग, मोठ, बाजरा आदि की फसल न हो, राजाओं (शासकों) में विग्रह किंवा विचारवैमत्य रहे, धान्य मंहगे हों। जनता में ज्वर आदि एवम् अन्य नानाविध रोगों से परेशानी रहे।

(५) मेघेश शुक्र का फल–

"भृगुसुतो जलदस्य पतिर्यदा, जलमुचो जलदादि–विशोभनाः।
धन–निधानयुता द्विजपालकाः नृपतयो जनता सुखदायकाः।।"

अर्थात्– शुक्र मेघेश हो तो वर्षा बहुत हो, राजा लोग द्विजवर्ग एवं जनता

का हित करें एवम् जनता की परेशानियों को दूर करें। शासकवर्ग धनाढ्य रहे एवम् जनता के सुख को ध्यान में रखे।

(६) रसेश बुध का फल–

" रसपतौ द्विजराजसुते मही सुलभ धान्य–घृतादि युता जनाः।
प्रमुदिताः वरनायक–पालिताः बहुजलाखिल–देश–सुरक्षिताः।।"

अर्थात्– बुध रसेश हो तो घी, धान्य आदि अनाज एवं रसपदार्थ सर्वसुलभ हों। शासकवर्ग प्रसन्नचित्त रहे, वर्षा बहुत हो एवं देश सुरक्षित रहे।

(७) नीरसेश चन्द्र का फल–

" शुक्लवर्णादि–वस्तूनां मुक्ता रजतवाससाम्।
अर्घवृद्धिः प्रजायेत शशांके नीरसाधिपे।।"

अर्थात्– चन्द्रमा के नीरसेश होने पर सफेद रंग की वस्तुएं, मोती, चांदी और वस्त्र आदि में अर्घवृद्धि (मंहगाई) होगी।

(८) फलेश शुक्र का फल–

" यदि फलस्य पतौ भृगुजे धरामृदु–कुमार–महीरुह–राशयः।
बहुफला नरनाथ–सुभोगदा द्विजवराः श्रुतिपाठ–परायणाः।।"

अर्थात्– शुक्र फलेश हो तो पृथ्वी पर कोमल घास, फल–फूल एवं छोटे वृक्षों के समूह अधिक पैदा हों। राजा किंवा शासक लोग नानाविध ऐश्वर्यो का उपभोग करें। द्विज वर्ग (ब्राह्मण–क्षत्रिय–वैश्य) वेदपाठ में संलग्न रहे।

(६) धनेश चन्द्र का फल–

" धनपतिर्मृगलांछनको यदा रसचय–क्रय–विक्रयतो धनम्।
वसन-शालि-सुगन्ध-रसं बहुद्रविण–तैलयुतं नृपसौख्यदम्।।"

अर्थात्– चन्द्र के धनाधिप होने पर रसादि (गुड़, रसकस आदि) के क्रय–विक्रय (खरीदो–फिरोखत) से अच्छा धनसंग्रह हो। वस्त्र–अनाज (धान), सुगन्धित पदार्थों, गुड़, दूध–घी एवं तेल के व्यापारी अधिक लाभान्वित होंगे। धनेश चन्द्र राजाओं (शासकवर्ग) के लिए सुखप्रद वातावरण प्रदान करता है।

(१०) दुर्गेश शुक्र का फल–

" नगर–देशविशेषपतिर्यदा भृगुसुतो बहुसौख्यकरो मतः।
विनय–वाणिज–गेहसमं सुखं नग–वने निकटेऽपि च दूरतः।।"

अर्थात्– शुक्र दुर्गेश हो तो जनता में नानाविध सुख–समृद्धि रहे। व्यापार में लाभ, घर में विनय–प्रेम, सत्कारपूर्ण व्यवहार से सुख मिले, पर्वत–वन आदि में भी सुखानुभूति रहे।

सूचना– यद्यपि वर्ष के इन दशाधिकारियों का फल सर्वत्र होता है। किन्तु विशेषतः **राजा** का फल काश्मीर, अफगानिस्तान एवं बराड़ देश में; **मन्त्री** का फल आन्ध्र, वाल्हीक, उज्जैन एवम् मालवा में; **सस्येश** का पौण्ड्र, विदर्भ में; **धान्येश** का गुजरात, नर्मदा के तटवर्ती प्रदेश एवं मध्यप्रदेश में; **मेघेश** का मगध एवं बंगाल में; **रसेश** का कोंकण एवं गोवा में; **नीरसेश** का मालवा व बिहार में; **धनेश** का राजस्थान एवं बाड़मेर में; **फलेश–दुर्गेश** एवं **राजा** का फल सब जगह विशेष होता है।

वर्षादि के विश्वामान

वर्षाविश्वा १५, धान्य ५, तृण १५, शीत १५, तेज ११, वायु १३, वृद्धि १५, क्षय २५, विग्रह ११, क्षुधा ७, तृषा १३, निद्रा ९, आलस्य ५, उद्यम ५, शांति १५, क्रोध १३, दम्भ ५, लोभ ३, मैथुन १५, रस ९, फल १३, उत्साह ११,उग्रता १३, पाप ११, पुण्य १५, व्याधि १३, व्याधिनाश ९, आचार ७, अनाचार ११, मृत्यु ७, जन्म १५, देशोपद्रव ३, देशस्वास्थ्य ७, चौर १३, चौरनाश ५, अग्नि १, अग्निशांति ३, उद्भिज्ज ७, जरायुज ३, अण्डज ५, स्वेदज ७, टिड्डी ९, तोता १५, मूषक १९, सोना १५, तांबा १३, स्वचक्र ११, परचक्र १३, वृष्टि १५, वृष्टिनाश ५ एवं संवत् विश्वा २० हैं।

आवर्तकादि चतुर्मेघों में "द्रोण" नामक मेघ है।

फल– "महीशा स्वसम्पत्तिवृद्ध्या समेताः समस्ता मही–भूरि–धान्येन युक्ता। यदा जायते द्रोणनामा पयोदः तदा देवराजो भवेत्सत्पयोदः।।"

अर्थात्– राजाओं के खजाने भरे रहें। जनता धन–धान्य से संयुत रहे। इन्द्रदेव खूब वर्षा करें– **"द्रोणे वर्षति सर्वदा।"** अनेकत्र बाढ़ से विनाशकारी दृश्य भी उपस्थित होंगे।

नवमेघ विचार– इस वर्ष नवमेघों में 'नील' नामक मेघ है।

फल– गोरस (दूध–घी) पर्याप्त मात्रा में हों। रुई, कपास की फसल–उत्पत्ति अच्छी हो। वर्षा भी खूब हो, किसान एवम् सर्वसाधारण जनता सन्तुष्ट रहे– **"नीलनाम्नि जलदे जलवृष्टिर्जायते सकल मानव–तुष्टिः।"**

अनन्तादि अष्टनाग– इस वर्ष अनन्तादि अष्टनागों में 'सुतक्षक' नामक नाग है।

फल– वर्षा अधिक हो, 'जलबहुल अन्न' चावलादि पर्याप्त मात्रा में

होंगे। सर्पादि विषधर के दंश की घटनाएं अधिक होंगी। कुछ प्रान्तों में बाढ़ आदि से भारी हानि के समाचार भी मिलेंगे।

सुबुध्नादि द्वादश नागों का फल– इस वर्ष बारह नागों में 'वज्रदंष्ट्र' नामक नाग है।

फल– वज्रदंष्ट्र नाग होने से इस वर्ष वर्षा बहुत कम हो; खड़ी फसलें सूख जाएं– "यत्र संवत्सरे नागो वज्रदंष्ट्राभिधानकः। तदाम्बुवर्षणं नैव सर्वसस्य–विनाशनम्।।"

आवह आदि सप्तवायु विचार– इस वर्ष ' आवह आदि वायुसप्तक' में **'उद्वह'** नामक वायु है।

फल– आंधी–तूफान आदि प्राकृतिक प्रकोप से समुद्रतटवर्ती भूभाग किंवा दक्षिणी–पश्चिमी भूभाग पर भूकम्प, ज्वालामुखी विस्फोट एवम् समुद्री विनाशक लहरों से भारी जनधनहानि के योग बनेंगे। भूमध्यगत तरंगें भी कहीं उथल–पुथल करके जनहानि का कारण बनेंगी। सरकार को भारी कठिनाई का सामना करना पड़ेगा।

संवत्सर २०६४ वि. का वाहन– इस संवत् का राजा 'चन्द्र ' होने से वाहन **'मृग'** है।

फल– वर्षा अधिक हो। बिहार, उड़ीसा, मध्यप्रदेश एवम् महाराष्ट्र के कुछ भागों में वर्षा अधिक किंवा बाढ़ की स्थिति बने। धान एवम् फल–फूल अधिक हों। जनता में खाद्य पदार्थों की कमी अनुभव न होगी।

इस वर्ष के चार स्तम्भ

(१) **जलस्तम्भ**–(चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को रेवती नक्षत्र) ३ प्रतिशत है।
(२) **वायुस्तम्भ**–(ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा को मृगशिरा नक्षत्र) ५४ प्रतिशत है।
(३) **तृणस्तम्भ**–(वैशाख शुक्ल प्रतिपदा को भरणी नक्षत्र) २०.५ प्रतिशत है।
(४) **अन्नस्तम्भ**–(आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा को पुनर्वसु नक्षत्र) ४२ प्रतिशत है।

ये उल्लिखित चार स्तम्भ देश के कुशल–क्षेम–ज्ञानार्थ विशेष महत्त्व रखते हैं। क्योंकि सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की सत्ता जल, वायु, अन्न एवं तृण (जड़ी–बूटियों) आदि पर ही निर्भर है। संवत् के शुभारम्भ पर देश की प्राकृतिक व्यवस्था के नियामक इन चार स्तम्भों का आकलन आवश्यक समझा गया है।

जनमानस एवं देश विशेष की खुशहाली के मूलभूत इन चार स्तम्भों की प्रतिशतता के आधार पर इनका सामूहिक फल इस वर्ष के लिए इस प्रकार है–

जलस्तम्भ–चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को रेवती नक्षत्र ३ प्रतिशत है। स्पष्ट है, कि जलस्तम्भ बहुत कमजोर है। बहुजलसिञ्चित धान्य की फसल को हानि पहुंचेगी। लेकिन **रोहिणी वास** विचार से रोहिणी का वास **समुद्र** में होने से न्यूनवर्षा वाले क्षेत्रों में भी वर्षा संभावित है, अतः जलस्तम्भ **क्षीण** होने पर भी फसलों को विशेष हानि का संकेत नहीं मिलता।

इस वर्ष (सं. २०६४ वि. में) **वायुस्तम्भ** ५४ प्रतिशत होने से समुद्री भूभाग पर वायु का दबाव अनुकूल परिस्थितियों को जन्म देगा। लेकिन दक्षिणी भूभाग पर कहीं समुद्री तूफान की सम्भावना है। पृथ्वी के अन्तर्गत वायु का दबाव कहीं प्रलयंकर स्थिति को जन्म देगा। उत्तरी भूभाग पर मेघों का संचालन वायुस्तम्भ के नार्मल होने से सुव्यवस्थित (ठीक–ठाक) रहेगा।

इस वर्ष **तृणस्तम्भ** २०.५ प्रतिशत है। जलस्तम्भ क्षीण होने पर भी समुद्र में रोहिणी का वास इस स्तम्भ को सुदृढ़ करता है। पशुचारा, धान्यादि एवम् जड़ीबूटियों की फसल पर्याप्त होगी। पर्वतीय भूभाग एवम् उत्तरी भारत में फसलें अच्छी होंगी।

इस वर्ष **अन्नस्तम्भ** ४२ प्रतिशत होने से मूंग, मोठ, चना, ज्वार, बाजरा आदि की फसल ठीक न रहेगी। व्यापारी लोग अन्न की कमी के अनुमान से तेजी का व्यापार करें एवम् गरीब जनता परेशान रहे। सरकार को अन्नभण्डारण एवम् अन्नवितरण की समस्या का सामना करना पड़ेगा। अन्नस्तम्भ कुछ कमजोर होने से सरकार को कुछ विशेष पग भी उठाने होंगे।

आर्षमान विचार (वर्षरक्षा के लिए चार दुर्ग)

(१) **प्रथम आर्ष**– (अक्षय तृतीया को **रोहिणी** नक्षत्र) १३ प्रतिशत है।
(२) **द्वितीय आर्ष**–(सं. २०६३ वि. में पौष अमा को मूल नक्षत्र) ३५ प्रतिशत है।
(३) **तृतीय आर्ष**– (श्रावण पूर्णिमा को **श्रवण** नक्षत्र) का अभाव है।
(४) **चतुर्थ आर्ष** –(कार्तिक पूर्णिमा को **कृत्तिका** नक्षत्र) ८८ प्रतिशत है।

सं. २०६४ वि. में प्रथम–द्वितीय एवम् तृतीय स्तम्भों के परिशीलन से इस वर्ष काफी चिन्तनीय किंवा अघटित घटनाओं के आगमन का संकेत मिलता है। प्रथम आर्ष १३ प्रतिशत होने से प्रथम दुर्ग बहुत क्षीण है। द्वितीय आर्ष भी 35 प्रतिशत होने से वर्षरक्षाकारक यह दुर्ग भी काफी कमज़ोर है। देश किंवा विश्व की रक्षात्मक शक्ति का प्रतीक तीसरे दुर्ग का पूर्णतया अभाव होने से कहीं भयंकर प्राकृतिक प्रकोप किंवा देश में राजनैतिक अस्थिरता का संकेत प्राप्त होता है। चतुर्थ आर्ष ८८ प्रतिशत होने पर भी वर्षरक्षा कारक

सुरक्षा–कवच सुदृढ प्रतीत नहीं होता। वर्षरक्षाकारक चार दुर्गों के विचार से यह वर्ष निसन्देह चिन्तनीय परिस्थितियों को जन्म देगा।

दोहा : " अखैतीज रोहिणी न होई, पौष अमावस मूल न जोई।
राखी श्रवणो हीन विचारो, कार्त्तिक पुण्यो कृत्तिका टारो।
महीमाह खलबली प्रकाशै, कहै भड्डली साख विनाशै।।"

अधिक मास– संवत् २०६४ वि. में **ज्येष्ठ अधिक मास है।**

फल– "ज्येष्ठद्वये नृपध्वंसो। धान्यानि क्षितिसत्तमे।"– ज्येष्ठ अधिक मास होने से किसी विशिष्ट व्यक्ति किंवा राजनीतिज्ञ की मृत्यु किंवा अपदस्थ होने से अशान्तिमय वातावरण बने। धान्य (खाद्यान्नों) की उत्पत्ति अच्छी रहे।

रोहिणी का वास– इस वर्ष रोहिणी का वास 'समुद्र' में है।

फल– "यदा पयोनधिस्थलगतं विरञ्चिभं तदा।"
अतीव वर्षणं भवेत् समस्त धान्यवर्धनम्।।

अर्थात्– समुद्र में रोहिणी का वास होने से वर्षा अत्यधिक होती है; समस्त खाद्यान्न प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होते हैं। जलबहुल चावलादि अन्न की उपज अधिक होती है। न्यूनवर्षा वाले बागड़–राजस्थान आदि क्षेत्रों में भी आगे–पीछे वर्षा होने से कृषकवर्ग को सहारा मिलता है।

समय का वास– रोहिणी का वास समुद्र में होने से समय का वास "माली" के घर है।

फल– फल–फूल एवम् कन्दमूल पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हों। वर्षा काफी हो, जनता में आनन्दमंगल रहे।

शनि की दृष्टि– विगत संवत् २०६३ वि. में १० जनवरी, सन् २००७ ई. को शनि वक्रगति से कर्कराशि में प्रविष्ट हुआ था, जो संवत् २०६३ वि. के अन्त तक एवम् संवत् २०६४ वि. में भी १६ जुलाई, सन् २००७ ई. तक कर्क राशि में ही रहेगा। तदनन्तर संवत् २०६४ वि. के अन्त तक शनिदेव सिंह राशि में ही विचरण करते रहेंगे।

स्पष्ट है– १० जनवरी, २००७ ई. से १६ जुलाई, सन् २००७ ई. तक शनि के कर्क राशि में रहने से इसकी दृष्टि दक्षिण दिशा की तरफ रहेगी। १६ जुलाई सन् २००७ ई. से संवत् के अन्त तक (सिंहराशिस्थ शनि के समय) भी इसकी दृष्टि दक्षिण दिशा की ओर ही रहेगी।

निष्कर्ष यह है, कि– शनि संवत् २०६४ में सारा साल दक्षिण दिशा की तरफ ही देखता रहेगा।

फल – "शनैश्चरः क्रमात्पश्यन् तत्तद्देशान् प्रपीड़येत्।
दुर्भिक्ष –देशभङ्गाद्यैर्विग्रहो राजविड्वरैः।।"

शनि सारा साल दक्षिणी प्रान्तों एवं दक्षिणी गोलार्ध के देशों पर क्रूरदृष्टि रखेगा। फलस्वरूप, उपरोक्त समयावधि में कहीं राजनैतिक अस्थिरता, समुद्री तूफान, सत्ता–परिवर्तन होगा। कहीं दो देशों में युद्धज्वाला से बड़े देश चिन्तित हों। आन्दोलन, हत्याकाण्ड, भंयकर रोग से मृत्युदर बढ़े। कहीं भूकम्प, समुद्रीतूफान किंवा ज्वालामुखी–विस्फोट आदि प्राकृतिक प्रकोप से भारी जन–धनहानि होगी। दक्षिण में शनिदृष्टि होने से मेष, मिथुन, वृष, मकर, कन्या, तुला नामराशि वाले देशों में, विशेषतः मुस्लिम देशों में अघटित घटनाचक्र चलेगा। दक्षिण में कहीं अवर्षण व कहीं अकाल से कृषकों के लिए चिन्ताजनक स्थिति बनेगी।

शरत्सस्य जातक

संवत् २०६४ वि. में प्रथम ज्येष्ठ कृष्ण त्रयोदशी मंगलवार, तदनुसार १५ मई सन् २००७ ई. को (भा.स्टैं.टा. अनुसार) दिन में ६ घंटा २० मिनट पर सूर्यदेव वृष राशि में प्रविष्ट होंगे।

शरत्सस्य जातक कुण्डली

४ श.
सु. २ बु.
५ के.
३ शु.
१ चं.
६
मं. १२
७
९
११ रा.
८ गु.
१०

फल– शरत् सस्यजातक कुण्डली में सूर्य से द्वितीय शुक्र एवम् सूर्य–बुध का एकत्र होना शारदीय धान्यों की अभिवृद्धि का सूचक है; वृषस्थ सूर्य से सप्तम गुरु मंगल के क्षेत्र में एवम् सूर्य से एकादशस्थ मंगल गुरु के क्षेत्र में भी होने से शारद धान्य भरपूर होने का संकेत मिलता है। मूंग, मोठ, बाजरा, मक्का, जीरी, गन्ना, अरहर, कपास एवम् कुलथ आदि की फसल अच्छी रहेगी। मंगल–शनि–सूर्य–बुध पर गुरु की विशेष दृष्टि होने से शारद धान्यों की फसल अच्छी होगी।

ग्रीष्मसस्य जातक

सं. २०६४ वि. में कार्तिक शुक्ल षष्ठी (तात्कालिक सप्तमी), शुक्रवार, तदनुसार १६ नवम्बर, सन् २००७ ई. को २२ घं. ५२ मि. (भा. स्टैं. टा.) पर सूर्यदेव वृश्चिक राशि में प्रविष्ट होंगे।

ग्रीष्मसस्य जातक कुण्डली

के. ५ श.
मं. ३
६ शु.
४
२
बु. ७
१
सू. ८ गु.
चं. १०
१२
९
११ रा.

फल– ग्रीष्मसस्य जातक कुण्डली में वृश्चिक राशि में सूर्य–गुरु एकसाथ हैं। तात्कालीन कुण्डली के लग्न पर लग्नेश–चन्द्र एवम् गुरु की दृष्टि भी है। जौ, चना, गेहूं आदि

की फसल पर्याप्त होने पर भी प्राकृतिक किंवा पर्यावरण दोष से मंहगाई बढ़ेगी। क्योंकि सूर्य से चतुर्थ राहु एवम् सूर्य से दशम भाव में शनि–केतु ग्रीष्मधान्य के नाशक हैं।

" जामित्र–केन्द्रसंस्थौ क्रूरौ सूर्यस्य वृश्चिकस्थस्य।
सस्यविपत्तिं कुरुतः सौम्यैर्दृष्टौ न सर्वत्र।।''

अर्थात्– सूर्य के वृश्चिक में आने पर पापग्रह शनि–मंगल में से कोई एक सप्तम स्थान में या सूर्य से १, ४, १०वें स्थान में हो तो कहीं धान्यनाश होता है और कहीं धान्य ठीक रहते हैं। यहां तात्कालीन कुण्डली में कर्क लग्न मंगल, शनि से आक्रान्त होने से शारद धान्य मंहगे होंगे।

संवत् २०६४ वि. का शुभारम्भ

गतसंवत् २०६३ वि. में चैत्र कृष्ण अमावस चन्द्रवार, तदनुसार १६ मार्च सन् २००७ ई. को भा. स्टैं. टा. अनुसार ८ घं. १३ मि. पर उ. भा. नक्षत्र, शुक्ल योग एवं मीनस्थ चन्द्र के समय वि. सं. २०६४ का शुभारम्भ मेष लग्न के समय हुआ था।

नववर्ष प्रवेश कुण्डली

२ | सू. १२ चं. | ११ | ३ | १ शु. | बु.रा. | श. ४ | मं. १० | ५ के. | ७ | ९ | ६ | गु. ८

फल– संवत् २०६४ वि. का उदय मेष लग्न में हुआ है। शास्त्रों में इसका फल इसप्रकार है–

''मेषे लग्ने तु पूर्वस्यां दुर्भिक्षं राजविग्रहः।
दक्षिणस्यां सुभिक्षं स्यात् बहुधान्यरसा च भूः।।
धान्यानां विक्रये लाभः पूर्णमेघ–महोदयः।
घृत–तैलादि वस्तूनां पण्यानां च महर्घता।।
उत्तरस्यां सुभिक्षं स्यात् राज्ञामुद्वेगकारणम्।
मध्यदेशे महावृष्टिर्निष्पन्ति-धान्य-संततेः।।''

अर्थात्– मेष लग्न में संवत् का प्रारम्भ होने से पूर्व में दुर्भिक्ष एवम् शासकों में परस्पर राजनैतिक संघर्ष हो; दक्षिण में सुभिक्ष, पृथ्वी पर खाद्यान्न बहुत हों एवम् गोदुग्ध, घी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हों। पुनरपि– घी, तैल एवम् व्यापारिक चीजें तेज रहें। धान्यविक्रय से लाभ हो एवम् वर्षा अच्छी हो। उत्तर में सुभिक्ष, शासकों में उद्वेग, मध्यप्रदेश में भयंकर वर्षा से हानि हो। धान्य की उत्पत्ति अच्छी हो।

किञ्च–नववर्ष प्रवेशकालीन कुण्डली में लग्नेश मंगल दशम भाव में उच्च है, लेकिन शनि–मंगल का समसप्तक योग देश एवम् शासकवर्ग के लिए भयावह परिस्थितियों को जन्म देगा। लग्न पर लग्नेश मंगल की स्वभाव दृष्टि एवं शनि की नीच दृष्टि भी है, अतः यह संवत् विशेष राजनैतिक संकटों वाला एवम् प्रधान शासकों तथा राजनीतिज्ञों के लिए विशेष संकट वाला रहेगा। मेष, कर्क, सिंह, मकर, कन्या राशि वाले राजनीतिज्ञों के लिए यह वर्ष अधिक कठिन रहेगा। विशिष्ट राजनीतिज्ञों में से किसी राजनीतिज्ञ के निधन व अपदस्थ होने की घटना घटित हो सकती है।

वर्षेश (जगत्) लग्न

संवत् २०६४ वि. में वैशाख कृष्ण एकादशी (तात्कालिक द्वादशी) शनिवार, तदनुसार १४ अप्रैल, सन् २००७ ई. को १२ घं. २६ मि. (भा. स्टैं. टा.) पर शतभिषा नक्षत्र, शुक्ल योग एवं कुम्भस्थ चन्द्र के समय सूर्यदेव मेषराशि में प्रविष्ट होंगे।

फल– जगत् लग्न का उदय कर्क लग्न में हुआ है। लग्नेश चन्द्र राहु–मंगल के साथ शनि की राशि में स्थित है। अष्टमेश शनि लग्न में चन्द्र की राशि में है। लेकिन लग्नस्थ शनि पर बृहस्पति की दृष्टि भी है। अतः विश्व के प्रमुख देशों में प्रधान नेता शान्ति के लिए प्रयत्नशील रहेंगे। द्वितीयेश सूर्य उच्च है, अतः विश्व के कुछ राष्ट्रों में आर्थिक उदारीकरण से नई योजनाएं बनेंगी। शनि की दशम भावस्थ सूर्य पर दृष्टि है, जोकि प्रमुख नेताओं के समक्ष भारी राजनैतिक संकट खड़ा करे। उग्रवादजन्य परेशानी से मुस्लिम राष्ट्रों में हत्याकाण्ड अधिक होंगे। मेष, वृष, कन्या, मकर एवम् कुम्भ राशि वाले राष्ट्रों एवम् राष्ट्रनायकों के लिए यह वर्ष विशेष भयावह घटनाओं को लेकर उपस्थित होगा। वैशाख, ज्येष्ठ, आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष एवम् माघ मास विशेष घटनापूर्ण होंगे।

वर्षेश (जगत्) लग्न कुण्डली

५ के. | ३ | ६ | ४ श. | २ शु. | ७ | १ सू. | ८ गु. | १० | १२ | ११ बु. | ९ | मं. चं. रा.

जगत्लग्न से व्यक्तिगत फल विचार

जन्मकुण्डली मे लग्न बलवान् हो तो जन्मराशि से जगत्लग्न जिस राशि पर आए, वह भाव शुभग्रह या भावेश से दृष्ट या युक्त हो तो उस वर्ष में उस भाव की वृद्धि कहनी चाहिए। यदि पापग्रह की दृष्टि या योग हो तो उस भाव की हानि कहें। जन्मलग्न, जन्मराशि एवं अपने वर्षलग्न से वर्षेश (जगत्) लग्न आठवें या बारहवें हो तो वह वर्ष उस व्यक्ति के लिए शुभ नहीं होगा। इसी प्रकार देश एवं ग्राम के शुभाशुभ विचार के लिए भी समझना चाहिए ।

सूर्य आर्द्राप्रवेश लग्न

सूर्य आर्द्राप्रवेश कुण्डली

८ गु. ६ चं.
६ ७ ५ के.
१० ४ शु. श.
११ रा. १ मं. ३सू. बु.
१२ २

संवत् २०६४ वि. में द्वितीय (शुद्ध) ज्येष्ठ शुक्ल सप्तमी (तात्कालिक अष्टमी) शुक्रवार, तदनुसार २२ जून, सन् २००७ ई. को (भा. स्टैं. टा. अनुसार) १५ घं. २७ मि. पर उ. फा. नक्षत्र, व्यतीपात योग एवं कन्याराशिस्थ चन्द्र के समय **सूर्यदेव आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश** करेंगे।

फल— द्वितीय (शुद्ध) ज्येष्ठ शुक्लाष्टमी में शुक्रवार को सूर्य आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश करेगा। शास्त्रानुसार अष्टमी तिथि को सूर्य का आर्द्रा में प्रवेश शुभ नहीं है—

"वह्निवेदाष्टमी नन्देंद्रा एतत् संख्यासु भास्करे।
तिथिष्वार्द्रा यदा याति कष्टदः शेषके शुभः।।"

आर्द्रा का विचार वर्षा वृष्टि से सम्बन्ध रखता है। वर्षा कहीं अधिक, कहीं वर्षा न होने से परेशानी रहेगी। व्यतीपात योग में आर्द्राप्रवेश भी वर्षा में अवरोधक माना है—

"शूले गण्डे व्यतीपाते व्याघाते परिघे शिवे।
वैधृतौ चातिगण्डे च आर्द्रा यात्यशुभो रविः।।"

आर्द्राप्रवेश दिन में होने से यह वर्ष अनेकत्र वर्षा की कमी वाला होगा। बादल आकर जाते रहेंगे—

"दिवार्द्रा याति चेद्भानुर्जलभक्षण—कारकः।"

आर्द्राप्रपवेश कुण्डली में लग्नेश शुक्र शनि के साथ एवम् सप्तम भावस्थ मंगल पर शनि की नीच दृष्टि होने से देश में कहीं भयंकर बाढ़ एवम् कहीं अवर्षण से हानि के संकेत मिल रहे हैं।

गुर्रा विचार (सन् २००७-०८ ई.)

इस्लामी मतानुसार एक (यकम) मुहर्रम से ही नया हिजरी सन् प्रारम्भ होता है। उस दिन जो वार होता है, वही इस्लामी मतानुसार साल का राजा किंवा **"गुर्रा"** होता है।

गतसंवत् २०६३ वि. में माघ शुक्ल तृतीया, रविवार, तदनुसार २१ जनवरी, सन् २००७ ई. एक मुहर्रम (यकम मुहर्रम) को हिजरी सन् १४२८ प्रारम्भ हुआ था। अतः इस्लामी मतानुसार **हिजरी सन् १४२८ का बादशाह सूर्य (सूरज) है।**

फल— बादलवर्षा अच्छी हो, गेहूं आदि की फसल उत्तम हो। अनाज सस्ते हों। सूखे मेवे सस्ते रहें। शासकों एवं राजनीतिज्ञों का कार्य प्रशंसनीय रहे। जनता में सुख—समृद्धि रहे। दुधारु पशु निरोग रहें। वायु का जोर रहे। स्त्रियों में कुच (स्तन) से सम्बन्धित (कैंसर आदि) रोग अधिक होंगे। कुछ स्थानों पर अग्निकाण्ड से हानि के भी योग बनते हैं।

संवत् २०६४ वि. में पौष शु. तृतीया शुक्रवार, तदनुसार ११ जनवरी, सन् २००८ ई. १ मुहर्रम (यकम मुहर्रम) को हिजरी सन् १४२९ प्रारम्भ होगा। अतः इस्लामी मतानुसार **मुस्लिम नववर्षारम्भ का बादशाह शुक्र** ही होगा।

फल—मुस्लिम राष्ट्रों में जनता राजा के कोप का भाजन बने। कहीं मुस्लिम राष्ट्र में अराजकता, खूनखराबा से घोर—अशान्त वातावरण रहे। वर्षा आकालिक हो, सूखे मेवे अच्छे हों। अग्निकाण्ड एवम् तूफान से हानि हो। मंहगाई बढ़े, जनता रोगों से परेशान रहे। फसलों को हानि पहुंचे। सरकार को गेहूं आदि खाद्यान्न सस्ते करने पड़ें।

आय—व्यय चक्र (विंशोत्तरी मतानुसार)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
लाभ	११	५	११	५	८	११	५	११	८	२	२	८
व्यय	१४	८	५	२	१४	५	८	१४	५	८	८	५

लाभ—व्यय देखने की रीति— अपनी राशि के लाभ-व्यय अंको को जोड़कर, उसमें से १ घटाकर, शेष को ८ से भाग देने पर यदि १, २, ६, ७ बचें तो वर्ष में उत्तम लाभ होगा। ३, ४, ५, ० बचें तो लाभ बहुत कम हो, चिन्ता भी रहे।

"इतीदं वत्सरफलं वत्सरादि-तिथौ शुभम्।
यः श्रृणोति नरो भक्त्या स सुखी वत्सरं भवेत्।।"

*****

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के दिन नीम के कोमल पत्ते, कालीमिर्च, हींग, अजवायन, जीरा, तुलसीदल— ये सब कूटकर इच्छानुसार खाण्ड या शक्कर में मिलाकर शर्बत बनाकर प्रातः सेवन करने से रक्त विकार, वात—पित्त एवं कफजन्य कष्टों से शान्ति मिलती है।

सन्दिग्ध व्रत-पर्व-व्यवस्था (सं. 2064 वि.) (सन् 2007-08 ई.)

लेखक- प्रियव्रत शर्मा, 59/6 (अभिजित्), पंचकूला-134 109

(यदि इस स्तम्भ में चर्चित या अन्य किसी व्रत-पर्व की तिथि के बारे में किसी को सन्देह/शंका हो तो पत्र देकर मुझसे स्पष्टीकरण मांग लेना चाहिए, - प्रियव्रत शर्मा)

(1) वासन्त नवरात्रारम्भ/नवसंवत्सरारम्भ

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा में 'वासन्त नवरात्रारम्भ' एवम् 'कलशस्थापन' किया जाता है। यदि सूर्योदयानन्तर एक मुहूर्त के लिए भी प्रतिपदा प्राप्त हो तो नवरात्रारम्भ-कलशस्थापन उसी दिन प्रातः करने का निर्देश है। एक मुहूर्त से कम प्रतिपदा हो तो शास्त्रकारों ने नवरात्रारम्भ के लिए अमायुक्ता प्रतिपदा को ग्राह्य माना है, अन्यथा अमायुक्ता प्रतिपदा में चण्डिकार्चन किंवा नवरात्रारम्भ का निषेध है।

देवीपुराण का वाक्य है;- **"अमायुक्ता न कर्तव्या प्रतिपच्चण्डिकार्चने। मुहूर्त्तमात्रा कर्तव्या द्वितीयायां गुणान्विता।।"**- (*देवीपुराण*)

किञ्च- यदि प्रतिपदा का क्षय हो तो भी पहले ही दिन (अमायुक्ता प्रतिपदा में ही) नवरात्रारम्भ करना शास्त्रविहित है। 'निर्णयसिन्धु' में यह स्पष्ट निर्देश किया गया है:-

"परदिने प्रतिपदाऽत्यन्तासत्त्वे तु दर्शयुता पूर्वैव ग्राह्या।"

इस वर्ष (सं. 2064 वि. में) प्रतिपदा 19 मार्च, सन् 2007 ई. को 28 घं. 32 मि. पर अर्थात् 20 मार्च, सन् 2007 ई. के सूर्योदय से पहिले ही समाप्त हो जाती है। यहां प्रतिपदा का क्षय है, अतः उक्त नियमानुसार इस वर्ष नवरात्रारम्भ अमायुता प्रतिपदा के दिन (19 मार्च को) ही होगा।

ध्यान रहे-चान्द्र संवत्सर (2064 वि.) का प्रारम्भ भी इसी दिन माना जाएगा।

(2) स्कन्दषष्ठी

स्कन्दषष्ठीव्रत पूर्व (पंचमी) विद्धा चैत्र शुक्ल षष्ठी के दिन किया जाता है- **"षष्ठी स्कन्दव्रते पूर्वविद्धा ग्राह्या।"**-(धर्मसिन्धुः)।

विशेष नियमानुसार षष्ठी का वेध तीन मुहूर्त्तों से नहीं, अपितु छः मुहूर्त्तों से होता है- **नागो द्वादश-नाडीभिर्दूषयत्युत्तरां तिथिम्।"**- (स्कन्दपुराण)।

इस वर्ष 23 मार्च, सन् 2007 ई. को षष्ठी पंचमी-विद्धा है। अतः स्कन्दषष्ठी व्रत 23 मार्च, 2007 ई. को ही किया जाएगा।

(3) अनङ्ग त्रयोदशी

पूर्व(द्वादशी)विद्धा चैत्रशुक्ल त्रयोदशी के दिन अनंग-त्रयोदशी मनाई जाती है। इस वर्ष 30 मार्च, 2007 ई. को यह त्रयोदशी पूर्वविद्धा है, अतः इसी दिन अनङ्ग-त्रयोदशी व्रत होगा-

"चैत्रशुक्ल त्रयोदश्यामनङ्ग-व्रतम्। तत्र त्रयोदशी पूर्वा ग्राह्या।- (धर्मसिन्धुः)

"त्रयोदशी-तिथिः पूर्वासिता"- इति दीपिकोक्तेः।"- (भट्टोजी- तिथिनिर्णयः)

(4) अक्षयतृतीया

वैशाख शुक्ल तृतीया को 'अक्षयतृतीया' मनाई जाती है। वैशाख शुक्ल तृतीया युगादि तिथि है। शुक्लपक्ष की युगादि एवम् मन्वादि तिथियां पूर्वाह्णव्यापिनी ली जाती हैं-

" पूर्वाह्णे तु सदा कार्याः शुक्ला-मनुयुगादयः। दैवे कर्मणि पित्र्ये च कृष्णे चैवापराह्णिकाः।"- (पद्मपुराण)।

अतः वैशाख शुक्ल तृतीया जिस दिन पूर्वाह्णव्यापिनी होगी उसी दिन यह व्रत किया जाएगा। यदि तृतीया दोनों दिन आंशिकरूप से पूर्वाह्ण को व्यापत करे तो शास्त्रकारों का निर्णय है कि- दूसरे दिन त्रिमुहूर्त्ताधिक तृतीया होने पर इसे दूसरे दिन, अन्यथा पहिले दिन ही मनाया जाए-

"द्वेधाविभक्त-दिन-पूर्वार्धैकदेशव्यापिनी दिनद्वये चेत् त्रिमुहूर्त्ताधिक व्याप्तिसत्वे परा त्रिमुहूर्त्तन्यूनत्वे पूर्वा।"- (धर्मसिन्धुः)।

इस वर्ष यह तृतीया 19 एवम् 20 अप्रैल (2007 ई.) को दोनों दिन पूर्वाह्ण के एकदेश को व्याप्त कर रही है और यह 20 अप्रैल, 2007 ई. को तीन मुहूर्त्त से कम है। अतः उक्तानुसार इस वर्ष अक्षयतृतीया 19 अप्रैल को ही मनानी होगी।

(5) गुरुपूर्णिमा

गुरुपूजा (गुरुपूर्णिमा) और श्रीव्यास पूजा के लिए सूर्योदय के अनन्तर

त्रिमुहूर्त--व्यापिनी आषाढ़ पूर्णिमा का होना आवश्यक है--

"अस्यां पौर्णमास्यां संन्यासिनां चातुर्मास्यावास–संकल्पांगत्वेन क्षौर–व्यासपूजादिक विहितम्। अत्र कर्मणि औदयिकी–त्रिमुहूर्ता पौर्णमासी ग्राह्या।"

–(*धर्मसिन्धुः*)।

यहां 'निर्णयसिन्धु' कार भी यही लिखते हैं,– "अत्रैव (आषाढ़ शुक्लपौर्णमास्यां) व्यासपूजोक्ता। तत्र त्रिमुहूर्त्ता चेत् परैवेति संन्यास–पद्धतौ।।" इस वर्ष आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा 30 जुलाई को त्रिमुहूर्त्त से कहीं कम (लगभग एक ही मुहूर्त्त) होने से गुरुपूर्णिमा एवम् व्यासपूजा 29 जुलाई, 2007 ई. को ही होगी।

(6) मधुश्रवा तृतीया

चतुर्थी–विद्धा श्रावणशुक्ल तृतीया को यह पर्व मनाया जाता है। इस वर्ष 16 अगस्त, 2007 ई. को तृतीया तीन मुहूर्त्त से कम होने से चतुर्थीविद्धा नहीं है, अतः इसे 15 अगस्त, 2007 ई. को ही मनाना होगा। इसी दिन यह पूर्णा भी है।

(7) श्रीराधाष्टमी

सप्तमी–विद्धा मध्याह्नव्यापिनी भाद्रपद शुक्लाष्टमी में यह व्रत होता है। इस वर्ष 19 सितम्बर, 2007 ई. को भाद्रशुक्लाष्टमी सप्तमीविद्धा एवम् मध्याह्नव्यापिनी भी है। अतः श्रीराधाष्टमी व्रत इस वर्ष 19 सितम्बर, 2007 ई. को ही किया जाएगा।

(8) करक चतुर्थी (करवा चौथ)

यह व्रत सौभाग्यवती स्त्रियों द्वारा चन्द्रोदयव्यापिनी 'कार्त्तिक–कृष्ण चतुर्थी' के दिन किया जाता है। इस वर्ष चतुर्थी तिथि 28 एवम् 29 अक्तूबर–दोनों दिन चन्द्रोदय–व्यापिनी नहीं है। अतः धर्मशास्त्र–निर्णयानुसार यह व्रत दूसरे ही दिन (यानी 29 अक्तूबर, 2007 ई. को ही) किया जाएगा। क्योंकि दोनो दिन चतुर्थी का चन्द्रोदयकाल से स्पर्श न होने पर इस व्रत को दूसरे दिन ही करने का शास्त्रादेश है–" अत्र कार्त्तिक कृष्ण–चतुर्थी चन्द्रोदयव्यापिनी ग्राह्या, परदिन एव चन्द्रोदयव्याप्तौ परैव। उभयदिने चन्द्रोदयव्यापित्वे तृतीयायुतैव (पूर्वैव) ग्राह्या, दिनद्वये चन्द्रोदयव्याप्त्यभावे परैव।"– (*धर्मसिन्धुः*)।

ध्यान रहे– राजस्थान, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश आदि अन्य सभी प्रदेशों में जहां चन्द्रोदय 20 घं 01 मि (भा. स्टैं. टा.) पर या इससे पूर्व होगा वहां भी यह व्रतशास्त्र–वाक्यानुसार दूसरे दिन यानी 29 अक्तूबर, 2007 ई. को ही होगा।

ध्यान रहे– संवत् 2065 वि. संवत् का राजा पूर्वी एवम् पश्चिमी भारत में भिन्न–भिन्न होगा। इनका विवेचन अगले वर्ष सं. 2065 वि. के पंचांग में "सन्दिग्ध व्रतपर्व व्यवस्था" में किया जाएगा।

श्री वि. सं. २०६४, शाक १९२९, चैत्र शुक्ल पक्ष १																तारीखें				चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा.				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. भा. स्टैं. टा.				(१९ मार्च से २ अप्रैल तक, सन् २००७ ई.) उत्तरायण, उत्तरगोल, वसन्त ऋतु।
दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल			प्र. चैत्र	अं. मार्च	श. फाल्गुन	मु. सफर				सूर्योदय		सूर्यास्त						सायं शु. पश्चिम में और श. पूर्व कपाल में दिखाई देगा। प्रातः बु. पूर्व में और उससे ऊपर मंगल होगा। इस समय गु. याम्योत्तरवृत्त से कुछ पश्चिम की ओर झुका दीखेगा।
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.							घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
अवम		१	चं.	५५	००	००	०	०	०	०	०	०	०	०		०	१९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	प्रतिपदा (१९ मार्च) क्षय, चान्द्र संवत्सर २०६४ वि. प्रारम्भ, (A)
२९	५६	२	मं.	४५	५५	रेव.	४६	३१	ब्र.	३७	९	बा.	२०	२७		७	२०	२९	२९	मेष	४६	३१	६	३१	१८	३०	११	५	२	३१	चन्द्र दर्शन मु.३०, मंगल धनि. में ४४/२०, पंचक (B)
३०	१	३	बु.	३७	१७	अश्वि.	३९	५१	ऐं.	२७	२	तै.	११	३६		८	२१	३०	र.१	मेष			६	३०	१८	३०	११	६	२	१०	रबी–उल–अव्वल मु. प्रा., गौरी तृतीया (गणगौर), (C)
३०	६	४	गु.	२९	३०	भर.	३४	२	वै.	१७	३४	व.	३	२३		९	२२	चै.१	२	वृष	४७	४५	६	२९	१८	३१	११	७	१	४६	भद्रा ३/२३ से २९/३० तक, शक चैत्र प्रा.,
३०	१०	५	शु.	२२	५४	कृत्ति.	२९	२७	वि.	९	२	बा.	२२	५४		१०	२३	२	३	वृष			६	२७	१८	३१	११	८	१	२१	शुक्र भरणी में ५५/४२, श्री (लक्ष्मी) पंचमी, नाग (D)
३०	१५	६	श.	१७	४८	रोहि.	२६	२३	प्री. आ.	१ ५५	३७ ३५	तै.	१७	४८		११	२४	३	४	मिथुन	५५	२८	६	२६	१८	३२	११	९	०	५३	शर्वरी संवत्सर
३०	२०	७	र.	१४	२५	मृग.	२५	१	सौ.	५०	५९	व.	१४	२५		१२	२५	४	५	मिथुन			६	२५	१८	३३	११	१०	०	२३	भद्रा १४/२५ से ४३/३८ तक,
३०	२४	८	चं.	१२	५१	आर्द्रा	२५	२८	शो.	४७	५०	ब.	१२	५१		१३	२६	५	६	मिथुन			६	२४	१८	३३	११	१०	५९	५२	श्री दुर्गाष्टमी, अशोकाष्टमी,
३०	२९	९	मं.	१३	६	पुन.	२७	४०	अ.	४६	४	कौ.	१३	०६		१४	२७	६	७	कर्क	११	५९	६	२२	१८	३४	११	११	५९	१६	श्रीरामनवमी (पुनर्वसुयुता), वासन्त नवरात्र समाप्त,
३०	३४	१०	बु.	१५	३	पुष्य	३१	२८	सु.	४५	३३	ग.	१५	०३		१५	२८	७	८	कर्क			६	२१	१८	३५	११	१२	५८	३९	भद्रा ४६/४६ बाद,
३०	३८	११	गु.	१८	२९	आश्ले.	३६	४०	धृ.	४६	४	वि.	१८	२९		१६	२९	८	९	सिंह	३६	४०	६	२०	१८	३५	११	१३	५८	०	भद्रा १८/२९ तक, मंगल कुम्भ में २७/१८, (E)
३०	४३	१२	शु.	२३	८	मघा	४२	५४	शू.	४७	२४	बा.	२३	०८		१७	३०	९	१०	सिंह			६	१९	१८	३६	११	१४	५७	१८	अनंग त्रयोदशी (देखें पृ. ८९), प्रदोष व्रत,
३०	४८	१३	श.	२८	४०	पू.फा.	४९	५६	गं.	४९	१९	तै.	२८	४०		१८	३१	१०	११	सिंह			६	१७	१८	३६	११	१५	५६	३४	सूर्य रेवती में ४२/०५, बुध पू. भा. में ४/५८, (F)
३०	५२	१४	र.	३४	४८	उ.फा.	५७	२६	वृ.	५१	३८	ग.	१	४४		१९	अ.१	११	१२	कन्या	६	४९	६	१६	१८	३७	११	१६	५५	४९	भद्रा ३४/४८ बाद, अप्रैल प्रारम्भ, दमनक चतुर्दशी,
३०	५७	१५	चं.	४१	१४	हस्त	६०	०	ध्रु.	५४	७	वि.	८	०१		२०	२	१२	१३	कन्या			६	१५	१८	३८	११	१७	५५	०	भद्रा ८/०१ तक, श्रीसत्यनारायण व्रत, चैत्री पूर्णिमा, (G)

(A) वासन्त नवरात्रारम्भ, घटस्थापन, वर्षफल श्रवण, तैलाभ्यंग, (B) समाप्त ४६/३१, सूर्य सायन मेष में ५७/४९, महाविषुवदिन, उत्तरगोल प्रारम्भ, (C) श्रीमत्स्य जयन्ती, आन्दोलन तृतीया, (D) पंचमी, स्कन्दषष्ठी (पंचमी विद्धा) (देखें पृ. ८९) (E) कामदा एकादशी व्रत (स.), (F) प्लूटो वक्री ५४/५१, श्री जैन महावीर जयन्ती,(G) वैशाखस्नान प्रारम्भ, श्री हनुमान् जयन्ती (द.भा.),

अष्टमी चन्द्र, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) २६ मार्च

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	२	९	१०	७	०	३	१०	४
१०	१३	२७	१३	२५	१५	२४	२१	२१
५९	५५	१९	३७	३७	४६	४४	१५	१५
५२	५२	३७	४५	४७	१९	४२	२९	२९
५९	७८२	४५	७०	१	७१	२	३	३
२५	३१	५७	३४	५७	५२	३३	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
उ.भा. ३	आर्द्रा ३	धनि. २	शत. ३	ज्ये. ३	भर. १	आश्ले. ३	पू.भा. १	पू.फा. ३

कुण्डली सूर्योदय

१ शु. | ११ बु.रा. | २ | १२ सू. | १० मं. | ३ चं. | ९ | ४ श. | ६ | ८ गु. | ५ के. | ७

लोकभविष्य:- इसवर्ष का राजा चन्द्र एवम् मन्त्री शनि होने से यह वर्ष मुस्लिमराष्ट्रों एवं प्रधानशासकों के लिए विशेष घटनापूर्ण रहेगा। शनि का वर्चस्व इसवर्ष अधिक रहने से राजनीतिज्ञों में विशेष विरोध, प्रधाननेताओं में वैमनस्य बढ़ेगा। पक्षान्त तक किसी दुर्घटना से हानि का योग है।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख:- पक्षारम्भ में रुई, जौ, सोना, चान्दी, जस्ता, लोहा में तेज़ी बने। गुड़, शक्कर, खाण्ड, घी, तेल, तिलहन में कुछ मन्दा रहे। २९ मार्च के लगभग रुई, गुड़, खाण्ड, चना, गेहूं, जौ एवम् दालवाना में जोरदार तेजी और मंदे के झटके आएंगे। पक्षान्त में तेल, तिलहन, सोना, चान्दी, रुई, चना, चावल तेज रहें।

आकाश लक्षण:- मार्च २०, २३ और २५ तक उत्तरी भारत में तापमान बढ़ेगा। २९, ३०, ३१ मार्च को भूटान, सिक्किम, बंगलादेश, पूर्वी आसाम, पूर्वी बिहार में बादल-वर्षा के योग है, लेकिन उत्तरी भारत में तापमान बढ़े।

शकुन विचार:- यदि चैत्र शुक्ल पंचमी को वर्षासहित दक्षिण-पूर्व की वायु चले तो उस वर्ष अनाजों में तेजी आती है -" चैत्रस्य शुक्ल पंचम्यां वायुर्दक्षिणपूर्वयोः। वृष्ट्या सह तदा वर्षे धान्ये त्रिगुणता भवेत्॥"

कुण्डली सूर्योदय

१ शु. | ११ बु.रा. मं. | २ | १२ सू. | १० | ३ | ९ | ४ श. | ६ चं. | ८ गु. | ५ के. | ७

पूर्णिमा चन्द्र, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) २ अप्रैल

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	५	१०	१०	७	०	३	१०	४
१७	१०	२	२२	२५	२४	२४	२०	२०
५५	७	४१	३३	४७	७	२८	५३	५३
०	३७	२५	१७	३७	३७	५९	२४	२४
५९	७०९	४६	८३	०	७१	१	३	३
१०	२६	००	४८	४०	१५	५०	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
रेव. १	हस्त १	धनि. ३	पू.भा. १	ज्ये. ३	भर. ४	आश्ले. ३	पू.भा. १	पू.फा. ३

श्री वि. सं. २०६४, शाक १९२९, वैशाख कृष्ण पक्ष २

(३ से १७ अप्रैल तक, सन् २००७ ई.) उत्तरायण, उत्तरगोल, वसन्त ऋतु।

सायं शु. पश्चिम क्षितिज के पास और श. पूर्व कपाल में होगा। प्रातः बु. पूर्व क्षितिजासन्न, मं. उससे काफी ऊपर तथा गु. पश्चिम कपाल में दिखाई देगा।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीख प्र.	तारीख अं.	तारीख श.	तारीख मु.	चन्द्रराशि	प्रवेशकाल घ.	प्रवेशकाल प.	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. भा. स्टैं. टा. रा.	अं.	क.	वि.	
३१	२	१	मं.	४७	४४	हस्त	५	११	व्या.	५६	३७	बा.	१४	४६	२१	३	१३	१४	तुला	३९	२	६	१४	१८	३८	११	१८	५४	१०	
३१	६	२	बु.	५४	२	चित्रा	१२	५२	ह.	५८	५८	तै.	२०	५३	२२	४	१४	१५	तुला			६	१३	१८	३९	११	१९	५३	१८	शुक्र कृति. में ६/३७, अगस्त्य अस्त,
३१	११	३	गु.	५९	५४	स्वा.	२०	१७	व.	६०	०	व.	२६	५८	२३	५	१५	१६	तुला			६	११	१८	४०	११	२०	५२	२४	भद्रा २६/५८ से ५९/५४ तक,
३१	१५	४	शु.	६०	०	विशा.	२७	११	व.	०	५८	ब.	३२	३०	२४	६	१६	१७	वृश्चि.	१०	३३	६	१०	१८	४०	११	२१	५१	२८	गुरु वक्री १/४६, शुक्र वृष में ५५/४९, श्रीगणेश (A)
३१	२०	४	श.	५	६	अनु.	३३	१९	सि.	२	२६	बा.	५	०६	२५	७	१७	१८	वृश्चि.			६	९	१८	४१	११	२२	५०	३०	मंगल शत. में ९/२७, बुध मीन में ५/४२,
३१	२४	५	र.	९	१७	ज्ये.	३८	२४	व्य.	३	११	तै.	९	१७	२६	८	१८	१९	धनु	३८	२४	६	८	१८	४१	११	२३	४९	३०	
३१	२९	६	चं.	१२	१३	मूल	४२	८	व.	३	०	व.	१२	१३	२७	९	१९	२०	धनु			६	७	१८	४२	११	२४	४८	२९	भद्रा १२/१३ से ४२/५५ तक, बुध उ.भा. में १४/४५,
३१	३३	७	मं.	१३	३८	पू.षा.	४४	१९	प. शि.	१ ५९	४१ ४	ब.	१३	३८	२८	१०	२०	२१	मकर	५९	३५	६	५	१८	४३	११	२५	४७	२५	
३१	३८	८	बु.	१३	२१	उ.षा.	४४	४७	सि.	५५	२	कौ.	१३	२१	२९	११	२१	२२	मकर			६	४	१८	४३	११	२६	४६	२०	
३१	४२	९	गु.	११	१५	श्रव.	४३	२८	सा.	४९	३४	ग.	११	१५	३०	१२	२२	२३	मकर			६	३	१८	४४	११	२७	४५	१४	भद्रा ३९/१९ बाद,
३१	४७	१०	शु.	७	२२	धनि.	४०	२५	शु.	४२	४२	वि.	७	२२	३१	१३	२३	२४	कुम्भ	१२	१०	६	२	१८	४५	११	२८	४४	५	भद्रा ७/२२ तक, पंचक प्रारम्भ १२/१०, वरूथिनी (B)
३१	५१	११	श.	१	४५	शत.	३५	४७	शु.	३४	३३	बा.	१	४५	वै.१	१४	२४	२५	कुम्भ			६	१	१८	४५	११	२९	४२	५५	सं.सूर्य अश्वि. मेष में १६/०७, मु. १५, पुण्यकाल (C)
अवम		१२	श.	५४	४१	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	द्वादशी तिथिक्षय,
३१	५६	१३	र.	४६	२६	पू.भा.	२९	५२	ब्र.	२५	२०	ग.	२०	३३	२	१५	२५	२६	मीन	१६	२६	६	००	१८	४६	०	०	४१	४३	भद्रा ४६/२६ बाद, शुक्र रोहि. में २७/३७, प्रदोष व्रत,
३२	०	१४	चं.	३७	२१	उ.भा.	२२	५९	ऐं.	१५	१७	वि.	११	५३	३	१६	२६	२७	मीन			५	५८	१८	४७	०	१	४०	२९	भद्रा ११/५३ तक,
३२	५	३०	मं.	२७	५१	रेव.	१५	३२	वै. वि.	४ ५४	४५ १	ना.	२७	५१	४	१७	२७	२८	मेष	१५	३२	५	५७	१८	४७	०	२	३९	१४	पंचक समाप्त १५/३२, बुध रेव. में ११/०३, भौमवती (D)

(A) चतुर्थी व्रत, (B) एकादशी व्रत (स्मा.), (C) ०/१० बाद, वैशाखी (प.), वरूथिनी एकादशी व्रत (वै.), त्रिस्पृशा महाद्वादशी, श्रीवल्लभाचार्य जयन्ती, (D) अमावस,

अष्टमी बुध, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.)
११ अप्रैल

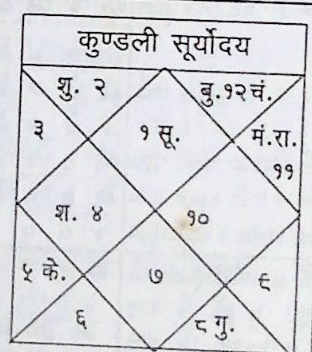
सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	८	१०	११	७.	१	३	१०	४
२६	२६	६	६	२५	४	२४	२०	२०
४६	४६	३५	६	४६	४५	१६	२४	२४
२०	३	४१	१	५१	२७	५	४७	४७
५८ ५४	७६६ ५८	४६ ०३	६८ १०	१ ०२	७० २२	० ५५	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
रेव. ४	उ.षा. १	शत. १	उ.भा. १	ज्ये. ३	कृत्ति. ३	आश्ले. ३	पू.भा. १	पू.फा. ३



लोकभविष्यः- इस चान्द्रमास में पांच मंगलवार हैं। मंगल-राहु दोनों कुम्भ में होने से मुस्लिमराष्ट्रों में भारी अशान्ति रहेगी। कहीं किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति का पद रिक्त होगा। कहीं अग्निकाण्ड, भूकम्प व अकाल की स्थिति से जनजीवन त्रस्त रहे;- **"पञ्च-भौमे भयं वह्नेः वृष्टिरोधस्तु कुत्रचित्। ईतयः सप्तधा भौमे पीड़ा-दुःख-पराभवाः।।"**

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- पक्षारम्भ मे बाज़ार मन्दे रहें। लेकिन ६ अप्रैल को रुई मे अच्छी मंदी आकर तेजी बने और सोना, चान्दी भी तेज रहें। ७ अप्रैल को सोना-चान्दी मे घटाबढ़ी के बाद तेजी बने। रुई, गुड़, खाण्ड मन्दे रहें। १४ अप्रैल के लगभग रुई, कपास, सूत, घी, तेल, अनाज, गुड़, खाण्ड, सोना, चान्दी तेज रहें। पक्षान्त मे बाज़ार तेज रहेंगे।

आकाश लक्षणः- अप्रैल ६, ७, ८, १४, १७ के लगभग बंगलादेश, हि. प्र., भूटान, सिक्किम और आसाम मे खण्डवृष्टि के योग बनते हैं।



अमा मंगल, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.)
१७ अप्रैल

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	११	१०	११	७	१	३	१०	४
२	२५	१४	१६	२५	११	२४	२०	२०
३६	४५	११	१८	३७	४६	१२	५	५
१४	४	५७	२१	५३	८	१४	४२	४२
५८ ४२	६१५ २८	४६ ०१	१०७ ३२	२ ०८	६६ ४४	० १६	३ १०	३ १०
		मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
अश्वि. १	रेव. ३	शत. ३	उ.भा. ४	ज्ये. ३	रोहि. १	आश्ले. ३	पू.भा. १	पू.फा. ३

शकुन विचारः- वैशाख कृष्ण एकादशी को यदि आकाश मेघाच्छन्न रहे तो अनाजों का स्टॉक तुरन्त निकालकर लाभ लें, अन्यथा हानि में रहेंगे।

श्री वि. सं. २०६४, शाक १९२९, वैशाख शुक्ल पक्ष ३

(१९ अप्रैल से २ मई तक, सन् २००७ ई.)
उत्तरायण, उत्तरगोल, वासन्त–ग्रीष्म ऋतु।

बु. २० अप्रै. को पूर्व में अदृश्य हो जाएगा। सायं शु. पश्चिम में और श. याम्योत्तरवृत्तासन्न होगा। प्रातः मं. को पूर्व में और गु. को पश्चिम कपाल में देखा जा सकेगा।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय		सूर्यास्त		स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. भा. स्टैं. टा.				
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	वैशाख	अप्रैल	वैशा.	र.उल.		घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३२	९	१	बु.	१८	२३	अश्वि.	८	३	प्री.	४३	३३	ब.	१८	२३	५	१८	२८	२९	मेष			५	५६	१८	४८	०	३	३७	५६	चन्द्र दर्शन, मु. १५, राहु शत. ४, केतु पू.फा. २ में (A)
३२	१३	२	गु.	९	२३	भर. कृति.	० ५४	५३ ३७	आ.	३३	३९	कौ.	९	२३	६	१९	२९	र.१	वृष	१४	१४	५	५५	१८	४८	०	४	३६	३७	शनि मार्गी ५२/२७, श्रीपरशुराम जयन्ती, अक्षय (B)
३२	१८	३	शु.	१	१४	रोहि.	४९	३८	सौ.	२४	४१	ग.	१	१४	७	२०	३०	२	वृष			५	५४	१८	४९	०	५	३५	१५	भद्रा २७/५२ से ५४/२९ तक, सूर्य सायन वृष में (C)
अवम		४	शु.	५४	२९	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्थी तिथिक्षय,
३२	२२	५	श.	४९	२५	मृग.	४६	१९	शो.	१६	५८	ब.	२१	५७	८	२१	वै.१	३	मिथुन	१७	४६	५	५३	१८	५०	०	६	३३	५१	शक वैशाख प्रा., आद्य जगद्गुरु श्रीशंकराचार्य जयन्ती, (D)
३२	२६	६	र.	४६	१९	आर्द्रा	४४	५६	अ.	१०	४४	कौ.	१७	५२	९	२२	२	४	मिथुन			५	५२	१८	५०	०	७	३२	२६	श्रीरामानुजाचार्य जयन्ती (उ.भा.),
३२	३०	७	चं.	४५	१९	पुन.	४५	३८	सु.	६	८	ग.	१५	४९	१०	२३	३	५	कर्क	३०	१७	५	५१	१८	५१	०	८	३०	५७	भद्रा ४५/१९ बाद, श्रीगंगा जन्म,
३२	३५	८	मं.	४६	२५	पुष्य	४८	२२	धृ.	३	११	वि.	१५	५२	११	२४	४	६	कर्क			५	५०	१८	५२	०	९	२९	२७	भद्रा १५/५२ तक, मंगल पू.भा. में ३३/१३, बुध (E)
३२	३९	९	बु.	४९	२५	आश्ले.	५२	५८	शू.	१	५४	बा.	१७	५५	१२	२५	५	७	सिंह	५२	५८	५	४९	१८	५२	०	१०	२७	५५	श्रीजानकी जयन्ती,
३२	४३	१०	गु.	५३	५९	मघा	५९	१	गं.	२	१	तै.	२१	४२	१३	२६	६	८	सिंह			५	४८	१८	५३	०	११	२६	२०	
३२	४७	११	शु.	५९	४१	पू.फा.	६०	०	वृ.	३	१७	व.	२६	५०	१४	२७	७	९	सिंह			५	४७	१८	५४	०	१२	२४	४४	भद्रा २६/५० से ५९/४१ तक, सूर्य भरणी में (F)
३२	५१	१२	श.	६०	०	पू.फा.	६	१०	ध्रु.	५	२४	ब.	३२	५२	१५	२८	८	१०	कन्या	२३	३	५	४६	१८	५४	०	१३	२३	५	मोहिनी एकादशी व्रत (वै.),
३२	५५	१२	र.	६	३	उ.फा.	१३	५१	व्या.	७	५६	बा.	६	०३	१६	२९	९	११	कन्या			५	४५	१८	५५	०	१४	२१	२५	प्रदोष व्रत,
३२	५९	१३	चं.	१२	३५	हस्त	२१	४१	ह.	१०	३७	तै.	१२	३५	१७	३०	१०	१२	तुला	५५	३२	५	४४	१८	५६	०	१५	१९	४२	बुध भरणी में ४७/२१, श्रीनृसिंह जयन्ती,
३३	३	१४	मं.	१८	५७	चित्रा	२९	१९	व.	१३	११	व.	१८	५७	१८	म.१	११	१३	तुला			५	४३	१८	५६	०	१६	१७	५७	भद्रा १८/५७ से ५१/५४ तक, मई प्रा., श्री कूर्मजयन्ती (G)
३३	७	१५	बु.	२४	५२	स्वा.	३६	३१	सि.	१५	२७	ब.	२४	५२	१९	२	१२	१४	तुला			५	४२	१८	५७	०	१७	१६	११	शुक्र मिथुन में ५४/१२, श्री बुद्धजयन्ती, बुद्धपूर्णिमा, (H)

(A) ८५/५२, (B) तृतीया (देखें पृ. ८९), रवि–उस्मानी मु. प्रा., श्री शिवाजी जयन्ती, (C) २६/४८, ग्रीष्म ऋतु प्रा., बुध पूर्व में अस्त ५४/२२, (D) श्रीरामानुजाचार्य जयन्ती (द.भा.), (E) अश्वि. मेष में १७/०७, यूरेनस पू.भा. २ में १६/०७, (F) ५६/०७, शुक्र मृग. में १/१३, मोहिनी एकादशी व्रत (स्मा.), (G) श्रीसत्यनारायण व्रत, (H) वैशाखी पूर्णिमा, वैशाख स्नान समाप्त,

अष्टमी मंगल, प्रातः ५घं. ३०मि. (I.S.T.) २४ अप्रैल

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
० ९ २९ २७	३ ६ १४ १९	१० १६ ३३ ५६	११ २६ २४ ३७	७ २५ १६ ७	१ १६ ५१ ४१	३ २४ १२ ४०	१० १६ ४३ २७	४ १६ ४३ २७
५८ २८	७६१ ०१	४५ ५७	११८ ४१	३ २४	६८ ५१	० ३०	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
अश्वि. ३	पुष्य १	शत. ४	रेव. ४	ज्ये. ३	रोहि. ३	आश्ले. ३	शत. ४	पू.फा. २

कुण्डली सूर्योदय

शु. २ | बु. १२ | ३ | १ सू. | मं.रा. ११ | श. चं. ४ | १० | ५ के. | ७ | ९ | ६ | ८ गु.

लोकभविष्यः- इस पक्ष में शनि मार्गी हो रहा है। शनि की सूर्य पर विशेष दृष्टि है। बुध अतिचारी है। शनि मन्दगति है। उ.प्र. आदि में साम्प्रदायिक झगड़े होंगे। कहीं सीमाप्रान्तों पर स्थिति तनावपूर्ण बने। वैशाख शुक्ल पंचमी को शनिवार होने से मुस्लिमराष्ट्र पाक, इराक आदि में कहीं आन्तरिक अशान्ति, कहीं प्राकृतिक आपदा से भारी कष्ट का सामना करना पड़े; -

" वैशाख मासे सित पंचमी स्यात् सूर्यादि वारे चिनुते फलानि। मन्दावृष्टिस्त्वतिवृष्टिः युद्धं वातं सुभिक्षं कलहं च तापः।।"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- पक्षारम्भ में रुई अनाज मन्दे होकर तेज हों। तिल, तेल, सरसों में भी तेजी बने। २० अप्रैल के लगभग बाज़ार का रुख बदल सकता है। तेल, तिलहन और चान्दी में विशेष मन्दा बने। पक्षमध्य में बाज़ार तेज रहेंगे। २ मई को तिलहन, गुड़, घी में घटाबढ़ी; अनाज तेज; ग्वार में काफी मन्दा बने। **आकाश लक्षणः-** अप्रैल १८, १९, २०, २१, २४, २७ एवम् मई २ को राजस्थान, उ. प्र., हि. प्र., आसाम, महाराष्ट्र, विशेषतः मुम्बई में बादलचाल एवम् वर्षा के योग बनते हैं।

शकुन विचारः- वैशाख शुक्ल तृतीया किंवा पंचमी के दिन यदि दिनभर बादल रहें एवं मेघ गरजें तो भाद्रपद में अनाज मंहगे होंगे, स्टॉक निकालकर लाभ लें।

कुण्डली सूर्योदय

शु. २ | १२ | ३ | १ सू. बु. | मं.रा. ११ | श. ४ | १० | ५ के. | चं. ७ | ९ | ६ | ८ गु.

पूर्णिमा बुध, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) २ मई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
० १७ १६ ११	६ १२ ३८ ४	१० २५ ४१ १०	० १५ ५३ ३३	७ २४ ४७ २१	१ २८ ५८ २०	३ २४ १९ ३७	१० १६ १८ १	४ १६ १८ १
५८ १२	७१७ १२	४५ ५१	१२८ ४५	४ ४२	६७ ३७	१ २१	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
भर. २	स्वा. २	पू.भा. २	भर. १	ज्ये. ३	पुन. २	आश्ले. ३	शत. ४	पू.फा. २

श्री वि.सं. २०६४, शाक १९२९, प्र. ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष ४ (३ से १६ मई तक, सन् २००७ ई.)

उत्तरायण, उत्तर गोल, ग्रीष्म ऋतु।

बु.१४ मई से सायं पश्चिम में दृश्य होगा। सायं शु. पश्चिम में और श. याम्योत्तरवृत्त के पास कुछ पश्चिम की तरफ हटा होगा। प्रातः मं. पूर्व कपाल में और गु. पश्चिम में दिखाई देगा।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. वैशाख	तारीखें अं. मई	तारीखें श. वैशाख	तारीखें मु. र.उस्सा.	चन्द्रराशि	प्रवेशकाल घ.	प्रवेशकाल प.	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. भा. स्टैं. टा. रा.	अं.	क.	वि.	
३३	११	१	गु.	३०	१०	विशा.	४३	५	व्य.	१७	१५	कौ.	३०	१०	२०	३	१३	१५	वृश्चि.	२६	३१	५	४१	१८	५८	०	१८	१४	२३	
३३	१५	२	शु.	३४	४३	अनु.	४८	५४	व.	१८	३०	तै.	२	२७	२१	४	१४	१६	वृश्चि.			५	४०	१८	५८	०	१९	१२	३३	
३३	१८	३	श.	३८	२४	ज्ये.	५३	५२	प.	१९	७	व.	६	३३	२२	५	१५	१७	धनु	५३	५२	५	४०	१८	५९	०	२०	१०	४१	भद्रा ६/३३ से ३८/२४ तक,
३३	२२	४	र.	४१	५	मूल	५७	५१	शि.	१९	०	ब.	९	४४	२३	६	१६	१८	धनु			५	३९	१९	००	०	२१	८	४८	बुध कृत्ति. में ५९/०३, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत,
३३	२६	५	चं.	४२	४०	पू.षा.	६०	०	सि.	१८	४	कौ.	११	५२	२४	७	१७	१९	धनु			५	३८	१९	००	०	२२	६	५४	मंगल मीन में ३८/४५,
३३	२९	६	मं.	४२	५९	पू.षा.	०	४३	सा.	१६	१२	ग.	५०	५०	२५	८	१८	२०	मकर	१६	१७	५	३७	१९	१	०	२३	४	५८	भद्रा ४२/५९ बाद, बुध वृष में ३१/५४, शुक्र (A)
३३	३३	७	बु.	४१	५६	उ.षा.	२	२०	शु.	१३	१७	वि.	१२	२७	२६	९	१९	२१	मकर			५	३६	१९	२	०	२४	३	०	भद्रा १२/२७ तक,
३३	३७	८	गु.	३९	२४	श्रव.	२	३३	शु.	९	१५	बा.	१०	४०	२७	१०	२०	२२	कुम्भ	३२	८	५	३६	१९	२	०	२५	१	२	पंचक प्रारम्भ ३२/०८,
३३	४०	९	शु.	३५	२२	धनि. शत.	१ ५८	१८ ३४	ब्र. ऐं.	३ ५७	५८ ३१	तै.	७	२३	२८	११	२१	२३	कुम्भ			५	३५	१९	३	०	२५	५९	२	सूर्य कृत्ति. में ४२/१०,
३३	४३	१०	श.	२९	५३	पू.भा.	५४	२५	वै.	४९	५४	व.	२	३७	२९	१२	२२	२४	मीन	४०	३४	५	३४	१९	४	०	२६	५७	०	भद्रा २/३७ से २९/५३ तक, मंगल उ. भा. में १/३०,
३३	४७	११	र.	२३	५	उ.भा.	४९	४	वि.	४१	१७	बा.	२३	०५	३०	१३	२३	२५	मीन			५	३४	१९	४	०	२७	५४	५८	बुध रोहि. में १८/३०, भद्रकाली एकादशी (पं.), (B)
३३	५०	१२	चं.	१५	१३	रेव.	४२	४५	प्री.	३१	५१	तै.	१५	१३	३१	१४	२४	२६	मेष	४२	४५	५	३३	१९	५	०	२८	५२	५४	पंचक समाप्त ४२/४५, सोम प्रदोष व्रत, बुध पश्चिम(C)
३३	५३	१३	मं.	६	३५	अश्वि.	३५	५६	आ.	२१	५३	व.	६	३५	ज्ये.१	१५	२५	२७	मेष			५	३२	१९	६	०	२९	५०	४९	भद्रा ६/३५ से ३२/०३ तक, सं. सूर्य वृष में (D)
अवम		१४	मं.	५७	३२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्दशी तिथिक्षय,
३३	५७	३०	बु.	४८	३४	भर.	२८	५६	सौ.	११	४२	च.	२३	०३	२	१६	२६	२८	वृष	४२	१०	५	३२	१९	६	१	०	४८	४२	वटसावित्री व्रत (अमापक्ष), भावुका अमावस,

(A) आर्द्रा में ५२/१९, (B) अपरा एकादशी व्रत (स.), (C) में उदित २८/४९, (D) ९/२५, मु. ३०, पुण्यकाल २५/२७ तक,

अष्टमी गुरु, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) १० मई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
० २५ १ २	९ २२ ४२ ४	११ १ ४७ २३	१ ३ ७ १९	७ २४ ५ ४२	२ ७ ५४ ३७	३ २४ ३३ १६	१० १८ ५२ ३५	४ १८ ५२ ३५
५८ ००	८१६ ४५	४५ ४१	१२६ ३३	५ ४९	६६ १४	२ १०	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
भर. ४	श्रव. ४	पू.भा. ४	कृत्ति. २	ज्ये. ३	आर्द्रा १	आश्ले. ३	शत. ४	पू.फा. २

कुण्डली सूर्योदय

बु. २ | मं. १२
३ शु. | १ सू. | रा. ११
श. ४ | चं. १०
५ के. | ७ | ९
६ | ८ गु.

लोकभविष्यः– बुध अतिचारी है; ज्ये. अधिकमास होने से शासकों में परस्पर वैमत्य रहने से प्रधान–नेता को काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा– **"द्विज्येष्ठे नृपविग्रहः"।** इस चान्द्रमास में ५ गुरुवार होने से पश्चिमी देशों में कहीं विग्रह, कहीं भारी प्राकृतिक आपदाओं का सामना करना पड़े;– **"यत्र मासे पञ्चवाराः जायन्ते च बृहस्पतेः। विग्रहः पश्चिमे देशे खड्गयुद्धं च जायते॥"**

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः– पक्षारम्भ में चान्दी मन्दी; अनाज, रुई तेज रहें। ८ मई के लगभग रुई में मन्दी आकर तेजी बने। अनाज, कपास, तिल, तेल के भाव तेज रहें। १२ मई के लगभग सुगन्धित पदार्थ, रुई, कपास, सूत, सोना, चान्दी, तिल, तेल, सरसों, गुड़, खाण्ड और अनाज तेज रहेंगे। १४ मई के करीब बाज़ारों का रुख बदल सकता है। **आकाश लक्षणः–** मई ७, ८, ९, १२, १३, १५ को पूर्वी उड़ीसा, विन्ध्यप्रदेश, हि. प्र., मुम्बई, भूटान, सिक्किम एवम् आसाम में वर्षा के योग हैं। पंजाब, हरि., दिल्ली, राजस्थान एवम् मध्यप्रदेश में गर्मी का प्रकोप बढ़े। **शकुन विचारः–** यदि ज्येष्ठ कृष्ण द्वितीया को दक्षिण की वायु चले तो घी, तेल, तिल के स्टॉक से आश्विन में लाभ मिलेगा।

कुण्डली सूर्योदय

शु. ३ | १ चं.
४ श. | बु. २ सू. | मं. १२
के. ५ | रा. ११
६ | गु. ८ | १०
७ | ९

अमा बुध, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) १६ मई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१ ० ४८ ४२	० १९ २२ ११	११ ६ २१ ६	१ १५ १८ ३४	७ २३ २८ ५४	२ १४ २९ ३	३ २४ ४७ ४६	१० १८ ३३ ३०	४ १८ ३३ ३०
५७ ५२	९०४ ११	४५ ३१	११३ ५०	६ ३२	६५ ०१	२ ४५	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
कृत्ति. २	भर. २	उ.भा. १	रोहि. २	ज्ये. ३	आर्द्रा ३	आश्ले. ३	शत. ४	पू.फा. २

श्री वि.सं. २०६४, शाक १९२९, प्र.(अधि.) ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष ५

(१७ मई से १ जून तक, सन् २००७ ई.)
उत्तरायण, उत्तरगोल, ग्रीष्म ऋतु।

सायं बु. पश्चिम क्षितिजासन्न और उससे काफी ऊपर शु. होगा एवं इस समय श. पश्चिम कपाल में दिखाई देगा। प्रातः मं. पूर्व कपाल में और गु. पश्चिम में दिखाई देगा।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति काल		तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय		सूर्यास्त		स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. भा. स्टैं. टा.				
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	ज्येष्ठ	मई	वैशाख	र.उस्सा.		घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३४	००	१	गु.	४०	४	कृत्ति.	२२	१५	शो. अ.	१ ५२	३८ ५	किं	१४	१९	३	१७	२७	२९	वृष			५	३१	१९	७	१	१	४६	३४	पुरुषोत्तम (अधिक) मास प्रा., वक्री गुरु ज्ये. २ में (A)
३४	३	२	शु.	३२	३१	रोहि.	१६	२२	सु.	४३	२५	बा.	६	१८	४	१८	२८	३०	मिथुन	४३	५०	५	३०	१९	८	१	२	४४	२४	चन्द्र दर्शन, मु. ३०,
३४	६	३	श.	२६	२०	मृग.	११	४३	धृ.	३५	५६	ग.	२६	२०	५	१९	२९	ज.१	मिथुन			५	३०	१९	८	१	३	४२	१३	भद्रा ५४/०६ बाद, जमद–उल–अव्वल मु. प्रारम्भ,
३४	९	४	र.	२१	५३	आर्द्रा	८	४३	शू.	२९	५६	वि.	२१	५३	६	२०	३०	२	कर्क	५२	४४	५	२९	१९	९	१	४	४०	१	भद्रा २१/५३ तक, बुध मृग. में २५/१०,
३४	१२	५	चं.	१९	२७	पुन.	७	४१	गं.	२५	३६	बा.	१९	२७	७	२१	३१	३	कर्क			५	२९	१९	९	१	५	३७	४७	शुक्र पुन. में ७/४३, सूर्य सायन मिथुन में २५/३०,
३४	१५	६	मं.	१९	११	पुष्य	८	४६	वृ.	२२	५९	तै.	१९	११	८	२२	ज्ये.१	४	कर्क			५	२८	१९	१०	१	६	३५	३१	शक ज्येष्ठ प्रारम्भ,
३४	१७	७	बु.	२१	३	आश्ले.	११	५७	ध्रु.	२२	२	व.	२१	०३	९	२३	२	५	सिंह	११	५७	५	२८	१९	११	१	७	३३	१४	भद्रा २१/०३ से ५२/५५ तक,
३४	२०	८	गु.	२४	४६	मघा	१६	५८	व्या.	२२	३२	ब.	२४	४६	१०	२४	३	६	सिंह			५	२७	१९	११	१	८	३०	५५	बुध मिथुन में ३५/४८,
३४	२३	९	शु.	२९	५७	पू.फा.	२३	२८	ह.	२४	१०	कौ.	२९	५७	११	२५	४	७	कन्या	४०	१७	५	२७	१९	१२	१	९	२८	३४	सूर्य रोहि. में ३२/४९, नेप्च्यून वक्री १/३३,
३४	२५	१०	श.	३६	२	उ.फा.	३०	५४	व.	२६	३२	तै.	२	५९	१२	२६	५	८	कन्या			५	२६	१९	१२	१	१०	२६	१२	श्री गंगादशहरा,
३४	२७	११	र.	४२	२७	हस्त	३८	४१	सि.	२९	१३	व.	९	१५	१३	२७	६	९	कन्या			५	२६	१९	१३	१	११	२३	४९	भद्रा ९/१५ से ४२/२७ तक, पुरुषोत्तमा एकादशी(B)
३४	३०	१२	चं.	४८	४०	चित्रा	४६	१८	व्य.	३१	५०	ब.	१५	३३	१४	२८	७	१०	तुला	१२	३३	५	२६	१९	१४	१	१२	२१	२४	
३४	३२	१३	मं.	५४	१७	स्वा.	५३	२३	व.	३४	३	कौ.	२१	२९	१५	२९	८	११	तुला			५	२५	१९	१४	१	१३	१८	५८	मंगल रेवती में ४०/२२, बुध आर्द्रा में ३३/२७, (C)
३४	३४	१४	बु.	५९	४	विशा.	५९	३९	प.	३५	४१	ग.	२६	४१	१६	३०	९	१२	वृश्चि.	४३	१०	५	२५	१९	१५	१	१४	१६	३०	भद्रा ५९/०४ बाद, शुक्र कर्क में ४३/०७,
३४	३६	१५	गु.	६०	०	अनु.	६०	०	शि.	३६	३६	वि.	३०	५८	१७	३१	१०	१३	वृश्चि.			५	२५	१९	१५	१	१५	१४	२	भद्रा ३०/५८ तक, श्रीसत्यनारायण व्रत,
३४	३८	१५	शु.	२	५१	अनु.	४	५८	सि.	३६	४४	ब.	२	५१	१८	जू.१	११	१४	वृश्चि.			५	२५	१९	१६	१	१६	११	३२	जून प्रारम्भ,

(A) २१/२२, (B) व्रत (स.), (C) भौम प्रदोष व्रत,

अष्टमी गुरु, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) २४ मई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	४	११	१	७	२	३	१०	४
८	६	१२	२६	२२	२३	२५	१८	१८
३०	५४	२४	६	३४	२	१२	८	८
५५	२५	१२	३१	०	३१	३१	३	३
५७	७२६	४५	८६	७	६३	३	३	३
४०	१४	१३	१६	१३	०२	३१	१०	१०
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
कृत्ति. ४	मघा ३	उ.भा. ३	मृग. २	ज्ये. २	पुन. १	आश्ले. ३	शत. ४	पू.फा. २

कुण्डली सूर्योदय

शु. ३ | १ | ४ | मं. | श. | बु. २ सू. | १२ | ५ | चं. के. | रा. ११ | ६ | गु. ८ | १० | ७ | ९

लोकभविष्य:- यहां पक्षमध्य में बुध मिथुन में एवम् ३० मई को शुक्र कर्क में आकर शनि के साथ मेल करता है। लेकिन ये गुरुदृष्ट हैं, अतः भारत की प्रतिष्ठा बढ़ेगी। उलझी समस्याओं का हल निकलेगा। कर्कराशि का शुक्र मंहगाई करे एवम् जनता में असन्तोष की भावना प्रबल हो- **"दैत्यगुरुर्यदा कर्के रसानां वै महर्घता। सर्वधान्यमहर्घत्वं मेघाश्च प्रबला भुवि।।"**

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख:- पक्षारम्भ में सोना, चान्दी के बाज़ार मन्दे रहें, लेकिन सरसों, गुड़, खाण्ड, गेहूं, जौ, चना, चावल तेज रहेंगे। २४ मई के लगभग रुई, सोना, चान्दी में अच्छा मन्दा; तिल, तेल, सरसों, एरण्ड, अलसी, गुड़, खाण्ड, घी, गेहूं, जौ, चना, ग्वार, बाजरा में तेजी हो। पक्षान्त में बाज़ार अस्थिर रहें। रुई, सोना, चान्दी एवं अनाजों में ३० मई के करीब अच्छी तेजी का योग बनता है।

आकाश लक्षण:- मई १७, २४, २५, २६, ३०, ३१ को मुम्बई, आसाम, उड़ीसा, बिहार में वर्षा के योग हैं।

शकुन विचार:- यदि टटीहरी पक्षी सूखे गोबर, घास या हड्डियों के ढेर में अण्डे दें, तो पशुओं का नाश हो। अकाल, महामारी से जनता कष्ट पाए।

कुण्डली सूर्योदय

बु. ३ | १ | ४ | मं. | श.शु. | २ सू. | १२ | ५ के. | रा. ११ | ६ | गु. ८ चं. | १० | ७ | ९

पूर्णिमा शुक्र, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) १ जून

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	७	११	२	७	३	३	१०	४
१६	१५	१८	६	२१	१	२५	१७	१७
११	४१	२४	२५	३४	१८	४३	४२	४२
३२	२६	४६	३४	४५	१४	५	३७	३७
५७	७४५	४४	६१	७	६०	४	३	३
२६	०२	५३	२५	३५	२६	१२	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
रोहि. २	अनु. ४	रेव. १	आर्द्रा १	ज्ये. २	पुन. ४	आश्ले. ३	शत. ४	पू.फा. २

श्री वि. सं. २०६४, शाक १९२९, द्वि.(अधि.) ज्ये.कृ.पक्ष ६

(२ से १५ जून तक, सन् २००७ ई.)

उत्तरायण, उत्तर गोल, ग्रीष्म ऋतु।

सायं बु. पश्चिम क्षितिज के पास, शु. उससे ऊपर तथा श. उससे भी ऊपर पश्चिम कपाल में और गु. पूर्व क्षितिज पर उदय होता हुआ दिखाई देगा। प्रातः मं. को पूर्व में देखिए।

दिनमान घ.	प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	प.	योग	समाप्ति-काल घ.	प.	करण	समाप्ति-काल घ.	प.	तारीखें प्र. ज्येष्ठ	अं. जून	श. ज्येष्ठ	मु. जमा.उ.	चन्द्रराशि - प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. भा. स्टैं. टा. रा.	अं.	क.	वि.	
३४	४०	१	श.	५	३९	ज्ये.	९	१८	सा.	३६	५	कौ.	५	३९	१९	२	१२	१५	धनु	९	१८	५	२४	१९	१६	१	१७	९	१	
३४	४२	२	र.	७	२५	मूल	१२	४०	शु.	३४	३९	ग.	७	२५	२०	३	१३	१६	धनु			५	२४	१९	१७	१	१८	६	२९	भद्रा ३७/४९ बाद, शुक्र पुष्य में १/२५,
३४	४४	३	चं	८	१३	पू.षा.	१५	५	शु.	३२	२८	वि.	८	१३	२१	४	१४	१७	मकर	३०	३२	५	२४	१९	१७	१	१९	३	५६	भद्रा ८/१३ तक, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत,
३४	४६	४	मं.	८	४	उ.षा.	१६	३३	ब्र.	२९	३२	बा.	८	०४	२२	५	१५	१८	मकर			५	२४	१९	१८	१	२०	१	२२	
३४	४७	५	बु.	६	५५	श्रव.	१७	३	ऐं.	२५	४८	तै.	६	५५	२३	६	१६	१९	कुम्भ	४६	५६	५	२४	१९	१८	१	२०	५८	४८	पंचक प्रारम्भ ४६/५६,
३४	४९	६	गु.	४	४६	धनि.	१६	३३	वै.	२१	१४	व.	४	४६	२४	७	१७	२०	कुम्भ			५	२३	१९	१९	१	२१	५६	१३	भद्रा ४/४६ से ३३/१० तक,
३४	५०	७	शु.	१	३३	शत.	१४	५९	वि.	१५	४९	ब.	१	३३	२५	८	१८	२१	मीन	५८	७	५	२३	१९	१९	१	२२	५३	३८	सूर्य मृग. में २७/५२,
अवम		८	शु.	५७	१६	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०.	०	अष्टमी तिथिक्षय,
३४	५१	९	श.	५१	५६	पू.भा.	१२	२१	प्री.	९	३१	तै.	२४	३६	२६	९	१९	२२	मीन			५	२३	१९	२०	१	२३	५१	१	
३४	५२	१०	र.	४५	३८	उ.भा.	८	४२	आ. सौ.	२ ५४	२३ २८	व.	१८	४७	२७	१०	२०	२३	मीन			५	२३	१९	२०	१	२४	४८	२४	भद्रा १८/४७ से ४५/३८ तक,
३४	५४	११	चं.	३८	३४	रेव. अश्वि.	४ ५८	८ ५९	शो.	४५	५७	ब.	१२	०६	२८	११	२१	२४	मेष	४	८	५	२३	१९	२१	१	२५	४५	४७	पंचक समाप्त ४/०८, पुरुषोत्तमा एकादशी व्रत (स.),
३४	५५	१२	मं.	३०	५८	भर.	५३	१०	अ.	३७	१	कौ.	४	४६	२९	१२	२२	२५	मेष			५	२३	१९	२१	१	२६	४३	१०	भौम प्रदोष व्रत,
३४	५५	१३	बु.	२३	८	कृत्ति.	४७	२४	सु.	२७	५५	व.	२३	०८	३०	१३	२३	२६	वृष	६	४२	५	२३	१९	२१	१	२७	४०	३१	भद्रा २३/०८ से ४९/१७ तक, वक्री गुरु ज्ये. १ (A)
३४	५६	१४	गु.	१५	२७	रोहि.	४१	५८	धृ.	१८	५९	श.	१५	२७	३१	१४	२४	२७	वृष			५	२३	१९	२२	१	२८	३७	५२	
३४	५७	३०	शु.	८	१९	मृग.	३७	१७	शू.	१०	३२	ना.	८	१९	आ.१	१५	२५	२८	मिथुन	९	२९	५	२३	१९	२२	१	२९	३५	१३	सं. सूर्य मिथुन में २६/१३, मु. ३०, पुण्यकाल (B)

(A) में २६/५१, शनि आश्ले. ४ में १४/४८, (B) १०/१० बाद, बुध वक्री ५९/२८, पुरुषोत्तम (मल) मास समाप्त,

सप्तमी शुक्र, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.)

८ जून

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	१०	११	२	७	३	३	१०	४
२२	१६	२३	१५	२०	८	२६	१७	१७
५३	३७	३७	१४	४१	१३	१४	२०	२०
३८	१२	५७	४	२१	४८	१२	२१	२१
५७	८३३	४४	३३	७	५७	४	३	३
२४	०७	३३	३२	३९	४५	४६	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
रोहि. ४	शत. ३	रेव. ३	आर्द्रा ३	ज्ये. २	पुष्य २	आश्ले. ३	शत. ४	पू.फा. २

कुण्डली सूर्योदय

बु. ३ | १ | ४ | मं. १२ | श.शु. | २ सू. | ५ के. | रा. ११ चं. | ६ | गु. ८ | १० | ७ | ९

लेकभविष्यः— इस चान्द्रमास में पांच शनिवार हैं। कहीं भयंकर समुद्री-तूफान, भूचाल या भयंकर अग्निकाण्ड से भारी जन-धनहानि का योग बनता है। पश्चिमोत्तर में कहीं वरिष्ट नेता के निधन से शोक व्याप्त हो, मंहगाई उत्तरोत्तर बढ़ेगी;- **" शनैश्च पंचकं दृष्ट्वा पाताले कम्पते फणी। ईशानदेशभंगश्च वह्निदाहो महर्घता ।।"** ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमा को शनिवार होने से कहीं राज्यपरिवर्तन, शासक के अपदस्थ होने किंवा मृत्यु का समाचार मिले।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- ३ जून को रुई, सूत, सण, रेशम व अनाज तेज रहें। गुड़, खाण्ड मन्दे । ८ जून को सोना, चान्दी, उड़द, मूंग, मोठ, चना, बाजरा, रुई में तेजी हो । १३ जून को व्यापारिक वस्तुओं में घटाबढ़ी के बाद मन्दा आ सकता है। १५ जून को पाट, बारदाना, रेशम, सूत, कपास, रुई में तेजी; चान्दी और अनाजों में कुछ मन्दा रहे। **आकाश लक्षणः-** जून ३, ८, १३, १४, १५ को भूटान, शिलांग, काटमाण्डू में कहीं वायुवेग के साथ वर्षा हो। उ. प्र., मध्य प्रदेश, आसाम, पंजाब, हरि. एवं हि. प्र. में कहीं आंधी से हानि हो, गर्म हवाएं चले, गर्मी का प्रकोप तड़े। **शकुन विचारः-** टटीहरी पक्षी यदि अपने अण्डे ऊंची भूमि पर धरे, तो वर्षा बहुत हो; नीचे धरे, तो कम हो और यदि अण्डे तालाब या जल के किनारे धरे तो वर्षा बिल्कुल न हो।

कुण्डली सूर्योदय

बु. ३ | १ | ४ | मं. १२ | श.शु. | चं. २ सू. | ५ के. | रा. ११ | ६ | गु. ८ | १० | ७ | ९

अमा शुक्र, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.)

१५ जून

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	१	११	२	७	३	३	१०	४
२६	२७	२८	१७	१६	१४	२६	१६	१६
३५	४६	४८	३६	४८	४८	४६	५८	५८
१३	२२	३५	०	२०	२६	६	५	५
५७	८६१	४४	२	७	५४	५	३	३
२०	३२	०८	११	२६	२३	१७	१०	१०
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
मृग. २	मृग. २	रेव. ४	आर्द्रा ४	ज्ये. १	पुष्य ४	आश्ले. ४	शत. ४	पू.फा. २

श्री वि. सं. २०६४, शाक १९२९, द्वि.(शुद्ध) ज्ये. शु. पक्ष ७														तारीखें				चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा.				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. भा. स्टैं. टा.				(१६ से ३० जून तक, सन् २००७ ई.) उत्तर–दक्षिणायन, उत्तरगोल, ग्रीष्म–वर्षा ऋतु।
दिनमान घ.	प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	प.	योग	समाप्ति-काल घ.	प.	करण	समाप्ति-काल घ.	प.	प्र. आषाढ़	अं. जून	श. ज्येष्ठ	मु. ज.उ.ल.		घ.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	बु. १६ जून को पश्चिम में अदृश्य हो जाएगा। सायं शु. और श. को पश्चिम में एक-दूसरे के काफी समीप और गु. को पूर्व में देखा जा सकेगा। प्रातः मं. पूर्व में दिखाई देगा।
३४	५८	१	श.	२	८	आर्द्रा	३३	४६	गं. वृ.	२ ५६	५३ २०	व.	२	०८	२	१६	२६	२९	मिथुन			५	२३	१९	२२	२	०	३२	३३	चन्द्र दर्शन, मु. ४५, मंगल अश्वि. मेष में ३७/२५,
अवम		२	श.	५७	१७	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	द्वितीया तिथिक्षय,
३४	५८	३	र.	५४	८	पुन.	३१	४८	ध्रु.	५१	१०	तै.	२५	४२	३	१७	२७	ज.१	कर्क	१७	८	५	२४	१९	२३	२	१	२९	५२	शुक्र आश्ले. में ३/५५, रम्भा तृतीया, श्रीप्रताप (A)
३४	५८	४	चं.	५२	५३	पुष्य	३१	४०	व्या.	४७	३२	व.	२३	३०	४	१८	२८	२	कर्क			५	२४	१९	२३	२	२	२७	१०	भद्रा २३/३० से ५२/५३ तक,
३४	५९	५	मं.	५३	३९	आश्ले.	३३	३१	ह.	४५	३०	ब.	२३	१६	५	१९	२९	३	सिंह	३३	३१	५	२४	१९	२३	२	३	२४	२८	बुध पश्चिम में अस्त ४४/५७,
३४	५९	६	बु.	५६	२२	मघा	३७	१६	व.	४५	०	कौ.	२५	०१	६	२०	३०	४	सिंह			५	२४	१९	२४	२	४	२१	४५	राहु शत. ३, केतु पू. फा. १ में ४०/४५, अरण्य (B)
३४	५९	७	गु.	६०	०	पू.फा.	४२	४४	सि.	४५	५०	ग.	२८	३२	७	२१	३१	५	कन्या	५९	१९	५	२४	१९	२४	२	५	१९	१	सूर्य सायन कर्क में ४५/३३, दक्षिणायन प्रारम्भ, (C)
३४	५९	७	शु.	०	४२	उ.फा.	४९	२८	व्य.	४७	४०	व.	०	४२	८	२२	आ.१	६	कन्या			५	२४	१९	२४	२	६	१६	१७	भद्रा ०/४२ से ३३/२७ तक, सूर्य आर्द्रा में (D)
३४	५९	८	श.	६	१३	हस्त	५६	५६	व.	५०	४	ब.	६	१३	९	२३	२	७	कन्या			५	२५	१९	२४	२	७	१३	३२	यूरेनस वक्री ३७/०४,
३४	५९	९	र.	१२	२०	चित्रा	६०	०	प.	५२	३७	कौ.	१२	२०	१०	२४	३	८	तुला	३०	४५	५	२५	१९	२४	२	८	१०	४६	
३४	५८	१०	चं.	१८	२४	चित्रा	४	२९	शि.	५४	५३	ग.	१८	२४	११	२५	४	९	तुला			५	२५	१९	२५	२	९	७	५९	भद्रा ५१/१० बाद,
३४	५८	११	मं.	२३	५५	स्वा.	११	३६	सि.	५६	३१	वि.	२३	५५	१२	२६	५	१०	तुला			५	२५	१९	२५	२	१०	५	१२	भद्रा २३/५५ तक, निर्जला एकादशी व्रत (स.),
३४	५८	१२	बु.	२८	२७	विशा.	१७	५०	सा.	५७	१९	बा.	२८	२७	१३	२७	६	११	वृश्चि.	१	२३	५	२६	१९	२५	२	११	२	२५	चम्पक द्वादशी, प्रदोष व्रत,
३४	५७	१३	गु.	३१	४८	अनु.	२२	५७	शु.	५७	८	कौ.	०	०७	१४	२८	७	१२	वृश्चि.			५	२६	१९	२५	२	११	५९	३७	
३४	५६	१४	शु.	३३	५१	ज्ये.	२६	४९	शु.	५५	५७	ग.	२	५०	१५	२९	८	१३	धनु	२६	४९	५	२६	१९	२५	२	१२	५६	४९	भद्रा ३३/५१ बाद,
३४	५५	१५	श.	३४	३९	मूल	२९	२८	ब्र.	५३	४८	वि.	४	१५	१६	३०	९	१४	धनु			५	२७	१९	२५	२	१३	५४	०	भद्रा ४/१५ तक, श्रीसत्यनारायण व्रत, (E)

(A) जयन्ती (राज), जमदउस्सानी मु. प्रारम्भ, (B) षष्ठी, (C) वर्षा ऋतु प्रारम्भ, (D) २५/०४, शक आषाढ़ प्रारम्भ, (E) वट सावित्री व्रत (पूर्णिमापक्ष).

अष्टमी शनि, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) २३ जून

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	५	०	२	७	३	३	१०	४
७	१२	४	१५	१८	२१	२७	१६	१६
१३	७	३९	५५	५०	४६	३३	३२	३२
३२	५६	४५	७	३७	५५	१३	३९	३९
५७	७११	४३	२८	६	४९	५	३	३
१५	०१	३५	५१	५२	२१	४८	११	११
		मा.	व.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
आर्द्रा १	हस्त १	अश्वि. २	आर्द्रा ३	ज्ये. १	आश्ले. २	आश्ले. ४	शत. ३	पू.फा. १

कुण्डली सूर्योदय

४ श.शु.
२
५ के.
बु. ३ सू.
१ मं.
चं. ६
१२
७
९
रा.११
गु. ८
१०

लोकभविष्य:- इस पक्ष में शनि-मंगल का दशम-चतुर्थदृष्टिसम्बन्ध बन रहा है। कहीं यानदुर्घटना से जनधनहानि के समाचार मिलेंगे। सीमाप्रान्तों पर किंवा इराक, पाक आदि राष्ट्रों में आन्तरिक स्थिति उलझेगी; प्रधान-नेतृत्व भारी उलझनों में से नहीं निकल सकेंगे। राजनैतिक हत्याएं अधिक होंगी। कहीं शासनसत्ता में परिवर्तन के योग व कहीं अकाल की स्थिति बने;- **"ज्येष्ठ-शुक्ल-प्रतिपदि यदि स्यान्मन्दवासरः। छत्रभंगं प्रजापीड़ां दुर्भिक्षं च तदादिशेत्॥"**

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख:- १६ जून को गुड़, खाण्ड, रुई, सोना तेज रहें। अनाजों में मन्दा बने। १९ जून को चान्दी में तेजी; पाट, हैसियन और शेयर मन्दे रहें। अनाज तेज रहें। रुई में जोरदार मन्दा आने का योग है। पक्षमध्य में बाज़ार ऊंचे-नीचे चलेंगे। पक्षान्त में गेहूं, जौ, चना, उड़द, सरसों, तिल, तेल, चावल, चान्दी में तेजी रहे।

कुण्डली सूर्योदय

४ श.शु.
२
५ के.
बु. ३ सू.
१ मं.
६
१२
७
चं. ९
रा.११
गु. ८
१०

पूर्णिमा शनि, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) ३० जून

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	८	०	२	७	३	३	१०	४
१३	७	६	१२	१८	२७	२८	१६	१६
५४	३	४३	०	४	१५	१५	१०	१०
०	३१	१८	५५	३३	३३	३	२३	२३
५७	७७३	४३	३४	६	४३	६	३	३
११	२८	०३	१२	०९	२६	१३	११	११
		मा.	व.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
आर्द्रा ३	मूल ३	अश्वि. ३	आर्द्रा २	ज्ये. १	आश्ले. ४	आश्ले. ४	शत. ३	पू.फा. १

आकाश लक्षण:- जून १६, १७, १९, २०, २१, २३, ३० को हि. प्र., उ. प्र., भूटान, शिलांग, आसाम में जोरदार वर्षा के योग हैं। पंजाब और हरियाणा में लू और गर्मी का जोर रहे। १९ और २० जून को कहीं आंधी-तूफान से नुक्सान हो।

शकुन विचार:- ज्येष्ठ शुक्ल सप्तमी को यदि बादल गरजें, दक्षिण की हवा चले तो तिलहन के स्टॉक से कार्त्तिक में लाभ मिलेगा।

श्री वि. सं. २०६४, शाक १९२९, आषाढ़ कृष्ण पक्ष ८

(१ से १४ जुलाई तक, सन् २००७ ई.)
दक्षिणायन, उत्तर गोल, वर्षा ऋतु।

बु. ८ जुला. से पूर्व में दीखने लगेगा। सायं शु., श. पश्चिम में परस्पर काफी नज़दीक दिखाई देंगे। गु. इस समय पूर्व में होगा। प्रातः मं. पूर्व में दिखाई देगा।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. आषाढ़	तारीखें अं. जुलाई	तारीखें श. आषाढ़	तारीखें मु. ज.उस्सा.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. भा. स्टैं. टा. रा.	अं.	क.	वि.	
३४	५४	१	र.	३४	१९	पू.षा.	३०	५८	ऐं.	५०	४७	बा.	४	२९	१७	१	१०	१५	मकर	४६	११	५	२७	१९	२५	२	१४	५१	११	जुलाई प्रारम्भ,
३४	५३	२	चं.	३२	५७	उ.षा.	३१	२९	वै.	४६	५९	तै.	३	३८	१८	२	११	१६	मकर			५	२८	१९	२५	२	१५	४८	२२	वक्री प्लूटो मूल १ में २७/५२,
३४	५२	३	मं.	३०	४४	श्रव.	३१	७	वि.	४२	३०	व.	१	५०	१९	३	१२	१७	मकर			५	२८	१९	२५	२	१६	४५	३३	भद्रा १/५० से ३०/४४ तक, शुक्र मघा सिंह में (A)
३४	५१	४	बु.	२७	४४	धनि.	३०	०	प्री.	३७	२६	बा.	२७	४४	२०	४	१३	१८	कुम्भ	०	३९	५	२८	१९	२५	२	१७	४२	४४	पंचक प्रारम्भ ०/३९,
३४	५०	५	गु.	२४	३	शत.	२८	१२	आ.	३१	४८	तै.	२४	०३	२१	५	१४	१९	कुम्भ			५	२९	१९	२५	२	१८	३९	५५	मंगल भरणी में ३/०६,
३४	४९	६	शु.	१९	४५	पू.भा.	२५	४७	सौ.	२५	४०	व.	१९	४५	२२	६	१५	२०	मीन	११	२६	५	२९	१९	२५	२	१९	३७	६	भद्रा १९/४५ से ४७/१९ तक, सूर्य पुन. में २४/०३,
३४	४७	७	श.	१४	५२	उ.भा.	२२	४७	शो.	१९	४	ब.	१४	५२	२३	७	१६	२१	मीन			५	३०	१९	२५	२	२०	३४	१८	
३४	४६	८	र.	९	२८	रेव.	१९	१६	अ.	१२	२	कौ.	९	२८	२४	८	१७	२२	मेष	१९	१६	५	३०	१९	२४	२	२१	३१	३१	पंचक समाप्त १९/१६, बुध पूर्व में उदित ८/४८,
३४	४४	९	चं.	३	३९	अश्वि.	१५	२२	सु. धृ.	४ ५७	४० २	ग.	३	३९	२५	९	१८	२३	मेष			५	३१	१९	२४	२	२२	२८	४३	भद्रा ३०/५७ से ५७/३० तक,
अवम		१०	चं.	५७	३०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	दशमी तिथिक्षय,
३४	४२	११	मं.	५१	१४	भर.	११	११	शू.	४९	१८	ब.	२४	२२	२६	१०	१९	२४	वृष	२५	६	५	३१	१९	२४	२	२३	२५	५६	बुध मार्गी ५/३४, योगिनी एकादशी व्रत (स्मा.),
३४	४०	१२	बु.	४५	४	कृत्ति.	६	५५	गं.	४१	३८	कौ.	१८	०९	२७	११	२०	२५	वृष			५	३२	१९	२४	२	२४	२३	९	योगिनी एकादशी व्रत (वै.),
३४	३८	१३	गु.	३९	१६	रोहि. मृग.	२ ५९	५१ १४	वृ.	३४	१५	ग.	१२	१०	२८	१२	२१	२६	मिथुन	३०	५५	५	३२	१९	२३	२	२५	२०	२३	भद्रा ३९/१६ बाद, प्रदोष व्रत,
३४	३६	१४	शु.	३४	९	आर्द्रा.	५६	२४	ध्रु.	२७	२४	वि.	६	४२	२९	१३	२२	२७	मिथुन			५	३३	१९	२३	२	२६	१७	३७	भद्रा ६/४२ तक,
३४	३४	३०	श.	३०	१	पुन.	५४	४१	व्या.	२१	२१	च.	२	०५	३०	१४	२३	२८	कर्क	३९	५९	५	३३	१९	२३	२	२७	१४	५१	शनैश्चरी अमावस,

(A) ५४/४६, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत,

अष्टमी रवि, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) ८ जुलाई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	११	०	२	७	४	३	१०	४
२१	२५	१५	८	१७	२	२९	१५	१५
३१	२६	२५	४१	१८	३४	६	४४	४४
३१	८	३५	२५	५१	१४	८	५६	५६
५७	८५३	४२	७	५	३४	६	३	३
१२	४७	२५	५०	०७	४१	३६	११	११
		मा.	व.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पुन. १	रेव. ३	भर. १	आर्द्रा १	ज्ये. १	मघा १	आश्ले. ४	शत. ३	पू.फा.

कुण्डली सूर्योदय (८ जुलाई)

४ श. | २ | के. ५ शु. | बु. ३ सू. | १ मं. | ६ | चं. १२ | ७ | ९ | रा. ११ | ८ गु. | १०

लोकभविष्यः- इस मास में पांच रविवार एवं पांच सोमवार हैं। कहीं वर्षा की भारी कमी रहे; कहीं शासनसत्ता के हस्तान्तरण की बात हो- **" दुर्भिक्षं छत्रभंगः स्यात्तदा तत्र महद्भयम्।"। इस** मास मे पांच सोमवार भी हैं, अतः मिथुन प्रभावराशि वाले देशों में धनधान्य समृद्धि रहे। ३ जुलाई को शुक्र सिंह राशि में आकर केतु के साथ योग बनाता है। पक्षमध्य मे बुध का उदय भी कहीं उत्पात का संकेत देता है-**"नोत्पात परित्यक्तः चन्द्रजो व्रजत्युदयम्।"**

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- ३ जुलाई के लगभग सोना, तांबा, जौ, चना, गेहूं, लालमिर्च, लालचन्दन, मजीठ, घी, गुड़, खाण्ड में तेजी रहे। चान्दी और रुई में पहले मन्दी होकर बाद में तेजी बने। ८ जुलाई के लगभग बाज़ारों का रुख बदल सकता है। रुई में अच्छी तेजी का योग है। गेहूं, चना, लालमिर्च, तिल, घी में भी तेजी का योग है। ११ जुलाई को बाज़ार मन्दे हो सकते हैं।

कुण्डली सूर्योदय (१४ जुलाई)

४ श. | २ | के. ५ शु. | चं. बु. ३ सू. | १ मं. | ६ | १२ | ७ | ९ | रा. ११ | ८ गु. | १०

अमा शनि, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) १४ जुलाई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	२	०	२	७	४	३	१०	४
२७	२०	१९	९	१६	५	२९	१५	१५
१४	४८	३८	१०	५०	४१	४६	२५	२५
५१	१७	४०	१६	२७	५७	२६	५१	५१
५७	८२१	४१	२३	४	२६	६	३	३
१५	५५	५१	११	१२	१०	५२	१०	१०
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पुन. ३	पुन. १	भर. २	आर्द्रा १	ज्ये. १	मघा २	आश्ले. ४	शत. ३	पू.फा.

आकाश लक्षणः- जुलाई २ से ६, ८, १० और १४ को पंजाब, हि. प्र., हरि., उ. प्र., भूटान, शिलांग, आसाम एवं अनेकत्र वायुवेग के साथ वर्षा के योग हैं। कहीं आसमानी बिजली गिरने से हानि भी हो। नोट- शुक्र सिंह राशि में आकर कई जगहों पर सूखे का वातावरण भी बनाएगा- "सिंह शुक्र जब होए भवानी। वर्षे ओस न वर्षे पानी।।"

शकुन विचारः- यदि आषाढ़ कृष्ण प्रतिपदा को बिजली चमके, वर्षा भी हो तो आगे अनाज में तेजी से लाभ मिलेगा।

श्री वि. सं. २०६४, शाक १९२९, आषाढ़ शुक्ल पक्ष ९

(१५ से ३० जुलाई तक, सन् २००७ ई.)
दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षा ऋतु।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. आषाढ़	अं. जुलाई	श. आषाढ़	मु. ज.उख्रा	चन्द्रराशि - प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. भा. स्टैं. टा. रा.	अं.	क.	वि.	सायं शु. श. साथ-साथ पश्चिम क्षितिज की ओर जाते दिखाई देंगे। इस समय गु. पूर्व कपाल में होगा। प्रातः बु. पूर्व क्षितिजासन्न और मं. इस समय याम्योत्तरवृत्त की ओर बढ़ रहा होगा।
३४	३२	१	र.	२७	१०	पुष्य	५४	२२	ह.	१६	१७	ब.	२७	१०	३१	१५	२४	२९	कर्क			५	३४	१९	२३	२	२८	१२	५	चन्द्र दर्शन, मु. ३०, शनि मघा १ सिंह में ५७/५७,
३४	३०	२	चं.	२५	५२	आश्ले.	५५	३९	व.	१२	२७	कौ.	२५	५२	श्रा.१	१६	२५	र.१	सिंह	५५	३९	५	३४	१९	२२	२	२९	९	२०	सं. सूर्य कर्क में ५२/५४, मु. १५, पुण्यकाल (A)
३४	२७	३	मं.	२६	१६	मघा	५८	३७	सि.	९	५६	ग.	२६	१६	२	१७	२६	२	सिंह			५	३५	१९	२२	३	०	६	३५	भद्रा ५७/१९ बाद,
३४	२५	४	बु.	२८	२३	पू.फा.	६०	०	व्य.	८	४७	वि.	२८	२३	३	१८	२७	३	सिंह			५	३५	१९	२१	३	१	३	५१	भद्रा २८/२३ तक,
३४	२३	५	गु.	३२	५	पू.फा.	३	१३	व.	८	५६	ब.	०	१४	४	१९	२८	४	कन्या	१९	३६	५	३६	१९	२१	३	२	१	६	
३४	२०	६	शु.	३७	५	उ.फा.	९	११	प.	१०	१०	कौ.	४	३५	५	२०	२९	५	कन्या			५	३७	१९	२१	३	२	५८	२२	सूर्य पुष्य में २२/२२, कुमार षष्ठी,
३४	१७	७	श.	४२	५२	हस्त	१६	११	शि.	१२	१०	ग.	९	५८	६	२१	३०	६	तुला	४९	५४	५	३७	१९	२०	३	३	५५	३८	भद्रा ४२/५२ बाद, विवस्वत् सप्तमी,
३४	१५	८	र.	४८	५३	चित्रा	२३	३६	सि.	१४	३४	वि.	१५	५२	७	२२	३१	७	तुला			५	३८	१९	२०	३	४	५२	५५	भद्रा १५/५२ तक,
३४	१२	९	चं.	५४	३१	स्वा.	३०	५३	सा.	१६	५४	बा.	२१	४२	८	२३	श्रा.१	८	तुला			५	३८	१९	१९	३	५	५०	११	सूर्य सायन सिंह में १२/०७, शक श्रावण प्रारम्भ,
३४	९	१०	मं.	५९	१५	विशा.	३७	२८	शु.	१८	४६	तै.	२६	५३	९	२४	२	९	वृश्चि.	२०	५६	५	३९	१९	१९	३	६	४७	२८	मंगल कृत्ति. में १०/५२,
३४	६	११	बु.	६०	०	अनु.	४२	५५	शु.	१९	४९	व.	३०	५८	१०	२५	३	१०	वृश्चि.			५	४०	१९	१८	३	७	४४	४५	भद्रा ३०/५८ बाद,
३४	३	११	गु.	२	४२	ज्ये.	४६	५८	ब्र.	१९	४८	वि.	२	४२	११	२६	४	११	धनु	४६	५८	५	४०	१९	१७	३	८	४२	३	भद्रा २/४२ तक, बुध पुन. में १८/००, हरिशयनी (B)
३४	०	१२	शु.	४	३७	मूल	४९	२९	ऐं.	१८	३५	बा.	४	३७	१२	२७	५	१२	धनु			५	४१	१९	१७	३	९	३९	२१	शुक्र वक्री ४३/१३, प्रदोष व्रत,
३३	५७	१३	श.	५	०	पू.षा.	५०	३०	वै.	१६	९	तै.	५	००	१३	२८	६	१३	धनु			५	४१	१९	१६	३	१०	३६	३९	
३३	५४	१४	र.	३	५५	उ.षा.	५०	११	वि.	१२	३२	व.	३	५५	१४	२९	७	१४	मकर	५	३१	५	४२	१९	१५	३	११	३३	५९	भद्रा ३/५५ से ३२/४२ तक, मंगल वृष में ६/५५(C)
३३	५१	१५	चं.	१	२९	श्रव.	४८	४३	प्री.	७	५३	ब.	१	२९	१५	३०	८	१५	मकर			५	४३	१९	१५	३	१२	३१	१९	चातुर्मास्य–व्रत–नियमादि प्रारम्भ, आषाढ़ी पूर्णिमा,

(A) मध्याह्न के बाद, व. गुरु अनु. ४ में ३४/०७, रथयात्रा (पुरी), रजब मु. प्रारम्भ, (B) एकादशी व्रत (स.), विष्णुशयनोत्सव, (C) कोकिला व्रत, गुरु पूर्णिमा, (व्यास पूजा), (देखें पृ. ८९), श्रीसत्यनारायण व्रत, शिवशयनोत्सव,

अष्टमी रवि, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.)
२२ जुलाई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	६	०	२	७	४	४	१०	४
४	१	२५	१४	१६	८	०	१५	१५
५२	५६	१०	४४	२१	२२	४२	०	०
५५	२०	२६	३१	३६	४३	२५	२५	२५
५७	७११	४०	६५	२	११	७	३	३
१७	४३	५६	१०	५०	३३	१०	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पुष्य १	चित्रा ३	भर. ४	आर्द्रा ३	अनु. ४	मघा ३	मघा १	शत. ३	पू.फा. १

कुण्डली सूर्योदय

शु.५ श. के. | बु. ३ | ६ | ४ सू. | २ | ७ चं. | मं. १ | गु. ८ | १० | १२ | ९ | रा.११

लोकभविष्यः- पक्षारम्भ में ही शनि सिंहराशि में प्रवेश करके शुक्र के साथ मेल करेगा। अनेकत्र वर्षा की कमी से मंहगाई उत्तरोत्तर बढ़ेगी। जन-मानस में असन्तोष बढ़ेगा। मालवाक्षेत्र में अधिक अशान्ति रहे- "सिंहराशि गतः सौरिः समभावस्य सूचकः। गुड़-तैल-महर्घं हि मालवे तु भयं तदा।।"पक्षान्त में मंगल वृषराशि में आकर शनि के साथ विशेष दृष्टिसम्बन्ध बनाएगा। राजनैतिक उलझनें बढ़ेंगी, राजनीतिज्ञों में परस्पर विरोध एवम् राजनैतिक अस्थिरता का वातावरण बने।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- १५ जुलाई को गुड़, तेल, घी, शक्कर, लोहा, उड़द, अनाज, सरसों, तोड़िया में तेजी बने। १६ जुलाई को बाज़ारों में उठापटक होगी। २० जुलाई को बाज़ार अचानक गिर सकते हैं। २८-२९ जुलाई को बाज़ारों में धमाके की तेजी का योग है।

कुण्डली सूर्योदय

शु.५ श. के. | बु. ३ | ६ | ४ सू. | २ मं. | ७ | १ | गु. ८ | चं. १० | १२ | ९ | रा.११

पूर्णिमा चन्द्र, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.)
३० जुलाई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	९	१	२	७	४	४	१०	४
१२	१२	०	२५	१६	८	१	१४	१४
३१	६	३५	३८	३	५३	४०	३४	३४
१९	१६	१४	२९	५६	२४	२६	५८	५८
५७	८२२	४०	१०१	१	६	७	३	३
२०	०६	०४	१६	२३	३३	२३	११	११
		मा.	मा.	व.	व.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पुष्य ३	श्रव. १	कृत्ति. २	पुन. २	अनु. ४	मघा ३	मघा १	शत. ३	पू.फा. १

आकाश लक्षणः- १५, १६, २०, २३, २४, २६, २७, २८ एवम् २९ जुलाई को पंजाब, हरि., हि. प्र., दिल्ली, चण्डीगढ़ एवम् उ. भारत में बादल-वर्षा के योग हैं। राजस्थान, उड़ीसा एवं आसाम में कहीं सूखे व बाढ़ से हानि के समाचार मिलें।

शकुन विचारः- आषाढ़ शुक्ल पंचमी को यदि पश्चिम की हवा चले, बादल-वर्षा हो और इन्द्रधनुष दीखे तो अनाज के स्टॉक से कार्तिक में लाभ होगा।

श्री वि. सं. २०६४, शाक १९२९, श्रावण कृष्ण पक्ष १०

(३१ जुलाई से १२ अगस्त तक, सन् २००७ ई.)
दक्षिणायन, उत्तर गोल, वर्षा ऋतु।

३ अग. को बु. पूर्व में और श. पश्चिम में अदृश्य हो जाएगा। शु. भी ७ अग. से पश्चिम में दीखना बन्द हो जाएगा। सायं गु. पूर्व कपाल में और प्रातः मं. याम्योत्तरवृत्त से कुछ पूर्व की ओर दिखाई देगा।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. श्रावण	तारीखें अं. जुलाई	तारीखें श. श्रावण	तारीखें मु. रज्जब	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. भा. स्टैं. टा. रा.	अं.	क.	वि.	
अवम		१	चं.	५७	५६	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	प्रतिपदा तिथिक्षय,
३३	४७	२	मं.	५३	३१	धनि.	४६	२१	आ. सौ.	२ ५६	२३ ९	तै.	२५	४३	१६	३१	९	१६	कुम्भ	१७	३६	५	४३	१९	१४	३	१३	२८	३९	पंचक प्रारम्भ १७/३६,
३३	४४	३	बु.	४८	२७	शत.	४३	१७	शो.	४९	२४	व.	२०	५८	१७	अ.१	१०	१७	कुम्भ			५	४४	१९	१३	३	१४	२६	०	भद्रा २०/५८ से ४८/२७ तक, बुध कर्क में (A)
३३	४१	४	गु.	४२	५६	पू.भा.	३९	४६	अ.	४२	१६	ब.	१५	४१	१८	२	११	१८	मीन	२५	३९	५	४४	१९	१३	३	१५	२३	२३	श्रीगणेश चतुर्थी व्रत,
३३	३७	५	शु.	३७	१०	उ.भा.	३५	५९	सु.	३४	५६	कौ.	१०	०३	१९	३	१२	१९	मीन			५	४५	१९	१२	३	१६	२०	४६	सूर्य आश्ले. में १९/२७, बुध पुष्य में १८/१५, (B)
३३	३४	६	श.	३१	१८	रेव.	३२	४	धृ.	२७	३१	ग.	४	१४	२०	४	१३	२०	मेष	३२	४	५	४६	१९	११	३	१७	१८	११	भद्रा ३१/१८ से ५८/२३ तक, पंचक समाप्त ३२/०४, (C)
३३	३०	७	र.	२५	२८	अश्वि.	२८	१४	शू.	२०	७	ब.	२५	२८	२१	५	१४	२१	मेष			५	४६	१९	१०	३	१८	१५	३६	
३३	२६	८	चं.	१९	४९	भर.	२४	३४	गं.	१२	५१	कौ.	१९	४९	२२	६	१५	२२	वृष	३८	४२	५	४७	१९	९	३	१९	१३	४	
३३	२३	९	मं.	१४	२८	कृत्ति.	२१	१३	वृ. ध्रु.	५ ५९	४९ ८	ग.	१४	२८	२३	७	१६	२३	वृष			५	४७	१९	९	३	२०	१०	३२	भद्रा ४२/०१ बाद, गुरु मार्गी ४/३३, शुक्र पश्चिम (D)
३३	१९	१०	बु.	९	३३	रोहि.	१८	१८	व्या.	५२	५२	वि.	९	३३	२४	८	१७	२४	मिथुन	४७	३	५	४८	१९	८	३	२१	८	१	भद्रा ९/३३ तक,
३३	१५	११	गु.	५	११	मृग.	१५	५८	ह.	४७	१०	बा.	५	११	२५	९	१८	२५	मिथुन			५	४९	१९	७	३	२२	५	३२	बुध आश्ले. में ५८/२२, कामदा एकादशी व्रत (स.),
३३	१२	१२	शु.	१	३५	आर्द्रा.	१४	२३	व.	४२	९	तै.	१	३५	२६	१०	१९	२६	कर्क	५८	५०	५	४९	१९	६	३	२३	३	५	भद्रा ५८/५१ बाद, प्रदोष व्रत,
अवम		१३	शु.	५८	५१	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	त्रयोदशी तिथिक्षय,
३३	८	१४	श.	५७	११	पुन.	१३	४४	सि.	३७	५७	वि.	२८	०१	२७	११	२०	२७	कर्क			५	५०	१९	५	३	२४	०	३८	भद्रा २८/०१ तक,
३३	४	३०	र.	५६	४४	पुष्य	१४	११	व्य.	३४	४१	च.	२६	५८	२८	१२	२१	२८	कर्क			५	५१	१९	४	३	२४	५८	१३	शनि मघा २ में १६/५५, हरियाली अमावस,

शुक्र अस्त ७ अगस्त

त्रयोदश दिनपक्ष

(A) ३०/१८, अगस्त प्रारम्भ, (B) बुध पूर्व में अस्त ३८/१०, शनि अस्त ५८/४०, (C) शुक्र वार्धक्य प्रारम्भ २४/२०, (D) में अस्त २४/२०,

अष्टमी चन्द्र, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.)
६ अगस्त

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	०	१	३	७	४	४	१०	४
१६	२०	५	८	१५	७	२	१४	१४
१३	४१	१३	३३	५८	१७	३२	१२	१२
०४	३७	८	४६	०	५०	२८	४३	४३
५७	८४६	३६	१२०	०	२२	७	३	३
२८	१४	११	२०	०६	४६	३१	११	११
		मा.	मा.	व.	व.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
आश्ले. १	पुन. ३	कृति. ३	पुष्य २	अनु. ४	मघा ३	मघा १	शत. ३	पू.फा. १

कुण्डली सूर्योदय

शु.५ श. के. | ३ | ६ | बु. ४ सू. | २ मं. | ७ | १ चं. | गु. ८ | १० | १२ | ९ | रा. ११

लोकभविष्य:- यह पक्ष त्रयोदश दिनात्मक है, शनि मंगल का दृष्टिसम्बन्ध भी बना हुआ है। "यदा च जायते पक्षस्त्रयोदश-दिनात्मकः। भवेल्लोकक्षयो घोरो मुण्डमालायुता मही।।" पाक, इराक आदि वृष राशि एवं कन्या राशि के देशों में घोर अशान्ति रहे। बलूचिस्तान-पख्तूनिस्तान आदि में भारी अशान्ति हो। ईरान में भी दूसरे देशों के दखल से वातावरण अशान्त रहे। भारत के प्रधान नेताओं के समक्ष अनेक समस्याएं उपस्थित हों। प्रधान नेता को कठिन परिस्थिति का सामना करना पड़े।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख:- ३ अगस्त को सोना, चान्दी, रुई, अनाज, घी में घटाबढ़ी के बाद तेजी बने। बिनौला, गेहूं, चावल, चना, उड़द, गुड़, शक्कर, तिल, तेल में तेजी आए। ९ अगस्त से पक्षान्त तक तिल, तेल, सरसों, गुड़, खाण्ड, उड़द, मूंग, मूंगफली में तेजी बने।

कुण्डली सूर्योदय

शु.५ श. के. | चं. | ३ | ६ | बु. ४ सू. | २ मं. | ७ | १ | गु. ८ | १० | १२ | ९ | रा. ११

अमा रवि, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.)
१२ अगस्त

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	३	१	३	७	४	४	१०	४
२४	१३	६	२०	१६	४	३	१३	१३
५८	२२	६	४८	०	३२	१७	५३	५३
१३	२६	७	५६	७	२१	४५	३८	३८
५७	७८२	३८	१२३	०	३३	७	३	३
३६	०६	१६	२८	५६	२१	३५	११	११
		मा.	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	अ.	अ.	अ.	अ.
आश्ले. ३	पुष्य ४	कृति. ४	आश्ले. २	अनु. ४	मघा २	मघा १	शत. ३	पू.फा. १

आकाश लक्षण:- १ से १० अग. तक एवम् १२ अग. को हि. प्र., जम्मू-काश्मीर, पंजाब, हरि. एवं उत्तर-पश्चिमी भागों में पर्याप्त वर्षा के योग हैं।

शकुन विचार:- श्रावण में यदि बिजली चमके, बादल गरजें तो आगे सुभिक्ष का संकेत मिलता है। यदि श्रावण में कृत्तिका नक्षत्र में वर्षा हो तो आगे चौमासे में अच्छी वर्षा हो।

श्री वि. सं. २०६४, शाक १९२९, श्रावण शुक्ल पक्ष ११

(१३ से २८ अगस्त तक, सन् २००७ ई.)
दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षा–शरद् ऋतु।

बु. श. अस्त हैं। शु. २३ अग. से पूर्व में दृश्य हो जाएगा। सायं गु. और प्रातः मं.-दोनों याम्योत्तरवृत्तासन्न होंगे।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. श्रावण	अं. अगस्त	श. श्रावण	मु. रजब	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. भा. स्टैं. टा. रा.	अं.	क.	वि.	
३३	००	१	चं.	५७	३८	आश्ले.	१५	५२	व.	३२	२७	किं.	२७	११	२९	१३	२२	२९	सिंह	१५	५२	५	५१	१९	३	३	२५	५५	४९	मंगल रोहि. में २३/३४, वक्री नेप्च्यून धनि. १ में ४७/१८,
३२	५६	२	मं.	५९	५५	मघा	१८	५२	प.	३१	१८	बा.	२८	४६	३०	१४	२३	३०	सिंह			५	५२	१९	२	३	२६	५३	२६	चन्द्र दर्शन, मु. ३०,
३२	५२	३	बु.	६०	०	पू.फा.	२३	१४	शि.	३१	१३	तै.	३१	४३	३१	१५	२४	शा.१	कन्या	३९	३२	५	५२	१९	१	३	२७	५१	४	मधुश्रवा तृतीया, (संधारा तीज), भारत स्वतन्त्रता दिवस,(A)
३२	४८	३	गु.	३	३२	उ.फा.	२८	५०	सि.	३२	६	ग.	३	३२	३२	१६	२५	२	कन्या			५	५३	१९	०	३	२८	४८	४३	भद्रा ३५/५५ बाद, बुध मघा सिंह में २९/०३,
३२	४४	४	शु.	८	१८	हस्त	३५	२७	सा.	३३	४८	वि.	८	१८	भा.१	१७	२६	३	कन्या			५	५४	१८	५९	३	२९	४६	२४	भद्रा ८/१८ तक, सं. सूर्य मघा सिह में १३/०७, (B)
३२	४०	५	श.	१३	५७	चित्रा	४२	४४	शु.	३६	०	बा.	१३	५७	२	१८	२७	४	तुला	९	२	५	५४	१८	५८	४	०	४४	५	नागपंचमी, श्रीकल्कि जयन्ती, [शुक्र उदित २३ अगस्त]
३२	३६	६	र.	२०	०	स्वा.	५०	११	शु.	३८	२४	तै.	२०	००	३	१९	२८	५	तुला			५	५५	१८	५७	४	१	४१	४८	वक्री शुक्र आश्ले. कर्क में ३३/२२,
३२	३२	७	चं.	२५	५६	विशा.	५७	१६	ब्र.	४०	३५	व.	२५	५६	४	२०	२९	६	वृश्चि.	४०	३४	५	५५	१८	५६	४	२	३९	३२	भद्रा २५/५६ से ५१/३३ तक, गोस्वा. तुलसीदास जयन्ती,
३२	२८	८	मं.	३१	११	अनु.	६०	०	ऐं.	४२	१०	ब.	३१	११	५	२१	३०	७	वृश्चि.			५	५६	१८	५५	४	३	३७	१७	श्रीदुर्गाष्टमी, दूर्वाष्टमी,
३२	२३	९	बु.	३५	१७	अनु.	३	२८	वै.	४२	४७	बा.	३	१४	६	२२	३१	८	वृश्चि.			५	५६	१८	५४	४	४	३५	२	राहु शत. २, केतु मघा ४ में ३३/२१, [चन्द्रग्रहण २८ अगस्त]
३२	१९	१०	गु.	३७	५१	ज्ये.	८	२०	वि.	४२	१२	तै.	६	३४	७	२३	भा.१	९	धनु	८	२०	५	५७	१८	५३	४	५	३२	४९	बुध पू. फा. में २०/१८, सूर्य सायन कन्या में २९/१२(C)
३२	१५	११	शु.	३८	३९	मूल	११	३६	प्री.	४०	१४	व.	८	१५	८	२४	२	१०	धनु			५	५८	१८	५२	४	६	३०	३८	भद्रा ८/१५ से ३८/३९ तक, पवित्रा एकादशी व्रत (स.),
३२	११	१२	श.	३७	३९	पू.षा.	१३	६	आ.	३६	५०	ब.	८	०९	९	२५	३	११	मकर	२८	१९	५	५८	१८	५१	४	७	२८	२७	वक्री यूरेनस पू. भा. १ में ४८/०४,
३२	६	१३	र.	३४	५६	उ.षा.	१२	५१	सौ.	३२	३	कौ.	६	१७	१०	२६	४	१२	मकर			५	५९	१८	४९	४	८	२६	१८	प्रदोष व्रत, शुक्रबाल्य समाप्त ११/४२,
३२	२	१४	चं.	३०	४२	श्रव.	११	२	शो.	२६	२	ग.	२	४९	११	२७	५	१३	कुम्भ	३९	३५	५	५९	१८	४८	४	९	२४	१०	भद्रा ३०/४२ से ५७/५७ तक, पंचक प्रारम्भ ३९/३५, (D)
३१	५८	१५	मं.	२५	१२	धनि.	७	५०	अ.	१८	५८	ब.	२५	१२	१२	२८	६	१४	कुम्भ			६	०	१८	४७	४	१०	२२	४	गुरु ज्ये. १ में ३३/२२, श्रावणी पूर्णिमा, शुक्ल–कृष्ण (E)

(A) शाबान मु. प्रारम्भ, (B) मु. ३०, पुण्यकाल २९/१० तक, (C) शरद् ऋतु प्रारम्भ, शकं भाद्रपद प्रारम्भ, शुक्र पूर्व में उदित ११/४२, (D) ऋक् उपाकर्म, श्रीसत्यनारायण व्रत, (E)–यजु उपाकर्म, रक्षाबन्धन (राखी), चन्द्रग्रहण (भारत के पूर्वोत्तरी छोर पर अत्यल्प समय के लिए दृश्य) (देखें पृ. ९),

अष्टमी मंगल, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) २१ अगस्त

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	७	१	४	७	३	४	१०	४
३	३	१४	८	१६	२९	४	१३	१३
३७	४०	४५	५१	१५	७	२६	२५	२५
१७	४	१३	३८	४१	२७	१९	१	१
५७	७२४	३६	११४	२	३६	७	३	३
४६	२६	५१	४५	३८	०७	३८	११	११
		मा.	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	अ.	अ.	अ.	अ.
मघा २	अनु. १	रोहि. २	मघा ३	अनु. ४	आश्ले. ४	मघा २	शत. ३	पू.फा. १

कुण्डली सूर्योदय

६ | ४ शु.
के.
७ | बु. ५ सू. श. | ३
गु. ८ चं. | २ मं.
९ | रा. ११ | १
१० | १२

लोकभविष्य:- इस चान्द्रमास में पांच मंगल एवं पांच ही चन्द्रवार हैं। "पञ्चभौमे महद्भयम्"- राजनीतिज्ञ एवं नेताओं के लिए यह समय कठिन है। प्राकृतिक प्रकोप किंवा कुछ भागों में भयंकर सूखे की स्थिति से सरकार को कठिनाई का सामना करना पड़ेगा। इस पक्ष में प्रतिपदा चन्द्रवारी होने से जनधनहानि हो एवं किसी देशविशेष के शासनतन्त्र में परिवर्तन के योग है;- " श्रावणे शुक्लपक्षे च प्रतिपच्चन्द्रयोगतः। जलशोषं प्रजानाशं छत्रभंगं तदादिशेत्।।"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख:- पक्षान्त में चन्द्रग्रहण मंहगाई का सूचक है। शेयर एवम् वायदा बाज़ार तेज रहें, लेकिन गुड़, शक्कर में कुछ मन्दा रहे। १७ अगस्त के करीब चान्दी, सोना, गुड़, खाण्ड, शक्कर, ज्वार, बाजरा, सरसों आदि में तेजी; लेकिन रुई में अच्छी मन्दी आकर तेजी बने। २७ अगस्त के करीब रुई, सूत, सोना, चान्दी, चावल, घी तेज रहेंगे।

आकाश लक्षण:- अगस्त १३, १४, १६, १७, १९, २०, २२, २३, २५ को हि. प्र., जम्मू-काश्मीर, पंजाब, चण्डीगढ़, दिल्ली आदि के अधिकांश भागों में वर्षा के योग हैं। कहीं बाढ़ से भी हानि का समाचार मिलेगा। २८ अग. को कहीं बूंदाबांदी व बादलछाल हो।

शकुन विचार:- यदि श्रावण शुक्ल सप्तमी को वर्षा हो तो सभी प्रकार के धान्य उत्तम हों।

कुण्डली सूर्योदय

६ | ४ शु.
के.
७ | बु. ५ सू. श. | ३
गु. ८ | २ मं.
९ | रा. ११ चं. | १
१० | १२

पूर्णिमा मंगल, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) २८ अगस्त

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	१०	१	४	७	३	४	१०	४
१०	४	१८	२१	१६	२५	५	१३	१३
२२	३०	५९	४६	३७	१९	१९	२	२
४	५३	२६	४५	४८	३९	४३	४६	४६
५७	८५८	३५	१०५	३	२६	७	३	३
५५	४२	३५	२२	५१	०४	३६	११	११
		मा.	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
मघा ४	धनि. ४	रोहि. ३	पू.फा. ३	अनु. ४	आश्ले. ३	मघा २	शत. २	मघा ४

श्री वि. सं. २०६४, शाक १९२९, भाद्रपद कृष्ण पक्ष १२

(२९ अगस्त से ११ सितम्बर तक, सन् २००७ ई.)
दक्षिणायन, उत्तरगोल, शरद् ऋतु।

३० अग. को बु. पश्चिम में उदित होगा। श. भी ८ सितं. से प्रातः पूर्व में दृश्य हो जाएगा। सायं गु. याम्योत्तरवृत्त से कुछ पश्चिम की ओर हटा हुआ दिखाई देगा। प्रातः शु. को पूर्व क्षितिज के पास और मं. को याम्योत्तरवृत्त के आस-पास देखिए।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	नक्षत्र	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	योग	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	करण	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	तारीखें प्र. भाद्रपद	तारीखें अं. अगस्त	तारीखें श. भाद्रपद	तारीखें मु. श्रावण	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. भा. स्टैं. टा. रा.	अं.	क.	वि.	
३१	५३	१	बु.	१८	४५	शत. पूभा.	३ ५८	२७ ३९	सु.	११	४	कौ.	१८	४५	१३	२९	७	१५	मीन	४४	५५	६	१	१८	४६	४	११	१९	५८	
३१	४९	२	गु.	११	४०	उ.भा.	५३	१८	धृ. शू.	२ ५३	३९ ५३	ग.	११	४०	१४	३०	८	१६	मीन			६	१	१८	४५	४	१२	१७	५५	भद्रा ३७/५८ बाद, बुध उ.फा. में ४७/३४, बुध (A)
३१	४५	३	शु.	४	१६	रेव.	४७	५१	गं.	४५	५	वि.	४	१६	१५	३१	९	१७	मेष	४७	५१	६	२	१८	४४	४	१३	१५	५३	भद्रा ४/१६ तक, पंचक समाप्त ४७/५१, सूर्य (B)
अवम		४	शु.	५६	५५	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्थी तिथिक्षय,
३१	४०	५	श.	४९	४९	अश्वि.	४२	४२	वृ.	३६	२८	कौ.	२३	२२	१६	सि.१	१०	१८	मेष			६	२	१८	४२	४	१४	१३	५३	बुध कन्या में ४६/१३, सितम्बर प्रारम्भ,
३१	३६	६	र.	४३	१६	भर.	३८	२	ध्रु.	२८	१५	ग.	१६	३३	१७	२	११	१९	वृष	५१	५९	६	३	१८	४१	४	१५	११	५५	भद्रा ४३/१६ बाद, चन्द्रषष्ठी व्रत,
३१	३१	७	चं.	३७	२९	कृत्ति.	३४	७	व्या.	२०	३७	वि.	१०	२२	१८	३	१२	२०	वृष			६	३	१८	४०	४	१६	९	५९	भद्रा १०/२२ तक, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (C)
३१	२७	८	मं.	३२	३८	रोहि.	३१	७	ह.	१३	४३	बा.	५	०४	१९	४	१३	२१	वृष			६	३	१८	३९	४	१७	८	६	मंगल मृग में २५/५२, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (D)
३१	२२	९	बु.	२८	५०	मृग.	२९	९	व.	७	३७	ग.	२८	५०	२०	५	१४	२२	मिथुन	०	१	६	५	१८	३७	४	१८	६	१३	भद्रा ५७/२९ बाद, श्रीगुग्गा नवमी,
३१	१८	१०	गु.	२६	९	आर्द्रा.	२८	१९	सि. व्य.	२ ५८	२६ १०	नि.	२६	०९	२१	६	१५	२३	मिथुन			६	५	१८	३६	४	१९	४	२३	भद्रा २६/०९ तक,
३१	१३	११	शु.	२४	३९	पुन.	२८	३७	व.	५४	४९	बा.	२४	३९	२२	७	१६	२४	कर्क	१३	२६	६	६	१८	३५	४	२०	२	३५	शनि मघा ३ में ३५/३३, प्लूटो मार्गी ३५/४२, (E)
३१	९	१२	श.	२४	२०	पुष्य	३०	४	प.	५२	२४	तै.	२४	२०	२३	८	१७	२५	कर्क			६	६	१८	३४	४	२१	०	४९	बुध हस्त में ०/४८, शुक्र मार्गी ३९/०४, शनि (F)
३१	४	१३	र.	२५	१०	आश्ले.	३२	४०	शि.	५०	५३	व.	२५	१०	२४	९	१८	२६	सिंह	३२	४०	६	७	१८	३३	४	२१	५९	४	भद्रा २५/१० से ५६/१० तक,
३१	००	१४	चं.	२७	१०	मघा	३६	२२	सि.	५०	१४	श.	२७	१०	२५	१०	१९	२७	सिंह			६	७	१८	३१	४	२२	५७	२२	पिठोरी अमावस,
३०	५५	३०	मं.	३०	१५	पू.फा.	४१	७	सा.	५०	२५	ना.	३०	१५	२६	११	२०	२८	कन्या	५७	२८	६	८	१८	३०	४	२३	५५	४३	कुशोत्पाटिनी अमावस, भौमवती अमावस,

(A) पश्चिम में उदित ०/५७, (B) पू. फा. में २/५५, बहुला चतुर्थी, गणेश (संकष्ट) चतुर्थी (चन्द्रोदय २० घं. ३० मि.), (C) (रोहिणी योग) (स्मा.= गृहस्थियों के लिए), (२२ घं. ३६ मि.)(D) (वैष्णव= संन्यासियों के लिए), अगस्त्य उदित, (E) अजा एकादशी व्रत (स.), (F) उदित ४८/१५, शनि प्रदोष व्रत,

अष्टमी मंगल, प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.)
४ सितंबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	१	१	५	७	३	४	१०	४
१७	१५	२३	३	१७	२३	६	१२	१२
८	४५	४	३७	८	३	१२	४०	४०
६	१२	२६	३०	१५	३६	४८	३१	३१
५८	८३५	३४	६६	५	१०	७	३	३
०८	०३	१०	३३	००	०२	३२	११	११
		मा.	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
पू.फा. २	रोहि. २	रोहि. ४	उ.फा. ३	ज्ये. १	आश्ले. २	मघा २	शत. २	मघा ४

कुण्डली सूर्योदय

६ बु.
४ शु.
७
सू. ५ श. के.
३
गु. ८
२ मं. चं.
९
रा. ११
१
१०
१२

लोकभविष्यः- इस चान्द्रमास में पांच बुधवार हैं, जो कि देश में सुख एवं जनता में धनधान्यसमृद्धि के सूचक हैं;- " **बुधस्य पञ्चवाराश्चेज्जायन्ते च निरन्तरम्। प्रजानां सुखमत्यन्तं सुभिक्षं च प्रजायते।।**" पक्षारम्भ में ही बुध का उदय देश के किसी प्रान्त में किसी प्राकृतिक उत्पात का संकेत देता है;- "**नोत्पात-परित्यक्तः चन्द्रजो व्रजत्युदयम्।**" ८ सितं. को शनिवारी शन्युदय कहीं यावनदेश के शासकों के लिए भयावह है।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- पक्षारम्भ में उड़द, मूंग, मोठ, मसूर, अरहर तेज रहें। रुई में घटाबढ़ी होकर मन्दी; चान्दी में भी मन्दी रहे। गुड़, खाण्ड, सरसों एवम् तिलहन में भी बाज़ार अस्थिर रहें। १ सितम्बर के करीब रुई और चान्दी में मन्दा; अनाज कुछ तेज; अन्य व्यापारिक वस्तुओं में बाज़ार का झुकाव मन्दे की तरफ रहे। ७ सितम्बर को गेहूं आदि अनाजों में मन्दा, तेल, कपास आदि में तेजी बने।

कुण्डली सूर्योदय

६ बु.
४ शु.
७
चं. सू. ५ श. के.
३
गु. ८
२ मं.
९
रा. ११
१
१०
१२

अमा मंगल, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.)
११ सितंबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	४	१	५	७	३	४	१०	४
२३	१७	२६	१४	१७	२२	७	१२	१२
५५	५४	५८	२८	४६	४३	५	१८	१८
४३	२	५४	१३	३८	४२	१४	१५	१५
५८	७३७	३२	८८	६	६	७	३	३
२१	३३	३२	१२	०६	२८	२५	१०	१०
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पू.फा. ४	पू.फा. २	मृग. २	हस्त २	ज्ये. १	आश्ले. २	मघा [illegible]	शत. २	मघा ४

आकाश लक्षणः- अगस्त ३०, ३१; सितम्बर १, २, ३, ४, ७, ८, ९ को नेपाल, सूरत, दार्जिलिंग, विंध्यप्रदेश एवम् उ. प्र. के कुछ भागों में कहीं बादलचाल व खण्डवृष्टि होगी। उत्तरी भारत में मौसम साफ रहेगा। **शकुन विचारः-** यदि भाद्र. कृष्ण तृतीया को बादल हों तो अनाज के स्टॉक से आगे छठे मास में लाभ हो।

श्री वि. सं. २०६४, शाक १९२९, भाद्रपद शुक्ल पक्ष १३

(१२ से २६ सितम्बर तक, सन् २००७ ई.)
दक्षिणायन, दक्षिणगोल, शरद ऋतु।

सायं बु. पश्चिम क्षितिज से ऊपर और गु. पश्चिम कपाल में होगा। प्रातः शनि पूर्व क्षितिजासन्न और उस से ऊपर शु. चमकता दिखाई देगा। मं. इस समय लगभग याम्योत्तरवृत्तासन्न होगा।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें				चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा.				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. भा. स्टैं. टा.				
															प्र.	अं.	श.	मु.				सूर्योदय		सूर्यास्त						
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	भाद्रपद	सितंबर	भाद्रपद	शाबान		घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३०	५१	१	बु.	३४	२२	उ.फा.	४६	५०	शु.	५१	२१	कि.	२	१९	२७	१२	२१	२९	कन्या			६	८	१८	२९	४	२४	५४	३	
३०	४६	२	गु.	३९	२३	हस्त	५३	२४	शु.	५२	५६	बा.	६	५२	२८	१३	२२	३०	कन्या			६	९	१८	२७	४	२५	५२	२६	चन्द्र दर्शन, मु. ३०, सूर्य उ. फा. में ४७/१२, (A)
३०	४२	३	शु.	४५	७	चित्रा	६०	०	ब्र.	५५	१	तै.	१२	१५	२९	१४	२३	र.१	तुला	२६	५६	६	१०	१८	२६	४	२६	५०	५१	हरितालिका तृतीया, गौरी तृतीया, श्रीवराह जयन्ती, (B)
३०	३७	४	श.	५१	१६	चित्रा	०	३५	ऐं.	५७	२२	व.	१८	१२	३०	१५	२४	२	तुला			६	१०	१८	२५	४	२७	४९	१८	भद्रा १८/१२ से ५१/१६ तक, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत,(C)
३०	३२	५	र.	५७	२८	स्वा.	८	४	वै.	५९	४४	ब.	२४	२२	३१	१६	२५	३	वृश्चि.	५८	४२	६	११	१८	२४	४	२८	४७	४७	मंगल मिथुन में ३८/३३, ऋषि पंचमी,
३०	२८	६	चं.	६०	०	विशा.	१५	३१	वि.	६०	०	कौ.	३०	२२	आ.१	१७	२६	४	वृश्चि.			६	११	१८	२२	४	२९	४६	१७	सं. सूर्य कन्या में १२/२१, मु. ४५, पुण्यकाल (D)
३०	२३	६	मं.	३	१६	अनु.	२२	२८	वि.	१	४७	तै.	३	१६	२	१८	२७	५	वृश्चि.			६	१२	१८	२१	५	०	४४	४९	
३०	१९	७	बु.	८	१२	ज्ये.	२८	२८	प्री.	३	११	व.	८	१२	३	१९	२८	६	धनु	२८	२८	६	१२	१८	२०	५	१	४३	२२	भद्रा ८/१२ से ४०/०१ तक, श्रीराधाष्टमी(देखें पृ. ९०),(E)
३०	१४	८	गु.	११	४९	मूल	३३	२	आ.	३	३४	ब.	११	४९	४	२०	२९	७	धनु			६	१३	१८	१९	५	२	४१	५९	
३०	९	९	शु.	१३	४६	पू.षा.	३५	५३	सौ.	२	४४	कौ.	१३	४६	५	२१	३०	८	मकर	५१	१९	६	१४	१८	१७	५	३	४०	३४	श्रीचन्द नवमी (उदासीन सम्प्रदाय महोत्सव),
३०	५	१०	श.	१३	४७	उ.षा.	३६	५१	शो. / अ.	० / ५६	२४ / ३१	ग.	१३	४७	६	२२	३१	९	मकर			६	१४	१८	१६	५	४	३९	१३	भद्रा ४२/४८ बाद, बुध तुला में २४/२२,
३०	०	११	र.	११	५०	श्रव.	३५	५२	सु.	५१	५	वि.	११	५०	७	२३	आ.१	१०	मकर			६	१५	१८	१५	५	५	३७	५३	भद्रा ११/५० तक, सूर्य सायन तुला में २२/४२, (F)
२९	५६	१२	चं.	७	५९	धनि.	३३	५	धृ.	४४	१३	बा.	७	५९	८	२४	२	११	कुम्भ	४	४१	६	१५	१८	१३	५	६	३६	३४	पंचक प्रारम्भ ४/४१, सोम प्रदोष व्रत,
२९	५१	१३	मं.	२	२७	शत.	२८	४३	शू.	३६	५	तै.	२	२७	९	२५	३	१२	कुम्भ			६	१६	१८	१२	५	७	३५	१८	भद्रा ५५/२८ बाद, श्री अनन्त चतुर्दशी व्रत,
अवम		१४	मं.	५५	२८	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०		०	०	०	०	चतुर्दशी तिथिक्षय,
२९	४६	१५	बु.	४७	२६	पू.भा.	२३	६	गं.	२६	५९	वि.	२१	२७	१०	२६	४	१३	मीन	९	३४	६	१६	१८	११	५	८	३४	५	भद्रा २१/२७ तक, प्रोष्ठपदी श्राद्ध, पूर्णिमा श्राद्ध (G)

(A) साम उपाकर्म, मेला बाबा गुसाईं आणां (कुराली) पं., (B) रमज़ान मु. प्रारम्भ, (C) कलंक चतुर्थी (चन्द्रदर्शन निषिद्ध) (चन्द्रास्त २० घं. १४ मि.), सिद्धि विनायक व्रत, हरितालिका चतुर्थी, (D) २८/२० तक, बुध चित्रा में १३/५५, सूर्यषष्ठी व्रत, (E) श्रीमहालक्ष्मी व्रत प्रारम्भ, (F) विषुव दिन, दक्षिणगोल प्रारम्भ, पद्मा एकादशी व्रत (स.), श्रवण द्वादशी (विष्णुशृंखल योग), श्रीवामन जयन्ती, शक आश्विन प्रारम्भ, (G) श्रीसत्यनारायण व्रत,

अष्टमी गुरु, प्रातः ५ घं.३० मि.(I.S.T.) २० सितम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	८	२	५	७	३	४	१०	४
२	६	१	२६	१८	२४	८	११	११
४१	६	४२	५६	४६	५६	११	४९	४९
५९	२५	१६	३७	५५	२१	२	३९	३९
५८	७५१	३०	७६	७	२४	७	३	३
३६	०७	०५	२२	२५	१२	१०	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
उ.फा. २	मूल २	मृग. ३	चित्रा २	ज्ये. १	आश्ले. ३	मघा ३	शत. २	मघा ४

कुण्डली सूर्योदय

- ७
- ५ श. के.
- गु. ८
- सू. ६ बु.
- शु. ४
- ९ चं.
- ३ मं.
- १०
- १२
- २
- रा. ११
- १

लोकभविष्य:- इस पक्ष में मंगल मिथुन राशि में आकर मकर राशि पर शक्तिपात करेगा। मकर भारत की राशि है। सिंह राशिस्थ शनि प्रधाननेतृत्व के लिए कठिन परिस्थिति का सूचक है। संयुक्त-शासकदलों में विघटन के भाव शासनतन्त्र के लिए भयावह परिस्थिति बना सकते हैं।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख:- मासारम्भ में रुई, कपास, सूत, सोना, चान्दी, घी, तेल, तिलहन तेज रहें। १६ सितम्बर के करीब गुड़, खाण्ड, शक्कर, अलसी, तांबा और लालरंग की चीजों में खास तेजी का योग है। शेयर-बाज़ार मन्दे रहें। २२ सितम्बर के बाद पक्षान्त तक बाज़ार अस्थिर रहेंगे।

आकाश लक्षण:- सितम्बर १६, १७, २२, २३ को आसाम, बंगाल, नेपाल, भूटान व काश्मीर में कहीं वायुवेग के साथ वर्षा हो। उत्तरी भारत में गर्मी का प्रभाव क्षीण होगा और मौसम में बदलाव अनुभव होगा।

शकुन विचार:- भाद्र. शुक्ल पूर्णिमा को यदि आकाश निर्मल रहे तो गेहूं, जौ, चना, चावल के स्टॉक से आगे लाभ मिले।

कुण्डली सूर्योदय

- ७ बु.
- ५ श. के.
- गु. ८
- सू. ६
- शु. ४
- ९
- ३ मं.
- १०
- १२
- २
- चं.रा.११
- १

पूर्णिमा बुध, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) २६ सितम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	१०	२	६	७	३	४	१०	४
८	२७	४	४	१६	२७	८	११	११
३४	९	३८	१०	३३	४५	५३	३०	३०
५	५७	२१	८	२५	४९	३१	३४	३४
५८	८९१	२८	६५	८	३३	६	३	३
४८	२२	१५	४७	१३	३१	५८	१०	१०
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
उ.फा. ४	पू.भा. ३	मृग. ४	चित्रा ४	ज्ये. १	आश्ले. ४	मघा ३	शत. २	मघा ४

श्री वि. सं. २०६४, शाक १९२९, आश्विन कृष्ण पक्ष १४

(२७ सितम्बर से ११ अक्तूबर तक, सन् २००७ ई.)
दक्षिणायन, दक्षिणगोल, शरद् ऋतु।

सायं बु. पश्चिम क्षितिज के पास और गु. पश्चिम कपाल में होगा। प्रातः श. शु. पूर्व में परस्पर आसन्न और मं. पूर्व कपाल में होगा।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. आश्विन	तारीखें अं. सितम्बर	तारीखें श. आश्विन	तारीखें मु. रमज़ान	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. भा. स्टैं. टा. रा.	अं.	क.	वि.	
२९	४२	१	गु.	३८	४४	उ.भा.	१६	३७	वृ.	१७	११	बा.	१३	०५	११	२७	५	१४	मीन			६	१७	१८	१०	५	९	३२	५१	सूर्य हस्त में २५/४३, श्राद्ध (महालय) पक्ष प्रारम्भ (A)
२९	३७	२	शु.	२९	४७	रेव.	९	४१	ध्रु. व्या.	७ ५६	१ ५२	तै.	४	१६	१२	२८	६	१५	मेष	९	४१	६	१८	१८	८	५	१०	३१	४१	भद्रा ५५/२३ बाद, पंचक समाप्त ९/४१, बुध स्वा. (B)
२९	३२	३	श.	२१	०	अश्वि. भर.	२ ५६	४९ १९	ह.	४७	०	वि.	२१	००	१३	२९	७	१६	मेष			६	१८	१८	७	५	११	३०	३२	भद्रा २१/०० तक, गुरु ज्ये. २ में ९/०४, शुक्र (C)
२९	२८	४	र.	१२	४६	कृत्ति.	५०	३९	व.	३७	४५	बा.	१२	४६	१४	३०	८	१७	वृष	९	४७	६	१९	१८	६	५	१२	२९	२६	मंगल आर्द्रा में २१/३१, पंचमी का श्राद्ध,
२९	२३	५	चं.	५	२८	रोहि.	४६	७	सि.	२९	२३	तै.	५	२८	१५	अ.१	९	१८	वृष			६	१९	१८	५	५	१३	२८	२२	भद्रा ५९/२५ बाद, षष्ठी का श्राद्ध, अक्तूबर प्रारम्भ,
अवम		६	चं.	५९	२५	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०		०	०	०	०	षष्ठी तिथिक्षय,
२९	१९	७	मं.	५४	५०	मृग.	४३	१	व्य.	२२	७	वि.	२७	०७	१६	२	१०	१९	मिथुन	१४	२२	६	२०	१८	३	५	१४	२७	२०	भद्रा २७/०७ तक, सप्तमी का श्राद्ध,
२९	१४	८	बु.	५१	५२	आर्द्रा.	४१	३०	व.	१६	७	बा.	२३	२१	१७	३	११	२०	मिथुन			६	२१	१८	२	५	१५	२६	२२	श्रीमहालक्ष्मी व्रत समाप्त, अष्टमी का श्राद्ध,
२९	९	९	गु.	५०	३४	पुन.	४१	३६	प.	११	२६	तै.	२१	१३	१८	४	१२	२१	कर्क	२६	२६	६	२१	१८	१	५	१६	२५	२४	नवमी का श्राद्ध, सौभाग्यवती श्राद्ध,
२९	५	१०	शु.	५०	५२	पुष्य	४३	१८	शि.	८	३	व.	२०	४३	१९	५	१३	२२	कर्क			६	२२	१८	००	५	१७	२४	२९	भद्रा २०/४३ से ५०/५२ तक, शनि मघा ४ में (D)
२९	०	११	श.	५२	३८	आश्ले.	४६	२७	सि.	५	५३	ब.	२१	४५	२०	६	१४	२३	सिंह	४६	२७	६	२२	१७	५८	५	१८	२३	३७	इन्दिरा एकादशी व्रत (स.), एकादशी का श्राद्ध,
२८	५६	१२	र.	५५	४१	मघा	५०	४९	सा.	४	५०	कौ.	२४	०९	२१	७	१५	२४	सिंह			६	२३	१७	५७	५	१९	२२	४७	द्वादशी का श्राद्ध, संन्यासियों का श्राद्ध,
२८	५१	१३	चं.	५९	४६	पू.फा.	५६	१२	शु.	४	४२	ग.	२७	४३	२२	८	१६	२५	सिंह			६	२४	१७	५६	५	२०	२१	५९	भद्रा ५९/४६ बाद, त्रयोदशी का श्राद्ध, सोम प्रदोष व्रत,
२८	४६	१४	मं.	६०	०	उ.फा.	६०	०	शु.	५	२१	वि.	३२	१३	२३	९	१७	२६	कन्या	१२	४०	६	२४	१७	५५	५	२१	२१	१३	भद्रा ३२/१२ तक, शस्त्र–विष आदि से मृतों का (E)
२८	४२	१४	बु.	४	३९	उ.फा.	२	२४	ब्र.	६	३६	श.	४	३९	२४	१०	१८	२७	कन्या			६	२५	१७	५४	५	२२	२०	३०	सूर्य चित्रा में ५७/५२, गजच्छाया पर्व, चतुर्दशी/(F)
२८	३७	३०	गु.	१०	१२	हस्त	९	११	ऐं.	८	१९	ना.	१०	१२	२५	११	१९	२८	तुला	४२	४६	६	२६	१७	५२	५	२३	१९	५०	मातामह (नाना) का श्राद्ध, महालय श्राद्ध समाप्त,

(A) प्रतिपदा का श्राद्ध, (B) में १७/४८, द्वितीया का श्राद्ध, (C) मघा सिंह में ४५/२७, तृतीया/चतुर्थी का श्राद्ध, (D) ४७/००, दशमी का श्राद्ध, (E) श्राद्ध, (F) अमावस का श्राद्ध, सर्वपितृ श्राद्ध,

अष्टमी बुध, प्रातः ५ घं.३० मि.(I.S.T.)
३ अक्तूबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	२	२	६	७	४	४	१०	४
१५	१०	७	१०	२०	२	६	११	११
२६	५	४६	५८	३३	७	४१	८	८
२२	४८	२	२६	३०	३७	२१	१६	१६
५९	८१४	२५	४६	६	४२	६	३	३
०३	२६	४८	२३	०४	१०	३६	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
हस्त २	आर्द्रा २	आर्द्रा	स्वा. २	ज्ये. २	मघा १	मघा ३	पू.फा. २	मघा ४

कुण्डली सूर्योदय

७ बु.
५ शु. के. श.
गु. ८
सू. ६
४
९
३ चं. मं.
१०
१२
२
रा. ११
१

लोकभविष्यः:- इस चन्द्रमास में पांच गुरुवार हैं। शुक्र सिंह राशि में आकर शनि के साथ राशिसम्बन्ध बना रहा है। मंहगाई उत्तरोत्तर बढ़ेगी। कहीं राजनैतिक एवम् साम्प्रदायिक उपद्रव उग्ररूप धारण कर सकते हैं। आश्विन कृष्ण तृतीया को शनिवार होने से अग्निकाण्ड से हानि का भी योग बनता है;- **"आश्विने हि तृतीयायां यदि भौम- शनैश्चरौ। तदा त्वग्निभयं विग्रादयवान्न-महर्घता।।"**

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः:- पक्षारम्भ में अनाज, गुड़, खाण्ड, कपास, सूत, हरड़, हींग, धनिया, हल्दी और नमक तेज हों। २९ सितम्बर को अनाज, गुड़, खाण्ड में तेजी। चान्दी, रुई में पहले तेजी बाद में मन्दी। ५ अक्तूबर से अनाज, घी, गुड़, खाण्ड, नमक तेज रहें।

कुण्डली सूर्योदय

७ बु.
५ शु. के. श.
गु. ८
६
सू. चं.
४
९
३ मं.
१०
१२
२
रा. ११
१

अमा गुरु, प्रातः ५ घं.३० मि.(I.S.T.)
११ अक्तूबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	५	२	६	७	४	४	१०	४
२३	२१	११	१५	२१	८	१०	१०	१०
१९	२	४	१	४९	१२	३३	४२	४२
५०	४६	१३	५६	१४	२०	१४	५३	५३
५९	७१४	२२	४	९	४९	६	३	३
२०	३२	२९	४६	५८	३४	१५	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
हस्त ४	हस्त ४	आर्द्रा २	स्वा. ३	ज्ये. २	मघा ३	मघा ४	पू.फा. २	मघा ४

आकाश लक्षण:- सितम्बर २७, २८, २९, ३० और अक्तूबर ५, ६ को उत्तर प्रदेश के कुछ भाग, श्रीलंका, आसाम एवं बंगाल में वर्षा के योग हैं। उत्तरी भारत में कहीं बादलचाल व खण्डवृष्टि हो।

शकुन विचारः:- यदि आश्विन कृष्ण दशमी से द्वादशी तक बादल गरजें, बिजली चमके तो गेहूं आदि अनाजों के स्टॉक से आगे लाभ मिले।

श्री वि. सं. २०६४, शाक १९२९, आश्विन शुक्ल पक्ष १५

(१२ से २६ अक्तूबर तक, सन् २००७ ई.)
दक्षिणायन, दक्षिणगोल, शरद्–हेमन्त ऋतु।

बु. १७ अक्तू. को पश्चिम में लुप्त हो जाएगा। सायं गु. पश्चिम कपाल में दिखाई देगा। प्रातः श. शु. पूर्व में परस्पर आसन्न और मं. याम्योत्तरवृत्तासन्न होगा।

दिनमान घ.	प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	प.	योग	समाप्ति-काल घ.	प.	करण	समाप्ति-काल घ.	प.	तारीखें प्र. आश्विन	अं. अक्तूबर	श. आश्विन	मु. रमज़ान	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. भा. स्टैं. टा. रा.	अं.	क.	वि.	
२८	३३	१	शु.	१६	१२	चित्रा	१६	२४	वै.	१०	२२	ब.	१६	१२	२६	१२	२०	२९	तुला			६	२६	१७	५१	५	२४	१९	९	बुध वक्री ७/४७, शारद नवरात्रारम्भ, (A)
२८	२८	२	श.	२२	२७	स्वा.	२३	५३	वि.	१२	३७	कौ.	२२	२७	२७	१३	२१	३०	तुला			६	२७	१७	५०	५	२५	१८	३२	चन्द्र दर्शन, मु. ३०,
२८	२४	३	र.	२८	४४	विशा.	३१	२२	प्री.	१४	५५	ग.	२८	४४	२८	१४	२२	श.१	वृश्चि.	१४	३१	६	२८	१७	४९	५	२६	१७	५६	शव्वाल मु. प्रारम्भ,
२८	१९	४	चं.	३४	४७	अनु.	३८	३७	आ.	१७	४	व.	१	४५	२९	१५	२३	२	वृश्चि.			६	२८	१७	४८	५	२७	१७	२३	भद्रा १/४५ से ३४/४७ तक,
२८	१५	५	मं.	४०	१४	ज्ये.	४५	१७	सौ.	१८	५१	ब.	७	३०	३०	१६	२४	३	धनु	४५	१७	६	२९	१७	४७	५	२८	१६	५२	शुक्र पू. फा. में ५६/३३, उपांगललिता व्रत,
२८	१०	६	बु.	४४	४४	मूल	५०	५९	शो.	२०	१	कौ.	१२	२९	का.१	१७	२५	४	धनु			६	३०	१७	४६	५	२९	१६	२२	सं. सूर्य तुला में ४१/२७, मु. ३०, पुण्यकाल (B)
२८	६	७	गु.	४७	५३	पू.षा.	५५	२२	अ.	२०	१५	ग.	१६	१८	२	१८	२६	५	धनु			६	३०	१७	४५	६	०	१५	५४	भद्रा ४७/५३ बाद, श्रीसरस्वती पूजन,
२८	१	८	शु.	४९	२०	उ.षा.	५८	५	सु.	१९	१८	वि.	१८	३६	३	१९	२७	६	मकर	११	१२	६	३१	१७	४३	६	१	१५	२९	भद्रा १८/३६ तक, गुरु ज्ये. ३ में ४३/१२, दुर्गाष्टमी (C)
२७	५७	९	श.	४८	५२	श्रव.	५८	५४	धृ.	१६	५६	बा.	१९	०६	४	२०	२८	७	मकर			६	३२	१७	४२	६	२	१५	३	महानवमी (पूजा/बलिदान के लिए), सरस्वती विसर्जन (D)
२७	५२	१०	र.	४६	२३	धनि.	५७	४५	शू.	१३	१	तै.	१७	३७	५	२१	२९	८	कुम्भ	२८	३४	६	३२	१७	४१	६	३	१४	४१	पंचक प्रारम्भ २८/३४, श्री विजयादशमी (दशहरा), (E)
२७	४८	११	चं.	४१	५५	शत.	५४	३९	गं.	७	३०	व.	१४	०९	६	२२	३०	९	कुम्भ			६	३३	१७	४०	६	४	१४	२०	भद्रा १४/०९ से ४१/५५ तक, भरत मिलाप, पापांकुशा (F)
२७	४४	१२	मं.	३५	३९	पू.भा.	४९	५०	वृ. धृ.	० ५१	२७ ५९	ब.	८	४६	७	२३	का.१	१०	मीन	३६	१०	६	३४	१७	३९	६	५	१४	०	वक्री बुध चित्रा में ३६/००, सूर्य सायन वृश्चिक में (G)
२७	३९	१३	बु.	२७	५३	उ.भा.	४३	३७	व्या.	४२	२३	कौ.	१	४६	८	२४	२	११	मीन			६	३५	१७	३८	६	६	१३	४३	सूर्य स्वा. में २३/४०, राहु शत १, केतु मघा ३ में (H)
२७	३५	१४	गु.	१८	५९	रेव.	३६	२०	ह.	३१	५५	व.	१८	५९	९	२५	३	१२	मेष	३६	२०	६	३५	१७	३७	६	७	१३	२७	भद्रा १८/५९ से ४४/११ तक, पंचक समाप्त ३६/२०, (I)
२७	३१	१५	शु.	९	२३	अश्वि.	२८	३६	व.	२०	५९	ब.	९	२३	१०	२६	४	१३	मेष			६	३६	१७	३६	६	८	१३	१५	महर्षि वाल्मीकि जयन्ती, कार्तिकस्नान प्रारम्भ,

(A) घटस्थापन, (B) मध्याह्न के बाद, बुध पश्चिम में अस्त ४२/५७, श्रीसरस्वती आवाह्न, (C) महाष्टमी, सरस्वती बलिदान, (D) नवरात्र समाप्त, (E) आयुध पूजा, अपराजिता पूजन, सीमोल्लंघन, (F) एकादशी व्रत (स.), (G) ४५/३०, हेमन्त ऋतु प्रारम्भ, शक कार्तिक प्रारम्भ, (H) २५/५२, प्रदोष व्रत, (I) कोजागर व्रत, शरत्पूर्णिमा, श्रीसत्यनारायण व्रत,

अष्टमी शुक्र, प्रातः ५ घं.३० मि.(I.S.T.) १९ अक्तूबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	८	२	६	७	४	४	१०	४
१	२७	१३	११	२३	१५	११	१०	१०
१५	६	५०	५८	११	९	२१	१७	१७
२६	३६	३९	२०	४८	१६	३४	२७	२७
५९	७६५	१८	५९	१०	५५	५	३	३
३६	५५	३२	१४	४६	०६	४६	११	११
		मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
चित्रा ३	उ.फा. १	आर्द्रा ३	स्वा. २	ज्ये. २	पू.फा. १	मघा ४	शत. २	मघा ४

कुण्डली सूर्योदय

८ गु. | ६ | ७ सू. बु. | शु. के.श. ५ | ९ चं. | १० | ४ | ११ रा. | १ | ३ मं. | १२ | २

लोकभविष्य:- इस पक्ष के मध्य में तुलास्थ सूर्य वक्री बुध के साथ मेल करता है। ये दोनों शनि की विशेष दृष्टि में हैं। नीच सूर्य पर शत्रु ग्रह की दृष्टि शुभंकर प्रतीत नहीं होती। विश्व में कुछ अघटित घटनाचक्र चलेगा। प्रधान नेताओं के समक्ष विशेष उलझनें उपस्थित होंगी।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख:- पक्षारम्भ में वायदा बाज़ार अच्छे तेज रहेंगे। १६ अक्तूबर के करीब अनाज, रुई और चान्दी में मन्दा आकर तेजी हो। १८ अक्तूबर को बाज़ार का रुख बदले। १९ अक्तूबर को चान्दी में मन्दी और अनाजों में घटाबढ़ी के बाद तेजी बने। २४ अक्तूबर को तेल, तिलहन, गुड़, खाण्ड, सोना, चान्दी में तेजी बने।

आकाश लक्षण:- अक्तूबर १२, १६, १७, १८, १९, २३ एवं २४ को हि. प्र., जम्मू-काश्मीर, पंजाब एवं उ. प्र. के कुछ भागों में वायुवेग के साथ बौछारें पड़ने का योग है। इस पक्ष में हि. प्र., उत्तर-पूर्वी लंका एवम् चिरापूंजी में अच्छी वर्षा होगी।

शकुन विचार:- यदि आश्विन शुक्ल पूर्णिमा को आकाश मेघाछन्न हो तो धान्य के स्टॉक से आगामी चैत्र मास में लाभ मिले।

कुण्डली सूर्योदय

८ गु. | ६ | ७ सू. बु. | शु. के.श. ५ | ९ | १० | ४ | ११ रा. | १ चं. | ३ मं. | १२ | २

पूर्णिमा शुक्र, प्रातः ५ घं.३० मि.(I.S.T.) २६ अक्तूबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	०	२	६	७	४	४	१०	४
८	५	१५	३	२४	२१	१२	९	९
१३	१९	४८	४७	२८	४६	०	५५	५५
१५	१६	५३	१६	५८	४६	२८	१२	१२
५९	९२०	१४	६६	११	५८	५	३	३
४९	००	३५	००	२२	५३	१७	११	११
		मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
स्वा. १	अश्वि. २	आर्द्रा ३	चित्रा ४	ज्ये. ३	पू.फा. ३	मघा ४	शत. १	मघा ३

श्री वि. सं. २०६४, शाक १९२९, कार्त्तिक कृष्ण पक्ष १६

(२७ अक्तूबर से ९ नवम्बर तक, सन् २००७ ई.)
दक्षिणायन, दक्षिणगोल, हेमन्त ऋतु ।

३० अक्तू. से बु. पूर्व में दृश्य हो जाएगा। सायं गु. पश्चिम में होगा। प्रातः शु. श. पूर्व कपाल में और मं. पश्चिम कपाल में दिखाई देगा।

दिनमान घ.	प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	प.	योग	समाप्ति-काल घ.	प.	करण	समाप्ति-काल घ.	प.	तारीखें प्र. कार्तिक	अं. अक्तूबर	श. कार्तिक	मु. शव्वाल	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा. स्टै. टा. सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. भा. स्टै. टा. रा.	अं.	क.	वि.	
अवम		१	शु.	५९	३६	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	प्रतिपदा तिथिक्षय,
२७	२६	२	श.	५०	१	भर.	२०	४७	सि. व्य.	९ ५९	५६ १३	तै.	२४	४९	११	२७	५	१४	वृष	३३	५०	६	३७	१७	३५	६	९	१३	२	
२७	२२	३	र.	४१	९	कृत्ति.	१३	२३	व.	४९	६	व.	१५	३५	१२	२८	६	१५	वृष			६	३८	१७	३४	६	१०	१२	५२	भद्रा १५/३५ से ४१/०९ तक,
२७	१८	४	चं.	३३	२६	रोहि.	६	५६	प.	४०	०	ब.	७	१७	१३	२९	७	१६	मिथुन	३४	११	६	३८	१७	३३	६	११	१२	४४	श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, करक चतुर्थी (करवा चौथ) (A)
२७	१४	५	मं.	२७	१६	मृग. आर्द्रा.	१ ५८	५१ २७	शि.	३२	११	कौ.	०	२१	१४	३०	८	१७	मिथुन			६	३९	१७	३३	६	१२	१२	३९	वक्री बुध कन्या में २३/०४, शुक्र उ. फा. में (B)
२७	९	६	बु.	२२	५७	पुन.	५६	५९	सि.	२५	५३	व.	२२	५७	१५	३१	९	१८	कर्क	४२	१०	६	४०	१७	३२	६	१३	१२	३६	भद्रा २२/५७ से ५१/४८ तक, नेप्च्यून मार्गी ५३/३७,
२७	५	७	गु.	२०	३९	पुष्य	५७	३२	सा.	२१	११	ब.	२०	३९	१६	न.१	१०	१९	कर्क			६	४१	१७	३१	६	१४	१२	३४	बुध मार्गी ५४/३३, अहोई अष्टमी (पं.), नवम्बर प्रारम्भ,
२७	१	८	शु.	२०	२५	आश्ले.	६०	०	शु.	१८	६	कौ.	२०	२५	१७	२	११	२०	कर्क			६	४१	१७	३०	६	१५	१२	३७	
२६	५७	९	श.	२२	६	आश्ले.	०	१	शु.	१६	३०	ग.	२२	०६	१८	३	१२	२१	सिंह	०	१	६	४२	१७	२९	६	१६	१२	३९	भद्रा ५३/४६ बाद, शुक्र कन्या में ६/१२,
२६	५३	१०	र.	२५	२७	मघा	४	९	ब्र.	१६	१२	वि.	२५	२७	१९	४	१३	२२	सिंह			६	४३	१७	२८	६	१७	१२	४४	भद्रा २५/२७ तक, बुध तुला में ३०/३१,
२६	४९	११	चं.	३०	६	पू.फा.	९	४२	ऐं.	१६	५४	बा.	३०	०६	२०	५	१४	२३	कन्या	२६	१७	६	४४	१७	२८	६	१८	१२	५१	रमा एकादशी व्रत (स.),
२६	४५	१२	मं.	३५	३९	उ.फा.	१६	१४	वै.	१८	२१	कौ.	२	५२	२१	६	१५	२४	कन्या			६	४५	१७	२७	६	१९	१३	१	सूर्य विशाखा में ४३/४२, गुरु ज्ये. ४ में ५/४०, (C)
२६	४१	१३	बु.	४१	४५	हस्त	२३	२२	वि.	२०	१६	ग.	८	४२	२२	७	१६	२५	तुला	५७	४	६	४६	१७	२६	६	२०	१३	१२	भद्रा ४१/४५ बाद, धन त्रयोदशी, प्रदोष व्रत,
२६	३८	१४	गु.	४८	४	चित्रा	३०	४७	प्री.	२२	२५	वि.	१४	५५	२३	८	१७	२६	तुला			६	४६	१७	२५	६	२१	१३	२५	भद्रा १४/५५ तक, नरक चतुर्दशी, श्रीहनुमान् जयन्ती (D)
२६	३४	३०	शु.	५४	२४	स्वा.	३८	१५	आ.	२४	३७	च.	२१	१४	२४	९	१८	२७	तुला			६	४७	१७	२५	६	२२	१३	४२	प्लूटो मूल २ में २१/४०, दीपावली, श्रीमहालक्ष्मी (E)

(A) (चन्द्रोदय २० घं. ११ मि.) (देखें पृ. ९०), (B) ५१/२२, बुध पूर्व में उदित ३७/४८, (C) गोवत्स द्वादशी, (D) (पूर्वारुणोदय वाली) (उ. भा.), (E) पूजन, श्री महावीर निर्वाण दिवस (जैन),

अष्टमी शुक्र, प्रातः ५ घं.३० मि.(I.S.T.)
२ नवम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	३	२	५	७	४	४	१०	४
१५	१६	१७	२६	२५	२८	१२	६	६
१२	३३	१७	२३	५०	४८	३५	३२	३२
३७	४४	३८	२४	१०	३१	५१	५६	५६
६०	७६८	१०	६	११	६१	४	३	३
०३	२६	०१	०३	५५	५६	४४	१०	१०
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
स्वा. ३	पुष्य ४	आर्द्रा ४	चित्रा २	ज्ये. ३	उ.फा. १	मघा ४	शत. १	मघा ३

कुण्डली सूर्योदय (२ नवम्बर)

७ सू. | ८ गु. | ९ | १० | ११ रा. | १२ | १ | २ | ३ मं. | चं. ४ | शु. के.श. ५ | ६ बु.

लोकभविष्यः- ३० अक्तूबर को वक्री बुध कन्या में आकर उदय हो रहा है। नवम्बर के प्रथम सप्ताह में शुक्र नीच राशि में एवं बुध फिर से तुला में आकर शनि की नजर में आ जाता है। २७ अक्तूबर से लगभग १५ दिन में किसी उग्रवादजन्य विस्फोट आदि घटनाविशेष से किसी बड़े शहर में जनधनहानि की आशंका बनती है।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- ३० अक्तूबर को रुई और चान्दी में पहले मन्दी, बाद में तेजी बने। जौ, गेहूं, चना, गुड़, खाण्ड और हल्दी, लालमिर्च तथा तिल में तेजी। १ नवम्बर को बाज़ारों का रुख बदले। अनाज, सोना तेज रहें। मूंगफली, कपूर, चन्दन, रुई, चान्दी में घटाबढ़ी रहे। ३ नवं. को चान्दी में घटाबढ़ी के बाद तेजी; रुई, गुड़, खाण्ड, सोना तेज व चावलों में विशेष तेजी का झटका बने।

आकाश लक्षणः- अक्तूबर ३०, ३१ एवम् नवम्बर १ से ४ तक जम्मू-काश्मीर, हि.प्र., उ. भारत में कहीं बादलचाल एवं खण्डवृष्टि होगी। हि. प्र. एवं काश्मीर के उन्नत शिखरों पर कहीं हिमपात हो, उ.भा. में शीत का प्रभाव बढ़ने लगेगा।

शकुन विचारः- कार्त्तिक कृष्ण में सूर्द के चारों ओर परिवेष दिखाई दे तो सरसों, तिल, तेल तेज होंगे; शीघ्र ही स्टॉक से निःसंदेह लाभ होगा। दीपावली की सायं को यदि जोरदार वायु चले तो आगामी शीतकालीन फसलें खराब होने से तेजी जोर पकड़ेगी।

कुण्डली सूर्योदय (९ नवम्बर)

७ सू. चं. बु. | ८ गु. | ९ | १० | ११ रा. | १२ | १ | २ | ३ मं. | ४ | श. के. ५ | ६ शु.

अमा शुक्र, प्रातः ५ घं.३० मि.(I.S.T.)
९ नवम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	६	२	६	७	५	४	१०	४
२२	११	१८	३	२७	६	१३	६	६
१३	४८	१२	२३	१४	६	७	१०	१०
४२	२७	२१	३	५८	४२	१८	४१	४१
६०	७११	४	६३	१२	६४	४	३	३
५७	२०	४६	५८	२३	२२	०६	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
विशाखा १	स्वा. २	आर्द्रा ४	चित्रा ४	ज्ये. ४	उ.फा. ३	मघा ४	शत. १	मघा ३

श्री वि. सं. २०६४, शाक १९२९, कार्तिक शुक्ल पक्ष १७

(१० से २४ नवम्बर तक, सन् २००७ ई.) दक्षिणायन, दक्षिणगोल, हेमन्त ऋतु।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. कार्तिक	अं. नवंबर	श. कार्तिक	मु. ज़ुल्काद	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. भा. स्टैं. टा. रा.	अं.	क.	वि.	पक्षान्त में बु. पूर्व में दीखना बन्द हो जाएगा। सायं गु. पश्चिम में, प्रातः शु. पूर्व में, श. पूर्व कपाल में और मं. पश्चिम में दिखाई देगा।
२६	३०	१	श.	६०	०	विशा.	४५	३५	सौ.	२६	४४	किं.	२७	२८	२५	१०	१९	२८	वृश्चि.	२८	४६	६	४८	१७	२४	६	२३	१३	५८	अन्नकूट, गोवर्धनपूजा, बलिपूजा, गोक्रीड़ा,
२६	२६	१	र.	०	३३	अनु.	५२	३८	शो.	२८	३९	ब.	०	३३	२६	११	२०	२९	वृश्चि.			६	४९	१७	२३	६	२४	१४	१७	चन्द्र दर्शन, मु. ३०, बुध स्वा. में ४९/२२, यम द्वितीया,
२६	२३	२	चं.	६	२०	ज्ये.	५९	१४	अ.	३०	१७	कौ.	६	२०	२७	१२	२१	ज़ि.१	धनु	५९	१४	६	५०	१७	२३	६	२५	१४	३७	शुक्र हस्त में ३०/०६, शनि पू. फा. १ में ४/२८, (A)
२६	१९	३	मं.	११	३८	मूल	६०	०	सु.	३१	२८	ग.	११	३८	२८	१३	२२	२	धनु			६	५१	१७	२२	६	२६	१५	०	भद्रा ४३/५६ बाद,
२६	१६	४	बु.	१६	१४	मूल	५	१०	धृ.	३२	३	वि.	१६	१४	२९	१४	२३	३	धनु			६	५१	१७	२२	६	२७	१५	२३	भद्रा १६/१४ तक, बालदिवस, ज.दि. श्री जवाहरलाल (B)
२६	१२	५	गु.	१९	५२	पू.षा.	१०	१५	शू.	३१	५२	बा.	१९	५२	३०	१५	२४	४	मकर	२६	२२	६	५२	१७	२१	६	२८	१५	४८	मंगल वक्री १७/३७, सूर्यषष्ठी व्रत,
२६	९	६	शु.	२२	१३	उ.षा.	१४	९	गं.	३०	४०	तै.	२२	१३	मा.१	१६	२५	५	मकर			६	५३	१७	२१	६	२९	१६	१५	सं. सूर्य वृश्चिक में ३९/५५, मु. ३०, पुण्यकाल (C)
२६	५	७	श.	२३	३	श्रव.	१६	३७	वृ.	२८	१६	व.	२३	०३	२	१७	२६	६	कुम्भ	४७	१६	६	५४	१७	२०	७	०	१६	४३	भद्रा २३/०३ से ५२/३६ तक, पंचक प्रारम्भ ४७/१६,
२६	२	८	र.	२२	८	धनि.	१७	२५	ध्रु.	२४	२९	ब.	२२	०८	३	१८	२७	७	कुम्भ			६	५५	१७	२०	७	१	१७	१३	श्रीगोपाष्टमी,
२५	५९	९	चं.	१९	२१	शत.	१६	२३	व्या.	१९	१४	कौ.	१९	२१	४	१९	२८	८	मीन	५९	२६	६	५६	१७	१९	७	२	१७	४३	सूर्य अनु. में ५८/०७, अक्षय नवमी, कूष्माण्ड नवमी,
२५	५६	१०	मं.	१४	४३	पू.भा.	१३	३२	ह.	१२	३१	ग.	१४	४३	५	२०	२९	९	मीन			६	५७	१७	१९	७	३	१८	१४	भद्रा ४१/३३ बाद, भीष्मपंचक प्रारम्भ,
२५	५३	११	बु.	८	२२	उ.भा.	८	५९	व. सि.	४ ५५	२४ ८	वि.	८	२२	६	२१	३०	१०	मीन			६	५७	१७	१८	७	४	१८	४७	भद्रा ८/२२ तक, बुध त्रिशाखा में ९/४०, गुरु (D)
२५	५०	१२	गु.	०	३७	रेव. अश्वि.	३ ५६	० ०	व्य.	४४	५५	बा.	०	३७	७	२२	मा.१	११	मेष	३	०	६	५८	१७	१८	७	५	१९	२१	पंचक समाप्त ०३/००, सूर्य सायन धनु में (E)
अवम		१३	गु.	५१	४५	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	त्रयोदशी तिथिक्षय,
२५	४७	१४	शु.	४२	१३	भर.	४८	२०	व.	३४	५	ग.	१६	५९	८	२३	२	१२	मेष			६	५९	१७	१८	७	६	१९	५७	भद्रा ४२/१३ बाद, श्रीवैकुण्ठ चतुर्दशी,
२५	४४	१५	श.	३२	३०	कृत्ति.	४०	३१	प.	२३	२	वि.	७	२२	९	२४	३	१३	वृष	१	२०	७	०	१७	१८	७	७	२०	३५	भद्रा ७/२२ तक, शुक्र चित्रा में २८/४२, यूरेनस (F)

(A) भाईदूज, विश्वकर्मा पूजा, ज़िल्काद मु. प्रारम्भ, (B) नेहरु, (C) मध्याह्न के बाद, (D) मूल १ धनु में ५५/१५, देवप्रबोधिनी एकादशी व्रत (स.), तुलसी विवाह, (E) ३८/२२, प्रदोष व्रत, शक मार्गशीर्ष प्रारम्भ, (F) मार्गी २१/५६, बुध पूर्व में अस्त २/२५, कार्तिक पूर्णिमा, श्रीसत्यनारायण व्रत, श्रीगुरु नानक जयन्ती, कार्तिक स्नान समाप्त, भीष्मपंचक समाप्त, चातुर्मास्य व्रत–नियमादि समाप्त,

अष्टमी रवि, प्रातः ५ घं.३० मि.(I.S.T.) १८ नवम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	१०	२	६	७	५	४	१०	४
१	२	१८	१५	२९	१५	१३	८	८
१७	१	२५	८	८	५६	४१	४२	४२
१३	४५	५६	२२	२७	७	२२	४	४
६०	८०४	२	८९	१२	६६	३	३	३
३१	४७	४१	२८	५३	४७	१६	११	११
		व.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
४ विशा.	३ धनि.	४ आर्द्रा	३ स्वा.	४ ज्ये.	२ हस्त	१ पू.फा.	१ शत.	३ मघा

कुण्डली सूर्योदय

९ | ७ बु. | १० | गु. ८ सू. | ६ शु. | चं. ११ रा. | श. ५ के. | १२ | २ | ४ | १ | ३ मं.

लोकभविष्य:- पक्षमध्य में मंगल वक्री हो रहा है। सूर्य वृश्चिक राशि में एवं २२ नवम्बर को प्रातः गुरु धनु राशि में आकर मेदिनी ग्रह प्लूटो के साथ मेल करके मंगल के साथ समसप्तकयोग बनाएगा। जन-जीवनोपयोगी वस्तुओं में भारी तेजी से जनता में शासनतन्त्र के प्रति आक्रोश बढ़ेगा। गुरु-मंगल का समसप्तक अनावृष्टि एवं रोगादि से जनता में परेशानी पैदा करेगा;- **"क्रूराणां सह सौम्यैश्च यदि स्यात् समसप्तकम्। अनावृष्टिस्तदा ज्ञेया लोकपीड़ा- महत्यपि।।"**

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख:- अनाज, तेल, तिलहन, सोना आदि तेज; रुई, चान्दी, गुड़, खाण्ड, शक्कर में घटाबढ़ी चले। १५ नवं. को रुई, चान्दी, सोना, अलसी, लालमिर्च, गुड़ में अच्छी तेजी बने। २१ नवं. के बाद बाज़ारों में अचानक मन्दे का योग बनेगा। गुड़, शक्कर, कुल्थ, मूंग, मोठ, ज्वार, बाजरा, सोना, चान्दी में काफी मन्दा आ सकता है।

आकाश लक्षण:- नवम्बर ११, १२, १५, १६, २१ एवम् २२ को जम्मू-काश्मीर एवम् हि. प्र. में जोरदार हिमपात के समाचार मिलेंगे। उत्तरी भारत में भी कहीं बादलचाल, बूंदाबांदी एवम् खण्डवृष्टि के योग हैं।

शकुन विचार:- कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा को सूर्य के चारों तरफ परिवेष (घेरा) दिखाई दे तो तेल के स्टॉक से आगे लाभ मिलता है।

कुण्डली सूर्योदय

गु. ९ | ७ बु. | १० | ८ सू. | ६ शु. | ११ रा. | श. ५ के. | १२ | २ | ४ | १ चं. | ३ मं.

पूर्णिमा शनि, प्रातः ५ घं.३० मि.(I.S.T.) २४ नवम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	०	२	६	८	५	४	१०	४
७	२८	१७	२४	०	२२	१३	८	८
२०	४१	५७	१७	२६	४३	५६	२२	२२
३५	५४	०	८	२४	११	४७	५६	५६
६०	६१८	७	९३	१३	६८	२	३	३
३८	११	५०	१७	०६	०६	४४	११	११
		व.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
१ अनु.	१ कृत्ति.	४ आर्द्रा	२ विशा.	१ मूल	४ हस्त	१ पू.फा.	१ शत.	३ मघा

श्री वि. सं. २०६४, शाक १९२९, मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष १८

(२५ नवम्बर से ६ दिसम्बर तक, सन् २००७ ई.)
दक्षिणायन, दक्षिणगोल, हेमन्त ऋतु।

दिनमान घ.	प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	प.	योग	समाप्ति-काल घ.	प.	करण	समाप्ति-काल घ.	प.	तारीखें प्र. मार्गशीर्ष	अं. नवंबर	श. मार्गशीर्ष	मु. जिल्काद	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. भा. स्टैं. टा. रा.	अं.	क.	वि.	बु. अस्त है। सायं गु. पश्चिम क्षितिज के पास दिखाई देगा। प्रातः शु. पूर्व में, श. याम्योत्तरवृत्त से कुछ पूर्व की ओर हटा हुआ तथा मं. पश्चिम में दिखाई देगा।
२५	४१	१	र.	२३	४	रोहि.	३३	५	शि.	१२	९	कौ.	२३	०४	१०	२५	४	१४	मिथुन	५९	४१	७	१	१७	१७	७	८	२१	१२	
२५	३८	२	चं.	१४	२५	मृग.	२६	३२	सि. सा.	१ ५२	४९ २८	ग.	१४	२५	११	२६	५	१५	मिथुन			७	२	१७	१७	७	९	२१	५१	भद्रा ४०/४३ बाद,
२५	३६	३	मं.	७	२	आर्द्रा.	२१	२०	शु.	४४	२१	वि.	७	०२	१२	२७	६	१६	मिथुन			७	३	१७	१७	७	१०	२२	३२	भद्रा ७/०२ तक, बुध वृश्चिक में ३६/००, (A)
२५	३३	४	बु.	१	१९	पुन.	१७	५३	शु.	३७	४६	बा.	१	१९	१३	२८	७	१७	कर्क	३	३३	७	३	१७	१७	७	११	२३	१५	
अवम		५	बु.	५७	३७	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	पंचमी तिथिक्षय,
२५	३१	६	गु.	५६	५	पुष्य	१६	२८	ब्र.	३२	५२	ग.	२६	५१	१४	२९	८	१८	कर्क			७	४	१७	१६	७	१२	२३	५९	भद्रा ५६/०५ बाद, बुध अनु. में ४३/४२,
२५	२८	७	शु.	५६	४४	आश्ले.	१७	१३	ऐं.	२९	४१	वि.	२६	२४	१५	३०	९	१९	सिंह	१७	१३	७	५	१७	१६	७	१३	२४	४५	भद्रा २६/२४ तक, शुक्र तुला में १८/००,
२५	२६	८	श.	५९	२६	मघा	२०	१	वै.	२८	९	बा.	२८	०५	१६	दि.१	१०	२०	सिंह			७	६	१७	१६	७	१४	२५	३३	श्रीकालाष्टमी (भैरवाष्टमी), दिसम्बर प्रारम्भ,
२५	२४	९	र.	६०	०	पू.फा.	२४	४१	वि.	२८	३	तै.	३१	३६	१७	२	११	२१	कन्या	४१	७	७	७	१७	१६	७	१५	२६	२०	
२५	२२	९	चं.	३	४७	उ.फा.	३०	४७	प्री.	२९	३	ग.	३	४७	१८	३	१२	२२	कन्या			७	८	१७	१६	७	१६	२७	१०	भद्रा ३६/३५ बाद, सूर्य ज्ये. में ८/३३,
२५	२०	१०	मं.	९	२३	हस्त	३७	५१	आ.	३०	४९	वि.	९	२३	१९	४	१३	२३	कन्या			७	८	१७	१६	७	१७	२८	२	भद्रा ९/२३ तक,
२५	१८	११	बु.	१५	४२	चित्रा	४५	२२	सौ.	३२	५८	बा.	१५	४२	२०	५	१४	२४	तुला	११	३४	७	९	१७	१६	७	१८	२८	५५	उत्पन्ना एकादशी व्रत (स.),
२५	१६	१२	गु.	२२	१५	स्वा	५२	५६	शो.	३५	१३	तै.	२२	१५	२१	६	१५	२५	तुला			७	१०	१७	१६	७	१९	२९	४९	गुरु मूल २ में ५५/४५, शुक्र स्वा. में २/१५, प्रदोष व्रत,
२५	१४	१३	शु.	२८	३७	विशा.	६०	०	अ.	३७	१७	व.	२८	३७	२२	७	१६	२६	वृश्चि.	४३	२५	७	११	१७	१६	७	२०	३०	४४	भद्रा २८/३७ बाद, गुरु वार्धक्य प्रारम्भ १७/५२,
२५	१३	१४	श.	३४	३४	विशा.	०	१२	सु.	३९	१	वि.	१	३६	२३	८	१७	२७	वृश्चि.			७	११	१७	१६	७	२१	३१	४१	भद्रा १/३६ तक, बुध ज्ये. में १३/५८,
२५	११	३०	र.	३९	५५	अनु.	६	५७	धृ.	४०	१८	च.	७	१४	२४	९	१८	२८	वृश्चि.			७	१२	१७	१७	७	२२	३२	४०	

(A) श्रीगणेश चतुर्थी व्रत,

अष्टमी शनि, प्रातः ५ घं.३० मि.(I.S.T.)
१ दिसम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	४	२	७	८	६	४	१०	४
१४	८	१६	५	१	०	१४	८	८
२५	१७	४४	१३	५९	४३	१६	०	०
३३	२१	१३	२५	१२	५६	४१	४३	४३
६०	७५०	१३	९४	१३	६९	२	३	३
४६	११	४५	०२	२३	२४	०	११	११
		व.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
अनु. ४	मघा ३	आर्द्रा ४	अनु. १	मूल १	चित्रा ३	पू.फा. १	शत. १	मघा ३

कुण्डली सूर्योदय

गु. ९ | ७ शु. | १० | बु. ८ सू. | ६ | चं. | ११ रा. | श. ५ के. | १२ | २ | ४ | १ | ३ मं.

लोकभविष्यः- इस चान्द्रमास में पांच रविवार हैं। कहीं दुर्भिक्ष की स्थिति बने, कहीं मुस्लिमराष्ट्र व राष्ट्रविशेष में सत्ताहस्तान्तरण का योग बने। लेकिन भारतीय जनता के हितार्थ शासनतन्त्र नई योजनाएं बनाएगा। मंहगाई पर कन्ट्रोल पाने के लिए कुछ पग उठाने पड़ेंगे। इस पक्ष में तिथिवृद्धि एवम् तिथिक्षय का होना मंहगाई पर नियन्त्रण का संकेत देता है;-" **जेहि पखवाड़े तिथि घटे वाही में बढ़ जाय। सभी वस्तु मन्दी बिके मंहगाई घट जाय।।**"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- २७ नवं. को घी, तेल, सरसों, रुई, चान्दी तेज। ३० तारीख को रुई, चान्दी और सोने में घटाबढ़ी के बाद तेजी बने। ६ दिसंबर के करीब गुड़, खाण्ड तेज; कुल्थ, मूंग, मोठ, ज्वार, बाजरा, सोना, चान्दी में कुछ मन्दा रहे।

आकाश लक्षणः- नवंबर २७, २८, ३०; दिसम्बर ३, ६, ७ और ८ को उत्तरी भारत शीतलहर की चपेट में आ जाएगा। कहीं वायुवेग के साथ खण्डवृष्टि व धुन्ध का वातावरण बने।

शकुन विचारः-:- मार्ग. कृष्ण चतुर्दशी किंवा अमावस वाले दिन बादल हों तो अनाजों में शीघ्र तेजी आती है।

कुण्डली सूर्योदय

गु. ९ | ७ शु. | १० | बु. ८ सू. | ६ | चं. | ११ रा. | श. ५ के. | १२ | २ | ४ | १ | ३ मं.

अमा रवि, प्रातः ५ घं.३० मि.(I.S.T.)
९ दिसम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	७	२	७	८	६	४	१०	४
२२	१४	१४	१७	३	१०	१४	७	७
३२	२५	३२	४५	४७	३	२६	३५	३५
४०	२०	५६	३५	१०	२७	३७	१७	१७
६०	७२३	१९	९४	१३	७०	१	३	३
५८	३९	३२	०२	३७	३४	०७	११	११
		व.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
ज्ये. २	अनु. ४	आर्द्रा ३	ज्ये. १	मूल २	स्वा. २	पू.फा. १	शत. १	मघा ३

श्री वि. सं. २०६४, शाक १९२९, मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष १९

(१० से २३ दिसम्बर तक, सन् २००७ ई.)
दक्षिण–उत्तरायण, दक्षिणगोल, हेमन्त–शिशिर ऋतु।

बु. अस्त है। गु. भी पक्षारम्भ में ही पश्चिम में अस्त हो जाएगा। प्रातः पूर्व में शु. और याम्योत्तरवृत्त के आस-पास श. होगा। इस समय मं. पश्चिमी क्षितिज में डूबने को होगा।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	नक्षत्र	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	योग	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	करण	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	तारीखें प्र. मार्गशीर्ष	अं. दिसम्बर	श. मार्गशीर्ष	मु. ज़िल्काद	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. भा. स्टैं. टा. रा.	अं.	क.	वि.	
२५	१०	१	चं.	४४	३४	ज्ये.	१३	६	शू.	४१	३	किं.	१२	१५	२५	१०	१९	२९	धनु	१३	६	७	१३	१७	१७	७	२३	३३	३७	गुरु अस्त १७/५२,
२५	९	२	मं.	४८	२७	मूल	१८	३४	गं.	४१	१४	बा.	१६	३०	२६	११	२०	३०	धनु			७	१४	१७	१७	७	२४	३४	३७	चन्द्र दर्शन, मु. ३०,
२५	७	३	बु.	५१	३०	पू.षा.	२३	१५	वृ.	४०	४७	तै.	१९	५८	२७	१२	२१	ज़ि.१	मकर	३९	१९	७	१४	१७	१७	७	२५	३५	३७	जिल्हिज मु. प्रारम्भ,
२५	६	४	गु.	५३	३५	उ.षा.	२७	५	ध्रु.	३९	३८	व.	२२	३२	२८	१३	२२	२	मकर			७	१५	१७	१८	७	२६	३६	३८	भद्रा २२/३२ से ५३/३५ तक,
२५	५	५	शु.	५४	३४	श्रव.	२९	५५	व्या.	३७	४०	ब.	२४	०४	२९	१४	२३	३	मकर			७	१६	१७	१८	७	२७	३७	४०	
२५	५	६	श.	५४	१८	धनि.	३१	३६	ह.	३४	४६	कौ.	२४	२६	३०	१५	२४	४	कुम्भ	०	५४	७	१६	१७	१८	७	२८	३८	४२	पंचक प्रारम्भ ०/५४, स्कन्द (गुह) षष्ठी, चम्पा षष्ठी,
२५	४	७	र.	५२	३८	शत.	३१	५९	व.	३०	४९	ग.	२३	२८	पौ.१	१६	२५	५	कुम्भ			७	१७	१७	१८	७	२९	३९	४५	भद्रा ५२/३८ बाद, सं. सूर्य मूल धनु में १५/२५, (A)
२५	३	८	चं.	४९	२९	पू.भा.	३०	५६	सि.	२५	४३	वि.	२१	०३	२	१७	२६	६	मीन	१६	२०	७	१८	१७	१९	८	०	४०	४९	भद्रा २१/०३ तक, शुक्र विशाखा में १९/४०,
२५	३	९	मं.	४४	५३	उ.भा.	२८	२७	व्य.	१९	२८	बा.	१७	११	३	१८	२७	७	मीन			७	१८	१७	१९	८	१	४१	५२	
२५	२	१०	बु.	३८	५४	रेव.	२४	३३	व.	१२	४	तै.	११	५३	४	१९	२८	८	मेष	२४	३३	७	१९	१७	२०	८	२	४२	५६	पंचक समाप्त २४/३३, शनि वक्री ३०/५२,
२५	२	११	गु.	३१	४६	अश्वि.	१९	२९	प. शि.	३ ५४	३८ २३	व.	५	२०	५	२०	२९	९	मेष			७	१९	१७	२०	८	३	४४	०	भद्रा ५/२० से ३१/४६ तक, श्रीगीता जयन्ती, (B)
२५	२	१२	शु.	२३	४६	भर.	१३	२७	सि.	४४	३३	बा.	२३	४६	६	२१	३०	१०	वृष	२६	४८	७	२०	१७	२१	८	४	४५	४	गुरु मूल ३ में ३२/४३, प्रदोष व्रत,
२५	२	१३	श.	१५	१७	कृत्ति.	६	५२	सा.	३४	२६	तै.	१५	१७	७	२२	पौ.१	११	वृष			७	२०	१७	२१	८	५	४६	९	सूर्य सायन मकर में १०/४५, उत्तरायण–शिशिर (C)
२५	२	१४	र.	६	४२	रोहि. मृग.	० ५३	८ ४२	शु.	२४	२३	व.	६	४२	८	२३	२	१२	मिथुन	२६	४८	७	२१	१७	२२	८	६	४७	१६	भद्रा ६/४२ से ३२/३६ तक, श्री दत्तजयन्ती, (D)
अवम		१५	र.	५८	३१	००	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	पूर्णिमा तिथिक्षय,

गुरु अस्त
१० दिसम्बर

(A) मु. १५, पुण्यकाल सारा दिन, बुध मूल धनु में ४३/१८, मित्र सप्तमी, (B) मोक्षदा एकादशी व्रत (स.), (C) ऋतु प्रारम्भ, शाक पौष प्रारम्भ, (D) श्रीसत्यनारायण व्रत,

अष्टमी चन्द्र, प्रातः ५ घं.३० मि.(I.S.T.)
१७ दिसम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	१०	२	८	८	६	४	१०	४
०	२५	११	०	५	१९	१४	७	७
४०	१७	४२	१९	३६	३१	३५	९	९
४९	९	३५	१६	३०	१५	२९	५०	५०
६१	८२२	२३	९४	१३	७१	०	३	३
०४	०५	०३	३७	४०	२७	१३	११	११
		व.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
मूल १	पू.भा. २	आर्द्रा २	मूल १	मूल २	स्वा. ४	पू.फा. १	शत. १	मघा ३

कुण्डली सूर्योदय

१० | ८
११ चं. रा. | बु. ९ सू. गु. | ७ शु.
१२ | ६
१ | ३ मं. | के. श. ५
२ | ४

लोकभविष्यः- पक्षारम्भ में ही गुरु अस्त हो रहा है। किसी प्रान्त व देशान्तर में दुर्भिक्ष की स्थिति से जनता स्थानान्तरण करने पर विवश हो सकती है;- " गुरु-शुक्रोदयश्चास्तो यदा वै मार्गमासके। देशान्तरं च गच्छन्ति तदा क्षुत्पीडिताः जनाः।।" १९ दिसम्बर को शनि वक्री हो रहा है, मंगल भी वक्री ही है। यानादि दुर्घटना एवम् उपवादजन्य कष्ट संभव है।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- पक्षारम्भ में रुई, शेयर बाज़ार और व्यापारिक वस्तुओं में तेजी। १६ दिसं. को रुई, कपास, तिल, तेल, सोना, चान्दी तेज। १९ दिसं. के करीब बाज़ारों में घटाबढ़ी; अनाज मन्दे; सोने में विशेष मन्दा आ सकता है। **आकाश लक्षणः**- दिसं. १०, १६, १७ और १९, २०, २१, २२ को उत्तरी भारत में भयंकर शीतलहर चलेगी। कहीं शीतलहर से जनहानि के समाचार भी मिलेंगे। कहीं वायुवेग के साथ खण्डवृष्टि और धुन्ध के वातावरण से यातायात अवरुद्ध हो। **शकुन विचारः**-यदि इस पक्ष में धनिष्ठा नक्षत्र के समय मेघ गरजें तो संक्रामक रोगों से जनता परेशान हो। यदि इस पक्ष में इन्द्रधनुष दीखे तो आगे वर्षा अच्छी हो।

कुण्डली सूर्योदय

१० | ८
११ रा. | बु. ९ सू. गु. | ७ शु.
१२ | ६
१ | ३ मं. | के. श. ५
२ चं. | ४

चतुर्दशी, रवि, प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.)
२३ दिसम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	१	२	८	८	६	४	१०	४
६	२२	९	९	६	२६	१४	६	६
४७	८	२१	४९	५८	४१	३५	५०	५०
१६	५५	४९	१९	५७	२४	११	४५	४५
६१	८९५	२३	९५	१३	७२	०	३	३
०५	५७	४३	३७	४६	०१	२६	११	११
		व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	अ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
मूल ३	रोहि. ४	आर्द्रा १	मूल ३	मूल ३	विशा. ३	पू.फा. १	शत. १	मघा ३

श्री वि. सं. २०६४, शाक १९२९, पौष कृष्ण पक्ष २०

(२४ दिसं. २००७ से ८ जन. सन् २००८ ई. तक, उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिर ऋतु।)

४ जन. से गु. पूर्व में दिखाई देने लगेगा। बु. भी पक्षान्त में पाश्चिम में दृश्य हो जाएगा। सायं मं. पूर्व क्षितिज में होगा। प्रातः शु. पूर्व में और श. पश्चिम कपाल में होगा।

दिनमान घ.	प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	प.	योग	समाप्ति-काल घ.	प.	करण	समाप्ति-काल घ.	प.	तारीखें प्र. पौष	अं. दिसंबर	श. पौष	मु. जिल्हिज्ज	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. भा. स्टैं. टा. रा.	अं.	क.	वि.	
२५	२	१	चं.	५१	८	आर्द्रा.	४८	२	शु.	१४	४५	बा.	२४	४९	९	२४	३	१३	मिथुन			७	२१	१७	२२	८	७	४८	२०	
२५	२	२	मं.	४४	५९	पुन.	४३	३५	ब्र. ऐं.	५ ५८	५५ ११	तै.	१८	०३	१०	२५	४	१४	कर्क	२९	३२	७	२२	१७	२३	८	८	४९	२६	बुध पू. षा. में ७/१९, शुक्र वृश्चिक में ४०/३७,
२५	३	३	बु.	४०	२९	पुष्य	४०	४४	वै.	५१	४७	व.	१२	४३	११	२६	५	१५	कर्क			७	२२	१७	२३	८	९	५०	३२	भद्रा १२/४३ से ४०/२९ तक, राहु धनि. ४, केतु (A)
२५	३	४	गु.	३७	५३	आश्ले.	३९	४६	वि.	४६	५८	ब.	९	११	१२	२७	६	१६	सिंह	३९	४६	७	२३	१७	२४	८	१०	५१	३९	श्रीगणेश चतुर्थी व्रत,
२५	४	५	शु.	३७	२४	मघा	४०	५०	प्री.	४३	४६	कौ.	७	३८	१३	२८	७	१७	सिंह			७	२३	१७	२४	८	११	५२	४७	शुक्र अनु. में २६/३३,
२५	५	६	श.	३९	०	पू.फा.	४३	५५	आ.	४२	११	ग.	८	१२	१४	२९	८	१८	कन्या	५९	५९	७	२३	१७	२५	८	१२	५३	५५	भद्रा ३९/०० बाद, सूर्य पू. षा. में २०/५२, वक्री (B)
२५	५	७	र.	४२	३१	उ.फा.	४८	४९	सौ.	४२	२	वि.	१०	४६	१५	३०	९	१९	कन्या			७	२४	१७	२६	८	१३	५५	३	भद्रा १०/४६ तक,
२५	६	८	चं.	४७	३३	हस्त	५५	६	शो.	४३	१	बा.	१५	०२	१६	३१	१०	२०	कन्या			७	२४	१७	२६	८	१४	५६	१३	
२५	७	९	मं.	५३	३६	चित्रा	६०	०	अ.	४४	४७	तै.	२०	३४	१७	ज.१	११	२१	तुला	२८	३९	७	२४	१७	२७	८	१५	५७	२१	जनवरी (इंगलिश नववर्ष २००८ ई.) प्रारम्भ,
२५	९	१०	बु.	६०	०	चित्रा	२	१७	सु.	४६	५६	व.	२६	५१	१८	२	१२	२२	तुला			७	२४	१७	२८	८	१६	५८	३१	भद्रा २६/५१ बाद, बुध उ. षा. में २२/२५,
२५	१०	१०	गु.	०	६	स्वा.	९	५०	धृ.	४९	४	वि.	०	०६	१९	३	१३	२३	तुला			७	२५	१७	२९	८	१७	५९	४१	भद्रा ०/०६ तक,
२५	११	११	शु.	६	२९	विशा.	१७	१२	शू.	५०	५४	बा.	६	२९	२०	४	१४	२४	वृश्चि.	०	२४	७	२५	१७	२९	८	१९	०	५१	बुध मकर में २५/०४, गुरु उदित ६/०७, (C)
२५	१३	१२	श.	१२	१९	अनु.	२४	०	गं.	५२	९	तै.	१२	१९	२१	५	१५	२५	वृश्चि.			७	२५	१७	३०	८	२०	२	१	गुरु मूल ४ में ६/१२, शनि प्रदोष व्रत
२५	१४	१३	र.	१७	२०	ज्ये.	२९	५९	वृ.	५२	४१	व.	१७	२०	२२	६	१६	२६	धनु	२९	५९	७	२५	१७	३१	८	२१	३	१२	भद्रा १७/२० से ४९/१९ तक,
२५	१६	१४	चं.	२१	१९	मूल	३४	५८	ध्रु.	५२	२६	श.	२१	१९	२३	७	१७	२७	धनु			७	२५	१७	३२	८	२२	४	२३	गुरु बाल्य समाप्त ६/०७,
२५	१८	३०	मं.	२४	१४	पू.षा.	३८	५५	व्या.	५१	२२	ना.	२४	१४	२४	८	१८	२८	मकर	५४	४५	७	२५	१७	३२	८	२३	५	३५	शुक्र ज्ये. में २५/५४, भौमवती अमावस, बुध (D)

गुरु उदित ४ जनवरी

(A) मघा २ में १७/१९, जोड़ मेला फतेहगढ़ साहिब (पं.) प्रारम्भ, (B) मंगल मृग. में ५१/४८, (C) सफला एकादशी व्रत (स.), (D) पश्चिम में उदित ३३/४२,

अष्टमी चन्द्र, प्रातः ५ घं.३० मि.(I.S.T.) ३१ दिसंबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८ १४ ५६ १३	५ ११ १८ ३१	२ ६ १६ २१	८ २२ ४० ४५	८ ८ ४८ ५७	७ ६ १९ ४६	४ १४ २८ ३७	१० ६ २५ १८	४ ६ २५ १८
६१ ०९	७२३ १३	२१ ५८	९७ २४	१३ ४४	७२ ३९	१ १८	३ ११	३ ११
		व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	अ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पू.षा. १	हस्त १	मृग. ४	पू.षा. ३	मूल ३	अनु. १	पू.फा. १	धनि. ४	मघा २

कुण्डली सूर्योदय

१० | ८ शु. | ११ | बु. ९ सू. गु. | ७ | रा. | १२ | चं. ६ | के. | १ | ३ मं. | श. ५ | २ | ४

लोकभविष्य:- इस चान्द्रमास में पांच सोमवार एवम् पांच मंगलवार हैं। जनता में आनन्द-मंगल एवम् धनधान्य समृद्धि रहे। पश्चिमी देशों में कहीं आन्तरिक अशान्ति एवम् प्रधान नेता को कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़े।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख:- २५ दिसं. के करीब रुई, शेयर बाज़ारों और चान्दी में पहले तेजी बाद में मन्दी बने; अनाजों में अच्छी तेजी का योग है। गुड़, खाण्ड, शक्कर मन्दे रहें। २९ दिसं. के लगभग चान्दी, तिलहन, सोना, हल्दी, गुड़, खाण्ड में अच्छी तेजी का योग बनता है। ४ जनवरी के लगभग चान्दी और अनाजों में तेजी; सोना मन्दा रहे। पक्षान्त में बाज़ार मन्दे रहें।

आकाश लक्षण:- दिसं. २५, २६, २८, २९, ३०; जनवरी ४, ५ एवम् ८ के लगभग कहीं वायुवेग के साथ वर्षा, बूंदाबांदी हो। उत्तरी भारत में शीत लहर बनी रहेगी। कुछ भागों में धुन्ध से दुर्घटना हो।

शकुन विचार:- यदि पौष कृष्ण पंचमी को वर्षा हो तो आगे वर्षाकाल में अच्छी वर्षा होगी। यदि इस पक्ष में अष्टमी के दिन बादलवाल एवम् वर्षा हो तो आगे फरवरी में अनाज तेज हों।

कुण्डली सूर्योदय

बु. १० | ८ शु. | रा. | ९ | ११ | सू. चं. गु. | ७ | १२ | ६ | के. | १ | ३ मं. | श. ५ | २ | ४

अमा मंगल, प्रातः ५ घं.३० मि.(I.S.T.) ८ जनवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८ २३ ५ ३५	८ १७ ३१ ४३	२ ३ ३४ ३२	९ ५ ४२ २०	८ १० ३८ २७	७ १६ २ ३५	४ १४ १५ ९	१० ५ ५९ ५२	४ ५ ५९ ५२
६१ १०	७५३ ५०	१७ ३४	९७ १५	१३ ३७	७३ ०५	२ ०९	३ ११	३ ११
		व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पू.षा. ३	पू.षा. २	मृग. ४	उ.षा. ३	मूल ४	अनु. ४	पू.फा. १	धनि. ४	मघा २

श्री वि. सं. २०६४, शाक १९२९ पौष शुक्ल पक्ष २१

(९ से २२ जनवरी तक, सन् २००८ ई.)
उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिर ऋतु।

सायं बु. पश्चिम में और मं. पूर्व में दिखाई देगा। प्रातः गु. को पूर्व क्षितिज में उदय होते हुए देखिए। इस समय शु. पूर्व में और श. पश्चिम कपाल में होगा।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	प.	योग	समाप्ति-काल घ.	प.	करण	समाप्ति-काल घ.	प.	तारीखें प्र. पौष	अं. जनवरी	श. पौष	मु. जिल्हिज्ज	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. भा. स्टैं. टा. रा.	अं.	क.	वि.	
२५	२०	१	बु.	२६	६	उ.षा.	४१	५३	ह.	४९	३१	ब.	२६	०६	२५	९	१९	२९	मकर			७	२५	१७	३३	८	२४	६	४४	
२५	२२	२	गु.	२६	५६	श्रव.	४३	५२	व.	४६	५४	कौ.	२६	५६	२६	१०	२०	३०	मकर			७	२५	१७	३४	८	२५	७	५४	चन्द्र दर्शन, मु. ४५, बुध श्रवण में ३४/४९,
२५	२४	३	शु.	२६	४८	धनि.	४४	५६	सि.	४३	३२	ग.	२६	४८	२७	११	२१	मु.१	कुम्भ	१४	३१	७	२५	१७	३५	८	२६	९	५	भद्रा ५६/१६ बाद, पंचक प्रारम्भ १४/३१, सूर्य (A)
२५	२६	४	श.	२५	४४	शत.	४५	४	व्य.	३९	२७	वि.	२५	४४	२८	१२	२२	२	कुम्भ			७	२५	१७	३६	८	२७	१०	१४	भद्रा २५/४४ तक, नेप्च्यून धनि. २ में ४०/००,
२५	२९	५	र.	२३	४२	पू.भा.	४४	१८	व.	३४	३७	बा.	२३	४२	२९	१३	२३	३	मीन	२९	३५	७	२५	१७	३७	८	२८	११	२३	लोहड़ी (पं.),
२५	३१	६	चं.	२०	४५	उ.भा.	४२	३७	प.	२९	४	तै.	२०	४५	मा.१	१४	२४	४	मीन			७	२५	१७	३७	८	२९	१२	३२	सं. सूर्य मकर में ४१/४६, मु. ४५, पुण्यकाल (B)
२५	३३	७	मं.	१६	५२	रेव.	४०	२	शि.	२२	४७	व.	१६	५२	२	१५	२५	५	मेष	४०	२	७	२५	१७	३८	९	०	१३	३९	भद्रा १६/५२ से ४४/३० तक, पंचक समाप्त ४०/०२,
२५	३६	८	बु.	१२	७	अश्वि.	३६	३९	सि.	१५	४९	ब.	१२	०७	३	१६	२६	६	मेष			७	२५	१७	३९	९	१	१४	४७	
२५	३९	९	गु.	६	३६	भर.	३२	३३	सा.	८	१४	कौ.	६	३६	४	१७	२७	७	वृष	४६	२५	७	२५	१७	४०	९	२	१५	५३	
२५	४१	१०	शु.	०	२७	कृत्ति.	२७	५५	शु. शु.	० ५१	८ ४३	ग.	०	२७	५	१८	२८	८	वृष			७	२४	१७	४१	९	३	१६	५८	भद्रा २७/१० से ५३/५२ तक, पुत्रदा एकादशी व्रत (स्मा.),
अवम		११	शु.	५३	५२	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	एकादशी तिथिक्षय,
२५	४४	१२	श.	४७	८	रोहि.	२३	०	ब्र.	४३	१०	ब.	२०	३०	६	१९	२९	९	मिथुन	५०	३०	७	२४	१७	४२	९	४	१८	३	बुध धनि. में ३७/००, गुरु पू. षा. १ में ५४/५२, (C)
२५	४७	१३	र.	४०	३३	मृग.	१८	५	ऐं.	३४	४३	कौ.	१३	५०	७	२०	३०	१०	मिथुन			७	२४	१७	४३	९	५	१९	७	सूर्य सायन कुम्भ में ३७/०४, प्रदोष व्रत,
२५	५०	१४	चं.	३४	२८	आर्द्रा.	१३	३१	वै.	२६	३८	ग.	७	३०	८	२१	मा.१	११	कर्क	५५	३१	७	२४	१७	४४	९	६	२०	१०	भद्रा ३४/२८ बाद, शक माघ प्रारम्भ,
२५	५३	१५	मं.	२९	१३	पुन.	९	३९	वि.	१९	१०	वि.	१	५१	९	२२	२	१२	कर्क			७	२३	१७	४५	९	७	२१	१३	भद्रा १/५१ तक, माघस्नान प्रारम्भ, श्रीसत्यनारायण (D)

(A) उ. षा. में २५/३१, मुर्हरम (हिजरी सन् १४२९) मु. प्रारम्भ, (B) २१/५० तक , मकर संक्रान्ति, (C) शुक्र मूल धनु में ?०/४०, पुत्रदा एकादशी व्रत (वै.), (D) व्रत, पौषीपूर्णिमा,

अष्टमी बुध, प्रातः ५ घं.३० मि.(I.S.T.)
१६ जनवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९ १ १४ ४७	० ३ ३३ १२	२ १ ३४ २६	९ १८ १५ ४३	८ १२ २६ ४१	७ २५ ४८ ३२	४ १३ ५५ ११	१० ५ ३४ २५	४ ५ ३४ २५
६१ ०६	८५१ २९	११ ३१	८६ ४६	१३ २४	७३ २४	२ ५५	३ ११	३ ११
		व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
उ.षा. २	अश्वि. २	मृग. ३	श्रव. ३	मूल ४	ज्ये. ३	पू.फा. १	धनि. ४	मघा २

कुण्डली सूर्योदय

रा. ११
६ गु.
१०
८
१२
सू. बु.
शु.
चं. १
७
२
४
६
३ मं.
श. ५ के.

लोकभविष्य:- पक्षमध्य में मकरस्थ सूर्य पर वक्री मंगल की दृष्टि है। सूर्य-शनि का षडष्टकयोग कहीं जनता एवं शासकों में विरोध का सूचक है। पौष शुक्ल में तिथिक्षय कहीं मन्त्रीमण्डल में परिवर्तन का संकेत देता है।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख:- १४ जनवरी को घी, तेल, अलसी, गुड़, शक्कर, खाण्ड और रुई में तेज़ी, गेहूं आदि अनाज व बारदाना में मन्दा बने। १६ जनवरी को गेहूं, जौ, चना आदि अनाज एवम् सोना, चान्दी, तांबा आदि धातु में तेजी। रुई, सूत, कपास में पहले मन्दा आकर बाद में तेजी बने।

आकाश लक्षण:- जनवरी १०, ११, १२, १४, १५, १६ एवम् २० को उत्तरी भारत शीतग्रस्त रहेगा। कुछ स्थानों पर वायुवेग के साथ खण्डवृष्टि भी होगी। काश्मीर व हि. प्र. में कहीं हिमपात होने के समाचार भी मिलेंगे।

शकुन विचार:- यदि पौष शुक्ल पूर्णिमा को बिजली चमके या आकाश मेघाच्छन्न रहे तो फसल अच्छी हो। यदि पौष शुक्ल पंचमी को वर्षा हो तो आगे वर्षा अच्छी होती है।

कुण्डली सूर्योदय

रा. ११
६ गु. शु.
१०
८
१२
सू. बु.
१
७
२
चं. ४
६
३ मं.
श. ५ के.

पूर्णिमा मंगल, प्रातः ५ घं.३० मि.(I.S.T.)
२२ जनवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९ ७ २१ १३	२ २९ ५६ १८	२ ० ३७ २८	९ २५ ५९ ४१	८ १३ ४६ ३४	८ ३ ९ ३२	४ १३ ३६ २१	१० ५ १५ २०	४ ५ १५ २०
६१ ०२	८४३ ४२	६ ३९	५९ १९	१३ १२	७३ ३७	३ २५	३ ११	३ ११
		व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
उ.षा. ४	पुन. ३	मृग. ३	धनि. १	पू.षा. १	मूल १	पू.फा. १	धनि. ४	मघा २

श्री वि. सं. २०६४, शाक १९२९, माघ कृष्ण पक्ष २२

(२३ जनवरी से ७ फरवरी तक, सन् २००८ ई.)
उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिर ऋतु।

बु. ३० जन. को पश्चिम में अस्त हो जाएगा। सायं मं. को पूर्व में देखें। प्रातः गु. और शु. पूर्व में परस्पर काफी नज़दीक दिखाई देंगे। श. को प्रातः पश्चिम में देखिए।

दिनमान घ.	प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	प.	योग	समाप्ति-काल घ.	प.	करण	समाप्ति-काल घ.	प.	तारीखें प्र. माघ	अं. जनवरी	श. माघ	मु. मुहर्रम	चन्द्रराशि	प्रवेशकाल घ.	प.	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. भा. स्टैं. टा. रा.	अं.	क.	वि.	
२५	५६	१	बु.	२५	८	पुष्य	६	४९	प्री.	१२	३७	कौ.	२५	०८	१०	२३	३	१३	कर्क			७	२३	१७	४५	९	८	२२	१४	
२५	५९	२	गु.	२२	३१	आश्ले.	५	२१	आ.	७	१०	ग.	२२	३१	११	२४	४	१४	सिंह	५	२१	७	२३	१७	४६	९	९	२३	१५	भद्रा ५२/०४ बाद, सूर्य श्रवण में ३१/२५,
२६	३	३	शु.	२१	३६	मघा	५	२८	सौ.	३	१	वि.	२१	३६	१२	२५	५	१५	सिंह			७	२२	१७	४७	९	१०	२४	१५	भद्रा २१/३६ तक, श्रीगणेश (संकष्ट) चतुर्थी (A)
२६	६	४	श.	२२	३०	पू.फा.	७	२०	शो. अ.	० ५८	१५ ५३	बा.	२२	३०	१३	२६	६	१६	कन्या	२३	५	७	२२	१७	४८	९	११	२५	१५	वक्री शनि मघा ४ में ३०/२२, भारत गणतन्त्र दिवस,
२६	९	५	र.	२५	११	उ.फा.	१०	५६	सु.	५८	४८	तै.	२५	११	१४	२७	७	१७	कन्या			७	२१	१७	४९	९	१२	२६	१४	
२६	१३	६	चं.	२९	२८	हस्त	१६	७	धृ.	५९	४७	व.	२९	२८	१५	२८	८	१८	तुला	४९	१३	७	२१	१७	५०	९	१३	२७	१३	भद्रा २९/२८ बाद, बुध वक्री ४६/४२,
२६	१६	७	मं.	३४	५८	चित्रा	२२	३३	शू.	६०	०	वि.	२	१३	१६	२९	९	१९	तुला			७	२०	१७	५१	९	१४	२८	१०	भद्रा २/१३ तक,
२६	२०	८	बु.	४१	११	स्वा.	२९	४६	शू.	१	३२	बा.	८	०४	१७	३०	१०	२०	तुला			७	२०	१७	५२	९	१५	२९	८	मंगल मार्गी ५१/४८, शुक्र पू. षा. में १२/१५, (B)
२६	२४	९	गु.	४७	३२	विशा.	३७	११	गं.	३	३८	तै.	१४	२१	१८	३१	११	२१	वृश्कि.	२०	२२	७	१९	१७	५३	९	१६	३०	४	
२६	२७	१०	शु.	५३	२६	अनु.	४४	१७	वृ.	५	४०	व.	२०	२९	१९	फ.१	१२	२२	वृश्चि.			७	१९	१७	५३	९	१७	३१	०	भद्रा २०/२९ से ५३/२६ तक, फरवरी प्रारम्भ,
२६	३१	११	श.	५८	२५	ज्ये.	५०	३४	ध्रु.	७	१७	ब.	२५	५५	२०	२	१३	२३	धनु	५०	३४	७	१८	१७	५४	९	१८	३१	५५	षट्तिला एकादशी व्रत (सं.)
२६	३५	१२	र.	६०	०	मूल	५५	४२	व्या.	८	१०	कौ.	३०	१९	२१	३	१४	२४	धनु			७	१७	१७	५५	९	१९	३२	४९	
२६	३९	१२	चं.	२	१३	पू.षा.	५९	३१	ह.	८	५	तै.	२	१३	२२	४	१५	२५	धनु			७	१७	१७	५६	९	२०	३३	४२	गुरु पू. षा. २ में २१/५५, सोम प्रदोष व्रत,
२६	४३	१३	मं.	४	३३	उ.षा.	६०	०	व.	६	५६	व.	४	३३	२३	५	१६	२६	मकर	१५	१६	७	१६	१७	५७	९	२१	३४	३५	भद्रा ४/३३ से ३५/०० तक,
२६	४७	१४	बु.	५	२७	उ.षा.	१	५७	सि.	४	४१	श.	५	२७	२४	६	१७	२७	मकर			७	१५	१७	५८	९	२२	३५	२६	सूर्य धनि. में ३९/३३, वक्री बुध श्रवण में ४२/५७,
२६	५१	३०	गु.	४	५९	श्रव.	३	३	व्य. व.	१ ५६	२२ ०३	ना.	४	५९	२५	७	१८	२८	कुम्भ	३३	६	७	१५	१७	५९	९	२३	३६	१७	पंचक प्रारम्भ ३३/०६, माघी अमावस, मौनी अमा, (C)

(A) (चन्द्रोदय २५ घं. २० मि.), (B) बुध पश्चिम में अस्त ५४/३३, (C) महोदय योग (७ घं. ४८ मि. तक),

अष्टमी बुध, प्रातः ५ घं.३० मि.(I.S.T.)
३० जनवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९ १५ २९ ८	६ १३ ११ ५१	२ ० ६ ३७	९ २९ ४७ १	८ १५ ३० ५२	८ १२ ५९ १८	४ १३ ६ ४८	१० ४ ४९ ५४	४ ४ ४९ ५४
६० ५७	७१२ ४१	० २१	१८ ४२	१२ ५०	७३ ५१	४ ००	३ ११	३ ११
		व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
श्रव. २	स्वा. २	मृग. ३	धनि. २	पू.षा. १	मूल ४	मघा ४	धनि. ४	मघा २

कुण्डली सूर्योदय

१०	सू. बु.
११	रा.
१२	
१	
२	
३	मं.
४	
५	श. के.
६	
७	चं.
८	
९	गु. शु.

लोकभविष्य:- इस पक्ष में मंगल-बुध-शनि वक्री हैं। ३० जनवरी को मंगल मार्गी एवम् बुधास्त हो रहा है। अतः राजनैतिक गतिविधि कुछ प्रधान शासकों के लिए परेशानी वाली रहेगी। माघमास की चतुर्थी शनिवारी है, अतः कहीं दुर्भिक्ष, चौरादि घटनाएं, अग्निकाण्ड से हानि के योग हैं;-
"चतुर्थी-माघ-मासस्य शनिवारेण संयुता। दुर्भिक्षं मृत्युचौराग्निभयं धान्य-विनाशनम्।।"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख:- १० जनवरी के करीब तेल, तिलहन, सोना, चान्दी, गुड़, खाण्ड मन्दे; चावल, चना तेज रहें। १४ जनवरी को घी, तेल, अलसी, गुड़, शक्कर और रुई में तेजी बने। १९ जनवरी को अनाज, चान्दी, सोना, तांबा तेज रहें।

कुण्डली सूर्योदय

१०	सू. चं. बु.
११	रा.
१२	
१	
२	
३	मं.
४	
५	श. के.
६	
७	
८	
९	गु. शु.

अमा गुरु, प्रातः ५ घं.३० मि.(I.S.T.)
७ फरवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९ २३ ३६ १७	९ २१ ४२ ७	२ ० २४ ३८	९ २३ ४ ४०	८ १७ ११ ५७	८ २२ ५० ४०	४ १२ ३३ ४	१० ४ २४ २८	४ ४ २४ २८
६० ४९	८०० ०४	५ २८	७२ २७	१२ २३	७३ ५९	४ २७	३ ११	३ ११
		मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
धनि. १	श्रव. ४	मृग. ३	श्रव. ४	पू.षा. २	पू.षा. ३	मघा ४	धनि. ४	मघा २

आकाश लक्षण:- जनवरी २६, २७, २८, २९, ३० एवम् ३१ और फरवरी ६ को उत्तरी भारत में बादलचाल व कहीं बूंदाबांदी हो। ऋतुपरिवर्तन के योग बनते हैं। **शकुन विचार:-** माघ कृष्ण तृतीया को यदि मेघ गरजें, लेकिन वर्षा न हो तो गेहूं और जौ के स्टॉक से आगे लाभ मिलेगा।

श्री वि. सं. २०६४, शाक १९२९ माघ शुक्ल पक्ष २३

(८ से २१ फरवरी तक, सन् २००८ ई.)
उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिर–वसन्त ऋतु।

बु. १२ फर. से पूर्व में दृश्य हो जाएगा। सायं मं. पूर्व कपाल में होगा। प्रातः पूर्व में शु. और गु. तथा पश्चिम में श. होगा।

दिनमान घ. प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	प.	योग	समाप्ति-काल घ.	प.	करण	समाप्ति-काल घ.	प.	तारीखें प्र. माघ	अं. फरवरी	श. माघ	मु. मुहर्रम	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. भा. स्टैं. टा. रा.	अं.	क.	वि.	
२६ ५५	१	शु.	३	१७	धनि.	२	५६	प.	५१	५८	ब.	३	१७	२६	८	१९	२९	कुम्भ			७	१४	१८	००	९	२४	३७	५	चन्द्र दर्शन, मु. १५,
२६ ५९	२	श.	०	३०	शत.	१	४८	शि.	४६	९	कौ.	०	३०	२७	९	२०	स.१	मीन	४५	२१	७	१३	१८	१	९	२५	३७	५३	गौरी तृतीया (गोंतरी), सफर मु. प्रारम्भ,
अवम	३	श.	५६	५४	पू.भा.	५९	४७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	तृतीया तिथिक्षय,
२७ ३	४	र.	५२	३७	उ.भा.	५७	१०	सि.	३९	४७	व.	२४	४६	२८	१०	२१	२	मीन			७	१२	१८	१	९	२६	३८	३९	भद्रा २४/४६ से ५२/३७ तक, शुक्र उ. षा. में (A)
२७ ७	५	चं.	४७	५१	रेव.	५४	४	सा.	३३	०	ब.	२०	१४	२९	११	२२	३	मेष	५४	४	७	११	१८	२	९	२७	३९	२४	पंचक समाप्त ५४/०४, श्रीपंचमी, वसन्त पंचमी,
२७ ११	६	मं.	४२	४४	अश्वि.	५०	४०	शु.	२५	५५	कौ.	१५	१७	३०	१२	२३	४	मेष			७	११	१८	३	९	२८	४०	८	शुक्र मकर में ४३/४८, बुध पूर्व में उदित ५६/३३,
२७ १५	७	बु.	३७	२६	भर.	४७	५	शु.	१८	३८	ग.	१०	०५	फा.१	१३	२४	५	मेष			७	१०	१८	४	९	२९	४०	४९	भद्रा ३७/२६ बाद, सं. सूर्य कुम्भ में १४/४६, मु. (B)
२७ २०	८	गु.	३२	४	कृर्त्ति.	४३	२८	ब्र.	११	१७	वि.	४	४५	२	१४	२५	६	वृष	१	१३	७	९	१८	५	१०	०	४१	२९	भद्रा ४/४५ तक, भीष्माष्टमी,
२७ २४	९	शु.	२६	४६	रोहि.	३९	५७	ऐं. वै.	३ ५६	५६ ४१	कौ.	२६	४६	३	१५	२६	७	वृष			७	८	१८	६	१०	१	४२	७	चन्द्रग्रहण २१ फरवरी
२७ २८	१०	श.	२१	४०	मृग.	३६	४०	वि.	४९	४१	ग.	२१	४०	४	१६	२७	८	मिथुन	८	१७	७	७	१८	६	१०	२	४२	४४	भद्रा ४९/१८ बाद,
२७ ३३	११	र.	१६	५५	आर्द्रा.	३३	४६	प्री.	४३	२	वि.	१६	५५	५	१७	२८	९	मिथुन			७	६	१८	७	१०	३	४३	१८	भद्रा १६/५५ तक, जया एकादशी व्रत (स.), भीष्म द्वादशी,
२७ ३७	१२	चं.	१२	४१	पुन.	३१	२६	आ.	३६	५२	बा.	१२	४१	६	१८	२९	१०	कर्क	१६	५८	७	५	१८	८	१०	४	४३	५१	राहु धनि. ३, केतु मघा १ में ११/४३, (C)
२७ ४१	१३	मं.	९	९	पुष्य	२९	५१	सौ.	३१	२०	तै.	९	०९	७	१९	३०	११	कर्क			७	४	१८	९	१०	५	४४	२३	सूर्य शत. में ५१/१५, बुध मार्गी ३०/२७, सूर्य (D)
२७ ४६	१४	बु.	६	३०	आश्ले.	२९	१२	शो.	२६	३३	व.	६	३०	८	२०	फा.१	१२	सिंह	२९	१२	७	३	१८	१०	१०	६	४४	५२	भद्रा ६/३० से ३५/४३ तक, शुक्र श्रवण में ५०/०४, (E)
२७ ५०	१५	गु.	४	५५	मघा	२९	४१	अ.	२२	४०	ब.	४	५५	९	२१	२	१३	सिंह			७	२	१८	१०	१०	७	४५	२१	गुरु पू. षा. ३ में ३/०६, माघ स्नान समाप्त, माघी पूर्णिमा(F)

(A) १/४०, तिल, वरद, कुन्द चतुर्थी, (B) १५, पुण्यकाल सारा दिन, यूरेनस पू. भा. २ में ५९/०४, रथ सप्तमी (पूर्वारुणोदय वाली), आरोग्य सप्तमी, (C) सोम प्रदोष व्रत, प्लूटो मूल ३ में २६/१८, (D) सायन मीन में १३/०९, वसन्त ऋतु प्रारम्भ, (E) श्रीसत्यनारायण व्रत, शक फाल्गुन प्रारम्भ, (F) ज.दि. श्रीगुरु रविदास जी, चन्द्रग्रहण (उत्तर–पश्चिमी भारत में अत्यल्प समय के लिए दृश्य) (देखें पृ. ९).

अष्टमी गुरु, प्रातः ५ घं.३० मि.(I.S.T.) १४ फरवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	०	२	६	८	६	४	१०	४
०	२८	१	१५	१८	१	१२	४	४
४१	४४	१६	५६	३७	२८	१	२	२
२६	१४	४२	१२	८	५१	३	१२	१२
६०	८५१	६	३५	११	७४	४	३	३
३६	४४	५७	१४	५३	०४	४२	११	११
		मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
३ धनि.	१ कृत्ति.	३ मृग.	२ श्रव.	२ पू.षा.	२ उ.षा.	४ मघा.	४ धनि.	२ मघा

कुण्डली सूर्योदय

१२ | १० बु. शु. | १ चं. | सू. ११ रा. | ९ गु. | २ | ८ | मं. ३ | श. ५ के. | ७ | ४ | ६

लोकभविष्यः- इस पक्ष में शुक्र मकर में है। सूर्य कुम्भ में आकर राहु के साथ मेल करेगा। सूर्य-राहु के साथ शनि-केतु का समसप्तक योग बन रहा है। कहीं यानदुर्घटना, कहीं उग्रवादजन्य परेशानी से जनता परेशान रहेगी। इस चान्द्रमास में कहीं भयंकर भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोप से हानि के योग बनते हैं।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- पक्षारम्भ में दालवाना तेज़, सोने-चान्दी में घटाबढ़ी के बाद तेज़ी। १० फरवरी को गुड़, खाण्ड, अनाज तेज रहें। तेल, तिलहन, लालमिर्च में भी तेजी बने। २० फरवरी के लगभग बाज़ार का रुख बदल सकता है। अनाज तेज, तिलहन में मन्दा बने।

आकाश लक्षणः- फरवरी १२, १३, १८, १९, २० को लंका के पूर्वी छोर, शिलांग व अन्य कुछ प्रान्तों में बादलचाल व बूंदाबांदी के योग हैं। उत्तरी भारत में हवा का जोर रहेगा एवम् मौसम में परिवर्तन अनुभव होगा।

शकुन विचारः- माघी पूर्णिमा के दिन यदि बादल हों तो अन्नसंग्रह से सातवें मास अच्छा लाभ मिले। यदि इस दिन आकाश साफ रहे तो आगे आषाढ़ में प्रत्येक प्रकार का अनाज सस्ता रहेगा।

कुण्डली सूर्योदय

१२ | १० बु. शु. | १ | सू. ११ रा. | ९ गु. | २ | ८ | चं. | मं. ३ | श. ५ के. | ७ | ४ | ६

पूर्णिमा गुरु, प्रातः ५ घं.३० मि.(I.S.T.) २१ फरवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	४	२	९	८	९	४	१०	४
७	५	२	१४	१९	१०	११	३	३
४५	५८	३८	३२	५८	७	२७	३६	३६
२१	८	८	४४	४१	२८	४१	५७	५७
६०	७८७	१३	१५	११	७४	४	३	३
२६	१५	४६	२५	२०	०८	४६	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
१ शत.	२ मघा	३ मृग.	२ श्रव.	२ पू.षा.	१ श्रव.	४ मघा.	४ धनि.	२ मघा

श्री वि. सं. २०६४, शाक १९२९ फाल्गुन कृष्ण पक्ष २४

(२२ फरवरी से ७ मार्च तक, सन् २००८ ई.)
उत्तरायण, दक्षिणगोल, वसन्त ऋतु।

सायं म. पूर्वकपाल में याम्योत्तरवृत्त की ओर बढ़ता दिखाई देगा। प्रातः पूर्व में बु. और शु. परस्पर काफी नज़दीक होंगे। इस समय इनसे ऊपर गु. होगा। इसी समय श. पश्चिम क्षितिज में होगा।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. फाल्गुन	तारीखें अं. फरवरी	तारीखें श. फाल्गुन	तारीखें मु. सफ़र	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. भा. स्टैं. टा. रा.	अं.	क.	वि.	
२७	५५	१	शु.	४	३५	पू.फा.	३१	२५	सु.	१९	४७	कौ.	४	३५	१०	२२	३	१४	कन्या	४७	३	७	१	१८	११	१०	८	४५	४७	
२७	५९	२	श.	५	३८	उ.फा.	३४	३२	धृ.	१७	५९	ग.	५	३८	११	२३	४	१५	कन्या			७	०	१८	१२	१०	९	४६	११	भद्रा ३६/५२ बाद,
२८	४	३	र.	८	७	हस्त	३९	०	शू.	१७	१८	वि.	८	०७	१२	२४	५	१६	कन्या			६	५९	१८	१३	१०	१०	४६	३५	भद्रा ८/०७ तक, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत,**
२८	८	४	चं.	११	५८	चित्रा	४४	४४	गं.	१७	३८	बा.	११	५८	१३	२५	६	१७	तुला	११	४५	६	५८	१८	१३	१०	११	४६	५७	
२८	१३	५	मं.	१७	०	स्वा.	५१	२६	वृ.	१८	५१	तै.	१७	००	१४	२६	७	१८	तुला			६	५७	१८	१४	१०	१२	४७	१७	
२८	१७	६	बु.	२२	५३	विशा.	५८	४३	ध्रु.	२०	४१	व.	२२	५३	१५	२७	८	१९	वृश्चि.	४१	५४	६	५६	१८	१५	१०	१३	४७	३६	भद्रा २२/५३ से ५६/०१ तक,
२८	२२	७	गु.	२९	९	अनु.	६०	०	व्या.	२२	४९	ब.	२९	०९	१६	२८	९	२०	वृश्चि.			६	५५	१८	१६	१०	१४	४७	५३	
२८	२६	८	शु.	३५	१२	अनु.	६	८	ह.	२४	५२	बा.	२	१०	१७	२९	१०	२१	वृश्चि.			६	५४	१८	१६	१०	१५	४८	९	
२८	३१	९	श.	४०	३१	ज्ये.	१३	१	व.	२६	२४	तै.	७	५१	१८	मा.१	११	२२	धनु	१३	१	६	५३	१८	१७	१०	१६	४८	२३	मार्च प्रारम्भ,
२८	३६	१०	र.	४४	३६	मूल	१८	५४	सि.	२७	६	व.	१२	३४	१९	२	१२	२३	धनु			६	५२	१८	१८	१०	१७	४८	३६	भद्रा १२/३४ से ४४/३६ तक, शुक्र धनि. में ३७/४६,
२८	४०	११	चं.	४७	६	पू.षा.	२३	२३	व्य.	२६	४०	ब.	१५	५१	२०	३	१३	२४	मकर	३९	१६	६	५०	१८	१९	१०	१८	४८	४७	**विजया एकादशी व्रत (स.),**
२८	४५	१२	मं.	४७	५०	उ.षा.	२६	१४	व.	२४	५४	कौ.	१७	२७	२१	४	१४	२५	मकर			६	४९	१८	१९	१०	१९	४८	५७	सूर्य पू. भा. में ७/४२, बुध धनि. में ३४/२४,
२८	५०	१३	बु.	४६	४७	श्रव.	२७	२१	प.	२१	४६	ग.	१७	१८	२२	५	१५	२६	कुम्भ	५७	१५	६	४८	१८	२०	१०	२०	४९	५	भद्रा ४६/४७ बाद, पंचक प्रारम्भ ५७/१५, प्रदोष व्रत,
२८	५४	१४	गु.	४४	४	धनि.	२६	४८	शि.	१७	१७	वि.	१५	२५	२३	६	१६	२७	कुम्भ			६	४७	१८	२१	१०	२१	४९	१२	भद्रा १५/२५ तक, मंगल आर्द्रा में २०/४८, (A)
२८	५९	३०	शु.	३९	५६	शत.	२४	४६	सि.	११	३४	च.	१२	००	२४	७	१७	२८	कुम्भ			६	४६	१८	२१	१०	२२	४९	१७	

(A) श्री महाशिवरात्रि व्रत,

अष्टमी शुक्र, प्रातः ५ घं.३० मि.(I.S.T.)
२९ फरवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	७	२	९	८	९	४	१०	४
१५	१४	४	१८	२१	२०	१०	३	३
४८	४५	४१	५६	२६	०	४९	१४	१४
९	२६	३०	४०	५१	३९	२	३१	३१
६०	७१६	१७	५१	१०	७४	४	३	३
१५	४१	२५	३०	३७	११	४८	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
शत. ३	अनु. ४	मूल. ४	श्रव. ३	पू.षा. ३	श्रव. २	मघा ४	धनि. ३	मघा १

कुण्डली सूर्योदय

१२ | १० बु. शु. | १ | सू. ११ रा. | ९ गु. | २ | चं. ८ | मं. ३ | श. ५ के. | ७ | ४ | ६

लोकभविष्यः:- इस चान्द्रमास में पांच शुक्रवार हैं। प्रजा में अमन-चैन एवम् सुख समृद्धि का वातावरण रहे;-" **शुक्रस्य पञ्चवाराः स्युर्यत्रमासे निरन्तरम्। प्रजावृद्धिः सुभिक्षं च सुखं तत्र प्रवर्तति।** मुस्लिमराष्ट्रों में उग्रवादजन्य घटनाचक्र एवं काश्मीरक्षेत्र उपद्रवग्रस्त रहे। राजनैतिक हत्याकाण्ड भी हों।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः:- पक्षारम्भ में अनाज तेज, अलसी में जोरदार तेजी बने। ४ मार्च को सोना, चान्दी, घी, सरसों, तिल, तेल, गुड़, खाण्ड, रुई और अनाजों में तेजी बने। ५ मार्च को खल, अलसी, एरण्ड, रुई, सूत, कपास, गेहूं, चावल, चना, जौ और चान्दी तेज; सोने में घटाबढ़ी रहे।

आकाश लक्षणः:- मार्च २, ४, ६ को मध्यप्रदेश, बंगाल आदि में कहीं बूंदाबांदी व बादलचाल हो। उत्तरी भारत में हवा का जोर रहे और तापमान बढ़ने लगे। **शकुन विचारः**:-यदि फाल्गुन में बादल हों, परन्तु वर्षा न हो तो आगे वर्षा ऋतु में अच्छी वर्षा हो।

कुण्डली सूर्योदय

१२ | १० बु. शु. | १ | सू. ११ रा. चं. | ९ गु. | २ | ८ | मं. ३ | श. ५ के. | ७ | ४ | ६

अमा शुक्र, प्रातः ५ घं.३० मि.(I.S.T.)
७ मार्च

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	१०	२	९	८	९	४	१०	४
२२	१३	६	२५	२२	२८	१०	२	२
४९	३१	५१	५६	३८	३९	१५	५२	५२
१७	५१	५५	३६	५८	५९	४८	१५	१५
६०	८३८	२०	६९	९	७४	४	३	३
०३	४९	०९	४३	५३	१२	३९	१०	१०
		मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पू.भा. २	शत. ३	आर्द्रा १	धनि. १	पू.षा. ३	धनि. २	मघा ४	धनि. ३	मघा १

श्री वि. सं. २०६४, शाक १९२९, फाल्गुन शुक्ल पक्ष २५																	तारीखें				चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा.				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. भा. स्टैं. टा.				(८ से २१ मार्च तक, सन् २००८ ई.) उत्तरायण, दक्षिण–उत्तर गोल, वसन्त ऋतु।
दिनमान घ.	प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	प.	योग	समाप्ति-काल घ.	प.	करण	समाप्ति-काल घ.	प.			प्र. फाल्गुन	अं. मार्च	श. फाल्गुन	मु. सफर		घ.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	सायं श. पूर्व में और मं. याम्योत्तरवृत्तासन्न होगा। प्रातः बु. शु. पूर्व में परस्पर आसन्न होंगे तथा गु. पूर्व कपाल में दीखेगा।
२९	४	१	श.	३४	३८	पू.भा.	२१	३१	सा. शु.	४ ५७	४८ १२	किं.	७	१७			२५	८	१८	२९	मीन	७	२६	६	४५	१८	२२	१०	२३	४९	१९	शुक्र कुम्भ में १/३४,
२९	८	२	र.	२८	३१	उ.भा.	१७	२२	शु.	४९	५	बा.	१	३४			२६	९	१९	३०	मीन			६	४३	१८	२३	१०	२४	४९	२०	चन्द्र दर्शन, मु. ३०, अ. दि. श्रीरामकृष्ण परमहंस,
२९	१३	३	चं.	२१	५४	रेव.	१२	३९	ब्र.	४०	४०	ग.	२१	५४			२७	१०	२०	र.१	मेष	१२	३९	६	४२	१८	२३	१०	२५	४९	१९	भद्रा ४८/३० बाद, पंचक समाप्त १२/३९, (A)
२९	१८	४	मं.	१५	८	अश्वि.	७	४५	ऐं.	३२	१३	वि.	१५	०८			२८	११	२१	२	मेष			६	४१	१८	२४	१०	२६	४९	१६	भद्रा १५/०८ तक, गुरु पू. षा. ४ में १०/५१,
२९	२२	५	बु.	८	३०	भर कृत्ति.	२ ५८	५६ २६	वै.	२३	५८	बा.	८	३०			२९	१२	२२	३	वृष	१६	४५	६	४०	१८	२५	१०	२७	४९	११	
२९	२७	६	गु.	२	१६	रोहि.	५४	३५	वि.	१६	५	तै.	२	१६			३०	१३	२३	४	वृष			६	३९	१८	२५	१०	२८	४९	३	भद्रा ५६/३५ बाद, शुक्र शत. में २५/१९,
अवम		७	गु.	५६	३५	००	०	०	०	०	०	०	०	०			०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	सप्तमी तिथिक्षय,
२९	३२	८	शु.	५१	४४	मृग.	५१	३०	प्री.	८	४५	वि.	२४	०९			चै.१	१४	२४	५	मिथुन	२२	५८	६	३७	१८	२६	१०	२९	४८	५३	भद्रा २४/०९ तक, सं. सूर्य मीन में ८/१९, मु. ३०,(B)
२९	३६	९	श.	४७	४५	आर्द्रा	४९	१६	आ सौ.	२ ५६	० १	बा.	१९	४४			२	१५	२५	६	मिथुन			६	३६	१८	२७	११	०	४८	४१	बुध शत. में २१/५५, होलाष्टक १४ से २१ मार्च
२९	४१	१०	र.	४४	४२	पुन.	४७	५८	शो.	५०	४८	तै.	१६	१३			३	१६	२६	७	कर्क	३३	१४	६	३५	१८	२७	११	१	४८	२७	
२९	४६	११	चं.	४२	३७	पुष्य	४७	३८	अ.	४६	२१	व.	१३	३९			४	१७	२७	८	कर्क			६	३४	१८	२८	११	२	४८	१०	भद्रा १३/३९ से ४२/३७ तक, सूर्य उ. भा. में (C)
२९	५०	१२	मं.	४१	३१	आश्ले.	४८	१५	सु.	४२	४१	ब.	१२	०४			५	१८	२८	९	सिंह	४८	१५	६	३३	१८	२९	११	३	४७	५१	
२९	५५	१३	बु.	४१	२४	मघा	४९	४९	धृ.	३९	४७	कौ.	११	२७			६	१९	२९	१०	सिंह			६	३१	१८	२९	११	४	४७	३०	प्रदोष व्रत,
३०	००	१४	गु.	४२	१७	पू.फा.	५२	२३	शू.	३७	४१	ग.	११	५१			७	२०	३०	११	सिंह			६	३०	१८	३०	११	५	४७	७	भद्रा ४२/१७ बाद, सूर्य सायन मेष में १२/०३ (D)
३०	५	१५	शु.	४४	१२	उ.फा.	५५	५७	गं.	३६	२२	वि.	१३	१५			८	२१	चै.१	१२	कन्या	८	१३	६	२९	१८	३१	११	६	४६	४२	भद्रा १३/१५ तक, होलिका दहन, होलाष्टक समाप्त,(E)

(A) बुध कुम्भ में १९/४०, वक्री शनि मघा ३ में २३/००, रबि–उल–अव्वल मु. प्रारम्भ, होलाष्टक प्रारम्भ, (B) पुण्यकाल २४/२२ तक, (C) २९/१९, आमला एकादशी व्रत, (स.), गोविन्द द्वादशी, (D) महाविषुवदिन, उत्तरगोल प्रारम्भ, (E) श्रीसत्यनारायण व्रत, शक चैत्र प्रारम्भ,

अष्टमी शुक्र, प्रातः ५ घं.३० मि.(I.S.T.) १४ मार्च

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१० २९ ४८ ५३	१ २३ ५६ ४	२ ९ २० १२	१० ४ ४३ ४७	८ २३ ४५ ४५	१० ७ १९ १८	४ ९ ४४ ५	१० २ ३० ०	४ २ ३० ०
५९ ४८	८४३ १८	२२ २८	८२ ०२	९ ०४	७४ १०	४ २१	३ १०	३ १०
		मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पू.भा. ३	मृग. १	आर्द्रा १	धनि. ४	पू.षा. ४	शत. १	मघा ३	धनि. ३	मघा १

कुण्डली सूर्योदय

१२ | १० | सू. बु.११ शु. रा. | १ | ६ गु. | २ चं. | ८ | मं. ३ | श. ५ के. | ७ | ४ | ६

लोकभविष्यः- इस पक्ष के पूर्वार्ध में चतुर्ग्रहीयोग बन रहा है। जनता में रोग एवम् पशुधन की हानि से परेशानी बढ़े। कुम्भ-सिंह-मिथुन राशि के नेताओं को विशेष कष्ट की संभावना है। मुस्लिम-राष्ट्रविशेष के प्रधान नेता के लिए समय विशेष खराब है। इराक, ईरान, अफ़ग़ानिस्तान एवम् पाकिस्तान के लिए विशेष कष्टप्रद परिस्थितियां बन सकती हैं।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- पक्षारम्भ में रुई, चान्दी, चना, जौ, बाजरा, मूंग, मोट में मन्दा बने। १० मार्च के लगभग अलसी, रुई और चान्दी में मन्दा रहे। घी, तेल, गुड़, खाण्ड तेज रहें। १४ मार्च को तेल, कपास, घी, गुड़, खाण्ड, नमक, तेल, तिलहन में तेजी और अनाजों में मन्दे का रुख रहे।

आकाश लक्षणः- मार्च ८, १०, ११, १४, १७, २० को हवा का जोर रहे। मध्यप्रदेश, बंगाल, आसाम आदि में कहीं बादलचाल व बूंदाबांदी हो। उत्तरीभारत में आसमान साफ रहे और गर्मी अनुभव होने लगे।

शकुन विचारः- यदि फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा के दिन वर्षा हो तो फसल को रोली (काल अंगारी) नामक रोग से हानि पहुंचे। इस समय अन्न-संग्रह से सातवें मास लाभ मिलता है।

कुण्डली सूर्योदय

१ | बु. शु.११ रा. | २ | सू. १२ | १० | ३ मं. | गु. ६ | ४ | ६ | ८ | चं. श.५ के. | ७

पूर्णिमा शुक्र, प्रातः ५ घं.३० मि.(I.S.T.) २१ मार्च

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११ ६ ४६ ४२	४ २७ ४४ ४७	२ १२ ३ २९	१० १४ ४८ ३८	८ २४ ४६ ३८	१० १५ ५८ २४	४ ९ १४ ४५	१० २ ७ ४५	४ २ ७ ४५
५९ ३३	७५५ ०८	२४ २४	९२ ००	८ ११	७४ ०८	३ ५७	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
उ.भा. २	उ.फा. १	आर्द्रा २	शत. ३	पू.भा. ४	शत. ३	मघा. ३	धनि. ३	मघा १

श्री वि. सं. २०६४, शाक १९२९, चैत्र कृष्ण पक्ष २९

(२२ मार्च से ६ अप्रैल तक, सन् २००८ ई.)
उत्तरायण, उत्तर गोल, वसन्त ऋतु।

३ अप्रै. को बु. पूर्व में लुप्त हो जाएगा। सायं श. पूर्व कपाल में और मं. याम्योत्तरवृत्त से कुछ पश्चिम की ओर लुढ़का होगा। प्रातः शु. पूर्व क्षितिज में तथा गु. पूर्व कपाल में दीखेगा।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. चैत्र	तारीखें अं. मार्च	तारीखें श. चैत्र	तारीखें मु. रबि.उल.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. भा. स्टैं. टा. रा.	अं.	क.	वि.	
३०	९	१	श.	४७	१०	हस्त	६०	०	वृ.	३५	५२	बा.	१५	४१	९	२२	२	१३	कन्या			६	२८	१८	३१	११	७	४६	१५	वसन्तोत्सव, होला मेला श्री आनन्दपुर साहिब (पं.),
३०	१४	२	र.	५१	९	हस्त	०	३१	ध्रु.	३६	९	तै.	१९	१०	१०	२३	३	१४	तुला	३३	१३	६	२६	१८	३२	११	८	४५	४५	
३०	१९	३	चं.	५६	६	चित्रा	६	८	व्या.	३७	१२	व.	२३	३७	११	२४	४	१५	तुला			६	२५	१८	३३	११	९	४५	१४	भद्रा २३/३७ से ५६/०६ तक, बुध पू. भा. में (A)
३०	२३	४	मं.	६०	०	स्वा.	१२	३३	ह.	३८	५१	ब.	२८	५७	१२	२५	५	१६	तुला			६	२४	१८	३३	११	१०	४४	४१	श्रीगणेश चतुर्थी व्रत,
३०	२८	४	बु.	१	४८	विशा.	१९	३९	व.	४०	५८	बा.	१	४८	१३	२६	६	१७	वृश्चि.	२	५१	६	२३	१८	३४	११	११	४४	५	
३०	३३	५	गु.	८	०	अनु.	२७	६	सि.	४३	१४	तै.	८	००	१४	२७	७	१८	वृश्चि.			६	२१	१८	३४	११	१२	४३	२८	मेला श्री शीतला माता, कुराली (पं.),
३०	३७	६	शु.	१४	१२	ज्ये.	३४	२८	व्य.	४५	२१	व.	१४	१२	१५	२८	८	१९	धनु	३४	२८	६	२०	१८	३५	११	१३	४२	४९	भद्रा १४/१२ से ४७/०४ तक,
३०	४२	७	श.	१९	५६	मूल	४१	११	व.	४६	५५	ब.	१९	५६	१६	२९	९	२०	धनु			६	१९	१८	३६	११	१४	४२	९	
३०	४७	८	र.	२४	३९	पू.षा.	४६	४८	प.	४७	३५	कौ.	२४	३९	१७	३०	१०	२१	धनु			६	१८	१८	३६	११	१५	४१	२७	सूर्य रेवती में ५७/१८, बुध मीन में १८/१५,
३०	५१	९	चं.	२७	५२	उ.षा.	५०	५२	शि.	४७	०	ग.	२७	५२	१८	३१	११	२२	मकर	२	५८	६	१६	१८	३७	११	१६	४०	४२	भद्रा ५८/३४ बाद,
३०	५६	१०	मं.	२९	१७	श्रव.	५३	४	सि.	४४	५६	वि.	२९	१७	१९	अ.१	१२	२३	मकर			६	१५	१८	३८	११	१७	३९	५६	भद्रा २९/१७ तक, बुध उ. भा. में १२/२५, शुक्र (B)
३१	०	११	बु.	२८	४०	धनि.	५३	१८	सा.	४१	१८	बा.	२८	४०	२०	२	१३	२४	कुम्भ	२३	२८	६	१४	१८	३८	११	१८	३९	९	पंचक प्रारम्भ २३/२८, प्लूटो वक्री २१/३३, (C)
३१	५	१२	गु.	२६	२	शत.	५१	३६	शु.	३६	५	तै.	२६	०२	२१	३	१४	२५	कुम्भ			६	१३	१८	३९	११	१९	३८	१९	वारुणीपर्व, प्रदोष व्रत, बुध पूर्व में अस्त ८/१९,
३१	१०	१३	शु.	२१	३३	पू.भा.	४८	१०	शु.	२९	२४	व.	२१	३३	२२	४	१५	२६	मीन	३४	९	६	१२	१८	३९	११	२०	३७	२८	भद्रा २१/३३ से ४८/३० तक, शुक्र उ. भा. में (D)
३१	१४	१४	श.	१५	२८	उ.भा.	४३	१९	ब्र.	२१	२८	श.	१५	२८	२३	५	१६	२७	मीन			६	१०	१८	४०	११	२१	३६	३५	गुरु उ. षा. १ में ५०/०४, मेला पिहोवा तीर्थ (हरि.),
३१	१९	३०	र.	८	१०	रेव.	३७	२५	ऐं.	१२	३३	ना.	८	१०	२४	६	१७	२८	मेष	३७	२५	६	९	१८	४१	११	२२	३५	४०	पंचक समाप्त ३७/२५, चान्द्र संवत्सर २०६४ वि. (E)

(A) १७/२२, शुक्र पू. भा. में १३/१५ , (B) मीन में १९/१९, अप्रैल प्रारम्भ, (C) पापमोचिनी एकादशी व्रत, (स.), (D) १/२५, (E) पूर्ण, वासन्त नवरात्रारम्भ (सं. २०६५ वि.),

अष्टमी रवि, प्रातः ५ घं.३० मि.(I.S.T.)
३० मार्च

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	८	२	१०	८	१०	४	१०	४
१५	१६	१५	२६	२५	२७	८	१	१
४१	४३	५१	२५	५५	५	४१	३६	३६
२७	८	३१	०	२६	३४	४१	८	८
५६	७३५	२६	१०४	६	७४	३	३	३
१६	२३	२७	०८	५६	०७	१८	१०	१०
		मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
उ.भा. ४	पू.षा. २	आर्द्रा ३	पू.भा. ३	पू.षा. ४	पू.भा. ३	मघा ३	धनि. ३	मघा १

कुण्डली सूर्योदय

१		बु.११ शु. रा.
२	१२ सू.	१०
मं. ३		चं. ६ गु.
४	६	८
श.५ के.		७

लोकभविष्यः- इस चान्द्रमास में पांच शनिवार हैं। शनि का सूर्य-शुक्र और बुध के साथ षडष्टकयोग बन रहा है। जनता में रोगभय व्याप्त हो। रेल, वायुयान एवम् बस दुर्घटनाएं अधिक होंगी- **"शनेश्च पंचकं दृष्टवा पाताले कम्पते फणी। ईशानदेशभंगश्च वह्निदाहो महर्घता।।"** अमेरिका, चीन, जापान, पाक आदि में कहीं भूकम्प, कहीं ज्वालामुखी या बम विस्फोट, युद्धाग्नि से जनधनहानि के योग बनते हैं। कहीं सत्ता-हस्तान्तरण हो।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- पक्षारम्भ में बाज़ार मन्दे रहें। ३० मार्च के करीब तिलहन और अनाज तेज हों। रुई, गुड़, खाण्ड में मन्दा सोना, चान्दी में घटाबढ़ी हो। १ अप्रैल को चान्दी में अच्छी तेजी का झटका आए। तेल, तिलहन के बाज़ार ऊपर-नीचे चलें। ३ अप्रैल को बाज़ारों में घटाबढ़ी चले। **आकाश लक्षणः-** मार्च २४ एवम् ३०; अप्रैल १, २, ३, ५ को पूर्वी आसाम, पूर्वी बिहार, बंगाल और बर्मा के कुछ भागों में बादलचाल एवम् खण्डवृष्टि के योग हैं। उत्तरी भारत में मौसम साफ रहे और तापमान बढ़े।

शकुन विचारः- यदि चैत्र कृष्ण अष्टमी को आकाश बादलों से ढका रहे तो गुड़, खांड, गेहूं एवं सोना तेज रहेंगे।

कुण्डली सूर्योदय

१		रा. ११
२	बु. चं. १२ सू. शु.	१०
मं. ३		६ गु.
४	६	८
श.५ के.		७

अमा रवि, प्रातः ५ घं.३० मि.(I.S.T.)
६ अप्रैल

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	११	२	११	८	११	४	१०	४
२२	२०	१६	१२	२६	५	८	१	१
३५	२०	०	३	४०	४४	२०	१६	१६
४०	३६	५१	२२	४६	१७	२१	५३	५३
५६	८६१	२७	११४	५	७४	२	३	३
०२	२३	४६	००	५२	०४	४२	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
रेव. २	रेव. २	आर्द्रा ४	उ.भा. ३	उ.भा. १	उ.भा. १	मघा ३	धनि. ३	मघा १

श्री वि. सं. 2063 — **तिथ्यादि पञ्चांग (भा. स्टैं. टा.)** — जनवरी, सन् 2007 ई.

मास पक्ष	जन. 2007 ई.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घं. मि.	योग	समाप्ति-काल घं. मि.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल घं. मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मि.	दिल्ली सूर्योदय घं. मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मि.	जयपुर सूर्योदय घं. मि.	जयपुर सूर्यास्त घं. मि.	वाराणसी सूर्योदय घं. मि.	वाराणसी सूर्यास्त घं. मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशि–नक्षत्रप्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
पौष शु.	1	13	चं.	21 48	रोहि.	22 32	शु.	16 43	वृष	7 24	17 27	7 18	17 31	7 20	17 40	6 48	17 15	1	बुध पू.षा. में 17/16, जनवरी, सन् 2007 ई. प्रारम्भ, (A)
	2	14	मं.	20 25	मृग.	21 49	शु.	14 19	मिथुन 10 08	7 25	17 28	7 18	17 32	7 20	17 41	6 48	17 16	2	भ. 20/25 बाद,
	3	15	बु.	19 27	आर्द्रा	21 31	ब्र.	12 12	मिथुन	7 25	17 29	7 18	17 32	7 20	17 42	6 48	17 16	3	भ. 7/56 तक, माघस्नान प्रारम्भ, श्री सत्यनारायण व्रत,
माघ कृष्ण	4	1	गु.	19 01	पुन.	21 44	ऐं.	10 29	कर्क 15 38	7 25	17 30	7 19	17 33	7 21	17 42	6 48	17 17	4	माघ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,
	5	2	शु.	19 12	पुष्य	22 34	वै.	9 14	कर्क	7 25	17 30	7 19	17 34	7 21	17 43	6 49	17 18	5	
	6	3	श.	20 03	आश्ले.	24 03	वि.	8 29	सिंह 24 03	7 25	17 31	7 19	17 34	7 21	17 44	6 49	17 18	6	भ. 7/37 से 20/03 तक, श्रीगणेश (संकष्ट) चतुर्थी व्रत, (B)
	7	4	र.	21 34	मघा	26 09	प्री.	8 14	सिंह	7 25	17 32	7 19	17 35	7 21	17 45	6 49	17 19	7	शुक्र श्रव. में 12/50,
	8	5	चं.	23 40	पू.फा.	28 47	आ.	8 29	सिंह	7 25	17 33	7 19	17 36	7 21	17 45	6 49	17 20	8	मंगल मूल धनु में 20/10,
	9	6	मं.	26 12	उ.फा.	— —	सौ.	9 06	कन्या 11 31	7 25	17 34	7 19	17 37	7 21	17 46	6 49	17 21	9	भ. 26/12 बाद, बुध उ.षा. में 23/30,
	10	7	बु.	28 54	उ.फा.	7 47	शो.	10 00	कन्या	7 25	17 34	7 19	17 38	7 21	17 47	6 49	17 21	10	भ. 15/34 तक, वक्री शनि आश्ले. 4 कर्क में 18/10,
	11	8	गु.	— —	हस्त	10 54	अ.	10 57	तुला 24 25	7 25	17 35	7 19	17 38	7 21	17 48	6 49	17 22	11	सूर्य उ.षा. मे 11/36, बुध मकर में 24/02,
	12	8	शु.	7 32	चित्रा	13 53	सु.	11 49	तुला	7 25	17 36	7 19	17 39	7 21	17 48	6 49	17 23	12	
	13	9	श.	9 48	स्वा.	16 28	धृ.	12 22	तुला	7 25	17 37	7 19	17 40	7 21	17 49	6 49	17 24	13	भ. 22/39 बाद, लोहड़ी (पं.), गुरु ज्ये. 1 में 9/59,
	14	10	र.	11 30	विशा.	18 29	शू.	12 30	वृश्चि. 12 02	7 25	17 38	7 19	17 41	7 21	17 50	6 49	17 24	14	भ. 11/30 तक, सं. सूर्य मकर में 18/06, मु. 45, (C)
	15	11	चं.	12 30	अनु.	19 48	गं.	12 06	वृश्चिक	7 25	17 39	7 19	17 42	7 21	17 51	6 49	17 25	15	षट्तिला एकादशी व्रत (स.),
	16	12	मं.	12 45	ज्ये.	20 24	वृ.	11 07	धनु 20 24	7 25	17 40	7 19	17 42	7 21	17 52	6 49	17 26	16	भौम प्रदोष व्रत,
	17	13	बु.	12 16	मूल	20 19	ध्रु.	9 35	धनु	7 25	17 40	7 19	17 43	7 21	17 52	6 49	17 27	17	भ. 12/16 से 23/42 तक, बुध श्रव. में 23/08, (D)
	18	14	गु.	11 09	पू.षा.	19 39	व्या.	7 32	मकर 25 24	7 24	17 41	7 19	17 44	7 21	17 53	6 49	17 27	18	
							ह.	29 03											अर्धकुम्भयोग प्रयागराज -- 19 जन.
	19	30	शु.	9 31	उ.षा.	18 30	व.	26 14	मकर	7 24	17 42	7 19	17 44	7 21	17 54	6 49	17 28	19	मौनी अमावस, माघी अमावस, अर्धकुम्भयोग प्रयागराज,
माघ शुक्ल	20	1/	श.	7 28	श्रव.	17 01	सि.	23 11	कुम्भ 28 12	7 24	17 43	7 18	17 46	7 21	17 55	6 49	17 29	20	माघ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्र दर्शन, मु. 30, पचक प्रारम्भ (E)
		2		29 10															द्वितीया तिथिक्षय,
	21	3	र.	26 44	धनि.	15 21	व्य.	20 00	कुम्भ	7 24	17 44	7 18	17 47	7 20	17 55	6 49	17 30	21	गौरी तृतीया (गोंतरी),
	22	4	चं.	24 16	शत.	13 35	व.	16 46	मीन 30 16	7 23	17 45	7 18	17 47	7 20	17 56	6 49	17 30	22	भ.13/30 से 24/16 तक, तिल-वरद-कुन्द चतुर्थी,
	23	5	मं.	21 52	पू.भा.	11 50	प.	13 33	मीन	7 23	17 46	7 17	17 48	7 20	17 57	6 48	17 31	23	शुक्र कुम्भ में 12/44, श्रीपंचमी, वसन्त पंचमी,
	24	6	बु.	19 35	उ.भा.	10 11	शि.	10 26	मीन	7 23	17 47	7 17	17 49	7 20	17 58	6 48	17 32	24	सूर्य श्रव. में 13/49,
	25	7	गु.	17 30	रेव.	8 42	सि.	7 26	मेष 8 42	7 22	17 48	7 17	17 50	7 19	17 59	6 48	17 33	25	भ.17/30 से 28/34 तक, पचक समाप्त 8/42, बुध (F)
							सा.	28 36											
	26	8	शु.	15 37	अश्वि.	7 25	शु.	25 58	मेष	7 22	17 48	7 16	17 51	7 19	17 59	6 48	17 33	26	मंगल पू.षा. में 23/36, बुध पश्चिम में उदित 25/54, (G)
					भर.	30 22													
	27	9	श.	13 59	कृत्ति.	29 35	शु.	23 31	वृष 12 09	7 21	17 49	7 16	17 52	7 19	18 00	6 47	17 34	27	
	28	10	र.	12 37	रोहि.	29 04	ब्र.	21 19	वृष	7 21	17 50	7 16	17 52	7 18	18 01	6 47	17 35	28	भ. 24/05 बाद, शुक्र शत. मे 21/03,
	29	11	चं.	11 34	मृग.	28 54	ऐं.	19 21	मिथुन 16 56	7 20	17 51	7 15	17 53	7 18	18 02	6 46	17 36	29	भ. 11/34 तक, बुध कुम्भ में 18/13, भीष्म द्वादशी, (H)
	30	12	मं.	10 51	आर्द्रा	29 05	वै.	17 40	मिथुन	7 20	17 52	7 15	17 54	7 17	18 03	6 46	17 36	30	भौम प्रदोष व्रत,
	31	13	बु.	10 32	पुन.	29 41	वि.	16 19	कर्क 23 30	7 19	17 53	7 14	17 55	7 17	18 03	6 46	17 37	31	गुरु ज्ये. 2 में 23/39,

(A) सोम प्रदोष व्रत, (B) (चन्द्रोदय 20घं 20मि.), (C) पुण्यकाल मध्याह्न बाद, मकर संक्रान्ति, (D) शुक्र धनि. में 28/37, (E) 28/12, सूर्य सायन कुम्भ में 16/31, (F) धनि. में 18/35, रथसप्तमी (पूर्वारुणोदय वाली), आरोग्य सप्तमी (G) भीष्माष्टमी, गणतन्त्र दिवस (भारत), (H) जया एकादशी व्रत (स.).

तिथ्यादि पञ्चांग (भा. स्टैं. टा.)

फरवरी, सन् 2007 ई.

मास पक्ष	फर. 2007 ई.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घं.	मि.	योग	समाप्ति-काल घं.	मि.	चन्द्रराशि-	प्रवेशकाल घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशि–नक्षत्रप्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
मा.शु.	1	14	गु.	10	39	पुष्य	30	45	प्री.	15	18	कर्क			7	19	17	54	7	14	17	56	7	16	18	04	6	45	17	38	1	भ. 10/39 से 22/57 तक, श्री सत्यनारायण व्रत,
	2	15	शु.	11	15	आश्ले.	—	—	आ.	14	40	कर्क			7	18	17	55	7	13	17	57	7	16	18	05	6	45	17	39	2	बुध शत. में 25/08, माघ स्नान समाप्त, माघी पूर्णिमा, (A)
फाल्गुन कृष्ण	3	1	श.	12	23	आश्ले.	8	18	सौ.	14	26	सिंह	8	19	7	17	17	56	7	12	17	57	7	15	18	06	6	44	17	39	3	फाल्गुन कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,
	4	2	र.	14	01	मघा	10	22	शो.	14	35	सिंह			7	17	17	56	7	12	17	58	7	15	18	07	6	44	17	40	4	भ. 27/04 बाद,
	5	3	चं.	16	07	पू.फा.	12	53	अ.	15	05	कन्या	19	34	7	16	17	57	7	11	17	59	7	14	18	07	6	43	17	41	5	भ. 16/07 तक, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत,
	6	4	मं.	18	35	उ.फा.	15	45	सु.	15	51	कन्या			7	15	17	58	7	11	18	00	7	14	18	08	6	43	17	42	6	सूर्य धनि. में 17/02,
	7	5	बु.	21	15	हस्त	18	50	धृ.	16	48	कन्या			7	15	17	59	7	10	18	01	7	13	18	09	6	42	17	42	7	
	8	6	गु.	23	55	चित्रा	21	55	शू.	17	45	तुला	8	23	7	14	18	00	7	09	18	01	7	12	18	10	6	42	17	43	8	भ. 23/55 बाद, शुक्र पू.भा. में 14/29,
	9	7	शु.	26	19	स्वा.	24	47	गं.	18	34	तुला			7	13	18	01	7	09	18	02	7	12	18	10	6	41	17	44	9	भ. 13/07 तक,
	10	8	श.	28	15	विशा.	27	13	वृ.	19	05	वृश्चि.	20	40	7	12	18	02	7	08	18	03	7	11	18	11	6	40	17	44	10	
	11	9	र.	29	31	अनु.	29	02	ध्रु.	19	08	वृश्चिक			7	11	18	02	7	07	18	04	7	10	18	12	6	40	17	45	11	
	12	10	चं.	30	01	ज्ये.	30	06	व्या.	18	39	धनु	30	06	7	11	18	03	7	06	18	05	7	10	18	12	6	39	17	46	12	भ. 17/46 से 30/01 तक, सं. सूर्य कुम्भ में 31/05, (B)
	13	11	मं.	29	43	मूल	30	23	ह.	17	32	धनु			7	10	18	04	7	05	18	05	7	09	18	13	6	38	17	46	13	मंगल उ.षा. में 20/39, विजया एकादशी व्रत (स.),
	14	12	बु.	28	38	पू.षा.	29	56	व.	15	49	धनु			7	09	18	05	7	05	18	06	7	08	18	14	6	38	17	47	14	बुध वक्री 10/05, राहु पू.भा. 1, केतु पू.फा. 3 में 25/36,
	15	13	गु.	26	51	उ.षा.	28	48	सि.	13	30	मकर	11	42	7	08	18	06	7	04	18	07	7	08	18	15	6	37	17	48	15	भ. 26/51 बाद, बुध पश्चिम में अस्त 30/04, प्रदोष व्रत,
	16	14	शु.	24	31	श्रव.	27	07	व्य.	10	40	मकर			7	07	18	07	7	03	18	08	7	07	18	15	6	36	17	48	16	भ. 13/42 तक, शुक्र मीन में 16/20, श्रीमहाशिवरात्रि व्रत,
	17	30	श.	21	44	धनि.	25	01	व.	7	26	कुम्भ	14	06	7	06	18	07	7	02	18	08	7	06	18	16	6	35	17	49	17	पंचक प्रारम्भ 14/06, मंगल मकर में 31/00, शनैश्चरी अमा,
									प.	27	52																					
फाल्गुन शुक्ल	18	1	र.	18	41	शत.	22	40	शि.	24	07	कुम्भ			7	05	18	08	7	01	18	09	7	05	18	17	6	35	17	49	18	फाल्गुन शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, सूर्य सायन मीन में 30/39, (C)
	19	2	चं.	15	30	पू.भा.	20	13	सि.	20	18	मीन	14	50	7	04	18	09	7	00	18	10	7	04	18	17	6	34	17	50	19	चन्द्र दर्शन, मु. 30, सूर्य शत. में 21/30, शुक्र उ.भा. में 9/08,
	20	3	मं.	12	20	उ.भा.	17	49	सा.	16	31	मीन			7	03	18	10	6	59	18	11	7	03	18	18	6	33	17	51	20	भ. 22/50 बाद, यूरेनस पू.भा. 1 में 28/41,
	21	4/	बु.	9	19	रेव.	15	36	शु.	12	53	मेष	15	36	7	02	18	11	6	59	18	11	7	03	18	19	6	32	17	51	21	भ. 9/19 तक, पंचक समाप्त 15/36,
		5		30	34																											पंचमी तिथिक्षय,
	22	6	गु.	28	10	अश्वि.	13	40	शु.	9	28	मेष			7	01	18	11	6	58	18	12	7	02	18	19	6	32	17	52	22	
									ब्र.	30	22																					
	23	7	शु.	26	13	भर.	12	08	ऐं.	27	38	वृ॰	17	49	7	00	18	12	6	57	18	13	7	0[illegible]	18	20	6	31	17	52	23	भ. 26/13 बाद, वक्री शनि आश्ले. 3 में 16/52,
	24	8	श.	24	46	कृत्ति.	11	03	वै.	25	17	वृष			6	59	18	13	6	56	18	13	7	[illegible]	18	20	6	30	17	53	24	भ. 13/30 तक, गुरु ज्ये. 3 में 10/31, होलाष्टक प्रारम्भ,
	25	9	र.	23	50	रोहि.	10	29	वि.	23	22	मिथुन	22	23	6	58	18	14	6	55	18	14	6	59	18	21	6	29	17	54	25	
	26	10	चं.	23	27	मृग.	10	26	प्री.	21	52	मिथुन			6	57	18	14	6	54	18	15	6	58	18	22	6	28	17	54	26	वक्री बुध धनि. में 17/37,
	27	11	मं.	23	35	आर्द्रा	10	54	आ.	20	47	कर्क	29	34	6	56	18	15	6	53	18	15	6	57	18	22	6	27	17	55	27	भ. 11/31 से 23/35 तक, आमला एकादशी व्रत (स.),
	28	12	बु.	24	13	पुन.	11	52	सौ.	20	05	कर्क			6	55	18	16	6	52	18	16	6	56	18	23	6	26	17	55	28	गोविन्द द्वादशी,

(A) जन्मदिन गुरु श्री रविदास जी, (B) मु. 30, पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न तक, (C) वसन्त ऋतु प्रारम्भ,

श्री वि. सं. 2063–64

तिथ्यादि पञ्चांग (भा. स्टैं. टा.)

मार्च, सन् 2007 ई.

मास पक्ष	मार्च 2007 ई.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घं. मि.	योग	समाप्ति-काल घं. मि.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल घं. मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मि.	दिल्ली सूर्योदय घं. मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मि.	जयपुर सूर्योदय घं. मि.	जयपुर सूर्यास्त घं. मि.	वाराणसी सूर्योदय घं. मि.	वाराणसी सूर्यास्त घं. मि.	तारीख	भद्रा–ग्रहराशि–नक्षत्रप्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
फा.शु.	1	13	गु.	25 19	पुष्य	13 18	शो.	19 45	कर्क	6 54	18 17	6 51	18 17	6 55	18 24	6 25	17 56	1	बुध पूर्व में उदित 23/19, शुक्र रेवती में 29/25, प्रदोष व्रत,
	2	14	शु.	26 52	आश्ले.	15 10	अ.	19 46	सिंह 15 10	6 53	18 17	6 50	18 17	6 54	18 24	6 24	17 56	2	भ. 26/52 बाद, ग्रहणशूल,
	3	15	श.	28 47	मघा	17 26	सु.	20 04	सिंह	6 51	18 18	6 49	18 18	6 53	18 25	6 23	17 57	3	भ. 15/49 तक, मंगल श्रव. में 12/24, होलिका दहन, (A)
चैत्र कृष्ण	4	1	र.	— —	पू.फा.	20 03	धृ.	20 39	कन्या 26 44	6 50	18 19	6 48	18 19	6 52	18 25	6 23	17 57	4	चैत्र कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, सूर्य पू.भा. मे 27/50, वसन्तोत्सव, (B)
	5	1	चं.	7 02	उ.फा.	22 55	शू.	21 26	कन्या	6 49	18 20	6 46	18 19	6 51	18 26	6 22	17 58	5	ग्रहणशूल,
	6	2	मं.	9 32	हस्त	25 57	गं.	22 21	कन्या	6 48	18 20	6 45	18 20	6 50	18 26	6 21	17 58	6	भ. 22/50 बाद, ग्रहणशूल,
	7	3	बु.	12 09	चित्रा	29 03	वृ.	23 20	तुला 15 30	6 47	18 21	6 44	18 21	6 49	18 27	6 20	17 59	7	भ. 12/09 तक, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत,
	8	4	गु.	14 46	स्वा.	— —	ध्रु.	24 15	तुला	6 46	18 22	6 43	18 21	6 48	18 28	6 19	17 59	8	बुध मार्गी 10/12,
	9	5	शु.	17 12	स्वा.	8 02	व्या.	25 00	वृश्चि. 28 06.	6 45	18 22	6 42	18 22	6 47	18 28	6 18	18 00	9	
	10	6	श.	19 18	विशा.	10 44	ह.	25 27	वृश्चिक	6 43	18 23	6 41	18 22	6 46	18 29	6 17	18 00	10	भ. 19/18 बाद,
	11	7	र.	20 52	अनु.	13 00	व.	25 28	वृश्चिक	6 42	18 24	6 40	18 23	6 45	18 29	6 16	18 01	11	भ. 8/05 तक,
	12	8	चं.	21 46	ज्ये.	14 40	सि.	24 58	धनु 14 40	6 41	18 24	6 39	18 24	6 44	18 30	6 15	18 01	12	शुक्र अश्वि. मेष में 27/50,
	13	9	मं.	21 54	मूल	15 38	व्य.	23 53	धनु	6 40	18 25	6 38	18 24	6 43	18 30	6 14	18 02	13	
	14	10	बु.	21 15	पू.षा.	15 49	व.	22 10	मकर 21 45	6 39	18 26	6 37	18 25	6 42	18 31	6 13	18 02	14	भ. 9/34 से 21/15 तक, सं. सूर्य मीन में 27/58, (C)
	15	11	गु.	19 49	उ.षा.	15 14	प.	19 51	मकर	6 37	18 26	6 35	18 25	6 41	18 31	6 12	18 03	15	पापमोचिनी एकादशी व्रत (स),
	16	12	शु.	17 41	श्रव.	13 56	शि.	16 57	कुम्भ 25 03	6 36	18 27	6 34	18 26	6 40	18 32	6 11	18 03	16	पंचक प्रारम्भ 25/03, प्रदोष व्रत,
	17	13	श.	14 56	धनि.	12 02	सि.	13 34	कुम्भ	6 35	18 28	6 33	18 26	6 39	18 32	6 10	18 04	17	भ. 14/56 से 25/20 तक, महावारुणी पर्व (D)
	18	14	र.	11 44	शत.	9 38	सा.	9 47	मीन 25 36	6 34	18 28	6 32	18 27	6 37	18 33	6 09	18 04	18	सूर्य उ.भा. में 12/17, मेला पिहोवा (हरियाणा), ग्रहणशूल,
							शु.	29 45											
	19	30/	चं.	8 13	पू.भा.	6 54	शु.	25 34	मीन	6 32	18 29	6 31	18 28	6 37	18 33	6 08	18 05	19	बुध शत. मे 8/59, सोमवती अमावस, खण्डग्रास सूर्य ग्रहण (E)
चैत्र शुक्ल		/1		28 32	उ.भा.	28 01													चैत्र शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, प्रतिपदा तिथिक्षय,
	20	2	मं.	24 54	रेव.	25 09	ब्र.	21 23	मेष 25 09	6 31	18 29	6 29	18 28	6 35	18 34	6 06	18 05	20	चन्द्र दर्शन, मु. 30, पंचक समाप्त 25/09, सूर्य सायन मेष (F)
	21	3	बु.	21 25	अश्वि.	22 27	ऐं.	17 20	मेष	6 30	18 30	6 28	18 29	6 34	18 34	6 05	18 06	21	गौरी तृतीया(गणगौर), आन्दोलन तृतीया, श्रीमत्स्यजयन्ती,
	22	4	गु.	18 17	भर.	20 06	वै.	13 31	वृष 25 35	6 29	18 31	6 27	18 29	6 33	18 35	6 04	18 06	22	भ. 7/50 से 18/17 तक,
	23	5	शु.	15 38	कृत्ति.	18 15	वि.	10 05	वृष	6 27	18 31	6 26	18 30	6 32	18 35	6 03	18 06	23	शुक्र भरणी में 28/44, श्री (लक्ष्मी) पंचमी, नाग पंचमी, (G)
	24	6	श.	13 34	रोहि.	17 00	प्री.	7 07	मिथुन 28 38	6 26	18 32	6 25	18 30	6 30	18 36	6 02	18 07	24	
							आ.	28 41											
	25	7	र	12 12	मृग.	16 26	सौ.	26 49	मिथुन	6 25	18 33	6 24	18 31	6 29	18 36	6 01	18 07	25	भ. 12/12 से 23/52 तक, ओली प्रारम्भ,
	26	8	चं.	11 33	आर्द्रा	16 36	शो.	25 33	मिथुन	6 24	18 33	6 22	18 31	6 28	18 37	6 00	18 08	26	श्रीदुर्गाष्टमी, अशोकाष्टमी,
	27	9	मं.	11 38	पुन.	17 27	अ.	24 49	कर्क 11 11	6 22	18 34	6 21	18 32	6 27	18 37	5 59	18 08	27	श्रीरामनवमी (पुनर्वसुयुता), वासन्त नवरात्र समाप्त,
	28	10	बु.	12 23	पुष्य	18 57	सु.	24 35	कर्क	6 21	18 35	6 20	18 33	6 26	18 38	5 58	18 09	28	भ. 25/03 बाद,
	29	11	गु.	13 44	आश्ले.	21 00	धृ.	24 46	सिंह 21 00	6 20	18 35	6 19	18 33	6 25	18 38	5 57	18 09	29	भ. 13/44 तक, मंगल कुम्भ में 17/15, कामदा एकादशी (H)
	30	12	शु.	15 35	मघा	23 29	शू.	25 17	सिंह	6 19	18 36	6 18	18 34	6 24	18 39	5 56	18 10	30	अनंग त्रयोदशी, प्रदोष व्रत (देखें पृष्ठ 89),
	31	13	श.	17 46	पू.फा.	26 17	गं.	26 02	सिंह	6 17	18 36	6 17	18 34	6 23	18 39	5 55	18 10	31	सूर्य रेव. मे 23/06, बुध पू. भा. मे 8/16, पलूटो वक्री (I)

चन्द्र ग्रहण– 4 मार्च

सूर्य ग्रहण–19 मार्च

(A) होलाष्टक समाप्त, खग्रास चन्द्रग्रहण (भारत में दृश्य), श्री सत्यनारायण व्रत, (B) ग्रहणशूल, (C) मु. 45, पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न तक, (D) (12घं. 02 मि से 14घं 56मि. तक), (E) (भारत में दृश्य), चान्द्र सवत् 2063 वि. पूर्ण, चान्द्र संवत् 2064 वि. प्रारम्भ, वासन्त नवरात्र प्रारम्भ, (F) में 29/39, उत्तरगोल प्रारम्भ, महाविषुव दिन, मंगल धनि. में 24/15, (G) स्कन्द षष्ठी, (देखे पृ. 89), (H) व्रत (स), (I) 28/13, श्रीमहावीर जयन्ती (जैन),

मास पक्ष	अंग्रे.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घं. मि.	योग	समाप्ति-काल घं. मि.	चन्द्रराशि	प्रवेशकाल घं. मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मि.	दिल्ली सूर्योदय घं. मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मि.	जयपुर सूर्योदय घं. मि.	जयपुर सूर्यास्त घं. मि.	वाराणसी सूर्योदय घं. मि.	वाराणसी सूर्यास्त घं. मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
चै.शु.	1	14	र.	20 12	उ.फा.	29 15	वृ.	26 55	कन्या	9 0	6 16	18 37	6 16	18 35	6 22	18 40	5 54	18 10	1	भ. 20/12 बाद, अप्रैल प्रारम्भ, दमनक चतुर्दशी,
	2	15	चं.	22 45	हस्त	.. ..	ध्रु.	27 54	कन्या		6 15	18 38	6 15	18 35	6 21	18 40	5 53	18 11	2	भ. 9/27 तक, श्रीसत्यनारायण व्रत, चैत्री पूर्णिमा. (A)
वैशाख कृष्ण	3	1	मं.	25 19	हस्त	8 18	व्या.	28 53	तुला	21 50	6 14	18 38	6 13	18 36	6 20	18 41	5 52	18 11	3	वैशाख कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,
	4	2	बु.	27 49	चित्रा	11 22	ह.	29 48	तुला		6 13	18 39	6 12	18 37	6 19	18 41	5 51	18 12	4	शुक्र कृत्ति. में 8/52, अगस्त्य अस्त,
	5	3	गु.	30 9	स्वा.	14 18	व.	— —	तुला		6 11	18 40	6 11	18 37	6 18	18 42	5 50	18 12	5	भ. 16/58 से 30/09 तक,
	6	4	शु.	— —	विशा.	17 3	व.	6 35	वृश्चि.	10 23	6 10	18 40	6 10	18 38	6 17	18 42	5 49	18 13	6	गुरु वक्री 6/53, शुक्र वृष में 28/30, श्रीगणेश (B)
	7	4	श.	8 12	अनु.	19 29	सि.	7 9	वृश्चि.		6 9	18 41	6 9	18 38	6 15	18 43	5 48	18 13	7	मगल शत. में 9/56, बुध मीन में 8/26,
	8	5	र.	9 51	ज्ये.	21 29	व्य.	7 26	धनु	21 29	6 8	18 41	6 8	18 39	6 14	18 43	5 47	18 13	8	
	9	6	चं.	11 0	मूल	22 58	व.	7 20	धनु		6 7	18 42	6 7	18 39	6 13	18 44	5 46	18 14	9	भ. 11/0 से 23/17 तक, बुध उ.भा. में 12/01,
	10	7	मं.	11 33	पू.षा.	23 49	प.	6 47	मकर	29 55	6 5	18 43	6 6	18 40	6 12	18 44	5 45	18 14	10	
							शि.	29 43												
	11	8	बु.	11 25	उ.षा.	23 59	सि.	28 5	मकर		6 4	18 43	6 4	18 40	6 11	18 45	5 44	18 15	11	
	12	9	गु.	10 33	श्रव.	23 26	सा.	25 53	मकर		6 3	18 44	6 3	18 41	6 10	18 45	5 43	18 15	12	भ. 21/47 बाद,
	13	10	शु.	8 59	धनि.	22 12	शु.	23 7	कुम्भ	10 54	6 2	18 45	6 2	18 42	6 9	18 46	5 42	18 16	13	भ. 8/59 तक, पंचक प्रारम्भ 10/54, वरूथिनी (C)
	14	11/	श.	6 44	शत.	20 20	शु.	19 50	कुम्भ		6 1	18 45	6 1	18 42	6 8	18 46	5 41	18 16	14	सं. सूर्य अश्वि. मेष में 12/28, मु. 15, पुण्यकाल (D)
		12		27 53																द्वादशी तिथिक्षय,
	15	13	र.	24 34	पू.भा.	17 56	ब्र.	16 8	मीन	12 34	6 0	18 46	6 0	18 43	6 7	18 47	5 40	18 17	15	भ. 24/34 बाद, शुक्र रोहिणी में 17/03, प्रदोष व्रत,
	16	14	चं.	20 55	उ.भा.	15 10	ऐं.	12 6	मीन		5 58	18 47	5 59	18 43	6 6	18 47	5 39	18 17	16	भ. 10/43 तक,
	17	30	मं.	17 6	रेव.	12 11	वै.	7 51	मेष	12 11	5 57	18 47	5 58	18 44	6 5	18 48	5 38	18 18	17	पंचक समाप्त 12/11, बुध रेव. में 10/22, भौमवती (E)
							वि.	27 34												
वैशाख शुक्ल	18	1	बु.	13 18	अश्वि.	9 10	प्री.	23 21	मेष		5 56	18 48	5 57	18 44	6 4	18 48	5 37	18 18	18	वैशाख शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. 15, राहु (F)
	19	2	गु.	9 40	भर.	6 18	आ.	19 23	वृष	11 37	5 55	18 48	5 56	18 45	6 3	18 49	5 36	18 18	19	शनि मार्गी 26/54, श्रीपरशुराम जयन्ती, अक्षय (G)
					कृत्ति.	27 46														
	20	3/	शु.	6 25	रोहि.	25 45	सौ.	15 47	वृष		5 54	18 49	5 55	18 46	6 2	18 49	5 35	18 19	20	भ. 17/03 से 27/42 तक, सूर्य सायन वृष में (H)
		4		27 42																चतुर्थी तिथिक्षय,
	21	5	श.	25 39	मृग.	24 25	शो.	12 40	मिथुन	13 0	5 53	18 50	5 54	18 46	6 1	18 50	5 34	18 19	21	आद्य जगद्गुरु श्रीशंकराचार्य जयन्ती, श्रीरामानुजाचार्य (I)
	22	6	र.	24 24	आर्द्रा	23 50	अ.	10 10	मिथुन		5 52	18 50	5 53	18 47	6 1	18 50	5 33	18 20	22	श्री रामानुजाचार्य जयन्ती (उ.भा.),
	23	7	चं.	23 59	पुन.	24 6	सु.	8 18	कर्क	17 58	5 51	18 51	5 52	18 47	6 0	18 51	5 33	18 20	23	भ. 23/58 बाद, श्रीगंगा जन्म,
	24	8	मं.	24 24	पुष्य	25 11	धृ.	7 8	कर्क		5 50	18 52	5 51	18 48	5 59	18 51	5 32	18 21	24	भ. 12/11 तक, मंगल पू. भा. में 19/07, बुध (J)
	25	9	बु.	25 35	आश्ले.	27 0	शू.	6 35	सिंह	27 0	5 49	18 52	5 50	18 48	5 58	18 52	5 31	18 21	25	श्रीजानकी जयन्ती,
	26	10	गु.	27 24	मघा	29 24	गं.	6 38	सिंह		5 48	18 53	5 49	18 49	5 5	18 52	5 30	18 22	26	
	27	11	शु.	29 39	पू.फा.	— —	वृ.	7 7	सिंह		5 47	18 54	5 48	18 50	5 5	18 53	5 29	18 22	27	भ. 16/31 से 29/39 तक, सूर्य भर. में 28/14 (K)
	28	12	श.	— —	पू.फा.	8 14	ध्रु.	7 56	कन्या	14 59	5 46	18 54	5 47	18 50	5 55	18 54	5 28	18 23	28	मोहिनी एकादशी व्रत (वै.),
	29	12	र.	8 10	उ.फा.	11 18	व्या.	8 56	कन्या		5 45	18 55	5 47	18 51	5 54	18 54	5 28	18 23	29	प्रदोष व्रत,
	30	13	चं.	10 46	हस्त	14 25	ह.	9 59	तुला	27 57	5 44	18 56	5 46	18 51	5 54	18 55	5 27	18 24	30	बुध भर. में 24/40, श्री नृसिंह जयन्ती,

(A) वैशाख स्नान प्रारम्भ, श्रीहनुमान् जयन्ती, (द. भा.), (B) चतुर्थी व्रत, (C) एकादशी व्रत (स्मा), (D) 6/05 के बाद, वरूथिनी एकादशी व्रत (वै.), त्रिस्पृशा महाद्वादशी, श्री वल्लभाचार्य जयन्ती, वैशाखी (पं.), (E) अमावस, (F) शत. 4, केतु पू. फा. 2 में 24/17, (G) तृतीया (देखें पृ. 89) श्री शिवाजी जयन्ती, (H) 16/37, ग्रीष्म ऋतु प्रारम्भ, बुध पूर्व में अस्त, 27/39, (I) जयन्ती (द. भा.) (J) अश्वि. मेष में 12/41, यूरेनस पू. भा. 2 में 12/17, (K) शुक्र मृग में 6/16, मोहिनी एकादशी व्रत (स्मा).

श्री वि. सं 2064 — तिथ्यादि पंचाग (भा. स्टैं. टा.) — मई, सन् 2007 ई.

मास पक्ष	मि.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घं.	मि.	योग	समाप्ति-काल घं.	मि.	चन्द्रराशि - प्रवेशकाल	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
वै.शु.	1	14	मं.	13	18	चित्रा	17	27	व.	11	0	तुला			5	43	18	56	5	45	18	52	5	53	18	55	5	26	18	24	1	भ. 13/18 से 26/29 तक, मई प्रारम्भ, श्रीकूर्म (A)
	2	15	बु.	15	39	स्वा.	20	19	सि.	11	53	तुला			5	42	18	57	5	44	18	53	5	52	18	56	5	25	18	25	2	शुक्र मिथुन में 27/23, श्रीबुद्ध जयन्ती,बुद्ध पूर्णिमा, (B)
प्रथम ज्येष्ठ कृष्ण	3	1	गु.	17	46	विशा.	22	55	व्य.	12	36	वृश्चि.	16	18	5	41	18	58	5	43	18	53	5	51	18	56	5	25	18	25	3	प्रथम ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,
	4	2	शु.	19	34	अनु.	25	14	व.	13	5	वृश्चि.			5	40	18	58	5	42	18	54	5	50	18	57	5	24	18	26	4	
	5	3	श.	21	1	ज्ये.	27	12	प.	13	19	धनु	27	12	5	40	18	59	5	42	18	54	5	50	18	57	5	23	18	26	5	भ. 8/17 से 21/01 तक.
	6	4	र.	22	5	मूल	28	47	शि.	13	15	धनु			5	39	19	0	5	41	18	55	5	49	18	58	5	23	18	27	6	बुध कृत्ति. में 29/16, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत.
	7	5	चं.	22	42	पू.षा.	—	—	सि.	12	52	धनु			5	38	19	0	5	40	18	56	5	48	18	58	5	22	18	27	7	मंगल मीन में 21/08,
	8	6	मं.	22	49	पू.षा.	5	55	सा.	12	6	मकर	12	8	5	37	19	1	5	39	18	56	5	48	18	59	5	21	18	28	8	भ. 22/49 बाद, बुध वृष में 18/23, शुक्र आर्द्रा (C)
	9	7	बु.	22	23	उ.षा.	6	33	शु.	10	56	मकर			5	36	19	2	5	39	18	57	5	47	19	0	5	21	18	28	9	भ. 10/35 तक,
	10	8	गु.	21	21	श्रव.	6	38	शु.	9	18	कुम्भ	18	27	5	36	19	2	5	38	18	57	5	46	19	0	5	20	18	29	10	पंचक प्रारम्भ 18/27,
	11	9	शु.	19	44	धनि.	6	7	ब्र.	7	11	कुम्भ			5	35	19	3	5	37	18	58	5	46	19	1	5	19	18	29	11	सूर्य कृत्ति. में 22/27,
						शत.	29	0	ऐं.	28	35																					
	12	10	श.	17	32	पू.भा.	27	20	वै.	25	32	मीन	21	48	5	34	19	4	5	37	18	59	5	45	19	1	5	19	18	30	12	भ. 6/37 से 17/32 तक, मंगल उ.भा. में 6/10,
	13	11	र.	14	48	उ.भा.	25	11	वि.	22	4	मीन			5	34	19	4	5	36	18	59	5	44	19	2	5	18	18	30	13	बुध रोहि. में 12/58, अपरा एकादशी व्रत (स.), (D)
	14	12	चं.	11	38	रेव.	22	40	प्री.	18	17	मेष	22	40	5	33	19	5	5	35	19	0	5	44	19	2	5	18	18	31	14	पंचक समाप्त 22/40, बुध पश्चिम में उदित 17/05, (E)
	15	13/	मं.	8	10	अश्वि.	19	55	आ.	14	18	मेष			5	32	19	6	5	35	19	0	5	43	19	3	5	17	18	31	15	भ. 8/10 से 18/21 तक, सं. सूर्य वृष में 9/18, (F)
		14		28	33																											चतुर्दशी तिथिक्षय,
	16	30	बु.	24	57	भर.	17	6	सौ.	10	12	वृष	22	25	5	32	19	6	5	34	19	1	5	43	19	3	5	17	18	32	16	वटसावित्री व्रत (अमा पक्ष), भावुका अमावस,
प्रथम(अधिक) ज्येष्ठ शुक्ल	17	1	गु.	21	33	कृत्ति.	14	25	शो.	6	11	वृष			5	31	19	7	5	34	19	2	5	42	19	4	5	16	18	32	17	प्र. (अधिक) ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, पुरुषोत्तम (मल)(G)
									अ.	26	21																					
	18	2	शु.	18	31	रोहि.	12	3	सु.	22	52	मिथुन	23	3	5	30	19	8	5	33	19	2	5	42	19	5	5	16	18	33	18	चन्द्र दर्शन, मु. 30.
	19	3	श.	16	2	मृग.	10	11	धृ.	19	52	मिथुन			5	30	19	8	5	32	19	3	5	41	19	5	5	15	18	33	19	भ. 27/08 बाद.
	20	4	र.	14	14	आर्द्रा	8	59	शू.	17	28	कर्क	26	35	5	29	19	9	5	32	19	3	5	41	19	6	5	15	18	34	20	भ. 14/14 तक, बुध मृग. में 15/33.
	21	5	चं.	13	16	पुन.	8	33	गं.	15	43	कर्क			5	29	19	9	5	32	19	4	5	40	19	6	5	15	18	34	21	सूर्य सायन मिथुन में 15/41, शुक्र पुन. में 8/34.
	22	6	मं.	13	9	पुष्य	8	59	वृ.	14	40	कर्क			5	28	19	10	5	31	19	5	5	40	19	7	5	14	18	35	22	
	23	7	बु.	13	53	आश्ले.	10	14	ध्रु.	14	17	सिंह	10	14	5	28	19	11	5	31	19	5	5	40	19	7	5	14	18	35	23	भ. 13/53 से 26/38 तक,
	24	8	गु.	15	22	मघा	12	15	व्या.	14	28	सिंह			5	27	19	11	5	30	19	6	5	39	19	8	5	13	18	36	24	बुध मिथुन में 19/46,
	25	9	शु.	17	26	पू.फा.	14	50	ह.	15	7	कन्या	21	33	5	27	19	12	5	30	19	6	5	39	19	8	5	13	18	36	25	सूर्य रोहि. में 18/35, नेप्च्यून वक्री 6/04,
	26	10	श.	19	51	उ.फा.	17	48	व.	16	3	कन्या			5	26	19	12	5	29	19	7	5	39	19	9	5	13	18	37	26	श्रीगंगा दशहरा,
	27	11	र.	22	25	हस्त	20	55	सि.	17	7	कन्या			5	26	19	13	5	29	19	7	5	38	19	9	5	13	18	37	27	भ. 9/08 से 22/25 तक, पुरुषोत्तमा एकादशी व्रत (स).
	28	12	चं.	24	54	चित्रा	23	57	व्य.	18	10	तुला	10	27	5	26	19	14	5	29	19	8	5	38	19	10	5	12	18	38	28	
	29	13	मं.	27	8	स्वा.	26	47	व.	19	3	तुला			5	25	19	14	5	29	19	8	5	38	19	10	5	12	18	38	29	मंगल रेव. में 21/34, बुध आर्द्रा में 18/48, (H)
	30	14	बु.	29	3	विशा.	29	17	प.	19	42	वृश्चि.	22	41	5	25	19	15	5	28	19	9	5	37	19	11	5	12	18	39	30	भ. 29/03 बाद, शुक्र कर्क में 22/40,
	31	15	गु.	—	—	अनु.	—	—	शि.	20	3	वृश्चि.			5	25	19	15	5	28	19	9	5	37	19	11	5	12	18	39	31	भ. 17/48 तक, श्रीसत्यनारायण व्रत.

(A) जयन्ती, श्रीसत्यनारायण व्रत, (B) वैशाखी पूर्णिमा, वैशाख स्नान समाप्त, (C) में 26/33, (D) भद्रकाली एकादशी (पं.), (E) सोम प्रदोष व्रत, (F) मु. 30. पुण्यकाल 15/43 तक, (G) मास प्रारम्भ, वक्री गुरु ज्ये. 2 में 14/04, (H) भौम प्रदोष व्रत.

मास पक्ष	जून	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घं.	मि.	योग	समाप्ति-काल घं.	मि.	चन्द्रराशि - प्रवेशकाल	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र--प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
ज्ये.शु.	1	15	शु.	6	33	अनु.	7	24	सि.	20	6	वृश्चि.			5	25	19	16	5	28	19	10	5	37	19	12	5	12	18	40	1	जून प्रारम्भ,
द्वि. (अधिक) ज्येष्ठ कृष्ण	2	1	श.	7	40	ज्ये.	9	8	सा.	19	50	धनु	9	8	5	24	19	16	5	28	19	10	5	37	19	12	5	11	18	40	2	द्वि. (अधिक) ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,
	3	2	र.	8	22	मूल	10	28	शु.	19	16	धनु			5	24	19	17	5	27	19	11	5	37	19	13	5	11	18	41	3	भ. 20/32 बाद. शुक्र पुष्य में 5/58,
	4	3	चं.	8	41	पू.षा.	11	26	शु.	16	23	मकर	17	37	5	24	19	17	5	27	19	11	5	37	19	13	5	11	18	41	4	भ. 8/41 तक, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत,
	5	4	मं.	8	37	उ.षा.	12	1	ब्र.	17	13	मकर			5	24	19	18	5	27	19	12	5	36	19	14	5	11	18	42	5	
	6	5	बु.	8	10	श्रव.	12	13	ऐं.	15	43	कुम्भ	24	10	5	24	19	18	5	27	19	12	5	36	19	14	5	11	18	42	6	पंचक प्रारम्भ 24/10,
	7	6	गु.	7	18	धनि.	12	1	वै.	13	53	कुम्भ			5	23	19	19	5	27	19	13	5	36	19	15	5	11	18	42	7	भ. 7/18 से 18/39 तक,
	8	7/	शु.	6	1	शत.	11	23	वि.	11	43	मीन	28	38	5	23	19	19	5	27	19	13	5	36	19	15	5	11	18	43	8	सूर्य मृग. में 16/32,
		8		28	18																											अष्टमी तिथिक्षय,
	9	9	श.	26	10	पू.भा.	10	20	प्री.	9	12	मीन			5	23	19	20	5	27	19	14	5	36	19	15	5	11	18	43	9	
	10	10	र.	23	39	उ.भा.	8	52	आ.	6	20	मीन			5	23	19	20	5	27	19	14	5	36	19	16	5	11	18	44	10	भ. 12/54 से 23/39 तक,
									सौ.	27	11																					
	11	11	चं.	20	49	रेव.	7	2	शो.	23	46	मेष	7	2	5	23	19	21	5	27	19	14	5	36	19	16	5	11	16	44	11	पंचक समाप्त 7/02, पुरुषोत्तमा एकादशी व्रत (स.).
						अश्वि.	28	56																								
	12	12	मं.	17	46	भर.	26	39	अ.	20	12	मेष			5	23	19	21	5	27	19	15	5	36	19	17	5	11	18	44	12	भौम प्रदोष व्रत,
	13	13	बु.	14	39	कृत्ति.	24	21	सु.	16	34	वृष	8	4	5	23	19	21	5	27	19	15	5	36	19	17	5	11	18	45	13	भ. 14/39 से 25/06 तक, व. गुरु ज्ये. 1 में 16/07, (A)
	14	14	गु.	11	34	रोहि.	22	10	धृ.	12	59	वृष			5	23	19	22	5	27	19	16	5	36	19	17	5	11	18	45	14	
	15	30	शु.	8	43	मृग.	20	18	शू.	9	36	मिथुन	9	11	5	23	19	22	5	27	19	16	5	36	19	18	5	11	18	45	15	पुरुषोत्तम (मल) मास समाप्त, सं. सूर्य मिथुन में (B)
द्वि. (शुद्ध) ज्येष्ठ शुक्ल	16	1/	श.	6	15	आर्द्रा	18	54	गं.	6	33	मिथुन			5	23	19	22	5	27	19	16	5	37	19	18	5	11	18	46	16	द्वि. (शुद्ध) ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्र दर्शन, (C)
		2		28	19				वृ.	27	56																					द्वितीया तिथिक्षय,
	17	3	र.	27	3	पुन.	18	7	ध्रु.	25	52	कर्क	12	15	5	24	19	23	5	27	19	17	5	37	19	18	5	11	18	46	17	शुक्र आश्ले. में 6/58, रम्भा तृतीया, श्रीप्रताप (D)
	18	4	चं.	26	33	पुष्य	18	4	व्या.	24	24	कर्क			5	24	19	23	5	27	19	17	5	37	19	18	5	12	18	46	18	भ. 14/48 से 26/33 तक,
	19	5	मं.	26	52	आश्ले.	18	48	ह.	23	36	सिंह	18	48	5	24	19	23	5	27	19	17	5	37	19	19	5	12	18	46	19	बुध पश्चिम में अस्त 23/23,
	20	6	बु.	27	57	मघा	20	18	व.	23	24	सिंह			5	24	19	24	5	28	19	17	5	37	19	19	5	12	18	47	20	राहु शत. 3, केतु पू. फा. 1 में 21/42, अरण्य षष्ठी,
	21	7	गु.	—	—	पू.फा.	22	30	सि.	23	44	कन्या	29	8	5	24	19	24	5	28	19	18	5	37	19	19	5	12	18	47	21	सूर्य सायन कर्क में 23/37, दक्षिणायन प्रारम्भ, वर्षा (E)
	22	7	शु.	5	41	उ.फा.	25	12	व्य.	24	28	कन्या			5	24	19	24	5	28	19	18	5	38	19	19	5	12	18	47	22	भ. 5/41 से 18/47 तक, सूर्य आर्द्रा में 15/26,
	23	8	श.	7	54	हस्त	28	11	व.	25	26	कन्या			5	25	19	24	5	28	19	18	5	38	19	20	5	13	18	47	23	यूरेनस वक्री 20/15,
	24	9	र.	10	21	चित्रा	—	—	प.	26	28	तुला	17	42	5	25	19	24	5	29	19	18	5	38	19	20	5	13	18	47	24	
	25	10	चं.	12	47	चित्रा	7	13	शि.	27	22	तुला			5	25	19	25	5	29	19	18	5	38	19	20	5	13	18	48	25	भ. 25/53 बाद,
	26	11	मं.	14	59	स्वाती	10	4	सि.	28	2	तुला			5	25	19	25	5	29	19	18	5	39	19	20	5	13	18	48	26	भ. 14/59 तक, निर्जला एकादशी व्रत (स.)
	27	12	बु.	16	49	विशा.	12	34	सा.	28	21	वृश्चि.	5	59	5	26	19	25	5	29	19	19	5	39	19	20	5	14	18	48	27	चम्पक द्वादशी, प्रदोष व्रत,
	28	13	गु.	18	9	अनु.	14	37	शु.	28	17	वृश्चि.			5	26	19	25	5	30	19	19	5	39	19	20	5	14	18	48	28	
	29	14	शु.	18	59	ज्येष्ठा	16	10	शु.	27	49	धनु	16	10	5	26	19	25	5	30	19	19	5	40	19	20	5	14	18	48	29	भ. 18/59 बाद,
	30	15	श.	19	19	मूल	17	14	ब्र.	26	58	धनु			5	27	19	25	5	30	19	19	5	40	19	20	5	15	18	48	30	भ. 7/09 तक, वटसावित्री व्रत (पूर्णिमा पक्ष), (F)

(A) शनि आश्ले. 4 में 11/18, (B) 15/52, मु. 30, पुण्यकाल 9/27 के बाद, बुध वक्री 29/10, (C) मु. 45, मंगल अश्वि. मेष में 20/21, (D) जयन्ती (राज.), (E) ऋतु प्रारम्भ, (F) श्रीसत्यनारायण व्रत,

मास पक्ष	जुलाई	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
आषाढ़ कृष्ण	1	1	र.	19	11	पू.षा.	17	51	ऐं.	25	46	मकर	23	56	5	27	19	25	5	31	19	19	5	40	19	20	5	15	18	48	1	आषाढ़ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, जुलाई प्रारम्भ,
	2	2	चं.	18	39	उ.षा.	18	3	वै.	24	15	मकर			5	28	19	25	5	31	19	19	5	41	19	21	5	15	18	48	2	वक्री प्लूटो मूल 1 में 16/37,
	3	3	मं.	17	45	श्रव.	17	55	वि.	22	28	मकर			5	28	19	25	5	31	19	19	5	41	19	21	5	16	18	48	3	भ. 6/12 से 17/45 तक, शुक्र मघा सिंह में (A)
	4	4	बु.	16	34	धनि.	17	28	प्री.	20	27	कुम्भ	5	44	5	28	19	25	5	32	19	19	5	41	19	20	5	16	18	48	4	पंचक प्रारम्भ 5/44,
	5	5	गु.	15	6	शत.	16	46	आ.	18	12	कुम्भ			5	29	19	25	5	32	19	19	5	42	19	20	5	16	18	48	5	मंगल भरणी में 6/43,
	6	6	शु.	13	23	पू.भा.	15	48	सौ.	15	45	मीन	10	4	5	29	19	25	5	33	19	19	5	42	19	20	5	17	18	48	6	भ. 13/23 से 24/24 तक, सूर्य पुन. में 15/06.
	7	7	श.	11	27	उ.भा.	14	37	शो.	13	7	मीन			5	30	19	25	5	33	19	18	5	42	19	20	5	17	18	48	7	
	8	8	र.	9	17	रेव.	13	13	अ.	10	19	मेष	13	13	5	30	19	24	5	34	19	18	5	43	19	20	5	17	18	48	8	पंचक समाप्त 13/13, बुध पूर्व में उदित 9/02,
	9	9/	चं.	6	58	अश्वि.	11	40	सु.	7	22	मेष			5	31	19	24	5	34	19	18	5	43	19	20	5	18	18	48	9	भ. 17/54 से 28/31 तक,
		10		28	31				धृ.	28	20																					दशमी तिथिक्षय,
	10	11	मं.	26	1	भर.	10	0	शू.	25	14	वृष	15	34	5	31	19	24	5	34	19	18	5	44	19	20	5	18	18	48	10	बुध मार्गी 7/45, योगिनी एकादशी व्रत (स्मा.),
	11	12	बु.	23	33	कृत्ति..	8	18	गं.	22	11	वृष			5	32	19	24	5	35	19	18	5	44	19	20	5	19	18	48	11	योगिनी एकादशी व्रत (वै.),
	12	13	गु.	21	15	रोहि.	6	40	वृ.	19	14	मिथुन	17	55	5	32	19	23	5	35	19	18	5	45	19	20	5	19	18	47	12	भ. 21/15 बाद, प्रदोष व्रत,
						मृग.	29	14																								
	13	14	शु.	19	12	आर्द्रा	28	6	ध्रु.	16	31	मिथुन			5	33	19	23	5	36	19	17	5	45	19	19	5	20	18	47	13	भ. 8/14 तक,
	14	30	श.	17	34	पुन.	27	26	व्या.	14	6	कर्क	21	33	5	33	19	23	5	36	19	17	5	46	19	19	5	20	18	47	14	शनैश्चरी अमावस,
आषाढ़ शुक्ल	15	1	र.	16	26	पुष्य	27	18	ह.	12	5	कर्क			5	34	19	23	5	37	19	17	5	46	19	19	5	21	18	47	15	आषाढ़ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्र दर्शन, मु. 30, (B)
	16	2	चं.	15	55	आश्ले.	27	50	व.	10	33	सिंह	27	50	5	34	19	22	5	37	19	16	5	47	19	19	5	21	18	47	16	सं. सूर्य कर्क में 26/44, मु. 15, पुण्यकाल मध्याह्न (C)
	17	3	मं.	16	5	मघा	29	2	सि.	9	33	सिंह			5	35	19	22	5	38	19	16	5	47	19	18	5	21	18	46	17	भ. 28/30 बाद,
	18	4	बु.	16	57	पू.फा.	—	—	व्य.	9	6	सिंह			5	35	19	21	5	38	19	16	5	48	19	18	5	22	18	46	18	भ. 16/56 तक,
	19	5	गु.	18	26	पू.फा.	6	53	व.	9	10	कन्या	13	26	5	36	19	21	5	39	19	15	5	48	19	18	5	22	18	46	19	
	20	6	शु.	20	27	उ.फा.	9	17	प.	9	41	कन्या			5	37	19	21	5	40	19	15	5	49	19	17	5	23	18	45	20	सूर्य पुष्य में 14/34, कुमारषष्ठी,
	21	7	श.	22	46	हस्त	12	5	शि.	10	29	तुला	25	34	5	37	19	20	5	40	19	15	5	49	19	17	5	23	18	45	21	भ. 22/46 बाद, विवस्वत् सप्तमी,
	22	8	र.	25	11	चित्रा	15	4	सि.	11	27	तुला			5	38	19	20	5	41	19	14	5	50	19	16	5	24	18	45	22	भ. 11/57 तक,
	23	9	चं.	27	27	स्वा.	18	0	सा.	12	24	तुला			5	38	19	19	5	41	19	14	5	50	19	16	5	24	18	44	23	सूर्य सायन सिंह में 10/29,
	24	10	मं.	29	21	विशा.	20	38	शु.	13	10	वृश्चि.	14	1	5	39	19	19	5	42	19	13	5	51	19	15	5	25	18	44	24	मंगल कृत्ति. में 10/00,
	25	11	बु.	—	—	अनु.	22	50	शु.	13	35	वृश्चि.			5	40	19	18	5	42	19	13	5	51	19	15	5	25	18	43	25	भ. 18/03 बाद,
	26	11	गु.	6	44	ज्ये.	24	27	ब्र.	13	36	धनु	24	27	5	40	19	17	5	43	19	12	5	52	19	14	5	26	18	43	26	भ. 6/44 तक, बुध पुन. में 12/52, हरिशयनी (D)
	27	12	शु.	7	32	मूल	25	28	ऐं.	13	7	धनु			5	41	19	17	5	43	19	11	5	52	19	14	5	26	18	42	27	शुक्र वक्री 22/58, प्रदोष व्रत
	28	13	श.	7	41	पू.षा.	25	54	वै.	12	9	धनु			5	41	19	16	5	44	19	11	5	53	19	13	5	27	18	42	28	
	29	14	र.	7	15	उ.षा.	25	46	वि.	10	43	मकर	7	55	5	42	19	15	5	44	19	10	5	53	19	13	5	27	18	41	29	भ. 7/15 से 18/47 तक, मंगल वृष में 8/28, (E)
	30	15	चं.	6	18	श्रव.	25	12	प्री.	8	52	मकर			5	43	19	15	5	45	19	10	5	54	19	12	5	28	18	41	30	आषाढ़ी पूर्णिमा, चातुर्मास्य व्रत–नियमादि प्रारम्भ,
श्रा. कृ.		1	चं.	28	53																											श्रावण कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, प्रतिपदा तिथिक्षय,
	31	2	मं.	27	8	धनि.	24	15	आ.	6	40	कुम्भ	12	46	5	43	19	14	5	46	19	9	5	54	19	12	5	28	18	40	31	पंचक प्रारम्भ 12/46.
									सौ.	28	11																					

त्रयोदश दिनपक्ष

(A) 27/23, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, (B) शनि मघा सिंह में 28/45, (C) के बाद, वक्री गुरु अनु. 4 में 19/13, रथ यात्रा (पुरी), (D) एकादशी व्रत (स.), विष्णुशयनोत्सव, (E) कोकिला व्रत, श्रीसत्यनारायण व्रत, गुरुपूर्णिमा (व्यास पूजा) (देखें पृष्ठ 89), शिवशयनोत्सव,

मास पक्ष	अगस्त	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति-काल पं. मि.	योग	समाप्ति-काल घं. मि.	चन्द्रराशि -	प्रवेशकाल घं. मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मि.	दिल्ली सूर्योदय घं. मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मि.	जयपुर सूर्योदय घं. मि.	जयपुर सूर्यास्त घं. मि.	वाराणसी सूर्योदय घं. मि.	वाराणसी सूर्यास्त घं. मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
श्रावण कृष्ण	1	3	बु.	25 7	शत.	23 3	शो.	25 29	कुम्भ		5 44	19 13	5 46	19 8	5 55	19 11	5 28	18 40	1	भ. 14/07 से 25/07 तक, बुध कर्क में 17/51, (A)
	2	4	गु.	22 55	पू.भा.	21 39	अ.	22 39	मीन	16 0	5 44	19 13	5 47	19 8	5 55	19 10	5 29	18 39	2	श्री गणेश चतुर्थी व्रत,
	3	5	शु.	20 37	उ.भा.	20 8	सु.	19 44	मीन		5 45	19 12	5 47	19 7	5 56	19 10	5 29	18 38	3	सूर्य आश्ले. में 13/32, बुध पुष्य में 13/03, बुध (B)
	4	6	श.	18 17	रेव.	18 36	धृ.	16 46	मेष	18 36	5 46	19 11	5 48	19 6	5 56	19 9	5 30	18 38	4	भ. 18/17 से 29/07 तक पंचक समाप्त 18/36, (C)
	5	7	र.	15 58	अश्वि.	17 4	शू.	13 49	मेष		5 46	19 10	5 48	19 5	5 57	19 8	5 30	18 37	5	
	6	8	चं.	13 43	भर.	15 37	गं.	10 55	वृष	21 16	5 47	19 9	5 49	19 5	5 57	19 8	5 31	18 36	6	त्रयोदश दिनपक्ष
	7	9	मं.	11 35	कृत्ति.	14 17	वृ.	8 7	वृष		5 47	19 9	5 49	19 4	5 58	19 7	5 31	18 36	7	भ. 22/35 बाद, गुरु मार्गी 7/36, शुक्र पश्चिम में (D)
							ध्रु.	29 27												शुक्र अस्त 7 अगस्त
	8	10	बु.	9 37	रोहि.	13 7	व्या.	26 57	मिथुन	24 37	5 48	19 8	5 50	19 3	5 58	19 6	5 32	18 35	8	भ. 9/37 तक,
	9	11	गु.	7 53	मृग.	12 12	ह.	24 41	मिथुन		5 49	19 7	5 51	18 2	5 59	19 5	5 32	18 34	9	बुध आश्ले. में 29/10, कामिका एकादशी व्रत (स.)
	10	12/	शु.	6 27	आर्द्रा	11 35	व.	22 41	कर्क	29 21	5 49	19 6	5 51	19 1	5 59	19 5	5 33	18 34	10	भ. 29/22 बाद, प्रदोष व्रत, शुक्र उदित 23 अगस्त
		13		29 22																त्रयोदशी तिथिक्षय,
	11	14	श.	28 42	पुन.	11 20	सि.	21 1	कर्क		5 50	19 5	5 52	19 1	6 0	19 4	5 33	18 33	11	भ. 17/02 तक,
	12	30	र.	28 32	पुष्य	11 31	व्य.	19 43	कर्क		5 51	19 4	5 52	19 0	6 0	19 3	5 34	18 32	12	शनि मघा 2 में 12/37, हरियाली अमावस,
श्रावण शुक्ल	13	1	चं.	28 54	आश्ले.	12 12	व.	18 50	सिंह	12 12	5 51	19 3	5 53	18 59	6 1	19 2	5 34	18 31	13	श्रावण शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, मंगल रोहि. में 15/17, (E)
	14	2	मं.	29 50	मघा	13 25	प.	18 23	सिंह		5 52	19 2	5 53	18 58	6 1	19 1	5 34	18 30	14	चन्द्र दर्शन, मु. 30,
	15	3	बु.	— —	पू.फा.	15 10	शि.	18 21	कन्या	21 41	5 52	19 1	5 54	18 57	6 2	19 0	5 35	18 30	15	मधुस्रवा तृतीया, (संधारा तीज), भारत स्वतन्त्रता दिवस,
	16	3	गु.	7 17	उ.फा.	17 25	सि.	18 43	कन्या		5 53	19 0	5 54	18 56	6 2	19 0	5 35	18 29	16	भ. 20/15 बाद, बुध मघा सिंह में 17/30,
	17	4	शु.	9 13	हस्त	20 5	सा.	19 25	कन्या		5 54	18 59	5 55	18 55	6 3	18 59	5 36	18 28	17	भ. 9/13 तक, सं. सूर्य मघा सिंह में 11/09, मु. 30,(F)
	18	5	श.	11 29	चित्रा	23 0	शु.	20 18	तुला	9 31	5 54	18 58	5 55	18 54	6 3	18 58	5 36	18 27	18	नाग पंचमी, श्रीकल्कि जयन्ती,
	19	6	र.	13 55	स्वा.	25 59	शु.	21 16	तुला		5 55	18 57	5 56	18 53	6 4	18 57	5 37	18 26	19	वक्री शुक्र आश्ले. कर्क में 19/16,
	20	7	चं.	16 18	विशा.	28 50	ब्र.	22 9	वृश्चि.	22 8	5 55	18 56	5 56	18 52	6 4	18 56	5 37	18 25	20	भ. 16/18 से 26/32 तक, गो. स्वा. तुलसीदास (G)
	21	8	मं.	18 25	अनु.	— —	ऐं.	22 48	वृश्चि.		5 56	18 55	5 57	18 51	6 5	18 55	5 37	18 24	21	श्रीदुर्गाष्टमी, दूर्वाष्टमी,
	22	9	बु.	20 3	अनु.	7 19	वै.	23 4	वृश्चि.		5 56	18 54	5 58	18 50	6 5	18 54	5 38	18 23	22	राहु शत. 2, केतु मघा 4 में 19/16,
	23	10	गु.	21 5	ज्ये.	9 17	वि.	22 50	धनु	9 17	5 57	18 53	5 58	18 49	6 5	18 53	5 38	18 23	23	सूर्य सायन कन्या में 17/38, बुध पू. फा. में 14/04,(H)
	24	11	शु.	21 25	मूल	10 36	प्री.	22 3	धनु		5 58	18 52	5 59	18 48	6 6	18 52	5 39	18 22	24	भ. 9/16 से 21/25 तक, पवित्रा एकादशी व्रत (स.),
	25	12	श.	21 2	पू.षा.	11 13	आ.	20 42	मकर	17 15	5 58	18 51	5 59	18 47	6 6	18 51	5 39	18 21	25	वक्री यूरेनस पू. भा. 1 मे 25/12,
	26	13	र.	19 58	उ.षा.	11 7	सौ.	18 48	मकर		5 59	18 49	6 0	18 46	6 7	18 50	5 40	18 20	26	प्रदोष व्रत, शुक्र बाल्य समाप्त 10/38,
	27	14	चं.	18 16	श्रव.	10 24	शो.	16 24	कुम्भ	21 50	5 59	18 48	6 0	18 45	6 7	18 49	5 40	18 19	27	भ. 18/16 से 29/10 तक, पंचक प्रारम्भ 21/50, (I)
	28	15	मं.	16 5	धनि.	9 8	अ.	13 35	कुम्भ		6 0	18 47	6 1	18 44	6 8	18 48	5 40	18 18	28	गुरु ज्ये. 1 में 19/21, शुक्ल–कृष्ण–यजु उपाकर्म, (J)
भाद्रपद कृष्ण	29	1	बु.	13 31	शत.	7 27	सु.	10 26	मीन	23 59	6 1	18 46	6 1	18 43	6 8	18 47	5 41	18 17	29	भाद्रपद कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, चन्द्रग्रहण 28 अगस्त
					पू.भा.	29 28														
	30	2	गु.	10 41	उ.भा.	27 20	धृ.	7 4	मीन		6 1	18 45	6 2	18 42	6 9	18 46	5 41	18 16	30	भ. 21/12 बाद, बुध उ. फा. में 25/03, बुध पश्चिम (K)
							शू.	27 35												
	31	3/	शु.	7 44	रेव.	25 11	गं.	24 4	मेष	25 11	6 2	18 44	6 2	18 41	6 9	18 45	5 42	18 15	31	भ. 7/44 तक, पंचक समाप्त 25/11, सूर्य पू. फा. (L)
		4		28 48																चतुर्थी तिथिक्षय,

(A) अगस्त प्रारम्भ, (B) पूर्व में अस्त 21/01, शनि अस्त 29/13. (C) शुक्र वार्धक्य प्रा. 15/30, (D) अस्त 15/30, (E) वक्री नेप्च्यून धनि. 1 में 24/46, (F) पुण्यकाल 17/34 तक, (G) जयन्ती, (H) शरद् ऋतु प्रारम्भ, शुक्र पूर्व में उदित 10/38, (I) ऋक् उपाकर्म, श्रीसत्यनारायण व्रत, (J) श्रावणी पूर्णिमा, रक्षाबन्धन (राखी), चन्द्रग्रहण (भारत के पूर्वोत्तरी छोर पर अत्यल्प समय के लिए दृश्य) (देखें पृष्ठ 9). (K) मे उदित 6/24, (L) मे 7/12, बहुला चतुर्थी, श्रीगणेश (संकष्ट) चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय [illegible])

श्री वि. सं 2064 — **तिथ्यादि पंचाग (भा. स्टैं. टा.)** — सितंबर, सन् 2007 ई.

मास पक्ष	सितंबर	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घं.	मि.	योग	समाप्ति-काल घं.	मि.	चन्द्रराशि - प्रवेशकाल	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	जयपुर सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	वाराणसी सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
भाद्रपद कृष्ण	1	5	श.	25	58	अश्वि.	23	7	वृ.	20	38	मेष			6	2	18	42	6	3	18	39	6	10	18	44	5	42	18	14	1	सितम्बर प्रारम्भ, बुध कन्या में 24/31.
	2	6	र.	23	21	भर.	21	16	ध्रु.	17	21	वृष	26	51	6	3	18	41	6	3	18	38	6	10	18	43	5	42	18	13	2	भ. 23/21 बाद, चन्द्रषष्ठी व्रत,
	3	7	चं.	21	3	कृत्ति.	19	42	व्या.	14	18	वृष			6	3	18	40	6	4	18	37	6	10	18	42	5	43	18	12	3	भ. 10/12 तक, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (रोहिणी योग)(A)
	4	8	मं.	19	7	रोहि.	18	31	ह.	11	33	मिथुन	30	4	6	4	18	39	6	4	18	36	6	11	18	40	5	43	18	11	4	मंगल मृग. में 16/25, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (B)
	5	9	बु.	17	37	मृग.	17	44	व.	9	7	मिथुन			6	5	18	37	5	5	18	35	6	11	18	39	5	43	18	10	5	भ. 29/04 बाद, श्रीगुग्गा नवमी,
	6	10	गु.	16	33	आर्द्रा	17	25	सि.	7	3	मिथुन			6	5	18	36	6	5	18	34	6	12	18	38	5	44	18	9	6	भ. 16/33 तक,
									व्य.	29	21																					
	7	11	शु.	15	57	पुन.	17	32	व.	28	1	कर्क	11	28	6	6	18	35	6	6	18	33	6	12	18	37	5	44	18	8	7	शनि मघा 3 में 20/19, प्लूटो मार्गी 20/23, (C)
	8	12	श.	15	50	पुष्य	18	8	प.	27	4	कर्क			6	6	18	34	6	6	18	31	6	13	18	36	5	45	18	6	8	बुध हस्त में 6/25, शुक्र मार्गी 21/44, शनि उदित (D)
	9	13	र.	16	11	आश्ले.	19	11	शि.	26	28	सिंह	19	11	6	7	18	33	6	7	18	30	6	13	18	35	5	45	18	5	9	भ. 16/11 से 28/35 तक,
	10	14	चं.	16	59	मघा	20	40	सि.	26	13	सिंह			6	7	18	31	6	7	18	29	6	13	18	34	5	45	18	4	10	पिठौरी अमावस,
	11	30	मं.	18	14	पू.फा.	22	35	सा.	26	18	कन्या	29	7	6	8	18	30	6	7	18	28	6	14	18	33	5	46	18	3	11	भौमवती अमावस, कुशोत्पाटिनी अमावस,
भाद्रपद शुक्ल	12	1	बु.	19	53	उ.फा.	24	53	शु.	26	41	कन्या			6	8	18	29	6	8	18	27	6	14	18	32	5	46	18	2	12	भाद्रपद शुक्ल पक्ष प्रारम्भ,
	13	2	गु.	21	54	हस्त	27	31	शु.	27	19	कन्या			6	9	18	27	6	8	18	25	6	15	18	30	5	46	18	1	13	चन्द्र दर्शन, मु. 30, सूर्य उ. फा. में 25/02, साम (E)
	14	3	शु.	24	12	चित्रा	—	—	ब्र.	28	10	तुला	16	56	6	10	18	26	6	9	18	24	6	15	18	29	5	47	18	0	14	हरितालिका तृतीया, गौरी तृतीया, श्रीवराह जयन्ती,
	15	4	श.	26	41	चित्रा	6	24	ऐं.	29	7	तुला			6	10	18	25	6	9	18	23	6	16	18	28	5	47	17	59	15	भ. 13/27 से 26/41 तक, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, (F)
	16	5	र.	29	10	स्वा.	9	24	वै.	30	4	वृश्चि.	29	39	6	11	18	24	6	10	18	22	6	16	18	27	5	48	17	58	16	मंगल मिथुन में 21/36, ऋषि पंचमी,
	17	6	चं.	—	—	विशा.	12	24	वि.	—	—	वृश्चि.			6	11	18	22	6	10	18	21	6	16	18	26	5	48	17	57	17	सं. सूर्य कन्या में 11/07, मु. 45,पुण्यकाल 17/31 (G)
	18	6	मं.	7	30	अनु.	15	11	वि.	6	54	वृश्चि.			6	12	18	21	6	11	18	19	6	17	18	25	5	48	17	56	18	
	19	7	बु.	9	29	ज्ये.	17	35	प्री.	7	28	धनु	17	35	6	12	18	20	6	11	18	18	6	17	18	24	5	49	17	55	19	भ. 9/29 से 22/12 तक, श्रीमहालक्ष्मी व्रत प्रारम्भ, (H)
	20	8	गु.	10	57	मूल	19	26	आ.	7	39	धनु			6	13	18	19	6	12	18	17	6	18	18	22	5	49	17	54	20	
	21	9	शु.	11	44	पू.षा.	20	35	सौ.	7	19	मकर	26	45	6	14	18	17	6	12	18	16	6	18	18	21	5	49	17	52	21	श्रीचन्द नवमी (उदासीन सम्प्रदाय महोत्सव),
	22	10	श.	11	45	उ.षा.	20	59	शो.	6	23	मकर			6	14	18	16	6	13	18	15	6	19	18	20	5	50	17	51	22	भ. 23/21 बाद, बुध तुला में 15/59,
									अ.	28	51																					
	23	11	र.	10	59	श्रव.	20	36	सु.	26	41	मकर			6	15	18	15	6	13	18	13	6	19	18	19	5	50	17	50	23	भ. 10/59 तक, सूर्य सायन तुला में 15/20, (I)
	24	12	चं.	9	27	धनि.	19	29	धृ.	23	56	कुम्भ	8	7	6	15	18	13	6	14	18	12	6	19	18	18	5	51	17	49	24	पंचक प्रारम्भ 8/07, सोम प्रदोष व्रत,
	25	13/	मं.	7	14	शत.	17	45	शू.	20	42	कुम्भ			6	16	18	12	6	14	18	11	6	20	18	17	5	51	17	48	25	भ. 28/27 बाद, श्रीअनन्त चतुर्दशी व्रत,
		14		28	27																											चतुर्दशी तिथिक्षय,
	26	15	बु.	25	15	पू.भा.	15	31	गं.	17	4	मीन	10	6	6	16	18	11	6	15	18	10	6	20	18	16	5	51	17	47	26	भ. 14/51 तक, श्रीसत्यनारायण व्रत, प्रोष्ठपदी श्राद्ध, (J)
आश्विन कृष्ण	27	1	गु.	21	47	उ.भा.	12	56	वृ.	13	9	मीन			6	17	18	10	6	15	18	9	6	21	18	14	5	52	17	46	27	आश्विन कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, सूर्य हस्त में 16/34, श्राद्ध (K)
	28	2	शु.	18	13	रेव.	10	10	ध्रु.	9	6	मेष	10	10	6	18	18	8	6	16	18	7	6	21	18	13	5	52	17	45	28	भ. 26/27 बाद, पंचक समाप्त 10/10, बुध स्वा. में (L)
									व्या.	29	2																					
	29	3	श.	14	42	अश्वि.	7	25	ह.	25	6	मेष			6	18	18	7	6	16	18	6	6	22	18	12	5	53	17	44	29	भ. 14/42 तक, गुरु ज्ये. 2 में 9/56, शुक्र मघा (M)
						भर.	28	50																								
	30	4	र.	11	25	कृत्ति.	26	34	व.	21	25	वृष	10	14	6	19	18	6	6	17	18	5	6	22	18	11	5	53	17	43	30	मंगल आर्द्रा में 14/56, पंचमी का श्राद्ध.

(A) (स्मार्त=गृहस्थियों के लिए),(चन्द्रोदय घ. 22 मि. 36). (B) (वैष्णवों= सन्यासियों के लिए), (C) अजा एकादशी व्रत (स). (D) 25/24, शनि प्रदोष व्रत, (E) उपाकर्म, मेला बाबा गोसाई आणा, कुराली(प). (F) कलंक चतुर्थी (चन्द्रदर्शन निषिद्ध) (चन्द्रास्त 20 घ. 14 मि), सिद्धिविनायक व्रत, हरितालिका चतुर्थी, (G) तक, बुध चित्रा में 11/45, सूर्यषष्ठी व्रत. (H) श्रीराधाष्टमी (देखें पृ. 90) (I) विषुवदिन, दक्षिणगोल प्रारम्भ, पद्मा एकादशी व्रत (स) श्रवण द्वादशी व्रत (विष्णुश्रृंखल योग), श्रीवामन जयन्ती. (J) पूर्णिमा श्राद्ध. (K) (महालय) पक्ष प्रारम्भ, प्रतिपदाश्राद्ध, (L) 13/25, द्वितीया का श्राद्ध. (M) सिंह में 24/29, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, तृतीया/चतुर्थी का श्राद्ध.

मास पक्ष	अक्तूबर	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घं.	मि.	योग	समाप्ति-काल घं.	मि.	चन्द्रराशि - प्रवेशकाल	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
आश्विन कृष्ण	1	5/	चं.	8	30	रोहि.	24	46	सि.	18	5	वृष			6	19	18	5	6	17	18	4	6	23	18	10	5	53	17	42	1	भ. 30/06 बाद, अक्तूबर प्रारम्भ, षष्ठी श्राद्ध, षष्ठी तिथिक्षय,
		6		30	6																											
	2	7	मं.	28	16	मृग.	23	32	व्य.	15	11	मिथुन	12	5	6	20	18	3	6	18	18	3	6	23	18	9	5	54	17	41	2	भ. 17/10 तक, सप्तमी का श्राद्ध, ज.दि. श्रीमहात्मा गांधी,
	3	8	बु.	27	5	आर्द्रा	22	57	व.	12	48	मिथुन			6	21	18	2	6	18	18	2	6	24	18	8	5	54	17	40	3	अष्टमी का श्राद्ध, महालक्ष्मी व्रत समाप्त,
	4	9	गु.	26	35	पुन.	23	0	प.	10	56	कर्क	16	55	6	21	18	1	6	19	18	0	6	24	18	7	5	55	17	38	4	नवमी का श्राद्ध, सौभाग्यवतीश्राद्ध,
	5	10	शु.	26	43	पुष्य	23	41	शि.	9	35	कर्क			6	22	18	0	6	20	17	59	6	24	18	6	5	55	17	37	5	भ. 14/39 से 26/43 तक, शनि मघा 4 में (A)
	6	11	श.	27	26	आश्ले.	24	57	सि.	8	44	सिंह	24	57	6	22	17	58	6	20	17	58	6	25	18	4	5	55	17	36	6	इन्दिरा एकादशी व्रत (स.), एकादशी का श्राद्ध,
	7	12	र.	28	39	मघा	26	43	सा.	8	19	सिंह			6	23	17	57	6	21	17	57	6	25	18	3	5	56	17	35	7	द्वादशी का श्राद्ध, संन्यासियों का श्राद्ध,
	8	13	चं.	30	18	पू.फा.	28	53	शु.	8	17	सिंह			6	24	17	56	6	21	17	56	6	26	18	2	5	56	17	34	8	भ. 30/18 बाद, सोम प्रदोष व्रत, त्रयोदशी–श्राद्ध,
	9	14	मं.	—	—	उ.फा.	—	—	शु.	8	33	कन्या	11	28	6.	24	17	55	6	22	17	55	6	26	18	1	5	57	17	33	9	भ. 19/17 तक, शस्त्र–विषादि (B)
	10	14	बु.	8	17	उ.फा.	7	22	ब्र.	9	3	कन्या			6	25	17	54	6	22	17	54	6	27	18	0	5	57	17	32	10	सूर्य चित्रा में 29/34, गजच्छाया पर्व, चतुर्दशी/(C)
	11	30	गु.	10	30	हस्त	10	6	ऐं.	9	45	तुला	23	32	6	26	17	52	6	23	17	52	6	27	17	59	5	58	17	31	11	मातामह (नाना) का श्राद्ध, श्राद्ध (महालय) (D)
आश्विन शुक्ल	12	1	शु.	12	55	चित्रा	13	0	वै.	10	35	तुला			6	26	17	51	6	24	17	51	6	28	17	58	5	58	17	30	12	आश्विन शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, बुध वक्री 9/30, शारद (E)
	13	2	श.	15	26	स्वा.	16	0	वि.	11	30	तुला			6	27	17	50	6	24	17	50	6	29	17	57	5	59	17	29	13	चन्द्र दर्शन, मु. 15,
	14	3	र.	17	57	विशा.	19	0	प्री.	12	26	वृश्चि.	12	16	6	28	17	49	6	25	17	49	6	29	17	56	5	59	17	28	14	
	15	4	चं.	20	23	अनु.	21	55	आ.	13	18	वृश्चि.			6	28	17	48	6	25	17	48	6	30	17	55	6	0	17	28	15	भ. 7/10 से 20/23 तक,
	16	5	मं.	22	35	ज्ये.	24	36	सौ.	14	2	धनु	24	36	6	29	17	47	6	26	17	47	6	30	17	54	6	0	17	27	16	शुक्र पू. फा. में 29/05, उपाङ्गललिता व्रत,
	17	6	बु.	24	23	मूल	26	53	शो.	14	30	धनु			6	30	17	46	6	27	17	46	6	31	17	53	6	1	17	26	17	सं. सूर्य तुला में 23/05, मु. 30, पुण्यकाल मध्याह्न के (F)
	18	7	गु.	25	39	पू.षा.	28	39	अ.	14	36	धनु			6	30	17	45	6	27	17	45	6	31	17	52	6	1	17	25	18	भ. 25/39 बाद, सरस्वती पूजन, ओली प्रारम्भ (जैन),
	19	8	शु.	26	15	उ.षा.	29	45	सु.	14	14	मकर	11	0	6	31	17	43	6	28	17	44	6	32	17	51	6	2	17	24	19	भ. 13/58 तक, गुरु ज्येष्ठा 3 में 23/48, श्री दुर्गाष्टमी, (G)
	20	9	श.	26	5	श्रव.	30	6	धृ.	13	18	मकर			6	32	17	42	6	28	17	43	6	32	17	50	6	2	17	23	20	महानवमी (पूजा/बलिदान के लिए), सरस्वती विसर्जन, (H)
	21	10	र.	25	6	धनि.	29	38	शू.	11	45	कुम्भ	17	58	6	32	17	41	6	29	17	42	6	33	17	49	6	3	17	22	21	पंचक प्रारम्भ 17/58, विजयादशमी (दशहरा), (I)
	22	11	चं.	23	19	शत.	28	25	गं.	9	33	कुम्भ			6	33	17	40	6	30	17	41	6	34	17	48	6	3	17	21	22	भ. 12/13 से 23/19 तक, पापांकुशा एकादशी व्रत (I),
	23	12	मं.	20	49	पू.भा.	26	30	वृ.	6	44	मीन	21	2	6	34	17	39	6	30	17	40	6	34	17	48	6	4	17	20	23	सूर्य सायन वृश्चिक में 24/46, हेमन्त ऋतु प्रारम्भ, (K)
									ध्रु.	27	22																					
	24	13	बु.	17	44	उ.भा.	24	1	व्या.	23	32	मीन			6	35	17	38	6	31	17	39	6	35	17	47	6	4	17	20	24	सूर्य स्वा. में 16/03, राहु शत 1, केतु मघा 3 में (L)
	25	14	गु.	14	11	रेव.	21	8	ह.	19	22	मेष	21	8	6	35	17	37	6	32	17	38	6	35	17	46	6	5	17	19	25	भ. 14/11 से 24/15 तक, पंचक समाप्त 21/08, (M)
	26	15/	शु.	10	22	अश्वि.	18	3	व.	15	0	मेष			6	36	17	36	6	32	17	37	6	36	17	45	6	5	17	18	26	महर्षि वाल्मीकि जयन्ती, कार्तिक स्नान प्रारम्भ,
कार्तिक कृष्ण		/1		30	27																											कार्तिक कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, प्रतिपदा तिथिक्षय,
	27	2	श.	26	37	भर.	14	56	सि.	10	36	वृष	20	10	6	37	17	35	6	33	17	37	6	37	17	44	6	6	17	17	27	
									व्य.	30	18																					
	28	3	र.	23	5	कृत्ति.	11	59	व.	26	16	वृष			6	38	17	34	6	34	17	36	6	37	17	43	6	7	17	16	28	भ. 12/52 से 23/05 तक,
	29	4	चं.	20	1	रोहि.	9	25	प.	22	38	मिथुन	20	19	6	38	17	33	6	34	17	35	6	38	17	43	6	7	17	16	29	श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, करक चतुर्थी (करवा चौथ) व्रत, (N)
	30	5	मं.	17	34	मृग.	7	23	शि.	19	32	मिथुन			6	39	17	33	6	35	17	34	6	39	17	42	6	8	17	15	30	वक्री बुध कन्या में 15/53, बुध पूर्व में उदित 21/46, (O)
						आर्द्रा	30	2																								
	31	6	बु.	15	51	पुन.	29	28	सि.	17	1	कर्क	23	32	6	40	17	32	6	36	17	33	6	39	17	41	6	8	17	14	31	भ. 15/51 से 27/23 तक, नेप्च्यून मार्गी 28/07,

(A) 25/10, दशमी का श्राद्ध, (B) से मृतों का श्राद्ध, (C) अमावस का श्राद्ध, सर्वपितृ श्राद्ध, (D) पक्ष समाप्त, (E) नवरात्र प्रारम्भ, घटस्थापन, (F) बाद, बुध पश्चिम में अस्त 23/41, सरस्वती आवाहन, (G) महाष्टमी, सरस्वती बलिदान, (H) नवरात्र समाप्त, (I) आयुध पूजा अपराजिता पूजा, सीमोल्लंघन, (J) (स), भरत मिलाप, (K) वक्री बुध चित्रा में 20/58, (L) 16/56, प्रदोष व्रत, (M) कोजागर व्रत, श्रीसत्यनारायण व्रत, शरत् पूर्णिमा, (N) (चन्द्रोदय घं. 20 मि. 11) (देखें पृ. 90), (O) शुक्र उ.फा. में 27/12.

श्री वि. सं 2064 | तिथ्यादि पंचाग (भा. स्टैं. टा.) | नवम्बर, सन् 2007 ई.

मास पक्ष	नवम्बर	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घं.	मि.	योग	समाप्ति-काल घं.	मि.	चन्द्रराशि - प्रवेशकाल	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	जयपुर सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	वाराणसी सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
कार्तिक कृष्ण	1	7	गु.	14	57	पुष्य	29	42	सा.	15	9	कर्क			6	41	17	31	6	37	17	32	6	40	17	40	6	9	17	14	1	नवम्बर प्रारम्भ, बुध मार्गी 28/30, अहोई अष्टमी (पं.),
	2	8	शु.	14	52	आश्ले.	—	—	शु.	13	56	कर्क			6	41	17	30	6	37	17	32	6	41	17	40	6	10	17	13	2	
	3	9	श.	15	33	आश्ले.	6	42	शु.	13	18	सिंह	6	42	6	42	17	29	6	38	17	31	6	41	17	39	6	10	17	12	3	भ. 28/12 बाद, शुक्र कन्या में 9/11,
	4	10	र.	16	54	मघा	8	23	ब्र.	13	12	सिंह			6	43	17	28	6	39	17	30	6	42	17	38	6	11	17	12	4	भ. 16/54 तक, बुध तुला में 18/56,
	5	11	चं.	18	46	पू.फा.	10	37	ऐं.	13	30	कन्या	17	14	6	44	17	28	6	39	17	29	6	43	17	38	6	12	17	11	5	रमा एकादशी व्रत (स.),
	6	12	मं.	21	0	उ.फा.	13	14	वै.	14	5	कन्या			6	45	17	27	6	40	17	29	6	43	17	37	6	12	17	10	6	सूर्य विशा. में 24/14, गुरु ज्ये. 4 में 9/01, गोवत्स (A)
	7	13	बु.	23	28	हस्त	16	6	वि.	14	52	तुला	29	35	6	46	17	26	6	41	17	28	6	44	17	36	6	13	17	10	7	भ. 23/28 बाद, धन त्रयोदशी, प्रदोष व्रत,
	8	14	गु.	26	0	चित्रा	19	5	प्री.	15	44	तुला			6	46	17	25	6	42	17	27	6	45	17	36	6	14	17	9	8	भ. 12/44 तक, नरक चतुर्दशी, श्रीहनुमान् जयन्ती (B)
	9	30	शु.	28	33	स्वा.	22	5	आ.	16	38	तुला			6	47	17	25	6	43	17	27	6	45	17	35	6	14	17	9	9	प्लूटो मूल 2 में 15/27, दीपावली, श्रीमहालक्ष्मी पूजा, (C)
कार्तिक शुक्ल	10	1	श.	—	—	विशा.	25	2	सौ.	17	30	वृश्चि.	18	18	6	48	17	24	6	43	17	26	6	46	17	35	6	15	17	8	10	कार्तिक शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, गोक्रीडा, बलिपूजा, (D)
	11	1	र.	7	1	अनु.	27	52	शो.	18	17	वृश्चि.			6	49	17	23	6	44	17	26	6	47	17	34	6	16	17	8	11	चन्द्र दर्शन, मु. 30, बुध स्वा. में 26/34, (E)
	12	2	चं.	9	22	ज्ये.	30	31	अ.	18	56	धनु	30	31	6	50	17	23	6	45	17	25	6	48	17	34	6	16	17	7	12	शुक्र हस्त में 18/52, शनि पू.फा. 1 में 8/37, (F)
	13	3	मं.	11	30	मूल	—	—	सु.	19	26	धनु			6	51	17	22	6	46	17	25	6	48	17	33	6	17	17	7	13	भ. 24/25 बाद,
	14	4	बु.	13	21	मूल	8	56	धृ.	19	41	धनु			6	51	17	22	6	46	17	24	6	49	17	33	6	18	17	6	14	भ. 13/21 तक, बालदिवस (ज.दि. श्रीजवाहरलाल नेहरु),
	15	5	गु.	14	49	पू.षा.	10	58	शू.	19	37	मकर	17	25	6	52	17	21	6	47	17	24	6	50	17	32	6	18	17	6	15	मंगल वक्री 13/55, सूर्य षष्ठी व्रत,
	16	6	शु.	15	47	उ.षा.	12	33	गं.	19	9	मकर			6	53	17	21	6	48	17	23	6	51	17	32	6	19	17	6	16	सं. सूर्य वृश्चिक में 22/51, मु. 30, पुण्यकाल (G)
	17	7	श.	16	7	श्रव.	13	33	वृ.	18	12	कुम्भ	25	48	6	54	17	20	6	49	17	23	6	51	17	31	6	20	17	5	17	भ. 16/07 से 27/56 तक, पंचक प्रारम्भ 25/48,
	18	8	र.	15	46	घनि.	13	53	ध्रु.	16	43	कुम्भ			6	55	17	20	6	50	17	22	6	52	17	31	6	21	17	5	18	गोपाष्टमी,
	19	9	चं.	14	40	शत.	13	29	व्या.	14	37	मीन	30	42	6	56	17	19	6	50	17	22	6	53	17	31	6	21	17	5	19	सूर्य अनु. में 30/11, अक्षय नवमी, कूष्माण्ड नवमी,
	20	10	मं.	12	50	पू.भा.	12	22	ह.	11	57	मीन			6	57	17	19	6	51	17	22	6	54	17	30	6	22	17	4	20	भ. 23/34 बाद, भीष्म पंचक प्रारम्भ,
	21	11	बु.	10	18	उ.भा.	10	33	व.	8	43	मीन			6	57	17	18	6	52	17	21	6	54	17	30	6	23	17	4	21	भ. 10/18 तक, बुध विशा. में 10/49, गुरु मूल 1 (H)
									सि.	29	1																					
	22	12/	गु.	7	12	रेव.	8	10	व्य.	24	56	मेष	8	10	6	58	17	18	6	53	17	21	6	55	17	30	6	23	17	4	22	पंचक समाप्त 8/10, सूर्य सायन धनु में 22/19, (I)
		13		27	40	अश्वि.	29	22																								त्रयोदशी तिथिक्षय,
	23	14	शु.	23	52	भर.	26	19	व.	20	37	मेष			6	59	17	18	6	54	17	21	6	56	17	30	6	24	17	4	23	भ. 23/52 बाद, श्रीवैकुण्ठ चतुर्दशी,
	24	15	श.	20	0	कृत्ति.	23	13	प.	16	13	वृष	7	32	7	0	17	18	6	54	17	20	6	57	17	29	6	25	17	4	24	भ. 9/57 तक, बुध पूर्व में अस्त 7/58, शुक्र चित्रा में (J)
मार्गशीर्ष कृष्ण	25	1	र.	16	15	रोहि.	20	15	शि.	11	52	मिथुन	30	53	7	1	17	17	6	55	17	20	6	57	17	29	6	26	17	3	25	मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,
	26	2	चं.	12	48	मृग.	17	39	सि.	7	46	मिथुन			7	2	17	17	6	56	17	20	6	58	17	29	6	26	17	3	26	भ. 23/19 बाद,
									सा.	28	1																					
	27	3	मं.	9	52	आर्द्रा	15	35	शु.	24	47	मिथुन			7	3	17	17	6	57	17	20	6	59	17	29	6	27	17	3	27	भ. 9/52 तक, बुध वृश्चिक में 21/27, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत,
	28	4/	बु.	7	35	पुन.	14	13	शु.	22	10	कर्क	8	29	7	3	17	17	6	58	17	20	7	0	17	29	6	28	17	3	28	
		5		30	6																											पंचमी तिथिक्षय,
	29	6	गु.	29	30	पुष्य	13	39	ब्र.	20	13	कर्क			7	4	17	16	6	58	17	20	7	1	17	29	6	29	17	3	29	भ. 29/30 बाद, बुध अनु. में 24/33,
	30	7	शु.	29	47	आश्ले.	13	58	ऐं.	18	58	सिंह	13	58	7	5	17	16	6	59	17	20	7	1	17	29	6	29	17	3	30	भ. 17/38 तक, शुक्र तुला में 14/17,

(A) द्वादशी, (B) (पूर्वारुणोदय वाली) (उ. भा.), (C) श्रीमहावीर निर्वाण (जैन), (D) अन्नकूट, गोवर्धन पूजा, (E) यमद्वितीया, (F) भाई दूज, श्रीविश्वकर्मा पूजा,(G) मध्याह्न के बाद, (H) धनु में 29/03, देवप्रबोधिनी एकादशी व्रत (स.), तुलसीविवाह, (I) प्रदोष व्रत, (J) 18/29, यूरेनस मार्गी 15/46, श्री सत्यनारायण व्रत, श्रीगुरु नानक जयन्ती, कार्तिक पूर्णिमा, कार्तिक स्नान समाप्त, चातुर्मास्य व्रत–नियमादि समाप्त, भीष्म पंचक समाप्त,

मास पक्ष	दिसम्बर	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.		
मार्गशीर्ष कृष्ण	1	8	श.	30	52	मघा	15	6	वै.	18	22	सिंह			7	6	17	16	7	0	17	19	7	2	17	29	6	30	17	3	1	दिसम्बर प्रारम्भ, श्रीकालाष्टमी, श्रीभैरवाष्टमी,
	2	9	र.	—	—	पू.फा.	16	59	वि.	18	20	कन्या	23	33	7	7	17	16	7	1	17	19	7	3	17	29	6	31	17	3	2	
	3	9	चं.	8	38	उ.फा.	19	26	प्री.	18	45	कन्या			7	8	17	16	7	2	17	19	7	4	17	29	6	31	17	3	3	भ. 21/46 बाद, सूर्य ज्ये. में 10/33,
	4	10	मं.	10	54	हस्त	22	17	आ.	19	28	कन्या			7	8	17	16	7	2	17	19	7	4	17	29	6	32	17	3	4	भ. 10/54 तक,
	5	11	बु.	13	26	चित्रा	25	18	सौ.	20	21	तुला	11	47	7	9	17	16	7	3	17	20	7	5	17	29	6	33	17	3	5	उत्पन्ना एकादशी व्रत (स.),
	6	12	गु.	16	4	स्वाती	28	20	शो.	21	15	तुला			7	10	17	16	7	4	17	20	7	6	17	29	6	34	17	4	6	गुरु मूल 2 में 29/28, शुक्र स्वा. में 8/04, प्रदोष व्रत,
	7	13	शु.	18	38	विशा.	—	—	अ.	22	6	वृश्चि.	24	32	7	11	17	16	7	5	17	20	7	6	17	29	6	34	17	4	7	भ. 18/38 बाद, गुरु वार्धक्य प्रारम्भ 14/20,
	8	14	श.	21	1	विशा.	7	16	सु.	22	48	वृश्चि.			7	11	17	16	7	5	17	20	7	7	17	29	6	35	17	4	8	भ. 7/49 तक, बुध ज्ये. में 12/46.
	9	30	र.	23	10	अनु.	9	59	धृ.	23	19	वृश्चि.			7	12	17	17	7	6	17	20	7	8	17	30	6	36	17	4	9	
मार्गशीर्ष शुक्ल	10	1	च.	25	3	ज्येष्ठा	12	27	शू.	23	38	धनु	12	27	7	13	17	17	7	7	17	20	7	9	17	30	6	36	17	4	10	मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, गुरु अस्त 14/20,
	11	2	मं.	26	37	मूल	14	39	गं.	23	43	धनु			7	14	17	17	7	7	17	21	7	9	17	30	6	37	17	5	11	चन्द्र दर्शन, मु. 30,
	12	3	बु.	27	50	पू.षा.	16	32	वृ.	23	33	मकर	22	58	7	14	17	17	7	8	17	21	7	10	17	30	6	38	17	5	12	
	13	4	गु.	28	41	उ.षा.	18	5	ध्रु.	23	6	मकर			7	15	17	18	7	9	17	21	7	11	17	31	6	38	17	5	13	भ. 16/16 से 28/41 तक,
	14	5	शु.	29	5	श्रव.	19	14	व्या.	22	20	मकर			7	16	17	18	7	9	17	21	7	11	17	31	6	39	17	6	14	
	15	6	श.	29	0	धनि.	19	55	ह.	21	11	कुम्भ	7	38	7	16	17	18	7	10	17	22	7	12	17	31	6	39	17	6	15	पंचक प्रारम्भ 7/38, स्कन्द(गुह) षष्ठी, चम्पा षष्ठी (महाराष्ट्र)
	16	7	र.	28	20	शत.	20	5	व.	19	37	कुम्भ			7	17	17	18	7	11	17	22	7	12	17	32	6	40	17	6	16	भ. 28/20 बाद, सं. सूर्य मूल धनु में 13/27, मु. 15, (A)
	17	8	चं.	27	5	पू.भा.	19	40	सि.	17	35	मीन	13	49	7	18	17	19	7	11	17	22	7	13	17	32	6	41	17	7	17	भ. 15/43 तक, शुक्र विशा. में 15/10,
	18	9	मं.	25	15	उ.भा.	18	41	व्य.	15	5	मीन			7	18	17	19	7	12	17	23	7	14	17	32	6	41	17	7	18	
	19	10	बु.	22	52	रेव.	17	8	व.	12	6	मेष	17	8	7	19	17	20	7	12	17	23	7	14	17	33	6	42	17	7	19	पंचक समाप्त 17/08, शनि वक्री 19/40,
	20	11	गु.	20	2	अश्वि.	15	7	प.	8	47	मेष			7	19	17	20	7	13	17	24	7	15	17	33	6	42	17	8	20	भ. 9/27 से 20/02 तक. मोक्षदा एकादशी व्रत (B)
									शि.	29	5																					
	21	12	शु.	16	50	भर.	12	43	सि.	25	9	वृष	18	4	7	20	17	21	7	14	17	24	7	15	17	34	6	43	17	8	21	गुरु मूल 3 में 20/25, प्रदोषव्रत,
	22	13	श.	13	27	कृत्ति.	10	5	सा.	21	7	वृष			7	20	17	21	7	14	17	25	7	16	17	34	6	43	17	9	22	सूर्य सायन मकर में 11/38, उत्तरायण प्रारम्भ, (C)
	23	14/	र.	10	2	रोहि.	7	24	शु.	17	6	मिथुन	18	5	7	21	17	22	7	15	17	25	7	16	17	35	6	44	17	9	23	भ. 10/02 से 20/23 तक, श्रीसत्यनारायण व्रत, (D)
		15		30	46	मृग.	28	50																								पूर्णिमा तिथिक्षय,
पौष कृष्ण	24	1	चं.	27	49	आर्द्रा	26	34	शु.	13	16	मिथुन			7	21	17	22	7	15	17	26	7	17	17	35	6	44	17	10	24	पौष कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,
	25	2	मं.	25	22	पुन.	24	48	ब्र.	9	44	कर्क	19	11	7	22	17	23	7	15	17	26	7	17	17	36	6	45	17	10	25	बुध पू. षा. में 10/18, शुक्र वृश्चिक में 23/37,
									ऐं.	30	38																					
	26	3	बु.	23	34	पुष्य	23	40	वै.	28	5	कर्क			7	22	17	23	7	16	17	27	7	18	17	36	6	45	17	11	26	भ. 12/27 से 23/34 तक, राहु धनि. 4, केतु मघा (E)
	27	4	गु.	22	32	आश्ले.	23	17	वि.	26	10	सिंह	23	17	7	23	17	24	7	16	17	27	7	18	17	37	6	46	17	12	27	श्रीगणेश चतुर्थी व्रत,
	28	5	शु.	22	21	मघा	23	43	प्री.	24	54	सिंह			7	23	17	24	7	17	17	28	7	18	17	38	6	46	17	12	28	शुक्र अनु. में 18/00,
	29	6	श.	22	59	पू.फा.	24	57	आ.	24	16	कन्या	31	23	7	23	17	25	7	17	17	29	7	19	17	38	6	46	17	13	29	भ. 22/59 बाद, सूर्य पू. षा. में 15/44, वक्री मंगल (F)
	30	7	र.	24	24	उ.फा.	26	55	सौ.	24	12	कन्या			7	24	17	26	7	17	17	29	7	19	17	39	6	47	17	13	30	भ. 11/42 तक,
	31	8	चं.	25	25	हस्त	29	27	शो.	24	36	कन्या			7	24	17	26	7	18	17	30	7	19	17	39	6	47	17	14	31	

गुरु अस्त
10 दिसम्बर

(A) पुण्यकाल सारा दिन, बुध मूल धनु में 24/36, मित्र सप्तमी, (B) (स.), श्रीगीता जयन्ती, (C) शिशिर ऋतु प्रारम्भ, (D) श्रीदत्त जयन्ती, (E) 2 में 14/18, जोड़ मेला श्री फतेहगढ साहिब (पं.) प्रारम्भ, (F) मृग. में 28/06.

श्री वि. सं 2064 — **तिथ्यादि पंचाग (भा. स्टैं. टा.)** — जनवरी, सन् 2008 ई.

मास पक्ष	जनवरी	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घं.	मि.	योग	समाप्ति-काल घं.	मि.	चन्द्रराशि - प्रवेशकाल	घं.	मि.	चण्डीगढ सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
पौष कृष्ण	1	9	मं.	28	51	चित्रा	—	—	अ.	25	19	तुला	18	51	7	24	17	27	7	18	17	31	7	20	17	40	6	47	17	15	1	जनवरी (सन् 2008 ई.) प्रारम्भ,
	2	10	बु.	—	—	चित्रा	6	19	सु.	26	11	तुला			7	24	17	26	7	18	17	31	7	20	17	41	6	48	17	15	2	भ. 18/08 बाद, बुध उ.षा. में 16/22,
	3	10	गु.	7	27	स्वाती	11	21	धृ.	27	2	तुला			7	25	17	29	7	18	17	32	7	20	17	41	6	48	17	16	3	भ. 7/27 तक,
	4	11	शु.	10	0	विशा.	14	18	शू.	27	46	वृश्चि.	7	34	7	25	17	29	7	19	17	33	7	20	17	42	6	48	17	17	4	बुध मकर में 17/27, गुरु उदित 9/52, सफला (A)
	5	12	श.	12	21	अनु.	17	1	गं.	28	17	वृश्चि.			7	25	17	30	7	19	17	33	7	21	17	43	6	48	17	17	5	गुरु मूल 4 में 9/54, शनि प्रदोष व्रत,
	6	13	र.	14	21	ज्येष्ठा	19	24	वृ.	28	30	धनु	19	24	7	25	17	31	7	19	17	34	7	21	17	44	6	49	17	18	6	भ. 14/21 से 27/09 तक,
	7	14	चं.	15	57	मूल	21	24	ध्रु.	28	24	धनु			7	25	17	32	7	19	17	35	7	21	17	44	6	49	17	19	7	गुरु बाल्य समाप्त 9/52,
	8	30	मं.	17	7	पू.षा.	22	59	व्या.	27	58	मकर	29	19	7	25	17	32	7	19	17	36	7	21	17	45	6	49	17	20	8	बुध पश्चिम में उदित 20/54, शुक्र ज्ये. में 17/47,(B)
पौष शुक्ल	9	1	बु.	17	52	उ.षा.	24	10	ह.	27	14	मकर			7	25	17	33	7	19	17	37	7	21	17	46	6	49	17	20	9	पौष शुक्ल पक्ष प्रारम्भ,
	10	2	गु.	18	12	श्रव.	24	58	व.	26	11	मकर			7	25	17	34	7	19	17	37	7	21	17	47	6	49	17	21	10	चन्द्र दर्शन, मु. 45, बुध श्रव. में 21/21,
	11	3	शु.	18	9	धनि.	25	24	सि.	24	50	कुम्भ	13	14	7	25	17	35	7	19	17	38	7	21	17	47	6	49	17	22	11	भ. 29/55 बाद, पंचक प्रारम्भ 13/14, सूर्य उ.षा. (C)
	12	4	श.	17	43	शत.	25	27	व्य.	23	12	कुम्भ			7	25	17	36	7	19	17	39	7	21	17	48	6	49	17	23	12	भ. 17/43 तक, नेप्च्यून धनि. 2 में 23/25,
	13	5	र.	16	54	पू.भा.	25	8	द.	21	16	मीन	19	15	7	25	17	37	7	19	17	40	7	21	17	49	6	49	17	23	13	लोहड़ी (पं.)
	14	6	चं.	15	43	उ.भा.	24	28	प.	19	3	मीन			7	25	17	37	7	19	17	41	7	21	17	50	6	49	17	24	14	सं. सूर्य मकर में 24/08, मु. 45, पुण्यकाल अगले (D)
	15	7	मं.	14	10	रेव.	23	26	शि.	16	32	मेष	23	26	7	25	17	38	7	19	17	41	7	21	17	51	6	49	17	25	15	भ. 14/10 से 25/13 तक, पंचक समाप्त 23/26,
	16	8	बु.	12	16	अश्वि.	22	4	सि.	13	44	मेष			7	25	17	39	7	19	17	42	7	21	17	51	6	49	17	26	16	
	17	9	गु.	10	3	भर.	20	26	सा.	10	42	वृष	25	59	7	25	17	40	7	19	17	43	7	21	17	52	6	49	17	26	17	
	18	10/	शु.	7	35	कृत्ति.	18	34	शु.	7	28	वृष			7	24	17	41	7	19	17	44	7	21	17	53	6	49	17	27	18	भ. 18/16 से 28/57 तक, पुत्रदा एकादशी व्रत (स्मा.)
		11		28	57				शु.	28	6																					एकादशी तिथिक्षय,
	19	12	श.	26	15	रोहि.	16	36	ब्र.	24	40	मिथुन	27	37	7	24	17	42	7	19	17	45	7	21	17	54	6	49	17	28	19	बुध धनि. में 22/12, गुरु पू. षा. 1 में 29/21, (E)
	20	13	र.	23	37	मृग.	14	38	ऐं.	21	17	मिथुन			7	24	17	43	7	18	17	46	7	21	17	54	6	49	17	29	20	सूर्य सायन कुम्भ में 22/14, प्रदोष व्रत,
	21	14	चं.	21	11	आर्द्रा	12	48	वै.	18	3	कर्क	29	36	7	24	17	44	7	18	17	46	7	20	17	55	6	49	17	29	21	भ. 21/11 बाद,
	22	15	मं.	19	5	पुन.	11	15	वि.	15	4	कर्क			7	23	17	45	7	18	17	47	7	20	17	56	6	49	17	30	22	भ. 8/07 तक, श्रीसत्यनारायण व्रत, माघ स्नान प्रारम्भ (F)
माघ कृष्ण	23	1	बु.	17	26	पुष्य	10	7	प्री.	12	26	कर्क			7	23	17	45	7	18	17	48	7	20	17	57	6	48	17	31	23	माघ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,
	24	2	गु.	16	23	आश्ले.	9	31	आ.	10	15	सिंह	9	31	7	23	17	46	7	17	17	49	7	20	17	58	6	48	17	32	24	भ. 28/12 बाद, सूर्य श्रवण में 19/57,
	25	3	शु.	16	1	मघा	9	33	सौ.	8	35	सिंह			7	22	17	47	7	17	17	50	7	19	17	58	6	48	17	32	25	भ. 16/01 तक, श्रीगणेश (संकष्ट) चतुर्थी व्रत, (G)
	26	4	श.	16	22	पू.फा.	10	18	शो.	7	28	कन्या	16	35	7	22	17	48	7	17	17	51	7	19	17	59	6	47	17	33	26	वक्री शनि मघा 4 में 19/31, भारत गणतन्त्र दिवस,
									अ.	30	55																					
	27	5	र.	17	26	उ.फा.	11	44	सु.	30	53	कन्या			7	21	17	49	7	16	17	51	7	19	18	0	6	47	17	34	27	
	28	6	चं.	19	8	हस्त	13	48	धृ.	31	16	तुला	27	2	7	21	17	50	7	16	17	52	7	18	18	1	6	47	17	35	28	भ. 19/08 बाद, बुध वक्री 26/02,
	29	7	मं.	21	20	चित्रा	16	22	शू.	—	—	तुला			7	20	17	51	7	15	17	53	7	18	18	2	6	46	17	35	29	भ. 8/13 तक,
	30	8	बु.	23	48	स्वाती	19	14	शू.	7	57	तुला			7	20	17	52	7	15	17	54	7	17	18	2	6	46	17	36	30	मंगल मार्गी 28/03, बुध पश्चिम में अस्त 29/09, (H)
	31	9	गु.	26	20	विशा.	22	12	गं.	8	46	वृश्चि.	15	27	7	19	17	53	7	14	17	55	7	17	18	3	6	46	17	37	31	

गुरु उदित 4 जनवरी

(A) एकादशी व्रत (स.), (B) भौमवती अमावस, (C) में 17/38, (D) दिन 16/09 तक, मकर संक्रान्ति, (E) शुक्र मूल धनु में 15/40, पुत्रदा एकादशी व्रत (वै.), (F) पौषी पूर्णिमा, (G) (चन्द्रोदय घं. 20 मि. 50), (H) शुक्र पू.षा. में 12/14.

मास पक्ष	फरवरी	तिथि	वार	समाप्तिकाल घं.	समाप्तिकाल मि.	नक्षत्र	समाप्तिकाल घं.	समाप्तिकाल मि.	योग	समाप्तिकाल घं.	समाप्तिकाल मि.	चन्द्रराशि - प्रवेशकाल	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	जयपुर सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	वाराणसी सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
माघ कृष्ण	1	10	शु.	28	41	अनु.	25	1	वृ.	9	35	वृश्चि.			7	19	17	53	7	14	17	56	7	17	18	4	6	45	17	38	1	भ. 15/31 से 28/41 तक, फरवरी प्रारम्भ,
	2	11	श.	30	40	ज्येष्ठा	27	31	धु.	10	13	धनु	27	31	7	18	17	54	7	13	17	56	7	16	18	5	6	45	17	38	2	षट्तिला एकादशी व्रत (स.),
	3	12	र.	—	—	मूल	29	34	व्या.	10	33	धनु			7	17	17	55	7	13	17	57	7	16	18	6	6	44	17	39	3	
	4	12	चं.	8	10	पू.षा.	31	5	ह.	10	31	धनु			7	17	17	56	7	12	17	58	7	15	18	6	6	44	17	40	4	गुरु पू.षा. 2 में 16/03, सोम प्रदोष व्रत,
	5	13	मं.	9	5	उ.षा.	—	—	व.	10	2	मकर	13	22	7	16	17	57	7	11	17	59	7	14	18	7	6	43	17	41	5	भ. 9/05 से 21/16 तक,
	6	14	बु.	9	26	उ.षा.	8	2	सि.	9	8	मकर			7	15	17	58	7	11	18	0	7	14	18	8	6	43	17	41	6	सूर्य धनि. में 23/04, वक्री बुध श्रव. में 24/26,
	7	30	गु.	9	14	श्रव.	8	28	व्य.	7	48	कुम्भ	20	29	7	15	17	59	7	10	18	1	7	13	18	9	6	42	17	42	7	पंचक प्रारम्भ 20/29, माघी अमा, मौनी अमावस, (A)
									व.	30	4																					
माघ शुक्ल	8	1	शु.	8	33	धनि.	8	24	प.	28	1	कुम्भ			7	14	18	0	7	9	18	1	7	13	18	9	6	42	17	43	8	माघ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ; चन्द्र दर्शन, मु. 15,
	9	2/	श.	7	26	शत.	7	56	शि.	25	41	मीन	25	22	7	13	18	1	7	9	18	2	7	12	18	10	6	41	17	43	9	गौरी तृतीया (गोंतरी),
		3		29	59	पू.भा.	31	8																								तृतीया तिथिक्षय,
	10	4	र.	28	15	उ.भा.	30	4	सि.	23	7	मीन			7	12	18	1	7	8	18	3	7	11	18	11	6	40	17	44	10	भ. 17/06 से 28/15 तक, शुक्र उ.षा. में 7/52, (B)
	11	5	चं.	26	20	रेव.	28	49	सा.	20	24	मेष	28	49	7	11	18	2	7	7	18	4	7	11	18	12	6	40	17	45	11	पंचक समाप्त 28/49, वसन्त पंचमी, श्री (लक्ष्मी)पंचमी,
	12	6	मं.	24	16	अश्वि.	27	27	शु.	17	33	मेष			7	11	18	3	7	6	18	4	7	10	18	12	6	39	17	45	12	बुध पूर्व में उदित 29/48, शुक्र मकर में 24/42,
	13	7	बु.	22	8	भर.	26	0	शु.	14	37	मेष			7	10	18	4	7	6	18	5	7	9	18	13	6	38	17	46	13	भ. 22/08 बाद, सं. सूर्य कुम्भ में 13/05, मु. 15, (C)
	14	8	गु.	19	58	कृत्ति.	24	32	ब्र.	11	40	वृष	7	38	7	9	18	5	7	5	18	6	7	8	18	14	6	38	17	47	14	भ. 9/03 तक, भीष्माष्टमी,
	15	9	शु.	17	50	रोहि.	23	7	ऐं.	8	43	वृष			7	8	18	6	7	4	18	7	7	8	18	14	6	37	17	47	15	
									वै.	29	48																					**चन्द्रग्रहण 21 फरवरी**
	16	10	श.	15	47	मृग.	21	47	वि.	27	0	मिथुन	10	26	7	7	18	6	7	3	18	7	7	7	18	15	6	36	17	48	16	भ. 26/50 बाद,
	17	11	र.	13	52	आर्द्रा.	20	37	प्री.	24	19	मिथुन			7	6	18	7	7	2	18	8	7	6	18	16	6	36	17	49	17	भ. 13/52 तक, जया एकादशी व्रत (स.), भीष्म द्वादशी,
	18	12	चं.	12	10	पुन.	19	40	आ.	21	50	कर्क	13	52	7	5	18	8	7	2	18	9	7	5	18	16	6	35	17	49	18	राहु धनि. 3, केतु मघा 1 में 11/46, प्लूटो (D)
	19	13	मं.	10	44	पुष्य	19	1	सौ.	19	36	कर्क			7	4	18	9	7	1	18	10	7	4	18	17	6	34	17	50	19	सूर्य शत. में 27/34, सूर्य सायन मीन में 12/20, (E)
	20	14	बु.	9	39	आश्ले.	18	44	शो.	17	40	सिंह	18	44	7	3	18	10	7	0	18	10	7	4	18	18	6	33	17	50	20	भ. 9/39 से 21/20 तक, शुक्र श्रव. में 27/05, (F)
	21	15	गु.	9	0	मघा.	18	55	अ.	16	6	सिंह			7	2	18	10	6	59	18	11	7	3	18	18	6	32	17	51	21	गुरु पू.षा. 3 में 8/16, माघी पूर्णिमा, माघ स्नान (G)
फाल्गुन कृष्ण	22	1	शु.	8	51	पू.फा.	19	35	सु.	14	56	कन्या	25	51	7	1	18	11	6	58	18	12	7	2	18	19	6	32	17	52	22	फाल्गुन कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,
	23	2	श.	9	16	उ.फा.	20	49	धृ.	14	12	कन्या			7	0	18	12	6	57	18	13	7	1	18	20	6	31	17	52	23	भ. 21/45 बाद,
	24	3	र.	10	14	हस्त	22	35	शू.	13	54	कन्या			6	59	18	13	6	56	18	13	7	0	18	20	6	30	17	53	24	भ. 10/14 तक, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत,
	25	4	चं.	11	45	चित्रा	24	52	गं.	14	1	तुला	11	40	6	58	18	13	6	55	18	14	6	59	18	21	6	29	17	53	25	
	26	5	मं.	13	45	स्वाती	27	32	वृ.	14	29	तुला			6	57	18	14	6	54	18	15	6	58	18	22	6	28	17	54	26	
	27	6	बु.	16	5	विशा.	30	25	धु.	15	13	वृश्चि.	23	41	6	56	18	15	6	53	18	15	6	57	18	22	6	27	17	55	27	भ. 16/05 से 29/20 तक,
	28	7	गु.	18	34	अनु.	—	—	व्या.	16	3	वृश्चि.			6	55	18	16	6	52	18	16	6	56	18	23	6	26	17	55	28	
	29	8	शु.	20	59	अनु.	9	21	ह.	16	51	वृश्चि.			6	54	18	16	6	51	18	17	6	55	18	23	6	25	17	56	29	

(A) महोदय योग (7 घ. 48 मि. तक). (B) तिल–वरद–कुन्द चतुर्थी. (C) पुण्यकाल सारा दिन. **यूरेनस पू.भा. 2 में 30/48**, रथ सप्तमी (पूर्वारुणोदय वाली), आरोग्य सप्तमी. (D) मूल 3 में 17/36. **सोम प्रदोष व्रत**. (E) बुध मार्गी 8/27. वसन्त ऋतु प्रारम्भ. (F) श्रीसत्यनारायण व्रत. (G) समाप्त. जन्मदिन श्री गुरु रविदास जी. चन्द्रग्रहण (उत्तर–पश्चिमी भारत में अत्यल्प समय के लिए दृश्य) (देखें पृष्ठ 9).

श्री वि. सं 2064 — **तिथ्यादि पंचाग (भा. स्टैं. टा.)** — मार्च, सन् 2008 ई.

मास पक्ष	मार्च	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घं.	मि.	योग	समाप्ति-काल घं.	मि.	चन्द्रराशि - प्रवेशकाल	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	जयपुर सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	वाराणसी सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
फाल्गुन कृष्ण	1	9	श.	23	5	ज्ये.	12	5	व.	17	27	धनु	12	5	6	53	18	17	6	50	18	17	6	54	18	24	6	25	17	56	1	मार्च प्रारम्भ.
	2	10	र.	24	42	मूल	14	25	सि.	17	42	धनु			6	52	18	18	6	49	18	18	6	53	18	25	6	24	17	57	2	भ. 11/54 से 24/42 तक, शुक्र धनि. में 21/59,
	3	11	चं.	25	41	पू.षा.	16	12	व्य.	17	30	मकर	22	32	6	50	18	19	6	48	18	18	6	52	18	25	6	23	17	57	3	विजया एकादशी व्रत (स.),
	4	12	मं.	25	57	उ.षा.	17	19	व.	16	47	मकर			6	49	18	19	6	47	18	19	6	51	18	26	6	22	17	58	4	सूर्य पू. भा. में 9/54, बुध धनि. में 20/35,
	5	13	बु.	25	31	श्रव.	17	45	प.	15	31	कुम्भ	29	42	6	48	18	20	6	46	18	20	6	50	18	26	6	21	17	58	5	भ. 25/31 बाद, पंचक प्रारम्भ 29/42, प्रदोष व्रत,
	6	14	गु.	24	25	धनि.	17	30	शि.	13	42	कुम्भ			6	47	18	21	6	45	18	20	6	49	18	27	6	20	17	59	6	भ. 12/57 तक, मंगल आर्द्रा में 15/06, श्रीमहाशिवरात्रि व्रत,
	7	30	शु.	22	44	शत.	16	40	सि.	11	23	कुम्भ			6	46	18	21	6	43	18	21	6	48	18	27	6	19	17	59	7	
फाल्गुन शुक्ल	8	1	श.	20	36	पू.भा.	15	21	सा.	8	40	मीन	9	43	6	45	18	22	6	42	18	22	6	47	18	28	6	18	18	0	8	फाल्गुन शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, शुक्र कुम्भ में 7/23,
									शु.	29	37																					
	9	2	र.	18	8	उ.भा.	13	40	शु.	26	21	मीन			6	43	18	23	6	41	18	22	6	46	18	28	6	17	18	0	9	चन्द्रदर्शन, मु. 30, जन्म दिन श्रीरामकृष्ण परमहंस,
	10	3	चं.	15	28	रेव.	11	46	ब्र.	22	58	मेष	11	46	6	42	18	23	6	40	18	23	6	45	18	29	6	16	18	1	10	भ. 26/06 बाद, पंचक समाप्त 11/46, बुध कुम्भ में (A)
	11	4	मं.	12	44	अश्वि.	9	47	ऐं.	19	35	मेष			6	41	18	24	6	39	18	23	6	44	18	30	6	15	18	1	11	भ. 12/44 तक, गुरु पू.षा. 4 में 11/01,
	12	5	बु.	10	4	भर.	7	50	वै.	16	15	वृष	13	22	6	40	18	25	6	38	18	24	6	43	18	30	6	14	18	2	12	
						कृत्ति.	30	2																								
	13	6/	गु.	7	33	रोहि.	28	29	वि.	13	5	वृष			6	39	18	25	6	37	18	25	6	42	18	31	6	13	18	2	13	भ. 29/17 बाद, शुक्र शत. में 16/47,
		7		29	17																											सप्तमी तिथिक्षय,
	14	8	शु.	27	19	मृग.	27	13	प्री.	10	7	मिथुन	15	49	6	37	18	26	6	36	18	25	6	41	18	31	6	12	18	3	14	भ. 16/17 तक, सं. सूर्य मीन में 9/57, मु. 30, (B)
	15	9	श.	25	42	आर्द्रा	26	19	आ.	7	26	मिथुन			6	36	18	27	6	34	18	26	6	40	18	32	6	11	18	3	15	बुध शत. में 15/22,
									सौ.	29	1																					
	16	10	र.	24	28	पुन.	25	46	शो.	26	54	कर्क	19	52	6	35	18	27	6	33	18	26	6	39	18	32	6	10	18	4	16	
	17	11	चं.	23	37	पुष्य	25	37	अ.	25	6	कर्क			6	34	18	28	6	32	18	27	6	38	18	33	6	9	18	4	17	भ. 12/01 से 23/37 तक, सूर्य उ.भा. में 18/18, (C)
	18	12	मं.	23	9	आश्ले.	25	50	सु.	23	37	सिंह	25	50	6	33	18	29	6	31	18	28	6	37	18	33	6	8	18	5	18	
	19	13	बु.	23	5	मघा	26	27	धृ.	22	26	सिंह			6	31	18	29	6	30	18	28	6	35	18	34	6	7	18	5	19	प्रदोष व्रत,
	20	14	गु.	23	25	पू.फा.	27	27	शू.	21	35	सिंह			6	30	18	30	6	29	18	29	6	34	18	34	6	6	18	5	20	भ. 23/25 बाद, सूर्य सायन मेष में 11/19, उत्तर गोल (D)
	21	15	शु.	24	10	उ.फा.	28	52	गं.	21	2	कन्या	9	46	6	29	18	31	6	28	18	29	6	33	18	35	6	4	18	6	21	भ. 11/47 तक, श्रीसत्यनारायण व्रत, होलिका दहन, (E)
चैत्र कृष्ण	22	1	श.	25	20	हस्त	—	—	वृ.	20	49	कन्या			6	28	18	31	6	26	18	30	6	32	18	35	6	3	18	6	22	चैत्र कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, वसन्त उत्सव, होला मेला (F)
	23	2	र.	26	54	हस्त	6	40	ध्रु.	20	54	तुला	19	43	6	26	18	32	6	25	18	30	6	31	18	36	6	2	18	7	23	
	24	3	चं.	28	51	चित्रा	8	52	व्या.	21	18	तुला			6	25	18	33	6	24	18	31	6	30	18	36	6	1	18	7	24	भ. 15/52 से 28/51 तक, बुध पू. भा. में 13/22, (G)
	25	4	मं.	—	—	स्वाती	11	25	ह.	21	57	तुला			6	24	18	33	6	23	18	31	6	29	18	37	6	0	18	8	25	श्रीगणेश चतुर्थी व्रत,
	26	4	बु.	7	7	विशा.	14	14	व.	22	46	वृश्चि.	7	31	6	23	18	34	6	22	18	32	6	28	18	37	5	59	18	8	26	
	27	5	गु.	9	34	अनु.	17	12	सि.	23	39	वृश्चि.			6	21	18	34	6	21	18	33	6	27	18	38	5	58	18	9	27	मेला श्री शीतला माता, कुराली (पं.),
	28	6	शु.	12	1	ज्येष्ठा	20	7	व्य.	24	29	धनु	20	7	6	20	18	35	6	19	18	33	6	26	18	38	5	57	18	9	28	भ. 12/01 से 25/09 तक,
	29	7	श.	14	17	मूल	22	47	व.	25	5	धनु			6	19	18	36	6	18	18	34	6	24	18	39	5	56	18	9	29	
	30	8	र.	16	9	पू.षा.	25	1	प.	25	20	धनु			6	18	18	36	6	17	18	34	6	23	18	39	5	55	18	10	30	सूर्य रेव. में 29/13, बुध मीन में 13/36,
	31	9	चं.	17	26	उ.षा.	26	37	शि.	25	4	मकर	7	29	6	16	18	37	6	16	18	35	6	22	18	40	5	54	18	10	31	भ. 29/42 बाद,

(A) 14/34, वक्री शनि मघा 3 में 15/54, (B) पुण्यकाल 16/22 तक, होलाष्टक प्रारम्भ, (C) आमला एकादशी व्रत (स.), गोविन्द द्वादशी, (D) प्रारम्भ, महाविषुव दिन, (E) होलाष्टक समाप्त, (F) श्री आनन्दपुर साहिब (पं.), (G) शुक्र पू. भा. में 11/43,

मास पक्ष	अंक	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घं.	मि.	योग	समाप्ति-काल घं.	मि.	चन्द्रराशि - प्रवेशकाल	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	जयपुर सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	वाराणसी सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
चैत्र कृष्ण	1	10	मं.	17	58	श्रव.	27	29	सि.	24	14	मकर			6	15	18	38	6	15	18	35	6	21	18	40	5	53	18	11	1	भ. 17 / 58 तक, बुध उभा. में 11 / 13, शुक्र मीन में (A)
	2	11	बु.	17	42	धनि.	27	33	सा.	22	45	कुम्भ	15	37	6	14	18	38	6	14	18	36	6	20	18	41	5	52	18	11	2	पचक प्रारम्भ 15 / 37, प्लूटो वक्री 14 / 51, पापमोचनी (B)
	3	12	गु.	16	38	शत.	26	51	शु.	20	39	कुम्भ			6	13	18	39	6	13	18	36	6	19	18	41	5	51	18	12	3	बुध पूर्व में अस्त 9 / 33, प्रदोष व्रत, वारुणी पर्व,
	4	13	शु.	14	49	पूभा.	25	28	शु.	17	57	मीन	19	52	6	12	18	39	6	11	18	37	6	18	18	42	5	50	18	12	4	भ. 14 / 49 से 25 / 36 तक, शुक्र उभा में 6 / 46,
	5	14	श.	12	22	उ.भा.	23	30	ब्र.	14	46	मीन			6	10	18	40	6	10	18	38	6	17	18	42	5	49	18	12	5	गुरु उ. षा. 1 में 26 / 12, मेला पिहोवा तीर्थ (हरि.),
	6	30	र.	9	25	रेव.	21	8	ऐं.	11	11	मेष	21	8	6	9	18	41	6	9	18	38	6	16	18	43	5	48	18	13	6	पंचक समाप्त 21 / 08, अमावस, चान्द्र संवत्सर 2064 (C)

(A) 13 / 59, अप्रैल प्रारम्भ (B) एकादशी व्रत (स.), (C) वि. पूर्ण, वासन्त नवरात्र प्रारम्भ.

व्रत–पर्व विवेक

(व्रत–पर्वों की तिथियों के निर्णायक नियमों पर एक प्रामाणिक पुस्तक)

लेखक : प्रियव्रत शर्मा,

इस पुस्तक में नवरात्र, श्रीरामनवमी, रक्षाबन्धन, श्रीकृष्णजन्माष्टमी, प्रदोषव्रत, एकादशी व्रत आदि सभी हिन्दु व्रत–पर्वों की तिथियों (तारीखों) के निर्णय के नियम ससिद्धान्त अत्यन्त सुबोध, सरल शैली/भाषा में दिए गए हैं, जिन्हें पढ़कर कोई भी व्यक्ति इन व्रत–पर्वों की तिथियों का निर्धारण स्वयं सरलता से कर सकता है। सभी व्रत–पर्वों से सम्बद्ध पूजा–अर्चन आदि के मन्त्र एवं विधान तथा प्रदोष, एकादशी आदि व्रतों के उद्यापन की तिथि का निर्णय और अनुष्ठानप्रकार भी दिया गया है, जिसे कोई भी व्यक्ति बिना किसी पण्डित की सहायता के स्वयं कर सकता है।

व्रत–पर्वों के निर्णायक धर्मशास्त्रीय संस्कृतवाक्य हिन्दी अनुवादसहित विस्तृत विवेचनपूर्वक उद्धृत किए गए हैं। अनेक ऐसे मौलिक कोष्ठक दिए गए हैं, जिनकी सहायता से प्रातः, संगव, मध्याह्न, अपराह्ण, सायाह्न, प्रदोष, निशीथ, अरुणोदय आदि कालों के स्थानीय प्रारम्भ–समाप्तिकाल बिना गणित के तुरन्त जानकर व्रत–पर्वों की तिथियों का निर्णय करने में कोई कठिनाई नहीं होती। व्रत–पर्वसम्बन्धी अनेक समस्याओं के प्रमाणपूर्वक शास्त्रीय समाधान भी दिए गए हैं। सिक्ख, क्रिश्चियन एवं मुस्लिम त्योहारों की तारीखों के निर्णयप्रकार भी विस्तार से बतलाए गए हैं।

डायरी, पंचांग, जन्त्री तथा कैलेण्डर के निर्माता–प्रकाशकों एवं ज्योतिषियों के लिए यह पुस्तक परम उपयोगी है।

पुस्तक शीघ्र प्रकाशित होने जा रही है।

श्रीमती वीना चतुर्वेदी,
अभिजित् प्रकाशन

चन्द्रमा का नक्षत्रचरणों में प्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.)

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
जनवरी 2007 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1/2	मृग.	22	32	4	19	10	8	15	58
2/3	आर्द्रा	21	49	3	42	9	37	15	33
3/4	पुन.	21	31	3	31	9	33	15	38
4/5	पुष्य	21	44	3	53	10	4	16	18
5/6	आश्ले.	22	34	4	52	11	13	17	37
7	मघा	0	2	6	31	13	1	19	34
8	पू.फा.	2	9	8	46	15	25	22	5
9/10	उ.फा.	4	47	11	31	18	15	1	1
10/11	हस्त	7	47	14	34	21	20	4	7
11/12	चित्रा	10	54	17	40	0	25	7	10
12/13	स्वाती	13	53	20	34	3	14	9	52
13/14	विशा.	16	28	23	2	5	33	12	2
14/15	अनु.	18	28	0	52	7	14	13	32
15/16	ज्येष्ठा	19	48	2	1	8	11	14	19
16/17	मूल	20	24	2	26	8	26	14	24
17/18	पू.षा.	20	19	2	12	8	3	13	51
18/19	उ.षा.	19	38	1	24	7	7	12	49
19/20	श्रव.	18	30	0	9	5	48	11	25
20/21	धनि.	17	1	22	37	4	12	9	46
21/22	शत.	15	20	20	54	2	28	8	1
22/23	पू.भा.	13	35	19	8	0	42	6	16
23/24	उ.भा.	11	50	17	25	23	0	4	35
24/25	रेव.	10	11	15	48	21	25	3	3
25/26	अश्वि.	8	42	14	22	20	2	1	43
26/27	भर.	7	25	13	8	18	52	0	36
27	कृत्ति.	6	22	12	9	17	56	23	45
28	रोहि.	5	34	11	25	17	17	23	10
29	मृग.	5	4	11	0	16	56	22	54
30	आर्द्रा	4	53	10	54	16	56	23	0
31	पुन.	5	5	11	11	17	20	23	29

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
फरवरी 2007 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1/2	पुष्य	5	41	11	54	18	9	0	26
2/3	आश्ले.	6	45	13	6	19	28	1	52
3/4	मघा	8	19	14	47	21	17	3	48
4/5	पू.फा.	10	22	16	57	23	34	6	13
5/6	उ.फा.	12	53	19	34	2	17	9	0
6/7	हस्त	15	45	22	30	5	17	12	3
7/8	चित्रा	18	50	1	37	8	23	15	10
8/9	स्वाती	21	55	4	40	11	24	18	6
10	विशा.	0	47	7	27	14	4	20	39
11	अनु.	3	13	9	44	16	12	22	38
12	ज्येष्ठा	5	1	11	22	17	39	23	54
13/14	मूल	6	6	12	14	18	20	0	23
14/15	पू.षा.	6	23	12	20	18	15	0	7
15	उ.षा.	5	56	11	42	17	26	23	8
16	श्रव.	4	48	10	25	16	1	21	34
17	धनि.	3	7	8	37	14	6	19	34
18	शत.	1	1	6	27	11	52	17	16
18/19	पू.भा.	22	40	4	4	9	27	14	50
19/20	उ.भा.	20	13	1	36	7	0	12	24
20/21	रेव.	17	49	23	14	4	40	10	7
21/22	अश्वि.	15	35	21	5	2	35	8	7
22/23	भर.	13	40	19	14	0	51	6	28
23/24	कृत्ति.	12	8	17	49	23	32	5	16
24/25	रोहि.	11	3	16	52	22	42	4	34
25/26	मृग.	10	29	16	25	22	23	4	23
26/27	आर्द्रा	10	25	16	30	22	36	4	44
27/28	पुन.	10	53	17	5	23	19	5	34

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
मार्च 2007 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1/2	आश्ले.	13	18	19	44	2	11	8	40
2/3	मघा	15	10	21	42	4	15	10	50
3/4	पू.फा.	17	26	0	3	6	42	13	22
4/5	उ.फा.	20	2	2	44	9	27	16	10
5/6	हस्त	22	55	5	39	12	25	19	11
7	चित्रा	1	57	8	43	15	30	22	16
8/9	स्वाती	5	2	11	48	18	33	1	18
9/10	विशा.	8	2	14	44	21	26	4	6
10/11	अनु.	10	44	17	21	23	56	6	29
11/12	ज्येष्ठा	13	0	19	29	1	55	8	19
12/13	मूल	14	40	20	59	3	15	9	28
13/14	पू.षा.	15	38	21	45	3	49	9	50
14/15	उ.षा.	15	49	21	44	3	37	9	27
15/16	श्रव	15	14	20	58	2	40	8	19
16/17	धनि.	13	56	19	31	1	3	6	33
17/18	शत.	12	1	17	28	22	53	4	16
18/19	पू.भा.	9	37	14	58	20	18	1	36
19	उ.भा.	6	54	12	11	17	28	22	44
20	रेव.	4	0	9	17	14	33	19	50
21	अश्वि.	1	8	6	26	11	45	17	5
21/22	भर.	22	26	3	49	9	13	14	38
22/23	कृत्ति.	20	6	1	35	7	6	12	39
23/24	रोहि.	18	14	23	52	5	32	11	14
24/25	मृग.	16	59	22	47	4	37	10	30
25/26	आर्द्रा	16	25	22	24	4	25	10	28
26/27	पुन.	16	35	22	44	4	55	11	10
27/28	पुष्य	17	26	23	45	6	7	12	31
28/29	आश्ले.	18	56	1	24	7	54	14	26
29/30	मघा	20	59	3	35	10	11	16	49
30/31	पू.फा.	23	28	6	9	12	50	19	32

चन्द्रमा का नक्षत्रचरणों में प्रवेशकाल (भा. स्टै. टा.)

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
अप्रैल 2007 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1	उ.फा.	2	16	9	0	15	44	22	29
2/3	हस्त	5	14	12	0	18	46	1	32
3/4	चित्रा	8	18	15	4	21	50	4	36
4/5	स्वाती	11	21	18	6	0	51	7	35
5/6	विशा.	14	18	21	1	3	42	10	23
6/7	अनु.	17	3	23	41	6	18	12	54
7/8	ज्येष्ठा	19	28	2	1	8	32	15	2
8/9	मूल	21	29	3	54	10	18	16	39
9/10	पू.षा.	22	58	5	14	11	28	17	40
10/11	उ.षा.	23	49	5	55	11	59	18	0
11/12	श्रव.	23	59	5	55	11	48	17	38
12/13	धनि.	23	26	5	11	10	54	16	34
13/14	शत.	22	12	3	47	9	20	14	51
14/15	पू.भा.	20	20	1	46	7	11	12	34
15/16	उ.भा.	17	56	23	17	4	35	9	53
16/17	रेव.	15	10	20	26	1	42	6	56
17/18	अश्वि.	12	11	17	25	22	40	3	55
18/19	भर.	9	10	14	25	19	42	0	59
19	कृत्ति.	6	18	11	37	16	59	22	22
20	रोहि.	3	46	9	13	14	41	20	12
21	मृग.	1	46	7	21	13	0	18	41
22	आर्द्रा	0	25	6	12	12	1	17	54
22/23	पुन.	23	51	5	50	11	52	17	58
24	पुष्य	0	6	6	18	12	33	18	50
25	आश्ले.	1	11	7	34	14	0	20	29
26	मघा	3	0	9	33	16	8	22	45
27/28	पू.फा.	5	24	12	5	18	47	1	30
28/29	उ.फा.	8	14	14	59	21	45	4	31
29/30	हस्त	11	17	18	4	0	51	7	38

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
मई 2007 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
30/1	चित्रा	14	24	21	11	3	57	10	42
1/2	स्वाती	17	27	0	11	6	54	13	37
2/3	विशा.	20	19	2	59	9	39	16	18
3/4	अनु.	22	55	5	32	12	7	18	41
5	ज्येष्ठा	1	14	7	46	14	16	20	45
6	मूल	3	12	9	39	16	3	22	26
7	पू.षा.	4	47	11	7	17	25	23	41
8/9	उ.षा.	5	55	12	8	18	18	0	27
9/10	श्रव.	6	33	12	37	18	40	0	40
10/11	धनि.	6	38	12	33	18	27	0	18
11	शत.	6	7	11	53	17	38	23	20
12	पू.भा.	5	0	10	38	16	14	21	48
13	उ.भा.	3	20	8	50	14	19	19	46
14	रेव.	1	11	6	35	11	58	17	19
14/15	अश्वि.	22	40	3	59	9	18	14	36
15/16	भर.	19	55	1	12	6	30	11	48
16/17	कृत्ति.	17	6	22	25	3	44	9	4
17/18	रोहि.	14	25	19	47	1	11	6	36
18/19	मृग.	12	3	17	32	23	3	4	36
19/20	आर्द्रा	10	11	15	49	21	29	3	13
20/21	पुन.	8	59	14	48	20	40	2	35
21/22	पुष्य	8	33	14	35	20	39	2	47
22/23	आश्ले.	8	59	15	13	21	30	3	51
23/24	मघा	10	14	16	40	23	9	5	41
24/25	पू.फा.	12	15	18	51	1	29	8	9
25/26	उ.फा.	14	50	21	33	4	17	11	2
26/27	हस्त	17	48	0	34	7	21	14	8
27/28	चित्रा	20	54	3	41	10	27	17	12
28/29	स्वाती	23	57	6	41	13	24	20	6
30	विशा.	2	46	9	26	16	4	22	41

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
जून 2007 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
31/1	अनु.	5	16	11	51	18	23	0	54
1/2	ज़्येष्ठा	7	24	13	52	20	19	2	44
2/3	मूल	9	8	15	30	21	51	4	10
3/4	पू.षा.	10	28	16	45	23	0	5	13
4/5	उ.षा.	11	26	17	37	23	46	5	54
5/6	श्रव.	12	1	18	6	0	10	6	12
6/7	धनि.	12	13	18	12	0	10	6	6
7/8	शत.	12	1	17	54	23	45	5	35
8/9	पू.भा.	11	23	17	10	22	55	4	38
9/10	उ.भा.	10	20	16	0	21	39	3	16
10/11	रेव.	8	52	14	26	20	0	1	32
11	अश्वि.	7	2	12	32	18	1	23	29
12	भर.	4	56	10	22	15	48	21	14
13	कृत्ति.	2	39	8	4	13	29	18	55
14	रोहि.	0	21	5	47	11	14	16	42
14/15	मृग.	22	10	3	40	9	11	14	44
15/16	आर्द्रा	20	18	1	54	7	32	13	12
16/17	पुन.	18	54	0	39	6	25	12	15
17/18	पुष्य	18	7	0	2	6	0	12	0
18/19	आश्ले.	18	4	0	10	6	20	12	32
19/20	मघा	18	48	1	6	7	28	13	52
20/21	पू.फा.	20	18	2	48	9	20	15	54
21/22	उ.फा.	22	30	5	8	11	48	18	29
23	हस्त	1	12	7	56	14	40	21	25
24/25	चित्रा	4	11	10	57	17	42	0	28
25/26	स्वाती	7	13	13	57	20	40	3	22
26/27	विशा.	10	4	16	43	23	22	5	59
27/28	अनु.	12	34	19	7	1	39	8	9
28/29	ज्येष्ठा	14	37	21	3	3	27	9	50
29/30	मूल	16	10	22	29	4	46	11	1

चन्द्रमा का नक्षत्रचरणों में प्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.)

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
जुलाई 2007 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
30/ 1	पू.षा.	17	14	23	26	5	35	11	44
1/ 2	उ.षा.	17	50	23	56	6	0	12	2
2/ 3	श्रव.	18	3	0	3	6	1	11	59
3/ 4	धनि.	17	55	23	50	5	44	11	36
4/ 5	शत.	17	28	23	19	5	9	10	58
5/ 6	पू.भा.	16	45	22	32	4	18	10	4
6/ 7	उ.भा.	15	48	21	31	3	14	8	56
7/ 8	रेव.	14	36	20	17	1	56	7	35
8/ 9	अश्वि.	13	13	18	50	0	27	6	4
9/10	भर.	11	39	17	15	22	50	4	25
10/11	कृत्ति.	9	59	15	34	21	8	2	43
11/12	रोहि.	8	17	13	52	19	28	1	4
12	मृग.	6	40	12	17	17	55	23	34
13	आर्द्रा.	5	14	10	55	16	37	22	21
14	पुन.	4	6	9	53	15	42	21	33
15	पुष्य	3	26	9	20	15	18	21	17
16	आश्ले.	3	18	9	22	15	29	21	38
17	मघा.	3	50	10	4	16	21	22	40
18/19	पू.फा.	5	2	11	26	17	52	0	21
19/20	उ.फा.	6	53	13	26	20	1	2	38
20/21	हस्त	9	17	15	57	22	39	5	22
21/22	चित्रा	12	5	18	50	1	34	8	19
22/23	स्वाती	15	4	21	49	4	33	11	17
23/24	विशा.	18	0	0	41	7	22	14	1
24/25	अनु.	20	38	3	14	9	48	16	20
25/26	ज्येष्ठा	22	50	5	17	11	43	18	6
27	मूल	0	27	6	46	13	2	19	16
28	पू.षा.	1	28	7	38	13	45	19	50
29	उ.षा.	1	53	7	55	13	54	19	51
30	श्रव.	1	46	7	40	13	32	19	23
31	धनि.	1	12	7	0	12	46	18	31

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
अगस्त 2007 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1	शत.	0	15	5	58	11	41	17	22
1/ 2	पू.भा.	23	3	4	42	10	22	16	0
2/ 3	उ.भा.	21	39	3	17	8	54	14	31
3/ 4	रेव.	20	8	1	45	7	22	12	59
4/ 5	अश्वि.	18	36	0	13	5	49	11	27
5/ 6	भर.	17	4	22	42	4	20	9	58
6/ 7	कृत्ति.	15	37	21	16	2	55	8	36
7/ 8	रोहि.	14	16	19	58	1	40	7	23
8/ 9	मृग.	13	7	18	52	0	37	6	24
9/10	आर्द्रा.	12	12	18	1	23	51	5	42
10/11	पुन.	11	35	17	29	23	24	5	21
11/12	पुष्य	11	20	17	20	23	22	5	25
12/13	आश्ले.	11	31	17	38	23	48	5	59
13/14	मघा.	12	12	18	27	0	44	7	3
14/15	पू.फा.	13	25	19	48	2	13	8	41
15/16	उ.फा.	15	10	21	41	4	14	10	49
16/17	हस्त	17	25	0	3	6	42	13	23
17/18	चित्रा	20	4	2	47	9	31	16	15
18/19	स्वाती	23	0	5	45	12	30	19	14
20	विशा.	1	59	8	43	15	26	22	8
21/22	अनु.	4	50	11	30	18	8	0	44
22/23	ज्येष्ठा	7	19	13	52	20	23	2	51
23/24	मूल	9	17	15	41	22	2	4	20
24/25	पू.षा.	10	36	16	49	22	59	5	7
25/26	उ.षा.	11	12	17	15	23	15	5	12
26/27	श्रव.	11	7	17	0	22	50	4	38
27/28	धनि.	10	24	16	8	21	50	3	30
28/29	शत.	9	8	14	45	20	20	1	54
29	पू.भा.	7	27	12	58	18	29	23	59
30	उ.भा	5	28	10	57	16	25	21	53
31	रेव.	3	20	8	48	14	15	19	43

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
सितम्बर 2007 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1	अश्वि.	1	11	6	39	12	8	17	37
1/ 2	भर.	23	7	4	38	10	9	15	42
2/ 3	कृत्ति.	21	16	2	51	8	26	14	4
3/ 4	रोहि.	19	42	1	22	7	4	12	46
4/ 5	मृग.	18	31	0	17	6	4	11	53
5/ 6	आर्द्रा	17	44	23	37	5	31	11	27
6/ 7	पुन.	17	25	23	24	5	25	11	28
7/ 8	पुष्य	17	32	23	39	5	47	11	56
8/ 9	आश्ले.	18	8	0	21	6	36	12	53
9/10	मघा	19	11	1	31	7	52	14	15
10/11	पू.फा.	20	40	3	6	9	34	16	4
11/12	उ.फा.	22	35	5	7	11	41	18	16
13	हस्त	0	53	7	30	14	9	20	49
14	चित्रा	3	31	10	13	16	56	23	39
15/16	स्वाती	6	23	13	8	19	53	2	39
16/17	विशा.	9	24	16	10	22	55	5	39
17/18	अनु.	12	24	19	7	1	49	8	31
18/19	ज्येष्ठा	15	11	21	49	4	26	11	2
19/20	मूल	17	35	0	6	6	35	13	2
20/21	पू.षा.	19	26	1	47	8	6	14	22
21/22	उ.षा.	20	35	2	45	8	52	14	57
22/23	श्रव.	20	58	2	57	8	53	14	45
23/24	धनि.	20	35	2	23	8	7	13	49
24/25	शत.	19	29	1	6	6	41	12	14
25/26	पू.भा.	17	45	23	14	4	41	10	6
26/27	उ.भा.	15	31	20	54	2	15	7	36
27/28	रेव.	12	56	18	15	23	34	4	52
28/29	अश्वि.	10	10	15	29	20	47	2	6
29	भर.	7	25	12	45	18	6	23	27
30	कृत्ति.	4	50	10	14	15	39	21	6

चन्द्रमा का नक्षत्रचरणों में प्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.)

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
अक्तूबर 2007 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1	रोहि.	2	34	8	4	13	36	19	10
2	मृग.	0	46	6	24	12	5	17	48
2/3	आर्द्रा	23	33	5	20	11	10	17	2
3/4	पुन.	22	57	4	54	10	53	16	55
4/5	पुष्य	23	0	5	7	11	16	17	27
5/6	आश्ले.	23	41	5	57	12	15	18	35
7	मघा	0	57	7	21	13	46	20	14
8	पू.फा.	2	42	9	13	15	45	22	18
9/10	उ.फा.	4	53	11	28	18	5	0	43
10/11	हस्त	7	22	14	2	20	42	3	24
11/12	चित्रा	10	6	16	49	23	32	6	16
12/13	स्वाती	13	0	19	45	2	30	9	15
13/14	विशा.	16	0	22	45	5	30	12	16
14/15	अनु.	19	0	1	45	8	29	15	12
15/16	ज्येष्ठा	21	55	4	37	11	18	17	57
17	मूल	0	36	7	13	13	48	20	22
18	पू.षा.	2	53	9	23	15	51	22	16
19	उ.षा.	4	39	11	0	17	17	23	33
20/21	श्रव.	5	45	11	55	18	1	0	5
21	धनि.	6	5	12	3	17	58	23	49
22	शत.	5	38	11	24	17	7	22	47
23	पू.भा.	4	25	10	0	15	32	21	2
24	उ.भा.	2	30	7	56	13	19	18	41
25	रेव.	0	1	5	20	10	37	15	53
25/26	अश्वि.	21	8	2	23	7	36	12	49
26/27	भर.	18	3	23	16	4	28	9	42
27/28	कृत्ति.	14	55	20	10	1	25	6	41
28/29	रोहि.	11	59	17	18	22	39	4	1
29/30	मृग.	9	25	14	51	20	19	1	50
30/31	आर्द्रा	7	23	12	59	18	37	0	18
31	पुन.	6	2	11	49	17	39	23	32

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
नवम्बर 2007 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1	पुष्य	5	28	11	27	17	29	23	34
2/3	आश्ले.	5	41	11	52	18	6	0	23
3/4	मघा	6	42	13	4	19	28	1	54
4/5	पू.फा.	8	23	14	54	21	26	4	1
5/6	उ.फा.	10	37	17	14	23	53	6	33
6/7	हस्त	13	14	19	56	2	39	9	22
7/8	चित्रा	16	6	22	50	5	35	12	20
8/9	स्वाती	19	5	1	50	8	35	15	20
9/10	विशा.	22	5	4	50	11	34	18	18
11	अनु.	1	2	7	45	14	28	21	10
12	ज्येष्ठा	3	52	10	33	17	13	23	53
13/14	मूल	6	31	13	9	19	46	2	21
14/15	पू.षा.	8	55	15	28	22	0	4	30
15/16	उ.षा.	10	58	17	25	23	49	6	12
16/17	श्रव.	12	33	18	51	1	8	7	22
17/18	धनि.	13	33	19	42	1	48	7	52
18/19	शत.	13	53	19	51	1	46	7	39
19/20	पू.भा.	13	29	19	16	1	1	6	42
20/21	उ.भा.	12	21	17	58	23	32	5	4
21/22	रेव.	10	33	16	0	21	26	2	49
22/23	अश्वि.	8	10	13	30	18	49	0	6
23	भर.	5	22	10	37	15	52	21	6
24	कृत्ति.	2	19	7	32	12	45	17	59
24/25	रोहि.	23	13	4	27	9	42	14	58
25/26	मृग.	20	15	1	34	6	53	12	15
26/27	आर्द्रा	17	39	23	4	4	32	10	2
27/28	पुन.	15	35	21	10	2	48	8	29
28/29	पुष्य	14	13	20	0	1	50	7	43
29/30	आश्ले.	13	39	19	39	1	42	7	48

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
दिसम्बर 2007 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
30/1	मघा	13	58	20	10	2	26	8	45
1/2	पू.फा.	15	6	21	31	3	58	10	27
2/3	उ.फा.	16	59	23	33	6	9	12	47
3/4	हस्त	19	26	2	7	8	49	15	32
4/5	चित्रा	22	16	5	1	11	47	18	32
6	स्वाती	1	18	8	4	14	49	21	35
7/8	विशा.	4	20	11	5	17	49	0	32
8/9	अनु.	7	15	13	58	20	39	3	19
9/10	ज्येष्ठा	9	59	16	37	23	15	5	52
10/11	मूल	12	27	19	2	1	35	8	8
11/12	पू.षा.	14	39	21	9	3	38	10	6
12/13	उ.षा.	16	32	22	58	5	21	11	44
13/14	श्रव.	18	5	0	24	6	43	12	59
14/15	धनि.	19	14	1	27	7	38	13	47
15/16	शत.	19	55	2	0	8	4	14	5
16/17	पू.भा.	20	4	2	2	7	57	13	49
17/18	उ.भा.	19	40	1	29	7	15	12	59
18/19	रेव.	18	41	0	21	5	59	11	34
19/20	अश्वि.	17	8	22	40	4	11	9	39
20/21	भर.	15	7	20	32	1	57	7	20
21/22	कृत्ति.	12	43	18	4	23	25	4	45
22/23	रोहि.	10	5	15	24	20	44	2	4
23	मृग.	7	24	12	44	18	5	23	27
24	आर्द्रा	4	50	10	14	15	39	21	6
25	पुन.	2	34	8	4	13	37	19	11
26	पुष्य	0	48	6	27	12	8	17	53
26/27	आश्ले.	23	40	5	30	11	22	17	18
27/28	मघा	23	17	5	19	11	24	17	32
28/29	पू.फा.	23	43	5	57	12	14	18	35
30	उ.फा.	0	57	7	23	13	51	20	22
31	हस्त	2	55	9	30	16	7	22	46

चन्द्रमा का नक्षत्रचरणों में प्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.)

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
जनवरी 2008 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1/2	चित्रा	5	26	12	8	18	51	1	35
2/3	स्वाती	8	19	15	4	21	50	4	35
3/4	विशा.	11	20	18	5	0	50	7	34
4/5	अनु.	14	18	21	0	3	41	10	22
5/6	ज्येष्ठा	17	1	23	39	6	16	12	51
6/7	मूल	19	24	1	57	8	27	14	57
7/8	पू.षा.	21	24	3	50	10	15	16	38
8/9	उ.षा.	22	59	5	19	11	38	17	55
10	श्रव.	0	10	6	24	12	37	18	48
11	धनि.	0	58	7	7	13	14	19	19
12	शत.	1	24	7	26	13	28	19	28
13	पू.भा.	1	27	7	24	13	20	19	15
14	उ.भा.	1	8	7	0	12	51	18	40
15	रेव.	0	28	6	14	12	0	17	43
15/16	अश्वि.	23	26	5	7	10	47	16	26
16/17	भर.	22	4	3	41	9	17	14	52
17/18	कृत्ति.	20	26	1	59	7	31	13	3
18/19	रोहि.	18	34	0	5	5	36	11	6
19/20	मृग.	16	36	22	6	3	37	9	7
20/21	आर्द्रा	14	38	20	9	1	42	7	14
21/22	पुन.	12	48	18	23	23	59	5	36
22/23	पुष्य	11	15	16	55	22	37	4	21
23/24	आश्ले.	10	7	15	54	21	44	3	36
24/25	मघा	9	31	15	28	21	27	3	29
25/26	पू.फा.	9	33	15	41	21	50	4	3
26/27	उ.फा.	10	18	16	35	22	56	5	18
27/28	हस्त	11	44	18	11	0	41	7	14
28/29	चित्रा	13	48	20	24	3	2	9	41
29/30	स्वाती	16	22	23	3	5	46	12	30
30/31	विशा.	19	14	1	58	8	43	15	27
31	हस्त	2	55	9	30	16	7	22	46

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
फरवरी 2008 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
31/1	अनु.	22	11	4	55	11	38	18	20
2	ज्येष्ठा	1	1	7	41	14	19	20	56
3	मूल	3	31	10	5	16	37	23	6
4/5	पू.षा.	5	34	12	0	18	24	0	45
5/6	उ.षा.	7	5	13	22	19	38	1	51
6/7	श्रव.	8	2	14	11	20	19	2	24
7/8	धनि.	8	28	14	29	20	29	2	27
8/9	शत.	8	24	14	19	20	13	2	5
9/10	पू.भा.	7	56	13	46	19	34	1	22
10/11	उ.भा.	7	8	12	53	18	38	0	22
11	रेव.	6	4	11	46	17	28	23	9
12	अश्वि.	4	49	10	29	16	9	21	48
13	भर.	3	27	9	5	14	44	20	22
14	कृत्ति.	2	0	7	38	13	16	18	54
15	रोहि.	0	32	6	11	11	49	17	28
15/16	मृग.	23	7	4	46	10	26	16	6
16/17	आर्द्रा	21	47	3	28	9	10	14	53
17/18	पुन.	20	37	2	21	8	6	13	52
18/19	पुष्य	19	40	1	28	7	18	13	9
19/20	आश्ले.	19	1	0	54	6	49	12	46
20/21	मघा	18	44	0	44	6	46	12	49
21/22	पू.फा.	18	55	1	2	7	11	13	22
22/23	उ.फा.	19	35	1	51	8	8	14	27
23/24	हस्त	20	49	3	12	9	38	16	6
24/25	चित्रा	22	35	5	7	11	40	18	15
26	स्वाती	0	52	7	30	14	9	20	50
27	विशा.	3	32	10	14	16	57	23	41
28/29	अनु.	6	25	13	10	19	54	2	37

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
मार्च 2008 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
29/1	ज्येष्ठा	9	21	16	3	22	45	5	26
1/2	मूल	12	5	18	43	1	19	7	53
2/3	पू.षा.	14	25	20	55	3	23	9	49
3/4	उ.षा.	16	12	22	32	4	51	11	6
4/5	श्रव.	17	19	23	29	5	37	11	42
5/6	धनि.	17	45	23	45	5	42	11	37
6/7	शत.	17	30	23	21	5	9	10	56
7/8	पू.भा.	16	40	22	23	4	4	9	43
8/9	उ.भा.	15	21	20	58	2	33	8	7
9/10	रेव.	13	40	19	13	0	44	6	16
10/11	अश्वि.	11	46	17	17	22	47	4	17
11/12	भर.	9	47	15	17	20	48	2	19
12/13	कृत्ति.	7	50	13	22	18	55	0	28
13	रोहि.	6	2	11	37	17	14	22	51
14	मृग.	4	29	10	8	15	49	21	30
15	आर्द्रा	3	13	8	58	14	43	20	30
16	पुन.	2	19	8	9	14	0	19	52
17	पुष्य	1	46	7	42	13	39	19	37
18	आश्ले.	1	37	7	38	13	41	19	45
19	मघा	1	50	7	57	14	6	20	16
20	पू.फा.	2	27	8	40	14	54	21	10
21	उ.फा.	3	27	9	46	16	6	22	28
22/23	हस्त	4	52	11	16	17	43	0	11
23/24	चित्रा	6	40	13	11	19	43	2	17
24/25	स्वाती	8	52	15	29	22	6	4	45
25/26	विशा.	11	25	18	6	0	48	7	31
26/27	अनु.	14	14	20	58	3	43	10	27
27/28	ज्येष्ठा	17	12	23	56	6	40	13	24
28/29	मूल	20	7	2	49	9	30	16	9
29/30	पू.षा.	22	47	5	24	11	58	18	31
31	उ.षा.	1	1	7	29	13	54	20	17

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.) 1 जनवरी 2007 ई. को अयनांश 23°57'21"

तारीख	साम्पातिक काल 0.0 h GMT घं. मि. से.	सूर्य रा. अं. क. वि.	चंद्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	मध्यम राहु रा. अं. क. वि.	स्पष्ट राहु रा. अं. क. वि.	सूर्य क्रां. अं. क.	चंद्र क्रां. अं. क.	चंद्रशर अं. क.	चण्डीगढ (भा.स्टैं.टा.) चन्द्रोदय घं. मि.	चन्द्रास्त घं. मि.
1	06 41 04	08 16 13 08	01 13 27 58	07 24 28 25	08 12 33 18	07 14 14 19	09 02 06 06	04 00 30 19	10 25 42 34	10 24 52 32	-23 03	26 25	04 56	15 12	05 08
2	06 45 01	08 17 14 16	01 27 20 28	07 25 11 51	08 14 08 40	07 14 26 36	09 03 21 18	04 00 27 30	10 25 39 23	10 24 41 38	-22 58	28 11	05 02	16 09	06 14
3	06 48 57	08 18 15 24	02 11 00 51	07 25 55 19	08 15 44 21	07 14 38 51	09 04 36 28	04 00 24 37	10 25 36 12	10 24 29 51	-22 53	28 11	04 50	17 11	07 14
4	06 52 54	08 19 16 32	02 24 25 36	07 26 38 49	08 17 20 23	07 14 51 01	09 05 51 38	04 00 21 37	10 25 33 01	10 24 18 27	-22 47	26 30	04 22	18 16	08 06
5	06 56 51	08 20 17 40	03 07 32 13	07 27 22 22	08 18 56 47	07 15 03 08	09 07 06 47	04 00 18 33	10 25 29 51	10 24 08 35	-22 41	23 25	03 41	19 19	08 49
6	07 00 47	08 21 18 48	03 20 19 43	07 28 05 58	08 20 33 33	07 15 15 12	09 08 21 56	04 00 15 23	10 25 26 40	10 24 01 02	-22 34	19 14	02 49	20 20	09 26
7	07 04 44	08 22 19 55	04 02 48 43	07 28 49 36	08 22 10 42	07 15 27 12	09 09 37 04	04 00 12 08	10 25 23 29	10 23 56 07	-22 27	14 19	01 50	21 18	09 57
8	07 08 40	08 23 21 03	04 15 01 23	07 29 33 17	08 23 48 16	07 15 39 08	09 10 52 11	04 00 08 48	10 25 20 18	10 23 53 44	-22 19	08 56	00 47	22 13	10 24
9	07 12 37	08 24 22 12	04 27 01 09	08 00 17 01	08 25 26 13	07 15 51 01	09 12 07 18	04 00 05 22	10 25 17 08	10 23 53 21	-22 11	03 19	-00 17	23 06	10 50
10	07 16 33	08 25 23 20	05 08 52 30	08 01 00 47	08 27 04 37	07 16 02 49	09 13 22 24	04 00 01 52	10 25 13 57	10 23 54 05	-22 03	-02 20	-01 19	23 59	11 15
11	07 20 30	08 26 24 28	05 20 40 29	08 01 44 35	08 28 43 25	07 16 14 33	09 14 37 29	03 29 58 17	10 25 10 46	10 23 54 58	-21 54	-07 34	-02 19	-- --	11 40
12	07 24 26	08 27 25 36	06 02 30 32	08 02 28 26	09 00 22 40	07 16 26 13	09 15 52 33	03 29 54 38	10 25 07 35	10 23 54 59	-21 44	-13 11	-03 12	00 53	12 07
13	07 28 23	08 28 26 44	06 14 28 06	08 03 12 20	09 02 02 22	07 16 37 49	09 17 07 37	03 29 50 54	10 25 04 24	10 23 53 21	-21 35	-18 03	-03 57	01 49	12 38
14	07 32 20	08 29 27 52	06 26 38 14	08 03 56 16	09 03 42 29	07 16 49 21	09 18 22 40	03 29 47 05	10 25 01 14	10 23 49 33	-21 25	-22 17	-04 33	02 48	13 13
15	07 36 16	09 00 29 00	07 09 05 21	08 04 40 14	09 05 23 01	07 17 00 48	09 19 37 43	03 29 43 12	10 24 58 03	10 23 43 32	-21 14	-25 37	-04 57	03 48	13 55
16	07 40 13	09 01 30 08	07 21 52 39	08 05 24 15	09 07 03 59	07 17 12 11	09 20 52 44	03 29 39 15	10 24 54 52	10 23 35 38	-21 03	-27 46	-05 06	04 50	14 45
17	07 44 09	09 02 31 15	08 05 01 49	08 06 08 19	09 08 45 20	07 17 23 29	09 22 07 45	03 29 35 14	10 24 51 4	10 23 26 36	-20 52	-28 27	-05 00	05 50	15 43
18	07 48 06	09 03 32 23	08 18 32 42	08 06 52 24	09 10 27 02	07 17 34 42	09 23 22 44	03 29 31 08	10 24 48 31	10 23 17 21	-20 40	-27 28	-04 38	06 45	16 49
19	07 52 02	09 04 33 29	09 02 23 11	08 07 36 32	09 12 09 04	07 17 45 50	09 24 37 43	03 29 27 00	10 24 45 20	10 23 08 57	-20 28	-24 47	-03 58	07 35	17 58
20	07 55 59	09 05 34 35	09 16 29 27	08 08 20 43	09 13 51 23	07 17 56 53	09 25 52 41	03 29 22 47	10 24 42 09	10 23 02 17	-20 15	-20 34	-03 04	08 18	19 08
21	07 59 55	09 06 35 40	10 00 46 33	08 09 04 55	09 15 33 55	07 18 07 51	09 27 07 37	03 29 18 31	10 24 38 58	10 22 57 52	-20 02	-15 07	-01 57	08 55	20 17
22	08 03 52	09 07 36 45	10 15 09 11	08 09 49 10	09 17 16 35	07 18 18 44	09 28 22 33	03 29 14 11	10 24 35 47	10 22 55 49	-19 49	-08 48	-00 42	09 29	21 24
23	08 07 49	09 08 37 49	10 29 32 30	08 10 33 27	09 18 59 17	07 18 29 31	09 29 37 27	03 29 09 49	10 24 32 37	10 22 55 42	-19 35	-02 02	00 36	10 01	22 30
24	08 11 45	09 09 38 51	11 13 52 32	08 11 17 46	09 20 41 55	07 18 40 14	10 00 52 19	03 29 05 23	10 24 29 26	10 22 56 47	-19 21	04 48	01 51	10 32	23 36
25	08 15 42	09 10 39 53	11 28 06 30	08 12 02 07	09 22 24 21	07 18 50 50	10 02 07 10	03 29 00 55	10 24 26 15	10 22 58 06	-19 07	11 22	02 59	11 04	-- --
26	08 19 38	09 11 40 54	00 12 12 37	08 12 46 30	09 24 06 23	07 19 01 21	10 03 22 00	03 28 56 23	10 24 23 04	10 22 58 41	-18 52	17 17	03 55	11 40	00 43
27	08 23 35	09 12 41 53	00 26 09 49	08 13 30 56	09 25 47 51	07 19 11 47	10 04 36 48	03 28 51 50	10 24 19 54	10 22 57 45	-18 37	22 13	04 37	12 20	01 51
28	08 27 31	09 13 42 51	01 09 57 19	08 14 15 23	09 27 28 29	07 19 22 06	10 05 51 34	03 28 47 13	10 24 16 43	10 22 55 00	-18 21	25 53	05 03	13 06	02 59
29	08 31 28	09 14 43 49	01 23 34 24	08 14 59 53	09 29 08 01	07 19 32 20	10 07 06 19	03 28 42 35	10 24 13 32	10 22 50 31	-18 05	28 00	05 10	14 00	04 05
30	08 35 24	09 15 44 45	02 07 00 11	08 15 44 24	10 00 46 07	07 19 42 27	10 08 21 02	03 28 37 54	10 24 10 21	10 22 44 44	-17 49	28 27	05 01	14 59	05 06
31	08 39 21	09 16 45 40	02 20 13 42	08 16 28 58	10 02 22 25	07 19 52 29	10 09 35 44	03 28 33 12	10 24 07 11	10 22 38 20	-17 33	27 15	04 36	16 02	05 59

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रात: 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.)

1 फरवरी 2007 ई. को अयनांश 23°57'26"

फरवरी	साम्पातिक काल 0.0 h GMT घं. मि. से.	सूर्य रा. अं. क. वि.	चंद्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	मध्यम राहु रा. अं. क. वि.	स्पष्ट राहु रा. अं. क. वि.	सूर्य क्रां. अं. क.	चंद्र क्रां. अं. क.	चंद्रशर अं. क.	चण्डीगढ (भा.स्टै.टा.) चन्द्रोदय घं. मि.	चन्द्रास्त घं. मि.
1	08 43 18	09 17 46 33	03 03 13 58	08 17 13 34	10 03 56 30	07 20 02 25	10 10 50 23	03 28 28 28	10 24 04 00	10 22 32 05	-17 16	24 35	03 56	17 06	06 45
2	08 47 14	09 18 47 26	03 16 00 20	08 17 58 12	10 05 27 53	07 20 12 14	10 12 05 01	03 28 23 42	10 24 00 49	10 22 26 43	-16 59	20 44	03 05	18 07	07 23
3	08 51 11	09 19 48 17	03 28 32 39	08 18 42 53	10 06 56 01	07 20 21 57	10 13 19 37	03 28 18 55	10 23 57 38	10 22 22 45	-16 42	16 00	02 07	19 06	07 56
4	08 55 07	09 20 49 08	04 10 51 32	08 19 27 35	10 08 20 19	07 20 31 34	10 14 34 11	03 28 14 06	10 23 54 27	10 22 20 26	-16 24	10 43	01 03	20 02	08 25
5	08 59 04	09 21 49 57	04 22 58 26	08 20 12 20	10 09 40 06	07 20 41 04	10 15 48 43	03 28 09 16	10 23 51 17	10 22 19 46	-16 06	05 06	-00 03	20 57	08 51
6	09 03 00	09 22 50 46	05 04 55 41	08 20 57 07	10 10 54 42	07 20 50 27	10 17 03 13	03 28 04 26	10 23 48 06	10 22 20 27	-15 48	-00 36	-01 09	21 50	09 16
7	09 06 57	09 23 51 33	05 16 46 26	08 21 41 56	10 12 03 21	07 20 59 44	10 18 17 42	03 27 59 34	10 23 44 55	10 22 22 02	-15 30	-06 15	-02 10	22 44	09 41
8	09 10 53	09 24 52 20	05 28 34 36	08 22 26 47	10 13 05 18	07 21 08 54	10 19 32 08	03 27 54 42	10 23 41 44	10 22 23 56	-15 11	-11 39	-03 06	23 39	10 07
9	09 14 50	09 25 53 05	06 10 24 39	08 23 11 40	10 13 59 46	07 21 17 57	10 20 46 33	03 27 49 49	10 23 38 34	10 22 25 35	-14 52	-16 39	-03 54	- - - -	10 36
10	09 18 47	09 26 53 50	06 22 21 25	08 23 56 36	10 14 46 01	07 21 26 53	10 22 00 56	03 27 44 56	10 23 35 23	10 22 26 32	-14 33	-21 04	-04 33	00 35	11 09
11	09 22 43	09 27 54 33	07 04 29 53	08 24 41 33	10 15 23 20	07 21 35 41	10 23 15 17	03 27 40 03	10 23 32 12	10 22 26 27	-14 13	-24 41	-05 00	01 34	11 47
12	09 26 40	09 28 55 16	07 16 54 53	08 25 26 33	10 15 51 06	07 21 44 23	10 24 29 36	03 27 35 09	10 23 29 01	10 22 25 13	-13 53	-27 15	-05 14	02 34	12 32
13	09 30 36	09 29 55 57	07 29 40 36	08 26 11 34	10 16 08 48	07 21 52 57	10 25 43 53	03 27 30 16	10 23 25 51	10 22 22 59	-13 34	-28 29	-05 12	03 34	13 26
14	09 34 33	10 00 56 37	08 12 50 10	08 26 56 38	10 16 16 06	07 22 01 23	10 26 58 08	03 27 25 24	10 23 22 40	10 22 20 05	-13 13	-28 11	-04 55	04 31	14 27
15	09 38 29	10 01 57 16	08 26 25 07	08 27 41 43	10 16 12 50	07 22 09 42	10 28 12 20	03 27 20 31	10 23 19 29	10 22 16 57	-12 53	-26 12	-04 21	05 23	15 34
16	09 42 26	10 02 57 54	09 10 24 52	08 28 26 50	10 15 59 02	07 22 17 54	10 29 26 31	03 27 15 40	10 23 16 18	10 22 14 05	-12 32	-22 35	-03 31	06 09	16 45
17	09 46 22	10 03 58 30	09 24 46 33	08 29 11 59	10 15 35 01	07 22 25 57	11 00 40 39	03 27 10 49	10 23 13 07	10 22 11 52	-12 12	-17 [illegible]1	-02 26	06 49	17 55
18	09 50 19	10 04 59 05	10 09 25 00	08 29 57 10	10 15 01 21	07 22 33 52	11 01 54 45	03 27 05 59	10 23 09 57	10 22 10 33	-11 51	-11 21	-01 10	07 25	19 05
19	09 54 16	10 05 59 39	10 24 13 26	09 00 42 23	10 14 18 54	07 22 41 40	11 03 08 48	03 27 01 11	10 23 06 46	10 22 10 13	-11 29	-04 30	00 11	07 59	20 14
20	09 58 12	10 07 00 10	11 09 04 17	09 01 27 37	10 13 28 45	07 22 49 19	11 04 22 49	03 26 56 24	10 23 03 35	10 22 10 42	-11 08	02 37	01 32	08 31	21 22
21	10 02 09	10 08 00 40	11 23 50 19	09 02 12 52	10 12 32 16	07 22 56 50	11 05 36 47	03 26 51 38	10 23 00 24	10 22 11 40	-10 46	09 33	02 47	09 04	22 31
22	10 06 05	10 09 01 08	00 08 25 29	09 02 58 10	10 11 30 58	07 23 04 12	11 06 50 42	03 26 46 55	10 22 57 14	10 22 12 46	-10 25	15 53	03 49	09 39	23 41
23	10 10 02	10 10 01 34	00 22 45 26	09 03 43 29	10 10 26 30	07 23 11 27	11 08 04 35	03 26 42 13	10 22 54 03	10 22 13 39	-10 03	21 14	04 36	10 19	- - - -
24	10 13 58	10 11 01 59	01 06 47 42	09 04 28 49	10 09 20 33	07 23 18 32	11 09 18 25	03 26 37 33	10 22 50 52	10 22 14 05	-09 41	25 17	05 06	11 04	00 51
25	10 17 55	10 12 02 21	01 20 31 22	09 05 14 11	10 08 14 46	07 23 25 29	11 10 32 11	03 26 32 55	10 22 47 41	10 22 13 59	-09 19	27 47	05 17	11 55	01 58
26	10 21 51	10 13 02 42	02 03 56 47	09 05 59 34	10 07 10 44	07 23 32 17	11 11 45 55	03 26 28 20	10 22 44 30	10 22 13 24	-08 56	28 36	05 10	12 53	03 01
27	10 25 48	10 14 03 00	02 17 05 02	09 06 44 59	10 06 09 50	07 23 38 57	11 12 59 35	03 26 23 47	10 22 41 20	10 22 12 30	-08 34	27 46	04 48	13 54	03 56
28	10 29 45	10 15 03 17	02 29 57 38	09 07 30 26	10 05 13 14	07 23 45 27	11 14 13 12	03 26 19 17	10 22 38 09	10 22 11 29	-08 11	25 27	04 11	14 57	04 44

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घ. 30 मि., भा. स्टे. टा.)

1 मार्च 2007 ई. को अयनांश 23°57'30''

ता.	साम्पातिक काल 0.0 h GMT घं. मि. से.	सूर्य रा. अं. क. वि.	चंद्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	मध्यम राहु रा. अं. क. वि.	स्पष्ट राहु रा. अं. क. वि.	सूर्य क्रां. अं. क.	चंद्र क्रां. अं. क.	चंद्रशर अं. क.	चण्डीगढ (भा.स्टै.टा.) चन्द्रोदय घं. मि.	चन्द्रास्त घं. मि.
1	10 33 41	10 16 03 31	03 12 36 12	09 08 15 53	10 04 21 55	07 23 51 49	11 15 26 46	03 26 14 50	10 22 34 58	10 22 10 35	-07 49	21 54	03 22	15 58	05 23
2	10 37 38	10 17 03 44	03 25 02 21	09 09 01 23	10 03 36 37	07 23 58 01	11 16 40 17	03 26 10 25	10 22 31 47	10 22 09 55	-07 26	17 26	02 25	16 58	05 57
3	10 41 34	10 18 03 54	04 07 17 40	09 09 46 54	10 02 57 50	07 24 04 04	11 17 53 44	03 26 06 04	10 22 28 37	10 22 09 31	-07 03	12 18	01 22	17 54	06 27
4	10 45 31	10 19 04 03	04 19 23 45	09 10 32 26	10 02 25 54	07 24 09 59	11 19 07 08	03 26 01 46	10 22 25 26	10 22 09 22	-06 40	06 47	00 15	18 49	06 54
5	10 49 27	10 20 04 10	05 01 22 16	09 11 18 00	10 02 00 55	07 24 15 43	11 20 20 28	03 25 57 31	10 22 22 15	10 22 09 24	-06 17	01 05	-00 51	19 43	07 19
6	10 53 24	10 21 04 15	05 13 15 08	09 12 03 35	10 01 42 55	07 24 21 19	11 21 33 45	03 25 53 19	10 22 19 04	10 22 09 30	-05 54	-04 37	-01 55	20 36	07 44
7	10 57 20	10 22 04 19	05 25 04 38	09 12 49 12	10 01 31 46	07 24 26 45	11 22 46 58	03 25 49 12	10 22 15 54	10 22 09 33	-05 31	-10 07	-02 53	21 30	08 10
8	11 01 17	10 23 04 21	06 06 53 26	09 13 34 50	10 01 27 16	07 24 32 01	11 24 00 08	03 25 45 07	10 22 12 43	10 22 09 31	-05 07	-15 16	-03 44	22 26	08 37
9	11 05 14	10 24 04 21	06 18 44 43	09 14 20 30	10 01 29 11	07 24 37 07	11 25 13 15	03 25 41 07	10 22 09 32	10 22 09 21	-04 44	-19 52	-04 25	23 24	09 08
10	11 09 10	10 25 04 19	07 00 42 07	09 15 06 11	10 01 37 11	07 24 42 04	11 26 26 18	03 25 37 11	10 22 06 21	10 22 09 04	-04 20	-23 43	-04 56	-- --	09 43
11	11 13 07	10 26 04 16	07 12 49 39	09 15 51 54	10 01 51 00	07 24 46 51	11 27 39 17	03 25 33 18	10 22 03 10	10 22 08 47	-03 57	-26 35	-05 13	00 22	10 25
12	11 17 03	10 27 04 12	07 25 11 37	09 16 37 38	10 02 10 16	07 24 51 28	11 28 52 13	03 25 29 30	10 22 00 00	10 22 08 37	-03 33	-28 16	-05 17	01 21	11 14
13	11 21 00	10 28 04 05	08 07 52 16	09 17 23 23	10 02 34 40	07 24 55 55	00 00 05 05	03 25 25 47	10 21 56 49	10 22 08 42	-03 10	-28 31	-05 06	02 18	12 10
14	11 24 56	10 29 03 57	08 20 55 29	09 18 09 09	10 03 03 54	07 25 00 11	00 01 17 53	03 25 22 07	10 21 53 38	10 22 09 06	-02 46	-27 13	-04 39	03 11	13 13
15	11 28 53	11 00 03 48	09 04 24 10	09 18 54 57	10 03 37 39	07 25 04 17	00 02 30 38	03 25 18 32	10 21 50 27	10 22 09 49	-02 22	-24 20	-03 55	03 59	14 21
16	11 32 49	11 01 03 36	09 18 19 46	09 19 40 45	10 04 15 38	07 25 08 13	00 03 43 19	03 25 15 02	10 21 47 17	10 22 10 39	-01 59	-19 57	-02 57	04 41	15 30
17	11 36 46	11 02 03 23	10 02 41 31	09 20 26 35	10 04 57 35	07 25 11 59	00 04 55 56	03 25 11 37	10 21 44 06	10 22 11 21	-01 35	-14 18	-01 46	05 18	16 40
18	11 40 43	11 03 03 08	10 17 26 00	09 21 12 26	10 05 43 15	07 25 15 34	00 06 08 29	03 25 08 17	10 21 40 55	10 22 11 45	-01 11	-07 42	-00 26	05 53	17 50
19	11 44 39	11 04 02 51	11 02 27 08	09 21 58 17	10 06 32 23	07 25 18 58	00 07 20 58	03 25 05 01	10 21 37 44	10 22 11 37	-00 48	-00 34	00 57	06 26	18 59
20	11 48 36	11 05 02 32	11 17 36 32	09 22 44 09	10 07 24 47	07 25 22 12	00 08 33 23	03 25 01 51	10 21 34 33	10 22 10 51	-00 24	06 40	02 16	06 59	20 10
21	11 52 32	11 06 02 11	00 02 44 44	09 23 30 02	10 08 20 15	07 25 25 15	00 09 45 44	03 24 58 46	10 21 31 23	10 22 09 28	-00 00	13 30	03 26	07 34	21 22
22	11 56 29	11 07 01 47	00 17 42 28	09 24 15 56	10 09 18 36	07 25 28 07	00 10 58 00	03 24 55 46	10 21 28 12	10 22 07 39	00 24	19 28	04 21	08 13	22 35
23	12 00 25	11 08 01 22	01 02 22 11	09 25 01 50	10 10 19 40	07 25 30 48	00 12 10 12	03 24 52 52	10 21 25 01	10 22 05 44	00 47	24 09	04 58	08 58	23 46
24	12 04 22	11 09 00 54	01 16 38 47	09 25 47 45	10 11 23 18	07 25 33 19	00 13 22 19	03 24 50 03	10 21 21 50	10 22 04 04	01 11	27 14	05 15	09 49	-- --
25	12 08 18	11 10 00 24	02 00 29 59	09 26 33 41	10 12 29 22	07 25 35 38	00 14 34 2[illegible]	03 24 47 19	10 21 18 40	10 22 03 01	01 35	28 32	05 13	10 46	00 53
26	12 12 15	11 10 59 52	02 13 55 52	09 27 19 37	10 13 37 45	07 25 37 47	00 15 46 19	03 24 44 42	10 21 15 29	10 22 02 47	01 58	28 05	04 54	11 48	01 52
27	12 16 12	11 11 59 17	02 26 58 23	09 28 05 34	10 14 48 19	07 25 39 44	00 16 58 11	03 24 42 09	10 21 12 18	10 22 03 24	02 22	26 05	04 20	12 50	02 42
28	12 20 08	11 12 58 40	03 09 40 34	09 28 51 31	10 16 01 00	07 25 41 31	00 18 09 59	03 24 39 43	10 21 09 07	10 22 04 39	02 45	22 48	03 34	13 52	03 24
29	12 24 05	11 13 58 01	03 22 05 57	09 29 37 29	10 17 15 42	07 25 43 06	00 19 21 41	03 24 37 23	10 21 05 57	10 22 06 15	03 09	18 33	02 38	14 52	04 00
30	12 28 01	11 14 57 19	04 04 18 09	10 00 23 27	10 18 32 20	07 25 44 31	00 20 33 18	03 24 35 08	10 21 02 46	10 22 07 46	03 32	13 36	01 37	15 49	04 30
31	12 31 58	11 15 56 35	04 16 20 33	10 01 09 26	10 19 50 51	07 25 45 44	00 21 44 50	03 24 32 59	10 20 59 35	10 22 08 43	03 55	08 12	00 32	16 44	04 58

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 अप्रैल 2007 ई. को अयनांश 23° 57' 34"

अप्रैल	साम्पातिक काल 0.0 h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां	चन्द्रशर
	घ. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	12 35 55	11 16 55 48	4 28 16 13	10 1 55 25	10 21 11 11	7 25 46 46	0 22 56 16	3 24 30 56	10 20 56 34	10 22 9 42	4 19	2 34	- 0 34
2	12 39 51	11 17 55 0	5 10 7 37	10 2 41 25	10 22 33 17	7 25 47 37	0 24 7 37	3 24 28 59	10 20 53 24	10 22 8 23	4 42	- 3 7	- 1 37
3	12 43 48	11 18 54 10	5 21 57 3	10 3 27 25	10 23 57 5	7 25 48 17	0 25 18 52	3 24 27 9	10 20 50 13	10 22 5 42	5 5	- 8 40	- 2 36
4	12 47 44	11 19 53 18	6 3 46 33	10 4 13 26	10 25 22 35	7 25 48 45	0 26 30 1	3 24 25 24	10 20 47 2	10 22 1 45	5 28	-13 55	- 3 29
5	12 51 41	11 20 52 24	6 15 3[illegible] 5	10 4 59 27	10 26 49 44	7 25 49 3	0 27 41 5	3 24 23 45	10 20 43 51	10 21 56 52	5 51	-18 40	- 4 12
6	12 55 37	11 21 51 27	6 27 33 40	10 5 45 29	10 28 18 30	7 25 49 9	0 28 52 3	3 24 22 13	10 20 40 41	10 21 51 31	6 13	-22 43	- 4 45
7	12 59 34	11 22 50 30	7 9 35 37	10 6 31 31	10 29 48 52	7 25 49 4	1 0 2 56	3 24 20 47	10 20 37 30	10 21 46 17	6 36	-25 51	- 5 5
8	13 3 30	11 23 49 30	7 21 46 37	10 7 17 33	11 1 20 48	7 25 48 47	1 1 13 42	3 24 19 27	10 20 34 19	10 21 41 46	6 59	-27 51	- 5 12
9	13 7 27	11 24 48 28	8 4 9 45	10 8 3 35	11 2 54 19	7 25 48 20	1 2 24 23	3 24 18 13	10 20 31 8	10 21 38 27	7 21	-28 30	- 5 5
10	13 11 24	11 25 47 25	8 16 48 23	10 8 49 38	11 4 29 23	7 25 47 41	1 3 34 58	3 24 17 6	10 20 27 58	10 21 36 37	7 44	-27 42	- 4 43
11	13 15 20	11 26 46 20	8 29 46 3	10 9 35 41	11 6 6 1	7 25 46 51	1 4 45 27	3 24 16 5	10 20 24 47	10 21 36 15	8 6	-25 23	- 4 6
12	13 19 17	11 27 45 14	9 13 6 1	10 10 21 44	11 7 44 11	7 25 45 49	1 5 55 49	3 24 15 10	10 20 21 36	10 21 37 3	8 28	-21 39	- 3 15
13	13 23 13	11 28 44 5	9 26 50 50	10 11 7 47	11 9 23 54	7 25 44 36	1 7 6 6	3 24 14 22	10 20 18 25	10 21 38 23	8 50	-16 38	- 2 11
14	13 27 10	11 29 42 55	10 11 1 39	10 11 53 49	11 11 5 10	7 25 43 12	1 8 16 16	3 24 13 40	10 20 15 15	10 21 39 30	9 12	-10 35	- 0 58
15	13 31 6	0 0 41 43	10 25 37 25	10 12 39 52	11 12 48 0	7 25 41 37	1 9 26 20	3 24 13 5	10 20 12 4	10 21 39 38	9 33	- 3 48	0 22
16	13 35 3	0 1 40 29	11 10 34 13	10 13 25 54	11 14 32 23	7 25 39 51	1 10 36 17	3 24 12 36	10 20 8 53	10 21 38 12	9 55	3 21	1 41
17	13 38 59	0 2 39 14	11 25 45 4	10 14 11 57	11 16 18 21	7 25 37 53	1 11 46 8	3 24 12 14	10 20 5 42	10 21 34 56	10 16	10 24	2 54
18	13 42 56	0 3 37 56	0 11 0 32	10 14 57 58	11 18 5 53	7 25 35 45	1 12 55 52	3 24 11 58	10 20 2 32	10 21 29 57	10 37	16 53	3 56
19	13 46 53	0 4 36 37	0 26 10 4	10 15 43 59	11 19 55 1	7 25 33 25	1 14 5 29	3 24 11 49	10 19 59 21	10 21 23 48	10 58	22 16	4 40
20	13 50 49	0 5 35 15	1 11 3 45	10 16 30 0	11 21 45 44	7 25 30 55	1 15 14 58	3 24 11 46	10 19 56 10	10 21 17 16	11 19	26 7	5 4
21	13 54 46	0 6 33 51	1 25 33 55	10 17 16 0	11 23 38 3	7 25 28 14	1 16 24 21	3 24 11 50	10 19 52 59	10 21 11 13	11 39	28 9	5 8
22	13 58 42	0 7 32 26	2 9 36 5	10 18 1 59	11 25 31 58	7 25 25 22	1 17 33 35	3 24 12 0	10 19 49 49	10 21 6 26	12 0	28 17	4 53
23	14 2 39	0 8 30 58	2 23 9 2	10 18 47 58	11 27 27 30	7 25 22 19	1 18 42 42	3 24 12 17	10 19 46 38	10 21 3 22	12 20	26 41	4 22
24	14 6 35	0 9 29 27	3 6 14 19	10 19 33 56	11 29 24 37	7 25 19 7	1 19 51 41	3 24 12 40	10 19 43 27	10 21 2 8	12 40	23 40	3 38
25	14 10 32	0 10 27 55	3 18 55 20	10 20 19 53	0 1 23 18	7 25 15 43	1 21 0 32	3 24 13 10	10 19 40 16	10 21 2 24	13 0	19 35	2 45
26	14 14 28	0 11 26 21	4 1 16 33	10 21 5 50	0 3 23 31	7 25 12 10	1 22 9 14	3 24 13 46	10 19 37 6	10 21 3 31	13 19	14 45	1 45
27	14 18 25	0 12 24 44	4 13 22 49	10 21 51 45	0 5 25 14	7 25 8 26	1 23 17 47	3 24 14 28	10 19 33 55	10 21 4 36	13 39	9 27	0 41
28	14 22 22	0 13 23 5	4 25 18 53	10 22 37 40	0 7 28 24	7 25 4 32	1 24 26 12	3 24 15 17	10 19 30 44	10 21 4 47	13 58	3 54	- 0 23
29	14 26 18	0 14 21 25	5 7 9 4	10 23 23 34	0 9 32 55	7 25 0 29	1 25 34 28	3 24 16 13	10 19 27 33	10 21 3 15	14 17	- 1 45	- 1 25
30	14 30 15	0 15 19 42	5 18 57 4	10 24 9 27	0 11 38 42	7 24 56 16	1 26 42 35	3 24 17 15	10 19 24 22	10 20 59 29	14 35	- 7 19	- 2 24

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 मई 2007 ई. को अयनांश 23° 57' 38''

तिथि	साम्पातिक काल 0.0 h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां	चन्द्रशर
	घ. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	14 34 11	0 16 17 57	6 0 45 57	10 24 55 19	0 13 45 38	7 24 51 53	1 27 50 32	3 24 18 23	10 19 21 12	10 20 53 18	14 54	-12 37	- 3 16
2	14 38 8	0 17 16 11	6 12 38 4	10 25 41 10	0 15 53 33	7 24 47 21	1 28 58 20	3 24 19 37	10 19 18 1	10 20 44 51	15 12	-17 30	- 4 0
3	14 42 4	0 18 14 23	6 24 35 16	10 26 27 1	0 18 2 18	7 24 42 39	2 0 5 57	3 24 20 58	10 19 14 50	10 20 34 41	15 30	-21 44	- 4 34
4	14 46 1	0 19 12 33	7 6 39 0	10 27 12 50	0 20 11 41	7 24 37 49	2 1 13 26	3 24 22 25	10 19 11 39	10 20 23 36	15 48	-25 5	- 4 55
5	14 49 57	0 20 10 41	7 18 50 30	10 27 58 38	0 22 21 29	7 24 32 49	2 2 20 44	3 24 23 58	10 19 8 29	10 20 12 37	16 5	-27 21	- 5 4
6	14 53 54	0 21 8 48	8 1 11 6	10 28 44 26	0 24 31 26	7 24 27 41	2 3 27 51	3 24 25 37	10 19 5 18	10 20 2 45	16 22	-28 19	- 4 58
7	14 57 51	0 22 6 54	8 13 42 24	10 29 30 12	0 26 41 17	7 24 22 24	2 4 34 49	3 24 27 22	10 19 2 7	10 19 54 51	16 39	-27 51	- 4 38
8	15 1 47	0 23 4 58	8 26 26 23	11 0 15 57	0 28 50 44	7 24 16 58	2 5 41 36	3 24 29 14	10 18 58 56	10 19 49 24	16 56	-25 55	- 4 5
9	15 5 44	0 24 3 0	9 9 25 25	11 1 1 41	1 0 59 31	7 24 11 24	2 6 48 12	3 24 31 12	10 18 55 45	10 19 46 28	17 12	-22 36	- 3 18
10	15 9 40	0 25 1 2	9 22 42 4	11 1 47 23	1 3 7 19	7 24 5 42	2 7 54 37	3 24 33 16	10 18 52 35	10 19 45 36	17 28	-18 3	- 2 19
11	15 13 37	0 25 59 2	10 6 18 49	11 2 33 4	1 5 13 52	7 23 59 53	2 9 0 51	3 24 35 26	10 18 49 24	10 19 45 53	17 44	-12 29	- 1 11
12	15 17 33	0 26 57 1	10 20 17 26	11 3 18 44	1 7 18 52	7 23 53 55	2 10 6 53	3 24 37 42	10 18 46 13	10 19 46 10	17 59	- 6 9	0 3
13	15 21 30	0 27 54 58	11 4 38 20	11 4 4 22	1 9 22 4	7 23 47 50	2 11 12 44	3 24 40 4	10 18 43 2	10 19 45 16	18 14	0 38	1 18
14	15 25 26	0 28 52 54	11 19 19 41	11 4 49 59	1 11 23 13	7 23 41 38	2 12 18 22	3 24 42 32	10 18 39 51	10 19 42 17	18 29	7 33	2 30
15	15 29 23	0 29 50 49	0 4 16 48	11 5 35 33	1 13 22 7	7 23 35 19	2 13 23 49	3 24 45 6	10 18 36 41	10 19 36 44	18 44	14 10	3 33
16	15 33 20	1 0 48 42	0 19 22 11	11 6 21 6	1 15 18 34	7 23 28 54	2 14 29 3	3 24 47 46	10 18 33 30	10 19 28 45	18 58	20 0	4 22
17	15 37 16	1 1 46 34	1 4 26 22	11 7 6 37	1 17 12 24	7 23 22 21	2 15 34 4	3 24 50 31	10 18 30 19	10 19 18 59	19 12	24 33	4 52
18	15 41 13	1 2 44 25	1 19 19 22	11 7 52 6	1 19 3 28	7 23 15 43	2 16 38 51	3 24 53 23	10 18 27 8	10 19 8 30	19 25	27 23	5 2
19	15 45 9	1 3 42 14	2 3 52 28	11 8 37 32	1 20 51 40	7 23 8 59	2 17 43 25	3 24 56 20	10 18 23 57	10 18 58 30	19 38	28 17	4 52
20	15 49 6	1 4 40 1	2 17 59 36	11 9 22 57	1 22 36 53	7 23 2 9	2 18 47 44	3 24 59 23	10 18 20 47	10 18 50 2	19 51	27 17	4 24
21	15 53 2	1 5 37 47	3 1 37 57	11 10 8 19	1 24 19 2	7 22 55 14	2 19 51 49	3 25 2 32	10 18 17 36	10 18 43 48	20 4	24 39	3 42
22	15 56 59	1 6 35 31	3 14 47 47	11 10 53 39	1 25 58 4	7 22 48 14	2 20 55 39	3 25 5 46	10 18 14 25	10 18 40 0	20 16	20 47	2 49
23	16 0 55	1 7 33 14	3 27 31 51	11 11 38 57	1 27 33 54	7 22 41 9	2 21 59 13	3 25 9 6	10 18 11 14	10 18 38 19	20 28	16 4	1 49
24	16 4 52	1 8 30 55	4 9 54 25	11 12 24 12	1 29 6 31	7 22 34 0	2 23 2 31	3 25 12 31	10 18 8 3	10 18 37 59	20 39	10 48	0 46
25	16 8 49	1 9 28 35	4 22 0 39	11 13 9 25	2 0 35 50	7 22 26 47	2 24 5 33	3 25 16 2	10 18 4 53	10 18 37 57	20 51	5 15	- 0 18
26	16 12 45	1 10 26 13	5 3 55 54	11 13 54 36	2 2 1 51	7 22 19 30	2 25 8 17	3 25 19 38	10 18 1 42	10 18 37 10	21 1	- 0 23	- 1 20
27	16 16 42	1 11 23 49	5 15 45 21	11 14 39 44	2 3 24 29	7 22 12 10	2 26 10 44	3 25 23 19	10 17 58 31	10 18 34 37	21 12	- 5 58	- 2 18
28	16 20 38	1 12 21 25	5 27 33 40	11 15 24 49	2 4 43 43	7 22 4 46	2 27 12 52	3 25 27 6	10 17 55 20	10 18 29 38	21 22	-11 20	- 3 10
29	16 24 35	1 13 18 58	6 9 24 44	11 16 9 52	2 5 59 29	7 21 57 19	2 28 14 42	3 25 30 58	10 17 52 9	10 18 21 55	21 32	-16 18	- 3 54
30	16 28 31	1 14 16 31	6 21 21 42	11 16 54 53	2 7 11 46	7 21 49 50	2 29 16 12	3 25 34 55	10 17 48 59	10 18 11 37	21 41	-20 42	- 4 28
31	16 32 28	1 15 14 2	7 3 26 47	11 17 39 51	2 8 20 28	7 21 42 19	3 0 17 23	3 25 38 57	10 17 45 48	10 17 59 16	21 50	-24 17	- 4 50

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 जून 2007 ई. को अयनांश 23° 57' 43"

ता.	साम्पातिक काल 0.0 h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां	चन्द्र क्रां	चन्द्रशर
	घ. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	16 36 24	1 16 11 32	7 15 41 26	11 18 24 46	2 9 25 34	7 21 34 45	3 1 18 14	3 25 43 5	10 17 42 37	10 17 45 49	21 58	-26 50	- 5 0
2	16 40 21	1 17 9 1	7 28 6 28	11 19 9 39	2 10 26 59	7 21 27 10	3 2 18 43	3 25 47 17	10 17 39 26	10 17 32 24	22 7	-28 6	- 4 55
3	16 44 18	1 18 6 29	8 10 42 12	11 19 54 29	2 11 24 38	7 21 19 34	3 3 18 51	3 25 51 34	10 17 36 15	10 17 20 11	22 14	-27 57	- 4 36
4	16 48 14	1 19 3 56	8 23 28 51	11 20 39 16	2 12 18 29	7 21 11 56	3 4 18 37	3 25 55 56	10 17 33 4	10 17 10 9	22 22	-26 19	- 4 2
5	16 52 11	1 20 1 23	9 6 26 47	11 21 24 1	2 13 8 26	7 21 4 18	3 5 18 0	3 26 0 23	10 17 29 54	10 17 2 58	22 29	-23 16	- 3 16
6	16 56 7	1 20 58 48	9 19 36 42	11 22 8 43	2 13 54 24	7 20 56 39	3 6 17 0	3 26 4 55	10 17 26 43	10 16 58 42	22 35	-18 58	- 2 19
7	17 0 4	1 21 56 13	10 2 59 44	11 22 53 21	2 14 36 18	7 20 49 0	3 7 15 36	3 26 9 31	10 17 23 32	10 16 56 56	22 42	-13 40	- 1 13
8	17 4 0	1 22 53 38	10 16 37 12	11 23 37 57	2 15 14 4	7 20 41 21	3 8 13 48	3 26 14 12	10 17 20 21	10 16 56 41	22 47	- 7 38	- 0 2
9	17 7 57	1 23 51 2	11 0 30 19	11 24 22 30	2 15 47 36	7 20 33 42	3 9 11 33	3 26 18 58	10 17 17 10	10 16 56 44	22 53	- 1 7	1 11
10	17 11 53	1 24 48 25	11 14 39 33	11 25 6 59	2 16 16 50	7 20 26 5	3 10 8 53	3 26 23 48	10 17 13 59	10 16 55 46	22 58	5 35	2 21
11	17 15 50	1 25 45 48	11 29 4 1	11 25 51 25	2 16 41 40	7 20 18 28	3 11 5 46	3 26 28 43	10 17 10 49	10 16 52 46	23 3	12 6	3 23
12	17 19 47	1 26 43 10	0 13 40 53	11 26 35 48	2 17 2 3	7 20 10 53	3 12 2 11	3 26 33 42	10 17 7 38	10 16 47 11	23 7	18 2	4 13
13	17 23 43	1 27 40 32	0 28 25 4	11 27 20 7	2 17 17 56	7 20 3 20	3 12 58 7	3 26 38 46	10 17 4 27	10 16 39 5	23 11	22 58	4 46
14	17 27 40	1 28 37 53	1 13 9 33	11 28 4 23	2 17 29 15	7 19 55 49	3 13 53 33	3 26 43 54	10 17 1 16	10 16 29 4	23 14	26 26	5 0
15	17 31 36	1 29 35 13	1 27 46 22	11 28 48 35	2 17 36 0	7 19 48 20	3 14 48 29	3 26 49 6	10 16 58 5	10 16 18 14	23 17	28 5	4 55
16	17 35 33	2 0 32 33	2 12 7 54	11 29 32 43	2 17 38 11	7 19 40 54	3 15 42 52	3 26 54 23	10 16 54 55	10 16 7 45	23 20	27 49	4 31
17	17 39 29	2 1 29 52	2 26 8 7	0 0 16 47	2 17 35 51	7 19 33 31	3 16 36 43	3 26 59 44	10 16 51 44	10 15 58 45	23 22	25 45	3 51
18	17 43 26	2 2 27 11	3 9 43 29	0 1 0 47	2 17 29 6	7 19 26 12	3 17 29 59	3 27 5 9	10 16 48 33	10 15 51 58	23 24	22 13	2 59
19	17 47 22	2 3 24 29	3 22 53 6	0 1 44 43	2 17 18 2	7 19 18 56	3 18 22 39	3 27 10 38	10 16 45 22	10 15 47 40	23 25	17 40	1 58
20	17 51 19	2 4 21 46	4 5 38 29	0 2 28 35	2 17 2 51	7 19 11 45	3 19 14 43	3 27 16 11	10 16 42 11	10 15 45 38	23 26	12 27	0 53
21	17 55 16	2 5 19 2	4 18 2 58	0 3 12 23	2 16 43 46	7 19 4 38	3 20 6 7	3 27 21 47	10 16 39 0	10 15 45 11	23 26	6 52	- 0 12
22	17 59 12	2 6 16 18	5 0 11 3	0 3 56 6	2 16 21 5	7 18 57 35	3 20 56 52	3 27 27 28	10 16 35 50	10 15 45 23	23 26	1 10	- 1 16
23	18 3 9	2 7 13 32	5 12 7 56	0 4 39 45	2 15 55 7	7 18 50 37	3 21 46 55	3 27 33 13	10 16 32 39	10 15 45 15	23 26	- 4 30	- 2 16
24	18 7 5	2 8 10 47	5 23 58 57	0 5 23 20	2 15 26 16	7 18 43 45	3 22 36 16	3 27 39 1	10 16 29 28	10 15 43 49	23 25	- 9 57	- 3 9
25	18 11 2	2 9 8 0	6 5 49 14	0 6 6 51	2 14 54 59	7 18 36 58	3 23 24 51	3 27 44 52	10 16 26 17	10 15 40 26	23 24	-15 2	- 3 54
26	18 14 58	2 10 5 13	6 17 43 25	0 6 50 17	2 14 21 46	7 18 30 16	3 24 12 40	3 27 50 48	10 16 23 6	10 15 34 46	23 23	-19 36	- 4 29
27	18 18 55	2 11 2 25	6 29 45 26	0 7 33 39	2 13 47 10	7 18 23 41	3 24 59 40	3 27 56 47	10 16 19 55	10 15 26 51	23 21	-23 25	- 4 52
28	18 22 51	2 11 59 37	7 11 58 16	0 8 16 56	2 13 11 46	7 18 17 12	3 25 45 51	3 28 2 49	10 16 16 45	10 15 17 9	23 18	-26 16	- 5 3
29	18 26 48	2 12 56 49	7 24 23 58	0 9 0 9	2 12 36 8	7 18 10 49	3 26 31 9	3 28 8 54	10 16 13 34	10 15 6 24	23 16	-27 54	- 4 59
30	18 30 45	2 13 54 0	8 7 3 31	0 9 43 18	2 12 0 55	7 18 4 33	3 27 15 33	3 28 15 3	10 16 10 23	10 14 55 35	23 12	-28 7	- 4 41

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं 30 मि, भा. स्टै. टा.), 1 जुलाई 2007 ई. को अयनांश 23° 57' 49"

जुलाई	साम्पातिक काल 0.0 h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां	चन्द्रशर
	घ. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	18 34 41	2 14 51 11	8 19 56 59	0 10 26 21	2 11 26 43	7 17 58 24	3 27 59 2	3 28 21 16	10 16 7 12	10 14 45 42	23 9	-26 50	-4 9
2	18 38 38	2 15 48 22	9 3 3 40	0 11 9 21	2 10 54 8	7 17 52 22	3 28 41 32	3 28 27 31	10 16 4 1	10 14 37 39	23 5	-24 4	-3 22
3	18 42 34	2 16 45 33	9 16 22 28	0 11 52 15	2 10 23 44	7 17 46 27	3 29 23 3	3 28 33 50	10 16 0 50	10 14 31 59	23 0	-19 58	-2 24
4	18 46 31	2 17 42 44	9 29 52 15	0 12 35 5	2 9 56 2	7 17 40 40	4 0 3 31	3 28 40 11	10 15 57 40	10 14 28 52	22 56	-14 48	-1 17
5	18 50 27	2 18 39 55	10 13 32 6	0 13 17 50	2 9 31 33	7 17 35 1	4 0 42 55	3 28 46 36	10 15 54 29	10 14 27 56	22 50	-8 50	-0 5
6	18 54 24	2 19 37 7	10 27 21 21	0 14 0 30	2 9 10 42	7 17 29 29	4 1 21 12	3 28 53 4	10 15 51 18	10 14 28 26	22 45	-2 23	1 9
7	18 58 20	2 20 34 19	11 11 19 34	0 14 43 5	2 8 53 53	7 17 24 6	4 1 58 19	3 28 59 34	10 15 48 7	10 14 29 20	22 39	4 14	2 19
8	19 2 17	2 21 31 31	11 25 26 8	0 15 25 35	2 8 41 25	7 17 18 51	4 2 34 14	3 29 6 8	10 15 44 56	10 14 29 35	22 32	10 42	3 22
9	19 6 14	2 22 28 43	0 9 39 55	0 16 8 0	2 8 33 35	7 17 13 44	4 3 8 55	3 29 12 44	10 15 41 45	10 14 28 19	22 26	16 41	4 12
10	19 10 10	2 23 25 56	0 23 58 53	0 16 50 19	2 8 30 37	7 17 8 47	4 3 42 18	3 29 19 23	10 15 38 35	10 14 25 4	22 19	21 47	4 48
11	19 14 7	2 24 23 9	1 8 19 49	0 17 32 33	2 8 32 41	7 17 3 58	4 4 14 21	3 29 26 5	10 15 35 24	10 14 19 51	22 11	25 36	5 5
12	19 18 3	2 25 20 23	1 22 38 24	0 18 14 41	2 8 39 56	7 16 59 18	4 4 45 1	3 29 32 50	10 15 32 13	10 14 13 8	22 3	27 48	5 4
13	19 22 0	2 26 17 37	2 6 49 35	0 18 56 44	2 8 52 26	7 16 54 48	4 5 14 14	3 29 39 37	10 15 29 2	10 14 5 41	21 55	28 10	4 43
14	19 25 56	2 27 14 51	2 20 48 17	0 19 38 40	2 9 10 16	7 16 50 27	4 5 41 57	3 29 46 26	10 15 25 51	10 13 58 28	21 46	26 42	4 6
15	19 29 53	2 28 12 6	3 4 30 12	0 20 20 31	2 9 33 27	7 16 46 15	4 6 8 7	3 29 53 18	10 15 22 41	10 13 52 19	21 37	23 40	3 16
16	19 33 49	2 29 9 21	3 17 52 24	0 21 2 15	2 10 2 0	7 16 42 14	4 6 32 41	4 0 0 13	10 15 19 30	10 13 47 51	21 28	19 24	2 15
17	19 37 46	3 0 6 36	4 0 53 44	0 21 43 54	2 10 35 54	7 16 38 22	4 6 55 33	4 0 7 10	10 15 16 19	10 13 45 18	21 18	14 19	1 9
18	19 41 43	3 1 3 51	4 13 34 49	0 22 25 26	2 11 15 8	7 16 34 40	4 7 16 42	4 0 14 9	10 15 13 8	10 13 44 33	21 8	8 45	0 1
19	19 45 39	3 2 1 7	4 25 57 48	0 23 6 51	2 11 59 40	7 16 31 9	4 7 36 4	4 0 21 10	10 15 9 57	10 13 45 9	20 57	2 59	-1 6
20	19 49 36	3 2 58 23	5 8 6 7	0 23 48 10	2 12 49 27	7 16 27 48	4 7 53 33	4 0 28 13	10 15 6 46	10 13 46 29	20 46	-2 47	-2 8
21	19 53 32	3 3 55 39	5 20 4 2	0 24 29 23	2 13 44 25	7 16 24 37	4 8 9 8	4 0 35 18	10 15 3 36	10 13 47 49	20 35	-8 22	-3 4
22	19 57 29	3 4 52 55	6 1 56 20	0 25 10 29	2 14 44 31	7 16 21 36	4 8 22 43	4 0 42 25	10 15 0 25	10 13 48 30	20 24	-13 36	-3 52
23	20 1 25	3 5 50 12	6 13 48 3	0 25 51 28	2 15 49 41	7 16 18 46	4 8 34 16	4 0 49 35	10 14 57 14	10 13 48 3	20 12	-18 21	-4 30
24	20 5 22	3 6 47 29	6 25 44 4	0 26 32 21	2 16 59 49	7 16 16 7	4 8 43 42	4 0 56 46	10 14 54 3	10 13 46 11	19 59	-22 24	-4 56
25	20 9 13	3 7 44 46	7 7 48 55	0 27 13 7	2 18 14 49	7 16 13 38	4 8 50 59	4 1 3 58	10 14 50 52	10 13 42 53	19 47	-25 34	-5 9
26	20 13 15	3 8 42 4	7 20 6 29	0 27 53 46	2 19 34 36	7 16 11 20	4 8 56 4	4 1 11 13	10 14 47 42	10 13 38 23	19 34	-27 36	-5 9
27	20 17 12	3 9 39 21	8 2 39 47	0 28 34 18	2 20 59 0	7 16 9 13	4 8 58 53	4 1 18 29	10 14 44 31	10 13 33 7	19 21	-28 18	-4 54
28	20 21 8	3 10 36 40	8 15 30 40	0 29 14 44	2 22 27 54	7 16 7 17	4 8 59 24	4 1 25 47	10 14 41 20	10 13 27 42	19 7	-27 30	-4 24
29	20 25 5	3 11 33 59	8 28 39 45	0 29 55 2	2 24 1 8	7 16 5 31	4 8 57 35	4 1 33 6	10 14 38 9	10 13 22 44	18 53	-25 9	-3 40
30	20 29 1	3 12 31 19	9 12 6 16	1 0 35 14	2 25 38 29	7 16 3 56	4 8 53 24	4 1 40 26	10 14 34 58	10 13 18 47	18 39	-21 22	-2 42
31	20 32 58	3 13 28 39	9 25 48 22	1 1 15 18	2 27 19 45	7 16 2 33	4 8 46 51	4 1 47 49	10 14 31 48	10 13 16 13	18 25	-16 23	-1 34

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 अगस्त 2007 ई. को अयनांश 23° 57' 54"

अगस्त	साम्पातिक काल 0.0 h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर
	घ. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	20 36 54	3 14 26 1	10 9 43 19	1 1 55 15	2 29 4 41	7 16 1 20	4 8 37 54	4 1 55 12	10 14 28 37	10 13 15 7	18 10	-10 27	-0 19
2	20 40 51	3 15 23 23	10 23 47 56	1 2 35 5	3 0 53 0	7 16 0 18	4 8 26 33	4 2 2 37	10 14 25 26	10 13 15 19	17 55	-3 57	0 58
3	20 44 47	3 16 20 47	11 7 58 58	1 3 14 47	3 2 44 24	7 15 59 27	4 8 12 51	4 2 10 3	10 14 22 15	10 13 16 22	17 39	2 47	2 12
4	20 48 44	3 17 18 11	11 22 13 22	1 3 54 22	3 4 38 34	7 15 58 47	4 7 56 48	4 2 17 30	10 14 19 4	10 13 17 42	17 24	9 24	3 18
5	20 52 41	3 18 15 37	0 6 28 23	1 4 33 49	3 6 35 8	7 15 58 18	4 7 38 26	4 2 24 59	10 14 15 54	10 13 18 45	17 8	15 33	4 12
6	20 56 37	3 19 13 4	0 20 41 37	1 5 13 8	3 8 33 46	7 15 58 0	4 7 17 50	4 2 32 28	10 14 12 43	10 13 19 4	16 52	20 51	4 50
7	21 0 34	3 20 10 32	1 4 50 51	1 5 52 19	3 10 34 6	7 15 57 54	4 6 55 4	4 2 39 59	10 14 9 32	10 13 18 22	16 35	24 57	5 11
8	21 4 30	3 21 8 2	1 18 53 57	1 6 31 21	3 12 35 46	7 15 57 58	4 6 30 13	4 2 47 30	10 14 6 21	10 13 16 42	16 18	27 31	5 13
9	21 8 27	3 22 5 33	2 2 48 45	1 7 10 16	3 14 38 24	7 15 58 14	4 6 3 23	4 2 55 3	10 14 3 10	10 13 14 16	16 1	28 20	4 56
10	21 12 23	3 23 3 5	2 16 33 5	1 7 49 2	3 16 41 41	7 15 58 40	4 5 34 42	4 3 2 36	10 14 0 0	10 13 11 30	15 44	27 24	4 23
11	21 16 20	3 24 0 38	3 0 4 54	1 8 27 39	3 18 45 19	7 15 59 18	4 5 4 18	4 3 10 10	10 13 56 49	10 13 8 50	15 27	24 50	3 35
12	21 20 16	3 24 58 13	3 13 22 26	1 9 6 7	3 20 48 59	7 16 0 7	4 4 32 21	4 3 17 45	10 13 53 38	10 13 6 40	15 9	20 58	2 37
13	21 24 13	3 25 55 49	3 26 24 32	1 9 44 26	3 22 52 27	7 16 1 6	4 3 59 0	4 3 25 20	10 13 50 27	10 13 5 15	14 51	16 8	1 31
14	21 28 10	3 26 53 26	4 9 10 46	1 10 22 36	3 24 55 29	7 16 2 17	4 3 24 28	4 3 32 56	10 13 47 17	10 13 4 41	14 33	10 41	0 22
15	21 32 6	3 27 51 5	4 21 41 38	1 11 0 36	3 26 57 53	7 16 3 39	4 2 48 57	4 3 40 33	10 13 44 6	10 13 4 54	14 14	4 56	-0 47
16	21 36 3	3 28 48 44	5 3 58 34	1 11 38 27	3 28 59 30	7 16 5 12	4 2 12 39	4 3 48 10	10 13 40 55	10 13 5 42	13 55	-0 55	-1 53
17	21 39 59	3 29 46 25	5 16 3 52	1 12 16 8	4 1 0 11	7 16 6 56	4 1 35 47	4 3 55 47	10 13 37 44	10 13 6 50	13 36	-6 37	-2 52
18	21 43 56	4 0 44 6	5 28 0 40	1 12 53 39	4 2 59 49	7 16 8 51	4 0 58 36	4 4 3 25	10 13 34 33	10 13 8 0	13 17	-12 1	-3 44
19	21 47 52	4 1 41 49	6 9 52 45	1 13 31 0	4 4 58 18	7 16 10 57	4 0 21 19	4 4 11 3	10 13 31 23	10 13 8 58	12 58	-16 57	-4 25
20	21 51 49	4 2 39 33	6 21 44 22	1 14 8 12	4 6 55 36	7 16 13 14	3 29 44 12	4 4 18 41	10 13 28 12	10 13 9 33	12 38	-21 14	-4 55
21	21 55 45	4 3 37 17	7 3 40 4	1 14 45 13	4 8 51 38	7 16 15 41	3 29 7 27	4 4 26 19	10 13 25 1	10 13 9 42	12 19	-24 42	-5 12
22	21 59 42	4 4 35 3	7 15 44 30	1 15 22 4	4 10 46 23	7 16 18 19	3 28 31 20	4 4 33 57	10 13 21 50	10 13 9 27	11 59	-27 7	-5 16
23	22 3 39	4 5 32 50	7 28 2 10	1 15 58 44	4 12 39 48	7 16 21 8	3 27 56 4	4 4 41 35	10 13 18 40	10 13 8 52	11 39	-28 18	-5 6
24	22 7 35	4 6 30 39	8 10 37 3	1 16 35 14	4 14 31 53	7 16 24 7	3 27 21 52	4 4 49 13	10 13 15 29	10 13 8 8	11 18	-28 3	-4 41
25	22 11 32	4 7 28 28	8 23 32 18	1 17 11 33	4 16 22 37	7 16 27 17	3 26 48 56	4 4 56 51	10 13 12 18	10 13 7 24	10 58	-26 17	-4 1
26	22 15 28	4 8 26 19	9 6 49 48	1 17 47 42	4 18 12 0	7 16 30 37	3 26 17 29	4 5 4 28	10 13 9 7	10 13 6 49	10 37	-23 2	-3 8
27	22 19 25	4 9 24 11	9 20 29 50	1 18 23 39	4 20 0 2	7 16 34 7	3 25 47 40	4 5 12 6	10 13 5 57	10 13 6 27	10 16	-18 26	-2 2
28	22 23 21	4 10 22 4	10 4 30 53	1 18 59 26	4 21 46 45	7 16 37 48	3 25 19 39	4 5 19 43	10 13 2 46	10 13 6 19	9 55	-12 45	-0 47
29	22 27 18	4 11 19 59	10 18 49 35	1 19 35 1	4 23 32 7	7 16 41 39	3 24 53 35	4 5 27 19	10 12 59 35	10 13 6 20	9 34	-6 16	0 32
30	22 31 14	4 12 17 56	11 3 21 2	1 20 10 25	4 25 16 12	7 16 45 40	3 24 29 35	4 5 34 55	10 12 56 24	10 13 6 24	9 13	0 37	1 50
31	22 35 11	4 13 15 55	11 17 59 15	1 20 45 37	4 26 58 59	7 16 49 51	3 24 7 45	4 5 42 31	10 12 53 14	10 13 6 25	8 51	7 31	3 2

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घ. 30 मि., भा. स्टै. टा.), 1 सितंबर 2007 ई. को अयनांश 23° 57' 59''

सितंबर	साम्पातिक काल 0.0 h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर
	घ. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	22 39 8	4 14 13 55	0 2 38 0	1 21 20 38	4 28 40 29	7 16 54 12	3 23 48 11	4 5 50 6	10 12 50 3	10 13 6 19	8 30	14 0	4 1
2	22 43 4	4 15 11 57	0 17 11 28	1 21 55 26	5 0 20 44	7 16 58 43	3 23 30 56	4 5 57 41	10 12 46 52	10 13 6 6	8 8	19 41	4 45
3	22 47 1	4 16 10 1	1 1 34 58	1 22 30 2	5 1 59 44	7 17 3 24	3 23 16 4	4 6 5 15	10 12 43 41	10 13 5 52	7 46	24 10	5 11
4	22 50 57	4 17 8 6	1 15 45 12	1 23 4 26	5 3 37 30	7 17 8 15	3 23 3 36	4 6 12 48	10 12 40 31	10 13 5 43	7 24	27 8	5 17
5	22 54 54	4 18 6 14	1 29 40 15	1 23 38 36	5 5 14 3	7 17 13 15	3 22 53 34	4 6 20 20	10 12 37 20	10 13 5 45	7 2	28 21	5 4
6	22 58 50	4 19 4 24	2 13 19 23	1 24 12 34	5 6 49 24	7 17 18 25	3 22 45 57	4 6 27 52	10 12 34 9	10 13 6 5	6 40	27 48	4 34
7	23 2 47	4 20 2 36	2 26 42 43	1 24 46 18	5 8 23 33	7 17 23 45	3 22 40 46	4 6 35 22	10 12 30 58	10 13 6 40	6 17	25 38	3 50
8	23 6 43	4 21 0 49	3 9 50 53	1 25 19 48	5 9 56 30	7 17 29 14	3 22 37 58	4 6 42 52	10 12 27 48	10 13 7 26	5 55	22 7	2 54
9	23 10 40	4 21 59 5	3 22 44 48	1 25 53 5	5 11 28 16	7 17 34 52	3 22 37 33	4 6 50 20	10 12 24 37	10 13 8 11	5 32	17 35	1 51
10	23 14 37	4 22 57 23	4 5 25 30	1 26 26 7	5 12 58 50	7 17 40 40	3 22 39 29	4 6 57 48	10 12 21 26	10 13 8 43	5 10	12 21	0 43
11	23 18 33	4 23 55 43	4 17 54 2	1 26 58 54	5 14 28 13	7 17 46 38	3 22 43 42	4 7 5 14	10 12 18 15	10 13 8 47	4 47	6 42	-0 26
12	23 22 30	4 24 54 4	5 0 11 35	1 27 31 26	5 15 56 25	7 17 52 44	3 22 50 10	4 7 12 39	10 12 15 5	10 13 8 16	4 24	0 54	-1 33
13	23 26 26	4 25 52 27	5 12 19 29	1 28 3 44	5 17 23 23	7 17 58 59	3 22 58 50	4 7 20 2	10 12 11 54	10 13 7 6	4 1	-4 52	-2 34
14	23 30 23	4 26 50 53	5 24 19 25	1 28 35 45	5 18 49 9	7 18 5 24	3 23 9 39	4 7 27 24	10 12 8 43	10 13 5 20	3 38	-10 23	-3 28
15	23 34 19	4 27 49 19	6 6 13 32	1 29 7 31	5 20 13 39	7 18 11 57	3 23 22 33	4 7 34 45	10 12 5 32	10 13 3 7	3 15	-15 29	-4 13
16	23 38 16	4 28 47 48	6 18 4 26	1 29 39 1	5 21 36 54	7 18 18 40	3 23 37 29	4 7 42 3	10 12 2 22	10 13 0 44	2 52	-19 59	-4 46
17	23 42 12	4 29 46 18	6 29 55 18	2 0 10 15	5 22 58 52	7 18 25 31	3 23 54 23	4 7 49 21	10 11 59 11	10 12 58 29	2 29	-23 42	-5 7
18	23 46 9	5 0 44 50	7 11 49 46	2 0 41 12	5 24 19 30	7 18 32 30	3 24 13 12	4 7 56 36	10 11 56 0	10 12 56 40	2 6	-26 27	-5 15
19	23 50 5	5 1 43 24	7 23 52 0	2 1 11 52	5 25 38 46	7 18 39 39	3 24 33 52	4 8 3 50	10 11 52 49	10 12 55 33	1 43	-28 1	-5 10
20	23 54 2	5 2 41 59	8 6 6 25	2 1 42 16	5 26 56 37	7 18 46 55	3 24 56 21	4 8 11 2	10 11 49 39	10 12 55 17	1 20	-28 16	-4 50
21	23 57 59	5 3 40 35	8 18 37 32	2 2 12 21	5 28 12 59	7 18 54 20	3 25 20 33	4 8 18 12	10 11 46 28	10 12 55 51	0 56	-27 6	-4 16
22	0 1 55	5 4 39 14	9 1 29 31	2 2 42 10	5 29 27 50	7 19 1 53	3 25 46 27	4 8 25 20	10 11 43 17	10 12 57 3	0 33	-24 28	-3 29
23	0 5 52	5 5 37 54	9 14 45 47	2 3 11 40	6 0 41 4	7 19 9 34	3 26 13 59	4 8 32 26	10 11 40 6	10 12 58 32	0 10	-20 29	-2 29
24	0 9 48	5 6 36 36	9 28 28 20	2 3 40 52	6 1 52 35	7 19 17 23	3 26 43 5	4 8 39 30	10 11 36 56	10 12 59 50	-0 14	-15 17	-1 19
25	0 13 45	5 7 35 20	10 12 37 13	2 4 9 46	6 3 2 19	7 19 25 20	3 27 13 43	4 8 46 32	10 11 33 45	10 13 0 27	-0 37	-9 8	-0 2
26	0 17 41	5 8 34 5	10 27 9 57	2 4 38 21	6 4 10 8	7 19 33 25	3 27 45 49	4 8 53 31	10 11 30 34	10 12 59 58	-1 0	-2 20	1 17
27	0 21 38	5 9 32 53	11 12 1 19	2 5 6 36	6 5 15 55	7 19 41 38	3 28 19 20	4 9 0 29	10 11 27 24	10 12 58 13	-1 24	4 43	2 32
28	0 25 34	5 10 31 42	11 27 3 39	2 5 34 32	6 6 19 31	7 19 49 58	3 28 54 14	4 9 7 24	10 11 24 13	10 12 55 17	-1 47	11 35	3 38
29	0 29 31	5 11 30 34	0 12 7 51	2 6 2 8	6 7 20 46	7 19 58 26	3 29 30 27	4 9 14 16	10 11 21 2	10 12 51 31	-2 11	17 47	4 29
30	0 33 28	5 12 29 28	0 27 4 46	2 6 29 23	6 8 19 30	7 20 7 1	4 0 7 56	4 9 21 6	10 11 17 51	10 12 47 29	-2 34	22 51	5 1

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 अक्तूबर 2007 ई. को अयनांश 23° 58' 2"

अक्तूबर	साम्पातिक काल 0.0 h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां	चन्द्रशर
	घ. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	0 37 24	5 13 28 24	1 11 46 34	2 6 56 18	6 9 15 31	7 20 15 43	4 0 46 40	4 9 27 54	10 11 14 41	10 12 43 52	-2 57	26 23	5 12
2	0 41 21	5 14 27 22	1 26 7 49	2 7 22 51	6 10 8 35	7 20 24 33	4 1 26 34	4 9 34 39	10 11 11 30	10 12 41 13	-3 20	28 7	5 4
3	0 45 17	5 15 26 22	2 10 5 48	2 7 49 2	6 10 58 26	7 20 33 30	4 2 7 37	4 9 41 21	10 11 8 19	10 12 39 54	-3 44	28 0	4 38
4	0 49 14	5 16 25 25	2 23 40 14	2 8 14 50	6 11 44 49	7 20 42 34	4 2 49 47	4 9 48 0	10 11 5 8	10 12 39 59	-4 7	26 11	3 56
5	0 53 10	5 17 24 30	3 6 52 39	2 8 40 16	6 12 27 24	7 20 51 45	4 3 32 59	4 9 54 37	10 11 1 58	10 12 41 10	-4 30	22 57	3 3
6	0 57 7	5 18 23 38	3 19 45 40	2 9 5 18	6 13 5 51	7 21 1 3	4 4 17 13	4 10 1 11	10 10 58 47	10 12 42 52	-4 53	18 39	2 2
7	1 1 3	5 19 22 48	4 2 22 23	2 9 29 55	6 13 39 48	7 21 10 28	4 5 2 25	4 10 7 42	10 10 55 36	10 12 44 20	-5 16	13 37	0 56
8	1 5 0	5 20 22 0	4 14 45 51	2 9 54 8	6 14 8 49	7 21 20 0	4 5 48 34	4 10 14 10	10 10 52 25	10 12 44 49	-5 39	8 8	-0 11
9	1 8 57	5 21 21 14	4 26 58 53	2 10 17 56	6 14 32 30	7 21 29 38	4 6 35 38	4 10 20 34	10 10 49 15	10 12 43 42	-6 2	2 25	-1 17
10	1 12 53	5 22 20 31	5 9 3 52	2 10 41 18	6 14 50 22	7 21 39 23	4 7 23 34	4 10 26 56	10 10 46 4	10 12 40 35	-6 25	-3 19	-2 18
11	1 16 50	5 23 19 50	5 21 2 46	2 11 4 13	6 15 1 56	7 21 49 14	4 8 12 20	4 10 33 14	10 10 42 53	10 12 35 26	-6 48	-8 52	-3 13
12	1 20 46	5 24 19 10	6 2 57 18	2 11 26 42	6 15 6 42	7 21 59 12	4 9 1 54	4 10 39 29	10 10 39 42	10 12 28 29	-7 10	-14 5	-3 58
13	1 24 43	5 25 18 33	6 14 49 2	2 11 48 43	6 15 4 13	7 22 9 17	4 9 52 16	4 10 45 40	10 10 36 32	10 12 20 17	-7 33	-18 44	-4 33
14	1 28 39	5 26 17 58	6 26 39 43	2 12 10 16	6 14 54 1	7 22 19 27	4 10 43 22	4 10 51 49	10 10 33 21	10 12 11 34	-7 55	-22 40	-4 56
15	1 32 36	5 27 17 25	7 8 31 22	2 12 31 20	6 14 35 42	7 22 29 43	4 11 35 12	4 10 57 53	10 10 30 10	10 12 3 9	-8 18	-25 40	-5 7
16	1 36 32	5 28 16 53	7 20 26 30	2 12 51 55	6 14 9 0	7 22 40 6	4 12 27 43	4 11 3 54	10 10 26 59	10 11 55 51	-8 40	-27 34	-5 4
17	1 40 29	5 29 16 23	8 2 28 13	2 13 12 0	6 13 33 47	7 22 50 34	4 13 20 56	4 11 9 51	10 10 23 49	10 11 50 17	-9 2	-28 12	-4 48
18	1 44 26	6 0 15 55	8 14 40 11	2 13 31 35	6 12 50 7	7 23 1 8	4 14 14 47	4 11 15 44	10 10 20 38	10 11 46 48	-9 24	-27 28	-4 19
19	1 48 22	6 1 15 29	8 27 6 36	2 13 50 39	6 11 58 20	7 23 11 48	4 15 9 16	4 11 21 34	10 10 17 27	10 11 45 22	-9 46	-25 21	-3 37
20	1 52 19	6 2 15 5	9 9 51 51	2 14 9 11	6 10 59 6	7 23 22 34	4 16 4 22	4 11 27 20	10 10 14 16	10 11 45 33	-10 7	-21 56	-2 43
21	1 56 15	6 3 14 42	9 23 0 12	2 14 27 12	6 9 53 26	7 23 33 25	4 17 0 3	4 11 33 1	10 10 11 6	10 11 46 34	-10 29	-17 20	-1 39
22	2 0 12	6 4 14 21	10 6 35 10	2 14 44 40	6 8 42 41	7 23 44 21	4 17 56 19	4 11 38 39	10 10 7 55	10 11 47 27	-10 50	-11 43	-0 28
23	2 4 8	6 5 14 2	10 20 38 42	2 15 1 35	6 7 28 35	7 23 55 23	4 18 53 8	4 11 44 13	10 10 4 44	10 11 47 9	-11 11	-5 20	0 47
24	2 8 5	6 6 13 45	11 5 10 19	2 15 17 55	6 6 13 10	7 24 6 29	4 19 50 30	4 11 49 42	10 10 1 33	10 11 44 55	-11 33	1 31	2 2
25	2 12 1	6 7 13 29	11 20 6 15	2 15 33 42	6 4 58 38	7 24 17 41	4 20 48 23	4 11 55 7	10 9 58 22	10 11 40 18	-11 53	8 28	3 10
26	2 15 58	6 8 13 15	0 5 19 16	2 15 48 53	6 3 47 16	7 24 28 58	4 21 46 46	4 12 0 28	10 9 55 12	10 11 33 27	-12 14	15 3	4 6
27	2 19 55	6 9 13 4	0 20 39 16	2 16 3 28	6 2 41 16	7 24 40 20	4 22 45 39	4 12 5 45	10 9 52 1	10 11 24 58	-12 35	20 45	4 45
28	2 23 51	6 10 12 54	1 5 54 50	2 16 17 26	6 1 42 37	7 24 51 47	4 23 45 1	4 12 10 57	10 9 48 50	10 11 15 52	-12 55	25 3	5 3
29	2 27 48	6 11 12 46	1 20 55 16	2 16 30 47	6 0 52 59	7 25 3 18	4 24 44 51	4 12 16 5	10 9 45 39	10 11 7 15	-13 15	27 33	5 0
30	2 31 44	6 12 12 41	2 5 32 21	2 16 43 29	6 0 13 37	7 25 14 54	4 25 45 7	4 12 21 9	10 9 42 29	10 11 0 11	-13 35	28 4	4 37
31	2 35 41	6 13 12 37	2 19 41 24	2 16 55 32	5 29 45 22	7 25 26 35	4 26 45 50	4 12 26 7	10 9 39 18	10 10 55 19	-13 55	26 41	3 58

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 नवंबर 2007 ई. को अयनांश 23° 58' 6''

नवंबर	सम्पातिक काल 0.0 h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध			
	घं.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.
1	2	39	37	6	14	12	36	3	3	21	18	2	17	6	56	5	29	28	37
2	2	43	34	6	15	12	37	3	16	33	44	2	17	17	38	5	29	23	24
3	2	47	30	6	16	12	40	3	29	22	13	2	17	27	39	5	29	29	27
4	2	51	27	6	17	12	45	4	11	51	9	2	17	36	57	5	29	46	13
5	2	55	24	6	18	12	52	4	24	5	7	2	17	45	31	6	0	12	58
6	2	59	20	6	19	13	2	5	6	8	25	2	17	53	22	6	0	48	55
7	3	3	17	6	20	13	13	5	18	4	50	2	18	0	27	6	1	33	10
8	3	7	13	6	21	13	27	5	29	57	23	2	18	6	47	6	2	24	50
9	3	11	10	6	22	13	42	6	11	48	27	2	18	12	21	6	3	23	3
10	3	15	6	6	23	13	59	6	23	39	47	2	18	17	7	6	4	27	1
11	3	19	3	6	24	14	18	7	5	32	48	2	18	21	6	6	5	35	56
12	3	22	59	6	25	14	39	7	17	28	46	2	18	24	16	6	6	49	9
13	3	26	56	6	26	15	1	7	29	29	6	2	18	26	37	6	8	6	2
14	3	30	53	6	27	15	25	8	11	35	40	2	18	28	9	6	9	26	2
15	3	34	49	6	28	15	50	8	23	50	52	2	18	28	51	6	10	48	40
16	3	38	46	6	29	16	16	9	6	17	48	2	18	28	44	6	12	13	30
17	3	42	42	7	0	16	44	9	19	0	7	2	18	27	45	6	13	40	10
18	3	46	39	7	1	17	13	10	2	1	45	2	18	25	56	6	15	8	22
19	3	50	35	7	2	17	44	10	15	26	32	2	18	23	15	6	16	37	50
20	3	54	32	7	3	18	15	10	29	17	29	2	18	19	44	6	18	8	19
21	3	58	28	7	4	18	48	11	13	35	49	2	18	15	20	6	19	39	39
22	4	2	25	7	5	19	23	11	28	19	58	2	18	10	5	6	21	11	39
23	4	6	22	7	6	19	58	0	13	24	51	2	18	3	59	6	22	44	11
24	4	10	18	7	7	20	35	0	28	41	54	2	17	57	0	6	24	17	8
25	4	14	15	7	8	21	13	1	14	0	5	2	17	49	10	6	25	50	25
26	4	18	11	7	9	21	53	1	29	7	52	2	17	40	28	6	27	23	56
27	4	22	8	7	10	22	34	2	13	55	12	2	17	30	54	6	28	57	39
28	4	26	4	7	11	23	17	2	28	15	15	2	17	20	30	7	0	31	29
29	4	30	1	7	12	24	1	3	12	4	56	2	17	9	14	7	2	5	25
30	4	33	57	7	13	24	46	3	25	24	39	2	16	57	8	7	3	[illegible]	24

नवंबर	गुरु				शुक्र				शनि			
	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.
1	7	25	38	20	4	27	46	58	4	12	31	1
2	7	25	50	10	4	28	48	31	4	12	35	51
3	7	26	2	5	4	29	50	27	4	12	40	35
4	7	26	14	3	5	0	52	47	4	12	45	15
5	7	26	26	6	5	1	55	28	4	12	49	50
6	7	26	38	13	5	2	58	31	4	12	54	20
7	7	26	50	24	5	4	1	55	4	12	58	45
8	7	27	2	39	5	5	5	39	4	13	3	4
9	7	27	14	58	5	6	9	42	4	13	7	18
10	7	27	27	21	5	7	14	4	4	13	11	27
11	7	27	39	47	5	8	18	44	4	13	15	31
12	7	27	52	17	5	9	23	42	4	13	19	30
13	7	28	4	51	5	10	28	56	4	13	23	22
14	7	28	17	28	5	11	34	27	4	13	27	10
15	7	28	30	8	5	12	40	14	4	13	30	51
16	7	28	42	51	5	13	46	17	4	13	34	27
17	7	28	55	38	5	14	52	35	4	13	37	58
18	7	29	8	27	5	15	59	7	4	13	41	22
19	7	29	21	20	5	17	5	54	4	13	44	41
20	7	29	34	15	5	18	12	55	4	13	47	54
21	7	29	47	14	5	19	20	9	4	13	51	2
22	8	0	0	15	5	20	27	37	4	13	54	3
23	8	0	13	18	5	21	35	18	4	13	56	58
24	8	0	26	24	5	22	43	11	4	13	59	47
25	8	0	39	33	5	23	51	17	4	14	2	31
26	8	0	52	44	5	24	59	35	4	14	5	8
27	8	1	5	57	5	26	8	5	4	14	7	39
28	8	1	19	12	5	27	16	46	4	14	10	4
29	8	1	32	30	5	28	25	38	4	14	12	22
30	8	1	45	50	5	29	34	42	4	14	14	35

नवंबर	मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां.		चन्द्र क्रां.		चन्द्रशर	
	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	10	9	36	7	10	10	52	47	-14	14	23	44	3	6
2	10	9	32	56	10	10	52	12	-14	33	19	37	2	6
3	10	9	29	46	10	10	52	43	-14	52	14	42	1	1
4	10	9	26	35	10	10	53	10	-15	11	9	18	-0	5
5	10	9	23	24	10	10	52	25	-15	30	3	39	-1	10
6	10	9	20	13	10	10	49	29	-15	48	-2	2	-2	10
7	10	9	17	2	10	10	43	43	-16	6	-7	35	-3	4
8	10	9	13	52	10	10	34	59	-16	24	-12	50	-3	49
9	10	9	10	41	10	10	23	34	-16	41	-17	36	-4	24
10	10	9	7	30	10	10	10	13	-16	58	-21	42	-4	48
11	10	9	4	19	10	9	55	59	-17	15	-24	55	-4	59
12	10	9	1	8	10	9	42	2	-17	32	-27	4	-4	57
13	10	8	57	58	10	9	29	32	-17	48	-27	59	-4	42
14	10	8	54	47	10	9	19	27	-18	4	-27	34	-4	15
15	10	8	51	36	10	9	12	18	-18	20	-25	48	-3	35
16	10	8	48	25	10	9	8	8	-18	35	-22	46	-2	44
17	10	8	45	14	10	9	6	27	-18	50	-18	35	-1	44
18	10	8	42	4	10	9	6	16	-19	5	-13	26	-0	37
19	10	8	38	53	10	9	6	17	-19	19	-7	31	0	33
20	10	8	35	42	10	9	5	11	-19	33	-1	5	1	44
21	10	8	32	31	10	9	1	53	-19	47	5	37	2	51
22	10	8	29	20	10	8	55	48	-20	0	12	13	3	49
23	10	8	26	10	10	8	46	58	-20	13	18	15	4	31
24	10	8	22	59	10	8	36	3	-20	25	23	12	4	55
25	10	8	19	48	10	8	24	12	-20	38	26	33	4	58
26	10	8	16	37	10	8	12	47	-20	49	27	56	4	40
27	10	8	13	26	10	8	3	1	-21	1	27	16	4	4
28	10	8	10	16	10	7	55	47	-21	12	24	46	3	13
29	10	8	7	5	10	7	51	21	-21	22	20	53	2	12
30	10	8	3	54	10	7	49	22	-21	33	16	2	1	5

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 दिसंबर 2007 ई. को अयनांश 23° 58' 11"

दिसंबर	साम्पातिक काल 0.0 h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर
	घ. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	4 37 54	7 14 25 33	4 8 17 21	2 16 44 13	7 5 13 25	8 1 59 12	6 0 43 56	4 14 16 41	10 8 0 43	10 7 49 0	-21 42	10 38	- 0 2
2	4 41 51	7 15 26 22	4 20 47 32	2 16 30 28	7 6 47 27	8 2 12 35	6 1 53 20	4 14 18 41	10 7 57 32	10 7 49 3	-21 52	4 57	- 1 8
3	4 45 47	7 16 27 12	5 3 0 19	2 16 15 55	7 8 21 29	8 2 26 1	6 3 2 54	4 14 20 34	10 7 54 21	10 7 48 15	-22 1	- 0 46	- 2 9
4	4 49 44	7 17 28 3	5 15 0 55	2 16 0 35	7 9 55 31	8 2 39 28	6 4 12 37	4 14 22 21	10 7 51 11	10 7 45 30	-22 9	- 6 22	- 3 3
5	4 53 40	7 18 28 56	5 26 54 8	2 15 44 29	7 11 29 32	8 2 52 58	6 5 22 30	4 14 24 1	10 7 48 0	10 7 40 3	-22 17	-11 40	- 3 48
6	4 57 37	7 19 29 50	6 8 44 11	2 15 27 39	7 13 3 33	8 3 6 28	6 6 32 31	4 14 25 35	10 7 44 49	10 7 31 39	-22 25	-16 32	- 4 24
7	5 1 33	7 20 30 46	6 20 34 29	2 15 10 5	7 14 37 33	8 3 20 1	6 7 42 42	4 14 27 2	10 7 41 38	10 7 20 31	-22 32	-20 47	- 4 48
8	5 5 30	7 21 31 42	7 2 27 35	2 14 51 50	7 16 11 34	8 3 33 35	6 8 53 0	4 14 28 23	10 7 38 27	10 7 7 19	-22 39	-24 12	- 4 59
9	5 9 26	7 22 32 40	7 14 25 20	2 14 32 56	7 17 45 35	8 3 47 10	6 10 3 27	4 14 29 37	10 7 35 17	10 6 53 5	-22 45	-26 36	- 4 57
10	5 13 23	7 23 33 38	7 26 28 59	2 14 13 24	7 19 19 37	8 4 0 47	6 11 14 1	4 14 30 44	10 7 32 6	10 6 38 59	-22 51	-27 48	- 4 43
11	5 17 20	7 24 34 38	8 8 39 27	2 13 53 17	7 20 53 40	8 4 14 24	6 12 24 42	4 14 31 45	10 7 28 55	10 6 26 15	-22 57	-27 40	- 4 15
12	5 21 16	7 25 35 38	8 20 57 35	2 13 32 38	7 22 27 46	8 4 28 3	6 13 35 31	4 14 32 39	10 7 25 44	10 6 15 50	-23 2	-26 10	- 3 35
13	5 25 13	7 26 36 39	9 3 24 26	2 13 11 28	7 24 1 55	8 4 41 43	6 14 46 27	4 14 33 26	10 7 22 33	10 6 8 23	-23 6	-23 22	- 2 44
14	5 29 9	7 27 37 41	9 16 1 31	2 12 49 49	7 25 36 7	8 4 55 24	6 15 57 29	4 14 34 7	10 7 19 22	10 6 3 59	-23 10	-19 25	- 1 44
15	5 33 6	7 28 38 43	9 28 50 55	2 12 27 46	7 27 10 25	8 5 9 5	6 17 8 38	4 14 34 41	10 7 16 12	10 6 2 15	-23 14	-14 31	- 0 38
16	5 37 2	7 29 39 46	10 11 55 13	2 12 5 20	7 28 44 47	8 5 22 48	6 18 19 53	4 14 35 8	10 7 13 1	10 6 2 17	-23 17	- 8 52	0 31
17	5 40 59	8 0 40 49	10 25 17 9	2 11 42 35	8 0 19 16	8 5 36 30	6 19 31 15	4 14 35 29	10 7 9 50	10 6 2 52	-23 20	- 2 43	1 41
18	5 44 55	8 1 41 53	11 8 59 14	2 11 19 32	8 1 53 53	8 5 50 14	6 20 42 42	4 14 35 42	10 7 6 39	10 6 2 45	-23 22	3 43	2 46
19	5 48 52	8 2 42 57	11 23 2 57	2 10 56 16	8 3 28 38	8 6 3 58	6 21 54 15	4 14 35 50	10 7 3 28	10 6 0 51	-23 24	10 7	3 43
20	5 52 49	8 3 44 1	0 7 28 1	2 10 32 49	8 5 3 32	8 6 17 42	6 23 5 54	4 14 35 50	10 7 0 17	10 5 56 34	-23 25	16 9	4 28
21	5 56 45	8 4 45 6	0 22 11 36	2 10 9 13	8 6 38 37	8 6 31 27	6 24 17 39	4 14 35 44	10 6 57 7	10 5 49 50	-23 26	21 23	4 55
22	6 0 42	8 5 46 11	1 7 7 59	2 9 45 32	8 8 13 52	8 6 45 12	6 25 29 29	4 14 35 31	10 6 53 56	10 5 41 11	-23 26	25 20	5 4
23	6 4 38	8 6 47 16	1 22 8 55	2 9 21 49	8 9 49 19	8 6 58 57	6 26 41 24	4 14 35 11	10 6 50 45	10 5 31 35	-23 26	27 33	4 51
24	6 8 35	8 7 48 21	2 7 4 52	2 8 58 6	8 11 24 58	8 7 12 43	6 27 53 25	4 14 34 45	10 6 47 34	10 5 22 11	-23 26	27 45	4 19
25	6 12 31	8 8 49 27	2 21 46 33	2 8 34 27	8 13 0 50	8 7 26 28	6 29 5 31	4 14 34 12	10 6 44 23	10 5 14 6	-23 25	25 59	3 30
26	6 16 28	8 9 50 34	3 6 6 32	2 8 10 54	8 14 36 55	8 7 40 13	7 0 17 42	4 14 33 33	10 6 41 12	10 5 8 9	-23 23	22 33	2 29
27	6 20 24	8 10 51 41	3 20 0 13	2 7 47 30	8 16 13 14	8 7 53 59	7 1 29 57	4 14 32 47	10 6 33 2	10 5 4 38	-23 21	17 55	1 20
28	6 24 21	8 11 52 48	4 3 26 7	2 7 24 18	8 17 49 46	8 8 7 44	7 2 42 18	4 14 31 54	10 6 34 51	10 5 3 24	-23 19	12 31	0 9
29	6 28 18	8 12 53 56	4 16 25 28	2 7 1 21	8 19 26 33	8 8 21 29	7 3 54 43	4 14 30 55	10 6 31 40	10 5 3 49	-23 16	6 44	- 1 1
30	6 32 14	8 13 55 4	4 29 1 27	2 6 38 41	8 21 3 33	8 8 35 13	7 5 7 13	4 14 29 50	10 6 28 29	10 5 4 58	-23 12	0 52	- 2 5
31	6 36 11	8 14 56 13	5 11 18 31	2 6 16 21	8 22 40 45	8 8 48 57	7 6 19 46	4 14 28 37	10 6 25 18	10 5 5 52	-23 8	- 4 53	- 3 2

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घ. 30 मि., भा. स्टै. टा.), 1 जनवरी 2008 ई. को अयनांश 23° 58' 17''

तारीख	साम्पातिक काल 0.0 h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर
	घ. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	6 40 7	8 15 57 22	5 23 21 44	2 5 54 23	8 24 18 9	8 9 2 41	7 7 32 25	4 14 27 19	10 6 22 7	10 5 5 38	-23 4	-10 21	-3 50
2	6 44 4	8 16 58 32	6 5 16 16	2 5 32 51	8 25 55 44	8 9 16 24	7 8 45 7	4 14 25 53	10 6 18 57	10 5 3 37	-22 59	-15 22	-4 27
3	6 48 0	8 17 59 42	6 17 7 1	2 5 11 46	8 27 33 28	8 9 30 7	7 9 57 53	4 14 24 22	10 6 15 46	10 4 59 31	-22 54	-19 47	-4 53
4	6 51 57	8 19 0 52	6 28 58 24	2 4 51 11	8 29 11 17	8 9 43 49	7 11 10 42	4 14 22 44	10 6 12 35	10 4 53 26	-22 48	-23 26	-5 6
5	6 55 53	8 20 2 3	7 10 54 5	2 4 31 8	9 0 49 9	8 9 57 30	7 12 23 30	4 14 20 59	10 6 9 24	10 4 45 46	-22 42	-26 7	-5 6
6	6 59 50	8 21 3 13	7 22 56 57	2 4 11 39	9 2 27 0	8 10 11 10	7 13 36 32	4 14 19 9	10 6 6 13	10 4 37 13	-22 36	-27 39	-4 52
7	7 3 47	8 22 4 24	8 5 9 4	2 3 52 46	9 4 4 46	8 10 24 49	7 14 49 32	4 14 17 12	10 6 3 2	10 4 28 36	-22 29	-27 51	-4 25
8	7 7 43	8 23 5 35	8 17 31 43	2 3 34 32	9 5 42 20	8 10 38 27	7 16 2 35	4 14 15 9	10 5 59 52	10 4 20 47	-22 21	-26 41	-3 45
9	7 11 40	8 24 6 45	9 0 5 33	2 3 16 58	9 7 19 35	8 10 52 4	7 17 15 40	4 14 13 0	10 5 56 41	10 4 14 28	-22 13	-24 9	-2 54
10	7 15 36	8 25 7 56	9 12 50 46	2 3 0 5	9 8 56 23	8 11 5 39	7 18 28 49	4 14 10 45	10 5 53 30	10 4 10 10	-22 5	-20 23	-1 53
11	7 19 33	8 26 9 6	9 25 47 25	2 2 43 54	9 10 32 34	8 11 19 13	7 19 42 0	4 14 8 23	10 5 50 19	10 4 7 59	-21 56	-15 36	-0 45
12	7 23 29	8 27 10 15	10 8 55 40	2 2 28 29	9 12 7 56	8 11 32 46	7 20 55 14	4 14 5 56	10 5 47 8	10 4 7 42	-21 47	-10 2	0 26
13	7 27 26	8 28 11 24	10 22 15 52	2 2 13 48	9 13 42 14	8 11 46 17	7 22 8 30	4 14 3 23	10 5 43 58	10 4 8 45	-21 37	-3 56	1 37
14	7 31 22	8 29 12 32	11 5 48 34	2 1 59 53	9 15 15 11	8 11 59 47	7 23 21 48	4 14 0 45	10 5 40 47	10 4 10 21	-21 27	2 25	2 44
15	7 35 19	9 0 13 40	11 19 34 17	2 1 46 46	9 16 46 29	8 12 13 15	7 24 35 9	4 13 58 1	10 5 37 36	10 4 11 41	-21 16	8 46	3 43
16	7 39 16	9 1 14 47	0 3 33 12	2 1 34 26	9 18 15 43	8 12 26 41	7 25 48 32	4 13 55 11	10 5 34 25	10 4 12 2	-21 6	14 46	4 29
17	7 43 12	9 2 15 53	0 17 44 41	2 1 22 55	9 19 42 29	8 12 40 5	7 27 1 56	4 13 52 16	10 5 31 14	10 4 10 59	-20 54	20 6	5 0
18	7 47 9	9 3 16 59	1 2 6 55	2 1 12 12	9 21 6 17	8 12 53 27	7 28 15 24	4 13 49 15	10 5 28 3	10 4 8 27	-20 43	24 20	5 12
19	7 51 5	9 4 18 4	1 16 36 31	2 1 2 17	9 22 26 34	8 13 6 47	7 29 28 53	4 13 46 9	10 5 24 53	10 4 4 44	-20 30	27 4	5 5
20	7 55 2	9 5 19 8	2 1 8 37	2 0 53 12	9 23 42 42	8 13 20 5	8 0 42 24	4 13 42 58	10 5 21 42	10 4 0 22	-20 18	27 59	4 38
21	7 58 58	9 6 20 11	2 15 37 18	2 0 44 55	9 24 53 59	8 13 33 21	8 1 55 57	4 13 39 42	10 5 18 31	10 3 56 3	-20 5	26 59	3 54
22	8 2 55	9 7 21 13	2 29 56 18	2 0 37 28	9 25 59 41	8 13 46 34	8 3 9 32	4 13 36 21	10 5 15 20	10 3 52 23	-19 52	24 12	2 55
23	8 6 51	9 8 22 15	3 14 0 0	2 0 30 49	9 26 59 0	8 13 59 46	8 4 23 9	4 13 32 56	10 5 12 9	10 3 49 52	-19 38	20 0	1 47
24	8 10 48	9 9 23 16	3 27 44 13	2 0 24 58	9 27 51 5	8 14 12 54	8 5 36 48	4 13 29 25	10 5 8 59	10 3 48 42	-19 24	14 48	0 33
25	8 14 45	9 10 24 16	4 11 6 34	2 0 19 56	9 28 35 5	8 14 26 1	8 6 50 28	4 13 25 50	10 5 5 48	10 3 48 48	-19 10	9 2	-0 40
26	8 18 41	9 11 25 16	4 24 6 41	2 0 15 42	9 29 10 8	8 14 39 4	8 3 4 11	4 13 22 10	10 5 2 37	10 3 49 52	-18 55	3 2	-1 49
27	8 22 38	9 12 26 15	5 6 45 58	2 0 12 15	9 29 35 29	8 14 52 6	8 9 17 55	4 13 18 26	10 4 59 26	10 3 51 27	-18 40	-2 55	-2 52
28	8 26 34	9 13 27 13	5 19 7 14	2 0 9 35	9 29 50 24	8 15 5 4	8 10 31 41	4 13 14 38	10 4 56 15	10 3 53 6	-18 25	-8 37	-3 44
29	8 30 31	9 14 28 11	6 1 14 21	2 0 7 43	9 29 54 21	8 15 17 59	8 11 45 29	4 13 10 45	10 4 53 5	10 3 54 22	-18 9	-13 52	-4 26
30	8 34 27	9 15 29 8	6 13 11 51	2 0 6 37	9 29 47 1	8 15 30 52	8 12 59 18	4 13 6 48	10 4 49 54	10 3 54 58	-17 53	-18 33	-4 55
31	8 38 24	9 16 30 5	6 25 4 32	2 0 6 16	9 29 28 19	8 15 43 42	8 14 13 9	4 13 2 48	10 4 46 43	10 3 54 44	-17 37	-22 29	-5 12

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 फरवरी 2008 ई. को अयनांश 23° 58' 22"

फरवरी	साम्पातिक काल 0.0 h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां	चन्द्रशर
	घ. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	8 42 20	9 17 31 1	7 6 57 12	2 0 6 42	9 28 58 31	8 15 56 28	8 15 27 1	4 12 58 43	10 4 43 32	10 3 53 41	-17 20	-25 29	-5 15
2	8 46 17	9 18 31 56	7 18 54 22	2 0 7 52	9 28 18 13	8 16 9 12	8 16 40 55	4 12 54 35	10 4 40 21	10 3 52 1	-17 3	-27 23	-5 5
3	8 50 14	9 19 32 50	8 1 0 6	2 0 9 47	9 27 28 23	8 16 21 52	8 17 54 50	4 12 50 23	10 4 37 11	10 3 49 57	-16 46	-28 1	-4 41
4	8 54 10	9 20 33 43	8 13 17 45	2 0 12 25	9 26 30 21	8 16 34 29	8 19 8 46	4 12 46 8	10 4 34 0	10 3 47 50	-16 28	-27 18	-4 4
5	8 58 7	9 21 34 36	8 25 49 50	2 0 15 47	9 25 25 46	8 16 47 2	8 20 22 43	4 12 41 50	10 4 30 49	10 3 45 56	-16 11	-25 11	-3 15
6	9 2 3	9 22 35 27	9 8 37 48	2 0 19 52	9 24 16 32	8 16 59 31	8 21 36 41	4 12 37 28	10 4 27 38	10 3 44 30	-15 52	-21 46	-2 14
7	9 6 0	9 23 36 17	9 21 42 7	2 0 24 38	9 23 4 40	8 17 11 57	8 22 50 40	4 12 33 4	10 4 24 28	10 3 43 39	-15 34	-17 11	-1 6
8	9 9 56	9 24 37 6	10 5 2 11	2 0 30 6	9 21 52 13	8 17 24 20	8 24 4 39	4 12 28 37	10 4 21 17	10 3 43 25	-15 15	-11 42	0 7
9	9 13 53	9 25 37 54	10 18 36 34	2 0 36 15	9 20 41 9	8 17 36 38	8 25 18 40	4 12 24 7	10 4 18 6	10 3 43 40	-14 56	-5 35	1 22
10	9 17 49	9 26 38 40	11 2 23 16	2 0 43 4	9 19 33 15	8 17 48 52	8 26 32 41	4 12 19 34	10 4 14 55	10 3 44 14	-14 37	0 53	2 32
11	9 21 46	9 27 39 25	11 16 19 53	2 0 50 32	9 18 30 2	8 18 1 2	8 27 46 43	4 12 15 0	10 4 11 44	10 3 44 52	-14 18	7 22	3 35
12	9 25 43	9 28 40 8	0 0 23 53	2 0 58 38	9 17 32 44	8 18 13 9	8 29 0 45	4 12 10 23	10 4 8 34	10 3 45 24	-13 58	13 33	4 25
13	9 29 39	9 29 40 50	0 14 32 47	2 1 7 22	9 16 42 15	8 18 25 10	9 0 14 48	4 12 5 44	10 4 5 23	10 3 45 43	-13 38	19 4	4 59
14	9 33 36	10 0 41 29	0 28 44 14	2 1 16 42	9 15 59 12	8 18 37 8	9 1 28 51	4 12 1 3	10 4 2 12	10 3 45 47	-13 18	23 32	5 16
15	9 37 32	10 1 42 8	1 12 55 58	2 1 26 39	9 15 23 58	8 18 49 1	9 2 42 55	4 11 56 21	10 3 59 [illegible]	10 3 45 40	-12 58	26 36	5 13
16	9 41 29	10 2 42 44	1 27 5 42	2 1 37 11	9 14 56 38	8 19 0 49	9 3 57 0	4 11 51 37	10 3 55 51	10 3 45 29	-12 37	27 59	4 51
17	9 45 25	10 3 43 19	2 11 11 3	2 1 48 17	9 14 37 10	8 19 12 33	9 5 11 4	4 11 46 52	10 3 52 40	10 3 45 21	-12 16	27 32	4 12
18	9 49 22	10 4 43 52	2 25 9 28	2 1 59 56	9 14 25 22	8 19 24 13	9 6 25 10	4 11 42 6	10 3 49 29	10 3 45 20	-11 56	25 21	3 18
19	9 53 18	10 5 44 23	3 8 58 23	2 2 12 9	9 14 20 56	8 19 35 47	9 7 39 15	4 11 37 18	10 3 46 18	10 3 45 26	-11 34	21 40	2 13
20	9 57 15	10 6 44 53	3 22 35 18	2 2 24 53	9 14 23 31	8 19 47 1[illegible]	9 8 53 22	4 11 32 30	10 3 43 7	10 3 45 34	-11 13	16 51	1 2
21	10 1 12	10 7 45 21	4 5 58 8	2 2 38 8	9 14 32 44	8 19 58 41	9 10 7 28	4 11 27 41	10 3 39 57	10 3 45 37	-10 52	11 18	-0 12
22	10 5 8	10 8 45 47	4 19 5 23	2 2 51 54	9 14 48 9	8 20 10 1	9 11 21 36	4 11 22 52	10 3 36 46	10 3 45 27	-10 30	5 22	-1 24
23	10 9 5	10 9 46 12	5 1 56 22	2 3 6 9	9 15 9 21	8 20 21 16	9 12 35 43	4 11 18 2	10 3 33 35	10 3 45 0	-10 8	-0 40	-2 30
24	10 13 1	10 10 46 35	5 14 31 23	2 3 20 54	9 15 35 55	8 20 32 25	9 13 49 51	4 11 13 11	10 3 30 24	10 3 44 15	-9 46	-6 32	-3 27
25	10 16 58	10 11 46 57	5 26 51 47	2 3 36 7	9 16 7 29	8 20 43 29	9 15 4 0	4 11 8 21	10 3 27 14	10 3 43 14	-9 24	-12 3	-4 13
26	10 20 54	10 12 47 17	6 8 59 52	2 3 51 47	9 16 43 41	8 20 54 28	9 16 18 9	4 11 3 31	10 3 24 3	10 3 42 7	-9 2	-17 0	-4 48
27	10 24 51	10 13 47 36	6 20 58 50	2 4 7 55	9 17 24 9	8 21 5 22	9 17 32 19	4 10 58 41	10 3 20 52	10 3 41 4	-8 39	-21 14	-5 9
28	10 28 47	10 14 47 53	7 2 52 33	2 4 24 29	9 18 8 34	8 21 16 9	9 18 46 29	4 10 53 51	10 3 17 41	10 3 40 19	-8 17	-24 35	-5 16
29	10 32 44	10 15 48 9	7 14 45 26	2 4 41 30	9 18 56 40	8 21 26 51	9 20 0 39	4 10 49 2	10 3 14 31	10 3 40 1	-7 54	-26 52	-5 10

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घ. 30 मि., भा. स्टे. टा.), 1 मार्च 2008 ई. को अयनांश 23° 58' 26"

मार्च	साम्पातिक काल 0.0 h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां	चन्द्रशर
	घ. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	10 36 41	10 16 48 24	7 26 42 7	2 4 58 55	9 19 48 10	8 21 37 28	9 21 14 50	4 10 44 14	10 3 11 20	10 3 40 16	-7 31	-27 57	-4 51
2	10 40 37	10 17 48 36	8 8 47 21	2 5 16 46	9 20 42 49	8 21 47 58	9 22 29 1	4 10 39 27	10 3 8 9	10 3 41 3	-7 9	-27 44	-4 19
3	10 44 34	10 18 48 48	8 21 5 37	2 5 35 1	9 21 40 25	8 21 58 23	9 23 43 13	4 10 34 40	10 3 4 58	10 3 42 15	-6 46	-26 8	-3 34
4	10 48 30	10 19 48 58	9 3 40 51	2 5 53 40	9 22 40 46	8 22 8 41	9 24 57 24	4 10 29 55	10 3 1 48	10 3 43 36	-6 23	-23 13	-2 39
5	10 52 27	10 20 49 6	9 16 36 6	2 6 12 42	9 23 43 41	8 22 18 53	9 26 11 36	4 10 25 11	10 2 58 37	10 3 44 46	-5 59	-19 5	-1 33
6	10 56 23	10 21 49 12	9 29 53 4	2 6 32 7	9 24 49 1	8 22 28 59	9 27 25 48	4 10 20 29	10 2 55 26	10 3 45 25	-5 36	-13 54	0 21
7	11 0 20	10 22 49 17	10 13 31 51	2 6 51 55	9 25 56 36	8 22 38 58	9 28 39 59	4 10 15 48	10 2 52 15	10 3 45 14	-5 13	-7 55	0 54
8	11 4 16	10 23 49 20	10 27 30 40	2 7 12 4	9 27 6 19	8 22 48 51	9 29 54 11	4 10 11 9	10 2 49 5	10 3 44 3	-4 49	-1 26	2 7
9	11 8 13	10 24 49 21	11 11 45 54	2 7 32 35	9 28 18 4	8 22 58 37	10 1 8 23	4 10 6 33	10 2 45 54	10 3 41 55	-4 26	5 15	3 14
10	11 12 10	10 25 49 19	11 26 12 24	2 7 53 27	9 29 31 43	8 23 8 17	10 2 22 34	4 10 1 58	10 2 42 43	10 3 39 2	-4 2	11 44	4 10
11	11 16 6	10 26 49 16	0 10 44 12	2 8 14 39	10 0 47 11	8 23 17 49	10 3 36 45	4 9 57 26	10 2 39 32	10 3 35 52	-3 39	17 38	4 49
12	11 20 3	10 27 49 11	0 25 15 20	2 8 36 11	10 2 4 24	8 23 27 15	10 4 50 57	4 9 52 56	10 2 36 22	10 3 32 54	-3 15	22 30	5 11
13	11 23 59	10 28 49 3	1 9 40 34	2 8 58 2	10 3 23 17	8 23 36 34	10 6 5 7	4 9 48 29	10 2 33 11	10 3 30 40	-2 52	25 59	5 12
14	11 27 56	10 29 48 53	1 23 56 4	2 9 20 12	10 4 43 47	8 23 45 45	10 7 19 18	4 9 44 5	10 2 30 0	10 3 29 29	-2 23	27 46	4 54
15	11 31 52	11 0 48 41	2 7 59 22	2 9 42 40	10 6 5 49	8 23 54 49	10 8 33 28	4 9 39 44	10 2 26 50	10 3 29 29	-2 4	27 44	4 19
16	11 35 49	11 1 48 27	2 21 49 22	2 10 5 27	10 7 29 22	8 24 3 46	10 9 47 38	4 9 35 26	10 2 23 39	10 3 30 27	-1 41	25 58	3 29
17	11 39 45	11 2 48 11	3 5 25 49	2 10 28 30	10 8 54 24	8 24 12 36	10 11 1 48	4 9 31 11	10 2 20 28	10 3 31 57	-1 17	22 41	2 28
18	11 43 42	11 3 47 52	3 18 49 6	2 10 51 51	10 10 20 52	8 24 21 18	10 12 15 57	4 9 26 59	10 2 17 17	10 3 33 22	-0 53	18 15	1 20
19	11 47 39	11 4 47 31	4 1 59 42	2 11 15 28	10 11 48 44	8 24 29 52	10 13 30 6	4 9 22 51	10 2 14 7	10 3 34 1	-0 29	13 0	0 9
20	11 51 35	11 5 47 7	4 14 58 8	2 11 39 20	10 13 18 0	8 24 38 19	10 14 44 15	4 9 18 46	10 2 10 56	10 3 33 21	-0 6	7 16	-1 2
21	11 55 32	11 6 46 42	4 27 44 47	2 12 3 29	10 14 48 38	8 24 46 38	10 15 58 24	4 9 14 45	10 2 7 45	10 3 31 1	0 18	1 19	-2 8
22	11 59 28	11 7 46 15	5 10 19 55	2 12 27 53	10 16 20 38	8 24 54 49	10 17 12 32	4 9 10 48	10 2 4 34	10 3 26 58	0 42	-4 34	-3 7
23	12 3 25	11 8 45 45	5 22 43 59	2 12 52 31	10 17 53 58	8 25 2 53	10 18 26 40	4 9 6 55	10 2 1 24	10 3 21 25	1 5	-10 12	-3 56
24	12 7 21	11 9 45 14	6 4 57 42	2 13 17 24	10 19 28 39	8 25 10 48	10 19 40 48	4 9 3 5	10 1 58 13	10 3 14 53	1 29	-15 21	-4 33
25	12 11 18	11 10 44 40	6 17 2 21	2 13 42 32	10 21 4 41	8 25 18 35	10 20 54 56	4 8 59 20	10 1 55 2	10 3 7 58	1 53	-19 50	-4 58
26	12 15 14	11 11 44 5	6 28 59 55	2 14 7 53	10 22 42 3	8 25 26 14	10 22 9 4	4 8 55 39	10 1 51 51	10 3 1 25	2 16	-23 30	-5 9
27	12 19 11	11 12 43 28	7 10 53 3	2 14 33 28	10 24 20 45	8 25 33 45	10 23 23 12	4 8 52 3	10 1 48 41	10 2 55 52	2 40	-26 8	-5 7
28	12 23 8	11 13 42 49	7 22 45 9	2 14 59 16	10 26 0 49	8 25 41 7	10 24 37 19	4 8 48 31	10 1 45 30	10 2 51 49	3 3	-27 37	-4 51
29	12 27 4	11 14 42 9	8 4 40 19	2 15 25 17	10 27 42 13	8 25 48 21	10 25 51 27	4 8 45 4	10 1 42 19	10 2 49 31	3 26	-27 49	-4 23
30	12 31 1	11 15 41 27	8 16 43 8	2 15 51 31	10 29 25 0	8 25 55 26	10 27 5 34	4 8 41 41	10 1 39 8	10 2 48 52	3 50	-26 43	-3 44
31	12 34 57	11 16 40 43	8 28 58 31	2 16 17 58	11 1 9 8	8 26 2 22	10 28 19 41	4 8 38 23	10 1 35 58	10 2 49 32	4 13	-24 20	-2 53

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 अप्रैल 2008 ई. को अयनांश 23° 58' 30"

अप्रैल	साम्पातिक काल 0.0 h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां	चन्द्रशर
	घ. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	12 38 54	11 17 39 57	9 11 31 19	2 16 44 38	11 2 54 40	8 26 9 9	10 29 33 48	4 8 35 10	10 1 32 47	10 2 50 50	4 36	-20 43	- 1 53
2	12 42 50	11 18 39 9	9 24 25 57	2 17 11 29	11 4 41 35	8 26 15 48	11 0 47 54	4 8 32 2	10 1 29 36	10 2 51 58	4 59	-16 2	- 0 45
3	12 46 47	11 19 38 20	10 7 45 46	2 17 38 32	11 6 29 54	8 26 22 17	11 2 2 0	4 8 28 59	10 1 26 25	10 2 52 4	5 22	-10 27	0 26
4	12 50 43	11 20 37 28	10 21 32 27	2 18 5 47	11 8 19 38	8 26 28 37	11 3 16 6	4 8 26 1	10 1 23 15	10 2 50 27	5 45	- 4 11	1 39
5	12 54 40	11 21 36 35	11 5 45 16	2 18 33 14	11 10 10 47	8 26 34 48	11 4 30 12	4 8 23 8	10 1 20 4	10 2 46 45	6 8	2 27	2 48
6	12 58 37	11 22 35 40	11 20 20 36	2 19 0 51	11 12 3 22	8 26 40 49	11 5 44 17	4 8 20 21	10 1 16 53	10 2 41 0	6 31	9 8	3 47
7	13 2 33	11 23 34 42	0 5 11 59	2 19 28 40	11 13 57 22	8 26 46 41	11 6 58 21	4 8 17 39	10 1 13 42	10 2 33 43	6 53	15 25	4 32
8	13 6 30	11 24 33 43	0 20 10 49	2 19 56 39	11 15 52 48	8 26 52 23	11 8 12 25	4 8 15 3	10 1 10 32	10 2 25 44	7 16	20 50	4 59
9	13 10 26	11 25 32 41	1 5 7 47	2 20 24 49	11 17 49 38	8 26 57 56	11 9 26 29	4 8 12 33	10 1 7 21	10 2 18 5	7 38	24 55	5 5
10	13 14 23	11 26 31 37	1 19 54 25	2 20 53 10	11 19 47 52	8 27 3 19	11 10 40 32	4 8 10 8	10 1 4 10	10 2 11 42	8 1	27 17	4 52

अक्षांश भेद से भारत में चन्द्रदर्शन की तारीखें और चन्द्र के उन्नत शृंग की दिशा तथा अंश (सं. 2064 वि.)

मास	चैत्र		वैशा.		प्र. ज्ये.		द्वि. ज्ये.		आषा.		श्राव.		भाद्र.		आश्वि.		कार्त्ति.		मार्ग.		पौष		माघ		फाल्गु.	
भारतीय अक्षांश	चन्द्रदर्शन (2007 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2007 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2007 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2007 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2007 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2007 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2007 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2007 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2007 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2007 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2008 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2008 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2008 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)
+ 5°	20 मार्च	द. 28	18 अप्रै.	द. 32	18 मई	द. 21	16 जून	द. 9	15जुला.	उ. 2	14 अग.	उ. 24	13 सितं.	उ. 37	13 अक्तू.	उ. 40	11 नवं.	उ. 38	11 दिसं.	उ. 22	⊙10जन.	0	8 फर.	द. 16	9 मार्च	द. 29
+ 15°	20 "	द. 18	18 "	द. 22	18 "	द. 10	16 "	उ. 1	15 "	उ. 12	14 "	उ. 34	13 "	उ. 47	13 "	उ. 51	11 "	उ. 48	11 "	उ. 32	10 "	उ. 11	8 "	द. 5	9 "	द. 19
+ 25°	20 "	द. 7	18 "	द. 12	18 "	उ. 1	16 "	उ. 11	15 "	उ. 22	14 "	उ. 44	13 "	उ. 57	13 "	उ. 60	11 "	उ. 58	11 "	उ. 43	10 "	उ. 22	8 "	उ. 5	9 "	द. 8
+ 35°	20 "	उ. 3	18 "	द. 1	*18 "	उ. 11	16 "	उ. 21	⊕15 "	उ. 32	14 "	उ. 54	13 "	उ. 67	13 "	उ. 70	11 "	उ. 68	11 "	उ. 52	10 "	उ. 32	8 "	उ. 16	9 "	उ. 3

*जम्मू–काश्मीर में चन्द्रदर्शन शायद 17 मई को हो जाए। ⊕ उत्तरी काश्मीर में चन्द्रदर्शन 16 जुलाई को हो सकता है।

⊙ केरल और तामिलनाडु के दक्षिणी छोर पर, तिरुवनन्तपुरम् एवं कन्याकुमारी के आस–पास चन्द्रदर्शन 9 जनवरी को सम्भावित है।

नोटः– यहां दिए गए चन्द्र–शृङ्गोन्नति के अंश लगभग हैं।

चण्डीगढ़ में चन्द्रोदयास्त काल (भा. स्टै. टा.), सन् 2007 ई.

तारीख	जनवरी 2007				फरवरी 2007				मार्च 2007				अप्रैल 2007				मई 2007				जून 2007				जुलाई 2007				अगस्त 2007				तारीख
	उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		
	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	
1	15	13	5	7	17	6	6	44	15	59	5	23	17	38	5	23	18	15	4	43	19	59	5	3	20	29	5	40	20	54	7	49	1
2	16	10	6	13	18	8	7	22	16	58	5	57	18	31	5	47	19	11	5	12	20	55	5	52	21	11	6	44	21	25	8	54	2
3	17	12	7	13	19	7	7	55	17	55	6	26	19	25	6	13	20	9	5	44	21	47	6	48	21	48	7	49	21	56	9	59	3
4	18	17	8	5	20	3	8	24	18	50	6	53	20	20	6	39	21	8	6	22	22	32	7	49	22	22	8	54	22	30	11	5	4
5	19	20	8	48	20	57	8	50	19	43	7	18	21	17	7	9	22	6	7	6	23	12	8	53	22	53	9	58	23	7	12	13	5
6	20	21	9	25	21	51	9	15	20	37	7	43	22	16	7	43	23	00	7	56	23	47	9	57	23	23	11	2	23	49	13	22	6
7	21	18	9	56	22	44	9	40	21	31	8	9	23	14	8	22	23	49	8	53	--	--	11	1	23	54	12	6	--	--	14	32	7
8	22	13	10	24	23	39	10	7	22	27	8	36	--	--	9	8	--	--	9	55	0	19	12	5	--	--	13	12	0	39	15	39	8
9	23	7	10	49	--	--	10	35	23	24	9	7	0	11	10	0	0	33	10	59	0	50	13	9	0	28	14	21	1	36	16	40	9
10	--	--	11	14	0	36	11	8	--	--	9	43	1	4	11	00	1	11	12	4	1	21	14	14	1	7	15	31	2	39	17	33	10
11	0	0	11	39	1	35	11	46	0	23	10	24	1	52	12	3	1	46	13	9	1	53	15	23	1	52	16	42	3	45	18	18	11
12	0	54	12	6	2	35	12	31	1	22	11	13	2	35	13	10	2	18	14	14	2	29	16	34	2	45	17	49	4	51	18	56	12
13	1	50	12	37	3	35	13	25	2	19	12	9	3	13	14	17	2	50	15	21	3	12	17	47	3	46	18	49	5	53	19	28	13
14	2	48	13	12	4	32	14	26	3	12	13	12	3	48	15	25	3	22	16	30	4	1	18	58	4	52	19	40	6	53	19	57	14
15	3	49	13	54	5	24	15	34	3	59	14	20	4	21	16	33	3	57	17	42	4	59	20	4	5	59	20	22	7	51	20	24	15
16	4	51	14	44	6	10	16	44	4	42	15	29	4	53	17	43	4	36	18	56	6	4	21	1	7	5	20	58	8	46	20	49	16
17	5	50	15	43	6	50	17	55	5	19	16	39	6	8	18	55	5	23	20	10	7	11	21	49	8	7	21	29	9	40	21	15	17
18	6	46	16	48	7	26	19	5	5	53	17	49	6	5	20	9	6	17	21	20	8	18	22	28	9	6	21	56	10	35	21	43	18
19	7	36	17	57	7	59	20	13	6	26	18	59	6	48	21	24	7	18	22	22	9	21	23	1	10	2	22	22	11	31	22	14	19
20	8	18	19	7	8	31	21	22	7	00	20	10	7	37	22	35	8	24	23	14	10	21	23	30	10	56	22	48	12	28	22	48	20
21	8	56	20	16	9	4	22	31	7	35	21	22	8	34	23	40	9	31	23	56	11	18	23	56	11	50	23	15	13	26	23	29	21
22	9	30	21	23	9	40	23	41	8	14	22	34	9	37	--	--	10	35	--	--	12	12	--	--	12	45	23	43	14	24	--	--	22
23	10	1	22	29	10	19	--	--	8	59	23	46	10	41	0	36	11	35	0	32	13	6	0	22	13	41	--	--	15	20	0	16	23
24	10	32	23	35	11	4	0	50	9	50	--	--	11	45	1	22	12	32	1	2	14	00	0	47	14	39	0	16	16	12	1	11	24
25	11	5	--	--	11	56	1	58	10	47	0	52	12	46	2	00	13	27	1	29	14	55	1	14	15	38	0	53	16	59	2	12	25
26	11	40	0	42	12	54	3	0	11	48	1	51	13	44	2	32	14	20	1	55	15	52	1	44	16	36	1	37	17	41	3	17	26
27	12	21	1	50	13	55	3	56	12	51	2	42	14	39	3	1	15	14	2	20	16	51	2	19	17	32	2	28	18	19	4	24	27
28	13	7	2	58	14	58	4	43	13	53	3	24	15	33	3	27	16	8	2	46	17	50	2	59	18	22	3	26	18	53	5	31	28
29	14	1	4	4					14	52	3	59	16	26	3	52	17	4	3	14	18	48	3	46	19	7	4	30	19	25	6	38	29
30	15	0	5	5					15	49	4	30	17	20	4	17	18	2	3	45	19	41	4	40	19	47	5	36	19	57	7	45	30
31	16	3	5	58					16	44	4	57					19	1	4	21					20	22	6	43	20	30	8	53	31

चण्डीगढ़ में चन्द्रोदयास्तकाल (भा. स्टैं. टा.), सन् 2007–08 ई.

तारीख	सितंबर 2007				अक्तूबर 2007				नवंबर 2007				दिसंबर 2007				जनवरी 2008				फरवरी 2008				मार्च 2008				अप्रैल 2008				तारीख
	उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		
	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	
1	21	6	10	2	21	24	11	21	23	30	12	56	--	--	12	35	0	56	12	23	2	30	12	36	2	11	12	3	3	6	13	45	1
2	21	48	11	13	22	25	12	28	--	--	13	33	0	20	13	2	1	51	12	51	3	27	13	22	3	3	12	58	3	42	14	47	2
3	22	36	12	23	23	29	13	26	0	32	14	5	1	15	13	28	2	47	13	23	4	22	14	14	3	51	13	57	4	14	15	50	3
4	23	31	13	32	--	--	14	16	1	31	14	33	2	10	13	54	3	44	14	00	5	13	15	12	4	34	14	59	4	46	16	55	4
5	--	--	14	35	0	34	14	57	2	27	15	00	3	4	14	21	4	41	14	42	5	59	16	13	5	12	16	3	5	17	18	1	5
6	0	32	15	30	1	38	15	32	3	21	15	25	3	59	14	51	5	37	15	31	6	40	17	16	5	46	17	6	5	50	19	10	6
7	1	36	16	17	2	38	16	2	4	15	15	51	4	55	15	24	6	31	16	25	7	16	18	20	6	18	18	11	6	26	20	22	7
8	2	41	16	56	3	36	16	30	5	9	16	19	5	52	16	3	7	20	17	25	7	49	19	23	6	49	19	15	7	8	21	35	8
9	3	44	17	29	4	31	16	55	6	5	16	50	6	49	16	47	8	4	18	27	8	20	20	26	7	21	20	22	7	56	22	48	9
10	4	44	17	59	5	26	17	21	7	1	17	24	7	45	17	38	8	42	19	29	8	50	21	30	7	54	21	30	8	53	23	55	10
11	5	41	18	26	6	20	17	48	7	59	18	4	8	37	18	34	9	17	20	31	9	21	22	35	8	31	22	41	9	56	--	--	11
12	6	37	18	52	7	15	18	16	8	55	18	50	9	23	19	33	9	48	21	32	9	54	23	42	9	14	23	52	11	3	0	54	12
13	7	32	19	18	8	10	18	48	9	50	19	42	10	5	20	34	10	18	22	34	10	32	--	--	10	4	--	--	12	11	1	44	13
14	8	26	19	45	9	7	19	24	10	40	20	39	10	42	21	36	10	47	23	37	11	16	0	51	11	1	1	1	13	16	2	25	14
15	9	22	20	14	10	5	20	5	11	25	21	39	11	14	22	37	11	18	--	--	12	7	2	0	12	4	2	4	14	17	3	0	15
16	10	18	20	47	11	1	20	53	12	5	22	40	11	45	23	38	11	53	0	42	13	7	3	8	13	11	2	59	15	16	3	31	16
17	11	15	21	25	11	54	21	47	12	40	23	42	12	15	--	--	12	32	1	49	14	12	4	9	14	18	3	45	16	13	3	59	17
18	12	13	22	9	12	43	22	45	13	13	--	--	12	45	0	40	13	19	3	00	15	20	5	2	15	22	4	24	17	9	4	26	18
19	13	9	22	59	13	28	23	47	13	44	0	45	13	18	1	45	14	15	4	11	16	28	5	47	16	24	4	58	18	5	4	54	19
20	14	2	23	56	14	7	--	--	14	15	1	48	13	55	2	52	15	18	5	18	17	33	6	25	17	23	5	30	19	2	5	22	20
21	14	50	--	--	14	42	0	51	14	47	2	53	14	38	4	4	16	27	6	18	18	35	6	58	18	20	5	56	19	59	5	53	21
22	15	34	0	58	15	15	1	55	15	23	4	2	15	31	5	17	17	37	7	9	19	34	7	27	19	17	6	23	20	56	6	27	22
23	16	12	2	3	15	47	3	1	16	4	5	14	16	32	6	30	18	45	7	52	20	31	7	55	20	13	6	51	21	53	7	6	23
24	16	48	3	10	16	20	4	7	16	53	6	29	17	40	7	36	19	50	8	28	21	28	8	22	21	10	7	20	22	47	7	51	24
25	17	20	4	16	16	54	5	17	17	51	7	44	18	51	8	33	20	50	9	00	22	24	8	50	22	8	7	52	23	37	8	40	25
26	17	53	5	24	17	33	6	28	18	56	8	55	20	1	9	21	21	48	9	28	23	21	9	20	23	5	8	28	--	--	9	35	26
27	18	26	6	32	18	18	7	43	20	6	9	57	21	6	10	0	22	44	9	55	--	--	9	53	--	--	9	9	0	22	10	32	27
28	19	2	7	43	19	11	8	59	21	15	10	48	22	8	10	33	23	40	10	22	0	19	10	31	0	1	9	55	1	2	11	32	28
29	19	43	8	55	20	11	10	11	22	21	11	30	23	5	11	2	--	--	10	51	1	16	11	14	0	54	10	47	1	38	12	32	29
30	20	30	10	9	21	17	11	16	23	22	12	5	--	--	11	29	0	36	11	22					1	43	11	43	2	11	13	33	30
31					22	24	12	11					0	1	11	56	1	33	11	56					2	27	12	43					31

यूरेनस, नेपच्यून, प्लूटो के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रान्ति-शर (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.)

तारीख सन 2007	यूरेनस	नेपच्यून	प्लूटो	मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		यूरेनस		नेपच्यून		प्लूटो	
	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	क्रान्ति अं. क.	शर अं. क.	क्रान्ति अं. क.	शर अं. क.	क्रान्ति अं. क.	शर अं. क.	क्रान्ति अं. क.	शर अं. क.	क्रान्ति अं. क.	शर अं. क.	क्रान्ति अं. क.	शर अं. क.	क्रान्ति अं. क.	शर अं. क.	क्रान्ति अं. क.	शर अं. क.
जन 1	10 17 35	09 24 10	08 03 06	-23 14	-00 18	-24 45	-01 28	-20 59	00 42	-22 15	-01 20	14 30	01 12	-07 56	-00 45	-15 37	-00 13	-16 32	06 53
4	10 17 41	09 24 15	08 03 13	-23 27	-00 20	-24 38	-01 41	-21 05	00 42	-21 33	-01 24	14 34	01 13	-07 54	-00 45	-15 35	-00 13	-16 32	06 53
7	10 17 48	09 24 21	08 03 19	-23 37	-00 22	-24 19	-01 52	-21 11	00 42	-20 46	-01 27	14 37	01 13	-07 51	-00 45	-15 33	-00 13	-16 32	06 53
10	10 17 55	09 24 27	08 03 26	-23 45	-00 24	-23 46	-02 00	-21 16	00 42	-19 53	-01 30	14 41	01 14	-07 48	-00 45	-15 31	-00 13	-16 32	06 53
13	10 18 02	09 24 33	08 03 32	-23 51	-00 26	-22 59	-02 05	-21 21	00 42	-18 55	-01 32	14 45	01 14	-07 45	-00 45	-15 30	-00 13	-16 33	06 53
16	10 18 10	09 24 40	08 03 38	-23 54	-00 28	-21 59	-02 06	-21 26	00 42	-17 52	-01 33	14 50	01 15	-07 42	-00 45	-15 28	-00 13	-16 33	06 53
19	10 18 18	09 24 46	08 03 44	-23 56	-00 30	-20 45	-02 04	-21 30	00 42	-16 45	-01 34	14 54	01 15	-07 39	-00 45	-15 26	-00 13	-16 33	06 53
22	10 18 26	09 24 53	08 03 50	-23 55	-00 32	-19 17	-01 57	-21 35	00 42	-15 34	-01 35	14 59	01 16	-07 36	-00 45	-15 24	-00 14	-16 33	06 53
25	10 18 34	09 24 59	08 03 55	-23 52	-00 34	-17 35	-01 44	-21 39	00 42	-14 18	-01 34	15 04	01 16	-07 33	-00 45	-15 22	-00 14	-16 33	06 53
28	10 18 43	09 25 06	08 04 01	-23 47	-00 36	-15 43	-01 26	-21 43	00 42	-13 00	-01 33	15 09	01 17	-07 29	-00 45	-15 19	-00 14	-16 33	06 53
31	10 18 52	09 25 13	08 04 06	-23 40	-00 38	-13 42	-01 01	-21 46	00 42	-11 38	-01 32	15 14	01 17	-07 26	-00 44	-15 17	-00 14	-16 33	06 53
फर 1	10 18 55	09 25 15	08 04 08	-23 37	-00 38	-13 00	-00 51	-21 47	00 42	-11 10	-01 31	15 15	01 17	-07 25	-00 44	-15 17	-00 14	-16 33	06 53
4	10 19 05	09 25 22	08 04 13	-23 26	-00 40	-10 54	-00 16	-21 51	00 42	-09 45	-01 29	15 20	01 18	-07 21	-00 44	-15 15	-00 14	-16 33	06 53
7	10 19 14	09 25 29	08 04 18	-23 13	-00 42	-08 55	00 26	-21 54	00 42	-08 17	-01 26	15 25	01 18	-07 17	-00 44	-15 13	-00 14	-16 32	06 53
10	10 19 24	09 25 36	08 04 22	-22 59	-00 44	-07 11	01 12	-21 57	00 42	-06 47	-01 22	15 30	01 18	-07 14	-00 44	-15 10	-00 14	-16 32	06 54
13	10 19 33	09 25 42	08 04 27	-22 42	-00 46	-05 54	02 01	-21 59	00 42	-05 16	-01 18	15 35	01 19	-07 10	-00 44	-15 08	-00 14	-16 32	06 54
16	10 19 43	09 25 49	08 04 31	-22 22	-00 48	-05 16	02 47	-22 02	00 42	-03 44	-01 13	15 40	01 19	-07 06	-00 44	-15 06	-00 14	-16 32	06 54
19	10 19 53	09 25 56	08 04 35	-22 01	-00 50	-05 20	03 22	-22 04	00 42	-02 11	-01 07	15 45	01 19	-07 02	-00 44	-15 04	-00 14	-16 32	06 54
22	10 20 03	09 26 03	08 04 38	-21 38	-00 52	-06 04	03 41	-22 06	00 42	-00 37	-01 01	15 50	01 19	-06 58	-00 44	-15 02	-00 14	-16 31	06 55
25	10 20 14	09 26 09	08 04 42	-21 12	-00 54	-07 16	03 40	-22 08	00 42	00 57	-00 54	15 55	01 19	-06 54	-00 44	-15 00	-00 14	-16 31	06 55
28	10 20 24	09 26 16	08 04 45	-20 45	-00 56	-08 38	03 20	-22 10	00 43	02 31	-00 47	15 59	01 19	-06 50	-00 44	-14 58	-00 14	-16 31	06 55
मार्च 1	10 20 27	09 26 18	08 04 46	-20 35	-00 57	-09 05	03 10	-22 11	00 43	03 03	-00 45	16 00	01 20	-06 49	-00 44	-14 57	-00 14	-16 31	06 56
4	10 20 38	09 26 25	08 04 49	-20 05	-00 58	-10 18	02 34	-22 12	00 43	04 36	-00 37	16 05	01 20	-06 45	-00 44	-14 55	-00 14	-16 30	06 56
7	10 20 48	09 26 31	08 04 51	-19 33	-01 00	-11 15	01 53	-22 13	00 43	06 08	-00 29	16 09	01 20	-06 41	-00 44	-14 53	-00 14	-16 30	06 56
10	10 20 58	09 26 37	08 04 53	-18 59	-01 02	-11 52	01 11	-22 15	00 43	07 40	-00 20	16 13	01 20	-06 37	-00 44	-14 51	-00 14	-16 30	06 57
13	10 21 09	09 26 43	08 04 55	-18 24	-01 04	-12 11	00 31	-22 16	00 43	09 09	-00 11	16 16	01 20	-06 33	-00 44	-14 49	-00 14	-16 29	06 57
16	10 21 19	09 26 49	08 04 57	-17 47	-01 06	-12 11	-00 06	-22 17	00 43	10 37	-00 02	16 20	01 20	-06 29	-00 44	-14 47	-00 14	-16 29	06 57
19	10 21 29	09 26 55	08 04 58	-17 08	-01 07	-11 54	-00 39	-22 17	00 43	12 03	00 08	16 23	01 20	-06 25	-00 44	-14 46	-00 14	-16 28	06 58
22	10 21 39	09 27 01	08 04 59	-16 28	-01 09	-11 22	-01 08	-22 18	00 43	13 26	00 17	16 26	01 20	-06 21	-00 44	-14 44	-00 14	-16 28	06 58
25	10 21 49	09 27 06	08 05 00	-15 46	-01 11	-10 35	-01 32	-22 18	00 44	14 47	00 27	16 28	01 20	-06 17	-00 44	-14 42	-00 14	-16 28	06 59
28	10 21 59	09 27 11	08 05 00	-15 03	-01 12	-09 34	-01 53	-22 19	00 44	16 04	00 37	16 30	01 20	-06 14	-00 44	-14 41	-00 14	-16 27	06 59
31	10 22 09	09 27 17	08 05 00	-14 19	-01 14	-08 21	-02 08	-22 19	00 44	17 18	00 47	16 32	01 20	-06 10	-00 44	-14 39	-00 14	-16 27	06 59

यूरेनस, नेपच्यून, प्लूटो के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रांति–शर (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.)

तारीख सन्	यूरेनस	नेपच्यून	प्लूटो	मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		यूरेनस		नेपच्यून		प्लूटो	
				क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर
2007 ई.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
अप्रैल 1	10 22 12	9 27 18	8 5 1	-14 3	-1 14	-7 54	-2 13	-22 19	0 44	17 42	0 51	16 33	1 20	-6 9	-0 44	-14 38	-0 14	-16 27	7 0
4	10 22 21	9 27 23	8 5 0	-13 17	-1 16	-6 25	-2 23	-22 19	0 44	18 50	1 1	16 35	1 19	-6 5	-0 44	-14 37	-0 14	-16 26	7 0
7	10 22 31	9 27 27	8 4 60	-12 30	-1 17	-4 44	-2 28	-22 19	0 44	19 55	1 10	16 36	1 19	-6 1	-0 44	-14 36	-0 14	-16 26	7 0
10	10 22 40	9 27 32	8 4 59	-11 42	-1 19	-2 54	-2 29	-22 19	0 44	20 55	1 20	16 37	1 19	-5 58	-0 44	-14 34	-0 15	-16 26	7 1
13	10 22 49	9 27 36	8 4 58	-10 53	-1 20	-0 54	-2 26	-22 19	0 44	21 50	1 30	16 38	1 19	-5 54	-0 45	-14 33	-0 15	-16 25	7 1
16	10 22 57	9 27 40	8 4 57	-10 3	-1 21	1 15	-2 18	-22 18	0 44	22 40	1 39	16 38	1 19	-5 51	-0 45	-14 32	-0 15	-16 25	7 1
19	10 23 6	9 27 43	8 4 55	-9 12	-1 22	3 33	-2 6	-22 18	0 44	23 25	1 48	16 38	1 19	-5 48	-0 45	-14 31	-0 15	-16 25	7 2
22	10 23 14	9 27 47	8 4 53	-8 21	-1 24	5 57	-1 49	-22 17	0 44	24 5	1 56	16 38	1 19	-5 45	-0 45	-14 30	-0 15	-16 24	7 2
25	10 23 22	9 27 50	8 4 51	-7 29	-1 25	8 27	-1 27	-22 16	0 44	24 39	2 4	16 37	1 18	-5 42	-0 45	-14 29	-0 15	-16 24	7 2
28	10 23 29	9 27 52	8 4 49	-6 37	-1 26	11 1	-1 2	-22 15	0 44	25 7	2 11	16 37	1 18	-5 39	-0 45	-14 28	-0 15	-16 24	7 3
मई 1	10 23 37	9 27 55	8 4 46	-5 44	-1 27	13 34	-0 33	-22 14	0 44	25 29	2 18	16 36	1 18	-5 36	-0 45	-14 27	-0 15	-16 23	7 3
4	10 23 44	9 27 57	8 4 44	-4 50	-1 27	16 3	-0 2	-22 13	0 44	25 45	2 24	16 34	1 18	-5 33	-0 45	-14 26	-0 15	-16 23	7 3
7	10 23 50	9 27 59	8 4 41	-3 57	-1 28	18 24	0 30	-22 12	0 44	25 56	2 30	16 32	1 18	-5 31	-0 45	-14 26	-0 15	-16 23	7 3
10	10 23 57	9 28 1	8 4 37	-3 3	-1 29	20 29	1 0	-22 10	0 44	26 0	2 34	16 30	1 18	-5 29	-0 45	-14 25	-0 15	-16 23	7 3
13	10 24 3	9 28 2	8 4 34	-2 9	-1 30	22 15	1 28	-22 9	0 44	25 58	2 38	16 28	1 17	-5 26	-0 45	-14 25	-0 15	-16 23	7 3
16	10 24 8	9 28 3	8 4 30	-1 15	-1 30	23 39	1 50	-22 7	0 44	25 51	2 41	16 26	1 17	-5 24	-0 45	-14 25	-0 15	-16 22	7 4
19	10 24 13	9 28 4	8 4 27	-0 21	-1 31	24 40	2 6	-22 6	0 44	25 38	2 43	16 23	1 17	-5 22	-0 46	-14 25	-0 15	-16 22	7 4
22	10 24 18	9 28 4	8 4 23	0 32	-1 31	25 19	2 15	-22 4	0 43	25 19	2 43	16 20	1 17	-5 20	-0 46	-14 24	-0 15	-16 22	7 4
25	10 24 23	9 28 4	8 4 19	1 26	-1 31	25 37	2 17	-22 2	0 43	24 55	2 43	16 16	1 17	-5 19	-0 46	-14 24	-0 15	-16 22	7 4
28	10 24 27	9 28 4	8 4 14	2 19	-1 31	25 37	2 11	-22 0	0 43	24 26	2 42	16 13	1 17	-5 17	-0 46	-14 25	-0 15	-16 22	7 4
31	10 24 30	9 28 4	8 4 10	3 12	-1 31	25 23	1 58	-21 58	0 43	23 52	2 39	16 9	1 16	-5 16	-0 46	-14 25	-0 16	-16 22	7 4
जून 1	10 24 31	9 28 4	8 4 9	3 29	-1 31	25 16	1 52	-21 57	0 42	23 40	2 38	16 7	1 16	-5 16	-0 46	-14 25	-0 16	-16 22	7 4
4	10 24 34	9 28 3	8 4 4	4 21	-1 31	24 46	1 28	-21 55	0 42	23 0	2 33	16 3	1 16	-5 15	-0 46	-14 25	-0 16	-16 22	7 3
7	10 24 37	9 28 2	8 3 60	5 13	-1 31	24 8	0 58	-21 53	0 42	22 17	2 27	15 59	1 16	-5 14	-0 46	-14 26	-0 16	-16 22	7 3
10	10 24 39	9 28 0	8 3 55	6 4	-1 31	23 23	0 21	-21 51	0 41	21 29	2 20	15 54	1 16	-5 13	-0 46	-14 26	-0 16	-16 22	7 3
13	10 24 41	9 27 59	8 3 50	6 54	-1 31	22 35	-0 23	-21 48	0 41	20 39	2 10	15 49	1 16	-5 12	-0 47	-14 27	-0 16	-16 22	7 3
16	10 24 42	9 27 57	8 3 46	7 44	-1 30	21 46	-1 10	-21 46	0 41	19 45	2 0	15 44	1 16	-5 12	-0 47	-14 27	-0 16	-16 23	7 3
19	10 24 43	9 27 55	8 3 41	8 32	-1 30	20 58	-2 0	-21 44	0 40	18 49	1 47	15 39	1 16	-5 12	-0 47	-14 2C	-0 16	-16 23	7 2
22	10 24 44	9 27 52	8 3 36	9 20	-1 29	20 13	-2 50	-21 42	0 40	17 51	1 33	15 33	1 16	-5 12	-0 47	-14 29	-0 16	-16 23	7 2
25	10 24 44	9 27 49	8 3 32	10 7	-1 29	19 35	-3 34	-21 40	0 39	16 51	1 17	15 28	1 16	-5 12	-0 47	-14 30	-0 16	-16 23	7 2
28	10 24 43	9 27 47	8 3 27	10 53	-1 28	19 5	-4 11	-21 38	0 39	15 50	0 59	15 22	1 15	-5 12	-0 47	-14 31	-0 16	-16 24	7 1

यूरेनस, नेपच्यून, प्लूटो के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रांति–शर (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.)

तारीख सन्	यूरेनस	नेपच्यून	प्लूटो	मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		यूरेनस		नेपच्यून		प्लूटो	
				क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर
2007 ई.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
जुला. 1	10 24 42	9 27 43	8 3 22	11 37	-1 27	18 45	-4 35	-21 36	0 38	14 49	0 39	15 16	1 15	-5 12	-0 47	-14 32	-0 16	-16 24	7 1
4	10 24 41	9 27 40	8 3 18	12 21	-1 26	18 37	-4 46	-21 34	0 37	13 47	0 17	15 9	1 15	-5 13	-0 47	-14 33	-0 16	-16 24	7 0
7	10 24 39	9 27 36	8 3 13	13 3	-1 25	18 42	-4 43	-21 32	0 37	12 45	-0 7	15 3	1 15	-5 14	-0 47	-14 34	-0 16	-16 25	7 0
10	10 24 37	9 27 33	8 3 9	13 45	-1 24	18 58	-4 27	-21 31	0 36	11 45	-0 34	14 57	1 15	-5 15	-0 48	-14 35	-0 16	-16 25	6 59
13	10 24 35	9 27 29	8 3 5	14 24	-1 22	19 23	-4 2	-21 29	0 36	10 46	-1 3	14 50	1 15	-5 16	-0 48	-14 37	-0 16	-16 26	6 59
16	10 24 32	9 27 25	8 3 0	15 3	-1 21	19 55	-3 28	-21 28	0 35	9 49	-1 35	14 43	1 15	-5 17	-0 48	-14 38	-0 16	-16 26	6 58
19	10 24 29	9 27 21	8 2 56	15 40	-1 19	20 29	-2 49	-21 27	0 35	8 55	-2 8	14 36	1 15	-5 18	-0 48	-14 40	-0 16	-16 27	6 58
22	10 24 25	9 27 16	8 2 53	16 16	-1 18	21 2	-2 7	-21 26	0 34	8 5	-2 44	14 29	1 15	-5 20	-0 48	-14 41	-0 16	-16 27	6 57
25	10 24 21	9 27 12	8 2 49	16 50	-1 16	21 29	-1 24	-21 26	0 33	7 20	-3 22	14 22	1 16	-5 21	-0 48	-14 42	-0 16	-16 28	6 56
28	10 24 16	9 27 7	8 2 45	17 23	-1 14	21 44	-0 42	-21 25	0 33	6 40	-4 1	14 15	1 16	-5 23	-0 48	-14 44	-0 17	-16 29	6 56
31	10 24 12	9 27 2	8 2 42	17 54	-1 12	21 43	-0 2	-21 25	0 32	6 7	-4 42	14 7	1 16	-5 25	-0 48	-14 45	-0 17	-16 29	6 55
अग. 1	10 24 10	9 27 1	8 2 41	18 4	-1 11	21 39	0 10	-21 25	0 32	5 57	-4 55	14 5	1 16	-5 26	-0 48	-14 46	-0 17	-16 29	6 55
4	10 24 5	9 26 56	8 2 38	18 34	-1 9	21 9	0 44	-21 26	0 31	5 34	-5 35	13 57	1 16	-5 28	-0 48	-14 48	-0 17	-16 30	6 54
7	10 23 60	9 26 51	8 2 35	19 1	-1 7	20 16	1 10	-21 26	0 31	5 20	-6 14	13 50	1 16	-5 30	-0 48	-14 49	-0 17	-16 31	6 53
10	10 23 54	9 26 46	8 2 32	19 28	-1 5	19 0	1 29	-21 27	0 30	5 14	-6 49	13 42	1 16	-5 32	-0 48	-14 51	-0 17	-16 32	6 52
13	10 23 48	9 26 41	8 2 30	19 52	-1 2	17 24	1 41	-21 28	0 29	5 18	-7 20	13 34	1 16	-5 35	-0 48	-14 52	-0 17	-16 32	6 51
16	10 23 42	9 26 36	8 2 28	20 16	-1 0	15 32	1 46	-21 29	0 29	5 29	-7 45	13 27	1 16	-5 37	-0 49	-14 54	-0 17	-16 33	6 50
19	10 23 35	9 26 32	8 2 26	20 37	-0 57	13 28	1 44	-21 30	0 28	5 48	-8 3	13 19	1 17	-5 40	-0 49	-14 56	-0 17	-16 34	6 50
22	10 23 29	9 26 27	8 2 24	20 57	-0 54	11 17	1 37	-21 32	0 28	6 14	-8 13	13 11	1 17	-5 42	-0 49	-14 57	-0 17	-16 35	6 49
25	10 23 22	9 26 22	8 2 23	21 16	-0 51	9 0	1 25	-21 34	0 27	6 44	-8 16	13 3	1 17	-5 45	-0 49	-14 59	-0 17	-16 36	6 48
28	10 23 15	9 26 17	8 2 22	21 33	-0 48	6 42	1 10	-21 36	0 27	7 16	-8 10	12 56	1 17	-5 48	-0 49	-15 0	-0 17	-16 37	6 47
31	10 23 8	9 26 12	8 2 21	21 49	-0 45	4 24	0 53	-21 38	0 26	7 49	-7 58	12 48	1 18	-5 51	-0 49	-15 2	-0 17	-16 38	6 46
सितं. 1	10 23 6	9 26 11	8 2 21	21 54	-0 44	3 38	0 46	-21 39	0 26	7 59	-7 53	12 45	1 18	-5 51	-0 49	-15 2	-0 17	-16 38	6 46
4	10 22 59	9 26 6	8 2 20	22 8	-0 41	1 21	0 26	-21 42	0 25	8 31	-7 34	12 37	1 18	-5 54	-0 49	-15 4	-0 17	-16 39	6 45
7	10 22 51	9 26 2	8 2 20	22 21	-0 37	-0 53	0 3	-21 44	0 25	8 59	-7 11	12 30	1 18	-5 57	-0 49	-15 5	-0 17	-16 40	6 44
10	10 22 44	9 25 58	8 2 20	22 32	-0 34	-3 4	-0 20	-21 47	0 24	9 24	-6 45	12 22	1 18	-6 0	-0 49	-15 6	-0 17	-16 41	6 43
13	10 22 37	9 25 53	8 2 20	22 42	-0 30	-5 10	-0 44	-21 50	0 24	9 45	-6 17	12 14	1 19	-6 3	-0 49	-15 8	-0 17	-16 42	6 42
16	10 22 30	9 25 49	8 2 21	22 51	-0 26	-7 11	-1 8	-21 53	0 23	10 1	-5 48	12 7	1 19	-6 5	-0 49	-15 9	-0 17	-16 43	6 41
19	10 22 23	9 25 46	8 2 22	22 59	-0 22	-9 5	-1 32	-21 56	0 23	10 13	-5 19	11 59	1 20	-6 8	-0 49	-15 10	-0 17	-16 44	6 40
22	10 22 16	9 25 42	8 2 23	23 6	-0 18	-10 53	-1 55	-22 0	0 22	10 19	-4 49	11 52	1 20	-6 11	-0 49	-15 11	-0 17	-16 45	6 39
25	10 22 9	9 25 38	8 2 25	23 12	-0 13	-12 33	-2 18	-22 3	0 22	10 19	-4 20	11 45	1 20	-6 14	-0 49	-15 13	-0 17	-16 46	6 38
28	10 22 2	9 25 35	8 2 27	23 18	-0 9	-14 3	-2 38	-22 6	0 21	10 15	-3 51	11 38	1 21	-6 16	-0 49	-15 14	-0 17	-16 47	6 37

यूरेनस, नेपच्यून, प्लूटो के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रांति--शर (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.)

तारीख सन्	यूरेनस	नेपच्यून	प्लूटो	मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		यूरेनस		नेपच्यून		प्लूटो	
				क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर
2007 ई.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
अक्तू. 1	10 21 55	9 25 32	8 2 29	23 22	-0 4	-15 22	-2 57	-22 10	0 21	10 5	-3 23	11 31	1 21	-6 19	-0 49	-15 14	-0 17	-16 48	6 36
4	10 21 49	9 25 29	8 2 31	23 26	0 1	-16 27	-3 12	-22 13	0 20	9 50	-2 56	11 24	1 22	-6 21	-0 48	-15 15	-0 17	-16 49	6 35
7	10 21 43	9 25 27	8 2 34	23 30	0 6	-17 15	-3 23	-22 17	0 20	9 29	-2 29	11 17	1 22	-6 23	-0 48	-15 16	-0 17	-16 50	6 34
10	10 21 37	9 25 25	8 2 37	23 33	0 12	-17 42	-3 27	-22 21	0 19	9 3	-2 4	11 10	1 23	-6 26	-0 48	-15 17	-0 17	-16 51	6 33
13	10 21 31	9 25 23	8 2 40	23 36	0 17	-17 41	-3 22	-22 24	0 19	8 33	-1 40	11 4	1 23	-6 28	-0 48	-15 17	-0 17	-16 52	6 32
16	10 21 25	9 25 21	8 2 43	23 39	0 23	-17 7	-3 4	-22 28	0 19	7 58	-1 17	10 58	1 24	-6 30	-0 48	-15 18	-0 17	-16 52	6 32
19	10 21 20	9 25 20	8 2 47	23 42	0 29	-15 53	-2 31	-22 31	0 18	7 18	-0 55	10 52	1 24	-6 32	-0 48	-15 18	-0 17	-16 53	6 31
22	10 21 16	9 25 18	8 2 51	23 45	0 35	-14 1	-1 43	-22 35	0 18	6 35	-0 34	10 46	1 25	-6 34	-0 48	-15 19	-0 17	-16 54	6 30
25	10 21 11	9 25 18	8 2 55	23 48	0 42	-11 47	-0 44	-22 38	0 17	5 47	-0 14	10 40	1 25	-6 35	-0 48	-15 19	-0 17	-16 55	6 29
28	10 21 7	9 25 17	8 2 60	23 51	0 49	-9 39	0 17	-22 41	0 17	4 55	0 4	10 35	1 26	-6 37	-0 48	-15 19	-0 17	-16 56	6 28
31	10 21 3	9 25 17	8 3 4	23 55	0 56	-8 8	1 9	-22 45	0 17	4 0	0 22	10 30	1 26	-6 38	-0 48	-15 19	-0 17	-16 57	6 28
नवं. 1	10 21 2	9 25 17	8 3 6	23 57	0 58	-7 49	1 23	-22 46	0 16	3 41	0 27	10 28	1 27	-6 39	-0 48	-15 19	-0 17	-16 57	6 27
4	10 20 59	9 25 17	8 3 11	24 2	1 6	-7 26	1 55	-22 49	0 16	2 42	0 43	10 24	1 27	-6 40	-0 48	-15 19	-0 17	-16 58	6 27
7	10 20 56	9 25 17	8 3 16	24 8	1 14	-7 50	2 11	-22 52	0 16	1 40	0 57	10 19	1 28	-6 41	-0 47	-15 19	-0 17	-16 59	6 26
10	10 20 54	9 25 18	8 3 21	24 14	1 22	-8 48	2 16	-22 54	0 15	0 36	1 11	10 15	1 28	-6 41	-0 47	-15 19	-0 17	-17 0	6 25
13	10 20 52	9 25 19	8 3 27	24 21	1 30	-10 9	2 11	-22 57	0 15	-0 30	1 23	10 11	1 29	-6 42	-0 47	-15 19	-0 17	-17 1	6 24
16	10 20 50	9 25 21	8 3 32	24 30	1 39	-11 42	2 0	-23 0	0 15	-1 38	1 33	10 8	1 30	-6 43	-0 47	-15 18	-0 17	-17 1	6 24
19	10 20 49	9 25 22	8 3 38	24 39	1 47	-13 21	1 44	-23 2	0 14	-2 48	1 43	10 5	1 30	-6 43	-0 47	-15 18	-0 17	-17 2	6 23
22	10 20 48	9 25 24	8 3 44	24 49	1 56	-15 1	1 26	-23 4	0 14	-3 59	1 51	10 2	1 31	-6 43	-0 47	-15 17	-0 17	-17 3	6 23
25	10 20 48	9 25 27	8 3 50	25 0	2 5	-16 38	1 6	-23 6	0 14	-5 10	1 59	9 59	1 32	-6 43	-0 47	-15 16	-0 17	-17 3	6 22
28	10 20 49	9 25 29	8 3 56	25 11	2 14	-18 10	0 45	-23 8	0 13	-6 22	2 5	9 57	1 33	-6 43	-0 47	-15 15	-0 17	-17 4	6 21
दिसं. 1	10 20 49	9 25 32	8 4 2	25 23	2 23	-19 35	0 24	-23 10	0 13	-7 34	2 10	9 55	1 33	-6 42	-0 47	-15 15	-0 17	-17 5	6 21
4	10 20 51	9 25 35	8 4 9	25 35	2 32	-20 53	0 3	-23 11	0 13	-8 45	2 13	9 54	1 34	-6 42	-0 46	-15 14	-0 17	-17 5	6 20
7	10 20 52	9 25 39	8 4 15	25 48	2 41	-22 2	-0 18	-23 12	0 12	-9 56	2 16	9 53	1 35	-6 41	-0 46	-15 12	-0 17	-17 6	6 20
10	10 20 54	9 25 42	8 4 22	26 0	2 49	-23 1	-0 37	-23 13	0 12	-11 5	2 18	9 52	1 36	-6 40	-0 46	-15 11	-0 17	-17 6	6 20
13	10 20 57	9 25 46	8 4 28	26 11	2 57	-23 49	-0 55	-23 14	0 12	-12 14	2 19	9 52	1 36	-6 39	-0 46	-15 10	-0 17	-17 7	6 19
16	10 21 0	9 25 51	8 4 35	26 22	3 4	-24 27	-1 13	-23 15	0 12	-13 20	2 18	9 52	1 37	-6 38	-0 46	-15 9	-0 17	-17 7	6 19
19	10 21 4	9 25 55	8 4 42	26 31	3 11	-24 53	-1 28	-23 15	0 11	-14 24	2 17	9 52	1 38	-6 36	-0 46	-15 7	-0 17	-17 7	6 19
22	10 21 8	9 25 60	8 4 48	26 40	3 17	-25 7	-1 42	-23 15	0 11	-15 26	2 15	9 53	1 39	-6 34	-0 46	-15 6	-0 17	-17 8	6 18
25	10 21 12	9 26 5	8 4 55	26 47	3 22	-25 8	-1 53	-23 15	0 11	-16 25	2 12	9 54	1 39	-6 33	-0 46	-15 4	-0 17	-17 8	6 18
28	10 21 17	9 26 10	8 5 1	26 52	3 26	-24 56	-2 1	-23 15	0 11	-17 20	2 8	9 56	1 40	-6 31	-0 45	-15 3	-0 17	-17 8	6 18
31	10 21 22	9 26 15	8 5 8	26 56	3 29	-24 30	-2 7	-23 14	0 10	-18 12	2 4	9 58	1 41	-6 29	-0 45	-15 1	-0 17	-17 9	6 18

यूरेनस, नेपच्यून, प्लूटो के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रांति–शर (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.)

तारीख सन्	यूरेनस	नेपच्यून	प्लूटो	मंगल क्रांति	मंगल शर	बुध क्रांति	बुध शर	गुरु क्रांति	गुरु शर	शुक्र क्रांति	शुक्र शर	शनि क्रांति	शनि शर	यूरेनस क्रांति	यूरेनस शर	नेपच्यून क्रांति	नेपच्यून शर	प्लूटो क्रांति	प्लूटो शर
2008 ई.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
जन. 3	10 21 24	9 26 17	8 5 10	26 57	3 30	-24 19	-2 8	-23 14	0 10	-18 28	2 2	9 58	1 41	-6 28	-0 45	-15 0	-0 17	-17 9	6 18
6	10 21 30	9 26 23	8 5 17	26 58	3 32	-23 34	-2 9	-23 13	0 10	-19 15	1 57	10 1	1 42	-6 26	-0 45	-14 59	-0 17	-17 9	6 17
9	10 21 36	9 26 28	8 5 23	26 59	3 34	-22 36	-2 6	-23 12	0 10	-19 57	1 51	10 3	1 42	-6 23	-0 45	-14 57	-0 17	-17 9	6 17
12	10 21 42	9 26 34	8 5 30	26 59	3 34	-21 25	-1 57	-23 11	0 9	-20 34	1 44	10 6	1 43	-6 20	-0 45	-14 55	-0 17	-17 9	6 17
15	10 21 49	9 26 41	8 5 36	26 57	3 34	-20 0	-1 43	-23 10	0 9	-21 6	1 37	10 10	1 44	-6 18	-0 45	-14 53	-0 17	-17 9	6 17
18	10 21 56	9 26 47	8 5 42	26 55	3 33	-18 26	-1 22	-23 8	0 9	-21 34	1 30	10 14	1 44	-6 15	-0 45	-14 51	-0 17	-17 9	6 17
21	10 22 4	9 26 53	8 5 48	26 53	3 32	-16 45	-0 53	-23 6	0 9	-21 55	1 22	10 17	1 45	-6 12	-0 45	-14 49	-0 17	-17 9	6 17
24	10 22 11	9 26 60	8 5 54	26 50	3 30	-15 4	-0 16	-23 5	0 8	-22 11	1 13	10 22	1 46	-6 9	-0 45	-14 47	-0 17	-17 9	6 17
27	10 22 20	9 27 6	8 5 60	26 47	3 28	-13 32	0 30	-23 2	0 8	-22 21	1 5	10 26	1 46	-6 5	-0 45	-14 45	-0 17	-17 9	6 17
30	10 22 28	9 27 13	8 6 5	26 44	3 26	-12 19	1 21	-23 0	0 8	-22 26	0 56	10 31	1 47	-6 2	-0 45	-14 43	-0 17	-17 9	6 17
31	10 22 37	9 27 19	8 6 11	26 41	3 23	-11 36	2 14	-22 58	0 8	-22 24	0 47	10 36	1 47	-5 59	-0 44	-14 41	-0 17	-17 9	6 17
फर. 1	10 22 40	9 27 22	8 6 13	26 40	3 22	-11 30	2 30	-22 57	0 7	-22 22	0 44	10 37	1 48	-5 58	-0 44	-14 40	-0 17	-17 9	6 17
4	10 22 48	9 27 29	8 6 18	26 37	3 19	-11 37	3 12	-22 54	0 7	-22 13	0 35	10 43	1 48	-5 54	-0 44	-14 38	-0 18	-17 9	6 17
7	10 22 58	9 27 35	8 6 23	26 35	3 16	-12 17	3 37	-22 51	0 7	-21 57	0 26	10 48	1 49	-5 50	-0 44	-14 36	-0 18	-17 9	6 17
10	10 23 7	9 27 42	8 6 28	26 32	3 12	-13 15	3 39	-22 48	0 7	-21 35	0 17	10 53	1 49	-5 47	-0 44	-14 34	-0 18	-17 9	6 18
13	10 23 17	9 27 49	8 6 32	26 30	3 9	-14 18	3 23	-22 45	0 6	-21 8	0 8	10 59	1 49	-5 43	-0 44	-14 31	-0 18	-17 9	6 18
16	10 23 26	9 27 56	8 6 37	26 28	3 6	-15 14	2 54	-22 42	0 6	-20 35	-0 1	11 4	1 50	-5 39	-0 44	-14 29	-0 18	-17 8	6 18
19	10 23 36	9 28 3	8 6 41	26 25	3 2	-15 58	2 18	-22 39	0 6	-19 57	-0 9	11 10	1 50	-5 35	-0 44	-14 27	-0 18	-17 8	6 18
22	10 23 46	9 28 9	8 6 45	26 23	2 59	-16 28	1 39	-22 36	0 6	-19 13	-0 17	11 16	1 50	-5 31	-0 44	-14 25	-0 18	-17 8	6 18
25	10 23 56	9 28 16	8 6 48	26 20	2 55	-16 43	1 2	-22 32	0 5	-18 24	-0 26	11 21	1 51	-5 27	-0 44	-14 23	-0 18	-17 8	6 19
28	10 24 6	9 28 23	8 6 52	26 18	2 52	-16 45	0 26	-22 29	0 5	-17 31	-0 33	11 27	1 51	-5 23	-0 44	-14 21	-0 18	-17 7	6 19
मार्च 1	10 24 13	9 28 27	8 6 54	26 16	2 50	-16 38	0 4	-22 27	0 5	-16 53	-0 38	11 30	1 51	-5 21	-0 44	-14 19	-0 18	-17 7	6 19
4	10 24 23	9 28 34	8 6 57	26 13	2 46	-16 16	-0 27	-22 23	0 5	-15 52	-0 45	11 36	1 51	-5 17	-0 44	-14 17	-0 18	-17 7	6 19
7	10 24 34	9 28 40	8 6 59	26 9	2 43	-15 41	-0 54	-22 20	0 4	-14 47	-0 52	11 41	1 51	-5 13	-0 44	-14 15	-0 18	-17 6	6 20
10	10 24 44	9 28 46	8 7 2	26 5	2 40	-14 54	-1 17	-22 17	0 4	-13 39	-0 58	11 46	1 51	-5 9	-0 44	-14 13	-0 18	-17 6	6 20
13	10 24 54	9 28 53	8 7 4	26 1	2 36	-13 55	-1 37	-22 13	0 4	-12 27	-1 4	11 51	1 51	-5 4	-0 44	-14 11	-0 18	-17 6	6 20
16	10 25 5	9 28 59	8 7 6	25 56	2 33	-12 43	-1 54	-22 10	0 3	-11 12	-1 9	11 56	1 51	-5 0	-0 44	-14 9	-0 18	-17 6	6 21
19	10 25 15	9 29 4	8 7 7	25 50	2 30	-11 21	-2 6	-22 7	0 3	-9 54	-1 14	12 0	1 51	-4 56	-0 44	-14 7	-0 18	-17 5	6 21
22	10 25 25	9 29 10	8 7 8	25 44	2 27	-9 47	-2 15	-22 4	0 3	-8 34	-1 18	12 5	1 51	-4 52	-0 44	-14 5	-0 18	-17 5	6 21
25	10 25 35	9 29 16	8 7 9	25 37	2 24	-8 2	-2 20	-22 1	0 3	-7 12	-1 22	12 9	1 51	-4 49	-0 44	-14 4	-0 18	-17 5	6 22
28	10 25 45	9 29 21	8 7 10	25 29	2 21	-6 7	-2 20	-21 58	0 2	-5 48	-1 24	12 12	1 51	-4 45	-0 44	-14 2	-0 18	-17 4	6 22
31	10 25 55	9 29 26	8 7 10	25 20	2 18	-4 1	-2 16	-21 55	0 2	-4 23	-1 27	12 16	1 51	-4 41	-0 44	-14 0	-0 18	-17 4	6 22

ग्रहों के निरयण राशि–नक्षत्र चरण–चार (संवत् 2064 वि.)

सूर्य–चार (सन् 2007–08 ई.)

तारीख 2007 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. (भा.स्टैं.टा.)	मि.
जनवरी 1		पू.षा.	2	16	03
4		पू.षा.	3	22	34
8		पू.षा.	4	5	05
11		उ.षा.	1	11	36
14	मकर	उ.षा.	2	18	07
18		उ.षा.	3	0	38
21		उ.षा.	4	7	12
24		श्रव.	1	13	49
27		श्रव.	2	20	30
31		श्रव.	3	3	16
फरवरी 3		श्रव.	4	10	07
6		धनि.	1	17	02
10		धनि.	2	0	02
13	कुम्भ	धनि.	3	7	06
16		धनि.	4	14	15
19		शत.	1	21	30
23		शत.	2	4	52
26		शत.	3	12	23
मार्च 1		शत.	4	20	03
5		पू.भा.	1	3	51
8		पू.भा.	2	11	46
11		पू.भा.	3	19	49
15	मीन	पू.भा.	4	3	59
18		उ.भा.	1	12	17
21		उ.भा.	2	20	44
25		उ.भा.	3	5	21
28		उ.भा.	4	14	08
31		रेव.	1	23	06
अप्रैल 4		रेव.	2	8	13
7		रेव.	3	17	30
11		रेव.	4	2	55
14	मेष	अश्वि.	1	12	28

तारीख 2007 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. (भा.स्टैं.टा.)	मि.
अप्रैल 17		अश्वि.	2	22	10
21		अश्वि.	3	8	01
24		अश्वि.	4	18	02
28		भर.	1	4	14
मई 1		भर.	2	14	35
5		भर.	3	1	05
8		भर.	4	11	43
11		कृत्ति.	1	22	27
15	वृष	कृत्ति.	2	9	18
18		कृत्ति.	3	20	16
22		कृत्ति.	4	7	22
25		रोहि.	1	18	35
29		रोहि.	2	5	56
जून 1		रोहि.	3	17	23
5		रोहि.	4	4	55
8		मृग.	1	16	32
12		मृग.	2	4	11
15	मिथुन	मृग.	3	15	52
19		मृग.	4	3	38
22		आर्द्रा	1	15	26
26		आर्द्रा	2	3	19
29		आर्द्रा	3	15	14
जुलाई 3		आर्द्रा	4	3	10
6		पुन.	1	15	06
10		पुन.	2	3	01
13		पुन.	3	14	53
17	कर्क	पुन.	4	2	44
20		पुष्य	1	14	34
24		पुष्य	2	2	22
27		पुष्य	3	14	09
31		पुष्य	4	1	53
अगस्त 3		आश्ले.	1	13	32

तारीख 2007 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. (भा.स्टैं.टा.)	मि.
अगस्त 7		आश्ले.	2	1	06
10		आश्ले.	3	12	33
13		आश्ले.	4	23	54
17	सिंह	मघा	1	11	09
20		मघा	2	22	19
24		मघा	3	9	23
27		मघा	4	20	21
31		पू.फा.	1	7	12
सितम्बर 3		पू.फा.	2	17	53
7		पू.फा.	3	4	26
10		पू.फा.	4	14	48
14		उ.फा.	1	1	02
17	कन्या	उ.फा.	2	11	07
20		उ.फा.	3	21	04
24		उ.फा.	4	6	53
27		हस्त	1	16	34
अक्तूबर 1		हस्त	2	2	05
4		हस्त	3	11	25
7		हस्त	4	20	35
11		चित्रा	1	5	34
14		चित्रा	2	14	24
17	तुला	चित्रा	3	23	05
21		चित्रा	4	7	38
24		स्वाती	1	16	03
28		स्वाती	2	0	20
31		स्वाती	3	8	27
नवम्बर 3		स्वाती	4	16	25
7		विशा.	1	0	14
10		विशा.	2	7	54
13		विशा.	3	15	26
16	वृश्चिक	विशा.	4	22	51
20		अनु.	1	6	11

तारीख 2007 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. (भा.स्टैं.टा.)	मि.
नवम्बर 23		अनु.	2	13	26
26		अनु.	3	20	35
30		अनु.	4	3	37
दिसम्बर 3		ज्येष्ठा	1	10	33
6		ज्येष्ठा	2	17	23
10		ज्येष्ठा	3	0	08
13		ज्येष्ठा	4	6	49
16	धनु	मूल	1	13	27
19		मूल	2	20	04
23		मूल	3	2	39
26		मूल	4	9	12
29		पू.षा.	1	15	44
सन् 2008 ई.					
जनवरी 1		पू.षा.	2	22	14
5		पू.षा.	3	4	42
8		पू.षा.	4	11	09
11		उ.षा.	1	17	38
15	मकर	उ.षा.	2	0	08
18		उ.षा.	3	6	41
21		उ.षा.	4	13	18
24		श्रव.	1	19	57
28		श्रव.	2	2	39
31		श्रव.	3	9	24
फरवरी 3		श्रव.	4	16	12
6		धनि.	1	23	04
10		धनि.	2	6	02
13	कुम्भ	धनि.	3	13	05
16		धनि.	4	20	16
20		शत.	1	3	34
23		शत.	2	10	59
26		शत.	3	18	31
मार्च 1		शत.	4	2	09

ग्रहों के निरयण राशि–नक्षत्र चरण–चार (संवत् 2064 वि.)

सूर्य–चार (सन् 2008 ई.)

तारीख 2008 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि. (भा.स्टैं.टा.)
मार्च 4		पू.भा	1	9	54
7		पू.भा	2	17	47
11		पू.भा	3	1	47
14	मीन	पू.भा	4	9	57
17		उ.भा.	1	18	18
21		उ.भा.	2	2	48
24		उ.भा.	3	11	28
27		उ.भा.	4	20	16
31		रेव.	1	5	13
अप्रैल 3		रेव.	2	14	18
6		रेव.	3	23	31

मंगल–चार (सन् 2007 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि.
जनवरी 4		ज्येष्ठा	4	6	09
8	धनु	मूल	1	20	10
13		मूल	2	9	41
17		मूल	3	22	45
22		मूल	4	11	22
26		पू.षा.	1	23	36
31		पू.षा.	2	11	26
फरवरी 4		पू.षा.	3	22	53
9		पू.षा.	4	9	57
13		उ.षा.	1	20	39
18	मकर	उ.षा.	2	7	00
22		उ.षा.	3	17	04
27		उ.षा.	4	2	52
मार्च 3		श्रव.	1	12	24
7		श्रव.	2	21	42
12		श्रव.	3	6	45
16		श्रव.	4	15	35
21		धनि.	1	0	15
25		धनि.	2	8	48
29	कुम्भ	धनि.	3	17	15

मंगल–चार (सन् 2007–08 ई.)

तारीख 2007 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि. (भा.स्टैं.टा.)
अप्रैल 3		धनि.	4	1	38
7		शत.	1	9	56
11		शत.	2	18	11
15		शत.	3	2	25
20		शत.	4	10	43
24		पू.भा	1	19	07
29		पू.भा	2	3	38
मई 3		पू.भा	3	12	18
7	मीन	पू.भा	4	21	08
12		उ.भा.	1	6	10
16		उ.भा.	2	15	28
21		उ.भा.	3	1	06
25		उ.भा.	4	11	07
29		रेव.	1	21	34
जून 3		रेव.	2	8	27
7		रेव.	3	19	50
12		रेव.	4	7	46
16	मेष	अश्वि.	1	20	21
21		अश्वि.	2	9	41
25		अश्वि.	3	23	49
30		अश्वि.	4	14	48
जुलाई 5		भर.	1	6	43
9		भर.	2	23	38
14		भर.	3	17	44
19		भर.	4	13	08
24		कृत्ति.	1	10	00
29	वृष	कृत्ति.	2	8	28
अगस्त 3		कृत्ति.	3	8	40
8		कृत्ति.	4	10	49
13		रोहि.	1	15	17
18		रोहि.	2	22	25
24		रोहि.	3	8	39
29		रोहि.	4	22	26

तारीख 2007 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि. (भा.स्टैं.टा.)
सितम्बर 4		मृग.	1	16	25
10		मृग.	2	15	39
16	मिथुन	मृग.	3	21	36
23		मृग.	4	12	19
30		आर्द्रा	1	14	56
अक्तूबर 8		आर्द्रा	2	11	22
17		आर्द्रा	3	15	14
29		आर्द्रा	4	22	47
नवम्बर 15	वक्री			13	55
दिसम्बर 1		आर्द्रा	3	13	00
12		आर्द्रा	2	19	53
21		आर्द्रा	1	14	51
30		मृग.	4	4	06
(सन् 2008 ई.)					
जनवरी 9		मृग.	3	1	17
31	मार्गी			4	03
फरवरी 24		मृग.	4	4	03
मार्च 6		आर्द्रा	1	15	06
15		आर्द्रा	2	23	47
24		आर्द्रा	3	7	59
अप्रैल 1		आर्द्रा	4	1	21

बुध–चार (सन् 2007 ई.)

तारीख 2007 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि. (भा.स्टैं.टा.)
जनवरी 1		पू.षा.	1	17	16
3		पू.षा.	2	19	25
5		पू.षा.	3	21	11
7		पू.षा.	4	22	33
9		उ.षा.	1	23	30
12	मकर	उ.षा.	2	0	02
14		उ.षा.	3	0	07
15		उ.षा.	4	23	48
17		श्रव.	1	23	08
19		श्रव.	2	22	09
21		श्रव.	3	20	57
23		श्रव.	4	19	42
25		धनि.	1	18	35
27		धनि.	2	17	55
29	कुम्भ	धनि.	3	18	13
31		धनि.	4	20	07
फरवरी 3		शत.	1	1	08
5		शत.	2	11	44
8		शत.	3	11	39
14	वक्री			10	05
20		शत.	2	9	23
23		शत.	1	15	10
26		धनि.	4	17	37
मार्च 2		धनि.	3	15	17
8	मार्गी			10	16
14		धनि.	4	17	20
19		शत.	1	8	59
22		शत.	2	21	53
25		शत.	3	23	21
28		शत.	4	18	07
31		पू.भा.	1	8	16
अप्रैल 2		पू.भा.	2	18	56
5		पू.भा.	3	2	51
7	मीन	पू.भा.	4	8	26
9		उ.भा.	1	12	01
11		उ.भा.	2	13	51
13		उ.भा.	3	14	06
15		उ.भा.	4	12	54
17		रेव.	1	10	22
19		रेव.	2	6	35
21		रेव.	3	1	40
22		रेव.	4	19	40

ग्रहों के निरयण राशि–नक्षत्र चरण–चार (संवत् 2064 वि.)

बुध–चार (सन् 2007–08 ई.)

तारीख 2007 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि. (भा.स्टैं.टा.)
अप्रैल 24	मेष	अश्वि.	1	12	41
26		अश्वि.	2	4	48
27		अश्वि.	3	20	06
29		अश्वि.	4	10	41
मई 1		भर.	1	0	40
2		भर.	2	14	10
4		भर.	3	3	20
5		भर.	4	16	19
7		कृत्ति.	1	5	16
8	वृष	कृत्ति.	2	18	23
10		कृत्ति.	3	7	54
11		कृत्ति.	4	22	00
13		रोहि.	1	12	58
15		रोहि.	2	5	04
16		रोहि.	3	22	37
18		रोहि.	4	17	58
20		मृग.	1	15	33
22		मृग.	2	15	54
24	मिथुन	मृग.	3	19	46
27		मृग.	4	4	10
29		आर्द्रा	1	18	48
जून 1		आर्द्रा	2	18	47
5		आर्द्रा	3	11	21
11		आर्द्रा	4	3	44
16	वक्री			5	10
21		आर्द्रा	3	9	45
27		आर्द्रा	2	23	57
जुलाई 4		आर्द्रा	1	1	54
10	मार्गी			7	45
16		आर्द्रा	2	3	57
20		आर्द्रा	3	19	07
23		आर्द्रा	4	22	53

तारीख 2007 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि. (भा.स्टैं.टा.)
जुलाई 26		पुन.	1	12	52
28		पुन.	2	19	03
30		पुन.	3	20	11
अगस्त 1	कर्क	पुन.	4	17	51
3		पुष्य	1	13	03
5		पुष्य	2	6	29
6		पुष्य	3	22	44
8		पुष्य	4	14	11
10		आश्ले.	1	5	10
11		आश्ले.	2	19	59
13		आश्ले.	3	10	52
15		आश्ले.	4	1	59
16	सिंह	मघा	1	17	30
18		मघा	2	9	34
20		मघा	3	2	18
21		मघा	4	19	46
23		पू.फा.	1	14	04
25		पू.फा.	2	9	18
27		पू.फा.	3	5	29
29		पू.फा.	4	2	43
31		उ.फा.	1	1	03
सितम्बर 2	कन्या	उ.फा.	2	0	31
4		उ.फा.	3	1	11
6		उ.फा.	4	3	07
8		हस्त	1	6	25
10		हस्त	2	11	09
12		हस्त	3	17	29
15		हस्त	4	1	36
17		चित्रा	1	11	45
20		चित्रा	2	0	20
22	तुला	चित्रा	3	15	59
25		चित्रा	4	11	41

तारीख 2007 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि. (भा.स्टैं.टा.)
सितम्बर 28		स्वाती	1	13	25
अक्तूबर 2		स्वाती	2	1	31
6		स्वाती	3	15	06
12	वक्री			9	30
17		स्वाती	2	13	35
21		स्वाती	1	3	11
23		चित्रा	4	20	58
26		चित्रा	3	15	08
30	कन्या	चित्रा	2	15	53
नवम्बर 2	मार्गी			4	30
4	तुला	चित्रा	3	18	56
9		चित्रा	4	4	18
12		स्वाती	1	2	34
14		स्वाती	2	15	27
16		स्वाती	3	23	57
19		स्वाती	4	6	05
21		विशा.	1	10	49
23		विशा.	2	14	46
25		विशा.	3	18	14
27	वृश्चिक	विशा.	4	21	27
30		अनु.	1	0	33
दिसम्बर 2		अनु.	2	3	36
4		अनु.	3	6	39
6		अनु.	4	9	42
8		ज्येष्ठा	1	12	46
10		ज्येष्ठा	2	15	48
12		ज्येष्ठा	3	18	49
14		ज्येष्ठा	4	21	46
17	धनु	मूल	1	0	36
19		मूल	2	3	19
21		मूल	3	5	51
23		मूल	4	8	11

तारीख 2007 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि. (भा.स्टैं.टा.)
दिसम्बर 25		पू.षा.	1	10	18
27		पू.षा.	2	12	10
29		पू.षा.	3	13	47
31		पू.षा.	4	15	11
सन् 2008 ई.					
जनवरी 2		उ.षा.	1	16	22
4	मकर	उ.षा.	2	17	27
6		उ.षा.	3	18	30
8		उ.षा.	4	19	43
10		श्रव.	1	21	21
12		श्रव.	2	23	49
15		श्रव.	3	3	47
17		श्रव.	4	10	26
19		धनि.	1	22	12
22		धनि.	2	21	30
29	वक्री			2	02
फरवरी 4		धनि.	1	1	43
7		श्रव.	4	0	26
9		श्रव.	3	19	53
13		श्रव.	2	6	39
19	मार्गी			8	27
26		श्रव.	3	3	11
मार्च 1		श्रव.	4	10	49
4		धनि.	1	20	35
7		धनि.	2	20	31
10	कुम्भ	धनि.	3	14	34
13		धनि.	4	4	31
15		शत.	1	15	22
17		शत.	2	23	45
20		शत.	3	6	02
22		शत.	4	10	31
24		पू.भा.	1	13	22

ग्रहों के निरयण राशि–नक्षत्र चरण–चार (संवत् 2064 वि.)

बुध–चार (सन् 2008 ई.)

तारीख 2008 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)	
मार्च 26		पू.भा.	2	14	46
28		पू.भा.	3	14	49
30	मीन	पू.भा.	4	13	36
अप्रैल 1		उ.भा.	1	11	13
3		उ.भा.	2	7	43
5		उ.भा.	3	3	11
6		उ.भा.	4	21	40

गुरु–चार (सन् 2007 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि.
जनवरी 13		ज्येष्ठा	1	9	59
31		ज्येष्ठा	2	23	39
फरवरी 24		ज्येष्ठा	3	10	31
अप्रैल 6	वक्री			6	53
मई 17		ज्येष्ठा	2	14	04
जून 13		ज्येष्ठा	1	16	07
जुलाई 16		अनु.	4	19	13
अगस्त 7	मार्गी			7	36
28		ज्येष्ठा	1	19	21
सितंबर 29		ज्येष्ठा	2	9	56
अक्तूबर 19		ज्येष्ठा	3	23	48
नवम्बर 6		ज्येष्ठा	4	9	01
22	धनु	मूल	1	5	03
दिसंबर 7		मूल	2	5	28
21		मूल	3	20	25
सन् 2008 ई.					
जनवरी 5		मूल	4	9	54
20		पू.षा.	1	5	21
फरवरी 4		पू.षा.	2	16	03
21		पू.षा.	3	8	16
मार्च 11		पू.षा.	4	11	01
अप्रैल 6		उ.षा.	1	2	12

शुक्र–चार (सन् 2007 ई.)

तारीख 2007 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)	
जनवरी 2		उ.षा.	3	5	05
4		उ.षा.	4	20	57
7		श्रव.	1	12	50
10		श्रव.	2	4	44
12		श्रव.	3	20	40
15		श्रव.	4	12	38
18		धनि.	1	4	37
20		धनि.	2	20	39
23	कुम्भ	धनि.	3	12	44
26		धनि.	4	4	52
28		शत.	1	21	03
31		शत.	2	13	18
फरवरी 3		शत.	3	5	38
5		शत.	4	22	01
8		पू.भा.	1	14	29
11		पू.भा.	2	7	01
13		पू.भा.	3	23	38
16	मीन	पू.भा.	4	16	20
19		उ.भा.	1	9	08
22		उ.भा.	2	2	01
24		उ.भा.	3	19	02
27		उ.भा.	4	12	09
मार्च 2		रेव.	1	5	25
4		रेव.	2	22	48
7		रेव.	3	16	20
10		रेव.	4	10	00
13	मेष	अश्वि.	1	3	49
15		अश्वि.	2	21	48
18		अश्वि.	3	15	56
21		अश्वि.	4	10	14
24		भर.	1	4	44
26		भर.	2	23	25

तारीख 2007 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)	
मार्च 29		भर.	3	18	20
अप्रैल 1		भर.	4	13	29
4		कृत्ति.	1	8	52
7	वृष	कृत्ति.	2	4	30
10		कृत्ति.	3	0	25
12		कृत्ति.	4	20	35
15		रोहि.	1	17	03
18		रोहि.	2	13	49
21		रोहि.	3	10	55
24		रोहि.	4	8	24
27		मृग.	1	6	16
30		मृग.	2	4	35
मई 3	मिथुन	मृग.	3	3	23
6		मृग.	4	2	41
9		आर्द्रा	1	2	33
12		आर्द्रा	2	3	00
15		आर्द्रा	3	4	06
18		आर्द्रा	4	5	56
21		पुन.	1	8	34
24		पुन.	2	12	09
27		पुन.	3	16	47
30	कर्क	पुन.	4	22	40
जून 3		पुष्य	1	5	58
6		पुष्य	2	14	54
10		पुष्य	3	1	46
13		पुष्य	4	14	57
17		आश्ले.	1	6	58
21		आश्ले.	2	2	38
25		आश्ले.	3	3	05
29		आश्ले.	4	10	15
जुलाई 4	सिंह	मघा	1	3	23
9		मघा	2	13	22

तारीख 2007 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)	
जुलाई 16		मघा	3	12	59
27	वक्री			22	58
अगस्त 7		मघा	2	20	17
14		मघा	1	8	33
19	कर्क	आश्ले.	4	19	16
25		आश्ले.	3	12	12
सितंबर 2		आश्ले.	2	22	46
8	मार्गी			21	44
15		आश्ले.	3	1	03
24		आश्ले.	4	3	01
30	सिंह	मघा	1	0	29
अक्तूबर 4		मघा	2	22	21
9		मघा	3	7	42
13		मघा	4	9	09
17		पू.फा.	1	5	05
20		पू.फा.	2	20	53
24		पू.फा.	3	9	27
27		पू.फा.	4	19	25
31		उ.फा.	1	3	12
नवंबर 3	कन्या	उ.फा.	2	9	11
6		उ.फा.	3	13	39
9		उ.फा.	4	16	49
12		हस्त	1	18	52
15		हस्त	2	19	58
18		हस्त	3	20	12
21		हस्त	4	19	41
24		चित्रा	1	18	29
27		चित्रा	2	16	40
30	तुला	चित्रा	3	14	17
दिसंबर 3		चित्रा	4	11	24
6		स्वाती	1	8	04
9		स्वाती	2	4	20

ग्रहों के निरयण राशि–नक्षत्र चरण–चार (संवत् 2064 वि.)

शुक्र–चार (सन् 2007–08 ई.)

तारीख 2007 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
दिसंबर 12		स्वाती	3	0 15
14		स्वाती	4	19 51
17		विशा.	1	15 10
20		विशा.	2	10 13
23		विशा.	3	5 02
25	वृश्चिक	विशा.	4	23 37
28		अनु.	1	18 00
31		अनु.	2	12 11
सन् 2008 ई.				
जनवरी 3		अनु.	3	6 12
6		अनु.	4	0 04
8		ज्येष्ठा	1	17 47
11		ज्येष्ठा	2	11 24
14		ज्येष्ठा	3	4 55
16		ज्येष्ठा	4	22 20
19	धनु	मूल	1	15 40
22		मूल	2	8 55
25		मूल	3	2 05
27		मूल	4	19 11
30		पू.षा.	1	12 14
फरवरी 2		पू.षा.	2	5 12
4		पू.षा.	3	22 08
7		पू.षा.	4	15 01
10		उ.षा.	1	7 52
13	मकर	उ.षा.	2	0 42
15		उ.षा.	3	17 31
18		उ.षा.	4	10 18
21		श्रव.	1	3 05
23		श्रव.	2	19 50
26		श्रव.	3	12 34
29		श्रव.	4	5 17
मार्च 2		धनि.	1	21 59

तारीख 2008 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
मार्च 5		धनि.	2	14 41
8	कुम्भ	धनि.	3	7 23
11		धनि.	4	0 05
13		शत.	1	16 47
16		शत.	2	9 30
19		शत.	3	2 14
21		शत.	4	18 58
24		पू.भा.	1	11 43
27		पू.भा.	2	4 28
29		पू.भा.	3	21 13
अप्रैल 1	मीन	पू.भा.	4	13 59
4		उ.भा.	1	6 46
6		उ.भा.	2	23 33

शनि–चार (सन् 2007 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि.
जनवरी 10	कर्क	आश्ले.	4	18 10
फरवरी 23		आश्ले.	3	16 52
अप्रैल 20	मार्गी			3 54
जून 13		आश्ले.	4	11 18
जुलाई 16	सिंह	मघा	1	4 45
अगस्त 12		मघा	2	12 37
सितंबर 7		मघा	3	20 19
अक्तूबर 6		मघा	4	1 10
नवंबर 12		पू.फा.	1	8 37
दिसंबर 19	वक्री			19 40
सन् 2008 ई.				
जनवरी 26		मघा	4	19 31
मार्च 10		मघा	3	15 54

राहु–चार (सन् 2007 ई.)

तारीख 2007 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
फरवरी 15		पू.भा.	1	1 36
अप्रैल 19		शत.	4	0 17
जून 20		शत.	3	21 42
अगस्त 22		शत.	2	19 16
अक्तूबर 24		शत.	1	16 56
दिसंबर 26		धनि.	4	14 18
सन् 2008 ई.				
फरवरी 18		धनि.	3	11 46

केतु–चार (सन् 2007 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि.
फरवरी 15		पू.फा.	3	1 36
अप्रैल 19		पू.फा.	2	0 17
जून 20		पू.फा.	1	21 42
अगस्त 22		मघा	4	19 16
अक्तूबर 24		मघा	3	16 56
दिसंबर 26		मघा	2	14 18
सन् 2008 ई.				
फरवरी 18		मघा	1	11 46

यूरेनस–चार (सन् 2007–08 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि.
फरवरी 21		पू.भा.	1	4 41
अप्रैल 24		पू.भा.	2	12 17
जून 23	वक्री			20 15
अगस्त 26		पू.भा.	1	1 12
नवंबर 24	मार्गी			15 46
फरवरी 14		पू.भा.	2	6 48

नेप्च्यून–चार (सन् 2007 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि.
मार्च 11		धनि.	2	14 12
मई 25	वक्री			6 41
अगस्त 14		धनि.	1	0 46
नवम्बर 1	मार्गी			4 07
सन् 2008 ई.				
जनवरी 12		धनि.	2	23 25

प्लूटो–चार (सन् 2007–08 ई.)

तारीख 2007–08 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
जनवरी 7		मूल	2	13 25
अप्रैल 1	वक्री			4 13
जुलाई 2		मूल	1	16 37
सितंबर 7	मार्गी			20 23
नवंबर 9		मूल	2	15 27
फरवरी 18		मूल	3	17 36
अप्रैल 2	वक्री			14 51

ग्रहों के वक्र–मार्ग/उदयास्त की तारीखें (सन् 2007–08 ई.)

ग्रह	वक्र/मार्ग	तारीख	ग्रह	उदय/अस्त	तारीख
मंगल	वक्री	नव. 15	बुध	पू. में अस्त	अप्रै. 21
मंगल	मार्गी	जन. 31	बुध	प. में उदित	मई 14
बुध	वक्री	फर. 14	बुध	प. में अस्त	जून 19
बुध	मार्गी	मार्च 8	बुध	पू. में उदित	जुला. 8
बुध	वक्री	जून 16	बुध	पू. में अस्त	अग. 3
बुध	मार्गी	जुला. 10	बुध	प. में उदित	अग. 30
बुध	वक्री	अक्तू. 12	बुध	प. में अस्त	अक्तू. 17
बुध	मार्गी	नव. 2	बुध	पू. में उदित	अक्तू. 30
बुध	वक्री	जन. 29	बुध	पू. में अस्त	नव. 24
बुध	मार्गी	फर. 19	बुध	प. में उदित	जन. 8
गुरु	वक्री	अप्रै. 6	बुध	प. में अस्त	जन. 31
गुरु	मार्गी	अग. 7	बुध	पू. में उदित	फर. 13
शुक्र	वक्री	जुला. 27	बुध	पू. में अस्त	अप्रै. 3
शुक्र	मार्गी	सित. 8	गुरु	अस्त	दिस. 10
शनि	मार्गी	अप्रै. 20	गुरु	उदित	जन. 4
शनि	वक्री	दिस. 19	शुक्र	प. में अस्त	अग. 7
यूरे.	वक्री	जून 23	शुक्र	पू. में उदित	अग. 23
यूरे.	मार्गी	नव. 24	शनि	अस्त	अग. 4
नेप.	वक्री	मई 25	शनि	उदित	सित. 9
नेप.	मार्गी	नव. 1			
प्लू.	वक्री	अप्रै. 1			
प्लू.	मार्गी	सित. 7			
प्लू.	वक्री	अप्रै. 2			

विश्व के नगरों का सूर्योदयास्तकाल

(प्रो. प्रियव्रत शर्मा द्वारा रचित "गणकमार्त्तण्ड" से उद्धृत)

आज के इस वैज्ञानिक युग में जहां वायुयान जैसे द्रुतगति वाहनों, रेडियो, टी. वी., Wireless, Fax आदि के प्रयोग ने राष्ट्र के नगरों, ग्रामों की दूरी को लगभग समाप्त ही कर डाला है, वहां स्थानीयकाल (या स्थानीय मध्यमकाल L.M.T.) का प्रयोग अनेक समस्याएं उत्पन्न करता है। क्योंकि यह काल प्रत्येक स्थान (नगर–ग्राम) के लिए लगभग भिन्न–भिन्न होता है, अतः आज के वैज्ञानिक नक्षत्रविदों ने एक ऐसे काल का सिद्धान्त अपनाया है, जो एक राष्ट्र के नगरों, ग्रामों मे एकरूप में प्रयुक्त होता है। इसी काल को स्टैण्डर्ड टाईम का नाम दिया गया है। अब विश्व के सभी राष्ट्रों मे स्टैं. टा. (स्टैण्डर्ड टाईम) का ही सर्वत्र प्रयोग होता है। प्रत्येक राष्ट्र अपने क्षेत्र (Area) के किसी लगभग मध्यस्थान (केन्द्रस्थल) के स्थानीयकाल(स्था.म.का.) को, जिसे उस देश का स्टैण्डर्ड टाईम कहा जाता है, अपने समस्त प्रान्तों, नगरों, ग्रामों में सभी जगह एकरूप में प्रयोग में लाता है और उसी काल को उस देश की सभी घड़ियां बतलाती हैं। जैसे–भारत का केन्द्रस्थल, जहां का स्था.म.का. (स्थानीय मध्यमकाल) पूरे भारत में भा. स्टैं. टा. के रूप में प्रयुक्त होता है, 82°/30′ (पूर्व) रेखांश वाला स्थल है। जिस स्थल का स्था. म. का. स्टैण्डर्ड टाईम के रूप में इस्तेमाल किया जाता है, उस स्थल के रेखांश (Longitude) को उस देश की स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन (Standard Time Meridian) कहा जाता है। इस प्रकार भारत की स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन का रेखांश 82°/30′ (पूर्व) है।

क्योंकि सभी जनव्यवहार स्टैं. टा. के अनुसार ही होता है, रेलगाड़ियां, वायुयान, टी.वी., रेडियो, ऑफिस, कालेज, स्कूल आदि से सम्बद्ध शत–प्रतिशत कालव्यवहार में इसी (स्टैं.टा.) को ही सरकार एवं जनसाधारण प्रयोग में लाते हैं, अतः यह भी आवश्यक है कि, सूर्योदय, सूर्यास्त को बतलाने वाला काल भी, भले ही वह किसी स्थान (नगर, ग्राम) विशेष से ही सम्बन्ध रखता है, इसी स्टैं. टा. में ही प्रयुक्त किया जाए, अन्यथा इस के लिए स्था.म.का. को प्रयुक्त करने पर इसके (सूर्योदयास्त के) काल का स्टैं. टा. से (जिसे हमारी सभी घड़ियां बतलाती हैं) समन्वय (co-ordination) नहीं हो पाएगा। उदाहरणार्थ – यदि हम प्रत्येक नगर–ग्राम का सूर्योदय, सूर्यास्त उस नगर–ग्राम के स्थानीयकाल में ही इस्तेमाल करने लग जाएं तो हम स्टैं. टा. बतलाने वाली अपनी घड़ी से उस काल को समझ नहीं सकेंगे; अतः सूर्योदय, सूर्यास्त जैसी स्थानीय घटनाओं को भी हम स्टैं. टा. में ही प्रकट करते हैं, ताकि हम इन स्थानीय आकाशीय घटनाओं के काल को भी अपनी इन (स्टैं. टा. बतलाने वाली) घड़ियों से जान सकें । प्रत्येक देश में रहने वाले लोगों द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली घड़ियां उस देश के स्टैं. टा. को ही बतलाया करती हैं,–यह ध्यान में रखें। जैसे–भारतीय जनता द्वारा प्रयोग में लाई जा रही घड़ियां भा.स्टैं.टा. को और जापान की जनता द्वारा प्रयोग में लाई जा रही घड़ियां जापानी स्टैं. टा. को बतलाती हैं।

विश्व क़े किसी भी नगर का सूर्योदय, सूर्यास्तकाल स्टैं. टा. में जानने के लिए सबसे पहले हमें निम्नलिखित तीन पदार्थ ज्ञात होने चाहिएं:–

(1) अभीष्ट नगर के अक्षांश, रेखांश ।

(2) अभीष्ट नगर, जिस देश में स्थित है, उस देश की स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन।

(3) अभीष्ट नगर का स्टैण्डर्ड अन्तर ।

इन तीनों पदार्थों को **ज्ञात करने का प्रकार यह** है :–

(1) नगर के अक्षांश–रेखांश :– अपने अभीष्ट नगर के अक्षांश–रेखांश किसी प्रामाणिक एटलस से ज्ञात करने होंगे। इसके लिए ऑक्सफोर्ड, मैकमिलन, Britannica एवम् Philip's आदि के एटलसों का प्रयोग किया जा सकता है। इन एटलसों के अन्त में विश्व के प्रसिद्ध–प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांशों की सूची दी रहती है। यहां हमने आगे अलग से भारत के सभी लगभग 1,000 प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश दिए हैं। यहां विदेशी प्रसिद्ध कुछ नगरों के अक्षांश, रेखांश भी अलग से दिए गए हैं।

(2) देश की स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन :– यहां आगे हमने 'स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन सारणी' दी है। इसमें विश्व के खास–खास अनेक देशों के स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियनों के रेखांश दिए गए हैं। इससे अपने अभीष्ट देश की स्टैं. मेरिडियन के रेखांश ज्ञात कर लें । जैसे–जापान की स्टैण्डर्ड मेरिडियन के रेखांश, जैसा कि सारणी में लिखा है, 135 अंश 00 कला (पूर्व)

हैं। अर्थात् जापान में सर्वत्र प्रयोग में लाया जाने वाला जापानी स्टैं. टा. इसी रेखांश वाले स्थान का स्था.म.का. है।

अमेरिका, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया आदि बड़े–बड़े देशों को सुविधार्थ चार–चार, पांच–पांच आदि कालक्षेत्रों (Time Zones) में बांटा गया है। इन कालक्षेत्रों में अलग–अलग स्टैं.टा. प्रयोग में आते हैं। जैसे– अमेरिका 4 कालक्षेत्रों में बंटा है। इन कालक्षेत्रों में इस्तेमाल होने वाले कालों (स्टैं. टा) के नाम ये हैं :–

(1) E.T.(Eastern Time)
(2) C.T. (Central Time)
(3) M.T. (Mountain Time)
(4) P.T. (Pacific Time)

यहां दी गई 'स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन सारणी' में इन बड़े देशों के कालक्षेत्रों की स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियनों के रेखांश अलग–अलग दिए गए हैं। किस कालक्षेत्र में कौन–कौन से नगर/प्रदेश पड़ते हैं, यह जानना भी जरूरी है। जैसे–अमेरिका के कैलिफोर्निया, नेवाडा आदि राज्य 'P.T.' कालक्षेत्र में और डेलावेयर, फ्लोरिडा आदि 'E.T.' कालक्षेत्र में पड़ते हैं। सभी बड़े देशों (अमेरिका, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया आदि) के भिन्न–भिन्न कालक्षेत्रों में पड़ने वाले प्रदेशों का विस्तृत विवरण हमने अपनी **'विश्वलग्न सारणी'** पुस्तक में दिया है। इन बड़े देशों मे उत्पन्न बच्चे की जन्मपत्री आदि बनाने हेतु वहां के सूर्योदयास्त आदि का स्टैं. टा. जानने के लिए यह ज्ञात करना जरूरी है कि– वह नगर उस बड़े देश के किस 'कालक्षेत्र' में पड़ता है। उसका कालक्षेत्र जानकर उस कालक्षेत्र की स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन के रेखांश **'स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन सारणी'** से ज्ञात कर लेने चाहिएं। **जैसे**–कोई बच्चा न्यूयार्क (अमेरिका) में उत्पन्न हुआ है। न्यूयार्क E.T.(ईस्टर्न टाईम) वाले कालक्षेत्र में पड़ता है, अतः इस बच्चे की जन्मपत्री बनाने के लिए "स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन सारणी' से इस नगर के कालक्षेत्र (E.T.) की स्टैण्डर्ड मेरिडियन के रेखांश 75°/00' (प.) लेने होंगे। स्टैं. टा. में न्यूयार्क का सूर्योदयास्त जानने के लिए इसी को प्रयोग में लाया जाएगा। इस स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन सारणी 'में यह भी बतलाया गया है कि– इस देश या देश के कालक्षेत्र के टाईम से भा. स्टैं. टा. कितना आगे (+) या पीछे (–) रहता है। इन कालक्षेत्रों के किसी भी नगर में उत्पन्न बच्चे का जन्मकाल (E.T., P.T. आदि) बतलाने वाला व्यक्ति यह भी आपको (दैवज्ञ को) बतलाएगा (अथवा आप स्वयं भी उससे यह पूछ सकते हैं) कि– बच्चे के जन्म का यह विदेशीकाल भा. स्टैं. टा. से कितना आगे या पीछे रहता है। यह ज्ञात हो जाने पर आप 'स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन सारणी' में दिए गए उस विदेशी काल और भा.स्टैं.टा. के अन्तर से यह जान सकेंगे कि– उस बच्चे के जन्म का समय उस देश के किस कालक्षेत्र का है। उदाहरणार्थ – मान लीजिए–कोई बच्चा अमेरिका के सेनफ्रांसिस्को (कैलिफोर्निया) में उत्पन्न हुआ। कैलिफोर्निया अमेरिका के किस कालक्षेत्र में पड़ता है, यह हमें मालूम नहीं है। लेकिन यह हमें ज्ञात है कि– सेनफ्रांसिस्को में इस्तेमाल होने वाला टाईम भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम से 13 घण्टा 30 मिनट पीछे है। इतना ज्ञात होने से हमें मालूम हो जाएगा, कि– सेनफ्रांसिस्को शहर "P.T."(Pacific Time) के कालक्षेत्र में है, क्योंकि यहां दी गई 'स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन सारणी' में लिखा है कि– अमेरिका देश के "P.T." कालक्षेत्र के टाईम से भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम 13 घण्टा 30 मिनट आगे है।

(3) नगर का स्टैण्डर्ड अन्तर :–अभीष्ट देश या कालक्षेत्र के स्टैण्डर्ड मेरिडियन ज्ञात हो जाने पर उस देश या कालक्षेत्र के किसी भी नगर का " स्टैण्डर्ड अन्तर " जानना आसान है। अभीष्ट नगर के रेखांश और उस नगर के देश या कालक्षेत्र की स्टैण्डर्ड मेरिडियन के रेखांशों का अन्तर करने पर जो अंश–कलाएं मिलें, उन्हें 4 से गुणा करें। गुणनफल मिनट और सेकण्ड होंगे (अंशों को 4 से गुणा करने पर मिनट और कलाओं को 4 से गुणा करने पर सैकण्ड मिलेंगे)।

जैसे–टोकियो (जापान) का स्टैण्डर्ड अन्तर ज्ञात करना है। टोकियो के रेखांश 139 अंश 33 कला (पूर्व) हैं और स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन सारणी में जापान की स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन के रेखांश 135 अंश 00 कला (पूर्व) हैं। इन दोनों रेखांशों का अन्तर 4 अंश 33 कला है। इसे 4 से गुणा करने पर 18 मिनट 12 सेकण्ड मिले। यह टोकियो का स्टैं. अन्तर है। यदि नगर स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन से पूर्व में है तो उसका स्टैण्डर्ड अन्तर धन (+) चिह्न वाला, अन्यथा ऋण (–) चिह्न वाला होगा। नगर स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन से पूर्व में है या पश्चिम में, इसका निर्णय मानचित्र (नक्शा) देखकर किया जा सकता है। **वैसे इसे जानने का दूसरा प्रकार यह भी है**– यदि नगर के रेखांश पूर्व दिशा वाले हों और वे रेखांश स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन के रेखांश से अधिक हों तो वह नगर स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन से पूर्व में होगा, अन्यथा पश्चिम में। पश्चिम रेखांश वाले नगरों के लिए इससे

उल्टा समझना चाहिए। इस नियम से स्पष्ट है कि– टोकियो अपने देश (जापान) की स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन से पूर्व में है। क्योंकि, इसके रेखांश पूर्व हैं और ये जापान की स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन से अधिक हैं, अतः इसका स्टैण्डर्ड अन्तर धन (+) चिह्न वाला होगा ।

स्टैण्डर्ड अन्तर जानने का एक और उदाहरण – उस नगर का ले लेते हैं, जो अनेक कालक्षेत्रों में बंटी अमेरिका का है। हम यहां लॉस एंजलस का स्टैं. अन्तर निकालेंगे। यह शहर अमेरिका के कैलिफोर्निया स्टेट में स्थित है। इस स्टेट में "P.T." (Pacific Time) प्रयोग में आता है। अर्थात् यह नगर "P.T." कालक्षेत्र में पड़ता है। 'स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन सारणी' में "P.T." कालक्षेत्र की स्टैण्डर्ड मेरिडियन के रेखांश 120 अंश 00 कला (प.) हैं । लॉस एंजलस के रेखांश 118 अंश 17 कला (प.) हैं। इन दोनों का अन्तर 1 अंश 43 कला है। इसे 4 से गुणा करने पर 6 मिनट 52 सेकण्ड मिले । यह लॉस एंजलस का स्टैं. अन्तर है। क्योंकि, लॉस एंजलस अपने कालक्षेत्र की स्टैं. मेरिडियन से पूर्व में स्थित है, अतः इसके स्टैं. अन्तर का चिह्न धन (+) होगा।

यहां हमने 'स्थानीय मध्यमकाल' **(L.M.T.)** और क्षेत्रीय स्टैं. टा. के अन्तर को 'स्टैण्डर्ड अन्तर' (स्टैं. अं.) की संज्ञा दी है। भारत के सभी (लगभग 1,000) प्रसिद्ध नगरों के स्टैं. अन्तर तथा विदेशी प्रसिद्ध नगरों के स्टैं. अन्तर भी इनके अक्षांश–रेखांशों के साथ अलग–अलग कोष्ठकों में दिए गए हैं।

स्टैं. टा. में सूर्योदयास्तकाल जानना

उपरोक्त तीन पदार्थ (अक्षांश, स्टैं. टाईम मेरिडियन, स्टैं. अन्तर) ज्ञात हो जाने पर अभीष्ट नगर का सूर्योदय एवं सूर्यास्तकाल उस देश या कालक्षेत्र के स्टैं. टाईम में नीचे लिखे प्रकार से सरलतापूर्वक जाना जा सकता है।

आगे विश्व के सभी अक्षांशों के दैनिक सूर्योदय और सूर्यास्त का स्थानीय मध्यमकाल (स्था. म. का.) बतलाने वाली सूर्योदय एवं सूर्यास्तसारणी दी गई है। इसमें कुछ सूर्योदयास्तकाल 10–10 अक्षांशों के अन्तर पर और कुछ 5–5 तथा अन्य 2–2 अक्षांशों के अन्तर पर दिए गए हैं। ये तीन–तीन दिनों के अन्तर पर हैं। इस सारणी से आप अपने अभीष्ट अक्षांश एवम् तारीख का सूर्योदय–सूर्यास्त मौखिक त्रैराशिक (अनुपात) द्वारा ज्ञात कर सकते हैं। (गणक मार्त्तण्ड में दी गई सूर्योदय एवम् सूर्यास्तकाल सारणी में एक–एक दिन के अन्तर पर सूर्योदय–सूर्यास्तकाल दिया गया है।)

इस सारणी से प्राप्त होने वाला सूर्योदय–सूर्यास्तकाल स्था.म.का. में होगा, जो जनव्यवहार में नहीं आता। अतः इनमें स्टैं. अन्तर का संस्कार (जोड़, घटाव) करके उन्हें स्टैं. टाईम मे बदलना जरूरी है। क्योंकि– जनव्यवहार में सभी जगह स्टैं. टाईम से ही काम होता है, अतः हमारी घड़ियां भी हमेशा स्टैं. टा. ही बतलाती हैं। यदि अभीष्ट नगर का स्टैण्डर्ड अन्तर धन (+) चिह्न वाला है तो उसे सूर्योदय, सूर्यास्त के स्था. म. का. में से घटाने, अन्यथा जोड़ने पर सूर्योदय, सूर्यास्तकाल स्थानीय (उस देश / कालक्षेत्र के) स्टैं. टा. में बदल जाएंगे।

सूर्योदय, सूर्यास्त के इस स्टैं टाईम में एक और छोटा सा सस्कार करना होगा। यहां आगे एक **'सूर्य केन्द्र उदयास्त सस्कार सारणी '** दी गई है। इस सारणी से अपनी अभीष्ट तारीख, मास और नगर के अक्षांशों द्वारा संस्कार–मिनट प्राप्त करें। इन्हें सूर्योदयकाल में जोड़ें और सूर्यास्तकाल में से घटाएं। इस प्रकार प्राप्त होने वाला सूर्योदय–सूर्यास्तकाल ज्योतिष–शास्त्रीय (जन्मपत्र आदि की) गणित में इस्तेमाल करने योग्य हो जाएगा। इसी सूर्योदय–सूर्यास्त से जन्मकालिक इष्टकाल आदि बनाना चाहिए।

इस उपरोक्त विधि से उत्तर अक्षांश वाले नगरों का सूर्योदय, सूर्यास्तकाल ज्ञात होता है। दक्षिणी अक्षांश वाले स्थलों का सूर्योदयास्तकाल जानने के लिए आगे दी गई **"दक्षिण अक्षांश संस्कार सारणी"** प्रयोग में लाइए। जिस तारीख के लिए दक्षिण अक्षांशीय नगर का सूर्योदयास्त जानना है, उस 'दक्षिण अक्षांशीय तारीख' के आगे इस सारणी में लिखी 'उ. अक्षांश तारीख' का सूर्योदयास्तकाल " सूर्योदय एवम् सूर्यास्त सारणी " से ज्ञात कर लें। इसमें इस **"दक्षिण अक्षांश संस्कार सारणी"** से प्राप्त संस्कार के मिनटों को चिह्नानुसार जोड़ने या घटाने से आपकी अभीष्ट तारीख का अभीष्ट दक्षिण अक्षांशीय नगर के सूर्योदयास्त का स्था.म.का. ज्ञात हो जाएगा। इसमें अभीष्ट नगर के स्टैण्डर्ड अन्तर का संस्कार (जोड़–घटाव) पूर्वोक्तवत् कर देने पर सूर्योदयास्त का स्था. म. काल स्टैं. टा. में बदल जाएगा। इनमें 'सूर्यकेंद्रोदयास्त संस्कार सारणी' से प्राप्त मिनटों का भी उपरोक्त प्रकार से संस्कार करना होगा।

स्पष्टता के लिए हम नीचे कुछ उदाहरण दे रहे हैं—

उदाहरण (1) :–लुधियाना (पंजाब) नें 1 मार्च को भा. स्टैं. टा. के अनुसार सूर्योदय और सूर्यास्तकाल जानना है। लुधियाना के अक्षांश 30°–55' (उ.) और रेखांश 75°– 54' (पू.) तथा स्टैं. अन्तर –26 मि. 24 से.

है। 1 मार्च को अक्षांश 30°–55′ (उ.) का सूर्योदय 6 घं. 27 मि. 43 से. और सूर्यास्त 17 घं. 57 मि. 27 से. सूर्योदय–सूर्यास्तसारणी से अनुपात (त्रैराशिक) द्वारा प्राप्त किए। ये स्था. म. का. में हैं । लुधियाना का स्टैं. अन्तर 26 मि. 24 से. **ऋण (–)** है। अतः स्था. म. का. वाले सूर्योदय एवं सूर्यास्तकाल में इसे चिह्न के विपरीत जोड़ देने पर 6 घं 54 मि. 7 से. और 18 घं. 23 मि. 51 से. मिले, जो लुधियाना में 1 मार्च को भा. स्टैं. टा. के अनुसार क्रमशः सूर्योदय एवं सूर्यास्तकाल हैं। 'सूर्य केंद्रोदयास्त संस्कारसारणी' से 1 मार्च को 30° अक्षांश का संस्कार 3 मि. 41 से. मिला, इसे सूर्योदयकाल में जोड़ने और सूर्यास्तकाल में से घटा देने पर 6 घं. 57 मि. 48से. और 18 घं. 20 मि. 10 से. मिले। जो ज्योतिषशास्त्रीय (इष्टकाल/लग्नादि साधन के लिए उपयोगी) सूर्योदय एवं सूर्यास्तकाल हैं।

उदाहरण (2) :– काबुल (अफगानिस्तान) में 10 अप्रैल को सूर्योदय–सूर्यास्तकाल (अफगान स्टैं. टा.) में जनना है। काबुल के अक्षांश 34 अंश 33 कला (उत्तर) और रेखांश 69 अंश 12 कला (पूर्व) हैं। काबुल का स्टैं. अन्तर +6 मिनट 48 से. है (काबुल का यह स्टैं. अं. काबुल के रेखांश और अफगानिस्तान की स्टैं. टाईम मेरिडियन के रेखांशों के अन्तर से पूर्वोक्त विधि द्वारा बनाया गया है)। सूर्योदयास्तसारणी से 10 अप्रैल को 34 अंश 33 कला का सूर्योदय 5 घं. 36 मि. 27 से. और सूर्यास्त 18 घं. 27 मि. 38 से. मिला । यह **स्था. मध्यमकाल** है। इसमें से काबुल का स्टैं. अन्तर 6 मि. 48 से. **धन (+)** होने से चिह्न के विपरीत घटाया, तो 5 घं. 29 मि. 39 से. और 18 घं. 20 मि. 50 से. क्रमशः सूर्योदय एवं सूर्यास्तकाल हुए। **'सूर्यकेन्द्रोदय संस्कारसारणी'** से काबुल के अक्षांश 35 अंश और 10 अप्रैल द्वारा प्राप्त 3 मि. 52 से. सूर्योदय में जोड़ने और सूर्यास्त में से घटाने पर काबुल में 10 अप्रैल को 5 घं. 33 मि. 31 से. और 18 घं. 16 मि. 58 से. क्रमशः सूर्योदय एवं सूर्यास्तकाल प्राप्त हुए। यह काल अफगानिस्तान के स्टैं. टा. में है।

उदाहरण (3) :– न्यूयार्क (U.S.A.) में 1 मार्च को सूर्योदयास्तकाल ज्ञात करना है। न्यूयार्क के अक्षांश 40°/43′(उ.), रेखांश 74°/00′ (प.) हैं। न्यूयार्क (अमेरिका) E.T. (Eastern Time) वाले कालक्षेत्र में पड़ता है। E.T. के कालक्षेत्र की स्टैं. टाईम मेरिडियन के रेखांश 75°/00′(प.) हैं। न्यूयार्क और E.T. की स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन के रेखांशों का अन्तर 1 अंश 0 कला है। इसे 4 से गुणा करने पर 4 मि. 00 से. न्यूयार्क का स्टैण्डर्ड अन्तर हुआ। न्यूयार्क शहर E.T. (Eastern Time) की स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन के रेखांश से पूर्व में स्थित है। इसलिए इसका स्टैं. अन्तर **धन (+)** चिह्न वाला होगा।

अब सूर्योदयास्तसारणी से अक्षांश 40 अंश 43 कला और तारीख 1 मार्च द्वारा सूर्योदय एवं सूर्यास्तकाल क्रमशः 6 घं. 35 मि. 43 से. और 17 घं. 50मि. 17 से. प्राप्त किए। इनमें न्यूयार्क का स्टैण्डर्ड अन्तर +4 मिनट चिह्न के विपरीत घटाने पर सूर्योदय और सूर्यास्तकाल क्रमशः 6 घं. 31 मि. 43 से. तथा 17 घं. 46 मि. 17 से. हुए। न्यूयार्क के अक्षांश 41° और 1 मार्च द्वारा 'सूर्य केन्द्रोदय संस्कार सारणी' से प्राप्त 4 मि. 14 से. उपरोक्त नियमानुसार सूर्योदयकाल में जोड़ने और सूर्यास्तकाल में से घटाने पर ज्योतिष–गणितोपयोगी सूर्योदय एवं सूर्यास्त क्रमशः 6 घं. 35 मि. 57 से. तथा 17 घं. 42 मि. 03 से. हुए। ये काल E.S.T. (Eastern Standard Time) में हैं।

उदाहरण (4) नैरोबी (केन्या, पूर्वी अफ्रीका) में 6 मई को सूर्योदय सूर्यास्तकाल (केन्या स्टैं. टाईम में) जानना है। नैरोबी के अक्षांश 1°/18′(द.) और रेखांश 36°/52′ (पू.) हैं। इसका स्टैं. अं. –32 मि. 32 से. है। सूर्योदयास्तसारणी से 1 अंश 18 कला अक्षांश और 8 नवं. से सूर्योदय और सूर्यास्त क्रमशः 5 घं. 41 मि. 34 से. और 17 घं. 45 मि. 26 से. मिले। (ध्यान दें– क्योंकि, नैरोबी के अक्षांश दक्षिण दिशा के हैं, अतः आगे दी गई "दक्षिण अक्षांश संस्कार सारणी" के अनुसार यहां 6 मई के स्थान पर 8 नवं. को प्रयोग में लाया गया है।) अतः इन दोनों उदयास्तकालों में 6 मई का दक्षिण अक्षांश संस्कार +13 मि. चिह्नानुसार जोड़ा तो उदय और अस्तकाल क्रमशः 5 घं. 54 मि. 34 से. और 17 घं. 58 मि. 26 से. हुए। इनमें नैरोबी का स्टैण्डर्ड अन्तर –32 मि. 32 से. चिह्न के विपरीत जोड़ने पर 6 घं. 27 मि. 6 से. और 18 घं. 30 मि. 58 से. केन्या स्टैं. टा. में क्रमशः उदय एवं अस्तकाल हुए। इनमें नैरोबी के अक्षांश 1 अंश और 6 मई द्वारा "सूर्य–केन्द्रोदयास्त संस्कारसारणी" से प्राप्त 3 मि. 17 से. उदयकाल में जोड़ने और अस्तकाल में से घटाने पर 6 घं. 30 मि. 23 से. और 18 घं. 27 मि. 41 से. नैरोबी में 6 मई को लग्नादि साधनोपयोगी सूर्योदय एवं सूर्यास्तकाल निकल आए।

सूर्योदय सारणी

सूर्योदयकाल (स्था. म. का.) (बिम्बशीर्ष दृश्य)

अक्षांश / तारीख	0° घं. मि.	+10° घं. मि.	+20° घं. मि.	+30° घं. मि.	+35° घं. मि.	+40° घं. मि.	+45° घं. मि.	+50° घं. मि.	+52° घं. मि.	+54° घं. मि.	+56° घं. मि.	+58° घं. मि.	+60° घं. मि.
जन. 1	5 59	6 17	6 35	6 56	7 08	7 22	7 38	7 59	8 08	8 19	8 32	8 46	9 03
4	6 01	6 18	6 36	6 57	7 09	7 22	7 39	7 59	8 08	8 19	8 31	8 45	9 02
7	6 02	6 19	6 37	6 57	7 09	7 22	7 38	7 58	8 07	8 18	8 30	8 43	8 59
10	6 04	6 20	6 37	6 57	7 09	7 22	7 38	7 57	8 06	8 16	8 28	8 41	8 56
13	6 05	6 21	6 38	6 57	7 08	7 21	7 36	7 55	8 04	8 14	8 25	8 38	8 52
16	6 06	6 21	6 38	6 57	7 08	7 20	7 35	7 53	8 02	8 11	8 22	8 34	8 48
19	6 07	6 22	6 38	6 56	7 07	7 19	7 33	7 50	7 59	8 08	8 18	8 30	8 43
22	6 08	6 22	6 38	6 56	7 06	7 17	7 31	7 47	7 56	8 04	8 14	8 25	8 38
25	6 09	6 23	6 38	6 54	7 04	7 15	7 28	7 44	7 52	8 00	8 09	8 20	8 32
28	6 09	6 23	6 37	6 53	7 02	7 13	7 26	7 41	7 48	7 56	8 04	8 14	8 26
31	6 10	6 23	6 36	6 52	7 00	7 11	7 22	7 37	7 43	7 51	7 59	8 08	8 19
फर. 1	6 10	6 23	6 36	6 51	7 00	7 10	7 21	7 35	7 42	7 49	7 57	8 06	8 17
4	6 10	6 22	6 35	6 49	6 58	7 07	7 18	7 31	7 37	7 44	7 51	8 00	8 10
7	6 11	6 22	6 34	6 47	6 55	7 04	7 14	7 26	7 32	7 38	7 45	7 53	8 02
10	6 11	6 21	6 32	6 45	6 52	7 00	7 10	7 22	7 27	7 33	7 39	7 46	7 55
13	6 11	6 21	6 31	6 43	6 49	6 57	7 06	7 16	7 21	7 26	7 32	7 39	7 47
16	6 11	6 20	6 29	6 40	6 46	6 53	7 01	7 11	7 15	7 20	7 26	7 32	7 39
19	6 11	6 19	6 28	6 37	6 43	6 49	6 57	7 05	7 10	7 14	7 19	7 24	7 30
22	6 10	6 18	6 26	6 35	6 40	6 45	6 52	7 00	7 03	7 07	7 12	7 17	7 22
25	6 10	6 17	6 24	6 32	6 36	6 41	6 47	6 54	6 57	7 00	7 04	7 09	7 14
28	6 09	6 15	6 22	6 28	6 32	6 37	6 42	6 48	6 51	6 54	6 57	7 01	7 05
मार्च 1	6 09	6 15	6 21	6 27	6 31	6 35	6 40	6 46	6 48	6 51	6 54	6 58	7 02
4	6 09	6 14	6 18	6 24	6 27	6 31	6 35	6 40	6 42	6 44	6 47	6 50	6 53
7	6 08	6 12	6 16	6 21	6 23	6 26	6 30	6 33	6 35	6 37	6 39	6 42	6 44
10	6 07	6 10	6 14	6 17	6 19	6 21	6 24	6 27	6 28	6 30	6 31	6 33	6 35
13	6 06	6 09	6 11	6 14	6 15	6 17	6 18	6 20	6 21	6 22	6 24	6 25	6 26
16	6 06	6 07	6 09	6 10	6 11	6 12	6 13	6 14	6 15	6 15	6 16	6 16	6 17
19	6 05	6 05	6 06	6 07	6 07	6 07	6 07	6 08	6 08	6 08	6 08	6 08	6 08
22	6 04	6 04	6 03	6 03	6 03	6 02	6 02	6 01	6 01	6 00	6 00	6 00	5 59
25	6 03	6 02	6 01	5 59	5 58	5 57	5 56	5 54	5 54	5 53	5 52	5 51	5 50
28	6 02	6 00	5 58	5 56	5 54	5 52	5 50	5 48	5 47	5 46	5 44	5 43	5 41
31	6 01	5 58	5 56	5 52	5 50	5 48	5 45	5 41	5 40	5 38	5 36	5 34	5 32

स्थानीय मध्यमकाल = स्था. म. का.

सूर्यास्त सारणी

सूर्यास्तकाल (स्था. म. का.) (बिम्बशीर्ष दृश्य)

अक्षांश / तारीख	0° घं. मि.	+10° घं. मि.	+20° घं. मि.	+30° घं. मि.	+35° घं. मि.	+40° घं. मि.	+45° घं. मि.	+50° घं. मि.	+52° घं. मि.	+54° घं. मि.	+56° घं. मि.	+58° घं. मि.	+60° घं. मि.
जन. 1	18 07	17 50	17 32	17 11	16 59	16 45	16 28	16 08	15 58	15 48	15 35	15 21	15 04
4	18 08	17 51	17 34	17 13	17 01	16 47	16 31	16 11	16 02	15 51	15 39	15 25	15 08
7	18 10	17 53	17 36	17 15	17 04	16 50	16 34	16 14	16 05	15 55	15 43	15 30	15 14
10	18 11	17 55	17 38	17 18	17 06	16 53	16 38	16 18	16 09	15 59	15 48	15 35	15 19
13	18 12	17 56	17 39	17 20	17 09	16 56	16 41	16 22	16 14	16 04	15 53	15 40	15 26
16	18 13	17 58	17 41	17 23	17 12	16 59	16 45	16 27	16 18	16 09	15 58	15 46	15 32
19	18 14	17 59	17 43	17 25	17 15	17 03	16 49	16 31	16 23	16 14	16 04	15 52	15 39
22	18 15	18 01	17 45	17 28	17 18	17 06	16 52	16 36	16 28	16 20	16 10	15 59	15 46
25	18 16	18 02	17 47	17 30	17 21	17 10	16 57	16 41	16 34	16 25	16 16	16 06	15 54
28	18 17	18 03	17 49	17 33	17 24	17 13	17 01	16 46	16 39	16 31	16 22	16 13	16 01
31	18 17	18 04	17 51	17 36	17 27	17 17	17 05	16 51	16 44	16 37	16 29	16 20	16 09
फर. 1	18 17	18 05	17 52	17 36	17 28	17 18	17 06	16 53	16 46	16 39	16 31	16 22	16 12
4	18 18	18 06	17 53	17 39	17 31	17 22	17 11	16 58	16 52	16 45	16 38	16 29	16 20
7	18 18	18 07	17 55	17 42	17 34	17 25	17 15	17 03	16 57	16 51	16 44	16 36	16 28
10	18 18	18 08	17 56	17 44	17 37	17 29	17 19	17 08	17 03	16 57	16 51	16 44	16 35
13	18 18	18 08	17 58	17 46	17 40	17 32	17 24	17 13	17 08	17 03	16 57	16 51	16 43
16	18 18	18 09	17 59	17 49	17 43	17 36	17 28	17 18	17 14	17 09	17 04	16 58	16 51
19	18 18	18 09	18 01	17 51	17 46	17 40	17 32	17 24	17 20	17 15	17 10	17 05	16 59
22	18 17	18 10	18 02	17 53	17 48	17 43	17 36	17 29	17 25	17 21	17 17	17 12	17 07
25	18 17	18 10	18 03	17 56	17 51	17 46	17 40	17 34	17 31	17 27	17 23	17 19	17 14
28	18 16	18 10	18 04	17 58	17 54	17 50	17 44	17 39	17 36	17 33	17 30	17 26	17 22
मार्च 1	18 16	18 10	18 05	17 58	17 55	17 51	17 46	17 40	17 38	17 35	17 32	17 28	17 25
4	18 15	18 11	18 06	18 00	17 57	17 54	17 50	17 45	17 43	17 41	17 38	17 35	17 32
7	18 15	18 11	18 07	18 03	18 00	17 57	17 54	17 50	17 49	17 47	17 45	17 42	17 40
10	18 14	18 11	18 08	18 04	18 02	18 00	17 58	17 55	17 54	17 52	17 51	17 49	17 47
13	18 13	18 11	18 09	18 06	18 05	18 04	18 02	18 00	17 59	17 58	17 57	17 56	17 55
16	18 12	18 11	18 10	18 08	18 08	18 07	18 06	18 05	18 04	18 04	18 03	18 03	18 02
19	18 12	18 11	18 11	18 10	18 10	18 10	18 10	18 10	18 10	18 10	18 10	18 10	18 09
22	18 10	18 11	18 11	18 12	18 12	18 13	18 14	18 14	18 15	18 15	18 16	18 16	18 17
25	18 10	18 11	18 12	18 14	18 15	18 16	18 17	18 19	18 20	18 21	18 22	18 23	18 24
28	18 09	18 11	18 13	18 16	18 17	18 19	18 21	18 24	18 25	18 26	18 28	13 30	18 31
31	18 08	18 11	18 14	18 18	18 20	18 22	18 25	18 28	18 30	18 32	18 34	18 36	18 39

सूर्योदय सारणी

सूर्योदयकाल (स्था. म. का.) (बिम्बशीर्ष दृश्य)

अक्षांश / तारीख	0° घं. मिं.	+10° घं. मिं.	+20° घं. मिं.	+30° घं. मिं.	+35° घं. मिं.	+40° घं. मिं.	+45° घं. मिं.	+50° घं. मिं.	+52° घं. मिं.	+54° घं. मिं.	+56° घं. मिं.	+58° घं. मिं.	+60° घं. मिं.
अप्रै. 1	6 01	5 58	5 55	5 51	5 48	5 46	5 43	5 39	5 38	5 36	5 34	5 31	5 29
4	6 00	5 56	5 52	5 47	5 44	5 41	5 37	5 33	5 31	5 28	5 26	5 23	5 20
7	5 59	5 54	5 50	5 44	5 40	5 36	5 32	5 26	5 24	5 21	5 18	5 14	5 10
10	5 58	5 53	5 47	5 41	5 36	5 32	5 26	5 20	5 17	5 14	5 10	5 06	5 02
13	5 57	5 51	5 45	5 37	5 32	5 27	5 21	5 14	5 10	5 07	5 02	4 58	4 53
16	5 57	5 50	5 42	5 33	5 28	5 22	5 16	5 08	5 04	5 00	4 55	4 50	4 44
19	5 56	5 48	5 40	5 30	5 24	5 18	5 10	5 01	4 57	4 52	4 47	4 42	4 35
22	5 55	5 47	5 38	5 27	5 21	5 14	5 05	4 55	4 51	4 46	4 40	4 34	4 26
25	5 55	5 45	5 35	5 24	5 17	5 10	5 00	4 50	4 44	4 39	4 33	4 26	4 18
28	5 54	5 44	5 33	5 21	5 14	5 05	4 56	4 44	4 38	4 32	4 25	4 18	4 09
मई 1	5 54	5 43	5 32	5 18	5 10	5 02	4 51	4 38	4 32	4 26	4 18	4 10	4 01
4	5 53	5 42	5 30	5 16	5 07	4 58	4 46	4 33	4 27	4 20	4 12	4 03	3 53
7	5 53	5 41	5 28	5 13	5 04	4 54	4 42	4 28	4 21	4 14	4 05	3 56	3 45
10	5 53	5 40	5 26	5 11	5 01	4 51	4 38	4 23	4 16	4 08	3 59	3 49	3 37
13	5 53	5 40	5 26	5 09	4 59	4 48	4 34	4 18	4 11	4 02	3 53	3 42	3 29
16	5 53	5 39	5 24	5 07	4 56	4 45	4 31	4 14	4 06	3 57	3 47	3 36	3 22
19	5 53	5 38	5 23	5 05	4 54	4 42	4 28	4 10	4 02	3 52	3 42	3 30	3 16
22	5 53	5 38	5 22	5 03	4 52	4 40	4 25	4 06	3 58	3 48	3 37	3 24	3 09
25	5 53	5 38	5 21	5 02	4 50	4 38	4 22	4 03	3 54	3 44	3 32	3 19	3 03
28	5 53	5 38	5 20	5 01	4 49	4 36	4 20	4 00	3 51	3 40	3 28	3 14	2 57
31	5 54	5 38	5 20	5 00	4 48	4 34	4 18	3 57	3 48	3 37	3 24	3 10	2 52
जून 1	5 54	5 38	5 20	4 59	4 47	4 34	4 17	3 56	3 47	3 36	3 23	3 08	2 50
4	5 54	5 38	5 20	4 59	4 46	4 32	4 16	3 54	3 44	3 33	3 20	3 05	2 46
7	5 55	5 38	5 20	4 58	4 46	4 31	4 14	3 53	3 42	3 31	3 17	3 02	2 43
10	5 55	5 38	5 20	4 58	4 45	4 31	4 13	3 51	3 41	3 29	3 15	2 59	2 40
13	5 56	5 39	5 20	4 58	4 45	4 30	4 13	3 50	3 40	3 28	3 14	2 57	2 37
16	5 56	5 39	5 20	4 58	4 45	4 30	4 12	3 50	3 39	3 27	3 13	2 56	2 36
19	5 57	5 40	5 21	4 59	4 46	4 30	4 13	3 50	3 39	3 27	3 12	2 56	2 35
22	5 58	5 40	5 21	4 59	4 46	4 31	4 13	3 50	3 39	3 27	3 13	2 56	2 35
25	5 58	5 41	5 22	5 00	4 47	4 32	4 14	3 51	3 40	3 28	3 14	2 57	2 36
28	5 59	5 42	5 23	5 01	4 48	4 33	4 15	3 52	3 42	3 29	3 15	2 58	2 38

सूर्यास्त सारणी

सूर्यास्तकाल (स्था. म. का.) (बिम्बशीर्ष दृश्य)

अक्षांश / तारीख	0° घं. मिं.	+10° घं. मिं.	+20° घं. मिं.	+30° घं. मिं.	+35° घं. मिं.	+40° घं. मिं.	+45° घं. मिं.	+50° घं. मिं.	+52° घं. मिं.	+54° घं. मिं.	+56° घं. मिं.	+58° घं. मिं.	+60° घं. मिं.
अप्रै. 1	18 08	18 11	18 14	18 18	18 20	18 23	18 26	18 30	18 32	18 34	18 36	18 38	18 41
4	18 07	18 10	18 15	18 20	18 23	18 26	18 30	18 35	18 37	18 40	18 42	18 45	18 48
7	18 06	18 10	18 16	18 22	18 25	18 29	18 34	18 39	18 42	18 45	18 48	18 52	18 56
10	18 05	18 10	18 16	18 24	18 28	18 32	18 38	18 44	18 47	18 50	18 54	18 58	19 03
13	18 04	18 10	18 17	18 25	18 30	18 35	18 42	18 49	18 52	18 56	19 00	19 05	19 10
16	18 03	18 10	18 18	18 27	18 32	18 38	18 45	18 54	18 58	19 02	19 06	19 12	19 18
19	18 03	18 11	18 19	18 29	18 35	18 41	18 49	18 58	19 03	19 07	19 12	19 18	19 25
22	18 02	18 11	18 20	18 31	18 37	18 44	18 53	19 03	19 08	19 13	19 19	19 25	19 33
25	18 02	18 11	18 21	18 33	18 40	18 47	18 57	19 08	19 13	19 18	19 25	19 32	19 40
28	18 01	18 11	18 22	18 35	18 42	18 50	19 00	19 12	19 18	19 24	19 31	19 39	19 47
मई 1	18 01	18 12	18 23	18 37	18 44	18 53	19 04	19 17	19 23	19 30	19 37	19 45	19 55
4	18 00	18 12	18 24	18 38	18 47	18 56	19 08	19 21	19 28	19 35	19 43	19 52	20 02
7	18 00	18 12	18 25	18 40	18 49	18 59	19 12	19 26	19 33	19 40	19 49	19 58	20 10
10	18 00	18 13	18 26	18 42	18 52	19 02	19 15	19 30	19 38	19 46	19 55	20 05	20 17
13	18 00	18 13	18 28	18 44	18 54	19 05	19 19	19 35	19 42	19 51	20 01	20 12	20 24
16	18 00	18 14	18 29	18 46	18 56	19 08	19 22	19 39	19 47	19 56	20 06	20 18	20 31
19	18 00	18 14	18 30	18 48	18 59	19 11	19 25	19 43	19 52	20 01	20 12	20 24	20 38
22	18 00	18 15	18 31	18 50	19 01	19 14	19 29	19 47	19 56	20 06	20 17	20 30	20 45
25	18 00	18 16	18 32	18 52	19 03	19 16	19 32	19 51	20 00	20 10	20 22	20 36	20 52
28	18 01	18 17	18 34	18 54	19 05	19 19	19 35	19 55	20 04	20 15	20 27	20 41	20 58
31	18 01	18 17	18 35	18 55	19 07	19 21	19 37	19 58	20 08	20 19	20 31	20 46	21 04
जून 1	18 01	18 18	18 35	18 56	19 08	19 22	19 38	19 59	20 09	20 20	20 33	20 48	21 05
4	18 02	18 18	18 36	18 57	19 10	19 24	19 41	20 02	20 12	20 24	20 37	20 52	21 10
7	18 02	18 19	18 38	18 59	19 11	19 26	19 43	20 05	20 15	20 27	20 40	20 56	21 15
10	18 03	18 20	18 38	19 00	19 13	19 28	19 45	20 07	20 18	20 30	20 43	20 59	21 19
13	18 03	18 21	18 40	19 01	19 14	19 29	19 47	20 09	20 20	20 32	20 46	21 02	21 22
16	18 04	18 22	18 40	19 02	19 15	19 30	19 48	20 11	20 22	20 34	20 48	21 05	21 25
19	18 05	18 22	18 41	19 03	19 16	19 31	19 49	20 12	20 23	20 35	20 50	21 06	21 27
22	18 05	18 23	18 42	19 04	19 17	19 32	19 50	20 13	20 24	20 36	20 50	21 07	21 28
25	18 06	18 24	18 42	19 04	19 18	19 32	19 50	20 13	20 24	20 36	20 51	21 07	21 28
28	18 06	18 24	18 43	19 05	19 18	19 33	19 51	20 13	20 24	20 36	20 50	21 07	21 27

सूर्योदय सारणी

सूर्योदयकाल (स्था. म. का.) (बिम्बशीर्ष दृश्य)

अक्षांश / तारीख	0° घं. मि.	+10° घं. मि.	+20° घं. मि.	+30° घं. मि.	+35° घं. मि.	+40° घं. मि.	+45° घं. मि.	+50° घं. मि.	+52° घं. मि.	+54° घं. मि.	+56° घं. मि.	+58° घं. मि.	+60° घं. मि.
जुला.1	6 00	5 42	5 24	5 02	4 49	4 34	4 16	3 54	3 43	3 31	3 17	3 01	2 41
4	6 00	5 43	5 25	5 03	4 50	4 36	4 18	3 56	3 45	3 34	3 20	3 04	2 44
7	6 01	5 44	5 26	5 04	4 52	4 37	4 20	3 58	3 48	3 36	3 23	3 07	2 48
10	6 01	5 45	5 27	5 06	4 53	4 39	4 22	4 01	3 51	3 39	3 26	3 11	2 52
13	6 02	5 45	5 28	5 07	4 55	4 41	4 24	4 04	3 54	3 43	3 30	3 15	2 57
16	6 02	5 46	5 29	5 09	4 57	4 43	4 27	4 07	3 58	3 47	3 34	3 20	3 03
19	6 02	5 47	5 30	5 10	4 59	4 46	4 30	4 10	4 01	3 51	3 39	3 25	3 09
22	6 03	5 48	5 31	5 12	5 01	4 48	4 33	4 14	4 05	3 55	3 44	3 31	3 15
25	6 03	5 48	5 32	5 14	5 03	4 51	4 36	4 18	4 09	4 00	3 49	3 36	3 22
28	6 03	5 49	5 33	5 16	5 05	4 53	4 39	4 22	4 14	4 05	3 54	3 42	3 28
31	6 03	5 49	5 34	5 18	5 08	4 56	4 43	4 26	4 18	4 10	4 00	3 48	3 35
अग. 1	6 03	5 49	5 35	5 18	5 08	4 57	4 44	4 27	4 20	4 11	4 01	3 51	3 38
4	6 03	5 50	5 36	5 20	5 10	5 00	4 47	4 32	4 24	4 16	4 07	3 57	3 45
7	6 02	5 50	5 37	5 22	5 13	5 03	4 51	4 36	4 29	4 21	4 13	4 03	3 52
10	6 02	5 50	5 38	5 24	5 15	5 06	4 54	4 40	4 34	4 27	4 19	4 10	3 59
13	6 02	5 51	5 39	5 25	5 17	5 08	4 58	4 45	4 39	4 32	4 24	4 16	4 06
16	6 01	5 51	5 40	5 27	5 20	5 11	5 01	4 49	4 44	4 37	4 30	4 22	4 14
19	6 00	5 51	5 41	5 29	5 22	5 14	5 05	4 54	4 48	4 43	4 36	4 29	4 21
22	6 00	5 51	5 42	5 31	5 24	5 17	5 08	4 58	4 53	4 48	4 42	4 36	4 28
25	5 59	5 51	5 42	5 32	5 26	5 20	5 12	5 03	4 58	4 53	4 48	4 42	4 35
28	5 58	5 51	5 43	5 34	5 29	5 23	5 16	5 07	5 03	4 59	4 54	4 48	4 42
31	5 57	5 51	5 44	5 36	5 31	5 25	5 19	5 12	5 08	5 04	5 00	4 55	4 50
सितं.1	5 57	5 51	5 44	5 36	5 32	5 26	5 20	5 13	5 10	5 06	5 02	4 57	4 52
4	5 56	5 51	5 45	5 38	5 34	5 29	5 24	5 18	5 14	5 11	5 08	5 04	4 59
7	5 55	5 50	5 45	5 40	5 36	5 32	5 28	5 22	5 19	5 17	5 14	5 10	5 06
10	5 54	5 50	5 46	5 41	5 38	5 35	5 31	5 26	5 24	5 22	5 19	5 16	5 13
13	5 53	5 50	5 47	5 43	5 40	5 38	5 35	5 31	5 29	5 27	5 25	5 23	5 20
16	5 52	5 50	5 47	5 44	5 43	5 41	5 38	5 35	5 34	5 33	5 31	5 29	5 27
19	5 51	5 50	5 48	5 46	5 45	5 44	5 42	5 40	5 39	5 38	5 37	5 36	5 34
22	5 50	5 49	5 49	5 48	5 47	5 46	5 46	5 44	5 44	5 43	5 43	5 42	5 41
25	5 49	5 49	5 49	5 49	5 49	5 49	5 49	5 49	5 49	5 49	5 49	5 48	5 48
28	5 48	5 49	5 50	5 51	5 52	5 52	5 53	5 54	5 54	5 54	5 55	5 55	5 56

सूर्यास्त सारणी

सूर्यास्तकाल (स्था. म. का.) (बिम्बशीर्ष दृश्य)

अक्षांश / तारीख	0° घं. मि.	+10° घं. मि.	+20° घं. मि.	+30° घं. मि.	+35° घं. मि.	+40° घं. मि.	+45° घं. मि.	+50° घं. मि.	+52° घं. मि.	+54° घं. मि.	+56° घं. मि.	+58° घं. मि.	+60° घं. मि.
जुला.1	18 07	18 24	18 43	19 05	19 18	19 33	19 50	20 13	20 23	20 35	20 49	21 06	21 26
4	18 08	18 25	18 43	19 05	19 18	19 32	19 50	20 12	20 22	20 34	20 48	21 04	21 24
7	18 08	18 25	18 43	19 05	19 17	19 32	19 49	20 10	20 21	20 32	20 46	21 01	21 20
10	18 09	18 25	18 43	19 04	19 16	19 31	19 48	20 09	20 19	20 30	20 43	20 58	21 17
13	18 09	18 25	18 43	19 03	19 16	19 29	19 46	20 06	20 16	20 27	20 40	20 55	21 12
16	18 09	18 25	18 42	19 02	19 14	19 28	19 44	20 04	20 13	20 24	20 36	20 51	21 08
19	18 10	18 25	18 42	19 01	19 13	19 26	19 42	20 01	20 10	20 20	20 32	20 46	21 02
22	18 10	18 25	18 41	19 00	19 11	19 24	19 39	19 58	20 06	20 16	20 28	20 41	20 56
25	18 10	18 24	18 40	18 58	19 09	19 21	19 36	19 54	20 02	20 12	20 23	20 35	20 50
28	18 10	18 24	18 39	18 56	19 07	19 19	19 33	19 50	19 58	20 07	20 18	20 29	20 43
31	18 10	18 23	18 38	18 55	19 04	19 16	19 29	19 46	19 54	20 02	20 12	20 23	20 36
अग. 1	18 10	18 23	18 37	18 54	19 04	19 15	19 28	19 44	19 52	20 00	20 10	20 21	20 33
4	18 09	18 22	18 36	18 52	19 01	19 12	19 24	19 40	19 47	19 55	20 04	20 14	20 26
7	18 09	18 21	18 34	18 49	18 58	19 08	19 20	19 35	19 41	19 49	19 58	20 07	20 18
10	18 09	18 20	18 32	18 47	18 55	19 05	19 16	19 29	19 36	19 43	19 51	20 00	20 10
13	18 08	18 19	18 30	18 44	18 52	19 01	19 11	19 24	19 30	19 37	19 44	19 52	20 02
16	18 08	18 18	18 28	18 41	18 48	18 57	19 06	19 18	19 24	19 30	19 37	19 45	19 54
19	18 07	18 16	18 26	18 38	18 45	18 53	19 02	19 13	19 18	19 24	19 30	19 37	19 45
22	18 06	18 15	18 24	18 35	18 41	18 48	18 57	19 07	19 12	19 17	19 23	19 29	19 36
25	18 06	18 13	18 22	18 32	18 38	18 44	18 52	19 01	19 05	19 10	19 15	19 21	19 28
28	18 05	18 12	18 19	18 28	18 34	18 40	18 46	18 55	18 59	19 03	19 08	19 13	19 19
31	18 04	18 10	18 17	18 25	18 30	18 35	18 41	18 48	18 52	18 56	19 00	19 05	19 10
सितं.1	18 03	18 09	18 16	18 24	18 28	18 33	18 39	18 46	18 50	18 53	18 57	19 02	19 07
4	18 02	18 08	18 13	18 20	18 24	18 28	18 34	18 40	18 43	18 46	18 50	18 54	18 58
7	18 02	18 06	18 11	18 16	18 20	18 24	18 28	18 34	18 36	18 39	18 42	18 45	18 49
10	13 00	18 04	18 08	18 13	18 16	18 19	18 22	18 27	18 29	18 31	18 34	18 37	18 40
13	17 59	18 02	18 05	18 09	18 12	18 14	18 17	18 21	18 22	18 24	18 26	18 28	18 31
16	17 58	18 00	18 03	18 05	18 07	18 09	18 11	18 14	18 15	18 16	18 18	18 20	18 22
19	17 57	17 58	18 00	18 02	18 03	18 04	18 05	18 07	18 08	18 09	18 10	18 11	18 12
22	17 56	17 57	17 57	17 58	17 58	17 59	18 00	18 01	18 01	18 02	18 02	18 03	18 03
25	17 55	17 55	17 54	17 54	17 54	17 54	17 54	17 54	17 54	17 54	17 54	17 54	17 54
28	17 54	17 53	17 52	17 50	17 50	17 49	17 48	17 47	17 47	17 46	17 46	17 46	17 45

सूर्योदय सारणी

सूर्योदयकाल (स्था. म. का.) (बिम्बशीर्ष दृश्य)

अक्षांश / तारीख	0° घं. मिं.	+10° घं. मिं.	+20° घं. मिं.	+30° घं. मिं.	+35° घं. मिं.	+40° घं. मिं.	+45° घं. मिं.	+50° घं. मिं.	+52° घं. मिं.	+54° घं. मिं.	+56° घं. मिं.	+58° घं. मिं.	+60° घं. मिं.
अक्तू. 1	5 47	5 49	5 51	5 53	5 54	5 55	5 56	5 58	5 59	6 00	6 01	6 02	6 03
4	5 46	5 49	5 51	5 54	5 56	5 58	6 00	6 03	6 04	6 05	6 07	6 08	6 10
7	5 45	5 48	5 52	5 56	5 58	6 01	6 04	6 07	6 09	6 11	6 13	6 15	6 17
10	5 44	5 48	5 53	5 58	6 01	6 04	6 08	6 12	6 14	6 16	6 19	6 21	6 24
13	5 43	5 48	5 54	6 00	6 03	6 07	6 12	6 17	6 19	6 22	6 25	6 28	6 32
16	5 43	5 49	5 55	6 02	6 06	6 10	6 16	6 22	6 24	6 28	6 31	6 35	6 39
19	5 42	5 49	5 56	6 04	6 08	6 13	6 19	6 26	6 30	6 33	6 37	6 42	6 46
22	5 41	5 49	5 57	6 06	6 11	6 17	6 23	6 31	6 35	6 39	6 43	6 48	6 54
25	5 41	5 50	5 58	6 08	6 14	6 20	6 28	6 36	6 40	6 45	6 50	6 55	7 02
28	5 41	5 50	5 59	6 10	6 16	6 23	6 32	6 41	6 46	6 51	6 56	7 02	7 09
31	5 40	5 50	6 01	6 12	6 19	6 27	6 36	6 46	6 51	6 56	7 02	7 09	7 17
नवं. 1	5 40	5 50	6 01	6 13	6 20	6 28	6 37	6 48	6 53	6 58	7 05	7 12	7 19
4	5 40	5 51	6 02	6 16	6 23	6 31	6 41	6 53	6 58	7 04	7 11	7 18	7 27
7	5 40	5 52	6 04	6 18	6 26	6 35	6 45	6 58	7 04	7 10	7 17	7 26	7 35
10	5 40	5 53	6 06	6 20	6 29	6 38	6 49	7 03	7 09	7 16	7 24	7 32	7 42
13	5 41	5 54	6 07	6 23	6 32	6 42	6 53	7 08	7 14	7 22	7 30	7 39	7 50
16	5 41	5 55	6 09	6 25	6 34	6 45	6 58	7 13	7 20	7 28	7 36	7 46	7 58
19	5 42	5 56	6 11	6 28	6 37	6 48	7 02	7 18	7 25	7 33	7 42	7 53	8 05
22	5 42	5 57	6 13	6 30	6 40	6 52	7 06	7 22	7 30	7 39	7 48	8 00	8 12
25	5 43	5 58	6 14	6 33	6 43	6 55	7 09	7 27	7 35	7 44	7 54	8 06	8 20
28	5 44	6 00	6 16	6 35	6 46	6 58	7 13	7 31	7 40	7 49	8 00	8 12	8 26
दिसं. 1	5 45	6 01	6 18	6 38	6 49	7 02	7 17	7 35	7 44	7 54	8 05	8 18	8 33
4	5 46	6 03	6 20	6 40	6 51	7 05	7 20	7 39	7 48	7 58	8 10	8 23	8 39
7	5 48	6 04	6 22	6 42	6 54	7 08	7 24	7 43	7 52	8 03	8 14	8 28	8 44
10	5 49	6 06	6 24	6 44	6 56	7 10	7 27	7 46	7 56	8 07	8 19	8 33	8 49
13	5 50	6 07	6 26	6 46	6 59	7 13	7 29	7 49	7 59	8 10	8 22	8 37	8 54
16	5 52	6 09	6 27	6 48	7 01	7 15	7 32	7 52	8 02	8 13	8 25	8 40	8 57
19	5 53	6 10	6 29	6 50	7 03	7 17	7 34	7 54	8 04	8 15	8 28	8 43	9 00
22	5 55	6 12	6 31	6 52	7 04	7 18	7 35	7 56	8 06	8 17	8 30	8 45	9 02
25	5 56	6 13	6 32	6 53	7 06	7 20	7 37	7 57	8 07	8 18	8 31	8 46	9 04
28	5 58	6 15	6 33	6 55	7 07	7 21	7 38	7 58	8 08	8 19	8 32	8 47	9 04
31	5 59	6 16	6 35	6 56	7 08	7 22	7 38	7 59	8 08	8 20	8 32	8 46	9 04
32	6 00	6 17	6 35	6 56	7 08	7 22	7 39	7 59	8 08	8 20	8 32	8 46	9 03

सूर्यास्त सारणी

सूर्यास्तकाल (स्था. म. का.) (बिम्बशीर्ष दृश्य)

अक्षांश / तारीख	0° घं. मिं.	+10° घं. मिं.	+20° घं. मिं.	+30° घं. मिं.	+35° घं. मिं.	+40° घं. मिं.	+45° घं. मिं.	+50° घं. मिं.	+52° घं. मिं.	+54° घं. मिं.	+56° घं. मिं.	+58° घं. मिं.	+60° घं. मिं.
अक्तू. 1	17 53	17 51	17 49	17 47	17 46	17 44	17 43	17 41	17 40	17 39	17 38	17 37	17 36
4	17 52	17 49	17 46	17 43	17 42	17 39	17 37	17 34	17 33	17 32	17 30	17 29	17 27
7	17 51	17 48	17 44	17 40	17 37	17 35	17 32	17 28	17 26	17 24	17 22	17 20	17 18
10	17 50	17 46	17 41	17 36	17 33	17 30	17 26	17 22	17 20	17 17	17 15	17 12	17 09
13	17 50	17 44	17 39	17 33	17 29	17 25	17 21	17 15	17 13	17 10	17 07	17 04	17 00
16	17 49	17 43	17 37	17 29	17 25	17 21	17 15	17 09	17 06	17 03	17 00	16 56	16 51
19	17 48	17 42	17 34	17 26	17 22	17 16	17 10	17 03	17 00	16 56	16 52	16 48	16 43
22	17 48	17 40	17 32	17 23	17 18	17 12	17 05	16 57	16 53	16 49	16 45	16 40	16 34
25	17 48	17 39	17 30	17 20	17 14	17 08	17 00	16 51	16 47	16 43	16 38	16 32	16 26
28	17 47	17 38	17 28	17 17	17 11	17 04	16 56	16 46	16 41	16 36	16 31	16 24	16 18
31	17 47	17 37	17 27	17 15	17 08	17 00	16 51	16 40	16 36	16 30	16 24	16 17	16 10
नवं. 1	17 47	17 37	17 26	17 14	17 07	16 59	16 50	16 39	16 34	16 28	16 22	16 15	16 07
4	17 47	17 36	17 25	17 12	17 04	16 56	16 46	16 34	16 28	16 22	16 15	16 08	15 59
7	17 47	17 36	17 23	17 09	17 01	16 52	16 42	16 29	16 23	16 16	16 09	16 01	15 52
10	17 48	17 35	17 22	17 07	16 59	16 49	16 38	16 24	16 18	16 11	16 03	15 54	15 44
13	17 48	17 35	17 21	17 06	16 57	16 46	16 34	16 20	16 13	16 06	15 58	15 48	15 37
16	17 48	17 35	17 20	17 04	16 55	16 44	16 31	16 16	16 09	16 01	15 52	15 42	15 31
19	17 49	17 35	17 20	17 03	16 53	16 42	16 28	16 12	16 05	15 57	15 47	15 37	15 24
22	17 50	17 35	17 19	17 02	16 51	16 40	16 26	16 09	16 01	15 53	15 43	15 32	15 19
25	17 51	17 35	17 19	17 01	16 50	16 38	16 24	16 06	15 58	15 49	15 39	15 27	15 13
28	17 51	17 36	17 19	17 00	16 49	16 37	16 22	16 04	15 55	15 46	15 35	15 23	15 08
दिसं. 1	17 52	17 36	17 19	17 00	16 49	16 36	16 20	16 02	15 53	15 43	15 32	15 19	15 04
4	17 54	17 37	17 20	17 00	16 48	16 35	16 19	16 00	15 51	15 41	15 30	15 16	15 00
7	17 55	17 38	17 20	17 00	16 48	16 35	16 19	15 59	15 50	15 39	15 27	15 14	14 57
10	17 56	17 39	17 21	17 00	16 48	16 35	16 18	15 58	15 49	15 38	15 26	15 12	14 55
13	17 58	17 40	17 22	17 01	16 49	16 35	16 18	15 58	15 48	15 38	15 25	15 11	14 54
16	17 59	17 42	17 23	17 02	16 50	16 36	16 19	15 58	15 49	15 38	15 25	15 10	14 53
19	18 00	17 43	17 25	17 03	16 51	16 37	16 20	15 59	15 49	15 38	15 25	15 11	14 53
22	18 02	17 44	17 26	17 05	16 52	16 38	16 21	16 00	15 50	15 39	15 27	15 12	14 54
25	18 03	17 46	17 28	17 06	16 54	16 40	16 23	16 02	15 52	15 41	15 28	15 14	14 56
28	18 05	17 48	17 29	17 08	16 56	16 42	16 25	16 04	15 54	15 43	15 31	15 16	14 59
31	18 06	17 49	17 31	17 10	16 58	16 44	16 27	16 07	15 57	15 46	15 34	15 19	15 02
32	18 07	17 50	17 32	17 11	16 59	16 45	16 28	16 08	15 58	15 47	15 35	15 21	15 04

सूर्यकेन्द्रोदयास्त–संस्कार सारणी

उत्तर या दक्षिण अक्षांश→	0	10°	20°	30°	35°	40°	45°	50°	52°	54°	56°	58°	60°
तारीख	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.
22 दिसं.	3 25	3 29	3 41	4 05	4 22	4 47	5 22	6 13	6 41	7 16	8 01	9 01	10 29
21 जन.	3 20	3 24	3 35	3 56	4 13	4 34	5 04	5 46	6 07	6 33	7 05	7 44	8 35
9 फर.	3 15	3 18	3 28	3 47	4 02	4 21	4 46	5 19	5 36	5 57	6 19	6 47	7 20
24 फर.	3 11	3 14	3 24	3 42	3 55	4 12	4 34	5 04	5 18	5 35	5 54	6 16	6 41
8 मार्च	3 09	3 12	3 21	3 38	3 51	4 07	4 28	4 55	5 08	5 24	5 41	5 59	6 22
21 मार्च	3 08	3 11	3 20	3 37	3 50	4 05	4 26	4 53	5 05	5 20	5 36	5 55	6 16
2 अप्रै.	3 09	3 12	3 21	3 38	3 51	4 07	4 28	4 55	5 08	5 24	5 41	5 59	6 22
16 अप्रै.	3 11	3 14	3 24	3 42	3 55	4 12	4 34	5 04	5 18	5 35	5 54	6 16	6 41
1 मई	3 15	3 18	3 28	3 47	4 02	4 21	4 46	5 19	5 36	5 57	6 19	6 47	7 20
20 मई	3 20	3 24	3 35	3 56	4 13	4 34	5 04	5 46	6 07	6 33	7 05	7 44	8 35
21 जून	3 25	3 29	3 41	4 05	4 22	4 47	5 22	6 13	6 41	7 16	8 01	9 01	10 29
23 जुला.	3 20	3 24	3 35	3 56	4 13	4 34	5 04	5 46	6 07	6 33	7 05	7 44	8 35
12 अग.	3 15	3 18	3 28	3 47	4 02	4 21	4 46	5 19	5 36	5 57	6 19	6 47	7 20
27 अग.	3 11	3 14	3 24	3 42	3 55	4 12	4 34	5 04	5 18	5 35	5 54	6 16	6 41
10 सितं.	3 09	3 12	3 21	3 38	3 51	4 07	4 28	4 55	5 08	5 24	5 41	5 59	6 22
23 सितं.	3 08	3 11	3 20	3 37	3 50	4 05	4 26	4 53	5 05	5 20	5 36	5 55	6 16
6 अक्तू.	3 09	3 12	3 21	3 38	3 51	4 07	4 28	4 55	5 08	5 24	5 41	5 59	6 22
19 अक्तू.	3 11	3 14	3 24	3 42	3 55	4 12	4 34	5 04	5 18	5 35	5 54	6 16	6 41
3 नवं.	3 15	3 18	3 28	3 47	4 02	4 21	4 46	5 19	5 36	5 57	6 19	6 47	7 20
22 नवं.	3 20	3 24	3 35	3 56	4 13	4 34	5 04	5 46	6 07	6 33	7 05	7 44	8 35
22 दिसं.	3 25	3 29	3 41	4 05	4 22	4 47	5 22	6 13	6 41	7 16	8 01	9 01	10 29

पृ. 170 पर दी गई सूर्योदय–सूर्यास्तसारणी से सूर्यबिम्ब के ऊपरी कोर का उदयास्त ज्ञात होता है, इसलिए इसे 'बिम्बशीर्ष दृश्य' उदयास्तकाल कहा जाता है। यह उदयास्तकाल किरणवक्रीभवन संस्कार से संस्कृत भी है। पृथ्वी के वातावरण के कारण उत्पन्न किरणवक्रीभवन (Refraction) से सूर्य का बिम्ब वास्तविक सूर्योदयकाल से कुछ मिनट पहले ही पूर्वी क्षितिज में दीखने लग जाता है और इसी कारण वह वास्तविक सूर्यास्तकाल के कुछ मिनट बाद तक पश्चिमी क्षितिज में भी दीखता रहता है। किरणवक्रीभवन के कारण सूर्यबिम्ब की ऊपरी कोर जब पूर्वी एवं पश्चिमी क्षितिज में दिखाई पड़ रही होती है तब सूर्यबिम्ब का केन्द्र वस्तुतः क्षितिज से लगभग 47 कला नीचे होता है। लग्नआदि साधन के लिए, इष्टकाल बनाने के लिए वास्तविक सूर्यबिम्ब के केन्द्रोदयास्त का काल अपेक्षित होता है। इस 'सूर्यकेन्द्रोदयास्त संस्कार सारणी' में दिया गया संस्कार किरणवक्रीभवन संस्कार से युक्त सूर्योदयास्तकाल (सूर्योदयास्तकाल सारणी में दिए गए सूर्योदयास्तकाल) में कर देने से वास्तविक सूर्यकेन्द्रोदयास्तकाल ज्ञात हो जाता है। यह संस्कार सूर्योदय में जोड़ा और सूर्यास्त में से घटाया जाता है। इस प्रकार प्राप्त सूर्योदयास्तकाल को गणितागत अथवा ज्योतिष–शास्त्रीय सूर्योदयास्त– काल भी कहते हैं।

दक्षिण-अक्षांशीय सूर्योदयास्तसाधन सहायकसारणी (भाग 1)

दक्षिण अक्षांश तारीख	उत्तर अक्षांश तारीख	संस्कार मिनट	दक्षिण अक्षांश तारीख	उत्तर अक्षांश तारीख	संस्कार मिनट	दक्षिण अक्षांश तारीख	उत्तर अक्षांश तारीख	संस्कार मिनट	दक्षिण अक्षांश तारीख	उत्तर अक्षांश तारीख	संस्कार मिनट	दक्षिण अक्षांश तारीख	उत्तर अक्षांश तारीख	संस्कार मिनट	दक्षिण अक्षांश तारीख	उत्तर अक्षांश तारीख	संस्कार मिनट	दक्षिण अक्षांश तारीख	उत्तर अक्षांश तारीख	संस्कार मिनट
जन. 1	जुला. 3	00	जन. 31	अग. 3	+07	मार्च 2	सितं. 4	+13	अप्रै. 1	अक्तू. 5	+15	मई 1	नवं. 3	+ 13	मई 31	दिसं. 2	+ 08	जून 30	दिसं. 30	+ 01
2	4	00	फर. 1	5	08	3	5	13	2	6	15	2	4	13	जून 1	3	08	जुला. 1	31	01
3	5	00	2	6	08	4	6	13	3	7	15	3	5	13	2	4	08	2	जन. 1	01
4	6	00	3	7	08	5	7	13	4	7	15	4	6	13	3	5	07	3	1	00
5	7	+ 01	4	8	08	6	8	14	5	8	15	5	7	13	4	5	07	4	2	00
6	8	01	5	9	09	7	9	14	6	9	15	6	8	13	5	6	07	5	3	00
7	9	01	6	10	09	8	10	14	7	10	15	7	9	13	6	7	07	6	4	− 01
8	10	02	7	11	09	9	11	14	8	11	15	8	10	12	7	8	07	7	5	01
9	11	02	8	12	09	10	12	14	9	12	15	9	11	12	8	9	07	8	6	01
10	12	02	9	13	09	11	13	14	10	13	15	10	12	12	9	10	06	9	7	01
11	13	02	10	14	10	12	14	14	11	14	15	11	13	12	10	11	06	10	8	02
12	14	02	11	15	10	13	15	14	12	15	15	12	14	12	11	12	06	11	9	02
13	15	03	12	16	10	14	16	14	13	16	15	13	15	12	12	13	06	12	10	02
14	16	03	13	17	10	15	17	14	14	17	15	14	16	12	13	14	05	13	11	02
15	17	03	14	18	10	16	18	15	15	18	15	15	17	11	14	15	05	14	12	03
16	19	03	15	19	11	17	19	15	16	19	15	16	17	11	15	16	05	15	13	03
17	20	04	16	20	11	18	20	15	17	20	15	17	18	11	16	17	04	16	14	03
18	21	04	17	21	11	19	21	15	18	21	15	18	19	11	17	18	04	17	15	03
19	22	04	18	22	11	20	22	15	19	22	15	19	20	11	18	19	04	18	15	03
20	23	05	19	23	11	21	23	15	20	23	15	20	21	11	19	20	04	19	16	04
21	24	05	20	25	12	22	24	15	21	24	14	21	22	10	20	21	04	20	17	04
22	25	05	21	26	12	23	25	15	22	25	14	22	23	10	21	21	03	21	18	04
23	26	06	22	27	12	24	26	15	23	26	14	23	24	10	22	22	03	22	19	04
24	27	06	23	28	12	25	27	15	24	27	14	24	25	10	23	23	03	23	20	05
25	28	06	24	29	12	26	29	15	25	28	14	25	26	10	24	24	03	24	21	05
26	29	06	25	30	13	27	30	15	26	29	14	26	27	09	25	25	02	25	22	05
27	30	07	26	31	13	28	अक्तू. 1	15	27	30	14	27	28	09	26	26	02	26	23	06
28	31	07	27	सितं. 1	13	29	2	15	28	31	14	28	29	09	27	27	02	27	24	06
29	अग. 1	07	28	2	13	30	3	15	29	नवं. 1	14	29	30	09	28	28	01	28	25	06
30	2	+ 07	मार्च 1	3	+ 13	31	4	+ 15	30	2	+ 14	30	दिसं. 1	+ 09	29	29	+ 01	29	26	− 06

दक्षिण-अक्षांशीय सूर्योदयास्तसाधन सहायकसारणी (भाग 2)

दक्षिण अक्षांश तारीख	उत्तर अक्षांश तारीख	संस्कार मिनट	दक्षिण अक्षांश तारीख	उत्तर अक्षांश तारीख	संस्कार मिनट	दक्षिण अक्षांश तारीख	उत्तर अक्षांश तारीख	संस्कार मिनट	दक्षिण अक्षांश तारीख	उत्तर अक्षांश तारीख	संस्कार मिनट	दक्षिण अक्षांश तारीख	उत्तर अक्षांश तारीख	संस्कार मिनट
जुला. 30	जन. 27	– 07	अग. 30	फर. 25	– 13	सितं. 30	मार्च 27	– 15	अक्तू. 31	अप्रै. 28	– 14	दिसं. 1	मई 30	– 08
31	28	07	31	26	13	अक्तू. 1	28	15	नवं. 1	29	14	2	31	08
अग. 1	29	07	सितं. 1	27	13	2	29	15	2	30	14	3	जून 1	08
2	30	07	2	28	13	3	31	15	3	मई 1	13	4	2	08
3	30	07	3	मार्च 1	13	4	31	15	4	2	13	5	3	07
4	31	08	4	2	13	5	अप्रै. 1	15	5	3	13	6	4	07
5	फर. 1	08	5	3	13	6	2	15	6	4	13	7	6	07
6	2	08	6	4	14	7	3	15	7	5	13	8	7	07
7	3	08	7	5	14	8	4	15	8	6	13	9	8	07
8	4	08	8	6	14	9	5	15	9	7	13	10	9	07
9	5	09	9	7	14	10	6	15	10	8	12	11	10	06
10	6	09	10	8	14	11	7	15	11	9	12	12	11	06
11	7	09	11	9	14	12	9	15	12	10	12	13	12	06
12	8	09	12	10	14	13	10	15	13	11	12	14	13	05
13	9	09	13	11	14	14	11	15	14	12	12	15	14	05
14	10	10	14	12	14	15	12	15	15	13	12	16	15	05
15	11	10	15	13	14	16	13	15	16	14	11	17	16	04
16	12	10	16	14	14	17	14	15	17	15	11	18	17	04
17	13	10	17	15	15	18	15	15	18	17	11	19	18	04
18	14	10	18	16	15	19	16	15	19	18	11	20	19	04
19	15	11	19	17	15	20	17	15	20	19	11	21	21	03
20	16	11	20	18	15	21	18	15	21	20	11	22	22	03
21	17	11	21	19	15	22	19	15	22	21	10	23	23	03
22	18	11	22	20	15	23	20	15	23	22	10	24	24	03
23	19	11	23	21	15	24	21	14	24	23	10	25	25	02
24	19	12	24	22	15	25	22	14	25	24	10	26	26	02
25	20	12	25	23	15	26	23	14	26	25	10	27	27	02
26	21	12	26	24	15	27	24	14	27	26	09	28	28	02
27	22	12	27	25	15	28	25	14	28	27	09	29	29	01
28	23	12	28	26	15	29	26	14	29	28	09	30	30	01
29	24	– 12	29	26	– 15	30	27	– 14	30	29	– 09	31	जुला. 1	– 01
												32	2	00

पृ. 170 पर सूर्योदयसारणी एवं सूर्यास्तसारणी में दिया गया सूर्योदयास्त–काल केवल उत्तरी अक्षांशों के लिए है। दक्षिण अक्षांश वाले स्थलों का सूर्योदयास्तकाल जानने के लिए ऊपर दिए गए इस कोष्ठक का प्रयोग कीजिए। जिस तारीख के लिए दक्षिण अक्षांश का सूर्योदयास्तकाल जानना है, उस 'द. अक्षांशीय तारीख' के आगे इस कोष्ठक में लिखी 'उ. अक्षांशीय तारीख' का सूर्योदयास्त पृष्ठ 170 पर दी गई सूर्योदय–सूर्यास्त–सारणी से ही ज्ञात कर लें। इसमें इस कोष्ठक से प्राप्त संस्कार के मिनटों को चिह्नानुसार जोड़ने या घटाने से आपकी अभीष्ट तारीख का अभीष्ट द.अक्षांशीय सूर्योदयास्तकाल (स्था. म. का.) ज्ञात हो जाएगा। जैसे :– 10 मार्च को द. अक्षांश 20° के स्थल का सूर्योदयास्त जानने के लिए इस कोष्ठक के अनुसार हमें 12 सितम्बर का सूर्योदयास्त पृष्ठ 173 से लेना होगा। जो कि क्रमशः 5 घं 46 मि. और 18 घं 6 मि. है। इन दोनो में इस कोष्ठक से प्राप्त संस्कार मिनट +14 चिह्नानुसार जोड़ने पर 10 मार्च को 20° द. अक्षांश का सूर्योदयास्तकाल (स्था. म. काल) क्रमशः 6 घं. 00 मि. और 18 घं. 20 मि. प्राप्त हुआ। इन में अभीष्ट नगर का स्टैण्डर्ड अन्तर जोड़ने या घटाने से यह सूर्योदयास्तकाल क्षेत्रीय स्टैं. टा. में बदल जाएगा।

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

संक्षिप्तरूपः– अं. नि.= अण्डेमान एवं निकोबार, अरुणा.= अरुणाचल प्रदेश, आं.=आन्ध्र प्रदेश, आसा.= आसाम , उ.= उड़ीसा, उ.प्र.=उत्तरप्रदेश, उ.आं उत्तरांचल, क.= कर्णाटक , के.= केरल, गु.= गुजरात, गोवा= गोवा, का.= जम्मू–काश्मीर, ता.= तामिलनाडु, त्रि.= त्रिपुरा, दा.ना.= दादर एण्ड नागर हवेली, डा.= डामन ड्यू, ना.= नागालैण्ड, बं.= प. बंगाल, पं.= पंजाब, पां.= पाण्डिचेरी, बि.=बिहार, झा.ख.= झारखण्ड, मणि.= मणिपुर, म.प्र.= मध्यप्रदेश, छ.ग.= छत्तीसगढ़, म.= महाराष्ट्र, मिज़ो.= मिज़ोरम, मे.= मेघालय, रा.= राजस्थान, लक्ष.= लक्षद्वीप, सि.= सिक्किम, ह.= हरियाणा, हि.= हिमाचल प्रदेश,

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
अकबरपुर	(उ.प्र.)	26 25	82 33	+ 0 12
अंकलेश्वर	(गु.)	21 38	73 02	−37 52
अकोला	(म.)	20 40	77 05	−21 40
अखनूर	(का.)	32 53	74 45	−31 00
अगरतला	(त्रि.)	23 48	91 15	+35 00
अगरोहा	(ह.)	29 21	75 38	−27 28
अंगुल	(उ.)	20 48	85 04	+10 16
अच्छीवाल	(का.)	33 41	75 14	−29 04
अजन्ता	(म.)	20 30	75 48	−26 48
अजनाला	(पं.)	31 51	74 48	−30 48
अजमेर	(रा.)	26 27	74 42	−31 12
अटारी	(पं.)	31 36	74 35	−31 40
अतनेर	(म.प्र.)	21 40	77 59	−18 04
अनन्तनाग	(का.)	33 44	75 10	−29 20
अनन्तपुर	(आं.)	14 42	77 36	−19 36
अनामलै	(ता.)	10 34	76 50	−22 40
अनूपगढ़	(रा.)	29 07	73 06	−37 36
अनूपशहर	(उ.प्र.)	28 22	78 16	−16 56
अबोहर	(पं.)	30 09	74 11	−33 16
अमरकंटक	(म.प्र.)	22 40	81 45	− 3 00
अमरनाथगुफा	(का.)	34 13	75 32	−27 52
अमरावती	(म.)	20 56	77 45	−19 00
अमरावती	(आं.)	16 35	80 20	− 8 40
अमरेली	(गु.)	21 36	71 18	−44 48
अमरोहा	(उ.प्र.)	28 54	78 29	−16 04
अमलापुरम्	(आं.)	16 36	82 03	− 1 48
अमलोह	(पं.)	30 37	76 14	−25 04

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
अमीनगांव	(आसा.)	26 13	91 45	+37 00
अमृतसर	(पं.)	31 37	74 55	−30 20
अमेठी	(उ.प्र.)	26 08	81 50	− 2 40
अम्ब	(हि.)	31 42	76 07	−25 32
अम्बाला	(ह.)	30 21	76 52	−22 32
अम्बाह	(उ.प्र.)	26 43	78 15	−17 00
अम्बिकापुर	(छ.ग.)	23 07	83 12	+ 2 48
अयोध्या	(उ.प्र.)	26 48	82 12	− 1 12
अरकोट	(ता.)	12 54	79 20	−12 40
अरकोणम्	(ता.)	13 05	79 40	−11 20
अर्की	(हि.)	31 09	76 58	−22 08
अर्वी.	(म.)	21 00	78 18	−16 48
अररिया	(बि.)	26 08	87 24	+19 36
अल्मोड़ा	(उ.आं.)	29 37	79 40	−11 20
अलवर	(रा.)	27 34	76 38	−23 28
अलीगंज	(उ.प्र.)	27 30	79 11	−13 16
अलीगढ़	(उ.प्र.)	27 53	78 05	−17 40
अलीपुर	(बं.)	22 32	88 20	+23 20
अलीपुर दुआर	(बं.)	26 29	89 44	+28 56
अलीबाग	(म.)	18 38	72 55	−38 20
अवनिगड्डा	(आं.)	16 03	80 59	− 6 04
अशोकनगर	(म.प्र.)	24 33	77 43	−19 08
अहमदनगर	(म.)	19 05	74 44	−31 04
अहमदाबाद	(गु.)	23 03	72 40	−39 20
अहवा	(गु.)	20 44	73 41	−35 16
आगरा	(उ.प्र.)	27 11	78 01	−17 56
आजमगढ़	(उ.प्र.)	26 04	83 11	+ 2 44

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
आडोनी	(आं.)	15 38	77 16	−20 56
आदिलाबाद	(आं.)	19 40	78 31	−15 56
आनन्द	(गु.)	22 34	73 01	−37 56
आनन्दपुरसाहिब	(पं.)	31 15	76 31	−23 56
आनी	(हि.)	31 27	77 25	−20 20
आबू	(रा.)	24 40	72 45	−39 00
आरा	(बि.)	25 34	84 40	+ 8 40
आरामबाग	(बं.)	22 53	87 47	+21 08
आसनसोल	(बं.)	23 41	86 59	+17 56
आसिन्द	(रा.)	25 42	74 21	−32 36
इच्छापुरम्	(उ.)	19 10	84 43	+ 8 52
इटारसी	(म.प्र.)	22 37	77 45	−19 00
इटावा	(उ.प्र.)	26 47	79 02	−13 52
इन्दौर	(म.प्र.)	22 44	75 50	−26 40
इन्दौरा	(हि.)	32 07	75 40	−27 20
इम्फाल	(मणि.)	24 47	93 57	+45 48
इलाहाबाद	(उ.प्र.)	देखें	प्रयाग	—
ईटानगर	(अरुणा.)	27 05	93 40	+44 40
ईसागढ़	(म.प्र.)	24 50	77 53	−18 28
उखरूल	(मणि.)	25 07	94 23	+47 32
उगाला	(ह.)	30 11	76 59	−22 04
उज्जैन	(म.प्र.)	23 09	75 43	−27 08
उड़ी	(का.)	34 05	74 01	−33 56
उडुपी	(क.)	13 23	74 45	−31 00
उत्तरकाशी	(उ.आं.)	30 44	78 27	−16 12
उदयगिरि	(उ.)	19 08	84 10	+ 6 40
उदयपुर	(त्रि.)	23 32	91 29	+35 56

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
उदयपुर	(रा.)	24 35	73 41	−35 16
उन्नाव	(उ.प्र.)	26 32	80 30	− 8 00
उपशी	(का.)	33 52	77 50	−18 40
उमरकोट	(उ.)	19 39	82 18	− 0 48
उरई	(उ.प्र.)	25 59	79 28	−12 08
उल्हासनगर	(म.)	19 13	73 07	−37 32
ऊटकमण्ड	(ता.)	11 24	76 44	−23 04
ऊधमपुर	(का.)	32 54	75 06	−29 36
ऊना	(हि.)	31 29	76 17	−24 52
एकलिंगजी	(रा.)	24 43	73 46	−34 56
एटा	(उ.प्र.)	27 38	78 40	−15 20
एरोड	(ता.)	11 20	77 46	−18 56
एर्नाकुलम्	(के.)	10 00	76 16	−24 56
एलिचपुर	(म.)	21 18	77 33	−19 48
एलुरु	(आं.)	16 43	81 09	− 5 24
एलेप्पे	(के.)	9 30	76 22	−24 32
एलोरा	(म.)	20 04	75 15	−29 00
ऐजावल	(मिज़ो.)	23 43	92 44	+40 56
ओखा	(गु.)	22 26	69 02	−53 52
ओंगोल	(आं.)	15 30	80 06	− 9 36
ओरैय्या	(उ.प्र.)	26 28	79 31	−11 56
ओस्मानाबाद	(म.)	18 09	76 06	−25 36
औट	(हि.)	31 47	77 11	−21 16
औरंगाबाद	(म.)	19 52	75 22	−28 32
कटक	(उ.)	20 26	85 56	+13 44
कटनी	(म.प्र.)	23 47	80 27	− 8 12
कटरा	(का.)	32 59	74 57	−30 12
कटराई	(हि.)	32 07	77 07	−21 32
कटिहार	(बि.)	25 30	87 35	+20 20
कठुआ	(का.)	32 22	75 32	−27 52
कण्डाघाट	(हि.)	30 58	77 07	−21 32
कन्नूर	(के.)	11 52	75 25	−28 20
कन्नौज	(उ.प्र.)	27 04	79 55	−10 20

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
कपूरथला	(पं.)	31 23	75 23	−28 28
करतारपुर	(पं.)	31 27	75 30	−28 00
कर्णप्रयाग	(उ.आं.)	30 13	79 17	−12 52
करनाल	(ह.)	29 42	77 02	−21 52
करसोग	(हि.)	31 23	77 13	−21 08
कराड	(म.)	17 15	74 12	−33 12
करूर	(ता.)	10 58	78 03	−17 48
कालाअम्ब	(हि.)	30 30	77 13	−21 08
काल्पा	(हि.)	31 32	78 15	−17 00
करीमगंज	(आसा.)	24 48	92 30	+40 00
करीमनगर	(आं.)	18 27	79 06	−13 36
करोली	(रा.)	26 30	77 01	−21 56
कर्नूल	(आं.)	15 50	78 05	−17 40
कल्याण	(म.)	19 17	73 11	−37 16
कदरत्ती	(लक्ष.)	10 33	72 38	−39 28
कवार्घा	(छ.ग.)	22 00	81 15	− 5 00
कसारागोड	(के.)	12 30	75 00	−30 00
कसौली	(हि.)	30 55	76 57	−22 12
काकिनाडा	(आं.)	16 56	82 13	− 1 08
कांकेर	(म.प्र.)	20 17	81 32	− 3 52
कांगड़ा	(हि.)	32 05	76 18	−24 48
कांचीपुरम्	(ता.)	12 50	79 44	−11 04
काठगोदाम	(उ.आं.)	29 16	79 32	−11 52
काठियावाड़	(गु.)	22 00	71 00	−46 00
कादियां	(पं.)	31 49	75 23	−28 28
कानपुर	(उ.प्र.)	26 28	80 21	− 8 36
कामठी (काम्पटी)	(म.)	21 12	79 16	−12 56
कारकाल	(क.)	13 12	74 59	−30 04
कारगिल	(का.)	34 31	76 13	−25 08
कारवाड़	(क.)	14 50	74 09	−33 24
कारिकाल	(पां.)	10 55	79 50	−10 40
कालका	(ह.)	30 50	76 56	−22 16
कालाहस्ती	(आं.)	13 48	79 42	−11 12

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
कालिकट	(के.)	11 15	75 46	−26 56
कालिम्पोंग	(बं.)	27 04	88 29	+23 56
काशी	(उ.प्र.)	देखें	वाराणसी	− −
कियारीघाट	(हि.)	31 00	77 05	−21 40
किरकी	(म.)	18 36	73 57	−34 12
किश्तवाड़	(का.)	33 19	75 48	−26 48
किशनगंज	(बि.)	26 10	87 56	+21 44
किशनगढ़ (अजमेर)	(रा.)	26 34	74 52	−30 32
कीरतपुरसाहिब	(पं.)	31 11	76 34	−23 44
कुड्डप्पा	(ता.)	14 28	78 50	−14 40
कुड्डालूर	(ता.)	11 43	79 49	−10 44
कुफरी	(हि.)	31 06	77 12	−21 12
कुंभकोणम्	(ता.)	10 59	79 24	−12 24
कुमारी अन्तरीप	(ता.)	8 05	77 34	−19 44
कुम्हारहट्टी	(हि.)	30 53	77 03	−21 48
कुराली	(पं.)	30 50	76 35	−23 40
कुरुक्षेत्र	(ह.)	29 59	76 50	−22 40
कुल्लू	(हि.)	31 58	77 06	−21 36
कूच बिहार	(बं.)	26 19	89 26	+27 44
कृष्णानगर	(बं.)	23 24	88 30	+24 00
केओंजरगढ़	(उ.)	21 38	85 35	+12 20
केन्द्रपाड़ा	(उ.)	20 30	86 25	+15 40
केदारनाथ	(उ.आं.)	30 44	79 04	−13 44
केप कैमोरिन	(ता.)	देखें	कुमारी	अन्तरीप
केसरी	(ह.)	30 14	76 54	−22 24
कैथल	(ह.)	29 48	76 26	−24 16
कैलाशहर	(त्रि.)	24 18	92 01	+38 04
कोचीन	(के.)	9 58	76 14	−25 04
कोटकपूरा	(पं.)	30 36	74 54	−30 24
कोटखाई	(हि.)	31 08	77 36	−19 36
कोटगढ़	(हि.)	31 19	77 29	−20 04
कोटा	(रा.)	25 10	75 52	−26 32
कोठागुडम	(आं.)	17 32	80 39	− 7 24

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
कोट्टायम्	(के.)	9 34	76 31	−23 56	गढ़चिराली	(म.)	20 12	80 00	−10 00	घरौण्डा	(ह.)	29 33	76 58	−22 08
कोटद्वारा	(उ.आं.)	29 45	78 32	−15 52	गढ़मुक्तेश्वर	(उ.प्र.)	28 48	78 06	−17 36	घाटल	(बं.)	22 40	87 43	+20 52
कोंटई	(बं.)	21 50	87 48	+21 12	गढ़वा (गरवा)	(झा.खं.)	24 10	83 52	+ 5 28	घाटसिला	(झा.खं.)	22 36	86 29	+15 56
कोडैकनाल	(ता.)	10 14	77 29	−20 04	गढ़शंकर	(पं.)	31 13	76 08	−25 28	घुमारवीं	(हि.)	31 26	76 43	−23 08
कोणार्क	(उ.)	19 54	86 07	+14 28	गदग	(क.)	15 26	75 42	−27 12	चच्योट	(हि.)	31 32	77 01	−21 56
कोप्पल	(क.)	15 21	76 09	−25 24	गया	(बि.)	24 49	85 01	+10 04	चण्डीगढ़	(यू.टी.)	30 45	76 50	−22 40
कोयम्बटूर	(ता.)	11 00	77 00	−22 00	गाजियाबाद	(उ.प्र.)	28 40	77 26	−20 16	चण्डीमन्दिर कैंट	(ह.)	30 42	76 52	−22 32
कोरबा	(छ.ग.)	22 22	82 42	+ 0 48	गाजीपुर	(उ.प्र.)	25 35	83 34	+ 4 16	चन्दननगर	(बं.)	22 51	88 21	+23 24
कोरापुट	(उ.)	18 48	82 41	+ 0 44	गांधीधाम	(गु.)	23 06	70 08	−49 28	चन्दौसी	(उ.प्र.)	28 27	78 46	−14 56
कोलकाता	(बं.)	22 34	88 24	+23 36	गिरडीह	(झा.खं.)	24 12	86 21	+15 24	चन्द्रपुर	(म.)	19 57	79 18	−12 48
कोल्हापुर	(म.)	16 42	74 19	−32 44	गिलगित	(का.)	35 55	74 21	−32 36	चम्बा	(हि.)	32 34	76 08	−25 28
कोलार	(क.)	13 10	78 10	−17 20	गुड़गांव	(ह.)	28 27	77 04	−21 44	चमौली	(उ.आं)	30 24	79 21	−12 36
कोल्लेगाल	(क.)	12 08	77 06	−21 36	गुंटकल	(आं.)	15 11	77 24	−20 24	चरखी दादरी	(ह.)	28 37	76 18	−24 48
कोलेबीरा	(बि.)	22 43	84 42	+ 8 48	गुंटूर	(आं.)	16 20	80 27	− 8 12	चामुण्डा जी	(हि.)	32 07	76 23	−24 28
कोहिमा	(नागा.)	25 39	94 08	+46 32	गुड़ीवाड़ा	(आं.)	16 27	81 00	− 6 00	चायल	(हि.)	30 59	77 12	−21 12
क्विलोन	(के.)	8 54	76 38	−23 28	गुडूर	(आं.)	14 10	79 51	−10 36	चास	(झा.खं.)	23 38	86 10	+14 40
खजियार	(हि.)	32 32	76 04	−25 44	गुना	(म.प्र.)	24 40	77 20	−20 40	चिक मंगलूर	(क.)	13 19	75 47	−26 52
खड़गपुर	(बं.)	22 20	87 20	+19 20	गुम्मा	(हि.)	31 06	77 28	−20 08	चिंगलपुट	(ता.)	12 42	80 01	− 9 56
खंडवा	(म.प्र.)	21 50	76 23	−24 28	गुरदासपुर	(पं.)	32 02	75 27	−28 12	चित्तरंजन	(बं.)	23 52	86 52	+17 28
खतौली	(उ.प्र.)	29 17	77 43	−19 08	गुलबर्गा	(क.)	17 20	76 50	−22 40	चित्तूर	(आं.)	13 12	79 07	−13 32
खन्ना	(पं.)	30 42	76 13	−25 08	गुलमर्ग	(का.)	34 05	74 25	−32 20	चितौड़गढ़	(रा.)	24 54	74 40	−31 20
खम्भालिया	(गु.)	22 12	69 39	−51 24	गुवाहाटी	(आसा.)	26 10	91 45	+37 00	चित्रदुर्ग	(क.)	14 14	76 24	−24 24
खम्मम्	(आं.)	17 16	80 13	− 9 08	गोइन्दवाल	(पं.)	31 22	75 08	−29 28	चित्रौद	(गु.)	23 25	70 42	−47 12
खरगोन	(म.प्र.)	21 52	75 36	−27 36	गोंडल	(गु.)	21 56	70 50	−46 40	चिदम्बरम्	(ता.)	11 25	79 42	−11 12
खरड़	(पं.)	30 45	76 37	−23 32	गोंडा	(उ.प्र.)	27 08	82 01	− 1 56	चिन्तपूरणी	(हि.)	31 49	76 07	−25 32
खलीलाबाद	(उ.प्र.)	26 47	83 04	+ 2 16	गोधरा	(गु.)	22 49	73 40	−35 20	चिनसुरा	(बं.)	22 53	88 25	+23 40
खुर्जा	(उ.प्र.)	28 13	77 50	−18 40	गोपालगंज	(बि.)	26 28	84 26	+ 7 44	चिरगांव	(उ.प्र.)	25 35	78 49	−14 44
खुर्दा	(उ.)	20 10	85 38	+12 32	गोम्पा	(का.)	35 02	77 20	−20 40	चिराला	(आं.)	15 50	80 21	− 8 36
खेड़ा	(गु.)	22 45	72 45	−39 00	गोरखपुर	(उ.प्र.)	26 45	83 22	+ 3 28	चुंगतास	(का.)	35 37	78 37	−15 32
खेमकरण	(पं.)	31 08	74 34	−31 44	गोरस	(म.प्र.)	25 32	76 56	−22 16	चुनार	(उ.प्र.)	25 08	82 56	+ 1 44
गगरेट	(हि.)	31 40	76 04	−25 44	गोहाना	(ह.)	29 08	76 42	−23 12	चुशुल	(का.)	33 34	78 38	−15 28
गंगटोक	(सि.)	27 22	88 36	+24 24	गौंडीया	(म.)	21 26	80 14	− 9 04	चूड़चांदपुर	(मणि.)	24 19	93 40	+44 40
गंजम्	(उ.)	19 28	85 05	+10 20	ग्वालियर	(म.प्र.)	26 14	78 10	−17 20	चूरू	(रा.)	28 19	75 01	−29 56

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
चेन्नई	(ता.)	देखें	मद्रास	–	जालन्धर	(पं.)	31 19	75 34	−27 44	टुण्डला	(उ.प्र.)	27 12	78 17	−16 52
चेरापूंजी	(मे.)	25 17	91 42	+36 48	जालेश्वर	(उ.)	21 48	87 14	+18 56	टोंक	(रा.)	26 11	75 50	−26 40
चौपाल	(हि.)	30 57	77 36	−19 36	जालोर	(रा.)	25 22	72 38	−39 28	टोडा रायसिंह	(रा.)	26 00	75 29	−28 04
छतरपुर	(उ.)	19 24	85 00	+10 00	जालौन	(उ.प्र.)	26 09	79 21	−12 36	टोहाना	(ह.)	29 42	75 54	−26 24
छतरपुर	(म.प्र.)	24 54	79 38	−11 28	ज़िरो	(अरुणा.)	27 32	93 47	+45 08	ट्रावनकोर	(के.)	9 00	77 00	−22 00
छपरा	(बि.)	25 47	84 45	+ 9 00	जींद	(ह.)	29 19	76 19	−24 44	ठयोग	(हि.)	31 07	77 21	−20 36
छिंदवाड़ा	(म.प्र.)	22 03	78 58	−14 08	ज़ीरा	(पं.)	30 58	74 59	−30 04	डगशाई	(हि.)	30 53	77 03	−21 48
छिब्रामऊ	(उ.प्र.)	27 09	79 31	−11 56	जुब्बल	(हि.)	31 07	77 39	−19 14	डबवाली	(पं.)	29 58	74 45	−31 00
छोटा उदयपुर	(गु.)	22 19	74 01	−33 56	जूनागढ़	(गु.)	21 32	70 34	−47 44	डमटाल	(हि.)	32 12	75 40	−27 20
जगदलपुर	(छ.ग.)	19 05	82 04	− 1 44	जेतपुर	(गु.)	21 43	70 42	−47 12	डलहौज़ी	(हि.)	32 32	75 59	−26 04
जगरांव	(पं.)	30 47	75 29	−28 04	जैतों	(पं.)	30 28	74 53	−30 28	डामन	(डा.)	20 25	72 53	−38 28
जगाधरी	(ह.)	30 10	77 18	−20 48	जैसलमेर	(रा.)	26 55	70 54	−46 24	डायमंड हार्बर	(बं.)	22 12	88 12	+22 48
जंगीपुर	(बं.)	24 28	88 04	+22 16	जोगिन्द्रनगर	(हि.)	31 59	76 46	−22 56	डालटनगंज	(झा.खं.)	24 02	84 04	+ 6 16
जण्ड्याला	(पं.)	31 36	75 03	−29 48	जोधपुर	(रा.)	26 18	73 04	−37 44	डिगबोई	(आसा.)	27 22	95 40	+52 40
जतोग	(हि.)	31 06	77 07	−21 32	जोरहाट	(आसा.)	26 45	94 12	+46 48	डिंडीगुल	(क.)	10 22	78 00	−18 00
जनगांव	(आं.प्र.)	17 44	79 10	−13 20	जौनपुर	(उ.प्र.)	25 44	82 41	+ 0 44	डिबाई	(उ.प्र.)	28 13	78 15	−17 00
जबलपुर	(म.प्र.)	23 10	79 59	−10 04	ज्वालाजी	(हि.)	31 53	76 22	−24 32	डिब्रूगढ़	(आसा.)	27 29	94 56	+49 44
जम्बूसार	(गु.)	22 00	72 50	−38 40	ज्वालामुखी	(हि.)	31 53	76 19	−24 44	डीडवाना	(रा.)	27 24	74 34	−31 44
जमशेदपुर	(बि.)	22 50	86 10	+14 40	झज्जर	(ह.)	28 37	76 39	−23 24	डीसा	(गु.)	24 14	72 13	−41 08
जमालपुर	(बि.)	25 19	86 32	+16 08	झाबुआ	(म.प्र.)	22 45	74 38	−31 28	डूंगरपुर	(रा.)	23 50	73 43	−35 08
जमूई	(बि.)	24 55	86 13	+14 52	झरिया	(झा.खं.)	23 45	86 24	+15 36	डोडा	(का.)	33 10	75 35	−27 40
जम्मू	(का.)	32 43	74 54	−30 24	झांसी	(उ.प्र.)	25 26	78 35	−15 40	ड्यू	(डा.)	20 42	71 01	−45 56
जयपुर	(आसा.)	27 14	95 24	+51 36	झालरापाटन	(रा.)	24 33	76 10	−25 20	ढुबरी	(आसा.)	26 02	89 58	+29 52
जयपुर	(रा.)	26 55	75 52	−26 32	झालावाड़	(रा.)	24 36	76 09	−25 24	तंजावर	(ता.)	10 46	79 09	−13 24
जलगांव	(म.)	21 03	75 39	−27 24	झुंझुनू	(रा.)	28 06	75 25	−28 20	तपा	(पं.)	30 19	75 21	−28 36
जलपाईगुड़ी	(बं.)	26 31	88 44	+24 56	टांडा उरमुर	(पं.)	31 42	75 38	−27 28	तरनतारन	(पं.)	31 27	74 58	−30 08
जलालाबाद	(उ.प्र.)	27 43	79 40	−11 20	टिकापाड़ा डैम	(उ.)	20 32	84 56	+ 9 44	तवांग	(अरुणा.)	27 35	91 52	+37 28
जशपुरनगर	(छ.ग.)	22 53	84 12	+ 6 48	टिथवाल	(का.)	34 24	73 47	−34 52	तांगला	(आसा.)	26 40	91 57	+37 48
जसरा	(उ.प्र.)	25 17	81 48	− 2 48	टिहरी	(उ.आं.)	30 20	78 30	−16 00	ताड़पत्री	(आं.)	14 55	77 59	−18 04
जसरोटा	(का.)	32 29	75 27	−28 12	टीकमगढ़	(म.प्र.)	24 45	78 53	−14 28	तामलुक	(बं.)	22 18	87 55	+21 40
जाखल	(ह.)	29 48	75 50	−26 40	टीहरा सुजानपुर	(हि.)	31 51	76 32	−23 52	ताम्बरम्	(ता.)	12 55	80 07	− 9 32
जामनगर	(गु.)	22 28	70 06	−49 36	टुंकुर	(क.)	13 21	77 05	−21 40	तारकेश्वर	(बं.)	22 54	88 02	+22 08
जालना	(म.)	19 50	75 58	−26 [illegible]	[illegible]	(ता.)	8 48	78 11	−17 16	तारा	(गु.)	24 00	71 51	−42 36

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
तारादेवी	(हि.)	31 03	77 08	−21 28
तिनसुकिया	(आसा.)	27 28	95 20	+51 20
तिरुवनन्तपुरम्	(के.)	8 30	76 58	−22 08
तिरुपति	(आं.)	13 39	79 25	−12 20
तिरुप्पर	(क.)	11 05	77 20	−20 40
तिरुवन्नामलै	(ता.)	12 13	79 04	−13 44
तुर्रा	(मे.)	25 30	90 13	+30 52
तेजपुर	(आसा.)	26 38	92 49	+41 16
तेनाली	(आं.)	16 13	80 36	− 7 36
तेरुनेलवेली	(ता.)	8 45	77 43	−19 08
त्रिचुरापल्ली	(ता.)	10 49	78 41	−15 16
त्रिचूर	(के.)	10 32	76 14	−25 04
त्रिवेन्द्रम्	(के.)	देखें —	तिरुवनन्तपुरम्	
थराड़	(गु.)	24 26	71 40	−43 20
थानेधार	(हि.)	31 20	77 34	−19 44
थानेसर	(ह.)	29 58	76 56	−22 16
दतिया	(म.प्र.)	25 39	78 27	−16 12
दन्तेवाड़ा	(छ.ग.)	18 52	81 22	− 4 32
दमोई	(गु.)	22 08	73 28	−36 08
दमोह	(म.प्र.)	23 50	79 29	−12 04
दरभंगा	(बि.)	26 10	85 57	+13 48
दसूहा	(पं.)	31 49	75 38	−27 28
दादरी	(ह.)	28 34	77 33	−19 48
दानापुर	(बि.)	25 38	85 05	+10 20
दार्जिलिंग	(बं.)	27 02	88 16	+23 04
दावनगेरे	(क.)	14 30	75 52	−26 32
दिल्ली	(यू.टी.)	28 38	77 12	−21 12
दीनानगर	(पं.)	32 09	75 28	−28 08
दीमापुर	(नागा.)	25 53	93 43	+44 52
दुजाना	(ह.)	28 41	76 37	−23 32
दुमका	(झा.खं.)	24 16	87 15	+19 00
दुर्ग	(म.प्र.)	21 11	81 17	− 4 52
दुर्गापुर	(बं.)	23 29	87 20	+19 20
देओगढ़	(उ.)	21 32	84 46	+ 9 04
देओट सिद्ध	(हि.)	31 28	76 34	−23 44
देवघर	(बि.)	24 30	86 42	+16 48
देवप्रयाग	(उ.आं.)	30 09	78 37	−15 32
देवबन्द	(उ.प्र.)	29 42	77 41	−19 16
देवरिया	(उ.प्र.)	26 31	83 47	+ 5 08
देवलाली	(म.)	19 58	73 52	−34 32
देवास	(म.प्र.)	22 58	76 06	−25 36
देहरा गोपीपुर	(हि.)	31 54	76 13	−25 08
देहरादून	(उ.आं.)	30 19	78 02	−17 52
देहरी	(बि.)	24 52	84 11	+ 6 44
दोराहा मण्डी	(पं.)	30 49	76 02	−25 52
दौसा	(रा.)	26 51	76 21	−24 36
द्रास	(का.)	34 27	75 46	−26 56
द्वारिका	(गु.)	22 14	69 02	−53 52
धनबाद	(झा.खं.)	23 47	86 30	+16 00
धनुष्कोडी	(ता.)	9 12	79 25	−12 20
धमतरी	(छ.ग.)	20 42	81 34	− 3 44
धर्मजयगढ़	(म.प्र.)	22 28	83 13	+ 2 52
धर्मपुर	(हि.)	30 53	77 02	−21 52
धर्मशाला	(हि.)	32 16	76 23	−24 28
धांगधरा	(गु.)	22 59	71 29	−44 04
धार	(म.प्र.)	22 35	75 20	−28 40
धारवाड़	(क.)	15 30	75 04	−29 44
धुले	(म.)	20 58	74 47	−30 52
धेन कानाल	(उ.)	20 40	85 39	+12 36
धौलपुर	(रा.)	26 42	77 53	−18 28
नईहाटी	(बं.)	22 57	88 25	+23 40
नकोदर	(पं.)	31 07	75 29	−28 04
नगर	(हि.)	32 07	77 08	−21 28
नगरोटा बगवां	(हि.)	32 06	76 22	−24 32
नजीबाबाद	(उ.प्र.)	29 38	78 20	−16 40
नडियाद	(गु.)	22 42	72 55	−38 20
नन्दापुर	(उ.)	18 32	82 52	+ 1 28
नन्दुरबार	(म.)	21 22	74 15	−33 00
नयागढ़	(उ.)	20 10	85 08	+10 32
नरवाणा	(ह.)	29 37	76 07	−25 32
नरसिंहपुरा	(उ.)	20 28	85 08	+10 32
नरेन्द्रनगर	(उ.आं.)	30 10	78 20	−16 40
नरैना	(रा.)	26 50	74 11	−33 16
नवद्वीप	(बं.)	23 25	88 22	+23 28
नवरंगपुर	(उ.)	19 15	82 39	+ 0 36
नवलगढ़	(रा.)	27 51	75 18	−28 48
नवसारी	(गु.)	20 52	72 56	−38 16
नवांशहर	(पं.)	31 07	76 08	−25 28
नसीराबाद	(रा.)	26 18	74 46	−30 56
नागापट्टनम्	(ता.)	10 45	79 50	−10 40
नागपुर	(म.)	21 10	79 10	−13 20
नागरकोयल	(ता.)	8 10	77 26	−20 16
नागौर	(रा.)	27 11	73 44	−35 04
नाचना	(रा.)	27 29	71 45	−43 00
नाथद्वारा	(रा.)	24 56	73 50	−34 40
नान्देड़	(म.)	19 11	77 21	−20 36
नानपाड़ा	(उ.प्र.)	27 52	81 30	− 4 00
नान्दोड़	(गु.)	21 52	73 32	−35 52
नाभा	(पं.)	30 22	76 08	−25 28
नारकण्डा	(हि.)	31 16	77 27	−20 12
नारनौल	(ह.)	28 03	76 14	−25 04
नारायणगढ़	(ह.)	30 29	77 08	−21 28
नालगोंडा	(आं.)	17 04	79 15	−13 00
नालन्दा	(बि.)	25 07	85 25	+11 40
नालागढ़	(हि.)	31 03	76 42	−23 12
नालिया	(गु.)	23 19	68 51	−54 36
नासिक	(म.)	20 00	73 52	−34 32
नाहन	(हि.)	30 33	77 21	−20 36

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
निज़ामाबाद	(आं.)	18 40	78 07	−17 40
निम्बहेड़ा	(रा.)	24 37	74 45	−31 00
निरमण्ड	(हि.)	31 27	77 34	−19 44
नीमच	(म.प्र.)	24 27	74 52	−30 32
नीलगिरि	(उ.)	21 29	86 49	+17 16
नीलोखेड़ी	(ह.)	29 51	76 55	−22 20
नूरपुर	(हि.)	32 18	75 54	−26 24
नूरपुरबेदी	(पं.)	31 09	76 29	−24 04
नैनवा	(रा.)	25 45	75 57	−26 12
नैनीताल	(उ.आं.)	29 23	79 27	−12 12
नैल्लूर	(आं.)	14 29	80 00	−10 00
नोखामण्डी	(रा.)	27 35	73 29	−36 04
नोंगस्टोइन	(मे.)	25 31	91 16	+35 04
नोहर	(रा.)	29 11	74 46	−30 56
नौशहरा	(का.)	33 10	74 15	−33 00
पचपदरा	(रा.)	25 55	72 21	−40 36
पंचकूला	(ह.)	30 42	76 52	−22 32
पंचमढ़ी	(म.प्र.)	22 28	78 26	−16 16
पंजिम	(गोवा)	15 29	73 50	−34 40
पटना	(बि.)	25 37	85 13	+10 52
पटियाला	(पं.)	30 20	76 25	−24 20
पट्टी	(पं.)	31 17	74 51	−30 36
पटौदी	(ह.)	28 18	76 48	−22 48
पठानकोट	(पं.)	32 17	75 42	−27 12
पंढरपुर	(म.)	17 42	75 24	−28 24
पन्ना	(म.प्र.)	24 44	80 14	− 9 04
परभानी	(म.)	19 16	76 51	−22 36
पराकसम	(आं.)	15 30	80 06	− 9 36
पलवल	(ह.)	28 09	77 20	−20 40
पहलगाम	(का.)	34 01	75 20	−28 40
पाकौर	(झा.खं.)	24 38	87 54	+21 36
पाटन	(गु.)	23 50	72 09	−41 24
पाटनगढ	(उ.)	20 43	83 09	+ 2 36

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
पाठलगांव	(म.प्र.)	22 34	83 28	+ 3 52
पाण्डिचेरी	(पां.)	11 58	79 54	−10 24
पणजी	(गोवा)	15 29	73 50	−34 40
पानीपत	(ह.)	29 23	77 00	−22 00
पापड़हांडी	(उ.)	19 22	82 34	+ 0 16
पालनपुर	(गु.)	21 12	72 29	−40 04
पालमपुर	(हि.)	32 07	76 33	−23 48
पालिताणा	(गु.)	21 30	71 50	−42 40
पाली	(रा.)	25 46	73 20	−36 40
पालयंकोट्टै	(ता.)	8 42	77 46	−18 56
पांवटा साहिब	(हि.)	30 27	77 37	−19 32
पासीघाट	(अरुणा.)	28 05	95 20	+51 20
पिठोरागढ़	(उ.आं.)	29 35	80 13	− 9 08
पिपली	(ह.)	29 58	76 53	−22 28
पिहोवा	(ह.)	29 57	76 37	−23 32
पीलीभीत	(उ.प्र.)	28 38	79 48	−10 48
पुंछ	(का.)	33 51	74 06	−33 36
पुट्टापर्त्ती	(आं.)	14 15	77 45	−19 00
पुदुक्कोट्टै	(ता.)	10 23	78 49	−14 44
पुरनिया	(बि.)	25 49	87 31	+20 04
पुरी	(उ.)	19 48	85 52	+13 28
पुरुलिया	(बं.)	23 20	86 22	+15 28
पुष्कर	(रा.)	26 30	74 33	−31 48
पूना	(म.)	18 34	73 53	−34 28
पोरबन्दर	(गु.)	21 40	69 36	−51 36
पोर्टब्लेयर	(अं.नि.)	11 41	92 43	+40 52
पोलाची	(ता.)	10 38	77 00	−22 00
पौड़ी	(उ.आं.)	30 09	78 47	−14 52
प्रतापगढ़	(उ.प्र.)	25 50	81 59	− 2 04
प्रतापगढ़	(म.प्र.)	24 02	74 47	−30 52
प्रयाग	(उ.प्र.)	25 28	81 54	− 2 24
प्रोद्दातूर	(ता.)	14 45	78 35	−15 40
फगवाड़ा	(पं.)	31 14	75 46	−26 56

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
फतेहपुर	(उ.प्र.)	25 56	80 52	− 6 32
फतेहपुर सीकरी	(उ.प्र.)	27 06	77 40	−19 20
फतेहाबाद	(उ.प्र.)	27 01	78 19	−16 44
फतेहाबाद	(ह.)	29 31	75 28	−28 08
फरीदकोट	(पं.)	30 40	74 40	−31 20
फरीदाबाद	(ह.)	28 26	77 19	−20 44
फर्रूखाबाद	(उ.प्र.)	27 24	79 34	−11 44
फाज़िल्का	(पं.)	30 25	74 04	−33 44
फिरोज़पुर	(पं.)	30 55	74 40	−31 20
फिरोज़ाबाद	(उ.प्र.)	27 09	78 24	−16 24
फिल्लौर	(पं.)	31 01	75 47	−26 52
फुलेरा	(रा.)	26 52	75 16	−28 56
फूलबानी	(उ.)	20 30	84 18	+ 7 12
फैज़ाबाद	(उ.प्र.)	26 47	82 08	− 1 28
बक्सर	(बि.)	25 34	83 59	+ 5 56
बंगलौर	(क.)	13 00	77 35	−19 40
बंगा	(पं.)	31 11	75 59	−26 04
बटाला	(पं.)	31 48	75 12	−29 12
बठिण्डा	(पं.)	30 11	75 00	−30 00
बड़ानगर	(बं.)	22 38	88 22	+23 28
बड़ौदा	(गु.)	22 18	73 13	−37 08
बदायूं	(उ.प्र.)	28 03	79 07	−13 32
बद्दी	(हि.)	30 55	76 48	−22 48
बद्रीनाथ	(उ.आं.)	30 44	79 29	−12 04
बनगांव	(बं.)	23 04	88 49	+25 16
बनिहाल	(का.)	33 30	75 18	−28 48
बबीना	(उ.प्र.)	25 15	78 28	−16 08
बंबई	(म.)	देखें —	मुम्बई	
बरवाला	(ह.)	29 22	75 54	−26 24
बरेली	(उ.प्र.)	28 22	79 27	−12 12
बरौनी	(बि.)	25 30	85 53	+13 52
बर्दवान	(बं.)	23 16	87 52	+21 28
बलरामपुर	(उ.प्र.)	27 26	82 11	− 1 16

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
बलिया	(उ.प्र.)	25 45	84 10	+ 6 40	बिलासपुर	(हि.)	31 20	76 47	−22 52	व्यास	(पं.)	31 31	75 18	−28 48
बल्लभगढ़	(ह.)	28 21	77 19	−20 44	बिलासीपाड़ा	(आसा.)	26 13	90 13	+30 52	भटिण्डा	(पं.)	देखें	बठिण्डा	(पं.)
बसीरहाट	(बं.)	22 40	88 53	+25 32	बिष्णुपुर	(बं.)	23 05	87 19	+19 16	भण्डारा	(म.)	21 10	79 41	−11 16
बस्ति	(उ.प्र.)	26 48	82 43	+ 0 52	बिहारशरीफ	(बि.)	25 11	85 32	+12 08	भदोही	(उ.प्र.)	25 25	82 34	+ 0 16
ब्रह्मकुण्ड	(आसा.)	27 52	96 23	+55 32	बीकानेर	(रा.)	28 01	73 20	−36 40	भद्रक	(उ.)	21 05	86 30	+16 00
बहराईच	(उ.प्र.)	27 35	81 36	− 3 36	बीजापुर	(क.)	16 50	75 45	−27 00	भद्रवाह	(का.)	32 59	75 43	−27 08
बागलकोट	(क.)	16 14	75 47	−26 52	बीड	(म.)	18 59	75 46	−28 56	भद्राचलम्	(आं.)	17 42	80 53	− 6 28
बाघ	(म.प्र.)	22 22	74 49	−30 44	बीदर	(क.)	17 56	77 35	−19 40	भरतपुर	(रा.)	27 15	77 30	−20 00
बातल	(हि.)	32 22	77 36	−19 36	बुक्क पत्तनम	(आं.)	14 12	77 46	−18 56	भरमौर	(हि.)	32 27	76 32	−23 52
बांकीपुर	(बि.)	25 40	85 12	+10 48	बुढलाडा	(पं.)	29 56	75 34	−27 44	भरूच	(गु.)	21 40	72 58	−38 08
बांकुरा	(बं.)	23 15	87 04	+18 16	बुटाणा	(ह.)	29 11	76 38	−23 28	भवानीपतन	(उ.)	19 54	83 10	+ 2 40
बाघपत	(उ.प्र.)	28 57	77 13	−21 08	बुद्धगया	(बि.)	24 41	84 58	+ 9 52	भागलपुर	(बि.)	25 15	87 00	+18 00
बाटानगर	(बं.)	22 31	88 15	+23 00	बुरनपुर	(बं.)	23 42	86 58	+17 52	भातपाड़ा	(बं.)	22 52	88 24	+23 36
बाड़मेर	(रा.)	25 45	71 25	−44 20	बुरहानपुर	(म.प्र.)	21 18	76 14	−25 04	भादसों	(पं.)	30 31	76 15	−25 00
बांदा	(उ.प्र.)	25 29	80 20	− 8 40	बुलन्दशहर	(उ.प्र.)	28 24	77 51	−18 36	भाभर	(गु.)	24 08	71 42	−43 12
बामनघाटी	(उ.)	22 13	86 15	+15 00	बुलसार	(गु.)	20 36	72 56	−38 16	भावनगर	(गु.)	21 46	72 10	−41 20
बारपेटा	(आसा.)	26 20	91 02	+34 08	बूंदी	(रा.)	25 27	75 40	−27 20	भिंड	(म.प्र.)	26 35	78 46	−14 56
बारसी	(म.)	18 14	75 44	−27 04	बृन्दावन	(उ.प्र.)	27 33	77 44	−19 04	भिलाई	(छ.ग.)	21 13	81 26	− 4 16
बारागढ़	(उ.)	21 25	83 35	+ 4 20	बेगूसराय	(बि.)	25 25	86 08	+14 32	भिवंडी	(गु.)	19 18	73 04	−37 44
बाराबंकी	(उ.प्र.)	26 55	81 12	− 5 12	बेट्टिया	(बि.)	26 48	84 33	+ 8 12	भिवानी	(ह.)	28 48	76 08	−25 28
बारामूला	(का.)	34 12	74 20	−32 40	बेलगांव	(क.)	15 54	74 36	−31 36	भीनमाल	(रा.)	25 00	72 19	−40 44
बारासत	(बं.)	22 43	88 29	+23 56	बेला	(पं.)	30 56	76 23	−24 28	भीमावरम्	(आं.)	16 34	81 35	− 3 40
बारीपाड़ा	(उ.)	21 56	86 44	+16 56	बेला(प्रतापगढ़)	(उ.प्र.)	25 54	82 01	− 1 56	भीलवाड़ा	(रा.)	25 21	74 40	−31 20
बालाघाट	(म.प्र.)	21 48	80 11	− 9 16	बेल्लारी	(क.)	15 11	76 54	−22 24	भुज	(गु.)	23 16	69 40	−51 20
बालामऊ	(उ.प्र.)	27 15	80 23	− 8 28	बैकुण्ठपुर	(छ.ग.)	23 15	82 33	+ 0 12	भुवनेश्वर	(उ.)	20 13	85 50	+13 20
बालासौर	(उ.)	21 31	86 54	+17 36	बैजनाथ	(हि.)	32 04	76 37	−23 32	भुसावल	(म.)	21 01	75 50	−26 40
बालीपाड़ा	(आसा.)	26 09	92 09	+38 36	बैरकपुर	(बं.)	22 46	88 24	+23 36	भोपाल	(म.प्र.)	23 16	77 24	−20 24
बालूरघाट	(बं.)	25 13	88 46	+25 04	बोम्डिला	(अरुणा.)	27 19	92 25	+39 40	मऊ	(उ.प्र.)	25 17	81 23	− 4 28
बालेश्वर	(उ.)	21 31	86 59	+17 56	बोरसाद	(गु.)	22 24	72 50	−38 04	मंगलोर	(क.)	12 54	74 51	−30 36
बालोतरा	(रा.)	25 49	72 14	−41 04	बोलपुर	(बं.)	23 40	87 43	+20 52	मंगलौर	(उ.आं.)	29 48	77 52	−18 32
बांसवाड़ा	(रा.)	23 30	74 24	−32 24	बोलानगिर	(उ.)	20 41	83 30	+ 4 00	मंगालादै	(आसा.)	26 28	92 02	+38 08
बिजनौर	(उ.प्र.)	29 22	78 08	−17 28	बौडा	(उ.)	20 50	84 22	+ 7 28	मछलीपट्टणम्	(आं.)	16 10	81 08	− 5 28
बिलासपुर	(छ.ग.)	22 05	82 09	− 1 24	ब्यावर	(रा.)	26 06	74 20	−32 40	मजीठा	(पं.)	31 46	74 57	−30 12

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
मण्डला	(म.प्र.)	22 37	80 22	− 8 32	माहे	(पां.)	11 42	75 32	−27 52	मोरेना (मुरैना)	(म.प्र.)	26 23	78 04	−17 44
मण्ड्या	(क.)	12 34	76 55	−22 20	मिदनापुर	(बं.)	22 25	87 21	+19 24	मोहनिया	(बि.)	25 11	83 37	+ 4 28
मण्डी	(हि.)	31 43	76 58	−22 08	मिराज	(म.)	16 51	74 42	−31 12	मोहाना	(म.)	25 54	77 45	−19 00
मणिकर्ण	(हि.)	32 02	77 21	−20 36	मिर्जापुर	(उ.प्र.)	25 09	82 35	+ 0 20	मोहाली	(पं.)	30 43	76 42	−23 12
मथुरा	(उ.प्र.)	27 30	77 41	−19 16	मीरपुर	(का.)	33 32	73 51	−34 36	यनम्	(पां.)	16 44	82 13	− 1 08
मदुरै	(ता.)	9 58	78 10	−17 20	मुक्तसर	(पं.)	30 29	74 31	−31 56	यमुनानगर	(ह.)	30 07	77 18	−20 48
मद्रास	(ता.)	13 05	80 18	− 8 48	मुकेरियां	(पं.)	31 57	75 37	−27 32	यवतमाल	(म.)	20 24	78 08	−17 28
मधुपुर	(झा.खं.)	24 16	86 39	+16 36	मुगलसराय	(उ.प्र.)	25 18	83 07	+ 2 28	योल	(हि.)	32 11	76 23	−24 28
मधुबनी	(बि.)	26 22	86 05	+14 20	मुंगेर	(बि.)	25 23	86 30	+16 00	रक्सौल	(बि.)	26 58	84 51	+ 9 24
मधीपुरा	(बि.)	25 55	86 47	+17 08	मुजफ्फरनगर	(उ.प्र.)	29 28	77 41	−19 16	रंगिया	(आसा.)	26 28	91 35	+36 20
मनाली	(हि.)	32 16	77 10	−21 20	मुजफ्फरपुर	(बि.)	26 07	85 27	+11 48	रतलाम	(म.प्र.)	23 21	75 07	−29 32
मन्दसोर	(म.प्र.)	24 05	75 06	−29 36	मुजफ्फराबाद	(का.)	34 23	73 30	−36 00	रतनगढ़	(रा.)	28 05	74 39	−31 24
मन्सूरी	(उ.आं.)	30 27	78 07	−17 32	मुद्रा	(म.प्र.)	24 43	77 35	−19 40	रत्नागिरि	(म.)	17 00	73 22	−36 32
मनसादेवी	(ह.)	30 43	76 51	−22 36	मुन्दरा	(गु.)	22 50	69 48	−50 48	राऊरकेला	(उ.)	22 15	84 52	+ 9 28
मनीमाजरा	(ह.)	30 42	76 52	−22 32	मुम्बई	(म.)	19 00	72 54	−38 24	रांची	(झा.खं.)	23 23	85 23	+11 32
मलोट	(पं.)	30 13	74 29	−32 04	मुरवाड़ा	(म.प्र.)	23 51	80 22	− 8 32	राजकोट	(गु.)	22 18	70 53	−46 28
मवाना	(उ.प्र.)	29 06	77 55	−18 20	मुरादाबाद	(उ.प्र.)	28 50	78 47	−14 52	राजगढ़	(म.प्र.)	24 01	76 45	−23 00
महबूबनगर	(आं.)	16 44	77 59	−18 04	मुरी	(झा.खं.)	23 51	82 34	+ 0 16	राजनन्दगांव	(छ.ग.)	21 05	81 05	− 5 40
महवा	(रा.)	27 03	76 56	−22 16	मुलाना	(ह.)	30 17	77 03	−21 48	राजपालैयम्	(ता.)	9 27	77 34	−19 44
महाबलिपुरम्	(ता.)	12 37	80 12	− 9 12	मुर्शिदाबाद	(बं.)	24 11	88 16	+23 04	राजपुरा	(पं.)	30 29	76 36	−23 36
महाबलेश्वर	(गु.)	17 58	73 43	−35 08	मेतूर	(ता.)	11 50	77 51	−18 36	राजमहल	(झा.खं.)	25 03	87 53	+21 32
महुआ	(गु.)	21 05	71 48	−42 48	मेढ़क	(आं.)	18 03	78 15	−17 00	राजमहेन्द्री	(आं.)	17 05	81 48	− 2 48
महेन्द्रगढ़	(ह.)	28 17	76 09	−25 24	मेरठ	(उ.प्र.)	28 59	77 42	−19 12	राजुला	(गु.)	21 01	71 26	−44 16
महेसाणा	(गु.)	23 37	72 28	−40 08	मेलघाट	(म.)	21 44	77 12	−21 12	राजौरी	(का.)	33 22	74 17	−32 52
माछीवाड़ा	(पं.)	30 55	76 11	−25 16	मैनपुरी	(उ.प्र.)	27 14	79 01	−13 56	रादौर	(ह.)	30 01	77 08	−21 28
मांगरोल	(गु.)	21 07	70 08	−49 28	मैसूर	(क.)	12 18	76 37	−23 32	राघनपुर	(गु.)	23 52	71 36	−43 36
माण्डवी (कच्छ)	(गु.)	22 50	69 28	−52 08	मैहर	(म.प्र.)	24 16	80 45	− 7 00	रानाघाट	(बं.)	23 11	88 35	+24 20
मानसा	(पं.)	29 59	75 23	−28 28	मोकोक चुंग	(नागा.)	26 19	94 32	+48 08	रानीखेत	(उ.आं.)	29 39	79 25	−12 20
मायूरम्	(ता.)	11 08	79 40	−11 20	मोगा	(पं.)	30 48	75 10	−29 20	रापर	(गु.)	23 33	70 38	−47 28
मारवाड़ जं.	(रा.)	25 43	73 36	−35 36	मोतीहारी	(बि.)	26 40	84 57	+ 9 48	राबर्ट्सगंज	(उ.प्र.)	24 42	83 04	+ 2 16
मालदा	(बं.)	25 05	88 09	+22 36	मोरवी	(गु.)	22 50	70 50	−46 40	रामनाथपुरम्	(ता.)	9 23	78 53	−14 28
मालेगांव(नासिक)	(म.)	20 32	74 38	−31 28	मोरार	(म.प्र.)	26 13	78 14	−17 04	रामपुर	(उ.प्र.)	28 49	79 02	−13 52
मालेरकोटला	(पं.)	30 31	75 52	−26 32	मोरिण्डा	(पं.)	30 48	76 30	−24 00	रामबन	(का.)	33 15	75 15	−29 00

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
रामपुरबुशहर	(हि.)	31 27	77 38	−19 28
रामपुराफूल	(पं.)	30 17	75 14	−29 04
रामानुजगंज	(छ.ग.)	23 48	83 42	+ 4 48
रामेश्वरम्	(ता.)	9 18	79 19	−12 44
रायकोट	(पं.)	30 39	75 36	−27 36
रायगढ़	(छ.ग.)	21 54	83 26	+ 3 44
रायचूर	(क.)	16 15	77 20	−20 40
रायपुर	(उ.प्र.)	30 19	78 06	−17 36
रायपुर	(छ.ग.)	21 15	81 41	− 3 16
रायबरेली	(उ.प्र.)	26 14	81 16	− 4 56
रायसिंहनगर	(रा.)	29 32	73 27	−36 12
रायसेन	(म.प्र.)	23 18	77 47	−18 52
रियांग	(अरुणा.)	27 32	92 55	+41 40
रिवालसर	(हि.)	31 38	76 50	−22 40
रीवां	(म.प्र.)	24 31	81 19	− 4 44
रुड़की	(उ.आं.)	29 52	77 53	−18 28
रुद्रप्रयाग	(उ.आं.)	30 16	78 59	−14 04
रिवाड़ी	(ह.)	28 12	76 40	−23 20
रोन्दू	(का.)	35 37	75 06	−29 36
रोपड़	(पं.)	30 57	76 32	−23 52
रोहड्डू	(हि.)	31 13	77 45	−19 00
रोहतक	(ह.)	28 54	76 38	−23 28
लक्सर	(उ.आं.)	29 48	78 02	−17 52
लखनऊ	(उ.प्र.)	26 51	80 55	− 6 20
लखपत	(गु.)	23 49	68 47	−54 52
लखीमपुर	(उ.प्र.)	27 57	80 49	− 6 44
लखीसराय	(बि.)	25 12	86 06	+14 24
ललितपुर	(उ.प्र.)	24 41	78 25	−16 20
लाटूर	(म.)	18 24	76 34	−23 44
लाडवा	(ह.)	29 59	77 05	−21 40
लालसोत	(रा.)	26 34	76 23	−24 28
लिम्बड़ी	(गु.)	22 36	71 48	−42 48
लुधियाना	(पं.)	30 55	75 54	−26 24

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
लुम्डिंग	(आसा.)	25 46	93 10	+42 40
लूनावाड़ा	(गु.)	23 08	73 37	−35 32
लूनी	(रा.)	26 00	73 00	−38 00
लेह	(का.)	34 09	77 35	−19 40
लैंस डाऊन	(उ.आं.)	29 50	78 41	−15 16
लोहारू	(ह.)	28 27	75 49	−26 44
वर्धा	(म.)	20 42	78 40	−15 20
वलपरै	(ता.)	10 22	76 58	−22 08
वल्लभीपुर	(गु.)	20 52	71 58	−42 08
वलसाड़	(गु.)	20 40	72 55	−38 20
वारंगल	(आं.)	18 00	79 35	−11 40
वाल्टेअर	(आं.)	17 47	83 22	+ 3 28
वाराणसी	(उ.प्र.)	25 20	83 00	+ 2 00
विजयनगर	(क.)	15 20	76 30	−24 00
विजयपुरी	(आं.)	16 52	79 35	−11 40
विजयवाड़ा	(आं.)	16 31	80 39	− 7 24
विदिशा	(म.प्र.)	23 32	77 50	−18 40
विरामग्राम	(गु.)	23 08	72 04	−41 44
विरुदुनगर	(ता.)	9 36	77 58	−18 08
विल्लुपुरम्	(ता.)	11 56	79 29	−12 04
विशाखापट्टनम्	(आं.)	17 42	83 18	+ 3 12
विसनगर	(गु.)	23 41	72 36	−39 36
वेंकटपलम्	(उ.)	18 05	81 40	− 3 20
वेरावल	(गु.)	20 53	70 28	−48 08
वेल्लूर	(ता.)	12 56	79 09	−13 24
वैष्णोदेवी	(का.)	33 02	74 57	−30 12
व्यारा	(गु.)	21 09	73 28	−36 08
शहडोल	(म.प्र.)	23 20	81 22	− 4 32
शाजापुर	(म.प्र.)	23 26	76 18	−24 48
शान्ति निकेतन	(बं.)	23 40	87 42	+20 48
शान्तिपुर	(बं.)	23 15	88 26	+23 44
शामली	(उ.प्र.)	29 27	77 19	−20 44
शाहजहांपुर	(उ.प्र.)	27 53	79 55	−10 20

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
शाहदरा	(दिल्ली)	28 41	77 17	−20 52
शाहपुर	(हि.)	32 12	76 10	−25 20
शाहाबाद	(ह.)	30 10	76 52	−22 32
शाहाबाद	(उ.प्र.)	27 39	79 57	−10 12
शिकोहाबाद	(उ.प्र.)	27 06	78 36	−15 36
शिमला	(हि.)	31 06	77 10	−21 20
शिमोग	(क.)	13 56	75 34	−27 44
शिलांग	(मे.)	25 36	91 53	+37 32
शिवपुरी	(म.प्र.)	25 26	77 40	−19 20
शिवसागर	(आसा.)	26 58	94 39	+48 36
शिवहार (शिवविहार)	(बि.)	26 35	85 18	+11 12
शिवाकाशी	(ता.)	9 26	77 50	−18 40
शेखपुरा	(बि.)	25 09	85 53	+13 32
शैलम्	(आं.)	16 02	78 56	−14 16
शोलापुर	(म.)	17 43	75 56	−26 16
श्योपुर	(म.प्र.)	25 40	76 40	−23 20
श्रीकाकुलम्	(आं.)	18 19	84 00	+ 6 00
श्रीकालाहस्ती	(आं.)	13 48	79 42	−11 12
श्रीगंगानगर	(रा.)	29 49	73 50	−34 40
श्रीनगर	(उ.आं.)	30 13	78 47	−14 52
श्रीनगर	(का.)	34 07	74 50	−30 40
श्रीमाधोपुर	(रा.)	27 25	75 32	−27 52
श्रीरंगम्	(ता.)	10 52	78 40	−15 20
संगरूर	(पं.)	30 12	75 53	−26 28
संगारेड्डी पेठ	(आं.)	17 37	78 04	−17 44
सढौरा	(हि.)	30 23	77 13	−21 08
सतना	(म.प्र.)	24 34	80 55	− 6 20
सतारा	(म.)	17 49	74 05	−33 40
सदरा	(गु.)	23 20	72 48	−38 48
सदिया	(अरुणा.)	27 48	95 38	+52 32
सनौर	(पं.)	30 18	76 28	−24 08
सपाटू	(हि.)	30 59	76 59	−22 04
समराला	(पं.)	30 51	76 11	−25 16

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
समाना	(पं.)	30 09	76 12	–25 12
सम्स्तीपुर	(बि.)	25 55	85 50	+13 20
सम्बलपुर	(उ.)	21 28	84 01	+ 6 04
सरदारशहर	(रा.)	28 27	74 30	–32 00
सरहिंद	(पं.)	30 38	76 22	–24 32
सलीम	(म.)	11 39	78 12	–17 12
सवाई माधोपुर	(रा.)	25 58	76 25	–24 20
सहरसा	(बि.)	25 55	86 35	+16 20
सहसवां	(उ.प्र.)	28 05	78 45	–15 00
सहारनपुर	(उ.प्र.)	29 58	77 33	–19 48
सागर	(म.प्र.)	23 50	78 50	–14 40
सांगला	(हि.)	31 29	78 12	–17 12
सांगली	(म.)	16 55	74 37	–31 32
सांगानेर	(रा.)	26 49	75 49	–26 44
सांचोर	(रा.)	24 40	71 50	–42 40
साम्बा	(का.)	32 32	75 08	–29 28
सांभर	(रा.)	26 54	75 13	–29 08
सारनाथ	(उ.प्र.)	25 24	83 01	+ 2 04
सासनी	(उ.प्र.)	27 43	78 05	–17 40
सासाराम	(बि.)	24 57	84 03	+ 6 12
साहिबगंज	(झा.खं.)	25 13	87 40	+20 40
सिऊनी	(म.प्र.)	22 06	79 35	–11 40
सिऊरी	(बं.)	23 55	87 32	+20 08
सिकती	(बि.)	26 24	87 33	+20 12
सिकन्दराबाद	(आं.)	17 27	78 30	–16 00
सिकन्दराराऊ	(उ.प्र.)	27 42	78 27	–16 12
सिन्दरी	(रा.)	25 33	71 55	–42 20
सिन्दरी	(बं.)	23 45	86 42	+16 48
सिवाना	(रा.)	25 36	72 27	–40 12
सिरसा	(ह.)	29 32	75 04	–29 44
सिरोही	(रा.)	24 53	72 54	–38 24
सिल्चर	(आसा.)	24 49	92 47	+41 08
सिल्वासा	(दा.ना.)	20 17	72 59	–38 04

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
सिलीगुड़ी	(बं.)	26 42	88 26	+23 44
सिहोरा	(म.प्र.)	23 29	80 07	– 9 32
सिंहभूम	(झा.खं.)	22 24	85 30	+12 00
सीकर	(रा.)	27 36	75 09	–29 24
सीतापुर	(उ.प्र.)	27 34	80 41	– 7 16
सीतामढ़ी	(बि.)	26 35	85 32	+12 08
सीवां	(बि.)	26 12	84 23	+ 7 32
सुईगांव	(गु.)	24 10	71 23	–44 28
सुन्दरगढ़	(उ.)	22 07	84 02	+ 6 08
सुन्दरनगर	(हि.)	31 32	76 53	–22 28
सुनाम	(पं.)	30 08	75 48	–26 48
सुपौल	(बि.)	26 07	86 36	+16 24
सुरेन्द्रनगर	(गु.)	22 42	71 41	–43 16
सुल्तानपुर	(उ.प्र.)	26 16	82 04	– 1 44
सूरत	(गु.)	21 10	72 50	–38 40
सूरतगढ़	(रा.)	29 19	73 57	–34 12
सूरी	(बं.)	23 55	87 32	+20 08
सेरमपुर	(बं.)	22 45	88 21	+23 24
सैंज	(हि.)	31 49	77 19	–20 44
सोजत	(रा.)	25 56	73 42	–35 12
सोनगढ़	(गु.)	21 42	71 58	–42 08
सोनपुर	(बि.)	25 42	85 12	+10 48
सोनपुर	(उ.)	20 50	83 58	+ 5 52
सोनहाट	(छ.ग.)	23 29	82 30	0 00
सोनामर्ग	(का.)	34 18	75 18	–28 48
सोनीपत	(ह.)	28 59	77 01	–21 56
सोमनाथ	(गु.)	21 04	70 26	–48 16
सोलन	(हि.)	30 55	77 09	–21 24
हजारीबाग़	(झा.खं.)	23 59	85 25	+11 40
हडसर	(हि.)	32 22	76 33	–23 48
हनुमानगढ़	(रा.)	29 35	74 21	–32 36
हफलोंग	(आसा.)	25 11	93 02	+42 08
हमीरपुर	(उ.प्र.)	25 57	80 09	– 9 24

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
हमीरपुर	(हि.)	31 41	76 31	–23 56
हरदोई	(उ.प्र.)	27 25	80 07	– 9 32
हरसीपत्तन	(हि.)	31 53	76 39	–23 24
हरिद्वार	(उ.आं.)	29 58	78 13	–17 08
हरिपुर	(हि.)	31 59	76 05	–25 40
हरिपुरधार	(हि.)	30 52	77 28	–20 08
हरीकेपत्तन	(पं.)	31 30	74 57	–30 12
हल्द्वानी	(उ.आं.)	29 13	79 31	–11 56
हल्दिया	(बं.)	22 02	88 05	+22 20
हास्सन	(क.)	13 01	76 03	–25 48
हसनपुर	(ह.)	27 58	77 30	–20 00
हसनपुर	(उ.प्र.)	28 43	78 17	–16 52
हाजीपुर	(बि.)	25 43	85 14	+10 56
हाटकोटी	(हि.)	31 08	77 45	–19 00
हाथरस	(उ.प्र.)	27 36	78 03	–17 48
हापुड़	(उ.प्र.)	28 43	77 47	–18 52
हालीशहर	(बं.)	22 56	88 25	+23 40
हावड़ा	(बं.)	22 36	88 19	+23 16
हावेरी	(क.)	14 46	75 26	–28 16
हासपेट	(क.)	15 16	76 26	–24 16
हांसी	(हि.)	32 27	77 50	–18 40
हांसी	(ह.)	29 06	76 00	–26 00
हिंगनघाट	(म.)	20 32	78 52	–14 32
हिम्मतनगर	(गु.)	23 35	73 00	–38 00
हिसार	(ह.)	29 10	75 46	–26 56
हीराकुण्ड डैम	(उ.)	21 31	83 57	+ 5 48
हुबली	(क.)	15 20	75 14	–29 04
हैदराबाद	(आं.)	17 22	78 30	–16 00
होडल	(ह.)	27 53	77 22	–20 32
होशंगाबाद	(म.प्र.)	22 46	77 45	–19 00
होशियारपुर	(पं.)	31 32	75 57	–26 12
होसुर	(ता.)	12 45	77 51	–18 36

कुछ विदेशी प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश आदि

नगर	देश	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन	अक्षांश	रेखांश	स्टैण्डर्ड अन्तर (क्षेत्रीय स्टैं. टा. से स्था. म. का. का अन्तर)	भा. स्टैं. टा. का क्षेत्रीय स्टैं. टा. से अन्तर
		अं. क.	अं. क.	अं. क.	मि. से.	घं मि.
Abadan	Iran	52 30 पू.	30 20 उ.	48 16 पू.	−16 56	+02 00
Abbottabad	Pakistan	75 00 पू.	34 09 उ.	73 13 पू.	−07 08	+00 30
Abu Dhabi	U.A.E.	60 00 पू.	24 28 उ.	54 22 पू.	−22 32	+01 30
Accra	Ghana	00 00	05 33 उ.	00 13 प.	−00 52	+05 30
Addis Ababa	Ethiopia	45 00 पू.	09 02 उ	38 44 पू.	−25 04	+02 30
Aden	Yemen	45 00 पू.	12 45 उ.	45 04 पू.	+00 16	+02 30
Akyab	Myanmar	97 30 पू.	20 09 उ.	92 55 पू.	−18 20	−01 00
*Alexandria	Egypt	30 00 पू.	31 12 उ.	29 53 पू.	−00 28	+03 30
Algiers	Algeria	15 00 पू.	36 47 उ.	03 03 पू.	−47 48	+04 30
*Amman	Jordan	30 00 पू.	31 57 उ	35 56 पू.	+23 44	+03 30
*Amsterdam	Netherlands	15 00 पू.	52 22 उ.	04 53 पू.	−40 28	+04 30
*Angmagssalik	Greenland	45 00 प.	65 36 उ.	37 41 प.	+29 16	+08 30
*Ankara	Turkey	30 00 पू.	39 57 उ.	32 54 पू.	+11 36	+03 30
Anuradhapur	Sri Lanka	82 30 पू.	08 21 उ.	80 23 पू.	−08 28	00 00
*Athens	Greece	30 00 पू.	37 54 उ	23 43 पू.	−25 08	+03 30
*Auckland	New Zealand	180 00 पू.	36 52 द.	174 42 पू.	−21 12	−06 30
*Austin (Texas)	U.S.A.	90 00 प.	30 16 उ.	97 44 प.	−30 56	+11 30
Bacolod	Phill.	120 00 पू.	10 40 उ.	122 57 पू.	+11 48	−02 30
*Baghdad	Iraq	45 00 पू.	33 20 उ.	44 27 पू.	−02 12	+02 30
*Bahawalpur	Pakistan	75 00 पू.	29 59 उ	73 16 पू.	−06 56	+00 30
Bangkok	Thailand	105 00 पू.	13 44 उ.	100 30 पू.	−18 00	−01 30
Batticoloa	Sri Lanka	82 30 पू.	07 43 उ.	81 45 पू.	−03 00	00 00
Beijing	China	120 00 पू.	39 55 उ.	116 25 पू.	−14 20	−02 30
*Beirut	Lebanon	30 00 पू.	33 50 उ.	35 25 पू.	+21 40	+03 30
*Belgrade	Yugoslavia	15 00 पू.	44 50 उ.	20 30 पू.	+22 00	+04 30
*Berlin	Germany	15 00 पू.	52 32 उ.	13 25 पू.	−06 20	+04 30
*Berne	Switzerland	15 00 पू.	46 57 उ.	07 26 पू.	−30 16	+04 30
Biratnagar	Nepal	86 15 पू.	26 29 उ.	87 17 पू.	+04 08	−00 15
*Birmingham	England	00 00	52 30 उ.	01 50 प.	−07 20	+05 30
Bogota	Colombia	75 00 प.	04 36 उ.	74 05 प.	+03 40	+10 30
Bogra	Bangladesh	90 00 पू.	24 51 उ.	89 22 पू.	−02 32	−00 30
*Bonn	Germany	15 00 पू.	50 44 उ.	07 04 पू.	−31 44	+04 30
*Boston	U.S.A.	75 00 प.	42 21 उ.	71 04 प.	+15 44	+10 30
*Brasilia	Brazil	45 00 प.	15 47 द.	47 55 प.	−11 40	+08 30
*Bratislava	Slovakia	15 00 पू.	48 09 उ.	17 07 पू.	+08 28	+04 30
Brazzaville	Congo	15 00 पू.	04 16 द.	15 17 पू.	+01 08	+04 30
*Brisbane	Australia	150 00पू.	27 28 द.	153 02 पू.	+12 08	−04 30
*Brussels	Belgium	15 00 पू.	50 52 उ.	04 22 पू.	−42 32	+04 30
*Bucharest	Romania	30 00 पू.	44 25 उ.	26 07 पू.	−15 32	+03 30
*Budapest	Hungary	15 00 पू.	47 29 उ.	19 03 पू.	+16 12	+04 30
Buenos Aires	Argentina	45 00 प.	34 35 द.	58 27 प.	−53 48	+08 30
*Buffalo (N.Y.)	U.S.A.	75 00 प.	42 55 उ.	78 50 प.	−15 20	+10 30
*Cairo	Egypt	30 00 पू.	30 03 उ.	31 14 पू.	+04 56	+03 30
*California City	U.S.A.	120 00प.	35 07 उ.	117 59प.	+08 04	+13 30
*Canberra	Australia	150 00पू.	35 19 द.	149 08पू.	−03 28	−04 30
*Cape Town	South Africa	30 00 पू.	33 56 द.	18 22 पू.	−46 32	+03 30
Caracas	Venezuela	60 00 प.	10 30 उ.	66 56 प.	−39 44	+09 30
*Charlotti Amali	Virgin Is (U.K.)	60 00 प.	18 21 उ.	64 56 प.	−19 44	+09 30
*Chicago	U.S.A.	90 00 प.	41 53 उ.	87 38 प.	+09 28	+11 30
Chittagong	Bangla.	90 00 पू.	22 20 उ.	91 50 पू.	+07 20	−00 30
*Cleveland (Ohio)	U.S.A.	75 00 प.	41 30 उ.	81 41 प.	−26 44	+10 30
Colombo	Sri Lanka	82 30 पू.	06 56 उ.	79 51 पू.	−10 36	00 00
Comilla	Bangladesh	90 00 पू.	23 27 उ.	91 12 पू.	+04 48	−00 30
*Copenhagen	Denmark	15 00 पू.	55 40 उ.	12 35 पू.	−09 40	+04 30
Dakar	Senegal	00 00	14 40 उ.	17 26 प.	−69 44	+05 30
*Dallas (Texas)	U.S.A.	90 00 प.	32 47 उ.	96 48 प.	−27 12	+11 30

*इन नगरों में ग्रीष्मकालीन समय(Summer Time) प्रचलित है। ग्रीष्मकालीन समय क्षेत्रीय स्टैं. टा. से एक घण्टा आगे रहता है।

कुछ विदेशी प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश आदि

नगर	देश	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन अं. क.	अक्षांश अं. क.	रेखांश अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर (क्षेत्रीय स्टैं. टा. से स्था. म. का. का अन्तर) मि. से.	भा. स्टैं. टा. का क्षेत्रीय स्टैं. टा. से अन्तर घं मि.
*Damascus	Syria	30 00 पू.	33 30 उ.	36 18 पू.	+25 12	+03 30
Dar-es-salaam	Tanzania	45 00 पू.	06 50 द.	39 17 पू.	−22 52	+02 30
*Detroit (Mich.)	U.S.A.	75 00 प.	42 23 उ.	83 05 प.	−32 20	+10 30
Dhaka	Bangla.	90 00 पू.	23 43 उ.	90 25 पू.	+01 40	−00 30
Djibouti	Djibouti	45 00 पू.	11 36 उ.	43 09 पू.	−07 24	+02 30
Dinajpur	Bangla.	90 00 पू.	25 38 उ.	88 38 पू.	−05 28	−00 30
Doha	Qatar	45 00 पू.	25 17 उ.	51 32 पू.	+26 08	+02 30
*Dublin	Ireland	00 00	53 20 उ.	06 15 प.	−25 00	+05 30
Dubai	U.A.E.	60 00 पू.	25 18 उ.	55 18 पू.	−18 46	+01 30
*Edinburgh	Scotland	00 00	55 56 उ.	03 11 प.	−12 44	+05 30
*Edmonton	Canada	105 00 प.	53 33 उ.	113 28 प.	−33 52	+12 30
*Florida City	U.S.A.	75 00 प.	25 27 उ.	80 29 प.	−21 56	+10 30
*Frankfurt	Germany	15 00 पू.	50 06 उ.	08 40 पू.	−25 20	+04 30
Fukuoka	Japan	135 00 पू.	35 34 उ.	137 27 पू.	+09 48	−03 30
Galle	Sri Lanka	82 30 पू.	06 02 उ.	80 13 पू.	−09 08	00 00
Guatemala	Guatemala	90 00 प.	14 38 उ.	90 31 प.	−02 04	+11 30
*Geneva	Switzerland	15 00 पू.	46 12 उ.	06 09 पू.	−35 24	+04 30
*Glasgow	Scotland	00 00	55 52 उ.	04 15 प.	−17 00	+05 30
*Greenwich	England	00 00	51 29 उ.	00 00	00 00	+05 30
Guiyang	China	120 00 पू.	26 35 उ.	106 43 पू.	−53 08	−02 30
*Hamilton	Canada	75 00 प.	43 15 उ.	79 50 प.	−19 20	+10 30
Hanoi	North Vietnam	105 00 पू.	21 02 उ.	105 52 पू.	+03 28	−01 30
*Havana	Cuba	75 00 प.	23 08 उ.	82 22 प.	−29 28	+10 30
*Heidelberg	Germany	15 00 पू.	49 24 उ.	08 43 पू.	−25 08	+04 30
*Helsinki	Finland	30 00 पू.	60 09 उ.	24 57 पू.	−20 12	+03 30
Hiroshima	Japan	135 00 पू.	34 24 उ.	132 27 पू.	−10 12	−03 30
Hongkong	China	120 00 पू.	22 18 उ.	114 10 पू.	−23 20	−02 30
Honolulu	Hawai Island	150 00 प.	21 19 उ.	157 52 प.	−31 28	+15 30
*Houston (Texas)	U.S.A.	90 00 प.	29 45 उ.	95 21 प.	−21 24	+11 30
*Hyderabad	Pakistan	75 00 पू.	25 22 उ.	68 22 पू.	−26 32	+00 30
*Isfahan	Iran	52 30 पू.	32 40 उ.	51 38 पू.	−03 28	+02 00
*Islamabad	Pakistan	75 00 पू.	33 42 उ.	73 10 पू.	−07 20	+00 30
*Istanbul	Turkey	30 00 पू.	41 00 उ.	29 00 पू.	−04 00	+03 30
Jaffna	Sri Lanka	82 30 पू.	09 40 उ.	80 00 पू.	−10 00	00 00
Jakarta	Indonesia	105 00 पू.	06 10 द.	106 49 पू.	+07 16	−01 30
Jamaica	West Indies	75 00 प.	18 00 उ.	76 48 प.	−07 12	+10 30
*Jerusalem	Israel	30 00 पू.	31 46 उ.	35 14 पू.	+20 56	+03 30
Jessore	Bangla	90 00 पू.	23 10 उ.	89 13 पू.	−03 08	−00 30
Johannesburg	South Africa	30 00 पू.	26 15 द.	28 00 पू.	−08 00	+03 30
Kabul	Afghanistan	67 30 पू.	34 33 उ.	69 12 पू.	+06 48	+01 00
Kampala	Uganda	45 00 पू.	00 19 उ.	32 25 पू.	−50 20	+02 30
Kandahar	Afghanistan	67 30 पू.	31 32 उ.	65 30 पू.	−08 00	+01 00
Kandy	SriLanka	82 30 पू.	07 18 उ.	80 38 पू.	−07 28	00 00
*Karachi	Pakistan	75 00 पू.	24 52 उ.	67 03 पू.	−31 48	+00 30
Kathmandu	Nepal	86 15 पू.	27 43 उ.	85 19 पू.	−03 44	−00 15
Khartoum	Sudan	30 00 पू.	15 35 उ.	32 35 पू.	+10 20	+03 30
Kingston	*Jamaica*	75 00 प.	18 00 उ.	76 48 प.	−07 12	+10 30
Khulna	Bangla.	90 00 पू.	22 48 उ.	89 33 पू.	−01 48	−00 30
Kuala Lumpur	Malaysia	120 00 पू.	03 09 उ.	101 43 पू.	−73 08	−02 30
Kushtia	Bangla.	90 00 पू.	23 55 उ.	89 07 पू.	−03 32	−00 30
Kuwait	Kuwait	45 00 पू.	29 20 उ.	47 59 पू.	+11 56	+02 30
Kwangchow	China	120 00 पू.	23 06 उ.	113 16 पू.	−26 56	−02 30
Lagos	Nigeria	15 00 पू.	06 25 उ.	03 27 पू.	−46 12	+04 30
*Leeds	England	00 00	53 50 उ.	01 35 प.	−06 20	+05 30
*Leipzig	Germany	15 00 पू.	51 20 उ.	12 23 पू.	−10 28	+04 30
*Leningrad	Russia	30 00 पू.	59 57 उ.	30 18 पू.	+01 12	+03 30

* इन नगरों में ग्रीष्मकालीन समय (*Summer Time*) प्रचलित है। ग्रीष्मकालीन समय क्षेत्रीय स्टैं. टा. से एक घण्टा आगे रहता है।

कुछ विदेशी प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश आदि

नगर	देश	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन	अक्षांश	रेखांश	स्टैण्डर्ड अन्तर (क्षेत्रीय स्टैं. टा. से स्था. म. का. का अन्तर)	भा. स्टैं. टा. का क्षेत्रीय स्टैं. टा. से अन्तर	नगर	देश	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन	अक्षांश	रेखांश	स्टैण्डर्ड अन्तर (क्षेत्रीय स्टैं. टा. से स्था. म. का. का अन्तर)	भा. स्टैं. टा. का क्षेत्रीय स्टैं. टा. से अन्तर
		अं. क.	अं. क.	अं. क.	मि. से.	घं. मि.			अं. क.	अं. क.	अं. क.	मि. से.	घं. मि.
Leopoldville	Zaire	15 00 पू.	04 18 द.	15 18 पू.	+01 12	+04 30	Nairobi	Kenya	45 00 पू.	01 18 द.	36 52 पू.	−32 32	+02 30
Lhasa	China	120 00 पू.	29 40 उ.	91 07 पू.	−115 32	−02 30	*New Castle	England	00 00	52 27 उ.	03 06 प.	−12 24	+05 30
Lima	Peru	75 00 प.	12 02 द.	77 02 प.	−08 08	+10 30	*New Orleans	U.S.A.	90 00 प.	29 57 उ.	90 04 प.	−00 16	+11 30
*Lisbon	Portugal	00 00	38 43 उ.	09 11 प.	−36 44	+05 30	*New York	U.S.A.	75 00 प.	40 43 उ.	74 00 प.	+04 00	+10 30
*Liverpool	England	00 00	53 25 उ.	02 55 प.	−11 40	+05 30	Noakhali	Bangla.	90 00 पू.	22 49 उ.	91 06 पू.	+04 24	−00 30
*London	England	00 00	51 32 उ.	00 05 प.	−00 20	+05 30	*Nuuk	Greenland	45 00 प.	64 11 उ.	51 44 प.	+26 56	+08 30
*Long Beach,Ca.	U.S.A.	120 00 प.	33 46 उ.	118 12 प.	+07 12	+13 30	Osaka	Japan	135 00 पू.	34 40 उ.	135 30 पू.	+02 00	−03 30
*Los Angeles	U.S.A.	120 00 प.	34 03 उ.	118 14 प.	+07 04	+13 30	*Oslo	Norway	15 00 पू.	59 54 उ.	10 45 पू.	−17 00	+04 30
Luanda	Angola	15 00 पू.	08 48 द.	13 14 पू.	−07 04	+04 30	*Ottawa	Canada	75 00 प.	45 24 उ.	75 43 प.	−02 52	+10 30
Lusaka	Zambia	30 00 पू.	15 25 द.	28 17 पू.	−06 52	+03 30	Pabna	Bangla.	90 00 पू.	24 00 उ.	89 15 पू.	−03 00	−00 30
*Luxembourg	Luxembourg	15 00 पू.	49 36 उ..	06 09 पू.	−35 24	+04 30	Paramaribo	Suriname	45 00 प.	05 50 उ.	55 10 प.	−40 40	+08 30
*Madrid	Spain	15 00 पू.	40 25 उ.	03 41 प.	−74 44	+04 30	*Paris	France	15 00 पू.	48 50 उ.	02 20 पू.	−50 40	+04 30
*Manchester	England	00 00	53 30 उ.	02 15 प.	−09 00	+05 30	Pegu	Myanmar	97 30 पू.	17 20 उ.	96 29 पू.	−04 04	−01 00
Mandlay	Myanmar	97 30 पू.	22 00 उ.	96 05 पू.	−05 40	−01 00	Peking	China	देखें —	Beijing	—	—	—
Manila	Philippines	120 00 पू.	14 35 उ.	121 00 पू.	+04 00	−02 30	Penang	Malaysia	120 00 पू.	05 25 उ.	100 20 पू.	−78 40	−02 30
Mecca	SaudiArabia	45 00 पू.	21 25 उ.	39 54 पू.	−20 24	+02 30	Perth	Australia	120 00 पू.	32 00 द.	115 50 पू.	−16 40	−02 30
*Melbourne	Australia	150 00 पू.	37 50 द.	144 59 पू.	−20 04	−04 30	*Peshawar	Pakistan	75 00 पू.	34 01 उ.	71 33 पू.	−13 48	+00 30
*Mexico City	Mexico	90 00 प.	19 26 उ.	99 10 प.	−36 40	+11 30	*Philadelphia, Pa.	U.S.A.	75 00 प.	39 58 उ.	75 10 प.	−00 40	+10 30
*Milan	Italy	15 00 पू.	45 28 उ.	09 11 पू.	−23 16	+04 30	Phnom penh	Cambodia	105 00 पू.	11 35 उ.	104 57 पू.	−00 12	−01 30
Mombasa	Kenya	45 00 पू.	04 00 द	39 40 पू.	−21 20	+02 30	*Pittsburgh, Pa.	U.S.A.	75 00 प.	40 25 उ.	79 55 प.	−19 40	+10 30
*Montreal	Canada	75 00 प.	45 30 उ.	73 34 प.	+05 44	+10 30	Port Elizabeth	South Africa	30 00 पू.	33 58 द.	25 40 पू.	−17 20	+03 30
*Moscow	Russia	45 00 पू.	55 45 उ.	37 34 पू.	−29 44	+02 30	Port Louis	Mauritius	60 00 पू.	20 10 द.	57 30 पू.	−10 00	+01 30
Moulmein	Myanmar	97 30 पू.	16 30 उ.	97 38 पू.	+00 32	−01 00	Port of Spain	Trininad and Tobago	60 00 प.	10 39 उ.	61 31 प.	−06 04	+09 30
*Multan	Pakistan	75 00 पू.	30 11 उ.	71 29 पू.	−14 04	+00 30	*Prague	Czecho.	15 00 पू.	50 05 उ.	14 24 पू.	−02 24	+04 30
*Munich	Germany	15 00 पू.	48 08 उ.	11 35 पू.	−13 40	+04 30	Prome	Myanmar	97 30 पू.	18 47 उ.	95 15 पू.	−09 00	−01 00
Muscat	Oman	60 00 पू.	23 37 उ.	58 35 पू.	−05 40	+01 30	Punakha	Bhutan	90 00 पू.	27 42 उ.	89 52 पू.	−00 32	−00 30
Mymensingh	Bangla.	90 00 पू.	24 45 उ.	90 24 पू.	+01 36	−00 30	*Quetta	Pakistan	75 00 पू.	30 12 उ.	67 00 पू.	−32 00	+00 30
Nagoya	Japan	135 00 पू.	35 10 उ.	136 55 पू.	+07 40	−03 30	Rabat*	Morocco	00 00	34 02 उ.	06 51 प.	−27 24	+05 30

*इन नगरों में ग्रीष्मकालीन समय(Summer Time) प्रचलित है। ग्रीष्मकालीन समय क्षेत्रीय स्टैं. टा. से एक घण्टा आगे रहता है।

कुछ विदेशी प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश आदि

नगर	देश	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन अं. क.	अक्षांश अं. क.	रेखांश अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर (क्षेत्रीय स्टैं. टा. से स्था. म. का. का अन्तर) मि. से.	भा. स्टैं. टा. का क्षेत्रीय स्टैं. टा. से अन्तर घं. मि.
Rangoon	Myanmar	97 30 पू.	16 47 उ.	96 10 पू.	−05 20	−01 00
Rangpur	Bangla.	90 00 पू.	25 45 उ.	89 15 पू.	−03 00	−00 30
Rajshahi	Bangla.	90 00 पू.	24 22 उ.	88 36 पू.	−05 36	−00 30
*Rawalpindi	Pakistan	75 00 पू.	33 36 उ.	73 04 पू.	−07 44	+00 30
Riyadh	Saudi Arabia	45 00 पू.	24 39 उ.	46 41 पू.	+06 44	+02 30
Road Town	Virgin Is. (U.K.)	60 00 प.	18 27 उ.	64 37 प.	−18 28	+09 30
*Rome	Italy	15 00 पू.	41 55 उ.	12 27 पू.	−10 12	+04 30
Saigon	SouthVietnam	105 00 पू.	10 49 उ.	106 41 पू.	+06 44	−01 30
Salisbury (Harare)	Zimbabwe	30 00 पू.	17 50 द.	31 03 पू.	+04 12	+03 30
San'a'	Yeman	45 00 पू.	15 23 उ.	44 12 पू.	−03 12	+02 30
*San Diego, Ca.	U.S.A.	120 00 प.	32 43 उ.	117 10 प.	+10 40	+13 30
*San Francisco	U.S.A.	120 00 प.	37 48 उ.	122 25 प.	−09 40	+13 30
*San Juan	Puetro Rico	60 00 प.	18 28 उ.	66 07 प.	−24 28	+09 30
Santiago	Chile	60 00 प.	33 27 द.	70 40 प.	−42 40	+09 30
*Seattle	U.S.A	120 00 प.	47 41 उ.	122 15 प.	−09 00	+13 30
Seoul	South Korea	135 00 पू.	37 31 उ.	126 58 पू.	−32 08	−03 30
Shanghai	China	120 00 पू.	31 14 उ.	121 28 पू.	+05 52	−02 30
Sharjah	U.A.E.	60 00 पू.	25 20 उ.	55 24 पू.	−18 24	+01 30
Singapore	Singapore	120 00 पू.	01 17 उ.	103 54 पू.	−64 24	−02 30
*Sofia	Bulgaria	30 00 पू.	42 41 उ.	23 21 पू.	−26 36	+03 30
*Stanley	Falkland Is.	60 00 प.	51 42 द.	57 51 प.	+08 36	+09 30
*Stockholm	Sweden	15 00 पू.	59 20 उ.	18 00 पू.	+12 00	+04 30
*Sukkur	Pakistan	75 00 पू.	27 42 उ.	68 52 पू.	−24 32	+00 30
Suva	Fiji	180 00 पू.	18 08 द.	178 25 पू.	−06 20	−06 30
*Sydney	Australia	150 00 पू.	33 52 द.	151 12 पू.	+04 48	−04 30
Sylhet	Bangla.	90 00 पू.	24 54 उ.	91 52 पू.	+07 28	−00 30
Taipei	Taiwan	120 00 पू.	25 03 उ.	121 30 पू.	+06 00	−02 30
Taskent	Uzbekistan	75 00 पू.	41 20 उ.	69 18 पू.	−22 48	+00 30
*Tehran	Iran	52 30 पू.	35 41 उ.	51 26 पू.	−04 16	+02 00
Thimpu	Bhutan	90 00 पू.	27 28 उ.	89 39 पू.	−01 24	−00 30
*Tirane	Albania	15 00 पू.	41 20 उ.	19 50 पू.	+19 20	+04 30
Tokyo	Japan	135 00 पू.	35 40 उ.	139 46 पू.	+19 04	−03 30
*Toronto	Canada	75 00 प.	43 39 उ.	79 23 प.	−17 32	+10 30
Trincomalee	Sri Lanka	82 30 पू.	08 31 उ.	81 14 पू.	−05 04	00 00
Tripoli	Libya	30 00 पू.	32 54 उ.	13 15 पू.	−67 00	+03 30
*Ulan Bator	Mongolia	105 00 पू.	47 55 उ.	106 53 पू.	+07 32	−01 30
*Vancouver	Canada	120 00 प.	49 16 उ.	123 07 प.	−12 28	+13 30
Vatican City	Vatican City	15 00 पू.	41 54 उ.	12 27 पू.	−10 12	+04 30
*Vienna	Austria	15 00 पू.	48 12 उ.	16 22 पू.	+05 28	+04 30
*Volgograd	Russia	45 00 पू.	48 44 उ.	44 25 पू.	−02 20	+02 30
Wakayama	Japan	135 00 पू.	34 13 उ.	135 11 पू.	+00 44	−03 30
*Warsaw	Poland	15 00 पू.	52 12 उ.	21 00 पू.	+24 00	+04 30
*Washington (D.C.)	U.S.A.	75 00 प.	38 55 उ.	77 04 प.	−08 16	+10 30
*Wellington	New Zealand	180 00 पू.	41 16 द.	174 47 पू.	−20 52	−06 30
Yokohama	Japan	135 00 पू.	35 27 उ.	139 39 पू.	+18 36	−03 30
Zanzibar	Tanzania	45 00 पू.	06 10 द.	39 11 पू.	−23 16	+02 30
*Zurich	Switzerland	15 00 पू.	47 23 उ.	08 32 पू.	−25 52	+04 30

स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन सारणी (विश्व के लगभग सभी मुख्य देशों/कालक्षेत्रों की स्टैंडर्ड टाईम मेरिडियन्स)

देश/प्रदेश/कालक्षेत्र	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन (रेखांश) अं. क.	भा. स्टैं. टा. का क्षेत्रीय स्टैं. टा. से अन्तर घं. मि.
Afghanistan	67 30 पू.	+ 01 00
*Albania	15 00 पू.	+ 04 30
Algeria	15 00 पू.	+ 04 30
Angola	15 00 पू.	+ 04 30
Argentina	45 00 प.	+ 08 30
*AUSTRALIA यह देश इन 3 कालक्षेत्रों (Time Zones) में बंटा है :-		
(i) **E.S.T.** (Eastern St. Time) (इस कालक्षेत्र में Victoria, Tasmania आदि क्षेत्र आते हैं)	150 00 पू.	– 04 30
(ii) **C.S.T.** (Central St. Time) (इस कालक्षेत्र में South Australia, Broken Hill Area आदि आते हैं।)	142 30 पू.	– 04 00
(iii) **W.S.T.** (इस कालक्षेत्र में Western Australia आता है)	120 00 पू.	– 02 30
*Austria	15 00 पू.	+ 04 30
Bahrain	45 00 पू.	+ 02 30
Bangladesh	90 00 पू.	– 00 30
*Belgium	15 00 पू.	+ 04 30
Bhutan	90 00 पू.	– 00 30
Bolivia	60 00 प.	+ 09 30
*Bulgaria	30 00 पू.	+ 03 30
Burundi	30 00 पू.	+ 03 00
Cameroon	15 00 पू.	+ 04 30
*CANADA यह देश मुख्यतः इन 4 कालक्षेत्रों (Time Zones) में बंटा है –		
(i) **E.S.T.** (Eastern St. Time) इस काल-क्षेत्र में N.W. Territories और Ontario का पू. भाग पड़ता है।	75 00 प.	+ 10 30

देश/प्रदेश/कालक्षेत्र	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन (रेखांश) अं. क.	भा. स्टैं. टा. का क्षेत्रीय स्टैं. टा. से अन्तर घं. मि.
(ii) **C.S.T.** (Central St. Time) इसमें N.W. Territories का मध्यभाग और Ontario का प. भाग पड़ता है।	90 00 प.	+ 11 30
(iii) **M.S.T.** (Mountain St. Time) इसमें N.W. Territories का कुछ प. भाग तथा Alberta आदि प्रान्त पड़ते हैं।	105 00 प.	+12 30
(iv) **P.S.T.** (Pacific St. Time) इस कालक्षेत्र में N.W. Territories का अन्तिम प. भाग तथा B.Columbia पड़ता है।	120 00 प.	+ 13 30
*Chile	60 00 प.	+ 09 30
China	120 00 पू.	– 02 30
Colombia	75 00 प.	+ 10 30
Congo	15 00 पू.	+ 04 30
*Cuba	75 00 प.	+ 10 30
Ceylon	देखें ——	Sri Lanka
Cyprus	30 00 पू.	+ 03 30
*Denmark	15 00 पू.	+ 04 30
Ecuador	75 00 प.	+ 10 30
*Egypt	30 00 पू.	+ 03 30
*England(U.K.)	00 00	+ 05 30
Ethiopia	45 00 पू.	+ 02 30
*Falkland Islands	60 00 प.	+ 09 30
Fiji	180 00 पू.	– 06 30
*Finland	30 00 पू.	+ 03 30
*France	15 00 पू.	+ 04 30
Gambia	00 00	+ 05 30
*Germany	15 00 पू.	+ 04 30
Ghana	00 00	+ 05 30
*Greece	30 00 पू.	+ 03 30

देश/प्रदेश/कालक्षेत्र	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन (रेखांश) अं. क.	भा. स्टैं. टा. का क्षेत्रीय स्टैं. टा. से अन्तर घं. मि.
*Guatemala	90 00 प.	+ 11 30
Honduras	90 00 प.	+ 11 30
Hong Kong	120 00 पू.	– 02 30
*Iceland	00 00	+ 05 30
India	82 30 पू.	00 00
INDONESIA, REPUBLIC OF:- यह देश छोटे–बड़े 13000 से भी अधिक द्वीपों से बना है। पहिले यह 30–30 मिनटों के अन्तर वाले छः कालक्षेत्रों में विभाजित था। अब इसे एक–एक घण्टा के अन्तर वाले इन तीन कालक्षेत्रों में विभाजित किया गया है–		
(i) Bali, Bangka, Enggano, Java, Madura एवम् Sumatra द्वीप;........................	105 00 पू.	– 1 30
(ii) Alore, Borneo, Celebes (Sulawesi), Flores, Kabaena, Lombok, Sangihe, Talaud, Sumba, Sumbawa (Soembawa) और Timor (Timur) (द्वीपसमूह)	120 00 पू.	– 2 30
(iii) Aru, Babar, Buru, Cerem (Seram), Irian Jaya (West Irian), Larat, Maluku(Moluccas = Molukken), Schouten, Tanah Merah और Tanimbar (द्वीपसमूह)...	135 00 पू.	– 3 30

स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन सारणी (विश्व के लगभग सभी मुख्य देशों/कालक्षेत्रों की स्टैंडर्ड टाईम मेरिडियन्स)

देश/प्रदेश/कालक्षेत्र	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन (रेखांश) अं. क.	भा. स्टैं. टा. का क्षेत्रीय स्टैं. टा. से अन्तर घं. मि.
*Iran	52 30 पू.	+ 02 00
*Iraq	45 00 पू.	+ 02 30
*Irish Republic	00 00	+ 05 30
*Israel	30 00 पू.	+ 03 30
*Italy	15 00 पू.	+ 04 30
*Jamaica	75 00 प.	+ 10 30
Japan	135 00 पू.	− 03 30
*Jordan	30 00 पू.	+ 03 30
***KAZAKHSTAN** – यह देश, जो पहिले Soviet Union का भाग था, इन तीन कालक्षेत्रों में बंटा है:–		
(i) Kazakhstan (West)	60 00 पू.	+ 01 30
(ii) Kazakhstan (Central)..	75 00 पू.	+ 0 30
(iii) Kazakhstan (East) ..	90 00 पू.	− 0 30
Kumpuchia	105 00 पू.	− 01 30
Kenya	45 00 पू.	+ 02 30
Korea	135 00 पू.	− 03 30
Kuwait	45 00 पू.	+ 02 30
Laos	105 00 पू.	− 01 30
* Lebanon	30 00 पू.	+ 03 30
Libya	30 00 पू.	+ 03 30
Macao	120 00 पू.	− 02 30
Madagascar	45 00 पू.	+ 02 30
Malaysia	120 00 पू.	− 02 30
Maldive Islands	75 00 पू.	+ 00 30
Maurtius	60 00 पू.	+ 01 30

देश/प्रदेश/कालक्षेत्र	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन (रेखांश) अं. क.	भा. स्टैं. टा. का क्षेत्रीय स्टैं. टा. से अन्तर घं. मि.
***KYRGHIZSTAN (KIRGIZSTAN= KIRGHIZIA= KIRGIZIA)** (यह पहिले Soviet Union का भाग था)......	0 00 पू.	+ 0 30
*MEXICO यह देष इन 3 कालक्षेत्रों में बंटा है:–		
(i) **E.S.T.** (Eastern St. Time) (इस कालक्षेत्र में Compeche, Chiapas आदि प्रान्त आते हैं)	90 00 प.	+ 11 30
(ii) **C.S.T.** (Central St. Time) (इस कालक्षेत्र में Baja California, Sur, Nayarit आदि पड़ते हैं।)	105 00 प.	+ 12 30
(iii) **W.S.T.** (Western St. Time) (इस कालक्षेत्र में Baja California- Norte आते हैं)	120 00 प.	+ 13 30
Morocco	00 00	+ 05 30
Mozambique	30 00 पू.	+ 03 30
Myanmar (Burma)	97 30 पू.	− 01 00
Nepal Netherlands	86 15 पू.	− 00 15
	15 00 पू.	+ 04 30
*New Zealand	180 00 पू.	− 06 30
Nicaragua	90 00 प.	+ 11 30
Nigeria	15 00 पू.	+ 04 30
*Northern Ireland (U.K.)	00 00	+ 05 30
*Norway	15 00 पू.	+ 04 30
Oman (Muscat and Oman)	60 00 पू.	+ 01 30
*Pakistan	75 00 पू.	+ 00 30
Panama	75 00 प.	+ 10 30

देश/प्रदेश/कालक्षेत्र	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन (रेखांश) अं. क.	भा. स्टैं. टा. का क्षेत्रीय स्टैं. टा. से अन्तर घं. मि.
*Paraguay	60 00 प.	+ 09 30
Peru	75 00 प.	+ 10 30
Philippines	120 00 पू.	− 02 30
*Poland	15 00 पू.	+ 04 30
*Portugal	00 00	+ 05 30
Qatar	45 00 पू.	+ 02 30
Rwanda	30 00 पू.	+ 03 30
Romania	30 00 पू.	+ 03 30
*RUSSIA यह महादेश, जो Soviet Union का मूल घटक राष्ट्र रहा है, यह इन ग्यारह कालक्षेत्रों में बँटा है–		
(i)कालक्षेत्र Kaliningrad area	30 00 पू.	+ 3 30
(ii) कालक्षेत्र Novaja Zemla, European RSFSR (पश्चिमी भाग)....	45 00 पू.	+ 2 30
(iii) कालक्षेत्र European RSFSR (मध्य भाग)...............	60 00 पू.	+ 1 30
(iv) कालक्षेत्र European RSFSR (पू. भाग), Asian RSFSR (प. भाग)	75 00 पू.	+ 0 30
(v) कालक्षेत्र Asian RSFSR ...	90 00 पू.	− 0 30
(vi) कालक्षेत्र Asian RSFSR, Severnaja Zemla	105 00 पू.	− 1 30
(vii) कालक्षेत्र Asian RSFSR ...	120 00 पू.	− 2 30
(viii) कालक्षेत्र Asian RSFSR...	135 00 पू.	− 3 30
(ix) कालक्षेत्र Asian RSFSR, Novosibirskije Ostrova	150 00 पू.	− 4 30
(x) कालक्षेत्र Asian RSFSR (पू. भाग) , Ostrov Sachalin, Kuril Islands	165 00 पू.	− 5 30
(xi) कालक्षेत्र Asian RSFSR (अन्तिम पूर्वी छोर), Komandorskije Ostrova...	180 00 पू.	− 6 30

स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन सारणी (विश्व के लगभग सभी मुख्य देशों/कालक्षेत्रों की स्टैंडर्ड टाईम मेरिडियन्स)

देश/प्रदेश/कालक्षेत्र	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन (रेखांश)		भा. स्टैं. टा. का क्षेत्रीय स्टैं. टा. से अन्तर	
	अं.	क.	घं.	मि.
Saudi Arabia	45	00 पू.	+ 02	30
*Scotland (U.K.)	00	00	+ 05	30
Singapore	120	00 पू.	– 02	30
South Africa	30	00 पू.	+ 03	30
*Spain	15	00 पू.	+ 04	30
Sri Lanka	82	30 पू.	00	00
Sudan	30	00 पू.	+ 03	30
Suriname	45	00 प.	+ 08	30
*Sweden	15	00 पू.	+ 04	30
*Switzerland	15	00 पू.	+ 04	30
*Syria	30	00 पू.	+ 03	30
TAJIKISTAN (TADZHIKISTAN) (यह पहिले Soviet Union का भाग था)......	75	00 पू.	+ 00	30
Taiwan	120	00 पू.	– 02	30
Tanzania	45	00 पू.	+ 02	30
Thailand	105	00 पू.	– 01	30
Trinidad andTobago	60	00 प.	+ 09	30
Tunisia	15	00 पू.	+ 04	30
*Turkey	30	00 पू.	+ 03	30

देश/प्रदेश/कालक्षेत्र	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन (रेखांश)		भा. स्टैं. टा. का क्षेत्रीय स्टैं. टा. से अन्तर	
	अं.	क.	घं.	मि.
U.A.E. (UNITED ARAB EMIRATES) .[Abu Dhabi, Ajman, Dubai, Fujairah, Ras-al-Khaimah, .Sharjah, और Umma-al-Quiwain)	60	00 पू.	+ 01	30
Uganda	45	00 पू.	+ 02	30
*U.K.	00	00	+ 05	30
Uruguay	45	00 प.	+ 08	30
UKRAIN यह पहिले Soviet Union का भाग था। यह इन दो कालक्षेत्रों में बँटा है–				
(i) इस कालक्षेत्र में Ukraine का प्रमुख भाग [Black और Azov Sea से घिरे दक्षिणी भाग (द्वीप) को छोड़ कर शेष पूरा भाग आता है।......................	30	00 पू.	+ 03	30
(ii) इसमें Black और Azov Sea से घिरा इसका केवल दक्षिणी भाग(द्वीप) आता है।....	45	00 पू.	+ 02	30
UZBEKISTAN.................. (यह पहले Soviet Union का भाग था)	75	00 पू.	+ 00	30

देश/प्रदेश/कालक्षेत्र	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन (रेखांश)		भा. स्टैं. टा. का क्षेत्रीय स्टैं. टा. से अन्तर	
	अं.	क.	घं.	मि.
*U.S.A. यह देश इन 4 कालक्षेत्रों (Time Zones) में बंटा है :–				
(i) **E.S.T.** (Eastern St. Time) (इस कालक्षेत्र में Delaware, Florida, Ohio आदि States पड़ती हैं।)	75	00 प.	+ 10	30
(ii) **C.S.T.** (Centrar St. Time) (इस कालक्षेत्र में Alabama, Illinois आदि States पड़ती हैं।)	90	00 प.	+ 11	30
(iii) **M.S.T.** (Mountain St. Time) (इस कालक्षेत्र में Arizona, Colorado आदि States पड़ती हैं।)	105	00 प.	+ 12	30
(iv) **P.S.T.** (Pacific St. Time) (इस कालक्षेत्र में California, Nevada आदि States पड़ती हैं।)	120	00 प.	+ 13	30
Vatican State	15	00 पू.	+ 04	30
Venezuela	60	00 प.	+ 09	30
Vietnam	105	00 पू.	– 01	30
*Wales(U.K.)	00	00	+ 05	30
*Yugoslavia	15	00 पू.	+ 04	30
Zamibia	30	00 पू.	+ 03	30
Zaire	30	00 पू.	+ 03	30
Zimbabwe	30	00 पू.	+ 03	30

*** इन देशों में ग्रीष्मकालीन समय (Summer Time) प्रचलित है। Summer Time के बारे में विस्तृत जानकारी के लिए हमारी पुस्तक " विश्वलग्न सारणी " देखें।**

⊗ इसे "विदेश में उत्पन्न जातक का जन्मपत्र कैसे बनाएं" ? शीर्षक के अन्तर्गत विवरण में" अभीष्ट स्टैं. टा. अन्तर" भी लिखा गया है।

धन (+) चिह्न वाले 'अभीष्ट स्टैं. टा. अन्तर ' का अर्थ है, कि भा. स्टैं. टा. अभीष्ट स्थानीय (देश/कालक्षेत्रीय) स्टैं. टा. से आगे है। इसी प्रकार ऋण (–) चिह्न वाला "अभीष्ट स्टैं. टा. अन्तर" बतलाता है, कि भा. स्टैं. टा. अभीष्ट स्थानीय (देश/कालक्षेत्रीय) स्टैं. टा. से पीछे है।

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

वैशाख

माह	अंग्रेज़ी तारीख	वैशाख प्रविष्टे	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.
अप्रैल	१३	१	७ ३६	९ ३०	११ ४४	१४ ०७	१६ २७	१८ ४४	२१ ०६	२३ २६	१ ३१	३ १२	४ ३७	५ ५९
	१४	२	७ ३२	९ २६	११ ४०	१४ ०३	१६ २३	१८ ४०	२१ ०२	२३ २२	१ २७	३ ०८	४ ३३	५ ५५
	१५	३	७ २८	९ २२	११ ३७	१३ ५९	१६ १९	१८ ३६	२० ५८	२३ १८	१ २३	३ ०४	४ २९	५ ५१
	१६	४	७ २४	९ १८	११ ३३	१३ ५५	१६ १५	१८ ३३	२० ५४	२३ १४	१ १९	३ ००	४ २५	५ ४७
	१७	५	७ २०	९ १४	११ २९	१३ ५१	१६ ११	१८ २९	२० ५०	२३ १०	१ १५	२ ५६	४ २१	५ ४३
	१८	६	७ १६	९ ११	११ २५	१३ ४७	१६ ०७	१८ २५	२० ४६	२३ ०६	१ ११	२ ५२	४ १७	५ ३९
	१९	७	७ १२	९ ०७	११ २१	१३ ४३	१६ ०३	१८ २१	२० ४२	२३ ०२	१ ०७	२ ४८	४ १३	५ ३५
	२०	८	७ ०८	९ ०३	११ १७	१३ ३९	१५ ५९	१८ १७	२० ३८	२२ ५८	१ ०३	२ ४४	४ ०९	५ ३१
	२१	९	७ ०४	८ ५९	११ १३	१३ ३५	१५ ५५	१८ १३	२० ३४	२२ ५४	० ५९	२ ४०	४ ०५	५ २८
	२२	१०	७ ००	८ ५५	११ ०९	१३ ३१	१५ ५१	१८ ०९	२० ३०	२२ ५१	० ५५	२ ३६	४ ०१	५ २४
	२३	११	६ ५६	८ ५१	११ ०५	१३ २७	१५ ४७	१८ ०५	२० २७	२२ ४७	० ५१	२ ३२	३ ५७	५ २०
	२४	१२	६ ५२	८ ४७	११ ०१	१३ २३	१५ ४३	१८ ०१	२० २३	२२ ४३	० ४७	२ २८	३ ५३	५ १६
	२५	१३	६ ४८	८ ४३	१० ५७	१३ १९	१५ ३९	१७ ५७	२० १९	२२ ३९	० ४३	२ २४	३ ४९	५ १२
	२६	१४	६ ४४	८ ३९	१० ५३	१३ १६	१५ ३६	१७ ५३	२० १५	२२ ३५	० ३९	२ २०	३ ४५	५ ०८
	२७	१५	६ ४१	८ ३५	१० ४९	१३ १२	१५ ३२	१७ ४९	२० ११	२२ ३१	० ३५	२ १६	३ ४२	५ ०४
	२८	१६	६ ३७	८ ३१	१० ४५	१३ ०८	१५ २८	१७ ४५	२० ०७	२२ २७	० ३२	२ १३	३ ३८	५ ००
	२९	१७	६ ३३	८ २७	१० ४२	१३ ०४	१५ २४	१७ ४१	२० ०३	२२ २३	० २८	२ ०९	३ ३४	४ ५६
	३०	१८	६ २९	८ २३	१० ३८	१३ ००	१५ २०	१७ ३७	१९ ५९	२२ १९	० २४	२ ०५	३ ३०	४ ५२
मई	१	१९	६ २५	८ १९	१० ३४	१२ ५६	१५ १६	१७ ३४	१९ ५५	२२ १५	० २०	२ ०१	३ २६	४ ४८
	२	२०	६ २१	८ १६	१० ३०	१२ ५२	१५ १२	१७ ३०	१९ ५१	२२ ११	० १६	१ ५७	३ २२	४ ४४
	३	२१	६ १७	८ १२	१० २६	१२ ४८	१५ ०८	१७ २६	१९ ४७	२२ ०७	० १२	१ ५३	३ १८	४ ४०
	४	२२	६ १३	८ ०८	१० २२	१२ ४४	१५ ०४	१७ २२	१९ ४३	२२ ०३	० ०८	१ ४९	३ १४	४ ३६
	५	२३	६ ०९	८ ०४	१० १८	१२ ४०	१५ ००	१७ १८	१९ ३९	२१ ५९	० ०४	१ ४५	३ १०	४ ३२
	६	२४	६ ०५	८ ००	१० १४	१२ ३६	१४ ५६	१७ १४	१९ ३५	२१ ५६	० ००	१ ४१	३ ०६	४ २९
	७	२५	६ ०१	७ ५६	१० १०	१२ ३२	१४ ५२	१७ १०	१९ ३२	२१ ५२	२३ ५६	१ ३७	३ ०२	४ २५
	८	२६	५ ५७	७ ५२	१० ०६	१२ २८	१४ ४८	१७ ०६	१९ २८	२१ ४८	२३ ५२	१ ३३	२ ५८	४ २१
	९	२७	५ ५३	७ ४८	१० ०२	१२ २४	१४ ४४	१७ ०२	१९ २४	२१ ४४	२३ ४८	१ २९	२ ५४	४ १७
	१०	२८	५ ४९	७ ४४	९ ५८	१२ २०	१४ ४०	१६ ५८	१९ २०	२१ ४०	२३ ४४	१ २५	२ ५०	४ १३
	११	२९	५ ४६	७ ४०	९ ५४	१२ १७	१४ ३६	१६ ५४	१९ १६	२१ ३६	२३ ४०	१ २१	२ ४६	४ ०९
	१२	३०	५ ४२	७ ३६	९ ५०	१२ १३	१४ ३३	१६ ५०	१९ १२	२१ ३२	२३ ३७	१ १८	२ ४३	४ ०५
	१३	३१	५ ३८	७ ३२	९ ४६	१२ ०९	१४ २९	१६ ४६	१९ ०८	२१ २८	२३ ३३	१ १४	२ ३९	४ ०१
	१४	ज्ये.१	५ ३४											

ज्येष्ठ

माह	अंग्रेज़ी तारीख	ज्येष्ठ प्रविष्टे	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.
मई	१४	१	७ २८	९ ४३	१२ ०५	१४ २५	१६ ४२	१९ ०४	२१ २४	२३ २९	१ १०	२ ३५	३ ५७	५ ३०
	१५	२	७ २४	९ ३९	१२ ०१	१४ २१	१६ ३९	१९ ००	२१ २०	२३ २५	१ ०६	२ ३१	३ ५३	५ २६
	१६	३	७ २०	९ ३५	११ ५७	१४ १७	१६ ३५	१८ ५६	२१ १६	२३ २१	१ ०२	२ २७	३ ४९	५ २२
	१७	४	७ १७	९ ३१	११ ५३	१४ १३	१६ ३१	१८ ५२	२१ १२	२३ १७	० ५८	२ २३	३ ४५	५ १८
	१८	५	७ १३	९ २७	११ ४९	१४ ०९	१६ २७	१८ ४८	२१ ०८	२३ १३	० ५४	२ १९	३ ४१	५ १४
	१९	६	७ ०९	९ २३	११ ४५	१४ ०५	१६ २३	१८ ४४	२१ ०४	२३ ०९	० ५०	२ १५	३ ३७	५ १०
	२०	७	७ ०५	९ १९	११ ४१	१४ ०१	१६ १९	१८ ४०	२१ ०१	२३ ०५	० ४६	२ ११	३ ३४	५ ०६
	२१	८	७ ०१	९ १५	११ ३७	१३ ५७	१६ १५	१८ ३६	२० ५७	२३ ०१	० ४२	२ ०७	३ ३०	५ ०२
	२२	९	६ ५७	९ ११	११ ३३	१३ ५३	१६ ११	१८ ३३	२० ५३	२२ ५७	० ३८	२ ०३	३ २६	४ ५८
	२३	१०	६ ५३	९ ०७	११ २९	१३ ४९	१६ ०७	१८ २९	२० ४९	२२ ५३	० ३४	१ ५९	३ २२	४ ५४
	२४	११	६ ४९	९ ०३	११ २५	१३ ४५	१६ ०३	१८ २५	२० ४५	२२ ४९	० ३०	१ ५५	३ १८	४ ५०
	२५	१२	६ ४५	८ ५९	११ २२	१३ ४१	१५ ५९	१८ २१	२० ४१	२२ ४५	० २६	१ ५१	३ १४	४ ४७
	२६	१३	६ ४१	८ ५५	११ १८	१३ ३८	१५ ५५	१८ १७	२० ३७	२२ ४२	० २२	१ ४८	३ १०	४ ४३
	२७	१४	६ ३७	८ ५१	११ १४	१३ ३४	१५ ५१	१८ १३	२० ३३	२२ ३८	० १९	१ ४४	३ ०६	४ ३९
	२८	१५	६ ३३	५ ४७	११ १०	१३ ३०	१५ ४७	१८ ०९	२० २९	२२ ३४	० १५	१ ४०	३ ०२	४ ३५
	२९	१६	६ २९	८ ४४	११ ०६	१३ २६	१५ ४३	१८ ०५	२० २५	२२ ३०	० ११	१ ३६	२ ५८	४ ३१
	३०	१७	६ २५	८ ४०	११ ०२	१३ २२	१५ ४०	१८ ०१	२० २१	२२ २६	० ०७	१ ३२	२ ५४	४ २७
	३१	१८	६ २२	८ ३६	१० ५८	१३ १८	१५ ३६	१७ ५७	२० १७	२२ २२	० ०३	१ २८	२ ५०	४ २३
जून	१	१९	६ १८	८ ३२	१० ५४	१३ १४	१५ ३२	१७ ४३	२० १३	२२ १८	२३ ५९	१ २४	२ ४६	४ १९
	२	२०	६ १४	८ २८	१० ५०	१३ १०	१५ २८	१७ ४९	२० ०९	२२ १४	२३ ५५	१ २०	२ ४२	४ १५
	३	२१	६ १०	८ २४	१० ४६	१३ ०६	१५ २४	१७ ४५	२० ०५	२२ १०	२३ ५१	१ १६	२ ३८	४ ११
	४	२२	६ ०६	८ २०	१० ४२	१३ ०२	१५ २०	१७ ४१	२० ०२	२२ ०६	२३ ४७	१ १२	२ ३५	४ ०७
	५	२३	६ ०२	८ १६	१० ३८	१२ ५८	१५ १६	१७ ३७	१९ ५८	२२ ०२	२३ ४३	१ ०८	२ ३१	४ ०३
	६	२४	५ ५८	८ १२	१० ३४	१२ ५४	१५ १२	१७ ३४	१९ ५४	२१ ५८	२३ ३९	१ ०४	२ २७	३ ५९
	७	२५	५ ५४	८ ०८	१० ३०	१२ ५०	१५ ०८	१७ ३०	१९ ५०	२१ ५४	२३ ३५	१ ००	२ २३	३ ५५
	८	२६	५ ५०	८ ०४	१० २६	१२ ४६	१५ ०४	१७ २६	१९ ४६	२१ ५०	२३ ३१	० ५६	२ १९	३ ५१
	९	२७	५ ४६	८ ००	१० २३	१२ ४३	१५ ००	१७ २२	१९ ४२	२१ ४६	२३ २७	० ५२	२ १५	३ ४८
	१०	२८	५ ४२	७ ५६	१० १९	१२ ३९	१४ ५६	१७ १८	१९ ३८	२१ ४३	२३ २३	० ४९	२ ११	३ ४४
	११	२९	५ ३८	७ ५२	१० १५	१२ ३५	१४ ५२	१७ १४	१९ ३४	२१ ३९	२३ २०	० ४५	२ ०७	३ ४०
	१२	३०	५ ३४	७ ४९	१० ११	१२ ३१	१४ ४८	१७ १०	१९ ३०	२१ ३५	२३ १६	० ४१	२ ०३	३ ३६
	१३	३१	५ ३०	७ ४५	१० ०७	१२ २७	१४ ४५	१७ ०६	१९ २६	२१ ३१	२३ १२	० ३७	१ ५९	३ ३२
	१४	आ.१	५ २६											

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

आषाढ़

मास	अंग्रेज़ी तारीख	आषाढ़ प्रविष्टे	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
जून	१४	१	७ ४१	१० ०३	१२ २३	१४ ४१	१७ ०२	१९ २२	२१ २७	२३ ०८	० ३३	१ ५५	३ २८	५ २३
	१५	२	७ ३७	९ ५९	१२ १९	१४ ३७	१६ ५८	१९ १८	२१ २३	२३ ०४	० २९	१ ५१	३ २४	५ १९
	१६	३	७ ३३	९ ५५	१२ १५	१४ ३३	१६ ५४	१९ १४	२१ १९	२३ ००	० २५	१ ४७	३ २०	५ १५
	१७	४	७ २९	९ ५१	१२ ११	१४ २९	१६ ५०	१९ १०	२१ १५	२२ ५६	० २१	१ ४३	३ १६	५ ११
	१८	५	७ २५	९ ४७	१२ ०७	१४ २५	१६ ४६	१९ ०६	२१ ११	२२ ५२	० १७	१ ३९	३ १२	५ ०७
	१९	६	७ २१	९ ४३	१२ ०३	१४ २१	१६ ४२	१९ ०३	२१ ०७	२२ ४८	० १३	१ ३६	३ ०८	५ ०३
	२०	७	७ १७	९ ३९	११ ५९	१४ १७	१६ ३९	१८ ५९	२१ ०३	२२ ४४	० ०९	१ ३२	३ ०४	४ ५९
	२१	८	७ १३	९ ३५	११ ५५	१४ १३	१६ ३५	१८ ५५	२० ५९	२२ ४०	० ०५	१ २८	३ ००	४ ५५
	२२	९	७ ०९	९ ३१	११ ५१	१४ ०९	१६ ३१	१८ ५१	२० ५५	२२ ३६	० ०१	१ २४	२ ५६	४ ५१
	२३	१०	७ ०५	९ २७	११ ४७	१४ ०५	१६ २७	१८ ४७	२० ५१	२२ ३२	२३ ५७	१ २०	२ ५३	४ ४७
	२४	११	७ ०१	९ २४	११ ४४	१४ ०१	१६ २३	१८ ४३	२० ४८	२२ २८	२३ ५४	१ १६	२ ४९	४ ४३
	२५	१२	६ ५७	९ २०	११ ४०	१३ ५७	१६ १९	१८ ३९	२० ४४	२२ २५	२३ ५०	१ १२	२ ४५	४ ३९
	२६	१३	६ ५३	९ १६	११ ३६	१३ ५३	१६ १५	१८ ३५	२० ४०	२२ २१	२३ ४६	१ ०८	२ ४१	४ ३५
	२७	१४	६ ५०	९ १२	११ ३२	१३ ४९	१६ ११	१८ ३१	२० ३६	२२ १७	२३ ४२	१ ०४	२ ३७	४ ३१
	२८	१५	६ ४६	९ ०८	११ २८	१३ ४६	१६ ०७	१८ २७	२० ३२	२२ १३	२३ ३८	१ ००	२ ३३	४ २७
	२९	१६	६ ४२	९ ०४	११ २४	१३ ४२	१६ ०३	१८ २३	२० २८	२२ ०९	२३ ३४	० ५६	२ २९	४ २४
	३०	१७	६ ३८	९ ००	११ २०	१३ ३८	१५ ५९	१८ १९	२० २४	२२ ०५	२३ ३०	० ५२	२ २५	४ २०
जुलाई	१	१८	६ ३४	८ ५६	११ १६	१३ ३४	१५ ५५	१८ १५	२० २०	२२ ०१	२३ २६	० ४८	२ २१	४ १६
	२	१९	६ ३०	८ ५२	११ १२	१३ ३०	१५ ५१	१८ ११	२० १६	२१ ५७	२३ २२	० ४४	२ १७	४ १२
	३	२०	६ २६	८ ४८	११ ०८	१३ २६	१५ ४७	१८ ०८	२० १२	२१ ५३	२३ १८	० ४१	२ १३	४ ०८
	४	२१	६ २२	८ ४४	११ ०४	१३ २२	१५ ४३	१८ ०४	२० ०८	२१ ४९	२३ १४	० ३७	२ ०९	४ ०४
	५	२२	६ १८	८ ४०	११ ००	१३ १८	१५ ४०	१८ ००	२० ०४	२१ ४५	२३ १०	० ३३	२ ०५	४ ००
	६	२३	६ १४	८ ३६	१० ५६	१३ १४	१५ ३६	१७ ५६	२० ००	२१ ४१	२३ ०६	० २९	२ ०१	३ ५६
	७	२४	६ १०	८ ३२	१० ५२	१३ १०	१५ ३२	१७ ५२	१९ ५६	२१ ३७	२३ ०२	० २५	१ ५७	३ ५२
	८	२५	६ ०६	८ २९	१० ४९	१३ ०६	१५ २८	१७ ४८	१९ ५२	२१ ३३	२२ ५८	० २१	१ ५४	३ ४८
	९	२६	६ ०२	८ २५	१० ४५	१३ ०२	१५ २४	१७ ४४	१९ ४९	२१ २९	२२ ५५	० १७	१ ५०	३ ४४
	१०	२७	५ ५८	८ २१	१० ४१	१२ ५८	१५ २०	१७ ४०	१९ ४५	२१ २६	२२ ५१	० १३	१ ४६	३ ४०
	११	२८	५ ५५	८ १७	१० ३७	१२ ५४	१५ १६	१७ ३६	१९ ४१	२१ २२	२२ ४७	० ०९	१ ४२	३ ३६
	१२	२९	५ ५१	८ १३	१० ३३	१२ ५०	१५ १२	१७ ३२	१९ ३७	२१ १८	२२ ४३	० ०५	१ ३८	३ ३२
	१३	३०	५ ४७	८ ०९	१० २९	१२ ४७	१५ ०८	१७ २८	१९ ३३	२१ १४	२२ ३९	० ०१	१ ३४	३ २९
	१४	३१	५ ४३	८ ०५	१० २५	१२ ४३	१५ ०४	१७ २४	१९ २९	२१ १०	२२ ३५	२३ ५७	१ ३०	३ २५
	१५	३२	५ ३९	८ ०१	१० २१	१२ ३९	१५ ००	१७ २०	१९ २५	२१ ०६	२२ ३१	२३ ५३	१ २६	३ २१
	१६	श्रा१	५ ३५											

श्रावण

मास	अंग्रेज़ी तारीख	श्रावण प्रविष्टे	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
जुलाई	१६	१	७ ५७	१० १७	१२ ३५	१४ ५६	१७ १६	१९ २१	२१ ०२	२२ २७	२३ ४९	१ २२	३ १७	५ ३१
	१७	२	७ ५३	१० १३	१२ ३१	१४ ५२	१७ १२	१९ १७	२० ५८	२२ २३	२३ ४५	१ १८	३ १३	५ २७
	१८	३	७ ४९	१० ०९	१२ २७	१४ ४८	१७ ०९	१९ १३	२० ५४	२२ १९	२३ ४१	१ १४	३ ०९	५ २३
	१९	४	७ ४५	१० ०५	१२ २३	१४ ४५	१७ ०५	१९ ०९	२० ५०	२२ १५	२३ ३८	१ १०	३ ०५	५ १९
	२०	५	७ ४१	१० ०१	१२ १९	१४ ४१	१७ ०१	१९ ०५	२० ४६	२२ ११	२३ ३४	१ ०६	३ ०१	५ १५
	२१	६	७ ३७	९ ५७	१२ १५	१४ ३७	१६ ५७	१९ ०१	२० ४२	२२ ०७	२३ ३०	१ ०२	२ ५७	५ ११
	२२	७	७ ३३	९ ५३	१२ ११	१४ ३३	१६ ५३	१८ ५७	२० ३८	२२ ०३	२३ २६	० ५८	२ ५३	५ ०७
	२३	८	७ ३०	९ ५०	१२ ०७	१४ २९	१६ ४९	१८ ५३	२० ३४	२१ ५९	२३ २२	० ५५	२ ४९	५ ०३
	२४	९	७ २६	९ ४६	१२ ०३	१४ २५	१६ ४५	१८ ५०	२० ३०	२१ ५६	२३ १८	० ५१	२ ४५	४ ५९
	२५	१०	७ २२	९ ४२	११ ५९	१४ २१	१६ ४१	१८ ४६	२० २७	२१ ५२	२३ १४	० ४७	२ ४१	४ ५६
	२६	११	७ १८	९ ३८	११ ५५	१४ १७	१६ ३७	१८ ४२	२० २३	२१ ४८	२३ १०	० ४३	२ ३७	४ ५२
	२७	१२	७ १४	९ ३४	११ ५२	१४ १३	१६ ३३	१८ ३८	२० १९	२१ ४४	२३ ०६	० ३९	२ ३३	४ ४८
	२८	१३	७ १०	९ ३०	११ ४८	१४ ०९	१६ २९	१८ ३४	२० १५	२१ ४०	२३ ०२	० ३५	२ ३०	४ ४४
	२९	१४	७ ०६	९ २६	११ ४४	१४ ०५	१६ २५	१८ ३०	२० ११	२१ ३६	२२ ५८	० ३१	२ २६	४ ४०
	३०	१५	७ ०२	९ २२	११ ४०	१४ ०१	१६ २१	१८ २६	२० ०७	२१ ३२	२२ ५४	० २७	२ २२	४ ३६
	३१	१६	६ ५८	९ १८	११ ३६	१३ ५७	१६ १७	१८ २२	२० ०३	२१ २८	२२ ५०	० २३	२ १८	४ ३१
अगस्त	१	१७	६ ५४	९ १४	११ ३२	१३ ५३	१६ १३	१८ १८	१९ ५९	२१ २४	२२ ४७	० १९	२ १४	४ २८
	२	१८	६ ५०	९ १०	११ २८	१३ ४९	१६ १०	१८ १४	१९ ५५	२१ २०	२२ ४३	० १५	२ १०	४ २४
	३	१९	६ ४६	९ ०६	११ २४	१३ ४६	१६ ०६	१८ १०	१९ ५१	२१ १६	२२ ३९	० ११	२ ०६	४ २०
	४	२०	६ ४२	९ ०२	११ २०	१३ ४२	१६ ०२	१८ ०६	१९ ४७	२१ १२	२२ ३५	० ०७	२ ०२	४ १६
	५	२१	६ ३८	८ ५८	११ १६	१३ ३८	१५ ५८	१८ ०२	१९ ४३	२१ ०८	२२ ३१	० ०३	१ ५८	४ १२
	६	२२	६ ३४	८ ५४	११ १२	१३ ३४	१५ ५४	१७ ५८	१९ ३९	२१ ०४	२२ २७	० ००	१ ५४	४ ०८
	७	२३	६ ३१	८ ५१	११ ०८	१३ ३०	१५ ५०	१७ ५५	१९ ३५	२१ ०१	२२ २३	२३ ५६	१ ५०	४ ०४
	८	२४	६ २७	८ ४७	११ ०४	१३ २६	१५ ४६	१७ ५१	१९ ३२	२० ५७	२२ १९	२३ ५२	१ ४६	४ ००
	९	२५	६ २३	८ ४३	११ ००	१३ २२	१५ ४२	१७ ४७	१९ २८	२० ५३	२२ १५	२३ ४८	१ ४२	३ ५७
	१०	२६	६ १९	८ ३९	१० ५६	१३ १८	१५ ३८	१७ ४३	१९ २४	२० ४९	२२ ११	२३ ४४	१ ३८	३ ५३
	११	२७	६ १५	८ ३५	१० ५३	१३ १४	१५ ३४	१७ ३९	१९ २०	२० ४५	२२ ०७	२३ ४०	१ ३४	३ ४९
	१२	२८	६ ११	८ ३१	१० ४९	१३ १०	१५ ३०	१७ ३५	१९ १६	२० ४१	२२ ०३	२३ ३६	१ ३१	३ ४५
	१३	२९	६ ०७	८ २७	१० ४५	१३ ०६	१५ २६	१७ ३१	१९ १२	२० ३७	२१ ५९	२३ ३२	१ २७	३ ४१
	१४	३०	६ ०३	८ २३	१० ४१	१३ ०२	१५ २२	१७ २७	१९ ०८	२० ३३	२१ ५५	२३ २८	१ २३	३ ३७
	१५	३१	५ ५९	८ १९	१० ३७	१२ ५८	१५ १८	१७ २३	१९ ०४	२० २९	२१ ५१	२३ २४	१ १९	३ ३३
	१६	भा१	५ ५५											

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

भाद्रपद

अंग्रेज़ी तारीख		भाद्रपद तिथि	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
अगस्त	१६	१	८ १५	१० ३३	१२ ५४	१५ १५	१७ १९	१९ ००	२० २५	२१ ४८	२३ २०	१ १५	३ २९	५ ५१
	१७	२	८ ११	१० २९	१२ ५०	१५ ११	१७ १५	१८ ५६	२० २१	२१ ४४	२३ १६	१ ११	३ २५	५ ४७
	१८	३	८ ०७	१० २५	१२ ४७	१५ ०७	१७ ११	१८ ५२	२० १७	२१ ४०	२३ १२	१ ०७	३ २१	५ ४३
	१९	४	८ ०३	१० २१	१२ ४३	१५ ०३	१७ ०७	१८ ४८	२० १३	२१ ३६	२३ ०८	१ ०३	३ १७	५ ३९
	२०	५	७ ५९	१० १७	१२ ३९	१४ ५९	१७ ०३	१८ ४४	२० ०९	२१ ३२	२३ ०४	० ५९	३ १३	५ ३६
	२१	६	७ ५६	१० १३	१२ ३५	१४ ५५	१६ ५९	१८ ४०	२० ०५	२१ २८	२३ ०१	० ५५	३ ०९	५ ३२
	२२	७	७ ५२	१० ०९	१२ ३१	१४ ५१	१६ ५६	१८ ३६	२० ०२	२१ २४	२२ ५७	० ५१	३ ०५	५ २८
	२३	८	७ ४८	१० ०५	१२ २७	१४ ४७	१६ ५२	१८ ३३	१९ ५८	२१ २०	२२ ५३	० ४७	३ ०२	५ २४
	२४	९	७ ४४	१० ०१	१२ २३	१४ ४३	१६ ४८	१८ २९	१९ ५४	२१ १६	२२ ४९	० ४३	२ ५८	५ २०
	२५	१०	७ ४०	९ ५७	१२ १९	१४ ३९	१६ ४४	१८ २५	१९ ५०	२१ १२	२२ ४५	० ३९	२ ५४	५ १६
	२६	११	७ ३६	९ ५४	१२ १५	१४ ३५	१६ ४०	१८ २१	१९ ४६	२१ ०८	२२ ४१	० ३६	२ ५०	५ १२
	२७	१२	७ ३२	९ ५०	१२ ११	१४ ३१	१६ ३६	१८ १७	१९ ४२	२१ ०४	२२ ३७	० ३२	२ ४६	५ ०८
	२८	१३	७ २८	९ ४६	१२ ०७	१४ २७	१६ ३२	१८ १३	१९ ३८	२१ ००	२२ ३३	० २८	२ ४२	५ ०४
	२९	१४	७ २४	९ ४२	१२ ०३	१४ २३	१६ २८	१८ ०९	१९ ३४	२० ५६	२२ २९	० २४	२ ३८	५ ००
	३०	१५	७ २०	९ ३८	११ ५९	१४ १९	१६ २४	१८ ०५	१९ ३०	२० ५२	२२ २५	० २०	२ ३४	४ ५६
	३१	१६	७ १६	९ ३४	११ ५५	१४ १६	१६ २०	१८ ०१	१९ २६	२० ४९	२२ २१	० १६	२ ३०	४ ५२
सितम्बर	१	१७	७ १२	९ ३०	११ ५२	१४ १२	१६ १६	१७ ५७	१९ २२	२० ४५	२२ १७	० १२	२ २६	४ ४८
	२	१८	७ ०८	९ २६	११ ४८	१४ ०८	१६ १२	१७ ५३	१९ १८	२० ४१	२२ १३	० ०८	२ २२	४ ४४
	३	१९	७ ०४	९ २२	११ ४४	१४ ०४	१६ ०८	१७ ४९	१९ १४	२० ३७	२२ ०९	० ०४	२ १८	४ ४०
	४	२०	७ ००	९ १८	११ ४०	१४ ००	१६ ०४	१७ ४५	१९ १०	२० ३३	२२ ०६	० ००	२ १४	४ ३७
	५	२१	६ ५७	९ १४	११ ३६	१३ ५६	१६ ००	१७ ४१	१९ ०६	२० २९	२२ ०२	२३ ५६	२ १०	४ ३३
	६	२२	६ ५३	९ १०	११ ३२	१३ ५२	१५ ५७	१७ ३८	१९ ०३	२० २५	२१ ५८	२३ ५२	२ ०६	४ २९
	७	२३	६ ४९	९ ०६	११ २८	१३ ४८	१५ ५३	१७ ३४	१८ ५९	२० २१	२१ ५४	२३ ४८	२ ०३	४ २५
	८	२४	६ ४५	९ ०२	११ २४	१३ ४४	१५ ४९	१७ ३०	१८ ५५	२० १७	२१ ५०	२३ ४४	१ ५९	४ २१
	९	२५	६ ४१	८ ५९	११ २०	१३ ४०	१५ ४५	१७ २६	१८ ५१	२० १३	२१ ४६	२३ ४०	१ ५५	४ १७
	१०	२६	६ ३७	८ ५५	११ १६	१३ ३६	१५ ४१	१७ २२	१८ ४७	२० ०९	२१ ४२	२३ ३७	१ ५१	४ १३
	११	२७	६ ३३	८ ५१	११ १२	१३ ३२	१५ ३७	१७ १८	१८ ४३	२० ०५	२१ ३८	२३ ३३	१ ४७	४ ०९
	१२	२८	६ २९	८ ४७	११ ०८	१३ २८	१५ ३३	१७ १४	१८ ३९	२० ०१	२१ ३४	२३ २९	१ ४३	४ ०५
	१३	२९	६ २५	८ ४३	११ ०४	१३ २४	१५ २९	१७ १०	१८ ३५	१९ ५७	२१ ३०	२३ २५	१ ३९	४ ०१
	१४	३०	६ २१	८ ३९	११ ००	१३ २१	१५ २५	१७ ०६	१८ ३१	१९ ५४	२१ २६	२३ २१	१ ३५	३ ५७
	१५	३१	६ १७	८ ३५	१० ५६	१३ १७	१५ २१	१७ ०२	१८ २७	१९ ५०	२१ २२	२३ १७	१ ३१	३ ५३
	१६	आ.१	६ १३											

आश्विन

अंग्रेज़ी तारीख		आश्विन तिथि	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
सितम्बर	१६	१	८ ३१	१० ५३	१३ १३	१५ १७	१६ ५८	१८ २३	१९ ४६	२१ १८	२३ १३	१ २७	३ ४९	६ ०९
	१७	२	८ २७	१० ४९	१३ ०९	१५ १३	१६ ५४	१८ १९	१९ ४२	२१ १४	२३ ०९	१ २३	३ ४५	६ ०५
	१८	३	८ २३	१० ४५	१३ ०५	१५ ०९	१६ ५०	१८ १५	१९ ३८	२१ १०	२३ ०५	१ १९	३ ४२	६ ०१
	१९	४	८ १९	१० ४१	१३ ०१	१५ ०५	१६ ४६	१८ ११	१९ ३४	२१ ०७	२३ ०१	१ १५	३ ३८	५ ५८
	२०	५	८ १५	१० ३७	१२ ५७	१५ ०२	१६ ४२	१८ ०८	१९ ३०	२१ ०३	२२ ५७	१ ११	३ ३४	५ ५४
	२१	६	८ ११	१० ३३	१२ ५३	१४ ५८	१६ ३९	१८ ०४	१९ २६	२० ५९	२२ ५३	१ ०७	३ ३०	५ ५०
	२२	७	८ ०७	१० २९	१२ ४९	१४ ५४	१६ ३५	१८ ००	१९ २२	२० ५५	२२ ४९	१ ०४	३ २६	५ ४६
	२३	८	८ ०३	१० २५	१२ ४५	१४ ५०	१६ ३१	१७ ५६	१९ १८	२० ५१	२२ ४५	१ ००	३ २२	५ ४२
	२४	९	८ ००	१० २१	१२ ४१	१४ ४६	१६ २७	१७ ५२	१९ १४	२० ४७	२२ ४१	० ५६	३ १८	५ ३८
	२५	१०	७ ५६	१० १७	१२ ३७	१४ ४२	१६ २३	१७ ४८	१९ १०	२० ४३	२२ ३८	० ५२	३ १४	५ ३४
	२६	११	७ ५२	१० १३	१२ ३३	१४ ३८	१६ १९	१७ ४४	१९ ०६	२० ३९	२२ ३४	० ४८	३ १०	५ ३०
	२७	१२	७ ४८	१० ०९	१२ २९	१४ ३४	१६ १५	१७ ४०	१९ ०२	२० ३५	२२ ३०	० ४४	३ ०६	५ २६
	२८	१३	७ ४४	१० ०५	१२ २५	१४ ३०	१६ ११	१७ ३६	१८ ५८	२० ३१	२२ २६	० ४०	३ ०२	५ २२
	२९	१४	७ ४०	१० ०१	१२ २२	१४ २६	१६ ०७	१७ ३२	१८ ५५	२० २७	२२ २२	० ३६	२ ५८	५ १८
	३०	१५	७ ३६	९ ५७	१२ १८	१४ २२	१६ ०३	१७ २८	१८ ५१	२० २३	२२ १८	० ३२	२ ५४	५ १४
अक्तूबर	१	१६	७ ३२	९ ५४	१२ १४	१४ १८	१५ ५९	१७ २४	१८ ४७	२० १९	२२ १४	० २८	२ ५०	५ १०
	२	१७	७ २८	९ ५०	१२ १०	१४ १४	१५ ५५	१७ २०	१८ ४३	२० १५	२२ १०	० २४	२ ४६	५ ०६
	३	१८	७ २४	९ ४६	१२ ०६	१४ १०	१५ ५१	१७ १६	१८ ३९	२० ११	२२ ०६	० २०	२ ४३	५ ०३
	४	१९	७ २०	९ ४२	१२ ०२	१४ ०६	१५ ४७	१७ १२	१८ ३५	२० ०८	२२ ०२	० १६	२ ३९	४ ५९
	५	२०	७ १६	९ ३८	११ ५८	१४ ०३	१५ ४३	१७ ०९	१८ ३१	२० ०४	२१ ५८	० १२	२ ३५	४ ५५
	६	२१	७ १२	९ ३४	११ ५४	१३ ५९	१५ ४०	१७ ०५	१८ २७	२० ००	२१ ५४	० ०८	२ ३१	४ ५१
	७	२२	७ ०८	९ ३०	११ ५०	१३ ५५	१५ ३६	१७ ०१	१८ २३	१९ ५६	२१ ५०	० ०५	२ २७	४ ४७
	८	२३	७ ०५	९ २६	११ ४६	१३ ५१	१५ ३२	१६ ५७	१८ १९	१९ ५२	२१ ४६	० ०१	२ २३	४ ४३
	९	२४	७ ०१	९ २२	११ ४२	१३ ४७	१५ २८	१६ ५३	१८ १५	१९ ४८	२१ ४३	२३ ५७	२ १९	४ ३९
	१०	२५	६ ५७	९ १८	११ ३८	१३ ४३	१५ २४	१६ ४९	१८ ११	१९ ४४	२१ ३९	२३ ५३	२ १५	४ ३५
	११	२६	६ ५३	९ १४	११ ३४	१३ ३९	१५ २०	१६ ४५	१८ ०७	१९ ४०	२१ ३५	२३ ४९	२ ११	४ ३१
	१२	२७	६ ४९	९ १०	११ ३०	१३ ३५	१५ १६	१६ ४१	१८ ०३	१९ ३६	२१ ३१	२३ ४५	२ ०७	४ २७
	१३	२८	६ ४५	९ ०६	११ २६	१३ ३१	१५ १२	१६ ३७	१७ ५९	१९ ३२	२१ २७	२३ ४१	२ ०३	४ २३
	१४	२९	६ ४१	९ ०२	११ २३	१३ २७	१५ ०८	१६ ३३	१७ ५६	१९ २८	२१ २३	२३ ३७	१ ५९	४ १९
	१५	३०	६ ३७	८ ५९	११ १९	१३ २३	१५ ०४	१६ २९	१७ ५२	१९ २४	२१ १९	२३ ३३	१ ५५	४ १५
	१६	का.१	६ ३३											

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

कार्तिक

अंग्रेज़ी तारीख		कार्तिक प्रविष्टे	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
अक्टूबर	१६	१	८ ५५	११ १५	१३ १९	१५ ००	१६ २५	१७ ४८	१९ २०	२१ १५	२३ २९	१ ५१	४ ११	६ २९
	१७	२	८ ५१	११ ११	१३ १५	१४ ५६	१६ २१	१७ ४४	१९ १६	२१ ११	२३ २५	१ ४७	४ ०७	६ २५
	१८	३	८ ४७	११ ०७	१३ ११	१४ ५२	१६ १७	१७ ४०	१९ १३	२१ ०७	२३ २१	१ ४४	४ ०४	६ २१
	१९	४	८ ४३	११ ०३	१३ ०८	१४ ४८	१६ १४	१७ ३६	१९ ०९	२१ ०३	२३ १७	१ ४०	४ ००	६ १७
	२०	५	८ ३९	१० ५९	१३ ०४	१४ ४५	१६ १०	१७ ३२	१९ ०५	२० ५९	२३ १३	१ ३६	३ ५६	६ १३
	२१	६	८ ३५	१० ५५	१३ ००	१४ ४१	१६ ०६	१७ २८	१९ ०१	२० ५५	२३ ०९	१ ३२	३ ५२	६ ०९
	२२	७	८ ३१	१० ५१	१२ ५६	१४ ३७	१६ ०२	१७ २४	१८ ५७	२० ५१	२३ ०६	१ २८	३ ४८	६ ०६
	२३	८	८ २७	१० ४७	१२ ५२	१४ ३३	१५ ५८	१७ २०	१८ ५३	२० ४७	२३ ०२	१ २४	३ ४४	६ ०२
	२४	९	८ २३	१० ४३	१२ ४८	१४ २९	१५ ५४	१७ १६	१८ ४९	२० ४४	२२ ५८	१ २०	३ ४०	५ ५८
	२५	१०	८ १९	१० ३९	१२ ४४	१४ २५	१५ ५०	१७ १२	१८ ४५	२० ४०	२२ ५४	१ १६	३ ३६	५ ५४
	२६	११	८ १५	१० ३५	१२ ४०	१४ २१	१५ ४६	१७ ०८	१८ ४१	२० ३६	२२ ५०	१ १२	३ ३२	५ ५०
	२७	१२	८ ११	१० ३१	१२ ३६	१४ १७	१५ ४२	१७ ०४	१८ ३७	२० ३२	२२ ४६	१ ०८	३ २८	५ ४६
	२८	१३	८ ०७	१० २८	१२ ३२	१४ १३	१५ ३८	१७ ०१	१८ ३३	२० २८	२२ ४२	१ ०४	३ २४	५ ४२
	२९	१४	८ ०३	१० २४	१२ २८	१४ ०९	१५ ३४	१६ ५७	१८ २९	२० २४	२२ ३८	१ ००	३ २०	५ ३८
	३०	१५	८ ००	१० २०	१२ २४	१४ ०५	१५ ३०	१६ ५३	१८ २५	२० २०	२२ ३४	० ५६	३ १६	५ ३४
	३१	१६	७ ५६	१० १६	१२ २०	१४ ०१	१५ २६	१६ ४९	१८ २१	२० १६	२२ ३०	० ५२	३ १२	५ ३०
नवम्बर	१	१७	७ ५२	१० १२	१२ १६	१३ ५७	१५ २२	१६ ४५	१८ १७	२० १२	२२ २६	० ४८	३ ०९	५ २६
	२	१८	७ ४८	१० ०८	१२ १२	१३ ५३	१५ १८	१६ ४१	१८ १३	२० ०८	२२ २२	० ४५	३ ०५	५ २२
	३	१९	७ ४४	१० ०४	१२ ०९	१३ ४९	१५ १५	१६ ३७	१८ ०९	२० ०४	२२ १८	० ४१	३ ०१	५ १८
	४	२०	७ ४०	१० ००	१२ ०५	१३ ४६	१५ ११	१६ ३३	१८ ०६	२० ००	२२ १५	० ३७	२ ५७	५ १४
	५	२१	७ ३६	९ ५६	१२ ०१	१३ ४२	१५ ०७	१६ २९	१८ ०२	१९ ५६	२२ ११	० ३३	२ ५३	५ १०
	६	२२	७ ३२	९ ५२	११ ५७	१३ ३८	१५ ०३	१६ २५	१७ ५८	१९ ५२	२२ ०७	० २९	२ ४९	५ ०७
	७	२३	७ २८	९ ४८	११ ५३	१३ ३४	१४ ५९	१६ २१	१७ ५४	१९ ४९	२२ ०३	० २५	२ ४५	५ ०३
	८	२४	७ २४	९ ४४	११ ४९	१३ ३०	१४ ५५	१६ १७	१७ ५०	१९ ४५	२१ ५९	० २१	२ ४१	४ ५९
	९	२५	७ २०	९ ४०	११ ४५	१३ २६	१४ ५१	१६ १३	१७ ४६	१९ ४१	२१ ५५	० १७	२ ३७	४ ५५
	१०	२६	७ १६	९ ३६	११ ४१	१३ २२	१४ ४७	१६ ०९	१७ ४२	१९ ३७	२१ ५१	० १३	२ ३३	४ ५१
	११	२७	७ १२	९ ३२	११ ३७	१३ १८	१४ ४३	१६ ०५	१७ ३८	१९ ३३	२१ ४७	० ०९	२ २९	४ ४७
	१२	२८	७ ०८	९ २९	११ ३३	१३ १४	१४ ३९	१६ ०२	१७ ३४	१९ २९	२१ ४३	० ०५	२ २५	४ ४३
	१३	२९	७ ०५	९ २५	११ २९	१३ १०	१४ ३५	१५ ५८	१७ ३०	१९ २५	२१ ३९	० ०१	२ २१	४ ३९
	१४	३०	७ ०१	९ २१	११ २५	१३ ०६	१४ ३१	१५ ५४	१७ २६	१९ २१	२१ ३५	२३ ५७	२ १७	४ ३५
	१५	मा. १	६ ५७											

मार्गशीर्ष

अंग्रेज़ी तारीख		मार्गशीर्ष प्रविष्टे	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
नवम्बर	१५	१	९ १७	११ २१	१३ ०२	१४ २७	१५ ५०	१७ २२	१९ १७	२१ ३१	२३ ५३	२ १३	४ ३१	६ ५३
	१६	२	९ १३	११ १७	१२ ५८	१४ २३	१५ ४६	१७ १८	१९ १३	२१ २७	२३ ५०	२ १०	४ २७	६ ४९
	१७	३	९ ०९	११ १३	१२ ५४	१४ १९	१५ ४२	१७ १५	१९ ०९	२१ २३	२३ ४६	२ ०६	४ २३	६ ४५
	१८	४	९ ०५	११ १०	१२ ५०	१४ १६	१५ ३८	१७ ११	१९ ०५	२१ १९	२३ ४२	२ ०२	४ १९	६ ४१
	१९	५	९ ०१	११ ०६	१२ ४७	१४ १२	१५ ३४	१७ ०७	१९ ०१	२१ १६	२३ ३८	१ ५८	४ १५	६ ३७
	२०	६	८ ५७	११ ०२	१२ ४३	१४ ०८	१५ ३०	१७ ०३	१८ ५७	२१ १२	२३ ३४	१ ५४	४ १२	६ ३३
	२१	७	८ ५३	१० ५८	१२ ३९	१४ ०४	१५ २६	१६ ५९	१८ ५३	२१ ०८	२३ ३०	१ ५०	४ ०८	६ २९
	२२	८	८ ४९	१० ५४	१२ ३५	१४ ००	१५ २२	१६ ५५	१८ ५०	२१ ०४	२३ २६	१ ४६	४ ०४	६ २५
	२३	९	८ ४५	१० ५०	१२ ३१	१३ ५६	१५ १८	१६ ५१	१८ ४६	२१ ००	२३ २२	१ ४२	४ ००	६ २१
	२४	१०	८ ४१	१० ४६	१२ २७	१३ ५२	१५ १४	१६ ४७	१८ ४२	२० ५६	२३ १८	१ ३८	३ ५६	६ १७
	२५	११	८ ३७	१० ४२	१२ २३	१३ ४८	१५ १०	१६ ४३	१८ ३८	२० ५२	२३ १४	१ ३४	३ ५२	६ १३
	२६	१२	८ ३३	१० ३८	१२ १९	१३ ४४	१५ ०७	१६ ३९	१८ ३४	२० ४८	२३ १०	१ ३०	३ ४८	६ ०९
	२७	१३	८ ३०	१० ३४	१२ १५	१३ ४०	१५ ०३	१६ ३५	१८ ३०	२० ४४	२३ ०६	१ २६	३ ४४	६ ०६
	२८	१४	८ २६	१० ३०	१२ ११	१३ ३६	१४ ५९	१६ ३१	१८ २६	२० ४०	२३ ०२	१ २२	३ ४०	६ ०२
	२९	१५	८ २२	१० २६	१२ ०७	१३ ३२	१४ ५५	१६ २७	१८ २२	२० ३६	२२ ५८	१ १८	३ ३६	५ ५८
	३०	१६	८ १८	१० २२	१२ ०३	१३ २८	१४ ५१	१६ २३	१८ १८	२० ३२	२२ ५४	१ १४	३ ३२	५ ५४
दिसम्बर	१	१७	८ १४	१० १८	११ ५९	१३ २४	१४ ४७	१६ २०	१८ १४	२० २८	२२ ५१	१ ११	३ २८	५ ५०
	२	१८	८ १०	१० १५	११ ५५	१३ २१	१४ ४३	१६ १६	१८ १०	२० २४	२२ ४७	१ ०७	३ २४	५ ४६
	३	१९	८ ०६	१० ११	११ ५२	१३ १७	१४ ३९	१६ १२	१८ ०६	२० २०	२२ ४३	१ ०३	३ २०	५ ४२
	४	२०	८ ०२	१० ०७	११ ४८	१३ १३	१४ ३५	१६ ०८	१८ ०२	२० १७	२२ ३९	० ५९	३ १६	५ ३८
	५	२१	७ ५८	१० ०३	११ ४४	१३ ०९	१४ ३१	१६ ०४	१७ ५८	२० १३	२२ ३५	० ५५	३ १३	५ ३४
	६	२२	७ ५४	९ ५९	११ ४०	१३ ०५	१४ २७	१६ ००	१७ ५४	२० ०९	२२ ३१	० ५१	३ ०९	५ ३०
	७	२३	७ ५०	९ ५५	११ ३६	१३ ०१	१४ २३	१५ ५६	१७ ५१	२० ०५	२२ २७	० ४७	३ ०५	५ २६
	८	२४	७ ४६	९ ५१	११ ३२	१२ ५७	१४ १९	१५ ५२	१७ ४७	२० ०१	२२ २३	० ४३	३ ०१	५ २२
	९	२५	७ ४२	९ ४७	११ २८	१२ ५३	१४ १५	१५ ४८	१७ ४३	१९ ५७	२२ १९	० ३९	२ ५७	५ १८
	१०	२६	७ ३८	९ ४३	११ २४	१२ ४९	१४ ११	१५ ४४	१७ ३९	१९ ५३	२२ १५	० ३५	२ ५३	५ १४
	११	२७	७ ३५	९ ३९	११ २०	१२ ४५	१४ ०८	१५ ४०	१७ ३५	१९ ४९	२२ ११	० ३१	२ ४९	५ १०
	१२	२८	७ ३१	९ ३५	११ १६	१२ ४१	१४ ०४	१५ ३६	१७ ३१	१९ ४५	२२ ०७	० २७	२ ४५	५ ०७
	१३	२९	७ २७	९ ३१	११ १२	१२ ३७	१४ ००	१५ ३२	१७ २७	१९ ४१	२२ ०३	० २३	२ ४१	५ ०३
	१४	३०	७ २३	९ २७	११ ०८	१२ ३३	१३ ५६	१५ २८	१७ २३	१९ ३७	२१ ५९	० १९	२ ३७	४ ५९
	१५	पौ. १	७ १९											

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

पौष

अंग्रेज़ी तारीख		पौष प्रविष्टे	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.
दिसम्बर	१५	१	९ २३	११ ४	१२ २९	१३ ५२	१५ २४	१७ १९	१९ ३३	२१ ५६	० १६	२ ३३	४ ५५	७ १५
	१६	२	९ १९	११ ००	१२ २५	१३ ४८	१५ २१	१७ १५	१९ २९	२१ ५२	० १२	२ २९	४ ५१	७ ११
	१७	३	९ १६	१० ५६	१२ २२	१३ ४४	१५ १७	१७ ११	१९ २५	२१ ४८	० ०८	२ २५	४ ४७	७ ०७
	१८	४	९ १२	१० ५३	१२ १८	१३ ४०	१५ १३	१७ ०७	१९ २२	२१ ४४	० ०४	२ २१	४ ४३	७ ०३
	१९	५	९ ०८	१० ४९	१२ १४	१३ ३६	१५ ०९	१७ ०३	१९ १८	२१ ४०	० ००	२ १७	४ ३९	६ ५९
	२०	६	९ ०४	१० ४५	१२ १०	१३ ३२	१५ ०५	१६ ५९	१९ १४	२१ ३६	२३ ५६	२ १४	४ ३५	६ ५५
	२१	७	९ ००	१० ४१	१२ ०६	१३ २८	१५ ०१	१६ ५६	१९ १०	२१ ३२	२३ ५२	२ १०	४ ३१	६ ५१
	२२	८	८ ५६	१० ३७	१२ ०२	१३ २४	१४ ५७	१६ ५२	१९ ०६	२१ २८	२३ ४८	२ ०६	४ २७	६ ४७
	२३	९	८ ५२	१० ३३	११ ५८	१३ २०	१४ ५३	१६ ४८	१९ ०२	२१ २४	२३ ४४	२ ०२	४ २३	६ ४३
	२४	१०	८ ४८	१० २९	११ ५४	१३ १६	१४ ४९	१६ ४४	१८ ५८	२१ २०	२३ ४०	१ ५८	४ १९	६ ३९
	२५	११	८ ४४	१० २५	११ ५०	१३ १२	१४ ४५	१६ ४०	१८ ५४	२१ १६	२३ ३६	१ ५४	४ १५	६ ३६
	२६	१२	८ ४०	१० २१	११ ४६	१३ ०९	१४ ४१	१६ ३६	१८ ५०	२१ १२	२३ ३२	१ ५०	४ १२	६ ३२
	२७	१३	८ ३६	१० १७	११ ४२	१३ ०५	१४ ३७	१६ ३२	१८ ४६	२१ ०८	२३ २८	१ ४६	४ ०८	६ २८
	२८	१४	८ ३२	१० १३	११ ३८	१३ ०१	१४ ३३	१६ २८	१८ ४२	२१ ०४	२३ २४	१ ४२	४ ०४	६ २४
	२९	१५	८ २८	१० ०९	११ ३४	१२ ५७	१४ २९	१६ २४	१८ ३८	२१ ००	२३ २०	१ ३८	४ ००	६ २०
	३०	१६	८ २४	१० ०५	११ ३०	१२ ५३	१४ २६	१६ २०	१८ ३४	२० ५७	२३ १७	१ ३४	३ ५६	६ १६
	३१	१७	८ २०	१० ०१	११ २६	१२ ४९	१४ २२	१६ १६	१८ ३०	२० ५३	२३ १३	१ ३०	३ ५२	६ १२
जनवरी	१	१८	८ १६	९ ५७	११ २२	१२ ४४	१४ १७	१६ ११	१८ २६	२० ४८	२३ ०८	१ २५	३ ४७	६ ०७
	२	१९	८ १२	९ ५३	११ १८	१२ ४०	१४ १३	१६ ०७	१८ २२	२० ४४	२३ ०४	१ २१	३ ४३	६ ०३
	३	२०	८ ०८	९ ४९	११ १४	१२ ३६	१४ ०९	१६ ०३	१८ १८	२० ४०	२३ ००	१ १७	३ ३९	५ ५९
	४	२१	८ ०४	९ ४५	११ १०	१२ ३२	१४ ०५	१५ ५९	१८ १४	२० ३६	२२ ५६	१ १४	३ ३५	५ ५५
	५	२२	८ ००	९ ४१	११ ०६	१२ २८	१४ ०१	१५ ५६	१८ १०	२० ३२	२२ ५२	१ १०	३ ३१	५ ५१
	६	२३	७ ५६	९ ३७	११ ०२	१२ २४	१३ ५७	१५ ५२	१८ ०६	२० २८	२२ ४८	१ ०६	३ २७	५ ४७
	७	२४	७ ५२	९ ३३	१० ५८	१२ २०	१३ ५३	१५ ४८	१८ ०२	२० २४	२२ ४४	१ ०२	३ २३	५ ४३
	८	२५	७ ४८	९ २९	१० ५४	१२ १६	१३ ४९	१५ ४४	१७ ५८	२० २०	२२ ४०	० ५८	३ १९	५ ३९
	९	२६	७ ४४	९ २५	१० ५०	१२ १३	१३ ४५	१५ ४०	१७ ५४	२० १६	२२ ३६	० ५४	३ १५	५ ३६
	१०	२७	७ ४०	९ २१	१० ४६	१२ ०९	१३ ४१	१५ ३६	१७ ५०	२० १२	२२ ३२	० ५०	३ १२	५ ३२
	११	२८	७ ३६	९ १७	१० ४२	१२ ०५	१३ ३७	१५ ३२	१७ ४६	२० ०८	२२ २८	० ४६	३ ०८	५ २८
	१२	२९	७ ३२	९ १३	१० ३८	१२ ०१	१३ ३३	१५ २८	१७ ४२	२० ०४	२२ २४	० ४२	३ ०४	५ २४
	१३	मा.१	७ २८											

माघ

अंग्रेज़ी तारीख		माघ प्रविष्टे	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.
जनवरी	१३	१	९ ०९	१० ३४	११ ५७	१३ २९	१५ २४	१७ ३८	२० ००	२२ २०	० ३८	३ ००	५ २०	७ २४
	१४	२	९ ०५	१० ३०	११ ५३	१३ २६	१५ २०	१७ ३४	१९ ५७	२२ १७	० ३४	२ ५६	५ १६	७ २०
	१५	३	९ ०१	१० २७	११ ४९	१३ २२	१५ १६	१७ ३०	१९ ५३	२२ १३	० ३०	२ ५२	५ १२	७ १७
	१६	४	८ ५८	१० २३	११ ४५	१३ १८	१५ १२	१७ २६	१९ ४९	२२ ०९	० २६	२ ४८	५ ०८	७ १३
	१७	५	८ ५४	१० १९	११ ४१	१३ १४	१५ ०८	१७ २३	१९ ४५	२२ ०५	० २२	२ ४४	५ ०४	७ ०९
	१८	६	८ ५०	१० १५	११ ३७	१३ १०	१५ ०४	१७ १९	१९ ४१	२२ ०१	० १९	२ ४०	५ ००	७ ०५
	१९	७	८ ४६	१० ११	११ ३३	१३ ०६	१५ ०१	१७ १५	१९ ३७	२१ ५७	० १५	२ ३६	४ ५६	७ ०१
	२०	८	८ ४२	१० ०७	११ २९	१३ ०२	१४ ५७	१७ ११	१९ ३३	२१ ५३	० ११	२ ३२	४ ५२	६ ५७
	२१	९	८ ३८	१० ०३	११ २५	१२ ५८	१४ ५३	१७ ०७	१९ २९	२१ ४९	० ०७	२ २८	४ ४८	६ ५३
	२२	१०	८ ३४	९ ५९	११ २१	१२ ५४	१४ ४९	१७ ०३	१९ २५	२१ ४५	० ०३	२ २४	४ ४४	६ ४९
	२३	११	८ ३०	९ ५५	११ १७	१२ ५०	१४ ४५	१६ ५९	१९ २१	२१ ४१	२३ ५९	२ २०	४ ४१	६ ४५
	२४	१२	८ २६	९ ५१	११ १४	१२ ४६	१४ ४१	१६ ५५	१९ १७	२१ ३७	२३ ५५	२ १६	४ ३७	६ ४१
	२५	१३	८ २२	९ ४७	११ १०	१२ ४२	१४ ३७	१६ ५१	१९ १३	२१ ३३	२३ ५१	२ १३	४ ३३	६ ३७
	२६	१४	८ १८	९ ४३	११ ०६	१२ ३८	१४ ३३	१६ ४७	१९ ०९	२१ २९	२३ ४७	२ ०९	४ २९	६ ३३
	२७	१५	८ १४	९ ३९	११ ०२	१२ ३४	१४ २९	१६ ४३	१९ ०५	२१ २५	२३ ४३	२ ०५	४ २५	६ २९
	२८	१६	८ १०	९ ३५	१० ५८	१२ ३०	१४ २५	१६ ३९	१९ ०२	२१ २२	२३ ३९	२ ०१	४ २१	६ २५
	२९	१७	८ ०६	९ ३१	१० ५४	१२ २७	१४ २१	१६ ३५	१८ ५८	२१ १८	२३ ३५	१ ५७	४ १७	६ २२
	३०	१८	८ ०२	९ २८	१० ५०	१२ २३	१४ १७	१६ ३१	१८ ५४	२१ १४	२३ ३१	१ ५३	४ १३	६ १८
	३१	१९	७ ५९	९ २४	१० ४६	१२ १९	१४ १३	१६ २८	१८ ५०	२१ १०	२३ २७	१ ४९	४ ०९	६ १४
फरवरी	१	२०	७ ५५	९ २०	१० ४२	१२ १५	१४ ०९	१६ २४	१८ ४६	२१ ०६	२३ २३	१ ४५	४ ०५	६ १०
	२	२१	७ ५१	९ १६	१० ३८	१२ ११	१४ ०५	१६ २०	१८ ४२	२१ ०२	२३ २०	१ ४१	४ ०१	६ ०६
	३	२२	७ ४७	९ १२	१० ३४	१२ ०७	१४ ०२	१६ १६	१८ ३८	२० ५८	२३ १६	१ ३७	३ ५७	६ ०२
	४	२३	७ ४३	९ ०८	१० ३०	१२ ०३	१३ ५८	१६ १२	१८ ३४	२० ५४	२३ १२	१ ३३	३ ५३	५ ५८
	५	२४	७ ३९	९ ०४	१० २६	११ ५९	१३ ५४	१६ ०८	१८ ३०	२० ५०	२३ ०८	१ २९	३ ४९	५ ५४
	६	२५	७ ३५	९ ००	१० २२	११ ५५	१३ ५०	१६ ०४	१८ २६	२० ४६	२३ ०४	१ २५	३ ४५	५ ५०
	७	२६	७ ३१	८ ५६	१० १९	११ ५१	१३ ४६	१६ ००	१८ २२	२० ४२	२३ ००	१ २१	३ ४२	५ ४६
	८	२७	७ २७	८ ५२	१० १५	११ ४७	१३ ४२	१५ ५६	१८ १८	२० ३८	२२ ५६	१ १७	३ ३८	५ ४२
	९	२८	७ २३	८ ४८	१० ११	११ ४३	१३ ३८	१५ ५२	१८ १४	२० ३४	२२ ५२	१ १४	३ ३४	५ ३८
	१०	२९	७ १९	८ ४४	१० ०७	११ ३९	१३ ३४	१५ ४८	१८ १०	२० ३०	२२ ४८	१ १०	३ ३०	५ ३४
	११	३०	७ १५	८ ४०	१० ०३	११ ३५	१३ ३०	१५ ४४	१८ ०६	२० २६	२२ ४४	१ ०६	३ २६	५ ३०
	१२	फा.१	७ ११											

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

अंग्रेज़ी तारीख		फाल्गुन तिथि	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
फरवरी	१२	१	८ ३६	९ ५९	११ ३२	१३ २६	१५ ४०	१८ ०३	२० २३	२२ ४०	१ ०२	३ २२	५ २६	७ ०७
	१३	२	८ ३३	९ ५५	११ २८	१३ २२	१५ ३६	१७ ५९	२० १९	२२ ३६	० ५८	३ १८	५ २३	७ ०४
	१४	३	८ २९	९ ५१	११ २४	१३ १८	१५ ३२	१७ ५५	२० १५	२२ ३२	० ५४	३ १४	५ १९	७ ००
	१५	४	८ २५	९ ४७	११ २०	१३ १४	१५ २९	१७ ५१	२० ११	२२ २८	० ५०	३ १०	५ १५	६ ५६
	१६	५	८ २१	९ ४३	११ १६	१३ १०	१५ २५	१७ ४७	२० ०७	२२ २५	० ४६	३ ०६	५ ११	६ ५२
	१७	६	८ १७	९ ३९	११ १२	१३ ०६	१५ २१	१७ ४३	२० ०३	२२ २१	० ४२	३ ०२	५ ०७	६ ४८
	१८	७	८ १३	९ ३५	११ ०८	१३ ०३	१५ १७	१७ ३९	१९ ५९	२२ १७	० ३८	२ ५८	४ ०३	६ ४४
	१९	८	८ ०९	९ ३१	११ ०४	१२ ५९	१५ १३	१७ ३४	१९ ५५	२२ १३	० ३४	२ ५४	४ ५९	६ ४०
	२०	९	८ ०५	९ २७	११ ००	१२ ५५	१५ ०९	१७ ३१	१९ ५१	२२ ०९	० ३०	२ ५०	४ ५५	६ ३६
	२१	१०	८ ०१	९ २३	१० ५६	१२ ५१	१५ ०५	१७ २७	१९ ४७	२२ ०५	० २६	२ ४६	४ ५१	६ ३२
	२२	११	७ ५७	९ २०	१० ५२	१२ ४७	१५ ०१	१७ २३	१९ ४३	२२ ०१	० २२	२ ४३	४ ४७	६ २८
	२३	१२	७ ५३	९ १६	१० ४८	१२ ४३	१४ ५७	१७ १९	१९ ३९	२१ ५७	० १९	२ ३९	४ ४३	६ २४
	२४	१३	७ ४९	९ १२	१० ४४	१२ ३९	१४ ५३	१७ १५	१९ ३५	२१ ५३	० १५	२ ३५	४ ३९	६ २०
	२५	१४	७ ४५	९ ०८	१० ४०	१२ ३५	१४ ४९	१७ ११	१९ ३१	२१ ४९	० ११	२ ३१	४ ३५	६ १६
	२६	१५	७ ४१	९ ०४	१० ३६	१२ ३१	१४ ४५	१७ ०७	१९ २७	२१ ४५	० ०७	२ २७	४ ३१	६ १२
	२७	१६	७ ३७	९ ००	१० ३३	१२ २७	१४ ४१	१७ ०४	१९ २४	२१ ४१	० ०३	२ २३	४ २८	६ ०८
	२८	१७	७ ३४	८ ५६	१० २९	१२ २३	१४ ३७	१७ ००	१९ २०	२१ ३७	२३ ५९	२ १९	४ २४	६ ०५
मार्च	१	१८	७ ३०	८ ५२	१० २५	१२ १९	१४ ३३	१६ ५६	१९ १६	२१ ३३	२३ ५५	२ १५	४ २०	६ ०१
	२	१९	७ २६	८ ४८	१० २१	१२ १५	१४ ३०	१६ ५२	१९ १२	२१ २९	२३ ५१	२ ११	४ १६	५ ५७
	३	२०	७ २२	८ ४४	१० १७	१२ ११	१४ २६	१६ ४८	१९ ०८	२१ २६	२३ ४७	२ ०७	४ १२	५ ५३
	४	२१	७ १८	८ ४०	१० १३	१२ ०८	१४ २२	१६ ४४	१९ ०४	२१ २२	२३ ४३	२ ०३	४ ०८	५ ४९
	५	२२	७ १४	८ ३६	१० ०९	१२ ०४	१४ १८	१६ ४०	१९ ००	२१ १८	२३ ३९	१ ५९	४ ०४	५ ४५
	६	२३	७ १०	८ ३२	१० ०५	१२ ००	१४ १४	१६ ३६	१८ ५६	२१ १४	२३ ३४	१ ५५	४ ००	५ ४१
	७	२४	७ ०६	८ २८	१० ०१	११ ५६	१४ १०	१६ ३२	१८ ५२	२१ १०	२३ ३१	१ ५१	३ ५६	५ ३७
	८	२५	७ ०२	८ २४	९ ५७	११ ५२	१४ ०६	१६ २८	१८ ४८	२१ ०६	२३ २७	१ ४८	३ ५२	५ ३३
	९	२६	६ ५८	८ २१	९ ५३	११ ४८	१४ ०२	१६ २४	१८ ४४	२१ ०२	२३ २३	१ ४४	३ ४८	५ २९
	१०	२७	६ ५४	८ १७	९ ४९	११ ४४	१३ ५८	१६ २०	१८ ४०	२० ५८	२३ २०	१ ४०	३ ४४	५ २५
	११	२८	६ ५०	८ १३	९ ४५	११ ४०	१३ ५४	१६ १६	१८ ३६	२० ५४	२३ १६	१ ३६	३ ४०	५ २१
	१२	२९	६ ४६	८ ०९	९ ४१	११ ३६	१३ ५०	१६ १२	१८ ३२	२० ५०	२३ १२	१ ३२	३ ३६	५ १७
	१३	३०	६ ४२	८ ०५	९ ३८	११ ३२	१३ ४६	१६ ०९	१८ २९	२० ४६	२३ ०८	१ २८	३ ३२	५ १३
	१४	चै.१	६ ३८											

अंग्रेज़ी तारीख		चैत्र तिथि	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
मार्च	१४	१	८ ०१	९ ३४	११ २८	१३ ४२	१६ ०५	१८ २५	२० ४२	२३ ०४	१ २४	३ २९	५ ०९	६ ३५
	१५	२	७ ५७	९ ३०	११ २४	१३ ३८	१६ ०१	१८ २१	२० ३८	२३ ००	१ २०	३ २५	५ ०६	६ ३१
	१६	३	७ ५३	९ २६	११ २०	१३ ३५	१५ ५७	१८ १७	२० ३४	२२ ५६	१ १६	३ २१	५ ०२	६ २७
	१७	४	७ ४९	९ २२	११ १६	१३ ३१	१५ ५३	१८ १३	२० ३०	२२ ५२	१ १२	३ १७	४ ५८	६ २३
	१८	५	७ ४५	९ १८	११ १२	१३ २७	१५ ४९	१८ ०९	२० २७	२२ ४८	१ ०८	३ १३	४ ५४	६ १९
	१९	६	७ ४१	९ १४	११ ०९	१३ २३	१५ ४५	१८ ०५	२० २३	२२ ४४	१ ०४	३ ०९	४ ५०	६ १५
	२०	७	७ ३७	९ १०	११ ०५	१३ १९	१५ ४१	१८ ०१	२० १९	२२ ४०	१ ००	३ ०५	४ ४६	६ ११
	२१	८	७ ३३	९ ०६	११ ०१	१३ १५	१५ ३७	१७ ५७	२० १५	२२ ३६	० ५६	३ ०१	४ ४२	६ ०७
	२२	९	७ २९	९ ०२	१० ५७	१३ ११	१५ ३३	१७ ५३	२० ११	२२ ३२	० ५२	२ ५७	४ ३८	६ ०३
	२३	१०	७ २५	८ ५८	१० ५३	१३ ०७	१५२९	१७ ४९	२० ०७	२२ २८	० ४९	२ ५३	४ ३४	५ ५९
	२४	११	७ २२	८ ५४	१० ४९	१३ ०३	१५ २५	१७ ४५	२० ०३	२२ २५	० ४५	२ ४९	४ ३०	५ ५५
	२५	१२	७ १८	८ ५०	१० ४५	१२ ५९	१५ २१	१७ ४१	१९ ५९	२२ २१	० ४१	२ ४५	४ २६	५ ५१
	२६	१३	७ १४	८ ४६	१० ४१	१२ ५५	१५ १७	१७ ३७	१९ ५५	२२ १७	० ३७	२ ४१	४ २२	५ ४७
	२७	१४	७ १०	८ ४२	१० ३७	१२ ५१	१५ १३	१७ ३३	१९ ५१	२२ १३	० ३३	२ ३७	४ १८	५ ४३
	२८	१५	७ ०६	८ ३८	१० ३३	१२ ४७	१५ १०	१७ ३०	१९ ४७	२२ ०९	० २९	२ ३३	४ १४	५ ३९
	२९	१६	७ ०२	८ ३५	१० २९	१२ ४३	१५ ०६	१७ २६	१९ ४३	२२ ०५	० २५	२ ३०	४ १०	५ ३६
	३०	१७	५ ५८	८ ३१	१० २५	१२ ३९	१५ ०२	१७ २२	१९ ४०	२२ ०१	० २१	२ २६	४ ०७	५ ३२
	३१	१८	६ ५४	८ २७	१० २१	१२ ३६	१४ ५८	१७ १८	१९ ३६	२१ ५७	० १७	२ २२	४ ०३	५ २८
अप्रैल	१	१९	६ ५०	८ २३	१० १७	१२ ३२	१४ ५४	१७ १४	१९ ३२	२१ ५३	० १३	२ १८	३ ५९	५ २४
	२	२०	६ ४६	८ १९	१० १३	१२ २८	१४ ५०	१७ १०	१९ २८	२१ ४९	० ०९	२ १४	३ ५५	५ २०
	३	२१	६ ४२	८ १५	१० १०	१२ २४	१४ ४६	१७ ०६	१९ २४	२१ ४५	० ०५	२ १०	३ ५१	५ १६
	४	२२	६ ३८	८ ११	१० ०६	१२ २०	१४ ४२	१७ ०२	१९ २०	२१ ४१	० ०१	२ ०६	३ ४७	५ १२
	५	२३	६ ३४	८ ०७	१० ०२	१२ १६	१४ ३८	१६ ५८	१९ १६	२१ ३७	२३ ५७	२ ०२	३ ४३	५ ०८
	६	२४	६ ३०	८ ०३	९ ५८	१२ १२	१४ ३४	१६ ५४	१९ १२	२१ ३३	२३ ५३	१ ५८	३ ३९	५ ०४
	७	२५	६ २७	७ ५९	९ ५४	१२ ०८	१४ ३०	१६ ५०	१९ ०८	२१ २९	२३ ५०	१ ५४	३ ३५	५ ००
	८	२६	६ २३	७ ५५	९ ५०	१२ ०४	१४ २६	१६ ४६	१९ ०४	२१ २६	२३ ४६	१ ५०	३ ३१	४ ५६
	९	२७	६ १९	७ ५१	९ ४६	१२ ००	१४ २२	१६ ४२	१९ ००	२१ २२	२३ ४२	१ ४६	३ २७	४ ५२
	१०	२८	६ १५	७ ४७	९ ४२	११ ५६	१४ १८	१६ ३८	१८ ५६	२१ १८	२३ ३८	१ ४२	३ २३	४ ४८
	११	२९	६ ११	७ ४३	९ ३८	११ ५२	१४ १४	१६ ३४	१८ ५२	२१ १४	२३ ३४	१ ३८	३ १९	४ ४४
	१२	३०	६ ०७	७ ४०	९ ३४	११ ४८	१४ ११	१६ ३१	१८ ४८	२१ १०	२३ ३०	१ ३५	३ १५	४ ४१
	१३	वै.१	६ ०३											

भारत के प्रमुख-प्रमुख नगरों में लग्नों का समाप्तिकाल

यहां पीछे जो दैनिक लग्नसारणी दी गई है, वह चण्डीगढ़ में लग्नों का समाप्तिकाल (भा.स्टै.टा.) बतलाती है। इसी लग्नसारणी से नीचे दिए गए कोष्ठक की सहायता से भारत के प्रमुख-प्रमुख नगरों में लग्नों का समाप्तिकाल (भा.स्टै.टा.) आसानी से इस प्रकार जाना जा सकता है :-दैनिक लग्नसारणी से अपनी अभीष्ट तारीख को चण्डीगढ़ में लग्न का समाप्तिकाल जान लीजिए और उसमें अपने नगर के आगे और लग्न के नीचे इस कोष्ठक में लिखे मिनटों को चिह्न के अनुसार जोड़ने या घटाने से उस नगर में लग्न का समाप्ति काल मालूम हो जाएगा। **जैसे**-मद्रास में ९ अप्रैल को मिथुन लग्न का समाप्ति काल जानना है। ९ अप्रैल को चण्डीगढ़ में मिथुन का समाप्तिकाल १२ घं. ० मि. है, यह हमने दैनिक लग्नसारणी से ज्ञात किया। नीचे कोष्ठक में मद्रास, के आगे मिथुन के नीचे + १९ मिनट लिखे हैं। + होने से १९ मिनटों को १२ घं. ० मिनट में जोड़ने पर १२ घं. १९ मिनट मद्रास में ९ अप्रैल को मिथुनलग्न का समाप्तिकाल (भा.स्टै.टा.) बन गया।

नगर \ लग्न	मेष मि.	वृष मि.	मिथुन मि.	कर्क मि.	सिंह मि.	कन्या मि.	तुला मि.	वृश्चिक मि.	धनु मि.	मकर मि.	कुंभ मि.	मीन मि.
अजमेर	+१७	+१८	+१७	+१४	+१०	+६	+१	-१	०	+४	+८	+१२
अम्बाला	०	०	०	०	०	०	-१	-१	-१	०	०	०
अमृतसर	+७	+६	+६	+७	+८	+९	+१०	+१०	+१०	+९	+८	+७
अलवर	+७	+८	+७	+५	+२	-२	-५	-६	-६	-३	०	+४
अलीगढ़	+१	+२	+१	-१	-४	-८	-११	-१२	-१२	-९	-६	-२
अहमदाबाद	+३०	+३३	+३१	+२५	+१८	+११	+४	-१	+१	+८	+१५	+२३
आगरा	+१	+३	+२	-१	-४	-८	-११	-१३	-१३	-९	-६	-२
उज्जैन	+१८	+२१	+१९	+१३	+६	-१	-८	-१३	-११	-४	+३	+११
उदयपुर	+२४	+२६	+२५	+२०	+१४	+८	+२	-२	०	+५	+१२	+१८
इन्दौर	+१८	+२२	+२०	+१४	+५	-३	-१०	-१५	-१३	-६	+३	+१०
करनाल	+१	+१	+१	०	०	-१	-२	-२	-२	-१	-१	०
कलकत्ता	-३२	-२८	-३०	-३६	-४५	-५३	-६०	-६५	-६३	-५६	-४७	-४०
कांगड़ा	०	-१	-१	+१	+२	+३	+५	+६	+५	+४	+३	+१
कानपुर	-६	-५	-६	-९	-१३	-१७	-२२	-२४	-२३	-१९	-१५	-११
काशी	-१५	-१३	-१४	-१८	-२४	-२९	-३४	-३७	-३६	-३१	-२५	-२०
कुरुक्षेत्र	+२	+२	+२	+१	+१	०	-१	-१	-१	०	०	+१
कोटा	+१४	+१६	+१५	+११	+५	०	-५	-८	-७	-२	+४	+९
गुड़गांव	+४	+४	+४	+२	०	-२	-४	-५	-५	-३	-१	+१
गुरदासपुर	+३	+२	+२	+४	+५	+६	+८	+९	+८	+७	+६	+४
गोरखपुर	-१८	-१७	-१८	-२१	-२५	-२९	-३४	-३६	-३५	-३१	-२७	-२३
ग्वालियर	+३	+५	+४	०	-४	-९	-१३	-१६	-१५	-११	-६	-२
चम्बा	-१	-२	-१	०	+२	+५	+७	+८	+७	+६	+३	+१
जम्मू	+४	+३	+४	+५	+७	+१०	+१२	+१३	+१२	+११	+८	+६
जयपुर	+११	+१२	+११	+८	+५	+१	-३	-५	-४	०	+३	+७
जालन्धर	+५	+५	+५	+६	+६	+६	+६	+६	+६	+६	+६	+५
जीन्द	+५	+६	+५	+४	+३	+१	०	-१	-१	+१	+२	+४
जैसलमेर	+३१	+३२	+३१	+२८	+२५	+२१	+१७	+१५	+१६	+२०	+२३	+२७
जोधपुर	+२३	+२५	+२४	+२०	+१६	+११	+७	+४	+५	+९	+१४	+१८
झांसी	+३	+५	+४	०	-६	-११	-१६	-१९	-१८	-१३	-७	-२
दिल्ली	+३	+३	+३	+१	-१	-३	-५	-६	-६	-४	-२	०
देहरादून	-५	-५	-५	-५	-५	-५	-६	-६	-६	-५	-५	-५
नागपुर	+८	+११	+१०	+२	-७	-१७	-२६	-३१	-३९	-२०	-११	-२
नाभा	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+२	+३	+२	+३	+३	+३
नैनीताल	-८	-७	-८	-९	-१०	-१२	-१३	-१४	-१४	-१२	-११	-९
पटियाला	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+१	+१	+१	+२	+२	+२
पठानकोट	+१	+१	+१	+३	+४	+६	+८	+९	+८	+७	+५	+३
पटना	-२४	-२२	-२३	-२७	-३२	-३८	-४२	-४५	-४४	-३९	-३४	-२९
पुंछ	+४	+३	+४	+७	+१०	+१४	+१८	+२०	+१९	+१५	+१२	+८
प्रयाग	-११	-९	-१०	-१४	-१९	-२४	-२९	-३१	-३१	-२६	-२१	-१६
फरीदकोट	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८
फिरोजपुर	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९
बम्बई	+३६	+४१	+३८	+२९	+१८	+७	-४	-१०	-८	+३	+१४	+२५
बरेली	-६	-६	-६	-८	-१०	-१२	-१४	-१५	-१५	-१३	-११	-९
बंगलौर	+२६	+३३	+३०	+१७	०	-१६	-३२	-४०	-३७	-२२	-६	+११
बुलन्दशहर	०	०	०	-२	-४	-६	-८	-९	-९	-७	-५	-३
भटिण्डा	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+७	+७	+७	+८	+८	+८
भरतपुर	+३	+५	+४	+१	-२	-६	-९	-११	-११	-७	-४	०
भुवनेश्वर	-१८	-१४	-१६	-२४	-३४	-४४	-५४	-५८	-५७	-४८	-३८	-२८
भोपाल	+११	+१४	+१२	+६	-१	-८	-१५	-२०	-१८	-११	-४	+४
मद्रास	+१५	+२२	+१९	+६	-११	-२७	-४३	-५१	-४८	-३३	-१७	०
मथुरा	+३	+४	+३	+१	-२	-६	-९	-१०	-१०	-७	-४	०
मण्डी (हि.प्र.)	-२	-३	-३	-२	-१	०	+२	+२	+२	+१	०	-१
मलेरकोटला	+४	+४	+४	+४	+४	+४	+३	+३	+३	+४	+४	+४
मेरठ	-१	०	-१	-२	-३	-५	-६	-७	-७	-५	-४	-२
रोपड	+१	+१	+१	+१	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+१
रोहतक	+४	+५	+४	+३	+१	०	-२	-३	-३	-१	+१	+२
लखनऊ	-९	-८	-९	-१२	-१५	-१९	-२३	-२५	-२४	-२०	-१७	-१३
लुधियाना	+३	+३	+३	+३	+४	+४	+४	+४	+४	+४	+४	+३
शिमला	-२	-२	-२	-२	-१	-१	-१	-१	-१	-१	-१	-२
श्रीनगर (का.)	+१	०	+१	+४	+७	+११	+१५	+१७	+१६	+१२	+९	+५
सहारनपुर	-१	-१	-१	-२	-२	-३	-४	-४	-४	-३	-३	-२
हरिद्वार	-४	-४	-४	-५	-५	-६	-७	-७	-७	-६	-६	-५
हिसार	+७	+८	+७	+६	+५	+३	+२	+१	+१	+३	+४	+६
हैदराबाद	+१५	+२२	+१८	+८	-५	-१७	-२९	-३५	-३३	-२२	-९	+३
होशियारपुर	+२	+१	+१	+२	+३	+४	+५	+५	+५	+४	+३	+२

प्राचीन पद्धति द्वारा लग्न एवं दशम का साधन

जन्मपत्री एवं वर्षफल आदि की गणित में शुद्ध लग्न का साधन सबसे अधिक महत्वपूर्ण एवं श्रमसाध्य विषय है। इसके लिए ज्योतिषी को स्थानीयकाल का ज्ञान होना चाहिए, नगरों के अक्षांश–रेखांशों की प्रामाणिक सूची भी उसके पास होनी चाहिए, किञ्च भिन्न–भिन्न अक्षांशों की लग्नसारणियां उसके पास होना नितान्त आवश्यक है, क्योंकि किसी स्थान पर लग्न स्पष्ट करने के लिए उस स्थान के अक्षांश की लग्नसारणी का ही प्रयोग होता है। आगे हमने साम्पातिक काल द्वारा लग्न एवं दशम लग्न स्पष्ट करने की नवीन विधि दी है। यह विधि अपेक्षाकृत अधिक सूक्ष्म और सुविधाजनक है। इस विधि में अभीष्ट नगर का सूर्योदय, सूर्योदयात् इष्ट काल, दिनमान और इष्टकालिक सूर्य की जरुरत नहीं होती, जबकि प्रचीन विधि में इनकी जरूरत रहती है। यहां हम लग्न एवं दशम साधन की प्राचीन विधि दे रहे हैं।

लग्न साधनविधि

जिस नगर में लग्न स्पष्ट करना है, उस नगर में उस दिन का सूक्ष्म सूर्योदयकाल ज्ञात कीजिए। सूर्योदयकाल से अभीष्ट समय का सूर्योदयात् इष्ट (घ. प.) बना लीजिए और इष्टकालिक सूर्य स्पष्ट कर लीजिए। इस पंचांग में दी गई "अक्षांशादि सारणी" से अपने अभीष्ट नगर का अक्षांश ज्ञात कर लीजिए। अभीष्ट नगर के अक्षांश वाली लग्नसारणी द्वारा इस प्रकार लग्न स्पष्ट कीजिए:–

आगे 29, 30, 31 अक्षांशों की तीन लग्नसारणियां दी गई हैं, जो दिल्ली, पंजाब, तथा हरियाणा के लगभग सभी नगरों के लिए पर्याप्त हैं। अपने अभीष्ट नगर के अक्षांश वाली लग्नसारणी में इष्टकालिक स्पष्ट सूर्य की राशि के आगे और अंश के नीचे लिखे घड़ी, पलों को लेकर अलग लिख लीजिए। सारणी में इन घड़ी, पलों के दाईं ओर अगले अंश के नीचे जो घड़ी–पल दिए गए हैं, उनसे इन अलग लिखे गए घड़ी, पलों का अन्तर जानिए। अन्तर के इन पलों को "सहायक सारणी" (जो अगले पृष्ठ पर दी गई है) के बाईं ओर पहले कॉलम में देखिए। इसके आगे इस सारणी में जहां स्पष्ट सूर्य की कला–विकलाओं के बराबर या लगभग बराबर कला–विकलाएं लिखी हों, उनके बिल्कुल ऊपर सारणी की पहली लाईन में जो पल लिखे हों, उन्हें लेकर अलग लिखे हुए घड़ी, पलों में जोड दीजिए और उसमें इष्टकाल के घड़ीपल भी जोड़ दीजिए। इसे हम **"अभीष्ट घड़ी–पल"** कहेंगे। "अभीष्ट घड़ी–पल" यदि 60 घडी से अधिक हों तो उनमें से 60 घडी घटाकर, शेष ग्रहण करना चाहिए। "अभीष्ट घड़ी– पलों" के बराबर (बराबर न मिलें तो उनसे कुछ कम) घड़ी, पल लग्नसारणी में ढूंढिये, जिन्हें "सारणीस्थ घड़ी–पल" कहा जाएगा। "सारणीस्थ घड़ी–पलों" के बाईं ओर लग्नसारणी के पहले कॉलम में लिखी राशि और सबसे ऊपर लिखे अंशों को अलग लिख लीजिए। "सारणीस्थ घड़ी–पलों" के दाईं ओर सारणी के अगले अंश के नीचे दिए गए घड़ी–पलों का "सारणीस्थ घड़ी–पलों" से अन्तर कीजिए। इसे "सारणीस्थ अन्तर" कहेंगे। "सारणीस्थ घड़ी–पलों" और "अभीष्ट घड़ी–पलों "का भी अन्तर कीजिए। अन्तर के ये पल "सहायक सारणी" के बिल्कुल ऊपर वाली लाईन में जहां लिखे हैं, उसके नीचे "सारणीस्थ अन्तर" के बराबर पलों के आगे जो कला– विकला मिलें, उन्हें अलग लिखे राशि, अंशों में जोड दें। अब इसमें अगले पृष्ठ पर दी गई "अयनांश संस्कार सारणी" से अपने संवत् के आगे दी गई कलाओं को लेकर चिन्ह के अनुसार जोड़ने या घटाने पर निरयण लग्न स्पष्ट हो जाएगा।

उदाहरण– मान लीजिए– वि. सं. 2029 के वैशाख प्रविष्टे 3 को 58 घ. 45 प. इष्ट पर शिमला (हि.प्र.) में लग्न स्पष्ट करना है। इस समय स्पष्ट सूर्य 0 रा., 2 अंश 37 क. 47 वि. है। शिमला के अक्षांश 31 अंश 6 क. (उत्तर) हैं, अतः 31 अक्षांश वाली लग्नसारणी में स्पष्ट सूर्य की 0 (मेष) राशि के आगे 2 अंश के नीचे 2 घ. 55 प. हैं, इन्हें अलग लिखा। सारणी में 2 घ. 55 प. के दाईं ओर 3 अंश के नीचे 3 घ. 2 प. लिखे हैं। इनका 2 घ. 55 प. से अन्तर 7 पल है। "सहायक सारणी" के बाईं ओर पहले कॉलम में लिखे हुए 7 पल के आगे वाली पंक्ति में स्पष्ट सूर्य की 37 क. 47 वि. नहीं मिलीं। अतः सारणी में इनके लगभग बराबर 34 क. 17 वि. देखें, जिनके बिल्कुल ऊपर 4 पल लिखे हैं। इन्हें अलग लिखे 2 घ. 55 पल में जोड़ा और इष्टकाल के घ. प. भी इसमें जोडे तो 61 घ. 44 प. (60 घ. घटाने पर 1 घ. 44 प.) 'अभीष्ट घडी–पल' हुए। लग्नसारणी में 'अभीष्ट घडी–पल' 1 घ. 44 प. नहीं हैं, अतः इससे कुछ कम 1 घ. 40 प. सारणी में देखें, जो "सारणीस्थ घडी पल" हैं। इनके बाईं ओर सारणी के पहले कॉलम में 11 राशि और बिल्कुल ऊपर की लाईन में 21 अंश लिखे हैं। इन 11 रा. 21 अं. को अलग लिखा। लग्न सारणी में "सारणीस्थ घड़ी–पलों" (1 घ. 40 प.) के दाईं ओर 22 अंश के नीचे 1 घ. 46 प. का 1 घ. 40 प. से अन्तर 6 पल 'सारणीस्थ अन्तर' है। "अभीष्ट घड़ी–पल" (1 घ. 44 प.) और सारणीस्थ घड़ी–पल (1 घ. 40 प.) का अन्तर 4 पल है। 'सहायक सारणी' की ऊपर वाली लाईन में लिखे गए 4 पल के नीचे सारणीस्थ अन्तर के बराबर 6 पल के आगे 40क. 00वि. लिखा है। इन्हें 11रा. 21 अं. में जोड़ने पर 11 रा. और 21अं. 40क. 00 वि. हुआ। "अयनांश संस्कार सारणी" में वि. सं. 2029 के आगे +1 कला लिखा है। इसे चिन्हानुसार 11 रा. 21 अं. 40 क. 0 वि. में जोड़ने पर 11 रा. 21 अं. 41 क. 00 वि. निरयण लग्न स्पष्ट हुआ।

दशम लग्नसाधन

आगे साम्पातिक काल द्वारा दशम लग्न साधन की सरल पद्धति दी है, जिससे अभीष्ट स्थल का सूर्योदय, दिनमान तथा तात्कालिक सूर्यस्पष्ट जानने की अवश्यकता नहीं होती है। प्राचीन पद्धति से, जिसका निर्देश यहां किया जा रहा है, इन सब की आवश्यकता रहती है।

सारणी (अक्षांश २९° उत्तर) (पलभा ६।३९।६)

दिल्ली, मेरठ, रोहतक, हिसार, जींद, नैनीताल, मुरादाबाद आदि के लिए।

अंश→	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष घ.	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
० प.	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४६	५४	२	११	१९	२७	३५	४४	५२	०	८	१७	२५	३३	४२	५०	५८	६	१५	२३	३१	३९	[illegible]
वृष घ.	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
१ प.	४८	५६	४	१२	२१	२९	३७	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	[illegible]
मि. घ.	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	[illegible]
२ प.	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४८	५९	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	२	१४	२५	३७	४८	०	११
क. घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	[illegible]
३ प.	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१७	२८	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०
सिं. घ.	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	[illegible]
४ प.	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४४	५६	७	१९	३०	४१	५३	४	१६	२७	३८	५०	१	१३	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३२	[illegible]
क. घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	[illegible]
५ प.	४४	५५	७	१८	२९	४१	५२	४	१५	२६	३८	४९	१	१२	२३	३५	४६	५८	९	२०	३२	४३	५५	६	१७	२९	४०	५२	३	१४	[illegible]
तु. घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
६ प.	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२१	३२	४४	५६	७	१९	३१	४२	५४	६	१७	२९	४१	५२	४	१६	२७	३९	५१	२	[illegible]
वृ. घ.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	[illegible]
७ प.	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३६	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९	५०	२	१३	२५	३६	४८	[illegible]
धनु घ.	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१
८ प.	५९	११	२२	३४	४५	५७	८	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११
म. घ.	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५
९ प.	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२२	३०	३८	४६	५५	३	११	१९	२८	३६	४४	५२	१	९	१७	२६	३४	४२	५०	५९	७	१५	२३	[illegible]
कु. घ.	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	[illegible]
१० प.	३२	४०	४८	५६	५	१३	२१	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	६	[illegible]
मी. घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
११ प.	१४	२१	२८	३५	४२	४९	५६	४	११	१८	२५	३२	३९	४६	५३	१	८	१५	२२	२९	३६	४३	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४८

लग्न सारणी ३०° उत्तर (पलभा ६।५५।४२)

अम्बाला, करनाल, कुरुक्षेत्र, देहरादून, नाभा, पटियाला, भटिण्डा, जैसलमेर, अल्मोड़ा, सहारनपुर और हरिद्वार आदि के लिए

अंश→	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष घ.	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
० प.	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३२	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	४०
वृष घ.	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
१ प.	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६
मि. घ.	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	[illegible]
२ प.	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४८	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	२९	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२
क. घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	[illegible]
३ प.	२	१३	२५	३६	४८	५९	११	२२	३४	४६	५८	१०	२१	३३	४५	५७	९	२०	३२	४४	५६	८	१९	३१	४३	५५	७	१८	३०	४२	[illegible]
सिं. घ.	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	[illegible]
४ प.	५४	६	१७	२९	४१	५३	५	१६	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४३
क. घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
५ प.	४३	५४	६	१७	२९	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	१	१३	२४	३६	४८	५९	११	२२	३४	४५	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	३०
तु. घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
६ प.	३०	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२	१४	२६	३८	४९	१	१३	२५	३७	४८	०	१२	२४	३६	४७	५९	११	२३	३५	४६	५८	१०	[illegible]
वृ. घ.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६
७ प.	२२	३४	४५	५७	९	२१	३३	४४	५६	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०
धनु घ.	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
८ प.	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	[illegible]
म. घ.	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५
९ प.	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	३९	४७	५५	३	११	१९	२७	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३८
कु. घ.	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
१० प.	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४७	५४	१	८	१५
मी. घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
११ प.	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५७	३	१०	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	३	१३	२०	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४४

लग्न सारणी (अक्षांश ३१ उत्तर) (पलभा ७।१२।३७)

कपूरथला, चण्डीगढ़ , जालंधर, फरीदकोट, फिरोजपुर, रोपड़, लुधियाना, शिमला आदि के लिए

अंश →	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष घ	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
० प	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४२	५०	५८	६	१४	२२	३०	३८	४७	५५	३	११	१९	२७	३५
वृष घ	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
१ प	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१
मि. घ	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६
२ प	२१	३१	४१	५१	१	१०	२०	३०	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१५	२६	३८	४९	१	१२	२४	३५	४७	५९	१०	२२	३३	४५	५६
क. घ	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
३ प	५६	८	२०	३१	४३	५४	६	१७	२९	४१	५३	५	१७	२९	४०	५२	४	१६	२८	४०	५२	४	१५	२७	३९	५१	३	१५	२७	३८	५०
सिं. घ	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
४ प	५०	२	१४	२६	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२
क. घ	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
५ प	४२	५३	५	१७	२८	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३२
तु. घ	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०
६ प	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१७	२९	४१	५३	५	१६	२८	४०	५२	४	१६	२८	४०	५१	३	१५	२७	३९	५१	३	१४	२६
वृ. घ	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६
७ प	२६	३८	५०	२	१४	२६	३८	४९	१	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३४	४५	५७	८	२०	३१	४३	५४	६	१८	२९	४१	५२	४	१५
धनु घ	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
८ प	१५	२७	३९	५०	२	१३	२५	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६
म. घ	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५
९ प	२६	३६	४६	५६	६	१५	२५	३५	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५३	१	९	१७	२५	३३	४१
कु. घ	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
१० प	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२५	३२	३९	४६	५३	०	७	१४	२०	२७	३४	४१	४८	५५	२	८	१५
मी. घ	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
११ प	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५७	३	१०	१७	२४	३१	३८	४५	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४६	५३	०	७	१४	२१	२८	३४	४१

दशम लग्न सारणी (सर्वत्र उपयोगी)

अंश →	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष घ	३	३	३	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८
० प	३८	४७	५६	६	१५	२४	३३	४३	५३	३	१३	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२
वृष घ	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३
१ प	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१९	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४९
मि. घ	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९
२ प	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	१	१२
क. घ	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४
३ प	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३६	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७
सिं. घ	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२९
४ प	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३६	४५	५४	४	१३	२२	३१	४०	५०	५९	९	१८	२७	३६	४६	५५	४	१३	२३	३२	४१	५०	०
क. घ	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३
५ प	०	९	१८	२८	३७	४६	५५	५	१४	२३	३२	४२	५१	०	९	१९	२८	३७	४७	५६	५	१४	२४	३३	४२	५१	१	१०	१९	२८	३८
तु. घ	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८
६ प	३८	४७	५६	६	१५	२४	३३	४३	५३	३	१३	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२
वृ. घ	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३
७ प	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	३	१४	२४	३५	४६	५७	८	१९	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४९
धनु घ	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९
८ प	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	१	१२
म. घ	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४
९ प	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	[illegible]	४७	५७	७	[illegible]	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७
कु. घ	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
१० प	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३६	४५	५५	४	१३	२२	३१	४१	५०	५९	९	१८	२७	३६	४६	५५	४	१३	२३	३२	४१	५०	०
मी. घ	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३
११ प	०	९	१८	२८	३७	४६	५५	५	१४	२३	३२	४२	५१	०	९	१९	२८	३७	४७	५६	५	१४	२४	३३	४२	५१	१	१०	१९	२८	३८

सारणी (अक्षांश २९° उत्तर) (पलभा ६।३९।६)

दिल्ली, मेरठ, रोहतक, हिसार, जींद, नैनीताल, मुरादाबाद आदि के लिए।

अंश→	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष घ.	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
० प.	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४६	५४	२	११	१९	२७	३५	४४	५२	०	८	१७	२५	३३	४२	५०	५८	६	१५	२३	३१	३१	[illegible]
वृष घ.	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
१ प.	४८	५६	४	१२	२१	२९	३७	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	[illegible]
मि. घ.	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	[illegible]
२ प.	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४८	५९	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	२	१४	२५	३७	४८	०	११
क. घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	[illegible]
३ प.	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१७	२८	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०
सिं. घ.	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	[illegible]
४ प.	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४४	५६	७	१९	३०	४१	५३	४	१६	२७	३८	५०	१	१३	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३२	[illegible]
क. घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	[illegible]
५ प.	४४	५५	७	१८	२९	४१	५२	४	१५	२६	३८	४९	१	१२	२३	३५	४६	५८	९	२०	३२	४३	५५	६	१७	२९	४०	५२	३	१४	[illegible]
तु. घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
६ प.	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२१	३२	४४	५६	७	१९	३१	४२	५४	६	१७	२९	४१	५२	४	१६	२७	३९	५१	२	[illegible]
वृ. घ.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	[illegible]
७ प.	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३६	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९	५०	२	१३	२५	३६	४८	[illegible]
धनु घ.	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१
८ प.	५९	११	२२	३४	४५	५७	८	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	[illegible]
म. घ.	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	[illegible]
९ प.	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२२	३०	३८	४६	५५	३	११	१९	२८	३६	४४	५२	१	९	१७	२६	३४	४२	५०	५९	७	१५	२३	[illegible]
कु. घ.	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	[illegible]
१० प.	३२	४०	४८	५६	५	१३	२१	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	६	[illegible]
मी. घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
११ प.	१४	२१	२८	३५	४२	४९	५६	४	११	१८	२५	३२	३९	४६	५३	१	८	१५	२२	२९	३६	४३	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	[illegible]

लग्न सारणी ३०° उत्तर (पलभा ६।५५।४२)

अम्बाला, करनाल, कुरुक्षेत्र, देहरादून, नाभा, पटियाला, भटिण्डा, जैसलमेर, अल्मोड़ा, सहारनपुर और हरिद्वार आदि के लिए

अंश→	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष घ.	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
० प.	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३२	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	४०
वृष घ.	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
१ प.	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६
मि. घ.	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	[illegible]
२ प.	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४८	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	२९	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	[illegible]
क. घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	[illegible]
३ प.	२	१३	२५	३६	४८	५९	११	२२	३४	४६	५८	१०	२१	३३	४५	५७	९	२०	३२	४४	५६	८	१९	३१	४३	५५	७	१८	३०	४२	[illegible]
सिं. घ.	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	[illegible]
४ प.	५४	६	१७	२९	४१	५३	५	१६	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	[illegible]
क. घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	[illegible]
५ प.	४३	५४	६	१७	२९	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	१	१३	२४	३६	४८	५९	११	२२	३४	४५	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	३०
तु. घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
६ प.	३०	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२	१४	२६	३८	४९	१	१३	२५	३७	४८	०	१२	२४	३६	४७	५९	११	२३	३५	४६	५८	१०	[illegible]
वृ. घ.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६
७ प.	२२	३४	४५	५७	९	२१	३३	४४	५६	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०
धनु घ.	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
८ प.	१०	२२	३३	४४	५६	७	१९	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०
म. घ.	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	[illegible]
९ प.	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	३९	४७	५५	३	११	१९	२७	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	[illegible]
कु. घ.	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
१० प.	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४७	५४	१	८	[illegible]
मी. घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
११ प.	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५७	३	१०	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	३	१३	२०	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	[illegible]

लग्न सारणी (अक्षांश ३१ उत्तर) (पलभा ७।१२।३७)

कपूरथला, चण्डीगढ़ , जालंधर, फरीदकोट, फिरोजपुर, रोपड़, लुधियाना, शिमला आदि के लिए

अंश →	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष घ	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
० प	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४२	५०	५८	६	१४	२२	३०	३८	४७	५५	३	११	१९	२७	३५
वृष घ	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
१ प	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१
मि. घ	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६
२ प	२१	३१	४१	५१	१	१०	२०	३०	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१५	२६	३८	४९	१	१२	२४	३५	४७	५९	१०	२२	३३	४५	५६
क. घ	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
३ प	५६	८	२०	३१	४३	५४	६	१७	२९	४१	५३	५	१७	२९	४०	५२	४	१६	२८	४०	५२	४	१५	२७	३९	५१	३	१५	२७	३८	५०
सिं. घ	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
४ प	५०	२	१४	२६	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२
क. घ	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
५ प	४२	५३	५	१७	२८	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३२
तु. घ	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०
६ प	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१७	२९	४१	५३	५	१६	२८	४०	५२	४	१६	२८	४०	५१	३	१५	२७	३९	५१	३	१४	२६
वृ. घ	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६
७ प	२६	३८	५०	२	१४	२६	३८	४९	१	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३४	४५	५७	८	२०	३१	४३	५४	६	१८	२९	४१	५२	४	१५
धनु घ	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
८ प	१५	२७	३९	५०	२	१३	२५	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६
म. घ	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५
९ प	२६	३६	४६	५६	६	१५	२५	३५	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५३	१	९	१७	२५	३३	४१
कु. घ	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
१० प	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२५	३२	३९	४६	५३	०	७	१४	२०	२७	३४	४१	४८	५५	२	८	१५
मीं. घ	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
११ प	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५७	३	१०	१७	२४	३१	३८	४५	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४६	५३	०	७	१४	२१	२८	३४	४१

दशम लग्न सारणी (सर्वत्र उपयोगी)

अंश →	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष घ	३	३	३	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८
० प	३८	४७	५६	६	१५	२४	३३	४३	५३	३	१३	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२
वृष. घ	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३
१ प	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१९	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४९
मि. घ	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९
२ प	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	१	१२
क. घ	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४
३ प	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३६	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७
सिं. घ	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२९
४ प	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३६	४५	५४	४	१३	२२	३१	४०	५०	५९	९	१८	२७	३६	४६	५५	४	१३	२३	३२	४१	५०	०
क. घ	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३
५ प	०	९	१८	२८	३७	४६	५५	५	१४	२३	३२	४२	५१	०	९	१९	२८	३७	४७	५६	५	१४	२४	३३	४२	५१	१	१०	१९	२८	३८
तु. घ	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८
६ प	३८	४७	५६	६	१५	२४	३३	४३	५३	३	१३	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२
वृ. घ	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३
७ प	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	३	१४	२४	३५	४६	५७	८	१९	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४९
धनु घ	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९
८ प	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	१	१२
म. घ	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४
९ प	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	[illegible]	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७
कु. घ	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
१० प	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३६	४५	५५	४	१३	२२	३१	४१	५०	५९	९	१८	२७	३६	४६	५५	४	१३	२३	३२	४१	५०	०
मीं. घ	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३
११ प	०	९	१८	२८	३७	४६	५५	५	१४	२३	३२	४२	५१	०	९	१९	२८	३७	४७	५६	५	१४	२४	३३	४२	५१	१	१०	१९	२८	३८

दशमलग्न साधनविधि

इष्टकाल के घ. प. में से दिनार्ध (अभीष्ट नगर के दिनमान का आधा) घटाएं। यदि दिनार्ध से इष्ट कम हो तो इष्ट में ६० घड़ी जोड़कर दिनार्ध घटाएं, जो शेष बचे वह नतकाल होगा। नतकाल के घ. प. को इष्ट के घ. प. समझकर तात्कालिक स्पष्ट सूर्य द्वारा दशम लग्नसारणी से ठीक उसी तरह दशम लग्न स्पष्ट कीजिए जैसे कि ऊपर लग्नसारणी से लग्न स्पष्ट किया गया है। दशम लग्नसारणी सभी नगरों के लिए एक ही होती है।

दशमलग्न साधन का उदाहरण:— वि. सं. २०२६ के वैशाख प्रविष्टे ३ को शिमला में ५८घ. ४५ प. इष्ट पर दशमलग्न स्पष्ट करना है। इस समय स्पष्ट सूर्य ० रा. २ अं. ३७ क. ४७ वि. है। इस दिन शिमला में दिनमान ३१ घ. ५६ प. है, अत: दिनार्ध १६ घ. ० प. हुआ। इष्ट काल ५८ घ. ४५ प. में से दिनार्ध घटाने पर ४२ घ. ४५ प. नतकाल हुआ, जो दशमसाधन के लिए इष्टकाल है। दशमलग्न सारणी में स्पष्ट सूर्य की ० राशि के आगे २ अंश के नीचे ३ घ. ५६ प. मिला। इसे पृथक् लिखा। सारणी में ३ घ. ५६ प. के दाईं ओर (३ अं. के नीचे) ४ घ. ०६ प. लिखा है। ३।५६ और ४।६ का अन्तर १० पल है। सहायक सारिणी में १० पल के आगे स्पष्ट सूर्य की ३७ क. ४७ वि. के लगभग बराबर ३६ क. ०० वि. है। इसके ऊपर सारिणी में ६ पल लिखा है। इन ६ पलों को अलग लिखे ३ घ. ५६ प. में जोड़कर इसमें नतकाल जोड़ा तो ४६ घ. ४७ प. 'अभीष्ट घड़ी–पल' हुए। "दशम लग्नसारणी" में इन "अभीष्ट घड़ी–पलों" से कुछ कम घ. प. ४६।४२ 'सारणीस्थ घड़ी पल' धनु (८) राशि के आगे १६ अंश के नीचे लिखे हैं। अतः ८ रा. १६ अं. को अलग लिखा। सारणी में ४६।४२ के दाईं ओर (१७ अं. के नीचे) लिखे ४६।५२ का ४६।४२ से अन्तर १० पल का "सारणीस्थ अन्तर" हुआ। 'सारणीस्थ घड़ी–पल' ४६।४२ और अभीष्ट घड़ीपल ४६।४७ का अन्तर ५ पल है। अब 'सहायक सारणी' में १० पल के आगे ५ पल के नीचे ३० क. ०० वि. मिली। इन्हें अलग लिखे ८ रा. १६ अं. में जोडने पर ८ रा.१६ अं. में जोड़ने पर ८ रा. १६ अं. ३० क. ० वि. हुई। इसमें "अयनांश संस्कार सारणी" में वि. सं. २०२६ के आगे दिया गया अयनांश संस्कार + १क. चिह्नानुसार जोड़ने पर ८ रा. १६ अं. ३१ क. ०० वि. निरयण दशमलग्न स्पष्ट हुआ।

सहायक सारणी

पल → ↓	१		२		३		४		५		६		७		८		९		१०		११		१२		१३	
	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.
६	१०	०	२०	०	३०	०	४०	०	५०	०	६०	०														
७	८	३४	१७	९	२५	४३	३४	१७	४२	५१	५१	२६	६०	०												
८	७	३०	१५	०	२२	३०	३०	०	३७	३०	४५	०	५२	३०	६०	०										
९	६	४०	१३	२०	२०	०	२६	४०	३३	२०	४०	०	४६	४०	५३	२०	६०	०								
१०	६	०	१२	०	१८	०	२४	०	३०	०	३६	०	४२	०	४८	०	५४	०	६०	०						
११	५	२७	१०	५५	१६	२२	२१	४९	२७	१६	३२	४४	३८	११	४३	३८	४९	५	५४	३३	६०	०				
१२	५	०	१०	०	१५	०	२०	०	२५	०	३०	०	३५	०	४०	०	४५	०	५०	०	५५	०	६०	०		
१३	४	३७	९	१४	१३	५१	१८	२८	२३	५	२७	४२	३२	१९	३६	५६	४१	३३	४६	१०	५०	४७	५५	२३	६०	०

अयनांश संस्कार सारणी

विक्रम संवत्	संस्कार कला	विक्रम संवत्	संस्कार कला	विक्रम संवत्	संस्कार कला	विक्रम संवत्	संस्कार कला	विक्रम संवत्	संस्कार कला	विक्रम संवत्	संस्कार कला	विक्रम संवत्	संस्कार कला
२०२३	+ ७	२०३१	०	२०३९	— ७	२०४७	— १३	२०५५	— २०	२०६३	—२६	२०७१	—३३
२०२४	+ ६	२०३२	— १	२०४०	— ८	२०४८	— १४	२०५६	— २१	२०६४	—२७	२०७२	—३४
२०२५	+ ५	२०३३	— २	२०४१	— ९	२०४९	— १५	२०५७	— २२	२०६५	—२८	२०७३	—३५
२०२६	+ ४	२०३४	— ३	२०४२	— ९	२०५०	— १६	२०५८	—२२	२०६६	—२९	२०७४	—३६
२०२७	+ ३	२०३५	— ४	२०४३	—१०	२०५१	— १७	२०५९	—२३	२०६७	—३०	२०७५	—३६
२०२८	+ २	२०३६	— ४	२०४४	—११	२०५२	— १८	२०६०	—२४	२०६८	—३१	२०७६	—३७
२०२९	+ १	२०३७	— ५	२०४५	—१२	२०५३	— १८	२०६१	—२५	२०६९	—३१	२०७७	—३८
२०३०	+ १	२०३८	— ६	२०४६	— १३	२०५४	— १९	२०६२	—२६	२०७०	—३२	२०७८	—३९

सूक्ष्म लग्न एवं दशमलग्न स्पष्ट करने की नवीन सरल विधि

यहां हम सूक्ष्म लग्न एवं दशमलग्न स्पष्ट करने की एक नवीन सरल विधी दे रहे है । स्पष्ट सूर्य द्वारा लग्न स्पस्ट करने में अधिक परिश्रम होता है, इसलिए इस विषय में पाश्चात्य ज्योतिषियों ने 'साम्पातिककाल' की पद्धति को अपनाया है । यहां हम ''साम्पातिककाल क्या है''- इस विषय का कुछ सैद्धान्तिक- विवेचन न करते हुए, इससे लग्न स्पष्ट-करने की सर्व- साधारणोपयोगी विधि प्रस्तुत कर रहे हैं ।

विधि:- सां. का. (साम्पतिककाल)से लग्न स्पष्ट करने के लिए सर्वप्रथम नीचे लिखे उपकरण (चीजें), जो इस पंचांग में दिए गए कोष्ठकों (सारणियों)से बिना किसी परिश्रम के तैयार किए जा सकते है , तैयार करें -

(१) अभीष्ट नगर के अक्षांश (उत्तर या दक्षिण)
(२) अभीष्ट नगर के रेखांश (पूर्व या पश्चिम)
(३) अभीष्ट नगर का स्टैण्डर्ड अन्तर(+या-)

ये तीनों उपकरण 'अक्षांशादि सारणी 'से उठाइये ।

विशेष- यदि ''अक्षांशादि सारणी '' में अभीष्ट नगर न मिले तो उसके निकटतम किसी अन्य नगर के अक्षांशादि प्रयोग में लाए जा सकते है ।

ध्यान रहे- भारत के सभी नगरों के अक्षांश उत्तर और रेखांश पूर्व ही है ।

(४) अभीष्ट नगर का स्थानीयमध्यमकाल- जिस समय लग्न स्पष्ट करना हो उस समय के स्वदेशीय स्टैण्डर्ड - टाईम में अभीष्ट नगर (जहां का लग्न स्पष्ट करना हो, वहां) के स्टैण्डर्ड - अन्तर के मिनटादि(या घण्टादि) को चिन्हानुसार जोड़ने या घटाने से अभीष्ट नगर का **''स्थानीयमध्यमकाल''** बन जाता है + यह चिह्न जोड़ने की एवं- यह चिह्न घटाने की प्रक्रिया को बतलाता है ।

जैसे- चण्डीगढ में दोपहर के १२घं. ५७ मि. (भा. स्टैं टा.) पर स्थानीयमध्यकाल जानने के लिए इस (भा. स्टैं टा.)में से चण्डीगढ का स्टैण्डर्ड अन्तर -२२ मिनट ३२ सेकण्ड चिन्हानुसार घटाया, तो १२ घं. ३४ मि. २८ सें. स्थानीयमध्यमकाल बना।

१सितं.१९४२ ई. से १५ अक्तू १९४५ ई. तक भारत में युद्ध के कारण घड़ियां एक घण्टा आगे की गई थी । अतः इन दिनों में घड़ियों द्वारा जाने गए टाईम में से १ घण्टा घटा कर उसे भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम समझना चाहिए।

जैसे- सन्१९४४ की २० अग. को काई बच्चा भारत में युद्ध के समयानुसार दिन में १२ बज कर ४५ मि. पर पैदा हुआ । इसका जन्मपत्र बनाने के लिए हमें इस बच्चे का जन्म काल भा. स्टै.टा. के अनुसार ११ घं ४५ मि. मानना होगा ।

(५) अभीष्ट तारीख का अयनांश - आगे दो [नं.(१) और नं.(२)]अयनांशसारणियां दी गई है । अयनांशसारणी नं.(१) में से अभीष्ट सन् के आगे लिखाअंशादि अयनांश लें, और अयनांशसारणी नं. (२) में से अभीष्ट मास की अभीष्ट तारीख का विकलादि फल लेकर उसमें जोड़ दें; - यह अभीष्ट तारीख का अयनांश होगा ।

जैसे - १५ जुलाई १९६९ ई. को अयनांश जानने के लिए अयनांशसारणी नं.(१) में से सन् १९६९ ई. के आगे लिखा अयनांश २३अं.२५ क २६ वि. प्राप्त किया । इसमें अयनांशसारणी नं.(२)से प्राप्त की गई १५ जुलाई की २७ वि. जोडने पर २३ अं.२५क. ५६ वि. हमारा अभीष्ट अयनांश हुआ ।

(६) इष्टकालिक साम्पातिककाल - आगे साम्पातिककाल के चार कोष्ठक दिए गये है । इनके आधार पर इष्टकालिक साम्पातिककाल इस प्रकार सरलता से बनाया जा सकता है-

सां. का. कोष्ठक नं. (१) में से अभीष्ट सन् का सां. का. उठाएं। उसमें साम्पातिक काल कोष्ठक नं.(२)से अभीष्टमास की अभीष्ट तारीख का (लीप ईयर हो तो केवल फरवरी के बाद के महीनों में अभीष्ट तारीख की जगह उससे एक आगे की तारीख का) सां. का. लेकर जोड़ें । इसमें सां. का. कोष्ठक नं.(३)से अभीष्ट नगर के रेखांशों द्वारा सैकण्डात्मक संस्कार उठा कर चिन्हानुसार जोडें या घटाएं । इस प्रकार मिले सां. का के घं. मि. में अभीष्ट स्थानीयमध्यमकाल(जिसका साधन पहले बताया जा चुका है) के घण्टा- मिनटादि जोडें और फिर इस योगफल में स्थानीयमध्यमकाल के घण्टा- मिनटों द्वारा सां. का. कोष्ठक नं.(४)से प्राप्त किए गए मिनटादि जोड़ देने से इष्टसमय का घण्टादि सां. का बन जाएगा । इस प्रकार बना सां. का. यदि २४ घं. से अधिक हो तो उसमें से २४ घटा कर शेष ही ग्रहण करना चाहिए ।

साम्पातिककाल साधन का उदाहरण - यहां हम १५ जुलाई १९६९ को भा. स्टै.टा. के अनुसार प्रातः १०घं.४५मि. पर चम्बा (हि. प्र.)में सां. का. स्पष्ट करेंगें । अक्षांशादि सारणी में चम्बा के अक्षांश ३२ अं. २९ क. (उत्तर), रेखांश ७६ अं. १०क.(पूर्व)एंव स्टैं. अन्तर - २५ मि. २० से. है । स्टैण्डर्ड अन्तर ऋण चिह्न वाला है, अतः इसे १० घण्टे४५ मि. में से घटाने पर १० घं. १९ मि. ४० से. चम्बा का स्थानीयमध्यमकाल हुआ । सां. का . कोष्ठक नं. (१)से सन् १९६९ ई. का सां. का. (६घं.४१ मि. २ से.) लिया । इसमें कोष्ठक नं.(२)से लिया गया १५ जुला. का सां का. (१२घं. ४८ मि. ४९ से.)जोड़ा तो १९ घं.२९ मि. ५१ सै. हुआ । चम्बा के रेखांश ७६अं.१० क. के लिए कोष्टक नं.(३)वाला संस्कार तो० है। अब १९घं. २९ मि. ५१सैं. चम्बा का स्थानीयमध्यमकाल १०घं.१९मि ४० सै. जोडा तो २९घं. ४९मि. ३१ सै. हुए। इसमें कोष्ठक न. (४)से स्थानीयमध्यमकाल के १०घं. २० मि. उठाए गए १ मि. ४२सै. जोड़ने पर २९ घं. ५१ मि. १३ से. हुए । क्योकि यहां घण्टे२४से अधिक हैं अतः२४ घं. घटाए तो ५घं. ५१मि. १३से. अभीष्ट साम्पातिककाल हुआ ।

साम्पातिककाल बनाते समय नीचे लिखी इन बातों को भी ध्यान में रखें:-

(१)यदि धन (+)चिह्न वाले स्टैण्डर्डअन्तर (स्टैं. अं.)के मिनटों को स्टैण्डर्ड टाईम में जोड़ने पर स्थानीयमध्यमकाल २४ घं. या इससे ज्यादा हो जाए तब उसमें से २४ घण्टा घटा दें और ऊपर बतलाई विधि से प्राप्त साम्पातिककाल में ४ मि. जोड कर उसे शुद्ध साम्पातिककाल समझें । जैसे - कलकता में २जन. १९७४ ई. को २३ घंटा ५५ मि. (रात के ११ बज कर ५५ मि.)भा. स्टै. टा. पर साम्पातिककाल ज्ञात करना है । कलकता का रेखांश ८८अं. २४ क, (पूर्व)और स्टैं. अन्तर +२३ मि. ३६ से. है। स्थानीयमध्यमकाल बनाने के लिए२३ घं. ५५ मि. में २३ मि. ३६ सै. जोड़े तो २४ घं. १८ मि. ३६से. हुए यह २४ घं. से ज्यादा हो गया है , अतः इसमें से २४ घं. घटाने पर ० घं. १८ मि. ३६ से.

स्थानीयमध्यमकाल हुआ । अब सां. का. बनाने के लिए कोष्ठक नं.(१) से १९७४ के आगे लिखे ६ घं. ४० मि. १२ से. में कोष्ठक नं.(२) से लिए गए २ जन. के ० घं. ३ मि. ५७ से. जोडने पर ६ घं. ४४ मि. ९ से. हुए। इसमें कोष्ठक नं. (३) से कलकता के रेखांश ८८ से प्राप्त −८ से. चिह्न के अनुसार घटाए, तो ६ घं. ४४ मि. १ से. हुए । इसमें स्थानीयमध्यमकाल जोड़ने पर ७ घं., २ मि. ३७ से. हुए । इसमें कोष्ठक नं.(४)से स्थानीयमध्यमकाल के ० घं. १९ मि. द्वारा प्राप्त ३ से. जोडने पर ७घं. २ मि. ४० से. हुए । क्योंकि स्टैं.टा. में स्टैं. अन्तर के मिनट जोडने पर स्थानीयमध्यमकाल २४ घं. से ज्यादा हो गया था । अतः उपरोक्त नियमानुसार इसमें ४ मि. और जोड़ने पर ७ घं. ६ मि. ४० से. हमारा अभीष्ट साम्पातिककाल बना । लग्न और दशम को स्पष्ट करने के लिए इसी सां. का. को प्रयोग में लाइए ।

(२)सा. का. बनाते समय दूसरी बात यह भी ध्यान में रखें कि यदि स्टैं. टा. से ऋण चिह्न वाले स्टैं. अन्तर के मिनटादि अधिक हों तो स्थानीयमध्यमकाल बनाने के लिए स्टैं. टा. में २४ घंटे जोड कर स्टैं. अन्तर घटाना चाहिए और ऐसी स्थिति में सा.का. कोष्ठक नं. (४)का प्रयोग नहीं करना चाहिए । जैसे- जयपुर में १५ मार्च १९७० को ०घं. १५ मि.(भा. स्टै. टा.) पर साम्पातिककाल ज्ञात करना है । जयपुर के रेखांश ७५ अं. ५२ क. (पूर्व)और स्टैं अं.- २६ मि. ३२ से. है । यहां स्टैं टा. के घं. मि. में से स्टैं. अं. ज्यादा है, अतः स्टै. टा. में २४घं. जोड़ कर स्टैं अं. घटाने पर २३ घं. ४८ मि. २८ से. स्थानीयमध्यमकाल बना । सां. का. के कोष्ठक नं.(१)से प्राप्त १९७० ई. के ६ घं. ४० मि. ५ से. में कोष्ठक नं. (२) से प्राप्त १५ मार्च के ४ घं. ४७ मि. ४९ से जोड़ने पर ११ घं. २७ मि. ५४से. हुए । जयपुर के रेखांश ७६ (पूर्व) का कोष्ठक नं. ३ वाला संस्कार लगभग ० है । अब ११ घं. २७ मि. ५४ से. में स्थानीयमध्यमकाल जोड़ा तो ३५ घं. १६ मि. २२ से. हुए । क्योंकि हमारा स्टैं. टा. हमारे नगर के ऋण स्टैं. अं. से कम था अतः यहां साम्पातिककाल कोष्ठक नं.(४)का प्रयोग हम नहीं करेगें । इसलिए हमारा अभीष्ट साम्पातिककाल ११घं. १६ मि. २२ से. ही हुआ । यहां घंटे २४ से अधिक होने से उसमें से २४ घंटे घटा दिए गए हैं।

(३)जैसाकि हम पहिले भी लिख चुके हैं - लीप इयर (२९ फरवरी वाले साल)में फरवरी के बाद के महीनों की किसी तारीख का सां. का. बनाना हो तो उस तारीख में एक जोड़ कर साम्पातिककाल कोष्ठक नं. (२) को प्रयोग में लाना चाहिए। जैसे -मान लीजिए, १५ मार्च सन् १९४४ को किसी नगर में सां. का. स्पष्ट करना है। साम्पातिककाल कोष्ठक नं. (१) में सन् १९४४ के आगे लिखे ६ घं. ३७ मि. १७ से. मिलें । क्योंकि हमारा सन् लीप इयर है और हमारी तारीख (१५ मार्च)फरवरी के बाद की भी है, इसलिए ''साम्पातिककाल कोष्ठक नं. (२)'' में से हम १५ मार्च की जगह १६ मार्च के घं. मि. सै. (४ घं.५१ मि. ४५ से.)ही लेगें और इन्हें ही ६ घं. ३७मि. १७ से. में जोड़ेंगे । ध्यान रहे- यदि सन् १९४४ की १० फर. को हमें सां. का. स्पष्ट करना हो तो ''साम्पातिककाल कोष्ठक नं.(२)''से १० फर.के ही घं. मि. से. उठाने होगें ।

साम्पातिककाल से लग्नसाधन की विधिः-

उपर दी गई विधि से जाने गए अभीष्ट सां. का. (साम्पातिककाल) के घं. मि. को आगे दी गई लग्नसारणी के बाईं और वाले पहिले कालम में देखें । इसके आगे अभीष्ट नगर के अक्षांश के नीचे जो लग्न की अंश कला लिखी हैं, उन्हें अलग नोट कर लें। क्योंकि सारणी में सां. का. ३०-३० मिनटों के अन्तर पर और लग्नसारणी ३-३ अक्षांशों के अन्तर पर दी हुई है । अतः अधिकतर यहां सम्भव है कि आपको लग्न सारणी में अभीष्ट सां. का. के घं. मिं. न मिले और यह भी अधिकतर सभव है कि आपको लग्नसारणी में अभीष्ठ सां का. के घं. मि. न मिलें और यह भी सम्भव है कि अभीष्ट अक्षांश वाली लग्नसारणी भी न मिले । ऐसी स्थिति में सारणी में अभीष्ट सां. का. के समीपतम (अभीष्ट सां. का. से कम)सां. का. के आगे और अपने अभीष्ट अक्षांश के समीपतम(अभीष्ट अक्षांश से कम) अक्षांश वाली लग्नसारणी में लिखीं लग्न की अंश - कलाएं नोट करें - यह ''स्थूलतम लग्न''है । अब ३० मि. में लग्न की गति सारणी से ही ज्ञात कीजिए, (अर्थात् यह ज्ञात कीजिए कि ३०मि. में लग्न कितना आगे बढ़ता है) ३० मि. की लग्नगति की कलाओं को सां. का. के शेष मिनटों से गुणा करके ३० से भाग देने पर कलाएं मिलेंगी । इन्हें ''स्थूलतम लग्न'' में जोड़ देने से ''स्थूललग्न'' बन जाएगा। अब सारणी से ही ३ अक्षांशों की लग्न की गति मालूम करें । ३ अक्षांशों में लग्न घटता है तो यह ''३ अक्षाशों की लग्नगति'' ऋण, अन्यथा धन होगी । अपने अक्षांश की शेष अंश−कलाओं की कलाएं बना कर उन्हें ''३ अक्षाशों की लग्नगति '' की कलाओं से गुणा करके १८० से भाग देने पर कलाएं मिलेंगी । इन्हें ''३ अक्षाशों की लग्नगति'' के धन,ऋण चिह्न के अनुसार स्थूललग्न में जोड़ने या घटाने से सायनलग्न स्पष्ट होगा । इसमें से उस दिन के अयनांश घटा देने पर फलितोपयोगी निरयण लग्न स्पष्ट हो जाएगा।

दशमलग्न स्पष्ट करने की विधि :- लग्नसारणी के दूसरे कालम में दशम (दशमलग्न)दिया गया है । इससे सभी नगरों में दशमलग्न स्पष्ट किया जा सकता है (अर्थात् -दशम स्पष्ट करने के लिए अक्षाशों की जरूरत नहीं होती।) अभीष्ट सां. का. के घं. मि. के आगे सारणी में दशम (दशमलग्न)की अंश-कलाएं उठा लें। यह ''स्थूलदशमलग्न'' है। सां.का. के शेष मिनटों से दशमलग्न की ३० मि. की गति की कलाओं को गुणा करके ३०से भाग देने पर कलाएं मिलेगी। इन्हें ''स्थूलदशमलग्न'' में जोड़ने पर इष्टकालिक सायनदशम होगा । इसमें से उसदिन का अयनांश घटा देने पर निरयण दशमलग्न स्पष्ट हो जाएगा।

लग्नसाधन का उदाहरणः-चम्बा (हि.प्र.) में १५ जुलाई सन् १९६९ को प्रातः १० घं. ४५ मि. (भा. स्टै. टा.)पर लग्न स्पष्ट करना है ।

ऊपर हमने चम्बा में १५ जुलाई १९६९ को प्रातः १० घंटे ४५मि. (भा. स्टै. टा.)पर सां.का. ५ घं. ५१ मि. १३ सै. स्पष्ट किया है । चम्बा के अक्षांश ३२ अं.२९ क. है। लग्नसारणी में अक्षांश ३२ के नीचे सां. का. ५ घं. ३० मि. के आगे लग्न १७३ अं. ३४ क. लिखा है । यह ''स्थूलतम लग्न''है। लग्नसारणी में अक्षांश ३२ के नीचे सां. का. ५ घ. ३० मि. के आगे १७३ अं. ३४ क. और सां. का.६घं. ० मि. के आगे १८० अं.० क. लिखा है । इन दोनों का अन्तर ६अं. २६ क. (=३८६क.) लग्न की ३० मि. की गति है । हमारे अभीष्ट सां. का. ५ घ. ५१ मि. और ५ घं. ३० मि. का अन्तर २१ मि. है । इन २१ मि. (सा.का.के शेष मिनटों) से लग्न की ३० मिनट की गति कलाओं (३८६) को गुणा करके ३० का भाग देने पर २७० क. (= ४ अं. ३० क.) मिलीं। इन्हें '' स्थूलतम लग्न '' में जोड़ने पर १७८ अं. ४ क. ''स्थूल लग्न '' हुआ ।

लग्न सारणी (पूरे भारत के लिए) {भाग १ म}

साम्पातिक काल		सभी स्थलों के लिए		अक्षांश ८°(उ.)		अक्षांश ११°(उ.)		अक्षांश १४°(उ.)		अक्षांश १७°(उ.)		अक्षांश २०°(उ.)	
		दशम		लग्न		लग्न		लग्न		लग्न		लग्न	
घं.	मि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
०	०	०	०	९३	१२	९४	२५	९५	४०	९६	५६	९८	१४
०	३०	८	१०	१००	३	१०१	१५	१०२	२७	१०३	४१	१०४	५७
१	०	१६	१७	१०६	५४	१०८	३	१०९	१३	११०	२४	१११	३६
१	३०	२४	१८	११३	४७	११४	५३	११५	५९	११७	६	११८	१४
२	०	३२	११	१२०	४३	१२१	४५	१२२	४७	१२३	५०	१२४	५२
२	३०	३९	५५	१२७	४५	१२८	४३	१२९	४०	१३०	३६	१३१	३३
३	०	४७	२८	१३४	५४	१३५	४५	१३६	३६	१३७	२७	१३८	१८
३	३०	५४	५१	१४२	१०	१४२	५५	१४३	३९	१४४	२२	१४५	६
४	०	६२	५	१४९	३३	१५०	१०	१५०	४६	१५१	२३	१५१	५८
४	३०	६९	१२	१५७	३	१५७	३१	१५८	०	१५८	२७	१५८	५५
५	०	७६	११	१६४	३८	१६४	५८	१६५	१७	१६५	३६	१६५	५४
५	३०	८३	७	१७२	१८	१७२	२८	१७२	३८	१७२	४७	१७२	५७
६	०	९०	०	१८०	०	१८०	०	१८०	०	१८०	०	१८०	०
६	३०	९६	५३	१८७	४२	१८७	३२	१८७	२२	१८७	१३	१८७	३
७	०	१०३	४९	१९५	२२	१९५	२	१९४	४३	१९४	२४	१९४	६
७	३०	११०	४८	२०२	५७	२०२	२९	२०२	०	२०१	३३	२०१	५
८	०	११७	५५	२१०	२७	२०९	५०	२०९	१४	२०८	३७	२०८	२
८	३०	१२५	९	२१७	५०	२१७	५	२१६	२१	२१५	३८	२१४	५४
९	०	१३२	३२	२२५	६	२२४	१५	२२३	२४	२२२	३३	२२१	४२
९	३०	१४०	५	२३२	१५	२३१	१७	२३०	२०	२२९	२४	२२८	२७
१०	०	१४७	४९	२३९	१७	२३८	१५	२३७	१३	२३६	१०	२३५	८
१०	३०	१५५	४२	२४६	१३	२४५	७	२४४	१	२४२	५४	२४१	४६
११	०	१६३	४३	२५३	६	२५१	५७	२५०	४७	२४९	३६	२४८	२४
११	३०	१७१	५०	२५९	५७	२५८	४५	२५७	३३	२५६	१९	२५५	३
१२	०	१८०	०	२६६	४८	२६५	३५	२६४	२०	२६३	४	२६१	४६

साम्पातिक काल		सभी स्थलों के लिए		अक्षांश ८°(उ.)		अक्षांश ११°(उ.)		अक्षांश १४°(उ.)		अक्षांश २७°(उ.)		अक्षांश २०°(उ.)	
		दशम		लग्न		लग्न		लग्न		लग्न		लग्न	
घं.	मि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
१२	०	१८०	०	२६६	४८	२६५	३५	२६४	२०	२६३	४	२६१	४६
१२	३०	१८८	१०	२७३	४१	२७२	२७	२७१	११	२६९	५३	२६८	३३
१३	०	१९६	१७	२८०	३९	२७९	२५	२७८	९	२७६	५०	२७५	२९
१३	३०	२०४	१८	२८७	४३	२८६	३०	२८५	१५	२८३	५७	२८२	३५
१४	०	२१२	११	२९४	५७	२९३	४६	२९२	३३	२९१	१६	२८९	५५
१४	३०	२१९	५५	३०२	२१	३०१	१४	३००	४	२९८	५०	२९७	३२
१५	०	२२७	२८	३०९	५८	३०८	५६	३०७	५१	३०६	४२	३०५	२८
१५	३०	२३४	५१	३१७	४९	३१६	५४	३१५	५५	३१४	५३	३१३	४५
१६	०	२४२	५	३२५	५४	३२५	७	३२४	१७	३२३	२३	३२२	२५
१६	३०	२४९	१२	३३४	१२	३३३	३५	३३२	५५	३३२	१२	३३१	२६
१७	०	२५६	११	३४२	४१	३४२	१५	३४१	४८	३४१	१८	३४०	४५
१७	३०	२६३	७	३५१	१८	३५१	५	३५०	५१	३५०	३६	३५०	१९
१८	०	२७०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१८	३०	२७६	५३	८	४१	८	५५	९	९	९	२४	९	४१
१९	०	२८३	४९	१७	१९	१७	४५	१८	१२	१८	४२	१९	१५
१९	३०	२९०	४८	२५	४८	२६	२५	२७	५	२७	४८	२८	३४
२०	०	२९७	५५	३४	६	३४	५३	३५	४३	३६	३७	३७	३५
२०	३०	३०५	९	४२	११	४३	६	४४	५	४५	७	४६	१४
२१	०	३१२	३२	५०	२	५१	४	५२	९	५३	१८	५४	३२
२१	३०	३२०	५	५७	३९	५८	४६	५९	५६	६१	१०	६२	२८
२२	०	३२७	४९	६५	३	६६	१४	६७	२७	६८	४४	७०	५
२२	३०	३३५	४२	७२	१७	७३	३०	७४	४५	७६	३	७७	२५
२३	०	३४३	४३	७९	२१	८०	३५	८१	५१	८३	१०	८४	३१
२३	३०	३५१	५०	८६	१९	८७	३३	८८	४९	९०	७	९१	२७
२४	०	०	०	९३	१२	९४	२५	९५	४०	९६	५६	९८	१४

अब लग्न सारणी में ३२ अक्षांश और ३५ अक्षांश वाले कालमों में सां.का. ५घं. ३० मि. के आगे क्रमशः १७३ अं. ३४ क. और १७३ अं. ४४ क. लिखा है। इन दोनों का अन्तर १० क. हुआ। यह लग्न की "३ अक्षांश की गति" है। क्योंकि लग्न ३५ अक्षांश में बढ़ रहा है। अतः यह गति धन है। ३२ अक्षांश और चम्बा के अक्षांश ३२ अं. २९ क. का अन्तर २९ क. है। इससे ३ अक्षांश की लग्न की गति कलाओं (१०) को गुणा करके १८० से भाग देने पर लब्धि १ क. मिली । क्योंकि ३ अक्षांशों की लग्न गति धन है अतः इसे "स्थूल लग्न" में जोड़ने पर १७८ अं. ५ क. सायन लग्न हुआ। इसमें से इस दिन का अयनांश २३अं. २६कं. घटा देने पर १५४ अं. ३९ क. (=५ रा ४ अं. ३९ क.) नियरणलग्न बन गया।

दशमलग्न साधन का उदाहरण- १५ जुला. १९६९ ई. को प्रातः १० घं. ४५ मि. (भा.स्टै.टा.) पर ही चम्बा, हि.प्र. में दशमलग्न स्पष्ट करना है। इस समय चम्बा में सां का ५ घं. ५१ मि. है। लग्नसारणी के दूसरे कालभ में सां.का. ५ घं. ३० मिनट के आगे दशमलग्न८३ अं.७क. है, यह "स्थूल दशमलग्न" है। सारणी में सां.का. ५ घं.३०मि. और ६ घं. ० मि. के आगे क्रमशः ८३ अं. ७ क. एवं ९० अं. ० क. है इन दोनों का अन्तर ६ अं. ५२ क. (=४१३ क.) है, यह ३० मि. की दशमलग्न की गति है। इन कलाओं को सां. का. के शेष मि. (५ घं. ५१ मि.- ५घं. ३० मि.=२१ मि.) से गुणा करके ३० का भाग देने पर २८९ क. (=४अं.४९क.) मिली। इन्हें "स्थूलदशमलग्न" में जोड़ने पर ८७ अं. ५६ क. सायन दशमलग्न स्पष्ट हुआ। इसमें से इस दिन का अयनांश २३ अं. २६ क. घटा देने पर ६४ अं.३० क. (=२ रा.४अं. ३०क.) इष्टकालिक निरयण दशम लग्न हुआ।

ध्यान दें- यहां हमने सां.का. के सेकण्ड और अयनांश की विकलाओं को अनावश्यक समझकर छोड़ दिया है। क्योंकि लग्न और दशम में विकलाओं तक की सूक्ष्मता लाने का प्रयास वस्तुतः अर्थहीन है। कला तक की सूक्ष्मता भी लग्न में संभव नहीं है; इस तथ्य का विस्तार पूर्वक स्पष्टीकरण गणित द्वारा "गणकमार्तण्ड" में हमने किया है वहाँ पढ़ें।

लग्न सारणी (पूरे भारत के लिए) {भाग २ य}

साम्पातिक काल घं.	मि.	सभी स्थानों के लिए दशम अं.	क.	अंक्षाश २३° (उ.) लग्न अं.	क.	अंक्षाश २६° (उ.) लग्न अं.	कं.	अंक्षाश २९° (उ.) लग्न अं.	क.	अंक्षाश ३२° (उ.) लग्न अं.	क.	अंक्षाश ३५° (उ.) लग्न अं.	क.
०	०	०	०	९९	३५	१०२	५९	१०२	२६	१०३	५७	१०५	३४
०	३०	८	१०	१०६	१४	१०७	३४	१०८	५७	११०	२४	१११	५३
१	०	१६	१७	११२	४९	११४	४	११५	२२	११६	४३	११८	७
१	३०	२४	१८	११९	२२	१२०	३३	१२१	४५	१२३	०	१२४	१७
२	०	३२	११	१२५	५६	१२७	०	१२८	७	१२९	१७	१३०	२५
२	३०	३९	५५	१३२	३१	१३३	२९	१३४	२९	१३५	३०	१३६	३२
३	०	४७	२८	१३९	३	१४०	००	१४०	५२	१४१	४५	१४२	४०
३	३०	५४	५१	१४५	५०	१४६	३४	१४७	१८	१४८	४	१४८	५०
४	०	६२	५	१५२	३४	१५३	१०	१५३	४७	१५४	२४	१५५	१
४	३०	६९	१२	१५९	२२	१५९	५०	१६०	१७	१६०	४६	१६१	१४
५	०	७६	११	१६६	१३	१६६	३२	१६६	५०	१६७	९	१६७	२८
५	३०	८३	७	१७३	६	१७३	१५	१७३	२५	१७३	३४	१७३	४४
६	०	९०	०	१८०	००	१८०	००	१८०	०	१८०	०	१८०	०
६	३०	९६	५३	१८६	५४	१८६	४५	१८६	३५	१८६	२६	१८६	१६
७	०	१०३	४९	१९३	४७	१९३	२८	१९३	१०	१९२	५१	१९२	३२
७	३०	११०	४८	२००	३८	२००	१०	१९९	४३	१९९	१४	१९८	४६
८	०	११७	५५	२०७	२६	२०६	५०	२०६	१३	२०५	३६	२०४	५९
८	३०	१२५	५९	२१४	१०	२१३	२६	२१२	४२	२११	५६	२११	१०
९	०	१३२	३२	२२०	५१	२२०	००	२१९	८	२१८	१५	२१७	२०
९	३०	१४०	५	२२७	२९	२२६	३१	२२५	३१	२२४	३०	२२३	२८
१०	००	१४७	४९	२३४	४	२३३	०	२३१	५३	२३०	४५	२२९	३५
१०	३०	१५५	४२	२४०	३८	२३९	२७	२३८	१५	२३७	०	२३५	४३
११	०	१६३	४३	२४७	११	२४५	५६	२४४	३८	२४३	१७	२४१	५३
११	३०	१७१	५०	२५३	४६	२५२	२६	२५१	३	२४९	३६	२४८	७
१२	०	१८०	००	२६०	२५	२५९	३	२५७	३४	२५६	३	२५४	२६

साम्पातिक काल घं.	मि.	सभीस्थलों के लिए दशम अं.	क.	अंक्षाश २३° (उ.) लग्न अं.	क.	अंक्षाश २६° (उ.) लग्न अं.	कं.	अंक्षाश २९° (उ.) लग्न अं.	क.	अंक्षाश ३२° (उ.) लग्न अं.	क.	अंक्षाश ३५° (उ.) लग्न अं.	क.
१२	०	१८०	००	२६०	२५	२५९	१	२५७	३४	२५६	३	२५४	२६
१२	३०	१८८	१०	२६७	१०	२६५	४३	२६४	१२	२६२	३६	२६०	५४
१३	०	१९६	१७	२७४	३	२७२	३४	२७१	०	२६९	२१	२६७	३३
१३	३०	२०४	१८	२८१	९	२७९	३९	२७८	२	२७६	१९	२७४	२९
१४	०	२१२	११	२८८	३०	२८६	५९	२८५	२२	२८३	३६	२८१	४५
१४	३०	२१९	५५	२९६	९	२९४	४०	२९३	४	२९१	२०	२८९	२६
१५	००	२२७	२८	३०४	१०	३०२	४४	३०१	१२	२९९	२८	२९७	३८
१५	३०	२३४	५१	३१२	३३	३११	१५	३०९	४८	३०८	१३	३०६	२५
१६	०	२४२	५	३२१	२२	३२०	१३	३१८	५६	३१७	३०	३१५	५४
१६	३०	२४९	१२	३३०	३५	३२९	३९	३२८	३६	३२७	२५	३२६	४
१७	०	२५६	११	३४०	९	३३९	३०	३३८	४५	३३७	५४	३३६	५५
१७	३०	२६३	७	३५०	००	३४९	४०	३४९	१६	३४८	४९	३४८	१९
१८	०	२७०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१८	३०	२७६	५३	१०	०	१४	२०	१०	४४	११	११	११	४१
१९	०	२८३	४९	१९	५१	२०	३०	२१	१५	२२	६	२३	४
१९	३०	२९०	४८	२९	२५	३०	२१	३१	२४	३२	३५	३३	५६
२०	०	२९७	५५	३८	३८	३९	४७	४१	४	४२	३०	४४	६
२०	३०	३०५	९	४७	२७	४८	४५	५०	१२	५१	४७	५३	३५
२१	०	३१२	३२	५५	५०	५७	१६	५८	४८	६०	३२	६२	२२
२१	३०	३२०	५	६३	५१	६५	२०	६६	५६	६८	४०	७०	३४
२२	०	३२७	४९	७१	३०	७३	१	७४	३८	७६	२८	७८	१५
२२	३०	३३५	४२	७८	५१	८०	२१	८१	५८	८३	४१	८५	३१
२३	०	३४३	४३	८५	५६	८७	२६	८९	०	९०	३९	९२	२६
२३	३०	३५१	५०	९२	४०	९४	१७	९५	४८	९७	२४	९९	६
२४	०	०००	०	९९	३५	१००	५९	१०२	२६	१०३	५७	१०५	३४

साम्पातिककाल कोष्ठक नं. १

सन्	घं. मि.से.	सन	घं. मि.से.	सन्	घं. मि.से.	सन्	घं.मि.से.	सन्	घं.मि.से.	सन्	घं. मि.से.	सन्	घं. मि. से.	सन्	घं. मि. से.
१९५०	६ ३९ २७	१९५७	६ ४० ४०	१९६४	६ ३७ ५६	१९७१	६ ३९ ७	१९७८	६ ४० १९	१९८५	६ ४१ ३२	१९९२	६ ३८ ४७	१९९९	६।३९।५९
१९५१	६ ३८ ३०	१९५८	६ ३९ ४३	१९६५	६ ४० ५५	१९७२	६ ३८ १०	१९७९	६ ३९ २२	१९८६	६ ४० ३५	१९९३	६ ४१ ४६	२०००	६।३९।०२
१९५२	६ ३७ ३३	१९५९	६ ३८ ४५	१९६६	६ ३९ ५७	१९७३	६ ४१ १०	१९८०	६ ३८ २४	१९८७	६ ३९ ३८	१९९४	६ ४० ४९	२००१	६।४२।०१
१९५३	६ ४० ३३	१९६०	६ ३७ ४७	१९६७	६ ३९ ००	१९७४	६ ४० १२	१९८१	६ ४१ २३	१९८८	६ ३८ ४०	१९९५	६ ३९ ५२	२००२	६।४१।०४
१९५४	६ ३९ ३५	१९६१	६ ४० ४७	१९६८	६ ३८ ३	१९७५	६ ३९ १५	१९८२	६ ४० २६	१९८९	६ ४१ ३९	१९९६	६ ३८ ५४	२००३	६।४०।०७
१९५५	६ ३८ ३८	१९६२	६ ३९ ५०	१९६९	६ ४१ २	१९७६	६ ३८ १७	१९८३	६ ३९ २९	१९९०	६ ४० ४१	१९९७	६ ४२ ५३	२००४	६।३९।१०
१९५६	६ ३७ ४२	१९६३	६ ३८ ५३	१९७०	[illegible]	१९७७	६ ४२ २६	१९८४	६ ३८ ३२	१९९१	६ ३९ ४४	१९९८	६ ४० ५५	२००५	[illegible]

साम्पातिक काल कोष्ठक नं० २

ता.	जनवरी			फरवरी			मार्च			अप्रैल			मई			जून		
↓	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.
१	०	०	०	२	२	१३	३	५२	३७	५	५४	५१	७	५३	७	९	५५	२१
२	०	३	५७	२	६	९	३	५६	३३	५	५८	४७	७	५७	४	९	५९	१७
३	०	७	५३	२	१०	६	४	०	३०	६	२	४३	८	१	०	१०	३	१४
४	०	११	५०	२	१४	२	४	४	२६	६	६	४०	८	४	५७	१०	७	१०
५	०	१५	४६	२	१७	५९	४	८	२३	६	१०	३६	८	८	५३	१०	११	७
६	०	१९	४३	२	२१	५५	४	१२	१९	६	१४	३३	८	१२	५०	१०	१५	३
७	०	२३	३९	२	२५	५२	४	१६	१६	६	१८	२९	८	१६	४६	१०	१९	०
८	०	२७	३६	२	२९	४८	४	२०	१२	६	२२	२६	८	२०	४३	१०	२२	५६
९	०	३१	३२	२	३३	४५	४	२४	९	६	२६	२२	८	२४	३९	१०	२६	५३
१०	०	३५	२९	२	३७	४२	४	२८	५	६	३०	१९	८	२८	३६	१०	३०	४९
११	०	३९	२५	२	४१	३८	४	३२	२	६	३४	१६	८	३२	३२	१०	३४	४६
१२	०	४३	२२	२	४५	३५	४	३५	५९	६	३८	१२	८	३६	२९	१०	३८	४२
१३	०	४७	१८	२	४९	३२	४	३९	५५	६	४२	९	८	४०	२५	१०	४२	३९
१४	०	५१	१५	२	५३	२८	४	४३	५२	६	४६	६	८	४४	२२	१०	४६	३५
१५	०	५५	१२	२	५७	२५	४	४७	४९	६	५०	२	८	४८	१८	१०	५०	३२
१६	०	५९	८	३	१	२१	४	५१	४५	६	५३	५९	८	५२	१५	१०	५४	२८
१७	१	३	४	३	५	१८	४	५५	४२	६	५७	५५	८	५६	११	१०	५८	२५
१८	१	७	१	३	९	१४	४	५९	३८	७	१	५२	९	०	८	११	२	२१
१९	१	१०	५७	३	१३	११	५	३	३५	७	५	४८	९	४	४	११	६	१८
२०	१	१४	५४	३	१७	८	५	७	३१	७	९	४५	९	८	१	११	१०	१५
२१	१	१८	५१	३	२१	५	५	११	२८	७	१३	४१	९	११	५८	११	१४	१२
२२	१	२२	४८	३	२५	१	५	१५	२५	७	१७	३८	९	१५	५५	११	१८	८
२३	१	२६	४४	३	२८	५८	५	१९	२२	७	२१	३४	९	१९	५१	११	२२	५
२४	१	३०	४१	३	३२	५४	५	२३	१८	७	२५	३१	९	२३	४८	११	२६	१
२५	१	३४	३७	३	३६	५१	५	२७	१५	७	२९	२८	९	२७	४४	११	२९	५८
२६	१	३८	३४	३	४०	४७	५	३१	११	७	३३	२४	९	३१	४१	११	३३	५४
२७	१	४२	३०	३	४४	४४	५	३५	८	७	३७	२०	९	३५	३७	११	३७	५१
२८	१	४६	२७	३	४८	४०	५	३९	५	७	४१	१७	९	३९	३४	११	४१	४७
२९	१	५०	२३	३	५२	३७	५	४३	१	७	४५	१३	९	४३	३०	११	४५	४४
३०	१	५४	२०				५	४६	५८	७	४९	१०	९	४७	२७	११	४९	४१
३१	१	५८	१६				५	५०	५४				९	५१	२४			

जुलाई			अगस्त			सितम्बर			अक्तूबर			नवम्बर			दिसम्बर			ता.
घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	↓
११	५३	३८	१३	५५	५०	१५	५८	४	१७	५६	२१	१९	५८	३४	२१	५६	५०	१
११	५७	३४	१३	५९	४७	१६	२	०	१८	०	१७	२०	२	३१	२२	०	४७	२
१२	१	३१	१४	३	४४	१६	५	५७	१८	४	१४	२०	६	२७	२२	४	४३	३
१२	५	२७	१४	७	४०	१६	९	५३	१८	८	१	२०	१०	२४	२२	८	४०	४
१२	९	२४	१४	११	३६	१६	१३	५०	१८	१२	७	२०	१४	२०	२२	१२	३६	५
१२	१३	२१	१४	१५	३३	१६	१७	४६	१८	१६	३	२०	१८	१७	२२	१६	३३	६
१२	१७	१७	१४	१९	२९	१६	२१	४३	१८	२०	०	२०	२२	१३	२२	२०	३०	७
१२	२१	१४	१४	२३	२६	१६	२५	४०	१८	२३	५७	२०	२६	१०	२२	२४	२७	८
१२	२५	१०	१४	२७	२३	१६	२९	३७	१८	२७	५४	२०	३०	६	२२	२८	२३	९
१२	२९	६	१४	३१	२०	१६	३३	३३	१८	३१	५०	२०	३४	३	२२	३२	२०	१०
१२	३३	३	१४	३५	१६	१६	३७	३०	१८	३५	४७	२०	३८	०	२२	३६	१६	११
१२	३६	५९	१४	३९	१३	१६	४१	२६	१८	३९	४३	२०	४१	५६	२२	४०	१३	१२
१२	४०	५६	१४	४३	९	१६	४५	२३	१८	४३	४०	२०	४५	५२	२२	४४	९	१३
१२	४४	५२	१४	४७	६	१६	४९	१९	१८	४७	३७	२०	४९	४९	२२	४८	६	१४
१२	४८	४९	१४	५१	२	१६	५३	१६	१८	५१	३३	२०	५३	४५	२२	५२	२	१५
१२	५२	४५	१४	५४	५९	१६	५७	१२	१८	५५	३०	२०	५७	४२	२२	५५	५९	१६
१२	५६	४२	१४	५८	५५	१७	१	९	१८	५९	२६	२१	१	३९	२२	५९	५६	१७
१३	०	३८	१५	२	५२	१७	५	५	१९	३	२२	२१	५	३६	२३	३	५३	१८
१३	४	३५	१५	६	४८	१७	९	२	१९	७	१९	२१	९	३२	२३	७	४९	१९
१३	८	३२	१५	१०	४५	१७	१२	५८	१९	११	१५	२१	१३	२९	२३	११	४६	२०
१३	१२	२९	१५	१४	४१	१७	१६	५५	१९	१५	१२	२१	१७	२५	२३	१५	४२	२१
१३	१६	२५	१५	१८	३८	१७	२०	५१	१९	१९	८	२१	२१	२२	२३	१९	३९	२२
१३	२०	२२	१५	२२	३४	१७	२४	४८	१९	२३	५	२१	२५	१८	२३	२३	३५	२३
१३	२४	१८	१५	२६	३१	१७	२८	४४	१९	२७	१	२१	२९	१५	२३	२७	३२	२४
१३	२८	१५	१५	३०	२७	१७	३२	४१	१९	३०	५८	२१	३३	११	२३	३१	२८	२५
१३	३२	११	१५	३४	२४	१७	३६	३७	१९	३४	५४	२१	३७	८	२३	३५	२५	२६
१३	३६	८	१५	३८	२०	१७	४०	३४	१९	३८	५१	२१	४१	४	२३	३९	२१	२७
१३	४०	४	१५	४२	१७	१७	४४	३१	१९	४२	४८	२१	४५	१	२३	४३	१८	२८
१३	४४	१	१५	४६	१४	१७	४८	२८	१९	४६	४५	२१	४८	५७	२३	४७	१४	२९
१३	४७	५७	१५	५०	११	१७	५२	२४	१९	५०	४१	२१	५२	५४	२३	५१	११	३०
१३	५१	५४	१५	५४	७				१९	५४	३८				२३	५५	७	३१
															२३	५९	३	३२

लीप इयर हो तो केवल फरवरी के बाद के महीनों में अभीष्ट तारीख में एक जोड़ कर कोष्ठक नं० २ को प्रयोग में लाइए ।

साम्पातिक काल कोष्ठक नं० ३

रेखांश	०°	पू.२०°	पू.४०°	पू.६०°	पू.८०°	पू.१००°	पू.१२०°	पू.१४०°	पू.१६०°
संस्कार सेकण्ड	+५०	+३७	+२४	+११	-२	-१५	-२८	-४१	-५४
रेखांश	१८०°	प.१६०°	प.१४०°	प.१२०°	प.१००°	प.८०°	प.६०°	प.४०°	प.२०°
संस्कार सेकण्ड	-६७/+१६१	+१५६	+१४३	+१२९	+११६	+१०३	+८९	+७७	+६३

साम्पातिक काल कोष्ठक नं० ४

मि.	०	५	१०	१५	२०	२५	३०	३५	४०	४५	५०	५५
घं.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से
०	० ००	० १	० २	० २	० ३	० ४	० ५	० ६	० ७	० ७	० ८	० ९
१	० १०	० ११	० ११	० १२	० १३	० १४	० १५	० १६	० १६	० १७	० १८	० १९
२	० २०	० २१	० २.	० २२	० २३	० २४	० २५	० २५	० २६	० २७	० २८	० २९
३	० ३०	० ३०	० ३१	० ३२	० ३३	० ३४	० ३४	० ३५	० ३६	० ३७	० ३८	० ३९
४	० ३९	० ४०	० ४१	० ४२	० ४३	० ४४	० ४४	० ४५	० ४६	० ४७	० ४८	० ४८
५	- ४९	० ५०	० ५१	० ५२	० ५३	० ५३	० ५४	० ५५	० ५६	० ५७	० ५७	० ५८
६	० ५९	१ ००	१ १	१ २	१ २	१ ३	१ ४	१ ५	१ ६	१ ७	१ ७	१ ८
७	१ ९	१ १०	१ ११	१ ११	१ १२	१ १३	१ १४	१ १५	१ १६	१ १६	१ १७	१ १८
८	१ १९	१ २०	१ २०	१ २१	१ २२	१ २३	१ २४	१ २५	१ २५	१ २६	१ २७	१ २८
९	१ २९	१ ३०	१ ३०	१ ३१	१ ३२	१ ३३	१ ३४	१ ३४	१ ३५	१ ३६	१ ३७	१ ३८
१०	१ ३९	१ ३९	१ ४०	१ ४१	१ ४२	१ ४३	१ ४३	१ ४४	१ ४५	१ ४६	१ ४७	१ ४८
११	१ ४८	१ ४९	१ ५०	१ ५१	१ ५२	१ ५३	१ ५३	१ ५४	१ ५५	१ ५६	१ ५७	१ ५७
१२	१ ५८	१ ५९	२ ०	२ १	२ २	२ २	२ ३	२ ४	२ ५	२ ६	२ ६	२ ७
१३	२ ८	२ ९	२ १०	२ ११	२ ११	२ १२	२ १३	२ १४	२ १५	२ १६	२ १६	२ १७
१४	२ १८	२ १९	२ २०	२ २०	२ २१	२ २२	२ २३	२ २४	२ २५	२ २५	२ २६	२ २७
१५	२ २८	२ २९	२ २९	२ ३०	२ ३१	२ ३२	२ ३३	२ ३४	२ ३४	२ ३५	२ ३६	२ ३७
१६	२ ३८	२ ३९	२ ३९	२ ४०	२ ४१	२ ४२	२ ४३	२ ४३	२ ४४	२ ४५	२ ४६	२ ४७
१७	२ ४८	२ ४८	२ ४९	२ ५०	२ ५१	२ ५२	२ ५२	२ ५३	२ ५४	२ ५५	२ ५६	२ ५७
१८	२ ५७	२ ५८	२ ५९	३ ०	३ १	३ २	३ २	३ ३	३ ४	३ ५	३ ६	३ ६
१९	३ ७	३ ८	३ ९	३ १०	३ ११	३ ११	३ १२	३ १३	३ १४	३ १५	३ १५	३ १६
२०	३ १७	३ १८	३ १९	३ २०	३ २०	३ २१	३ २२	३ २३	३ २४	३ २५	३ २५	३ २६
२१	३ २७	३ २८	३ २९	३ २९	३ ३०	३ ३१	३ ३२	३ ३३	३ ३४	३ ३४	३ ३५	३ ३६
२२	३ ३७	३ ३८	३ ३८	३ ३९	३ ४०	३ ४१	३ ४२	३ ४३	३ ४३	३ ४४	३ ४५	३ ४६
२३	३ ४७	३ ४८	३ ४८	३ ४९	३ ५०	३ ५१	३ ५२	३ ५२	३ ५३	३ ५४	३ ५५	३ ५६

अयनांश सारणी नं० १

ई. सन्	अयनांश	ई. सन्	अयनांश	ई. सन्	अयनांश
	अं. क. वि.		अं. क. वि.		अं. क. वि.
१९५१	२३ १० २१	१९७५	२३ ३० २८	१९९९	२३ ५० ३४
१९५२	२३ ११ १२	१९७६	२३ ३१ १७	२०००	२३ ५१ २४
१९५३	२३ १२ ०२	१९७७	२३ ३२ ०८	२००१	२३ ५२ १५
१९५४	२३ १२ ५२	१९७८	२३ ३२ ५९	२००२	२३ ५३ ०५
१९५५	२३ १३ ४२	१९७९	२३ ३३ ४९	२००३	२३ ५३ ५५
१९५६	२३ १४ ३३	१९८०	२३ ३४ ३९	२००४	२३ ५४ ४६
१९५७	२३ १५ २३	१९८१	२३ ३५ २९	२००५	२३ ५५ ३६
१९५८	२३ १६ १३	१९८२	२३ ३६ २०	२००६	२३ ५६ २६
१९५९	२३ १७ ०३	१९८३	२३ ३७ १०	२००७	२३ ५७ १७
१९६०	२३ १७ ५४	१९८४	२३ ३८ ००	२००८	२३ ५८ ०७
१९६१	२३ १८ ४४	१९८५	२३ ३८ ५१	२००९	२३ ५८ ५७
१९६२	२३ १९ ३५	१९८६	२३ ३९ ४१	२०१०	२३ ५९ ४८
१९६३	२३ २० २५	१९८७	२३ ४० ३१	२०११	२४ ०० ३८
१९६४	२३ २१ १५	१९८८	२३ ४१ २१	२०१२	२४ ०१ २८
१९६५	२३ २२ ०५	१९८९	२३ ४२ १२	२०१३	२४ ०२ १८
१९६६	२३ २२ ५५	१९९०	२३ ४३ ०२	२०१४	२४ ०३ ०९
१९६७	२३ २३ ४६	१९९१	२३ ४३ ५२	२०१५	२४ ०३ ५९
१९६८	२३ २४ ३६	१९९२	२३ ४४ ४२	२०१६	२४ ०४ ४९
१९६९	२३ २५ २६	१९९३	२३ ४५ ३३	२०१७	२४ ०५ ४०
१९७०	२३ २६ १६	१९९४	२३ ४६ २३	२०१८	२४ ०६ ३०
१९७१	२३ २७ ०७	१९९५	२३ ४७ १३	२०१९	२४ ०७ २०
१९७२	२३ २७ ५७	१९९६	२३ ४८ ०३	२०२०	२४ ०८ १०
१९७३	२३ २८ ४७	१९९७	२३ ४८ ५४	२०२१	२४ ०९ ०१
१९७४	२३ २९ ३७	१९९८	२३ ४९ ४४	२०२२	२४ ०९ ५१

अयनांश सारणी नं. २

तारीख	१	४	७	१०	१३	१६	१९	२२	२५	२८	तारीख	१	४	७	१०	१३	१६	१९	२२	२५	२८
	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.		वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.
जनवरी	०	१	१	१	२	२	३	३	३	४	जुलाई	२५	२५	२६	२६	२७	२७	२८	२८	२८	२९
फरवरी	४	५	५	६	६	६	७	७	८	८	अगस्त	२९	३०	३०	३१	३१	३१	३२	३२	३३	३३
मार्च	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	सितम्बर	३४	३४	३४	३५	३५	३६	३६	३६	३७	३७
अप्रैल	१३	१३	१३	१४	१४	१५	१५	१५	१६	१६	अक्तूबर	३८	३८	३९	३९	३९	४०	४०	४१	४१	४१
मई	१७	१७	१७	१८	१८	१९	१९	२०	२०	२०	नवम्बर	४२	४२	४३	४३	४४	४४	४४	४५	४५	४६
जून	२१	२१	२२	२२	२३	२३	२३	२४	२४	२५	दिसम्बर	४६	४७	४७	४७	४८	४८	४९	४९	४९	५०

महर्षि—पराशरोक्त विंशोत्तरी महादशान्तर्दशा ज्ञान—चक्र

सूर्यदशा वर्ष ६ एक घड़ी में ३६ दिन	चंद्रदशा वर्ष १० एक घड़ी में ६० दिन	भौम दशा वर्ष ७ एक घड़ी में ४२ दिन	राहु दशा वर्ष १८ एक घड़ी में १०८ दिन	गुरु दशा वर्ष १६ एक घड़ी में ९६ दिन	शनिदशा वर्ष १९ एक घड़ी में ११४ दिन	बुधदशा वर्ष १७ एक घड़ी में १०२ दिन	केतुदशा वर्ष ७ एक घड़ी में ४२ दिन	शुक्रदशा वर्ष २० एक घड़ी में १२० दिन
कृ. उ.फा. उ.षा.	रो. ह. श्रव.	मृ. चि. ध.	आर्द्रा स्वा. श.	पुन. वि. पू.भा.	पु. अनु. उ.भा.	आश्ले. ज्ये. रे.	म. मू. अश्वि.	पू.फा. पूषा. भ.
तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्
ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.
र. ० ३ १८	चं. ० १० ०	मं. ० ४ २७	रा. २ ८ १२	बृ. २ १ १८	श. ३ ० ३	बु. २ ४ २७	के. ० ४ २७	शु. ३ ४ ०
चं. ० ६ ०	मं. ० ७ ०	रा. १ ० १८	बृ. २ ४ २४	श. २ ६ १२	बु. २ ८ ९	के. ० ११ २७	शु. १ २ ०	र. १ ० ०
मं. ० ४ ६	रा. १ ६ ०	बृ. ० ११ ६	श. २ १० ६	बु. २ ३ ६	के. १ १ ९	शु. २ १० ०	र. ० ४ ६	चं. १ ८ ०
रा. ० १० २४	बृ. १ ४ ०	श. १ १ ९	बु. २ ६ १८	के. ० ११ ६	शु. ३ २ ०	र. ० १० ६	चं. ० ७ ०	मं. १ २ ०
बृ. ० ९ १८	श. १ ७ ०	बु. ० ११ २७	के. १ ० १८	शु. २ ८ ०	र. ० ११ १२	चं. १ ५ ०	मं. ० ४ २७	रा. ३ ० ०
श. ० ११ १२	बु. १ ५ ०	के. ० ४ २७	शु. ३ ० ०	र. ० ९ १८	चं. १ ७ ०	मं. ० ११ २७	रा. १ ० १८	बृ. २ ८ ०
बु. ० १० ६	के. ० ७ ०	शु. १ २ ०	र. ० १० २४	चं. १ ४ ०	मं. १ १ ९	रा. २ ६ १८	बृ. ० ११ ६	श. ३ २ ०
के. ० ४ ६	शु. १ ८ ०	र. ० ४ ६	चं. १ ६ ०	मं. ० ११ ०६	रा. २ १० ६	बृ. २ ३ ६	श. १ १ ९	बु. २ १० ०
शु. १ ० ०	र. ० ६ ०	चं. ० ७ ०	मं. १ ० १८	रा. २ ४ २४	बृ. २ ६ १२	श. २ ८ ९	बु. ० ११ २७	के. १ २ ०

शिवोक्त योगिनी—दशाऽन्तर्दशा ज्ञानार्थ चक्र

मंगला व. १	पिंगला व. २	धान्या व. ३	भ्रामरी व. ४	भद्रा व. ५	उल्का व. ६	सिद्धा व. ७	संकटा व. ८	दशा तथा वर्ष
चन्द्र	सूर्य	गुरु	मंगल	बुध	शनि	शुक्र	केतु	दशेश ग्रह
आर्द्रा चि. श्रव.	पुन. स्वा. ध.	पुष्य वि. शं.	अश्वि आश्ले अनु पूभा	भ. म. ज्ये. उ.भा.	कृ. पू.फा. मू. रे.	रो. उ.फा. पूषा.	मृ. ह. उ.षा.	जन्म नक्षत्र
मं. ० १०	पिं. १ १०	धा. ३ ०	भ्रा. ५ १०	भ. ८ १०	उ. १२ ०	सि. १६ १०	सं. २१ १०	अन्तर्दशा के मास, दिन
पि. ० २०	धा. २ ०	भ्रा. ४ ०	भ. ६ २०	उ. १० ०	सि. १४ ०	सं. १८ २०	मं. २ २०	
धा. १ ०	भ्रा. २ २०	भ. ५ ०	उ. ८ ०	सि. ११ २०	सं. १६ ०	मं. २ १०	पिं. ५ १०	
भ्रा. १ १०	भ. ३ १०	उ. ६ ०	सि. ९ १०	सं. १३ १०	मं. २ ०	पिं. ४ २०	धा. ८ ०	
भ. १ २०	उ. ४ ०	सि. ७ ०	सं. १० २०	मं. १ २०	पिं. ४ ०	धा. ७ ०	भ्रा. १० २०	
उ. २ ०	सि. ४ २०	सं. ८ ०	मं. १ १०	पिं ३ १०	धा. ६ ०	भ्रा. ९ १०	भ. १३ १०	
सि. २ १०	सं. ५ ०	मं. १ ०	पिं. २ २०	धा. ५ ०	भ्रा. ८ ०	भ. ११ २०	उ. १६ ०	
सं. २ २०	मं. ० २०	पिं. २ ०	धा. ४ ०	भ्रा. ६ २०	भ. १० ०	उ. १४ ०	सि. १८ २०	

दशा का भुक्तभोग्य

गत नक्षत्र की घट्यादि को ६० में से घटाकर इष्ट—घटीपल जोड़ने से भयात होता है। ६० में से घटाए हुए अंकों में प्रवेश नक्षत्र के घट्यादि जोड़ने से भभोग होता है। भयात और भभोग की घटियों को ६० से गुणा कर पल बना लें। भयात के पलों को दशा के वर्षों से गुणाकर भभोग के पलों से भाग दें, लब्ध अंक वर्ष, फिर शेषांक को १२ से गुणा करें, भभोग के पलों से भाग दें, लब्ध मास; फिर शेषांक को ३० से गुणाकर भभोग के पलों से भाग दें, लब्ध दिन; फिर शेषांक को ६० से गुणाकर भभोग के पलों का भाग दें, लब्धांक घटी; फिर शेषांक को ६० से गुणाकर भभोग के पलों से भाग दें, लब्ध पल होंगे। यह वर्षादि दशा का भुक्त होता है। इसको दशा के वर्षों में से घटाने पर भोग्य दशा होगी।

वर्षकुण्डली में १२ भावों में स्थित ग्रहों का फल

ग्रह	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्य	चिन्ता	नृपभय	धनलाभ	हानि	कष्ट	शत्रुनाश	पीड़ा	कष्ट	धर्मनाश	सुख	धनलाभ	पीड़ा
चन्द्र	पीड़ा	धनलाभ	हर्ष	शत्रुनाश	सुख	पीड़ा	कष्ट	दुःख	भाग्योदय	विजय	धनलाभ	व्यय
भौम	ज्वर	धननाश	जय	व्यसन	दुर्गति	शत्रुनाश	स्त्रीकष्ट	पीड़ा	पुण्योदय	राज्यलाभ	धनलाभ	विरोध
बुध	सुख	धनलाभ	सुख	द्रव्यलाभ	पुत्रलाभ	कलह	धनलाभ	व्यग्रता	सुख	मानलाभ	सुखलाभ	विग्रह
गुरु	सुख	धनलाभ	जय	वाहनलाभ	पुत्रलाभ	कष्ट	सुख	रोग	धर्मलाभ	राज्यलाभ	धनलाभ	शोक
शुक्र	मान्प्राप्ति	धनप्राप्ति	कीर्तिलाभ	सुखलाभ	धनलाभ	शत्रुभीति	स्त्रीसुख	कष्ट	धर्मोदय	मानलाभ	धनलाभ	व्यय
शनि	वायुरोग	पीड़ा	धनलाभ	दुःख	पुत्रप्राप्ति	जय	स्त्रीकष्ट	रोग	भाग्यहानि	धनहानि	धनलाभ	चिन्ता
राहु	सिरदर्द	राजभय	सुख	दुःख	बुद्धिनाश	शत्रुनाश	रोगभय	दुःख	हानि	विजय	सुखलाभ	व्याधि
केतु	चिन्ता	क्लेश	आरोग्य	राजभय	दुर्बुद्धि	सुख	कलेश	पीड़ा	भाग्यनाश	धनलाभ	लाभ	शोक
मुन्था	सुख	यश, अर्थ	पुष्टि	दुःख	सुखप्राप्ति	कष्ट	व्यसन	दुःख	भाग्योदय	राज्यप्राप्ति	लाभ	कष्ट

सूर्यसिद्धान्तीय वर्षप्रवेश–सारणी

गताब्द	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१
घटी	१५	३१	४६	२	१७	३३	४८	४	१९	३५	५०	६	२१	३७	५२	८	२३	३९	५४	१०	२६	४१	५७	१२	२८	४३	५९	१४	३०	४५	१	१६	३२	४७	३	१८	३४	४९	५	२१
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
वार	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२
घटी	३६	५२	७	२३	३८	५४	९	२५	४०	५६	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	०	१५	३१	४७	२	१८	३३	४९	४	२०	३५	५१	६	२२	३७	५३	८	२४	३९	५५	१०	२६	४२
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

सूचना– वेधसिद्ध वर्षमान सूर्य सिद्धान्तीय वर्षमान से ८.५पल कम है। अतः सूक्ष्म–वर्षप्रवेशकालिक इष्ट निकालने के लिए गताब्दों को ८.५ से गुणा करके पलात्मक फल को सारणी से साधित इष्ट में से घटा देना चाहिए। यही सूक्ष्म–वर्ष मानानुसारी इष्ट होगा, चाहो तो इस इष्ट पर भी फल अनुभव करें।

वर्षफलसाधन–प्रकारः– (१) अभीष्ट संवत् (जिस संवत् का वर्ष निकालना हो) में से जन्म समय का संवत् हीन करने से जो शेष बचे उसे गतवर्ष, (गताब्द) जानें। स्मरण रहे, कि– मेषार्कप्रवेश से प्रथम और चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के अनंतर का यदि वर्ष करना हो तो पिछले संवत् से करना होगा–वर्षायनर्तुयुगपूर्वकमत्र सौरात्– इस प्रकार गताब्द निकालकर उसी गताब्द अंक के नीचे सारणी में जो वारादि अंक हैं, उनमें जन्म का वार, इष्ट, घड़ी, पल जोड़ने से वर्षप्रवेशकालिक वारादि इष्ट ज्ञात हो जाता है। यदि नीचे घट्यादि अंक साठ से अधिक हों तो ६० का भाग देने से लब्धांक को ऊपर युक्त करते जाना। ऊपर से वारांक में सात से अधिक आ जाए तो सात का भाग देकर लब्ध त्याग देने से शेष को वर्षप्रवेश समय का स्पष्ट वारादि इष्ट समझें।

(२) जिस दिन जन्म समय के स्पष्ट सूर्यतुल्य वर्ष में सूर्य मिले, उसी दिन वर्षप्रवेश जानना। प्रविष्टों के अनुसार कभी–कभी वार नहीं मिलता। वहां पर गणितागत वार को ठीक जाने। इस इष्ट के अनुसार स्वदेशीय लग्नसारणी से लग्नसाधन करके वर्षकुण्डली लगाएं।

मुन्थानयनप्रकार– गताब्दसंख्या में जन्मलग्न जोड़कर उसमें १२ का भाग देना, जो शेष बचे उसे मुन्था जानें। यह मुन्था प्रति दिन पांच कला चलती है।

मुद्दा दशा– गत वर्ष में जन्मनक्षत्र जोड़कर, उसमें से दो घटाएं, ९ का भाग देने से जो शेष बचे उसे दशा समझें। १ शेष से सूर्य, २ से चन्द्रमा, ३ से मंगल, ४ से राहु, ५ से गुरु, ६ से शनि, ७ से बुध, ८ से केतु, और ९ शेष से शुक्र की दशा जानें।

दशा के दिन– सूर्य के १८ दिन, चन्द्रमा के ३०, मंगल २१, राहु ५४, गुरु ४८, शनि ५७, बुध ५१, केतु २१, शुक्र ६० – ये दशा के दिन हैं।

हर्ष स्थान बल– सूर्य वर्ष लग्न से ९, चन्द्रमा ३, मंगल ६, बुध १, गुरु ११वें, शुक्र ५वें और शनि १२ वें स्थान में हो तो ५ हर्ष बल देते हैं।

स्वोच्च बल– सू. १।५, चं. २।४, मं. १।८।१०, बुध ३।६, गुरु ९।१२।४, शु. २।७।१२ तथा श. १०।११ ७ राशियों में ५ बल देते हैं।

पुरुषस्त्री–ग्रह–बल– स्त्रीग्रह (चं.बु.शु.श) १।२।३।७।८।९ और पुरुष ग्रह (सू., मं., बृ.) ४।५।६।१०।११।१२वें स्थानों में ५ बल देते हैं।

दिनरात्रि बल–दिन के वर्षेष्ट में पुरुषग्रह ५ बल देते हैं और रात्रि के इष्ट में स्त्रीग्रह ५ बल देते हैं।

त्रिराशिपति चक्र

राशि→	मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
दिनलग्नपति→	सू.	शु.	श.	शु.	गु.	चं.	बु.	मं.	श.	मं.	गु..	चं.
रात्रिलग्नपति→	गु.	चं.	बु.	मं.	सू.	शु.	श.	शु.	श.	मं.	गु.	चं.

वर्ष में दृष्टि–ज्ञान और फल

⁂ वर्ष में जो ग्रह जिस भाव में पड़ा हो उस भाव से ५वें, ९वें भाव को प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि से देखता है। फल– कार्य में शीघ्र सफलता, सुख, प्रेम, लाभ और जिन मनुष्यों के साथ पहले शत्रुता होती है, उनसे प्रेम होता है। ⁂ तीसरे ग्यारहवें गुप्त मित्र दृष्टि से देखता है। फल– कार्य कठिनता से एवं गुप्त भाव से सफल हो।⁂ पहले, सातवें प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि होती है। फल– शत्रुता करे, मित्र से बैर, धनहानि, बनते काम को बिगड़ना आदि फल होते हैं।⁂ ४–१०वें गुप्तशत्रु दृष्टि से देखता है। फल– कार्य बड़ी कठिनता से सफल हो, गुप्तरूप से शत्रु भी उत्पन्न होते हैं।

अथ वर्षेश निर्णयः– जन्म लग्नेश १, वर्ष लग्नेश २, मुन्थेश ३, त्रैराशीश ४, समयेश ५ (दिन में वर्ष प्रवेश हो तो सूर्य जिस राशि पर हो उस राशि का स्वामी और रात्रि में हो तो चन्द्रराशि का स्वामी समयेश होता है।) इन पांच अधिकारियों में से जो सबसे बलवान् हो और लग्न को देखे वह वर्षेश होता है। यदि पांचों में से कोई भी लग्न को न देखता हो तो उन में से जो अधिक बलवान् हो वही वर्षेश्वर होगा। कई ग्रहों का बल समान हों तो जिसकी लग्न पर अधिक दृष्टि हो वह और बल, दृष्टि, अधिकार– तीनों समान हों तो मुन्थेश ही वर्षेश हो। यदि चन्द्रमा वर्षेश प्राप्त हो तो जिससे वह इत्थशाल करे या जिसकी राशि में बैठा हो वही वर्षेश हो। फल– वर्षेश ६। ८। १२ वें व अस्तंगत, हीनबली हो तो वर्ष में दुःख, शोक, चिन्ता, भयविशेष होगा। यदि बलिष्ठ होकर शुभ स्थान में सुयोग के साथ बैठा हो तो वर्ष में सुखैश्वर्य की वृद्धि हो।

वर्ष में तबदीली का योग– वर्षकुण्डली में लग्नेश– तृतीयेश वा चतुर्थेश–नवमेश एक घर में हों या एक–दूसरे को मित्रदृष्टि से देखें तो उस वर्ष तबदीली होगी। अगर वर्षलग्नेश वक्री हो और वह मित्रग्रह से दृष्ट हो तो भी तबदीली का योग बनेगा।

सूक्ष्म, शुद्ध वर्षमान के अनुसार वर्षप्रवेशकाल

वेध द्वारा यह सिद्ध हो चुका है कि– सूर्यसिद्धान्तीय वर्षमान वास्तविक (शुद्ध) वर्षमान से १/२ मिनट अधिक है। शुद्ध वर्षफल बनाने के लिए सूक्ष्म वर्षप्रवेशकाल का होना आवश्यक है। हम यहां "सूक्ष्म वर्ष–प्रवेश–सारणी" दे रहे हैं। जो दैवज्ञ वर्षफल के लिए सूक्ष्म वर्षप्रवेशकाल जानना चाहते हैं, उन्हें इसी सारणी का प्रयोग करना चाहिए।

इस सारणी में घं. मि. का प्रयोग है, अतः इससे वर्षप्रवेशकाल जानने के लिए जातक के जन्म का स्टैं. टा. ही यहां प्रयोग में लाना होगा। जैसे– मान लीजिए, किसी व्यक्ति के दसवें वर्ष का प्रवेशकाल जानना है। उस व्यक्ति के जन्म का वार चन्द्र और जन्मकाल (भा. स्टैं. टा.) ८घं. २०मि. (प्रातः) है। उसके वारादि जन्मकाल (2 वा. 8 घं. 20 मि.) में सारणी से गताब्द 9 द्वारा प्राप्त वारादि काल 4 वा. 7 घं. 22 मि. जोड़ने पर 6 वा. 15 घं. 42 मि. मिले। इसका अर्थ हुआ कि इस व्यक्ति के दसवें वर्ष का प्रवेश शुक्रवार को 15 घं. 42 मि. (भा. स्टैं. टा.) पर होगा।

ध्यान रहे– इस सारणी के प्रयोग से प्राप्त वार रात्रि के 12 बजे बदलने वाला होगा। अतः यहां प्रयोग में लाया जाने वाला जन्मकालिक वार भी इसी प्रकार होना चाहिए।

सूक्ष्म वर्षप्रवेश सारणी

गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.
१	१/६/९	१३	२/७/५९	२५	३/९/४९	३७	४/११/३९	४९	५/१३/२९
२	२/१२/१८	१४	३/१४/८	२६	४/१५/५८	३८	५/१७/४८	५०	६/१९/३८
३	३/१८/२७	१५	४/२०/१७	२७	५/२२/७	३९	६/२३/५७	५१	१/१/४७
४	५/०/३७	१६	६/२/२७	२८	०/४/१६	४०	१/६/६	५२	२/७/५६
५	६/६/४६	१७	०/८/३६	२९	१/१०/२६	४१	२/१२/१६	५३	३/१४/०६
६	०/१२/५५	१८	१/१४/४५	३०	२/१६/३५	४२	३/१८/२५	५४	४/२०/१५
७	१/१९/०४	१९	२/२०/५४	३१	३/२२/४४	४३	५/०/३४	५५	६/२/२४
८	३/१/१३	२०	४/३/३	३२	५/४/५३	४४	६/६/४३	५६	०/८/३३
९	४/७/२२	२१	५/९/१२	३३	६/११/२	४५	०/१२/५२	५७	१/१४/४२
१०	५/१३/३२	२२	६/१५/२२	३४	०/१७/११	४६	१/१९/१	५८	२/२०/५१
११	६/१९/४१	२३	०/२१/३१	३५	१/२३/२१	४७	३/१/११	५९	४/०३/१
१२	१/१/५०	२४	२/३/४०	३६	३/५/३०	४८	४/७/२०	६०	५/९/१०

गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.
६१	६/१५/१९	७३	०/१७/९	८५	१/१८/५९	९७	२/२०/४९	१०९	३/२२/३९
६२	०/२१/२८	७४	१/२३/१८	८६	३/१/८	९८	४/२/५८	११०	५/४/४८
६३	२/३/३७	७५	३/५/२७	८७	४/७/१७	९९	५/९/७	१११	६/१०/५७
६४	३/९/४६	७६	४/११/३६	८८	५/१३/२६	१००	६/१५/१६	११२	०/१७/६
६५	४/१५/५६	७७	५/१७/४५	८९	६/१९/३५	१०१	०/२१/२५	११३	१/२३/१५
६६	५/२२/५	७८	६/२३/५५	९०	१/१/४५	१०२	२/३/३४	११४	३/५/२४
६७	०/४/१४	७९	१/६/४	९१	२/७/५४	१०३	३/९/४४	११५	४/११/३४
६८	१/१०/२३	८०	२/१२/१३	९२	३/१४/३	१०४	४/१५/५३	११६	५/१७/४३
६९	२/१६/३२	८१	३/१८/२२	९३	४/२०/१२	१०५	५/२२/२	११७	६/२३/५२
७०	३/२२/४१	८२	५/०/३१	९४	६/२/२१	१०६	०/४/११	११८	१/६/१
७१	५/४/५०	८३	६/६/४०	९५	०/८/३०	१०७	१/१०/२०	११९	२/१२/१०
७२	६/११/०	८४	०/१२/५०	९६	१/१४/४०	१०८	२/१६/२९	१२०	३/१८/१९

वर्षप्रवेश का लग्न किस स्थान का होना चाहिए।

जिस प्रकार जातक का जन्म जिस स्थान पर होता है उसी स्थान के अक्षांश–रेखांशानुसार ही लग्न का निर्णय किया जाता है, ठीक उसी प्रकार वर्षप्रवेश के समय जातक जिस स्थान पर हो उसी स्थान के अक्षांश–रेखांशानुसार ही वर्षप्रवेश का लग्न होना चाहिए, क्योंकि वर्ष प्रवेश भी जातक का एक 'उपजन्म' ही है। इस प्रकार न्यूयार्क (अमेरिका) में जन्म लेने वाला जातक यदि अपने किसी वर्ष के प्रवेश के समय दिल्ली (भारत) में मौजूद है तो उसके उस वर्ष का प्रवेशकालीन लग्न दिल्ली के अक्षांश–रेखांशानुसार ही लगाना चाहिए। इसी तरह यदि दिल्ली में जन्म लेने वाला जातक वर्षप्रवेश के समय न्यूयार्क में हो तो उसके उस वर्ष का प्रवेशकालीन लग्न न्यूयार्क के अक्षांश–रेखांशानुसार ही होना चाहिए। क्योंकि प्राचीनकाल में अधिकतर लोग अपने जन्मस्थान को छोड़कर बहुत कम दूसरे स्थान पर जाते थे, अतः ज्योतिषी लोगों में वर्षप्रवेश के लग्न को जन्मस्थान से ही जोड़ने की परम्परा बन गई, जो तर्कसंगत नहीं है।

इस विषय को स्पष्टता से जानने के लिए 'सं. 2052 वि. के' "श्रीमार्त्तण्ड पंचांग" में पृ. 41/42 पर मेरा लेख "वर्षप्रवेश का लग्न किस स्थान का होना चाहिए?" पढ़ें।

मास प्रवेशकाल

भिन्न–भिन्न राशियों में संचार करता हुआ सूर्य जब–जब जातक के जन्म–कालिक स्पष्ट सूर्य की अंश, कला, विकलाओं के तुल्य अंश, कला, विकलाओं पर आता है, तब–तब जातक के मासों का प्रारम्भ (मासप्रवेश) होता है। उदाहरणार्थ– यदि जातक का जन्मकालिक स्पष्ट सूर्य 2 रा. 10 अं. 25 क. 40 वि. है, तो जब जब (सूर्य) जातक की आयु के विभिन्न वर्षों में मेष आदि राशियों के 10 अं. 25 क. 40 वि. पर पहुँचेगा– इसका निर्णय सूर्य की मास–प्रवेश वाले दिन की गति और उस दिन के पंचांगस्थ दैनिक सूर्य तथा मास–प्रवेशकालिक सूर्य के अन्तर से त्रैराशिक द्वारा किया जा सकता है। (इसके लिए सं. 2050 वि. के "श्रीमार्त्तण्ड पंचांग" में पृष्ठ 41 पर दिया गया मेरा लेख "स्पष्टमान से मास–प्रवेशकाल" पढ़ें।)

–प्रियव्रत शर्मा

ग्रहशील-चक्र

रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	ग्रहाः
३/१०	३/१०	३/१०	३/१०	३/१०	३/१०	०	३/१०	३/१०	एकपाददृष्टिः
५/९	५/९	५/९	५/९	०	५/९	५/९	५/९	५/९	द्विपाददृष्टिः
४/८	४/८	०	४/८	४/८	४/८	४/८	४/८	४/८	त्रिपाददृष्टिः
७	७	४/७/८	७	५/७/९	७	३/७/१०	७	७	सम्पूर्णदृष्टिः
चं. मं. गु.	र. बु.	र. बृ. चं.	र. रा. शु.	र. चं. मं.	बु. रा. श.	बु. रा. शु.	बु. श. शु.	बुध	मित्र—ग्रहाः
बु.	मं.श.गु.शु.	शु. श.	मं. गु. श.	रा. श.	मं. गु.	गु.	गु.	०	समग्रहाः
श. रा. शु.	रा.	बु. रा.	चं.	बु. शु.	र. चं.	र. चं. मं.	र. चं. मं.	०	शत्रुग्रहाः
मेष १०	वृष ३	मकर २८	कन्या १५	कर्क ५	मीन २७	तुला २०	मिथुन १५	धनु १५	उच्चराशयः परमोच्चांशाः
तुला १०	वृश्चिक ३	कर्क २८	मीन १५	मकर ५	कन्या २७	मेष २०	धनु १५	मिथुन १५	नीचराशयः नीचांशाः
सिंह	कर्क	मे., वृश्चि.	मि., क.	ध., मी.	वृष, तुला	म., कुं.	कन्या	मीन	स्वगृहाणि
सिंह	वृष	मेष	कन्या	धनु	तुला	कुम्भ	कर्क	मकर	मूलत्रिकोण
क्षत्रिय	वैश्य	क्षत्रिय	शूद्र	विप्र	विप्र	शूद्र निषाद	निषाद	निषाद	वर्णः
पुरुष	स्त्री	पुरुष	नपुंसक	पुरुष	स्त्री	नपुंसक	पुरुष	पुरुष	पुरुष, स्त्री, नपुंसकः
मध्याह्न	अपराह्न	मध्याह्न	प्रभात	प्रभात	अपराह्न	अपराह्न	अपराह्न	अपराह्न	समय
पूर्व	वायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशान	आग्नेय	पश्चिम	नैर्ऋत्य	नैर्ऋत्य	दिशा
सुवर्ण	रौप्य	सुवर्ण	कांस्य	सुवर्ण	रौप्य	लौह	लौह	लौह	धातु
चतुष्पद्	बहुपद्	चतुष्पद्	द्विपद्	द्विपद्	द्विपद्	भुजंगपद्	अपद्	अपद्	पाद्
उग्र	सौम्य	उग्र	शुभ	शुभ	शुभ	पाप	पाप	पाप	सौम्यादि
सत्त्व	सत्त्व	तम	रज	सत्त्व	रज	तम	तम	तम	गुण
स्थिर	चर	चर	द्विस्व.	स्थिर	चर	पक्षी,स्थिर	चर	पक्षी	चरादि
तिक्त	क्षार	कटु	सर्वरस	मधुर	अम्ल	कषाय	कषाय	कषाय	रस
पशु	जलभू.	दुग्ध	श्मशान	वाणी	जल	उत्कट	ऊषर	ऊषर	भूमि
पित्त	श्लेष्म	पित्त	समधातु	समधातु	कफशुक्र	वायु	धूम्र	वायु	पित्तादि
वृद्ध	युवा	युवा	युवा	वृद्ध	युवा	अतिवृद्ध	वृद्ध	वृद्ध	अवस्था
पाटल	गौरश्वेत	रक्त	नील	पीत	श्वेत	नील	धूम्र	धूम्र	रंग
मूल	जीव	धातु	जीव	जीव	मूल	मूल	धातु	धातु	धात्वादि
वन	जल	वन	ग्राम	ग्राम	ग्राम	सन्धि	विवर	विवर	स्थानम्

वर्ष में योगिनी के लिए जन्मनक्षत्रसंख्या में गताब्द जोड़ें, ३ और जोड़ें, ८ से भाग दें, तो शेष मंगलादि योगिनी दशा होती है।

वर्षयोगिनीमतेन मुद्दादशा (मास–दिन)

	मास	दिन
सं.	२	२०
सि.	२	२०
उ.	२	०
भ.	१	२०
भ्रा.	१	२०
धा.	१	०
पिं.	०	२०
मं.	०	२०

गर्भयोग–

वर्ष–कुण्डली में लग्नेश पांचवें या सातवें पड़ा हो व पंचमेश और सप्तमेश लग्न में पड़े हों तो उस वर्ष गर्भयोग होता है। मुंथेश और चन्द्रमा बली होकर पांचवें हों और पंचमेश भी बली हो तो गर्भ होता है।

जन्मपत्री न हो तो वर्ष बनाने की रीति

स्पष्ट प्रश्नलग्न की राशि को छोड़कर अंशादिक की कला करें, फिर उसमें १५० (डेढ़ सौ) का भाग दें। लब्ध, जो राश्यादि चार फल आवे उसकी राशि के अंक में प्रश्नलग्न की राशि के अंक मिलाएं। प्राप्तांक को मुन्था का स्पष्ट लग्न समझें और प्रश्नलग्न से चतुर्थराशि के स्वामी को जन्मलग्नेश जानें अर्थात् पंचाधिकारियों में जन्मलग्नपति के स्थान में प्रश्नलग्न से चतुर्थराशि का स्वामी जो हो उसे लग्नेश समझिए। प्रश्नपत्र पर वर्ष बनाने में इतना ही विशेष है। अन्य सर्व रीति में कुछ न्यूनाधिक नहीं है।

अरिष्ट योग

यदि जन्मलग्न ही वर्ष लग्न हो और जन्मनक्षत्र भी वर्ष में आ जाए तो यह द्विजन्मा वर्ष अशुभ है। वर्ष में गुरु, चन्द्र शुभ न हों तो अशुभ, कष्टभय होता है। वर्ष में गुरु, चन्द्र शुभ हों तो अशुभ फल नहीं होगा।

आवश्यक मुहूर्त्त

कोई भी कार्य यदि शास्त्र-सम्मत शुभ-मुहूर्त में किया जाए तो वह अवश्य सफल होकर सुखप्रद होता है। गया-गोदावरी-यात्रा में, नवरात्रकृत्य में एवम् चातुर्मास्य व्रत में गुरु-शुक्रास्त का दोष नहीं होता।

गर्भाधान संस्कार का मुहूर्त्त

शुभ तिथियां- १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३। **शुभ नक्षत्र**-तीनों उत्तरा, मृ., ह., अनु., रो., स्वा., श्र., ध., श.। **शुभ लग्न**- जब लग्न और ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभग्रह हों;३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों; सूर्य, मंगल या गुरु लग्न को देखते हों, विषम राशि के नवांश में चन्द्रमा हो, रजोदर्शनकाल से पहली चार रात्रि छोड कर १६ रात्रि तक समरात्रि में गर्भ हो तो पुत्र, विषम में हो तो कन्या होती है।

चित्रा, पुन. पुष्य, अश्विनी गर्भाधान के लि, मध्यम हैं।

गर्भाधान के लिए अशुभकाल

भद्रा; ४, ६, ८, ९, १४, १५, ३० तिथियां; संक्रान्ति का दिन, सन्ध्याकाल, मंगल, रवि, शनिवार, रजोदर्शनकाल की पहली चार रात्रियां; ज्येष्ठा, रेवती और आश्लेषा नक्षत्रों के अन्त की दो-दो घड़ी; मूल, अश्विनी और मघा के आदि की २-२ घड़ी; ४, ८, १२ लग्नों के अन्त की आधी-आधी घड़ी; ५, ९, १ लग्नों की आधी-आधी घड़ी; ५, १, १५ तिथियों के अन्त की एक-एक घड़ी; ६, ११, १ तिथियों के आदि की एक-एक घड़ी; निर्बल तारा, जन्मनक्षत्र, मूल, भरणी, अश्विनी, रेवती, मघा नक्षत्र एवम् ग्रहण के दिन, व्यतिपात, वैधृति योग; माता-पिता के श्राद्ध का दिन; दिन का समय; परिघ योग का आधा भाग; उत्पात से हत नक्षत्र; जन्मराशि से अष्टमलग्न; पापयुक्त लग्न तथा पापाकान्त नक्षत्र गर्भाधान के लिए वर्जित है।

गर्भमासों के स्वामी

मास	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
स्वामी	शुक्र	मंगल	गुरु	सूर्य	चन्द्रमा	शनि	बुध	गर्भाधान समय का लग्नेश	चन्द्रमा	सूर्य

स्त्री-पुरुष के चन्द्रबल की विशेषता

गर्भाधान संस्कार में स्त्री का चन्द्रबल देखना चाहिए और अन्यकार्यों में पति का चन्द्रबल देखना चाहिए- यह सदा स्मरण रखें।

पुंसवन संस्कार का मुहूर्त्त

यह संस्कार गर्भधान के तीसरे मास में गुरु, रवि, मंगलवार को मृग., पुन., पु., ह., मू. और श्रवण नक्षत्रों में; १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ १५ तिथियों में जब लग्न से १, ४, ५, ७, ९ और १० स्थानों में शुभग्रह और ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों तो शुभ होता है। तीनों उत्तरा, रोहिणी, रेवती नक्षत्र तथा सोम, बुध और शुक्रवार भी शुभ हैं।

सीमान्त संस्कार का मुहूर्त्त

गर्भाधान के छठे या आठवें मास में जब मास का स्वामी बली हो तब पुंसवन के मुहूर्त में निर्दिष्ट तिथियों, वारों, नक्षत्रों और लग्नों में सीमान्त शुभ होता है। "**सीमान्त जातकादीनि प्राशनान्तानि यानि वै। न दोषो मलमासस्य मौढ्यस्य गुरुशुक्रयोः।।**"

गर्भ-रक्षा के लिए विष्णुपूजा

गर्भाधान के आठवें मास में श्रवण, रोहिणी और पुष्य नक्षत्र में; शुभ लग्न, वार और तिथियों में जब लग्न से आठवां स्थान शुद्ध हो तब गर्भ की रक्षा के लिए विष्णु की पूजा करनी चाहिए।

मेधाजनन संस्कार

बालक के उत्पन्न होने के अनन्तर नाल काटने से पहले दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली के अग्रभाग में सुवर्ण लगाकर सुवर्णसहित अंगुली से शहद और गौ के घी को मिलाकर "**ॐ भूस्त्वयि दधामि, ॐ भुवस्त्वयि दधामि, ॐ स्वस्त्वयि दधामि, ॐ भू र्भुवः स्वस्त्वयि दधामि, ॐ भूर्भुवः स्वः सर्व त्वयि दधामि**"- इन पांचों मन्त्रों से बालक को थोड़ा-थोड़ा चार बार मधु चटावें- ऐसा करने से बालक बुद्धिमान् और यशस्वी होता है।

स्तनपान कराने व सूतिकापथ्य का मुहूर्त

रिक्ता., अमा, भद्रा, व्यतिपात एवं वैधृति को छोड़कर शुभ तिथियां हों; वार चं. बु. गु. श. हों; नक्षत्र मृग., पुन., पु., श्र., रे., म. हों- तब स्तनपान कराना शुभ है। आगे अन्नप्राशन में कही गई तिथि, नक्षत्रों में सूतिकापथ्य शुभ है।

प्रसूता स्त्री के स्नान का मुहूर्त्त

रेवती, तीनों उत्तरा, रोहिणी, मृग., ह., स्वा., अश्वि. और अनु. नक्षत्रों में; रवि, गुरु और भोम वारों में; १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५ तिथियों में शुभ हैं। आर्द्रा, पुन., पु., श्र., म., भ., कृ., वि. मू. और चित्रा नक्षत्र तथा शनि और बुधवार त्याज्य हैं। अन्य नक्षत्र और वार मध्यम हैं।

प्रसूता स्त्री द्वारा जलपूजन का मुहूर्त्त

मास समाप्त होने पर बुध, गुरु या चन्द्रवार को ४, ९, १४, तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में श्र., पुन., पु., मृ., ह., मू., अनु., नक्षत्रों में जलपूजन उत्तम है। परन्तु गुरु और शुक्र के अस्त में; चैत्र, पौष या अधिक मास में (मास पूरा होने पर भी) जलपूजन नहीं करना चाहिए।

जातकर्म और नामकरण का मुहूर्त्त

संक्रान्तिदिन, भद्रा और व्यतिपात को छोड़कर १, २, ३, ५, ७, १०, ११ १२, १३ तिथियों में जन्मकाल से ११वें या १२वें दिन सोम, बुध और शुक्रवार को मृ., रे., चि., अनु., तीनों उत्तरा, रो., ह., अश्विनी, पुष्य, अभि., स्वा., पुन., श्र., ध., श., नक्षत्रों में, जब लग्न से १, ४, ५, ७, १० स्थानों में शुभग्रह तथा ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों तब शुभ होता है।

अथ दोला (झूला) आरोहणमुहूर्त्त

जन्म दिन से १०, १२, १६, १८, ३२वें दिन शुक्रवार में; मृ., रे., चि., अनु., ह., अश्वि., पुष्य, अभि., तीनों उत्तरा, रो. नक्षत्रों में ४, ९, १४, ३० तिथियों के अलावा अन्य तिथियों में; १, ४, ७, १० लग्नों में शुभग्रह से युक्त होने पर एवं १, ४, ५, ६, ७, ९, १०, ११ वें शुभग्रह हों तथा ३, ६, ११ वें पापग्रह हो तो उत्तम होता है।

निष्क्रमण का मुहूर्त्त

स्वा., अश्वि., पुन., ह., मू., पु., अनु., श्र., रो., ध. नक्षत्रों में; भौम एवं शनि को छोड़कर अन्य वारों में, रिक्ता, अमा, भद्रादि से रहित शुभ दिन में; तीसरे, चौथे मास में शुभ है। शीघ्रता होने पर १२वें दिन बालक का निष्क्रमण करें। इसी दिन सूर्य और नक्षत्र पूजन पूर्वक सूर्य नक्षत्रों का दर्शन करा दें।

सूर्य नक्षत्र से चन्द्रनक्षत्र तक गिनें				
५ नैरोग्य	५ मरण	५ कृषता	५ व्याधि	७ सौख्य

भूम्युपवेशन–मुहूर्त्त

पांचवें महीने में पृथ्वी, वाराह का पूजन करके भौम के पूर्ण बल में तीनों उत्तरा, रो., मृग., ज्ये., अनु., अश्वि., हस्त, पुष्य, अभि– इन नक्षत्रों में; ४, ९, १४, ३०– इन तिथियों को छोड़कर स्थिर लग्न एवं शुभ दिन में बालक के करधनी का त्रिसूत्र बांधकर पृथ्वी पर बैठाएं।

भूम्युपवेशन के लिए मंत्र– " रक्षैनं वसुधे देवि सदा सर्वगतं शुभे। आयुः प्रमाणं सकलं निक्षिपस्व हरिप्रिये।" इति।।

इसी समय बालक के सामने पुस्तक, कलम, वस्त्र, शस्त्र, स्वर्ण, चांदी, तुला आदि वस्तु रखें। जिसको बालक ग्रहण करे उससे उसकी आजीविका होती है।

अन्नप्राशन का मुहूर्त्त

जन्ममास से ६, ८, १० या १२वें मास में पुत्र का और ५, ७, ९ या ११ वें मास में कन्या का भद्रादि दोषरहित १, ३, ५, ७, १०, १३, १५ तिथियों में; सोम, बुध, गुरु और शुक्रवार को म., रे., चि., अनु., ह., अश्वि., पु., अभि., स्वा., पुन., श्र., ध., श., तीनों उत्तरा, रोहिणी नक्षत्रों में; जन्मराशि या जन्मलग्न से आठवें लग्न या नवांशक तथा मेष, वृश्चिक और मीन लग्न को छोड़कर शेष लग्नों में; १, ३, ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभ ग्रह हों या शुभ ग्रह की दृष्टि हो; ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों; दशम स्थान पापग्रहरहित हो; १, ६, ८ स्थान में चन्द्रमा न हो तो शुभ होता है। किसी–किसी के मत से जन्मनक्षत्र अनु., शततारिका (शतभिषा) और स्वाती अशुभ हैं।

कर्णवेध का मुहूर्त्त

चैत्र, पौष देवशयन (आषाढ़ शुक्ल ११ से कार्तिक शुक्ल ११ तक), जन्ममास, जन्मनक्षत्र, ४, ९, १४ तिथियां, जन्मतारा, क्षयतिथि और सम वर्षों को छोड़कर जन्म के १२वें या १६वें दिन; ६वें, ७वें, ८वें मास या विषम वर्षों में सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार को श्र., ध., पुन., मृ., रे., चि., अनु., ह., अश्वि., पुष्य, अभि. नक्षत्रों में जब लग्न से अष्टम स्थान शुद्ध हो; १, ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभ ग्रह हों; ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों; तुला, वृष, धनु या मीन लग्न में बृहस्पतिवार हो तो कर्णच्छेदन श्रेष्ठ है। इस संस्कार के समय पर करने से मनुष्य के हर्निया (अंत्रवृद्धि) जैसे भयानक रोग की जड़ ही कट जाती है।

कन्या के नासिकाच्छेदन का मुहूर्त्त

कर्णवेधोक्त नक्षत्रों में तथा उत्तरा ३, शत., स्वा. में शुभ तिथ्यादिक, शुक्लपक्ष में दिन के प्रथम प्रहर के समय नासिका वेध शुभ है।

मुण्डनमुहूर्त

गर्भाधानकाल से या जन्मकाल से विषम अर्थात् ३रे, ५वें, ७वें वर्ष में (मनु जी के मत से प्रथम वर्ष में भी) चैत्र को छोडकर उत्तरायण सूर्य में चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्रवार, लग्न तथा नवांशक में, जन्मराशि या जन्मलग्न से अष्टम लग्न को छोड़कर; २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ तिथियों में संक्रान्तिदिन को छोड़कर जब लग्न से आठवां स्थान शुद्ध (ग्रहरहित) हो; ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों; ज्ये., मृ., रे., चि., स्वा., पुन., श्र., ध., श., ह., अश्वि., पुष्य और अभिजित् नक्षत्रों में मुण्डन शुभ है।

ध्यान रहे– लड़के की माता को पांच मास का गर्भ हो तो मुण्डन निषिद्ध है, परन्तु पांच वर्ष से अधिक अवस्था के बालक के लिए निषेध नहीं है। जेठे लड़के का मुण्डन ज्येष्ठ मास में नहीं करना चाहिए।

मुण्डनकर्म में विशेष–स्वकुल–शिष्टाचारानुसार पूर्वोक्त नक्षत्र, तिथ्यादि; शुभ समय में अपने–अपने इष्टदेव के स्थानों में मुण्डन तथा कर्णवेध का होना देखा जाता है, जो **"यथा कुलधर्म वः"**– इस स्मृति के अनुसार से ठीक ही है।

क्षौर बनवाने का मुहूर्त

मुण्डन के लिए जो तिथियां और नक्षत्र शुभ बतलाये गए हैं वे ही हजामत बनवाने के लिए शुभ हैं– वर्जित काल–शनि, रवि, भौमवार; हजामत में नौवें दिन, संध्याकाल, ४, ८, ९, १४, १५, ३० तिथियां, संक्रान्तिदिन, रात्रि में, बिना आसन, संग्राम में, यात्रा करने के दिन, स्नान करके, शरीर में उबटन लगवाकर और भोजन के पीछे हजामत बनवाना अशुभ है।

विशेष फल– यज्ञ, विवाह, मृतककर्म में, कारागार से छूटने पर, ब्राह्मण और राजा की आज्ञा से किसी भी समय(बिना मुहूर्त के भी) हजामत बनवाई जा सकती है। किसी–किसी आचार्य का मत है कि जो लोग राजकार्य में नियुक्त हैं वे रूपजीवी (जैसे– नट–भांड आदि) किसी भी दिन हजामत बनवा सकते हैं।

कर्णवेध और क्षौर का वार– ब्राह्मण रविवार को,, क्षत्रिय सोमवार को, वैश्य और शूद्र शनिवार को क्षौरोक्त तिथ्यादि में हजामत बनवा सकते हैं।

अक्षरारम्भ का मुहूर्त

जन्म से ५वें या ७वें वर्ष में उत्तरायण सूर्य में गणेश, विष्णु, सरस्वती और लक्ष्मी का पूजन करके सोम, बुध, गुरु और शुक्रवार को हस्त, अश्वि., पुष्य, अभि., श्र., स्वा., रे., पुन., आर्द्रा, चित्रा, अनुराधा नक्षत्रों में बुरे योगों और भद्रा को छोड़कर २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तिथियों में (शुक्लपक्ष उत्तम) अक्षरारम्भ शुभ होता है। लग्न में मेष, कर्क तुला और मकर राशियां नहीं होनी चाहिएं।

विद्यारम्भ का मुहूर्त

उत्तरायण में (कुम्भ के सूर्य को छोड़कर) रवि, बुध, गुरु और शुक्रवार को; २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तिथियों में; भ.., आर्द्रा, पुन., हस्त, चि., स्वा., श्र., ध., शत., अश्वि., म., तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, रो., पुष्य, आश्ले., अनु., रेवती नक्षत्रों में; जब लग्न से १, ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभ ग्रह हों तो विद्यारम्भ शुभ है।

फारसी, अंग्रेज़ी विद्यारम्भ का मुहूर्त

सूर्य, भौम, शनिवार हों; ४, ९, १४ तिथि हों; ज्ये., आश्ले., म., तीनों पूर्वा, भ., कृ., वि., आर्द्रा, उ. षा., शत. नक्षत्र शुभ हैं।

सीने–पिरोने (सूचिकर्म) का मुहूर्त

अश्वि., पु., चि., अनु., ध. नक्षत्र; सूर्य, बुध, चन्द्र, गुरु, शनि वार एवम् १; २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९ १०, ११, १३, १५ तिथियां शुभ हैं।

यज्ञोपवीत संस्कार का मुहूर्त

यज्ञ और उपवीत– इन दो शब्दों से यज्ञोपवीत बना है। देवताओं की पूजा, संगति (सम्मेलन या कान्फ्रेंस) और जिसमें दान हों, उसे यज्ञ कहते हैं। उपवीत का अर्थ है– पिरो देने वाला अर्थात् देवपूजा, सम्मेलन और दान के साथ पुरुष को मिला देने वाला संस्कृत (तन्तु–धागाविशेष)– यह यज्ञोपवीत का अर्थ हुआ। बालक को गुरु, चन्द्र शुद्धि देखकर जन्म से या गर्भ से (**गर्भाज्जनेर्वा इति पारस्करमन्वादीनां मते विकल्पः**) ब्राह्मण आठवें वर्ष, क्षत्रिय ११वें, वैश्य १२वें, वर्ष में करें। यदि इन वर्षों में न किया जा सके तो ब्राह्मण १६, क्षत्रिय २२ और वैश्य २५वें वर्ष तक संस्कार कर सकते हैं। उसके बाद सावित्रीपतित व्रात्य संज्ञा वाले होते हैं। माघादि पांच मासों में देवशयनी से पूर्व ह., अश्वि., पुष्य, अभि., ३ उत्तरा, रो., आश्ले., स्वा., श्र., ध., मू., मृग., रे., चि., अनु., तीनों पूर्वा, आर्द्रा वेधरहित, इन नक्षत्रों में (क्षत्रिय, वैश्यों के लिए पुनर्वसु भी ग्राह्य है) सू., चं., बु., (बुधास्त हो तो बुधवार त्याज्य) श., गुरुवार को शुक्ल २, ३, १०, ११, १२ तथा कृष्ण पक्ष की २, ३, ५ तिथियों में शुभ है। किन्तु सोपपदा तिथि (जैसे– आषाढ़ शुक्ल १०, ज्येष्ठ शुक्ल २, पौष शुक्ल ११, माघ शुक्ल १२), संक्रान्तिदिन तथा रोगबाण को छोड़कर मध्याह्न से पहले शुभ है। शु., गु., चं. और लग्नेश ६, ८ स्थानों में चं., शु. १२वें स्थान में और १, ५, ८वें भावों में पापग्रह अशुभ है। शुभ ग्रह ६, ८, १२ स्थानों के सिवाय अन्य स्थानों में; पाप ग्रह ३, ६, ११ स्थानों; वृष या कर्क का पूर्ण चन्द्रमा लग्न में हो तो शुभ होता है। गुरु, शुक्र के बाल्य–वृद्धत्त्व–अस्त के समय को छोड़कर उपनयन शुभ है। यदि गोचराष्टक वर्ग से बालक के उपनयन संस्कार के लिए समयशुद्धि न मिले अथवा सिंह, मकर किंवा अशुभ स्थान में गुरु हो तो सौर चैत्र में उपनयन संस्कार किया जा सकता है–ऐसी शास्त्र की आज्ञा है।

मेलापक सारणी देखने की रीति और अष्टकूट दोषों के परिहार

लेखकः- प्रियव्रत शर्मा

आगे चार पृष्ठों पर 'मेलापक सारणी' दी गई है । इसके बाई ओर पहिले,दूसरे कालमों में लड़को की और सबसे ऊपर वाली पहिली,दूसरी पंक्तियों में लड़के की राशियां तथा चरण-नक्षत्र दिए गए हैं । लड़की के नक्षत्र चरण के आगे लड़के के नक्षत्र-चरण के नीचे वर्ण आदि अष्टकूटों के गुण और मिलान में होने वाले वर्ण आदि दोषों का निर्देश है । वर्ण आदि दोषों के लिए नीचे लिखे सांकेतिक अक्षरों का इस सारणी में प्रयोग किया गया है:-

वर्ण दोष के लिए	= ब	राशीश दोष के लिए	= र
वश्य दोष के लिए	= व	गण दोष के लिए	= ग
तारा दोष के लिए	= त	भकूट दोष के लिए	= भ
योनि दोष के लिए	= य	नाडी दोष के लिए	= न

उदाहरणार्थ - यदि लड़की का जन्म चित्रा के ४ थं चरण में और लड़के का पू. भा. के २ य चरण में हुआ हो तो इनके मिलान में इस मेलापक सारणीसे अष्टकूटों के गुण १८ ½ मिले, और ज्ञात हुआ कि इस मिलान में त (तारा), य (योनि), ग (गण), तथा भ (भकूट) दोष हैं ।

अष्टकूट दोषों के परिहार-

वर, कन्या के राशीशों अथवा नवमांशेशों की मैत्री तथा राशीशों , नवशांशेशों की एकता द्वारा नाड़ी दोष के अलावा शेष सभी दोषों का परिहार हो जाता है । राशीश-नवमांशेशों की मैत्री-एकता के अलावा अन्य और भी अनेक परिहार हैं, जिनसे वर्ण आदि दोष दूर हो जाते हैं। इनका विवरण नीचे दिया जा रहा है -

(१) वर्ण दोष का परिवार:- वर की राशि के वर्ण से कन्या की राशि का वर्ण उत्तम होने पर वर्ण दोष होता है । लेकिन यदि वर के राशीश का वर्ण कन्या के राशीश के वर्ण से उत्तम हो तो वर्ण दोष का परिहार हो जाता है । सभी ग्रहों के वर्ण इस प्रकार हैं:-

रवि का वर्ण क्षत्रिय,चन्द्र का वैश्य,मंगल का क्षत्रिय,बुध का शूद्र, गुरु का ब्राह्मण, शुक्र का ब्राह्मण और शनि का शूद्र है ।

(२) वश्य दोष का परिहार:- वर कन्या की राशियों की योनिमैत्री होने पर वश्य दोष दूर हो जाता है ।

(३) तारा दोष का परिहार:-वर कन्या के राशीशों, नवमांशेशों की मैत्री या एकता के अलावा तारा दोष का दूसरा कोई परिहार नहीं है ।

(४) योनि दोष का परिहार:- भकूट और वश्य कूटों में से कोई एक भी यदि शुभ(ठीक) हों तो योनिदोष का परिहार हो जाता है ।

(५) राशीश दोष का परिहार:- भकूट शुभ होने पर (यानि द्विर्द्वादश, नवपंचम और षडष्टक का अभाव होने पर) राशीश दोष दूर हो जाता है ।

(६) गण दोष का परिहार:- वर -कन्या की राशि एक और नक्षत्र भिन्न-भिन्न हों [illegible]

(७) भकूट दोष का परिहार :- वर कन्या के राशीशों, नवांशेशों की मैत्री या एकता ही भकूट दोष का प्रमुख परिहार है। यदि इसके साथ ताराशुद्धि या वश्यशुद्धि भी हो तो भकूट दोष का उत्तम परिहार माना जाता है ।

(८) नाड़ी दोष का परिहार :- वर,कन्या की राशि एक और नक्षत्र भिन्न-भिन्न हों, अथवा नक्षत्र एक और राशियां, भिन्न-भिन्न हों तो नाड़ी दोष दूर हो जाता है । दोनों के नक्षत्रों के चरणों का वेध न होने की स्थिति में भी नाड़ी दोष का परिहार माना जाता है ।

नाड़ी दोष के परिहार के प्रसंगमें वर-कन्या में से किसी एक का जन्म नक्षत्र के प्रथम चरण में और दूसरे का चतुर्थ चरण में अथवा एक का द्वितीय चरण में और दूसरे का तृतीय चरण में हुआ हो तो पादवेध मान लिया जाता है । लेकिन यह नियम सर्वत्र लागू नहीं होता । इसके स्पष्टीकरण के लिए सं. २०४७ के 'श्री मार्त्तण्ड पंचांग' में पृष्ठ ३४ पर दिया गया मेरा लेख **''पाद वेध द्वारा नाड़ी दोष के परिहार में परम्परागत एक भ्रांति''** पढ़ना चाहिए । यह लेख मेरी पुस्तक **'ग्रहयोग एवं दाम्पत्य जीवन'** में भी है ।

ध्यान दें:-जैसा कि ऊपर भी बता चुके हैं,वर,कन्या के राशीशों,नवमांशों की मैत्री और एकता तो वर्ण,वश्य,तारा,योनि,राशीश,गण और भकूट दोषों का परिहार कर देती है,लेकिन नाड़ी दोष का परिहार इनसे नहीं होता । नाड़ी दोष का परिहार तो केवल उपरोक्त स्थितियों में ही होता है । दैवज्ञ को यह विशेष रूप से ध्यान में रखना चाहिए,कि नाड़ीदोष का यदि परिहार नहीं मिले तो किसी भी स्थिति में (भले ही अन्य सातों कूट शुद्ध क्यों न हों, मिलान में गुण अठाईस भी क्यों न प्राप्त हों), सम्बन्ध करने की अनुमति नहीं देनी चाहिए । इस बारे में मुहूर्तशास्त्रकारों का यही स्पष्ट निर्णय है ।

'नाड़ीदोषस्तु विप्राणाम्'-वाक्य को संहिताकारों ने मान्यता नहीं दी है । 'मुहूर्त चिन्तामणि' आदि अन्य प्रामाणिक मुहूर्तग्रन्थों ने भी इसकी उपेक्षा की है,अतः इसे मान्यता नहीं दी जा सकती।

'एकनक्षत्र जातानां नाड़ीदोषो न विद्यते'- वाक्य भी प्रामाणिक नहीं है । एक ही नक्षत्र में उत्पन्न वर,कन्या को नाड़ी दोष तब नहीं माना जाता, जबकि उनका जन्म भिन्न-भिन्न चरणों में हुआ हो । 'मुहूर्तचिन्तामणि' का वाक्य है -**'नक्षत्रैक्ये पादभेदे शुभं स्यात्'** (अर्थात् दोनों का नक्षत्र एक होने पर दोष (नाड़ीदोष) की निवृत्ति तभी होती है,जबकि दोनों के चरण भिन्न-भिन्न हों)। ध्यान रहे, दोनों का जन्म एक ही नक्षत्र के एक ही चरण में होने पर नाड़ी दोष परमाधिक माना जाता है। एक ही नक्षत्र में पादवेध भी नहीं माना जाता ।

दोषपूर्ण अष्टकूटों के ,परिहारों को प्रमाणित करने वाले शास्त्रवाक्य बहुत हैं,उनको विस्तारभय से यहां उद्धृत नहीं किया गया। उन्हें मेरी पुस्तक **''ग्रहयोग एवं दाम्पत्यजीवन''** में आप देख सकते हैं)

सरलता पूर्वक एक ही दृष्टि में सभी अष्टकूटों के परिहार आ जाएं- इसके लिए नीचे दिया गया यह कोष्ठक देखें :-

अष्टकूट परिहार कोष्ठक

कूट	परिहार
वर्ण	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो। २ वर के राशीश का वर्ण कन्या के राशीश के वर्ण से उत्तम हो।
वश्य	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो। २ योनिमैत्री हो ।
तारा	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो।
योनि	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो। २ वश्यशुद्धि हो। ३ सद्भकूट हो।
राशीश	१ दोनों के नवमांशेशों में मैत्री या एकता हो। २ भकूट दोष न हो।
गण	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो। २ भकूट दोष न हो। ३ दोनों की राशि एक और नक्षत्र भिन्न-भिन्न हों ।
भकूट	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो।*
नाड़ी	१ दोनों की राशि एक और नक्षत्र भिन्न - भिन्न हों । २ दोनों का नक्षत्र एक और राशियां भिन्न-भिन्न हों । ३ दोनों का नक्षत्र एक और चरण भिन्न - भिन्न हों । ४ पाद वेध न हो।

* यदि इस परिहार के साथ ताराशुद्धि , वश्यशुद्धि में से कोई एक भी हो तो यह परिहार उत्तम माना जाता है।

परिहृत कूट के गुण

वर्ण आदि जो कूट दोषपूर्ण होता है, उसके लिए निर्धारित पूरे गुणों को छोड़ दिया जाता है। जब उस दोषपूर्ण कूट का कोई उपरोक्त परिहार मिल जाए तब उसके पूरे गुणों को पुन: स्वीकार कर उन्हें मेलापक सारणी से प्राप्त गुण संख्या में जोड़कर उस गुणसंख्या को वास्तविक गुणसंख्या माना जाए- ऐसा कुछ आचार्यों का मत है । कुछ आचार्यों का मत है कि परिहार द्वारा दोष का पूरा नहीं, अपितु आंशिक निवारण होता है,अत: परिहृत कूट के आधे गुणों को ही स्वीकार करना चाहिए । यह (दूसरा)मत तर्कसंगत है। इसके अनुसार परिहृत कूट के आधे गुण(उस कूट के लिए निर्धारित पूरे गुणों का आधा भाग)मेलापक सारणी से मिली गुणसंख्या में जोड़कर उसे ही यथार्थ गुणसंख्या मानना युक्तियुक्त है ।

कितने गुण मिलने पर सम्बन्ध कर देना चाहिए ?

परिहृत कूटों की आधी गुणसंख्या को मेलापक सारणी में उपलब्ध गुणसंख्या में जोड़ने. पर मिली गुणसंख्या यदि १६ $\frac{१}{२}$ से कम है तो सम्बन्ध नहीं करना चाहिए । यदि षडष्टक भकूट का परिहार न मिल रहा हो तब २० से कम गुण संख्या होने पर सम्बन्ध नहीं करना चाहिए । ध्यान रहे- यहां प्रत्येक स्थिति में नाड़ी दोष का परिहार मिलना नितान्त आवश्यक है। यदि नाड़ी दोष के उपरोक्त परिहारों मे से कोई एक भी परिहार न मिल रहा हो तब तो २८ गुण मिलने पर भी सम्बन्ध करने की अनुमति शास्त्रकारों ने नहीं दी है ।

यदि किसी विशेष कारण (विवशता) वश सम्बन्ध करना आवश्यक (अपरिहार्य)हो जाए, तब १६ से कम गुणों और षडष्टक तथा नाड़ीदोष के अपरिहार की स्थिति में भी गाय,अन्न,वस्त्र,सुवर्ण का यथाशक्ति दान, तथा जप -शान्ति करके सम्बन्ध किया जा सकता है । इस स्थिति में कन्या का नाम बदलकर मिलान को अनुकूल बनाने की भी परम्परा है । लेकिन दान,जप,शान्ति करना भी इस स्थिति में अत्यन्त आवश्यक है । साधाराण स्थिति में (नितान्त विवशता की स्थिति के अभाव में) लड़की का नाम बदलकर मिलान को अनुकूल बनाना सर्वथा अशास्त्रीय है । नाम बदलकर मिलान को अनुकूल बनाने का 'सिद्धान्त' अपनाने पर तो किसी भी लड़की का किसी भी लड़के के साथ और किसी भी लड़के का किसी भी लड़की के साथ सम्बन्ध बेरोक टोक किया जा सकता है और वहां अष्टकूटों के गुण इच्छानुसार अधिकाधिक प्राप्त किए जा सकते हैं, जिससे दोषपूर्ण कूटों का परिहार बतलाने वाले सभी शास्त्रवाक्य अर्थहीन हो जायेंगे।

मिलान में कुछ और विचार्य विषय

यद्यपि संहिताओं में इन आठ कूटों के अतिरिक्त अनेक और भी विचार्य विषय मिलते हैं, लेकिन वर्गमैत्री और नृदूर का भी विचार करने की भी कुछ दैवज्ञों में परम्परा हैं,इन दोनों का विवेचन इस प्रकार है-

वर्गमैत्री-

वर्गमैत्री का विचार वर,कन्या के नाम के आदिम वर्णों से सम्बद्ध है। हिन्दी वर्णमाला के अकार आदि स्वर 'अवर्ग', 'क' आदि पांच वर्ण 'कवर्ग', 'च' आदि पांच वर्ण 'चवर्ग', 'ट' आदि पाँच वर्ण 'टवर्ग' त आदि पांच वर्ण 'तवर्ग','प'आदि पांच वर्ण 'पवर्ग', 'य' आदि पांच वर्ण 'यवर्ग' तथा 'श' आदि पांच वर्ण 'शवर्ग' कहलाते हैं। इन अवर्ग आदि आठ वर्गों को उपरोक्त क्रमानुसार क्रमश: प्रथम वर्ग, द्वितीय वर्ग, आदि संज्ञाएं दी गई हैं। इन आठ वर्गों केस्वामी क्रमश: गरुड़, मार्जार,सिंह, श्वान

सर्प, मूषक, मृग और मेष माने गये हैं । प्रत्येक वर्गेश अपने से पंचम वर्ग के स्वामी का शत्रु माना गया है । जैसे :- गरुड़ और सर्प तथा मूषक और मार्जार परस्पर शत्रु हैं ।

नामाक्षरों से वर्ग ज्ञान कोष्ठक :

वर्ग	अवर्ग	कवर्ग	चवर्ग	टवर्ग	तवर्ग	पवर्ग	यवर्ग	शवर्ग
वर्ग के	अ, इ,	क, ख, ग,	च,छ,ज,	ट,ठ,ड,	त,थ,द,	प, फ,ब,	य,र,	श,ष,
वर्ण	उ,ए	घ,ङ	झ,ञ	ढ,ण	ध,न	भ,म	ल,व	स,ह
वर्गेश	गरुड	मार्जार	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	मृग	मेष

वर, कन्या के नामों के आदिम वर्णों के वर्गो के स्वामी परस्पर शत्रु हों तो अच्छा नहीं माना जाता, उनका जीवन दुःखमय रहता है ।

यदि वर्गेशों में शत्रुता है तो अष्टकूटों से प्राप्त गुण १७ से अधिक होने पर ही सम्बन्ध करना चाहिए। यदि मिलान में अष्टकूटों से प्राप्त गुण लगभग १४,१५ ही हों और नाडी दोष न हो तब वर्गेश की एकता (अभिन्नता) होने पर सम्बन्ध किया जा सकता है-ऐसा कुछ लोगों का मत है

नृदूर

वर का नक्षत्र या नक्षत्र चरण यदि कन्या के नक्षत्र या नक्षत्र चरण से तुरन्त परवर्ती हो तो 'नृदूर' दोष कहलाता है। जैसे - कन्या का जन्म नक्षत्र अश्विनी और वर का भरणी, अथवा कन्या का जन्म अश्विनी के प्रथम चरण में और वर का अश्विनी के द्वितीय चरण में हो तो भी नृदूर दोष होगा। 'नृदूर' दोष का फल मुहूर्त्त शास्त्रों में बहुत अशुभ लिखा है।

दोनों (वर ,कन्या) की राशि एक और नक्षत्र भिन्न-भिन्न या दोनो का नक्षत्र एक और राशियां भिन्न-भिन्न हों तों नृदूर का परिहार हो जाता है।

अष्टकूटों से प्राप्त गुण लगभग १६ $\frac{१}{२}$,१७,१८ हों और 'नृदूर' दोष का परिहार न मिले, तब नाड़ी दोष के अभाव में भी मिलान को कुछ मुहूर्त्तकार अच्छा नहीं मानते । १८ से अधिक गुण होने पर 'नृदूर' की उपेक्षा की जा सकती है।

नामराशि से अष्टकूटों का निर्णय

वर और कन्या-दोनों का यदि जन्मकाल ज्ञात न हो, तब दोनों की नामराशि, नामनक्षत्रों (नामों के आदिम अक्षरों से अबकहड़ा चक्र द्वारा निर्णीत राशि और नक्षत्रों) के आधार पर ही मेलापक सारणी से अष्ट कूटों के गुणों का निर्णय करना चाहिए। अपिच यदि वर, कन्या-दोनों में से किसी एक का जन्मकाल ज्ञात न हो तो भी दोनों की नामराशि, नामनक्षत्रों के आधार पर ही अष्टकूटों का निर्णय करना चाहिए। एक की जन्मराशि, जन्मनक्षत्र और दूसरे की नामराशि, नाम नक्षत्र के आधार पर अष्टकूटों का निर्णय करने की अनुमति शास्त्र नहीं देते।

कुज (मंगली) दोष-

निम्नलिखित स्थितियों में कुजदोष (मंगली दोष) माना गया है -

(१) जन्म कुण्डली में १,४,७,८,१२ वें भावमें मंगल या अन्य कोई क्रूर ग्रह हो।

(२) चन्द्र कुण्डली में १,४,७,८,१२ वें भाव में मंगल या कोई क्रूर ग्रह हो ।

(३) शुक्र से १,४,७,८,१२ वें भाव में मंगल या अन्य कोई क्रूर ग्रह हो ।

कुजदोष बनाने वाला ग्रह अस्त, नीचस्थ या शत्रुराशिस्थ हो तो कुजदोष का फल अधिक माना गया है । कुजदोष दाम्पत्य जीवन के लिए अच्छा नहीं माना जाता ।

कुजदोष के सामान्य कुछ परिहार -

इन स्थितियों में वर, कन्या का कुज दोष दूर हो जाता है -

(१) कुजदोष बनाने वाला ग्रह (क्रूरग्रह) उच्चस्थ स्वराशिस्थ, स्वनवांशस्थ, मित्रराशिस्थ, उच्चनवांश या मित्रनवांश में हो।

(२) कुजदोष बनाने वाले ग्रह पर वृहस्पति की पूर्णदृष्टि हो ।

(३) वर-कन्या दोनों की कुण्डलियों में कुजदोष विद्यमान हो तो दोनों के कुजदोष समाप्त हो जाते हैं।

ध्यान रहे, कुजदोष वाले वर और कन्या दोनों की कुण्डलियों में कुजदोषों का परिहार मिलने पर कुजदोष का कुफल समाप्त हो जाता है । दोनों की कुण्डलियों में से किसी एक की कुण्डली में ही कुजदोष परिहार हो तो कुजदोष का कुप्रभाव रहता है ।

कुण्डली मिलान की प्रामाणिकता

हमारे ज्योतिष के मानक ग्रन्थों (संहिता, जातक, मुहूर्त्त ग्रन्थों) में वर, कन्या का सम्बन्ध करने से पूर्व उनकी कुण्डलियों में ग्रहस्थितियों के मिलान द्वारा कुजदोष के परिहार की चर्चा कहीं भी नहीं की गई है। पुनरपि कुण्डली मिलान की परम्परा सभी भारतीय प्रदेशों में प्रचलित है । इसका शास्त्रीय मूल अभी तक अज्ञात है। आश्चर्य है- सभी वशिष्ठ, नारद, गर्ग आदि की संहिताओं, मुहूर्त्तमार्तण्ड, मुहूर्त्तचिन्तामणि आदि मुहूर्त्तग्रन्थों तथा वर-कन्या के सम्बन्ध की अनुकूलता के परीक्षण के लिए रचित 'विवाहवृन्दावन' आदि सभी ग्रन्थों में वर-कन्या के सम्बन्ध के लिए केवल अष्टकूटों के परीक्षण का ही निर्देश है, कुण्डली मिलान का कहीं भी नहीं ।

षट्कूट चक्र

वर्ण, वश्य, योनि, राशीश, गण और नाड़ी ज्ञापक चक्र।

राशि	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
नक्षत्र	अश्वि.	भर	कृ.	कृ.	रो.	मृ.	मृ.	आर्द्रा	पुन.	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	उ.फा.	ह.	चि.
चरण	१, २ ३,४	१,२ ३,४	१	२,३ ४	१,२ ३,४	१,२	३,४	१,२ ३,४	१,२ ३	४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१	२,३ ४	१,२ ३,४	१,२
वर्ण	क्ष.	क्ष.	क्ष.	वै.	वै.	वै.	शू.	शू.	शू.	ब्रा.	ब्रा.	ब्रा.	क्ष.	क्ष.	क्ष.	वै.	वै.	वै.
वश्य	च.	च.	च.	च.	च.	च.	द्वि.	द्वि.	द्वि.	ज.	ज.	ज.	व.	व.	व.	द्वि.	द्वि.	द्वि.
योनि	अ.	ग.	मे.	मे.	स.	स.	स.	श्वा.	मा.	मा.	मे.	मा.	मू.	मू.	गौ.	गौ.	म	व्या.
राशीश	म.	म.	म.	शु.	शु.	शु.	बु.	बु.	बु.	च.	च.	च.	सू.	सू.	सू.	बु.	बु.	बु.
गण	दे.	म.	रा.	रा.	म.	दे.	दे.	म.	दे.	दे.	दे.	रा.	रा.	म.	म.	म.	दे.	रा.
नाड़ी	आ.	म.	अ.	अ.	अ.	म.	म	आ.	आ.	आ.	म.	अं.	अं.	म.	आ.	आ.	आ.	म.

राशि	तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
नक्षत्र	चि.	स्वा	वि.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू.षा.	उ.षा.	उ.षा.	श्रव.	ध.	ध.	श.	पू.भा.	पू.भा.	उ.भा	रेव.
चरण	३,४	१,२ ३,४	१,२ ३	४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१	२,३ ४	१,२ ३,४	१,२	३,४	१,२ ३,४	१,२ ३	४	१,२ ३,४	१,२ ३,४
वर्ण	शू.	शू.	शू.	ब्रा.	ब्रा.	ब्रा.	क्ष.	क्ष.	क्ष.	वै.	वै.	वै.	शू.	शू.	शू.	ब्रा.	ब्रा.	ब्रा.
वश्य	द्वि.	द्वि.	द्वि.	की.	की.	की.	द्वि.	द्वि.	द्वि.	ज.	ज.	ज.	द्वि.	द्वि.	द्वि.	ज.	ज.	ज.
योनि	व्या.	म.	व्या.	व्या.	मृ.	मृ.	श्वा.	वा.	न.	न.	वा.	सि.	सि.	अ.	सि.	सि	गौ.	ग.
राशीश	शु.	शु.	शु.	म.	म.	म.	गु.	गु.	गु.	श.	श.	श.	श.	श.	श.	गु.	गु.	गु.
गण	रा.	दे.	रा.	रा.	दे.	रा.	रा.	म.	म.	म.	दे.	रा.	रा.	रा.	म.	म.	म.	दे.
नाड़ी	म.	अं.	अं.	अं.	म.	आ.	आ.	म.	अं.	अं.	अं.	म.	म.	आ.	आ.	आ.	म.	अं.

वर्ण- ब्रा.= ब्राह्मण, क्ष= क्षत्रिय, वै= वैश्य, शू.=शूद्र

योनि- अ.=अश्व, ग=गज, मे=मेष, स=सर्प, श्वा.=श्वान, मा.=मार्जार, मू = मूषक,म=महिष, व्या=व्याघ्र, मृ=मृग, वा=वानर, न=नकुल, सिं=सिंह

गण- दे=देव, म=मनुष्य, रा=राक्षस

वश्य- च=चतुष्पद, की=कीट, व= वनचर, द्वि=द्विपद, ज=जलचर

राशीश- सू=सूर्य, चं=चन्द्र, मं.=मंगल, बु=बुध, गु=गुरु, शु=शुक्र, श=शनि

नाड़ी- आ=आद्य, म=मध्य, अं=अन्त्य

मेलापक सारणी (भाग 1)

कन्या \ वर		मेष: अश्वि. 1,2,3,4	मेष: भर. 1,2,3,4	मेष: कृत्ति. 1	वृष: कृत्ति. 2,3,4	वृष: रोहि. 1,2,3,4	वृष: मृग. 1,2	मिथुन: मृग. 3,4	मिथुन: आर्द्रा 1,2,3,4	मिथुन: पुन. 1,2,3	कर्क: पुन. 4	कर्क: पुष्य 1,2,3,4	कर्क: आश्ले. 1,2,3,4	सिंह: मघा 1,2,3,4	सिंह: पू.फा. 1,2,3,4	सिंह: उ.फा. 1	कन्या: उ.फा. 2,3,4	कन्या: हस्त 1,2,3,4	कन्या: चित्रा 1,2
मेष	अश्वि. 1,2,3,4	28 न	33	28½ त	18½ ब भ त	21½ ब भ त	22½ ब भ त	26 ब त र	17 ब न त र	19 ब न त र	23½ न त	31½ त	28 ग	21 व भ ग	25 व भ	15½ व भ न त	11 ब भ नतर	9 तबभ यनर	13 [illegible]
	भर. 1,2,3,4	34	28 न	29 ग	19 ब ग भ	21½ ब भ त	14½ ब भ त न	18 न ब त र	26 ब त र	27 ब त र	31½ त	23½ न त	25½ ग त	20 ग व भ	18 व भ न	26 व भ	21½ ब भ र	20 ब भ र त	4 [illegible]
	कृत्ति. 1	27½ ग त	29 ग	28 न	18 ब भ न	10 ग ब न भ	16½ ग ब भ त	20 ग ब त	20 ग ब त	21 ग ब त र	25½ ग त	26½ ग त	23½ न त	16½ व भ न त	20 ग व भ	20 ग व भ	15½ ग व भ	15½ ग व भ र	18 [illegible]
वृष	कृत्ति. 2,3,4	18½ ग भ त	20 ग भ	19 भ न	28 न	20 ग न	26½ ग त	17½ ग ब भ त	17½ ब ग भ त	18½ ग ब भ त	22 ग त र	23 ग त र	20 न त र	18½ न व त र	22 र व ग	22 र व ग	21 ग भ	21 ग भ	23½ [illegible]
	रोहि. 1,2,3,4	23½ भ त	23½ भ त	11 ग भ न	20 ग न	28 न	36	27½ ब भ	23½ ब भ त	22½ भ ब त य	26 त र य	27 त र	12 ग न तरय	10½ रवग नतय	24½ र व त य	27 र व	26 भ	26 भ	20 [illegible]
	मृग. 1,2	23½ भ त	14½ भ न त	18½ भ त ग	27½ त ग	35	28 न	19 ब भ न	24 ब भ	22½ ब भ त य	26 त य र	19 त र न	21 त र य ग	19½ गरव त य	15½ र व नतय	24½ र व त	23½ भ त	26 भ	13 [illegible]
मिथुन	मृग. 3,4	27 तर	18 न त र	22 त र ग	19½ भ ग त	27 भ	20 भ न	28 न	33	31½ त य	19 भ व तयर	12 भ न वतर	14 भवत यगर	23½ व त य ग	19½ व न त य	28½ व त	31½ त	34	[illegible]
	आर्द्रा 1,2,3,4	19 त र न	27 त र	21 त र ग	18½ ग भ त	24½ भ त	26 भ	34	28 न	25 न य	12½ भ न तयर	20 भ व त र	13 गभर वतय	23½ ग त व	29½ व त	21½ न व त	24½ न त	24½ न त	27 [illegible]
	पुन. 1,2,3	20 न त र	27 त र	23 त र	20½ भ त ग	22½ भ त	23½ भ त य	31½ त य	24 न य	28 न	15½ न भ व र	22½ भ व र	17 भ व तरग	22½ य व त ग	26½ य व त	21½ न व त	24½ न त	25½ न त	27½ त
कर्क	पुन. 4	22½ ब न त	29½ ब त	25½ ब त ग	22 ब ग त र	24 ब त य र	25 ब त य र	18 बभव रतय	10½ बभव नयर	14½ ब भ रनत	28 न	35	29½ त ग	16½ बभय ग त	20½ ब भ त य	15½ ब भ न त	18 न भ त र	19 न ब वतर	[illegible]
	पुष्य 1,2,3,4	30½ ब त	21½ ब न त	26½ ब त ग	23 ब त र ग	25 ब त र	18 ब न त र	11 बभन वतर	18 ब भ वतर	21½ ब भ व र	35	28 न	30 ग	19½ ब भ ग त	15½ ब भ न त	23½ ब भ त	26 ब व त र	27 ब व त र	[illegible]
	आश्ले. 1,2,3,4	26 ब ग	24½ ब ग त	22½ न ब त	19 न ब त र	11 गबत नयर	19 ग ब तयर	12 गबत भवयर	12 गबभ वतयर	15 गबत भवर	28½ ग त	29 ग	28 न	15 य ब भ न	15½ गबय भ त	18½ ग ब भ त	21 ग ब वतर	21 ग ब वतर	[illegible]
सिंह	मघा 1,2,3,4	20 ग व भ	20 ग व भ	16½ व भ न त	17½ वब रनत	9½ वबत गरनय	17½ वबत गरय	21½ व ब गतय	22½ व ब ग त	20½ व ब गयत	16½ ग भ य त	19½ ग भ त	16 न भ य	28 न	30 ग	27½ ग त	16½ व ब गभत	16½ व ब गभत	[illegible]
	पू.फा. 1,2,3,4	26 व भ	18 व भ न	20 ग व भ	21 ब व र ग	23½ व ब रतय	15½ वबन रतय	19½ व ब नतय	28½ व ब त	26½ व ब त य	22½ य भ त	17½ भ न त	16½ ग भ य त	30 ग	28 न	35	24 व ब भ	22½ व ब भ त	7½ [illegible]
	उ.फा. 1	16½ व भ त न	26 व भ	20 व ग भ	21 व ब ग र	26 व ब र	24½ व ब र त	28½ व ब त	20½ व ब न त	21½ व ब न त	17½ भ न त	25½ भ त	19½ ग भ त	27½ ग त	35	28 न	17 व ब भ न	16 व ब भ न	13 [illegible]
कन्या	उ.फा. 2,3,4	13 भ न त र	22½ भ र	16½ ग भ र	21 ग भ	26 भ	24½ भ त	31½ ब त	23½ न ब त	24½ न ब त	20 न व त र	28 व त र	22 ग व त र	17½ ग व भ त	25 भ व	18 व भ न	28 न	27 न	[illegible]
	हस्त 1,2,3,4	10 य भ नतर	20 भ त र	17½ भ र ग	22 भ ग	25 भ	26 भ	33 ब	22½ न ब त	24½ न ब त	20 न व त र	28 व त र	23 व त र ग	18½ व भ त ग	22½ व भ त	16 व भ न	26 न	28 न	[illegible]
	चित्रा 1,2	13 गभत यर	5 गभन तयर	19 भ त य र	23½ भ त य	20 ग भ	12 ग भ न	19 ग ब न	26 ग ब य	25½ ग ब त	21 ग व त र	12 गनव तयर	27 व त र	22½ व भ त	8½ ग व भनत	14½ व य गभत	24½ ग य त	27 ग य	[illegible]

(ब =वर्णदोष। व =वश्यदोष। त =तारादोष। य =योनिदोष। र =राशीदोष। ग =गणदोष। भ =भकूट दोष। न =नाड़ी दोष।)

मेलापक सारणी (भाग 2)

वर / कन्या		तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
		चित्रा 3,4	स्वाती 1,2,3,4	विशा. 1,2,3	विशा. 4	अनु. 1,2,3,4	ज्ये. 1,2,3,4	मूल 1,2,3,4	पू.षा. 1,2,3,4	उ.षा. 1,	उ.षा. 2,3,4	श्रव. 1,2,3,4	धनि. 1,2,	धनि. 3,4	शत. 1,2,3,4	पू.भा. 1,2,3	पू.भा. 4	उ.भा. 1,2,3,4	रेव. 1,2,3,4
मेष	अश्वि. 1,2,3,4	22½ बय तग	26½ बय त	22½ तब यग	18½ गभ तय	25½ भत	14 भन ग	13½ भन ग	25 भ	23½ भत	25 ब तर	26 बत र	20 बत यरग	20 बत यरग	15 बन तरग	16 बन तयर	14½ नभ तय	24½ भ त	26 भ
मेष	भर. 1,2,3,4	13½ बगन तय	29½ बत	21½ गब तय	17½ गभ तय	17½ नभ त	19½ गभ त	20 गभ	18 नभ	26 भ	27½ बर	26 ब तर	10 बय गनतर	10 बय गनतर	20 गब तर	24 बय तर	22½ तर य	17½ नभ त	26½ भत
मेष	कृत्ति. 1	27½ बत य	15½ बग नत	19½ बन तय	15½ भन तय	19½ गभ त	25½ भत	24½ भत	18 गभ य	12 गभ न	13½ बग नर	11½ बय रगन	25 बत यर	25 बत यर	27 बत र	19 बग तयर	17½ गभ तय	19½ गभ त	11½ गभ तन
वृष	कृत्ति. 2,3,4	22½ बभ तय	10½ गब भनत	14½ बभ तनय	20½ न तय	24½ गत	30½ त	20 भ तर	13½ यग भर	7½ गभ नर	12 गभ न	10 यग भन	23½ भत य	29½ बत य	31½ बत	23½ गब तय	20 गत यर	22 ग तर	14 गन तर
वृष	रोहि. 1,2,3,4	19 गब भ	15½ बभ नत	9½ तबग नभ	15½ गन त	29½ त	23½ ग त	14 गभ तर	19 रभ तय	11½ यभ नर	16 भय न	17 नभ य	20 गभ	26½ गब	24½ गब त	30½ बत	27 तर	27 तर	19 र नत
वृष	मृग. 1,2	12 बभ नग	25 बभ	18½ बभ तग	24½ तग	21½ नत	24½ तग	15 भत रग	10 नभ तयर	17 यभ तर	21½ भय त	25 भय	13 नभ ग	19 बग न	27 बग	29½ बत	26 तर	18 न तर	27 तर
मिथुन	मृग. 3,4	14 नभ ग	27 भ	20½ भत ग	14 भव तरग	11 भवन तर	14 भव तरग	23 तर ग	18 नत यर	25 यत र	20 भय वत	23½ भव य	11½ नभ वग	13 नभ ग	21 भग	23½ भत	25½ तव र	17½ नव तर	26½ वत र
मिथुन	आर्द्रा 1,2,3,4	20 गभ य	27 भ	20 गभ य	13½ रगव भय	17 तभ वयर	3 यतगव भनर	16 गन तर	28 तर	28 तर	23 भव त	23 भव त	17½ गभ वय	19 गभ य	12 गभ न	17 नभ य	19 नर वय	26½ वत र	26½ वत र
मिथुन	पुन. 1,2,3	20½ भत ग	28 भ	22 भग	15½ वभ रग	21½ वभ र	7 रगव भनत	14 यरत नग	27 तर	27 तर	22 वत भ	23 वत भ	17 वतभ यग	18½ भग तय	14 नभ ग	16 नभ य	18 रन यव	28 रव	27½ वत र
कर्क	पुन. 4	20½ बत रग	28 वर ब	22 वर बग	20 गभ	26 भ	11½ तग भन	8 वतब भगनय	21 बभ वत	21 बभ वत	26 बत र	27 बत र	21 बगत यर	12½ बभव तयगर	8 बभव नगर	10 बभर नवय	16 नभ य	26 भ	25½ भत
कर्क	पुष्य 1,2,3,4	11½ गनबव तयर	26½ बव तर	21 रबग वय	19 भ यग	18 भन	21 भग	17 गबभ वत	11 यबभ तनव	21 बभ वत	26 बत र	25 बय तर	13 गबन तयर	4½ भबगय वनतर	14½ बवत रगभ	18 बभव यर	24 भय	18 नभ	27 भ
कर्क	आश्ले. 1,2,3,4	25½ बव तर	12½ गबव तरन	17½ नबव तर	15½ नभ त	20 गभ	26 भ	22½ बभ वय	16 गबव भत	8 गबव भनत	13 गबर नत	13 बगत नर	26 बत यर	17½ बभव तरय	19½ बभव तर	11½ गबभ वतयर	17½ गभ तय	21 गभ	13 गभ न
सिंह	मघा 1,2,3,4	24½ बव तर	11½ बवत रगन	16½ बवत रन	22½ नव त	25½ गव त	33 व	25 भव	19 गव भ	8½ वगभ नतय	3½ बरतय गभन	4½ बरत गभन	18½ बर तभ	24½ बव तर	25½ बव तर	18½ बवर गत	18½ गभ त	19½ गभ त	13 गभ न
सिंह	पू.फा. 1,2,3,4	10½ बवत रगन	25½ बव तर	18½ बवर गत	24½ गव त	23½ नव त	25½ गय त	19 गव भ	17 भव न	24 भव न	17 बर भय	18½ बत भत	4½ बरत गभन	10½ बवत रगन	19½ बवर गत	24½ बव रत	24½ भत	17½ नभ त	25½ भत
सिंह	उ.फा. 1	16½ बवत यगर	25½ बव तर	16½ बवय गतर	22½ यव गत	31½ वत	17½ गव तन	9½ गव नभत	25 भव	25 भव	20 बर भ	20 बर भ	11½ बरत गभय	17½ बवत गरय	11½ बवत गनर	15½ बवत नरय	15½ नभ तय	26½ भत	25½ भत
कन्या	उ.फा. 2,3,4	16½ गबय भत	25½ बभ त	16½ गबय भत	18 यवत गर	27 वत र	13 गवत नर	14 गन तर	29½ र	29½ र	24½ भव	24½ भव	16 गभ वतय	16½ गबभ तय	10½ गबन भत	14½ बभन तय	17½ तनव यर	28½ वत र	27½ वत र
कन्या	हस्त 1,2,3,4	20 बभ यग	26½ बभ त	18½ बभ तयग	20 वग तयर	26 वत र	13 नव तरग	15 नत रग	27 तर	28½ र	23½ भव	24½ भव	18½ भग वर	19 बभ यग	8½ बयभ नतग	13½ बभ नतय	16½ वनत यर	26½ वत र	27½ वत र
कन्या	चित्रा 1,2	20 बभ न	19 गब भय	26½ बभ त	28 वत र	11 गवन तयर	25 वत यर	27 तय र	14 गन तर	22 गत र	17 गभ त	18½ गभ व	15½ भव नय	16 बय भन	24 बभ य	16½ गबत भय	19½ गवत यर	10½ गयव नतर	19½ वगत यर

(ब =वर्णदोष। व =वश्यदोष। त =तारादोष। य =योनिदोष। र =राशीशदोष। ग =गणदोष। भ =भकूट दोष। न =नाड़ी दोष।)

मेलापक सारणी (भाग 3)

कन्या \ वर		मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
		अश्वि. 1,2,3,4	भर. 1,2,3,4	कृत्ति. 1	कृत्ति. 2,3,4	रोहि. 1,2,3,4	मृग. 1,2	मृग. 3,4	आर्द्रा 1,2,3,4	पुन. 1,2,3	पुन. 4	पुष्य 1,2,3,4	आश्ले. 1,2,3,4	मघा 1,2,3,4	पू.फा. 1,2,3,4	उ.फा. 1	उ.फा. 2,3,4	हस्त 1,2,3,4	चित्रा 1,2
तुला	चित्रा 3,4	22½ ग त य	14½ ग न त य	28½ त य	23½ भ त य	20 ग भ	12 ग भ न	13 ग भ न	21 ग भ	19½ ग भ त	20½ ग र व त	11½ गनय वरत	26½ व त र	25½ व र त	11½ वरग न त	17½ व य गरत	17½ य ग भ त	20 ग भ य	21 भ न
	स्वाती 1,2,3,4	27½ य त	29½ त	17½ न त	12½ भ न त	15½ भ न त	26 भ	27 भ	26 भ	28 भ	29 व र	27½ व त र	14½ न व त र	13½ व न त ग	25½ व र त	25½ व र त	25½ भ त	27½ भ त	21 भ य ग
	विशा. 1, 2,3	22½ त य ग	22½ त य ग	20½ त य न	15½ त भ न य	10½ ग भ त न	18½ ग भ त	19½ ग भ त	20 ग भ य	21 ग भ	22 ग व र	21 ग त र	18½ न व त र	17½ व र त न	19½ व र त ग	17½ वयर ग त	17½ य ग भ त	18½ ग भ त य	27½ भ त
वृश्चिक	विशा. 4	16½ बगभ य त	16½ बगभ य त	14½ ब भ नयत	19½ ब न ५ त	14½ ब ग न त	22½ ब ग त	12 बवर गभत	12½ वबय गभर	13½ ब व गभर	19 ग भ	18 ग भ य	15½ भ न त	21½ ब व न त	23½ ब व ग त	21½ ब व गयत	17 तबव गयर	18 बवग तयर	27 ब व त र
	अनु. 1,2,3,4	24½ ब भ त	15½ ब भ न त	19½ ब भ ग त	24½ ब त ग	27½ ब त	20½ ब न त	10 बवत नभर	15½ तबव रभय	20½ ब व भ र	26 भ	18 भ न	21 भ ग	24½ ब व त ग	20½ ब व त न	29½ ब व त	25 ब व त र	26 ब व त	11 बरव नतय
	ज्येष्ठा 1,2, 3,4	12 ब ग भ न	18½ ब ग त भ	24½ ब भ त	29½ ब त	22½ ब ग त	22½ ब ग त	12 तबव गभर	2 तवबय गभनर	5 तबवर गभन	10½ त ग भ न	20 ग भ	26 भ	31 ब व	23½ ब व ग त	16½ तबव ग न	12 तबव गनर	12 तबव गनर	24 बवत य र
धनु	मूल 1,2,3,4	12 ग भ न	20 ग भ	24½ भ त	19 ब भ त र	13 ब ग तभर	13 रबग त भ	21 ब ग त र	15 बगन त र	12 रबग तनय	8 यगभ वनत	17 ग भ व त	23½ भ व य	25 व भ	19 व ग भ	9½ तवग भ न	13 तरब ग न	13 तरब ग न	26 र ब त य
	पू.षा. 1,2,3,4	26 भ	18 भ न	18 ग भ य	12½ ब य गभर	18 ब भ तयर	10 रबभ तनय	18 ब न तयर	27 ब त र	27 ब त र	23 भ व त	13 य भ नवत	17 ग भ व त	19 व ग भ	17 व भ न	25 व भ	28½ ब र	27 ब त र	13 तबग न र
	उ.षा 1	24½ भ त	26 भ	12 ग भ न	6½ रबय भ न	10½ बयर भ न	17 ब य तभर	25 ब य त र	27 ब त र	27 ब त र	23 भ व त	23 भ व त	9 ग भ वनत	8½ तगव यभन	24 व भ य	25 व भ	28½ ब र	28½ ब र	21 ग ब त र
मकर	उ.षा. 2,3,4	27 त र	28½ र	14½ ग न र	12 ग भ न	16 भ न य	22½ य भ त	20 ब य त भ	22 ब भ त	22 ब भ व त	28 त र	28 त र	14 ग न त र	4½ तयर गभन	20 र भ य	21 र भ	24½ भ त	24½ व भ	17 ग भ व त
	श्रव. 1,2,3,4	27 त र	26 त र	13½ य न र	11 य भ ग न	16 भ न य	25 भ य	22½ ब भ व य	21 ब भ व त	22 ब भ व त	28 त	26 य त र	15 न त र	6½ तगर भ न	18½ र भ त	20 भ र	23½ भ व	24½ भ व	19½ भ व
	धनि. 1,2,3,4	20 ग त य र	11 यगन त र	26 त य र	23½ भ त य	20 ग भ	12 ग भ न	9½ वबग भ न	16½ वयब ग भ	16 बगव त भ	22 ग त र	13 रगन तय	28 त र	19½ र भ त	5½ तगर भ न	12½ तयर ग भ	16 गभव त य	17½ ग भ व	15½ भ न व य
कुम्भ	धनि. 3,4	20 ग त य र	11 यगत न र	26 त य र	30½ त य	27 ग	19 ग न	12 ग भ न	19 ग भ य	18½ ग भ त	13½ ग भ वतर	4½ तयर गभनव	19½ भ व त र	25½ व त र	11½ वतर ग न	18½ वरग त य	17½ ग भ त य	19 ग भ य	17 य भ न
	शत. 1,2,3,4	15 ग न त र	21 ग त र	28 त र	32½ त	25½ ग त	27 ग	20 ग भ	12 ग भ न	13 ग भ न	8 गभव न र	14½ गभव त र	20½ व भ त र	26½ व र त	20½ व र ग त	12½ वरत ग न	11½ त ग न भ	8½ तयग न भ	25 भ य
	पू.भा. 1,2,3	18 न त य र	25 य त र	20 ग र त य	24½ ग त य	31½ त	31½ त	24½ भ त	17 भ न य	18 भ न	13 भ न व	20 भ र व य	13½ गभव त र	19½ व र त ग	25½ व र त	16½ वरय न त	15½ भ न त	15½ भ न त य	17½ ग भ त य
मीन	पू.भा. 4	14½ बभत न य	21½ ब य त भ	16½ गबत भ य	19 गबत य र	26 ब त र	26 ब त र	25½ ब व त र	18 बनव य र	19 न ब व र	18 न भ	25 भ य	18½ ग भ त	17½ ब ग त भ	23½ ब भ त	14½ बभत न य	16½ रबन वतय	16½ रबन वतय	18½ रबग वतय
	उ.भा. 1,2,3,4	24½ ब भ त	16½ ब भ त न	18½ ग ब त भ	21 ग ब त र	26 ब त र	18 न ब त र	17½ न ब वतर	25½ ब र व त	28 ब व र	27 भ	19 भ न	21 ग भ	18½ ग ब त भ	16½ ब भ न	25½ ब भ त	27½ ब व त र	26½ ब व त र	9½ बतर वयगन
	रेव. 1,2,3,4	25 ब भ	24½ ब भ त	11½ तगब भ न	14 गबन त र	17 व न त र	26 ब त र	25½ ब र व त	24½ र ब व त	26½ र ब व त	25½ भ त	27 भ	14 भ न ग	13 ब भ ग न	23½ ब भ त	23½ ब भ त	25½ ब र व त	26½ ब र व त	19½ बयर वतग

(ब =वर्णदोष। व =वश्यदोष। त =तारादोष। य =योनिदोष। र =राशीदोष। ग =गणदोष। भ =भकूट दोष। न =नाड़ी दोष।)

मेलापक सारणी (भाग 4)

वर / कन्या		तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
		चित्रा 3,4	स्वाती 1,2,3,4	विशा. 1,2,3	विशा. 4	अनु. 1,2,3,4	ज्ये. 1,2,3,4	मूल 1,2,3,4	पूषा. 1,2,3,4	उ.षा. 1.	उ.षा. 2,3,4	श्रव. 1,2,3,4	धनि. 1,2.	धनि. 3,4	शत. 1,2,3,4	पूभा. 1,2,3	पूभा. 4	उ.भा. 1,2,3,4	रेव. 1,2,3,4
तुला	चित्रा 3,4	28 न	27 ग य	34½ त	23½ भ द त	6½ यगव तनभ	20½ भ व त य	27 त य र	14 ग भ त र	22 ग त र	25 ग त व	26½ ग व	23½ न व य	18 न भ य	26 भ य	18½ ग भ त य	12½ गभव तयर	3½ वतयग भनर	12½ यरग भवत
	स्वाती 1,2,3,4	28 य ग	28 न	20 न य ग	9 भवय न ग	21½ भ व त	16½ भ व त ग	23 त र ग	27 त र ग	19 त न र	22 न व त	23 न व त	26½ व य ग	21 य ग भ	20 ग य भ	25 य भ	19 व भ य र	19½ व त भ र	12½ वतभ न र
	विशा. 1,2,3	34½ त	19 ग न य	28 न	17 भ व न	16 ग व भ य	20½ भ व त य	27 त य र	22 ग त र	14 ग न त र	17 ग न व त	17 ग न व त	30 व त य	24½ भ त य	26 भ य	20 ग भ य	14 गभव य र	13 गयभ त र	4½ गभव नतयर
वृश्चिक	विशा. 4	22½ ब व भ त	7 बवग नभय	16 ब व न भ	28 न	27 ग य	31½ त य	21½ बवत य भ	16½ बवग भ त	8½ दवग नभत	12 गबन त र	12 बनग त र	25 ब त य र	24 बवत य र	25½ ब व य र	19½ बवग य र	19 ग भ य	18 ग य भ	9½ गभन त य
	अनु. 1,2,3,4	6½ बवतभ यगन	21½ ब व भ त	16 बवभ य ग	28 य ग	28 न	31 ग	15½ बवत गयभ	13½ तबव न भ	21½ ब व त भ	25 ब त र	26 ब त र	12 तयब नरग	11 तयबव नरग	21 बवत र ग	24½ ब व य र	24 भ य	18 न भ	27 भ
	ज्येष्ठा 1,2,3,4	19½ बवत भ य	15½ तबव ग भ	19½ बवभ त य	31½ त य	30 ग	28 न	14 बवन भ य	16½ बवत ग भ	16½ बवत ग भ	20 ग व त र	20 ग ब त र	25 ब त य र	24 बवत य र	18 बवन र त	10 तबवय गनर	9½ गभत न य	21 ग भ	21 ग भ
धनु	मूल 1,2,3,4	26 त ब य र	21 ग ब त र	26 त ब य र	22½ भ व त य	15½ गवभ य त	15 य व न भ	28 न	28 ग	26½ ग त	15 गबभ व त	15 गबभ व त	20 बभव त य	28½ ब व य	21½ ब न त	14½ गनब त य	16 गनव त य	25 ग व त	26 ग व
	पूषा. 1,2,3,4	13 गबत न र	27 ब त र	21 ग ब त र	17½ ग व भ त	15½ भ व न त	17½ ग व भ त	28 ग	28 न	34	22½ ब भ व	23 ब भ व त	6 गबवभ नतय	14½ गबत न य	23½ ग ब त	28½ ब त य	30 व त य	23 न व त	31 व त
	उ.षा 1	21 ग ब त र	19 न ब त र	13 गबन त र	9½ गवभ न त	23½ भ व त	17½ ग व भ त	26½ ग त	34	28 न	16½ ब भ व न	14½ ब भ व न	15 गबव भ त	23½ ग ब त	23½ ग ब त	29½ ब त	31 व त	31 व त	23 न व त
मकर	उ.षा. 2,3,4	24 ग ब त	22 न ब व त	16 ग ब न त	13 ग न त र	27 त र	21 ग त र	16 ग भ व त	23½ भ व	17½ न भ व	28 न	26 न	26½ ग त	17 गबभ व त	17 गबव भ त	23 ब भ व त	30½ त	30½ त	22½ न त
	श्रव. 1,2,3,4	26½ ब व ग	22 न ब व त	17 नबग व त	14 न त र	27 त र	22 त र	17 भ व त ग	23 भ व त	14½ न भ व	25 न	28 न	28 य ग	18½ बभव य ग	18 बभव त ग	21 बभव त य	28½ त य	29½ त	22½ न त
	धनि. 1,2	22½ न ब व य	24½ ग ब व य	29 ब व त य	26 त य र	12 गनत य र	26 त य र	21 भ व त य	7 गभय वनत	16 ग भ व त	26½ ग त	27 ग य	28 न	18½ ब भ न व	23½ ब भ व य	19 गबव त भ	26½ ग त	15½ ग न त य	22½ ग य त
कुम्भ	धनि. 3,4	18 न भ य	20 ग भ य	24½ भ त य	25 त व य र	11 गवय तनर	25 त व य र	29½ त य	15½ ग त न य	24½ त ग	18 ग भ व त	18½ ग भ व य	19½ भ व न	28 न	33 य	28½ ग त	18 ग भ व त	7 तगभ वनय	14 गयव भ त
	शत. 1,2,3,4	26 भ य	19 भ य ग	26 भ य	26½ य व र	21 ग व त र	19 न व त र	22½ न त	24½ ग त	24½ ग त	18 ग भ व त	18 ग भ व त	24½ भ व य	33 य	28 न	19 ग न य	8½ गभव न य	17 ग भ व त	16 ग भ व त
	पूभा. 1,2,3	18½ ग भ त य	26 भ य	20 ग भ य	20½ ग व य र	26½ व य र	11 गवत यनर	15½ न ग त य	29½ त य	30½ त	24 भ व त	23 भ व त य	20 भ ग व त	28½ ग त	19 न ग य	28 न	17½ न भ व	22½ भ व य	20 भ य व त
मीन	पूभा. 4	11½ गबवभ तयर	19 बभव य र	13 गबव भयर	19 ग भ य	25 भ य	9½ गभन त य	15 गबत न य	29 ब व त य	30 ब व त	29½ ब त	28½ ब त य	25½ ग ब त	17 ग ब भ त	7½ गबय भतन	16½ ब भ त न	28 न	33 य	30½ य त
	उ.भा. 1,2,3,4	2½ यवबर गभनत	19½ भवब त र	12 गवर भयब	18 ग य भ	19 न भ	21 ग भ	24 ग ब व त	22 न ब व त	30 ब व त	29½ ब त	29½ ब त	14½ गबत न य	6 गबवन भतय	16 गबव भ त	21½ ब भ त य	33 य	28 न	35
	रेव. 1,2,3,4	12½ बभव तयर	11½ बभत दनर	4½ बभवन तगयर	10½ नभत य ग	27 भ	22 भ ग	26½ ब ग व	29 ब व त	21 न ब व त	20½ न ब त	21½ न ब त	22½ ब य त ग	14 बवय भतग	16 बभव त ग	18 बयभ वत	29½ य त	34	28 न

(ब =वर्णदोष। व =वश्यदोष। त =तारादोष। य =योनिदोष। र =राशीदोष। ग =गणदोष। भ =भकूट दोष। न =नाड़ी दोष।)

लग्न–गण्डान्त

कर्क, सिंह, वृश्चिक, धनु, मीन और मेष के अन्त एवम् आदि की आधी–आधी घड़ी लग्नगण्डान्त होता है। वह जन्म में ही भयप्रद होता है।

अथ विवाहमासाः—आचार्य चूड़ामणौ–"माङ्गल्येषु विवाहेषु कन्या–संवरणेषु च। दशमासाः प्रशस्यन्ते चैत्र–पौष–विवर्जिताः॥" वर्षासु पाणिग्रहणं न केचित् केचिद्वदन्तीत्यपरो विशेषः। तस्मात्सदाचार इह प्रमाणं देशे यथा यत्र तथैव तत्र॥ केशवेन यदि नोररीकृतं श्रावणादिषु च पाणिपीडनम्। तेन चोक्तमपरैरुदाहृतं तद्विकल्प इति मन्यते मया॥

अथ जन्म–मासादिषु निषेधः— सबसे बड़े (जेठे) लड़के अथवा सबसे बड़ी लड़की (जेठी) के जन्ममास (अर्थात् जन्मतिथि से ३० दिन) जन्मनक्षत्र अथवा जन्मतिथि में विवाह करना शुभ नहीं है। द्वितीयादि गर्भोत्पन्न को दोष नहीं है। **अत्यावश्यके परिहारः—** जातं दिनं दूषयते वशिष्ठः पञ्चैव गर्गस्त्रिदिनं तथात्रिः। तज्जन्मपक्षं किल भागुरिश्च व्रते विवाहे गमने क्षुरे च॥

यदि दो कार्यों की आवश्यकता हो तो— एक घर में दो शुभ काम करना मना है, परन्तु अति आवश्यकता में ९ दिन का अन्तर देकर दो घरों में अलग–अलग मण्डप गाड़कर और जो पुरोहित पहला कार्य करा चुका हो, उसी से दूसरा कार्य न करावें, दूसरे आचार्य से करावें। इसी प्रकार जिस गृह में पहला कार्य हुआ हो तो दूसरे कार्य में दूसरे घर में मण्डप गाड़कर कार्य को करें।

अथ ज्येष्ठ विचारः— ज्येष्ठ पुत्र व कन्या का ज्येष्ठ मास में विवाह करना अशुभ है। अत्यावश्यकता में कृत्तिका के सूर्य को छोड़कर दानादि पूर्वक करें।

षट्मास के भीतर दो विवाह आदि का निर्णय— दो सगी बहनों का विवाह एक साथ या छः मास के अन्दर करें तो निस्संदेह ३ वर्ष के अन्दर अशुभ फल हो। पुत्र के विवाह के पीछे षट्मास तक कन्या का विवाह न करें और कन्या व पुत्र के पीछे छः मास तक यज्ञोपवीत न करें, अर्थात् पहले कर लें और मंगलकार्य के पीछे अमंगल अर्थात् श्राद्ध, तिलतर्पण भी न करें। मुण्डन भी विवाह, जनेऊ के पीछे न करें। वर्ष पलटने पर फिर भले ही शुभकार्य कर लें। वहां छः मास का विचार नहीं है। यह ६ महीने का निषेध तीन पीढ़ी तक ही है।

विवाहादि शुभ कार्यों में मरणाशौच— साहे चिट्ठी (कुंकम पत्रिका) आने पर विवाह दिन निश्चित हो जाने पर किसी की मृत्यु हो जावे तो माता के मरण से ६ मास, पिता के मरण से एक साल, स्त्री के मरण से तीन मास, भाई व पुत्र के मरण से १½ मास, कुल वालों के मरण से २२½ दिन तक कोई शुभ कार्य न करें। अति संकट में ३० दिन बाद शान्ति करके अथवा विशेष शान्ति और गोदान करके अशौच के बाद करें।

त्रिबल शुद्धि विचार

विवाह के शुद्ध मुहूर्त्त पंचांग के अन्त में दिए गए हैं। उनमें से उत्तम मुहूर्त्त देखकर और उसी दिन वर की राशि से सूर्य, चन्द्र देखिए तथा कन्या राशि से चन्द्र, गुरु देखिए। बस, इसी को त्रिबलशुद्धि कहते है। यह त्रिबलशुद्धि जिस उत्तम विवाहलग्न के दिन मिले वही विवाह–दिन उत्तम है। यदि रवि, गुरु पूज्य हों तो मध्यम है, यदि सूर्य नेष्ट हो तो विवाह नहीं बनेगा–ऐसा समझें। इसी प्रकार कुमार के उपनयन में भी त्रिबल (गु.सू.चं.) शुद्धि प्रथम देखें– **"झष–चाप–कुलीरस्थो जीवोप्यशुभगोचरः अतिशोभनतां दद्याद्विवाहोपनयनादिषु॥ (बृहस्पतिः)॥** अत्यावश्यकता में **"द्विरर्च्यो द्वादशस्तुर्योऽथाष्टमस्त्रिगुणार्चनात्। उच्च उच्चांशके ग्राह्यः चन्द्रादष्टमगो रविः। नीचे नीचांशके त्याज्यः अरिलाभादिगोऽपि चेत्॥"**

तुलाराशौ अपूज्यःरविः–धर्म–धी–धनगतो दिवाकरस्तौलिराशि–जनितस्य शोभनः।।

आवश्यके पूज्यरवि–परिहारः— गार्ग्याङ्गिरोवत्स वशिष्ठ गौतम पराशराद्याः मुनयो वदन्ति। द्वितीयपञ्चांकगतो दिवाकरस्त्रयोदशाहात्परतः शुभावहः॥ (मु.प्र.सा.)।

विवाहादौ त्रिबल–शोधनम्	कन्या–वरयोःतैलादि–लापन (बन्न)– दिन–संख्या											
पूज्यगुरुः– १०/६/३/१ श्रेष्ठगुरुः–९/५/११/२/७ नेष्टगुरुः– ४/८/१२	राशि →	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
श्रेष्ठरविः– ३/६/१०/११	तैल सं.	७	१०	५	१०	५	७	७	५	५	५	५	७
पूज्यरविः– २/५/९ विशेष पूज्य रविः– १/७ नेष्टरविः– ४/८/१२ नेष्टचन्द्रः– ४/८ श्रेष्ठचन्द्रः–१/२/३/५/६/७/९/१०/११/१२	अथ विवाहे तिथि–वार–नक्षत्राणि–रो., मृ., उत्तरा. ३, म., ह., स्वा., अनु., मू., रे. एतद्वेध–रहितेषु शुभेऽह्नि। अमाक्षय–रहित–तिथिषु कात्यायनमते अश्वि., चि., श्र., धनिष्ठास्वपि शुभम्॥												

अथ विवाहांगकृत्यारम्भ मुहूर्तः

वर, कन्या की चन्द्रशुद्धि विचार कर विवाहदिन से पहिले ३/६/९– इन दिनों को छोडकर विवाह के नक्षत्रों में चन्द्रशुद्धि वाली सौभाग्यवती स्त्री के प्रथमोद्योग से हल्दी हाथ, दलना, पीसना, कूटना, मंगलकशादि स्थापन करना, घर लीपना, आंगनसफाई, भूषण घढ़ाना, वस्त्र सिलाना, वेदी रचना, चन्दोया बांधना, गणेशादि पूजन और नान्दीश्राद्ध, मंगलस्नानादि सर्वकार्य का आरम्भ करना शुभ होता है।

विवाह–मुहूर्त्त में दस दोषों का विचार

विवाह के मुहूर्त में लत्ता, पात, युति, वेध, जामित्र, पञ्चवाण, एकार्गल, उपग्रह, क्रान्तिसाम्य और दग्धातिथि– इन दस दोषों का विचार करना आवश्यक है। इन सबका विचार करके इस वर्ष के विवाहमुहूर्त्त लग्न दिए हुए हैं। इन दसों दोषों में जो दोष जिस मुहूर्त्त में हैं, वे क्रमानुसार टेढ़ी रेखा से सूचित किए गए हैं। उक्त दसों दोषों का विचार इस प्रकार किया जाता है।

(१) लत्तादोष–ज्ञान चक्र

सूर्य	पूर्णचन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	ग्रहाः
१२	२२	३	७	६	५	८	९	← लग्न नक्षत्र
दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	← दिशा
धननाशः	भयम्	मृत्युः	भयम्	बन्धुनाशः	कार्यहानिः	कुलक्षय	मरणम्	← फलम्

यथा–सूर्य अश्विनी नक्षत्र पर हो और विवाह उ.फा. का हो। सूर्यस्थित अश्विनी नक्षत्र से गिना तो, उ.फा. १२वां हुआ, यह सूर्य की लत्तादोषयुक्त साहा हुआ। इसी प्रकार अन्य ग्रहों की लत्ता भी जानें।

(२) पातदोष ज्ञानचक्र

रो.	मृ.	मघा	उ.फा.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	उ.षा.	उ.भा.	रे.	विवाह नक्षत्र
आर्द्रा पुन. श. पू.फा. चि. मू.	मृ. आ. ज्ये ध. म. ह.	अ. मृ. ज्ये. पुष्य ह. रे.	कृ. आ. वि. पू.फा. उ.भा. पू.भा.	भ. मृ. श. पू.भा. स्वा. म.	कृ. श्र. ध. पुष्य ह. रे.	अ. आ. उ.षा. पू.भा. पू.षा. पू.फा.	रो. ज्ये. ध. आश्ले. मू. उ.भा.	भ. पुन. श. वि. अनु. उ.षा.	भ. श. वि. उ.फा. पू.फा. मू.	अ. ज्ये. ध. म. पू.फा. स्वा.	सूर्याधिष्ठित नक्षत्र

हर्षण, वैधृति, साध्य, व्यतिपात, गंड और शूल योगों का अन्त जिस नक्षत्र में हो वह पात से दूषित होता है। इन नक्षत्रों में विवाह करने से पात दोष होता है।

(३) युतिदोष

जिस नक्षत्र का विवाह हो उसी नक्षत्र में यदि कोई ग्रह हो तो वहां उस ग्रह की युति का दोष समझा जाता है। चन्द्र उच्च, मित्र वा स्वक्षेत्री हो तो युति दोष नहीं होता, किन्तु श्रेष्ठ है। सू., मं., शु., श., रा., के. की युति दारिद्र्य, मृत्यु आदि भयप्रद मानी गई है। शुक्र की युति विशेष करके वर्जित है।

(४) वेध दोषचक्र

अश्वि.	रोहि.	मृग.	मघा	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वा.	अनु.	मूल	उ.षा.	श्रव.	धनि.	उ.भा.	रेव.
पू.फा.	अभि.	उ.षा.	श्रव.	रेव.	उ.भा.	पू.भा.	शत.	भर.	पुन.	मृग.	मघा	आश्ले.	हस्त	उ.फा.

ऊपर के नक्षत्र का विवाह हो और नीचे के नक्षत्र पर ग्रह हो तो वेधदोष होता है। यह सर्वत्र अवश्य ही त्याग देना चाहिए।

(५) जामित्र दोषचक्र

विवाह नक्षत्र→	रो.	मृगा.	म.	उ.फा.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	उ.षा.	उ.भा.	रे.
ग्रह नक्षत्र→	अनु.	ज्ये.	ध.	पू.भा.	उ.भा.	अ.	कृ.	मृगा.	पुन.	उ.फा.	ह.

विवाहलग्न से सातवें ग्रह होने से जामित्रदोष होता है। ऊपर वैवाहिक नक्षत्र और नीचे ग्रह नक्षत्र हैं। यानी 14वें नक्षत्र में पापी ग्रह का जामित्रदोष वर्जनीय है।

(६) बाणज्ञान–चक्र

बाण नाम	गतांशाः प्रति राशौ अर्कस्य	कर्मसु वर्ज्याः	वारे वर्ज्याः	समयपरत्वेन वर्ज्याः
रोगः	८/१७/२६	व्रतबंध	रवौ	रात्रौ त्याज्यम्
अग्निः	२/११/२०/२९	गेहगोपे	भौमे	सदैव वर्ज्यम्
नृपः	४/१३/२२	नृपसेवायम्	मन्दे	दिवा त्याज्यम्
चौरः	६/१५/२४	यात्रायाम्	भौमे	रात्रौ वर्ज्यम्
मृत्युः	१/१०/१९/२८	विवाहे	बुधे	संध्ययोः वर्ज्यम्

(७) एकार्गल दोष

व्याघात, गण्ड, व्यतिपात, विष्कम्भ, शूल, वैधृति, वज्र, परिघ, अतिगण्ड–ये योग हों और सूर्य के नक्षत्र से विवाह का नक्षत्र अभिजित् सहित गिनने से विषम हो तो एकार्गल दोष होता है।

(८) उपग्रहदोष

सूर्य के नक्षत्र से ५, ७, ८, १०, १४, १५, १८, १९, २१, २२, २३, २४ और २५वें नक्षत्र पर चन्द्रमा हो तो उपग्रह दोष होता है।

(९) स्थूल–क्रान्तिसाम्य–दोषचक्र

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	कन्या	तुला
सिंह	मकर	धनु	वृश्चि	मीन	कुम्भ

नीचे और ऊपर की राशि पर कहीं भी सूर्य एवं चन्द्रमा हो तो स्थूल रूप से क्रान्तिसाम्य दोष होता है। यह सर्वत्र वर्जित है। जैसे–मेष के सूर्य और सिंह के चन्द्रमा में या सिंह के सूर्य और मेष के चन्द्रमा में। सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य ही सर्वत्र वर्जित है। जिसका निर्णय महापातगणित से करना चाहिए।

(१०) दग्धातिथि–दोषचक्र

९	२	४	६	५	१०	← सूर्य
१२	११	१	३	८	७	राशयः
२	४	६	८	१०	१२	← तिथयः

इन संक्रान्तियों में ये तिथियां दग्धा होती हैं। विशेषतः ये मध्यप्रदेश में ही वर्ज्य हैं।

"भुजंगं क्रान्तिसाम्यञ्च बाणवेधं तथैव च। लग्नहीन–विवाहन्तु कलौ पञ्च विवर्जयेत्।। *–कश्यपः*

लत्तादि–दोषाणां परिहारवाक्यानि

लत्ता मालवके (उज्जैन प्रान्ते) देशे, पातश्च कुरु (कुरुक्षेत्रबांगरे) जांगले (फिरोज़पुर–भटिण्डाप्रान्ते)। एकार्गलं च काश्मीरे वेधं सर्वत्र वर्जयेत्।। उपग्रहर्क्षं कुरुवाह्लिकेषु (कुरुक्षेत्र, आगराप्रान्ते) कलिंगबंगेषु (जगन्नाथपुरी–बंगाल–अयोध्यायां) च पातितं भम्। सौराष्ट्रे (काठियावाड़े) शाल्वे (उज्जैनप्रान्ते) च लत्तितं भं त्यजेत्तु विद्धं किल सर्वदेशे।। युतिदोषो भवेद्गौडे (बंगाले) जामित्रस्य च यामुने (मथुराप्रान्ते)। मासदग्धाश्च तिथयो मध्यदेशे विवर्जिताः।।

विशेष परिहारः– चित्रांगते पातविचित्रदेशे मैत्रे मघा मालवके निषिद्धाः पौष्णश्रुतिश्चोत्तरदेशजातः सर्वत्र वर्ज्यश्च भुजंगपातः।।

युतिपरिहारः–स्वक्षेत्रगः स्वोच्चगो वा मित्रक्षेत्रगतो विधुः।
युतिदोषाय न भवेद्दम्पत्योः श्रेयसे तदा ॥

अत्यावश्यके वेध–परिहारः– "पादमेकं शुभैर्विद्धमशुभैर्नैव कृत्स्नतः।"
–(नारदः)

ग्रह प्रथम चरण में हो तो चतुर्थ चरण में वेध होता है, यदि चतुर्थ चरण में हो तो प्रथम चरण विद्ध होता है। द्वितीय में हो तो तृतीय, तथा तृतीय चरण में ग्रह हो तो द्वितीय चरण विद्ध होता है। आवश्यकता में चरणमात्र का त्याग किया जाता है– **भुक्तं भोग्यं तथाक्रान्तं विद्धं पापग्रहेण च। शुभाशुभेषु कार्येषु वर्जनीयं प्रयत्नतः ॥**

अस्यापवादः– ऋक्षाणि क्रूरविद्धानि क्रूरयुक्तादिकानि च। भुक्त्वा चन्द्रेण युक्तानि शुभार्हाणि प्रचक्षते।।

एकार्गलोपग्रह-पात-लत्ता-जामित्रकर्तर्युदयास्त दोषाः। नश्यन्ति चन्द्रार्क-बलोपपन्ने लग्ने यथार्काभ्युदये तु दोषाः॥ - (मु.चिं.)

उक्तानुक्ताश्च ये दोषास्तान्निहन्ति बली गुरुः।
केन्द्रसंस्थः सितो वापि पन्नगान् गरुडो यथा।।

विवाहे लग्न–शुद्धिचक्रम्

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	←भावाः
चं. पाप.	०	शु.	रा.	०	चं. शु. लग्नेश	सर्वे	चं. मं. शुभाः लग्नेश	०	मं.	०	श.	. ← त्याज्याः
चं. मं.	कुलिकं क्रान्तिसाम्यश्च				चं.	मं.	चं. मं.	विद्धभश्च				← गोधूलौ त्याज्याः

लग्नभंगयोगा :– व्यये शनिः खेऽवनिजस्तृतीये भृगुस्तनौ चन्द्रखला न शस्ताः। लग्नेट् कविर्ग्लौ च रिपौ मृतौ ग्लौ लग्नेट् शुभाराश्च मदे न सर्वे (अस्तेऽब्जगुरु समौ)॥ वर्गोत्तमं विनान्त्यांशो विवाहे न शुभप्रदः। वर्गोत्तमश्चेदन्त्यांशः पुत्रपौत्रादिवृद्धिदः॥ दम्पत्योरष्टमं लग्नन्त्वष्टमो राशिरेव च। यदि लग्नंगतः सोऽपि दम्पत्योर्निधनप्रदः॥ पंगवन्धादिलग्नानां गौडमालवयोरेव त्यागः। बादरायणः मासशून्याहवयास्तारा राशयो वधिरादयः। गौडमालवयोस्त्याज्यास्त्वन्यदेशे न गर्हिताः।।

कर्तरी दोषः— लग्नस्य पृष्ठाग्रगयोश्च साध्वोः सा कर्तरी स्यादृजुवक्रगत्योः। तावेव शीघ्रौ यदि वक्रचारौ न कर्तरी चेति पितामहोक्तिः॥ इय कर्तरी चन्द्रस्यपि द्रष्टव्या। **केषाञ्चिल्लग्नदोषाणां परिहाराः** —पापौ कर्तरिकारकौ रिपुगृहनीचास्तंगौ कर्तरी दोषो नैव सितेऽरिनीचगृहगे तत्पष्ठदोषेऽपि न। भौमेऽस्ते रिपुनीचगे नहि भवेद् भौमोऽष्टमो दोषकृन्नीचे नीचनवांशके शशिनि रिःफाष्टारिदोषोऽपि न॥

दोषापवादाः ज्योतिर्निबन्धे— दोषाश्च बहव सन्ति गुणाः स्वल्पाः कलौ युगे। तथापि दोषा नश्यन्ति स्वापवादगुणैः सह॥

अपवादान्तरम्— उक्तानुक्ताश्च ये दोषस्तान्निहन्ति बली गुरुः। केन्द्र-संस्थः सितो वापि पन्नगान्गारुडो यथा॥ मुहूर्त्तलग्नषड्वर्गकुनवांश ग्रहोद्भवाः। ये दोषास्तान्निहन्त्येव यत्रैकादशगःशशी॥ अब्दायनर्तुमासोत्थाः पक्षतिथ्यृक्षसम्भवाः। ते सर्वे नाशमायान्ति केन्द्रसंस्थे शुभग्रहे॥ लग्नाधिपो यदा केन्द्रे लग्नादेकादशालये। सर्वग्रहकृतं रिष्टमेकोपि विलयं नयेत्॥ बलवान् केन्द्रगः सौम्यो हन्ति दोष-शतत्रयम्। द्यूनं विहाय दैत्येज्यः सहस्रं लक्षमंगिरा॥ स्मरण रहे कि— पूवोवत अपवाद वाक्यों में सप्तमरहित केन्द्र (१/४/१०) ही ग्रहण करना चाहिए।

विवाहे ग्रहाणां रेखाप्रद—स्थानानि

र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.	ग्रहाः	मुहूर्त गणपतौ
३	२	३	१	१	१	३	३	३		लग्नं शुभं विवाहे स्याद दशविंशोपकाधिकंम्।
६	३	६	२	२	२	६	६	६		
८	११	११	३	३	४	८	८	८		
११			४	४	५	११	११	११		
			५	५	९					
			६	६	१०					
			९	९	११					
			१०	१०						
			११	११						
३॥	५	१॥	२	३	२	१॥	१॥	१॥		विंशोपकबलम्

अथ गोधूलि लग्नविचारः— लग्नशुद्धिर्यदा नास्ति कन्या यौवनशालिनी। तदा वै सर्ववर्णानां लग्नं गोधूलिकं शुभम्॥ लग्नं यदा नास्ति विशुद्धमन्यद् गोधूलिकं साधु तदा वदन्ति। लग्ने विशुद्धे सति वीर्ययुक्ते गोधूलिकं नैव फलं विधत्ते॥ मार्ग., माघ, फाल्गुन में संध्यासमय सूर्य गोलक समान दृष्टिगोचर होने पर चैत्र, वैशाख में गौओं की धूली से आकाश आच्छदित होने पर, ज्येष्ठ, आषाढ़ में सूर्य आधा अस्त होने पर, श्रावण भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक में सूर्य पूर्ण अस्त होने पर गोधूलि लग्न होता है।

गोधूलिके त्याज्या दोषाः— कुलिकं क्रातिसाम्यञ्च लग्ने षष्ठेऽष्टमे शशी। तथा गोधूलिके त्याज्यं पञ्चदोषैस्तु दूषितम्। अस्तं याते गुरुदिवसे सौरे सार्के। अर्थात् बृहस्पतिवार को सूर्य अस्त होने के पीछे।क्योंकि सूर्य अस्त से पहले वारबेला होगी और शनिवार को सूर्य अस्त से पहले (क्योंकि सूर्य अस्त हो जाने में कुलिकं मुहूर्त होगा) गोधूलि समझना चाहिए।

संकीर्ण वर्णसंकर चाण्डालादि जाति का विवाह मुहूर्त्त

कृष्णपक्ष क्रूरवार निषिद्ध नक्षत्र योगों में संकीर्ण जाति वालों का विवाह धन, पुत्र आयु प्रीती लाभ देता है। ऐसा शौनकादि मुनि कहते हैं।

पुनर्विवाहे (रीत) सूर्यभात् शुभाशुभज्ञानाय चक्रम्

नक्षत्र→	३	३	३	३	३	३	३	३
फल→	मृत्यु	धन	मरण	मृत्यु	पुत्र	दुर्भग	श्री	उन्नति

अन्यच्च— सूर्यभात् ४/११/१८/२५ संख्यकसाभिजिद्भेषु पुनर्विवाहे मृत्युः। अत्र तिथि—मासवेध भृगु—गुर्वस्तादि दोषोऽपि नावलोकनीयः।

वधु प्रवेश का मुहूर्त्त

जब वधू विवाह होने पर पति के घर पहले आती है वह वधू प्रवेश कहा जाता है। विवाह के १६ दिन के भीतर सम दिनों में अथवा ५, ७, ९वें दिन; इनके उपरान्त एक मास तक विषम दिनों में; एकवर्ष के भीतर विषम मास में; एक वर्ष के उपरान्त ३रे, ५वें वर्ष में भी स्थिर लग्न में वधू प्रवेश शुभ है। ५वर्ष के उपरान्त जब चाहे तब शुभ मुहूर्त में हो सकता है। १६ दिन के भीतर पूर्वोक्त दिनों में तिथ्यादि पंचांगशुद्धि, चन्द्रबल, गुरुशुक्र के मूढत्व का भी विचार नहीं करना— व्यतिपाते क्षयतिथौ ग्रहणे वैधृतौ तथा अमासंक्रान्ति—तिथ्यादौ प्राप्तकालेऽपि नाचरेत्॥ रेव., अश्वि., रोहि., मृग., श्रव., धनि., हस्त, चित्रा, स्वा., मघा, मूल, उत्तरा ३, पुष्य, अनु., इन नक्षत्रों में और चं., बु., बृ. शु. श. इन वारों में १/२/३/५/६/७/८/१०/११/१२/१३/१५ तिथियों में, ५/८/११ लग्नों में चतुर्थाष्टम शुद्ध हों तो वधु प्रवेश शुभ है।

वधु–प्रवेश–समय

वधुप्रवेशो न दिवा–प्रशस्तः राजप्रवेशो न निशि–प्रशस्तः।
दिवा च रात्रौ च गृहप्रवेशः सत्कीर्तिदः स्यात्त्रिविधः प्रवेशः॥

विवाहतः प्रथम वर्षे वधू–निवासफलम्– विवाह के बाद आषाढ़ मास में कन्या पति के घर रहे तो अपनी सास को, क्षय मास में अपने शरीर को, ज्येष्ठ में ज्येष्ठ को, पौष में श्वसुर को और अधिक मास में पति को नाश करती है। विवाह के बाद चैत्र मास में पिता के घर रहे तो पिता को अशुभ है, सास आदि के अभाव में उस मास का कोई दोष नहीं होता।

द्विरागमन का मुहूर्त्त

प्योके (पितृगृह) से दूसरी बार पति के घर जाने को द्विरागमन कहते हैं। विवाह से एक वर्ष के भीतर अथवा तीसरे या पांचवें वर्ष वृश्चिक कुम्भ, मेष के सूर्य में जब सूर्य और बृहस्पति शुद्ध हो तब सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार को २, ३, ६, ७ या १२ वीं राशि के लग्न में हस्त, अश्वि., पुष्य, अभिजित्, तीनों उत्तरा, रोहि. स्वा., पुन., श्रवण, धनि., शत., मूल, मृग., रेव., चित्रा, अनुराधा नक्षत्रों में शुभ है। शुक्र सामने या दाहिने हो तो अशुभ है।

विशेषः– द्विरागमं षोडशवासरान्ते एकादशाहे समवासरेषु। न चात्र ऋक्षं न तिथिर्न योगो न वारशुद्धयादि विचारणीयम्।।

शुक्र सम्मुख व दक्षिण में निषेध– सम्मुख या दक्षिण शुक्र में यदि नूतन वधू जावे तो वन्ध्या हो, छोटे बालक को साथ लेकर जावे तो बालक की मृत्यु हो, गर्भिणी जावे तो गर्भ का सुख न पावे। यदि ऐसे समय राजविद्रोह–राजपीड़न आदि उपद्रव या दुर्भिक्ष के दुःख से यात्रा करनी पड़े एवम् विवाह सम्बन्धी यात्रा में या देवतीर्थ यात्रा के सम्बन्ध में जाना पड़े तो सम्मुख या दक्षिण शुक्र का दोष नहीं होता। यदि रेवती से मृगशिर तक के चन्द्रमा में भी जावे तो दोष नहीं, क्योंकि तब तक शुक्र अन्धा होता है।

विशेषः– सिंहस्थे वा गुरौ शुक्रे सम्मुखेऽस्तंगतेऽपि वा। शुभो दीपोत्सवे वध्वाः प्रवेशः पतिमन्दिरे।।

अत्यावश्यकेऽभिमुखे शुक्रदोषनाशाय शान्तिः– राजते वाथ सौवर्णे कांस्यपात्रेऽथवा पुनः। शुक्लपुष्पांबरयुते श्वेततण्डुलपूरिते।। निधाय राजतं शुक्रं शुचिमुक्ता फलान्वितम्। महाश्वेत गवायुक्तं सामगाय निवेदयेत्।

प्रथम स्त्रीसंगम मुहूर्त्त

रजोदर्शनानन्तर १६ रात्रि पर्यन्त, ४ रात्रि के बाद समरात्रि में, **(पञ्चदशवर्षोपरि रजोदर्शनाभावेऽपि)** रो., मृ., पुष्य, ह., चि. अनु., ध., उत्तरा. ३, रिक्ता अमावस रहित तिथि में, शुभवार, रात्रि के प्रथम पहर को छोड़कर। शुभ समय में चित्त को प्रसन्न कर, प्रथम दिन स्त्री संगम करें।

मनुष्य का स्त्री के प्रति कर्त्तव्य–स्त्री का अपमान या तिरस्कार न करें, आदर सत्कार करें। विशेष गुप्त बात न कहें और विशेषाधिकार भी न दें, क्योंकि स्त्री जाति पुरुष की समान कोटि में नहीं आ सकती। अपवाद में एक–दो हो सकती है। प्रभुकृत शरीर रचना भी कोई वस्तु है, उसे समझना चाहिए। उसका दिल और दिमाग़ तथा ओज प्रकृति ने पुरुष से न्यून बनाया है। पशुओं में भी घोड़े, हाथी, सांड, भैंसा आदि अपनी स्त्री जाति पर पूर्ण प्रभुत्व रखते हैं।

नववधुद्वारा पाककर्म मुहूर्त्त

द्विरागमनोत्तरं मृग., उत्तरा. ३, पुष्य, कृ., ज्ये., श्रव., धनि., श., रो., वि., रे. एषु नक्षत्रेषु शुभवासरे (रविभौमवर्जिते), रिक्ताक्षयरहिततिथौ, २/५/८/११ लग्नेषु, चतुर्थाष्टमशुद्धे सप्तमभावे च बलान्विते सति पाक्कर्म शुभम्।

सधवा स्त्री का वस्त्र, सुवर्णरत्नभूषणादिधारण करने का मुहूर्त्त

हस्त., चित्रा., स्वा., अनु., धनि., रेवती., अश्वि. एषु भेषु, बु., गु., शु., वारेषु रिक्तामावस्यारहित तिथिषु, नूतन वस्त्रसौवर्णरत्नरजत–दन्तादि भूषणानां धारणं प्रशस्तम्।।

चूड़ीचक्र में विशेषः– सूर्य नक्षत्र से गणना करने पर ८ अशुभ। ३ शुभ। २ अशुभ। ७ शुभ। २ अशुभ। ४ शुभ। १ अशुभ। गुरुशुक्रोदय में शुभ।

वस्त्रधारणे विशेषः– विप्रादेशात्तथोद्वाहे क्षमापालने समर्पितम्। निन्द्येपि धिष्ण्ये वारादौ धारयेच्च नवाम्बरम्।।

आभूषण बनवाने का मुहूर्त्त

हस्त., अ., पुष्य, अभि., स्वा., पुन., श्रव., धनि., शत., उत्तरा.३, रोहि. एषु नक्षत्रेषु रिक्तामाक्षयरहित तिथौ, शुभवासरे द्विपुष्करत्रिपुष्करयोगे वा भूषणं कार्यम्।।

दुकान खेलने का मुहूर्त्त

हस्त, चित्रा, रोहि., रेव., उत्तरा. ३, पुष्य, अश्वि., अभि. इन नक्षत्रों में ४। ९। १४। ३० इन तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में, मंगलवार को छोड़कर अन्यवारों में, कुम्भ लग्न को छोड़कर अन्य लग्नों में, २। १०। ११ स्थानों में शुभ ग्रह बैठे हों, ३। ६ में पापग्रह हों, ८। १२ वां स्थान पाप रहित हो, शुभ दशा भी हो तो दुकान करना शुभ है, चन्द्र लग्न में हो तो अत्यन्त शुभ है।

भर्तृगृह से पितृ गृहागमन मुहूर्त्त

पूर्वा.३, भ., मू., म. ज्ये., आर्द्रा, आश्ले. एतदभिन्नेषु, चं., बु., शु., वारेषु सत्तिथौ शुभलग्ने कुयोगादिराहित्ये प्रशस्तः।।

घोड़े पर चढ़ने का मुहूर्त्त

भ., आर्द्रा, आश्ले., म., पूर्वा. 3, ज्ये., मू. इन नक्षत्रों को छोड़कर, शेष नक्षत्रों में रविवार को शुभ है।

हट्टचक्रः— सूर्य नक्षत्र से दुकान खेलने के दिन तक, नक्षत्र गिन कर चक्र से शुभाशुभ फल जानें।

हट्टचक्र

नक्षत्र	२	३	४	४	३	४	४	४
स्थान	आसन	मुख	अग्नि	नैर्ऋत	सम्मुख	वायव्य	ईशान	मध्य
फल	सौख्य	विक्रयनाश	अर्थनाश	सुख	महाश्रेष्ठ	चोरभय	सर्वहानि	शुभप्रद

सेवाकर्म (नौकरी) मुहूर्त्त

अ., मृ., चि., ह., पुष्य, अनु., रे. एषु भेषु रिक्तामारहिततिथौ, र., बु., बृ., शु. वारेषु शुभः। लग्नस्थे, १०, ११ सूर्ये-भौमे वा स्वामिसेवकयोः राशीश–योनि–मैत्र्यां सत्यां शुभः।

व्यवहार (बही) पत्रारम्भ मुहूर्त्त

अश्वि., रो., मू., पुन., पु., उत्तरा. ३, ह., चि., अनु., श्रव., रे. एषु भेषु रिक्तामारहिततिथौ, सू., चं., बु., बृ., श. वारेषु शुभे युते शुभे लग्ने चरे द्विस्वभावे च व्यायाष्टरहिते पापैः केन्द्रकोणगैः शुभैः स्यात्।।

द्रव्यप्रयोगमुहूर्त्त

पुन., स्वा., मृग., रे., चि., अनु., वि., पुष्य., श्रव., ध., श., अश्वि. एषु नक्षत्रेषु १। ४। ७। १०, लग्नेषु ९। ८। ५ शुद्धिरहिते द्रव्यप्रयोगः शुभः। अत्रावसरे ९। ५ शुभः, ग्रहाणां तु न कोऽपि दोषः।।

ऋण लेने के लिए वर्जितकाल

मंगलवार, संक्रान्ति दिन, वृद्धियोग, हस्तनक्षत्रयुक्त रविवार को ऋण ले तो कभी मुक्त न हो। मंगलवार को ऋण चुकाना अच्छा है। बुधवार को धन न देना चाहिए। कृ., रो., आर्द्रा, आश्ले., उत्तरा ३, वि., ज्ये., मू. नक्षत्रों में भद्रा, व्यतिपात और अमावस में गया धन फिर मिलता नहीं या झगड़े आदि पर उतारू होना पड़ता है।

श्रीकाशीनाथ के मत से क्रयविक्रय मुहूर्त्त

पुष्य, पूभा., अनु., श्रव., ह., म., स्वा., उत्तरा.३, आश्ले., रे., एषु भेषु सत्तिथौ, शुभदिने उत्तमशकुनं विचार्य क्रयविक्रयणं कार्यम्।

वस्तु खरीदने के नक्षत्रः— रे., शत., अश्वि., स्वा., श्रव., चि., वारों में, बुध, रवि श्रेष्ठ माने गए हैं।

वस्तु बेचने के नक्षत्रः— पू. फा., पू. षा., पू. भा., वि., कृ., आश्ले., भ. ये ७ नक्षत्र और गुरुवार, चन्द्रवार श्रेष्ठ माने गए हैं।

नोटः— बेचने के नक्षत्रों में खरीदना और खरीदने के नक्षत्रों में बेचने वालों को ९५ फीसदी नुकसान रहेगा, इसमें संशय नहीं। इसी कारण खरीदने–बेचने के नक्षत्र दिखाए गए हैं, परन्तु सम्प्रति प्रचलित सट्टे जैसे भयानक व्यापार में तो धैर्य का काम ही नहीं, सिवाय घबराहट के दिन भर में १० बार बेचना, २० बार खरीदना। ऐसे व्यापारी क्या करेंगे, इन नक्षत्रों को।

लेकिन हमारा कहना है कि विश्वास करके परीक्षा तो कीजिये, बात कहां तक सच है। सट्टे में भी प्रथम बार व्यापार करने वाले व्यापारी अवश्य ध्यान करें तभी मालूम होगा कि ऋषियों के वाक्य कहां तक सत्य हैं।

प्रार्थनापत्र (अर्जी) देने का मुहूर्त्त

४। ९। १४ तिथि हों, मं., श. वार हों, कृ., आर्द्रा, भ., अश्वि., आश्ले., म., ज्ये., मू., वि., पूर्वा. ३ नक्षत्र हों, भद्रा होवे तो अत्युत्तम है।

गृहादि निर्माण में आय विचार

गृहस्वामी के हस्तादि लम्बाई–चौड़ाई को परस्परगुणाकर, आठ का भाग देवें, जो शेष रहे वह क्रम से ध्वजादि आय होते हैं। १ ध्वज, २ धुम्र, ३ सिंह, ४ श्वान, ५ वृषभ, ६ गर्दभ, ७ हस्ति, ८ (०)। इनमें एकादि विषम संख्या की आय शुभ और २ आदि सम संख्या को अशुभ जानना। गृह की भूमि को अन्दर से मापना चाहिए और देवस्थान की भूमि को बाहर से मापना चाहिए। ३२ हाथ चौड़े घर में आयादि विचार की आवश्यकता नहीं है और न चार द्वार वाले घर में ही। ब्राह्मण को ध्वजाय, क्षत्रिय को सिंहाय, वैश्य को गजाय और शुद्र को वृषभाय विशेष शुभ होती है। अन्य आय नीच जाति के लिए शुभ है।

ग्रामभात् वासकर्तुः नक्षत्रं यावद् साभिजित् गणना कार्या

स्थान	नक्षत्र	फलम्
मस्तके	७	धनलाभः
पृष्ठे	७	हानिःनैस्वम्
हृदये	७	सुखलाभः
पादे	७	पर्यटनम्

घर का नक्षत्र और व्यय ज्ञान

घर केक्षेत्रफल (हस्तादि लम्बाई–चौड़ाई के गुणन) को आठ से गुणाकर २७ का भाग दें। जो अंक शेष रहे, तदनुसार अश्विन्यादि गृह का नक्षत्र जानें। इस नक्षत्र को ८ से भाग देवें। शेषांक तुल्य व्यय जानें। आय से व्यय कम हो तो शुभ, अन्यथा अशुभ।

वास्तुभूमि का शुभाशुभ जानना

नई बस्ती में गृहादि बनाना हो तो भुमिपूजन पूर्वक शाम को एक हाथ चौड़ा, एक हाथ लम्बा और एक हाथ गहरा गड्ढा बनाकर, उसको जल से भर देवें। प्रातःकाल उसको देखें यदि जलयुक्त हो तो शुभ, निर्जल मध्यम, निर्जल फटा हुआ हो तो अशुभ है।

मकान बनाने के लिए पृथ्वी की शुभाशुभ परीक्षा

मकान की नींव को इतना गहरा खोदें कि जल दीखने लगे अथवा दूसरी मिट्टी जब तक निकले अथवा साढे तीन हाथ गहरी खोदें अर्थात् मनुष्य के बराबर खोदें। खोदते समय यदि ज़मीन में पत्थर निकले तो धन–आयु की वृद्धि हो; अगर गुठली निकले तो धननाश हो और अगर अस्थि, राख, बाल निकले तो मकान बनाने वाले को व्याधि–पीड़ा हो।

गृहारम्भमुहूर्त्त

वैशा., श्रा., मार्ग., माघ, फाल्गुन सौर महीने गृहारम्भ में श्रेष्ठ कहे हैं; भाद्रपद और कार्तिक मास मध्यम हैं। २। ३। ५। ६। ७। १०। ११। १२। १३। १५ और कृष्णपक्ष की प्रतिपदा, इन तिथियों में चं., बु., गु., शु., श. वारों में; रो., मृ., चि., ह., स्वा., अनु., उत्तरा. ३, ध., श., रे. वेधरहित नक्षत्रों में; २। ३। ५। ६। ८। ११। १२ लग्नों में; पञ्चवाण और भूमिशयन से रहित दिनों में; लग्न से केन्द्र त्रिकोण स्थानों में शुभग्रह और ३। ६। ११ वें स्थान में पापग्रह तथा अष्टम स्थान शुद्ध होने पर गृहारम्भ मुहूर्त्त शुभ होता है। केवल तृणमय गृहारम्भ में वत्सचक्र व मासादि का विचार नहीं करना।

गृहारम्भे वत्सचक्रम्

सूर्यनक्षत्र से गृहारम्भ नक्षत्र तक अभिजित् सहित गणना करें।

स्थानानि	न.	फलानि
शीर्षे	३	अग्निदाहः
अ. पादे	४	शून्यमसत्
पृ. पादे	४	स्थिरता
पृष्ठे	३	लक्ष्मीप्राप्तिः
द. कुक्षौ	४	लाभःशुभम्
पुच्छे	३	स्वामिनाशः
वामकुक्षौ	४	निर्धनता
मुखे	३	पीड़ा असत्

विशेषः— पुष्य, उत्तरा. ३, रो., म., आश्ले., पू.षा., इनमें से जिस पर बृहस्पति हो, उस नक्षत्र में बृहस्पतिवार को गृहारम्भ हो तो पुत्र और सम्पत्तिदायक होता है। रो., ह., अ., उ. फा., चि. इनमें से जिस पर बुध हो उस नक्षत्र में बुधवार को गृहारम्भ हो तो सुख और पुत्र होते हैं। वि., अ., चि., ध., श., आर्द्रा इनमें से जिस पर शुक्र हो उस नक्षत्र में और शुक्रवार को गृहारम्भ हो तो धनधान्यदायक होता है।

भूमिप्रसुप्तज्ञानम्ः— "संक्रान्ति मिति दिन पांचवें सप्तम नवम जोय।

१०। २१। २४ में पंड्दिन पृथ्वी सोय।। तत्रात्यावश्यके क्रमात् ५। ११। ७। ६। २। १० एताः घटिका भूमिकर्मण्यवश्यं वर्जनीयाः।" **अन्यच्च–** सूर्य के नक्षत्र से ५। ७। ९। १२। १९। २६ इतनी संख्या के नक्षत्रों में पृथ्वी शयन के कारण मकान की नींव, तड़ाग, वापी, कूपादि का खोदना उत्तम नहीं होता।

गृहमध्य में कूपविचार

मध्य	ई.	पू.	आ.	द.	नै.	प.	उ.	वा.
र्थहानि	सुपुष्टि	सुप्राप्ति	पुत्रनाश	स्त्रीनाश	गृहेशनाश	संपत्	सुख	शत्रुभय

अथ चुल्लिचक्र–विचार

सूर्य के नक्षत्र से ६ नक्षत्रपीठ के सुखप्रद। ४ मस्तक के मृत्युप्रद। ८ बाहु के सुन्दर–सुख–भोगदायक। ५ गर्भ के नाशक। २ भुज के भोगदायक। २ चरण के नाशक। यह चुल्लिचक्र गर्गाचार्य ने कहा है, पण्डित जन विचार करें। उपरोक्त शुभ नक्षत्रों में चुल्हा बनावें तथा इन्हीं शुभ नक्षत्रों में प्रथम अग्नि जलावें।

नूतनगृह प्रवेश मुहूर्त्त

माघ–फाल्गुन–वैशाख–ज्येष्ठ मासेषु शोभनाः। प्रवेशो मध्यमो ज्ञेयः सौम्य (मार्ग.)कार्त्तिक मासयोः।। (यहां चन्द्रमास लेना) उत्तरा. ३, अनु., रो., मृ., चि., रे. इन नक्षत्रों में रिक्तामारहित तिथियों में। चं., बृ., श. इन वारों में। २। ५। ८। ११ लग्नों में; **अत्यावश्यके** ३। ६। ९। १२ लग्नों में भी; लग्न से १। २। ३। ५। ७। ९। १० इन स्थानों में शुभ ग्रह हों, ३। ६। ११ में क्रूर हों १। ६। ८। १२वें चन्द्रमा न हो; चौथा, ८वां स्थान शुद्ध हो; जन्म लग्न या जन्म राशि से ८वीं राशि लग्न में न हो; चन्द्र–तारा शुभ हो और कुम्भ चक्र की भी शुद्धि हो, तो आगे गौ, कन्या, जलपूर्ण–पुष्पमाला युक्तकलश, शंखध्वनि व मंगलगान के साथ दम्पति का गृह प्रवेश शुभ है।

गृहप्रवेश का विशेष मुहूर्त्त

पुराने अर्थात् जीर्ण या तृणकुटीर अथवा अग्नि–वर्षा इत्यादि के भय से बनवाये हुए नए घर में भी वैशाख., श्रावण, कार्त्तिक., मार्गशीर्ष और फाल्गुन मास में शत., पुष्य, स्वा. और धनि. नक्षत्रों तथा गुरु, शुक्र के अस्त में भी गृह प्रवेश हो सकता है।

सूर्यराशिवशात् खातज्ञानम्

खाते राहोर्मुखात्पृष्ठदिग्भागःशुभदो भवेत्।

राहुमुखम्	ऐशान्यां	वायव्यां	नैर्ऋत्यां	आग्नेय्यां
देवालयारम्भे सूर्यः	मीन, मेष, वृष	मिथुन, कर्क,सिंह	कन्या,तुला, वृश्चिक	धनु,मकर, कुम्भ
गृहारम्भे सूर्यः	सिंह, कन्या, तुला	वृश्चि., धनु, मकर	कुम्भ, मीन, मेष,	वृष, मिथुन, कर्क
जलाशयारम्भे सूर्यः	मकर,कुम्भ, मीन	मेष, वृष, मिथुन	कर्क, सिंह, कन्या	तुला,वृश्चि., धनु
खातदिशाज्ञानम्	आग्नेय्यां	ऐशान्यां	वायव्यां	नैर्ऋत्यां

द्वारशाखाचक्रम्

सूर्यनक्षत्रात्

स्थान.	न	फलानि
शिरसि	४	श्रीप्राप्तिः
कोणे	८	उद्वसनं
शाखा	८	सौख्यम्
देहल्यां	३	गृहेशनाशः
मध्ये	४	सौख्यम्

चक्रमिदं विलोक्य सुधिया द्वारं विधेयं शुभम्।

गृहप्रवेशे कुम्भचक्रम्

सूर्यभात्

५	८	८	६
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ

कूप, तालाब और बावड़ी खुदवाने का मुहूर्त्त

अनु., हस्त., उत्तरा. ३, रोहि., धनि., शत., भरणी, पू.षा., रेवती, पुष्य, मृग. नक्षत्र हों व चन्द्रमा मकर के उत्तरार्ध, मीन या कर्क में हो, लग्न में बुध या गुरु हो, शुक्र १०वें स्थान में हो और पापग्रह निर्बल हों तो शुभ है। यदि २। १०। ४। ११। १२ लग्न हों तो अत्यउत्तम है।

सूर्यनक्षत्रात्कूप–नलचक्रम्

ईशान ३ क्षार जल	पूर्व ३ खण्डितजल	आग्ने. ३ सुजल
उत्तर ३ उत्तम जल	मध्य ३ स्वादु तथा शीघ्रजल	दक्षिण ३ निर्जल
वायव्य ३ मिश्रितजल	पश्चिम ३ जल	नैर्ऋत्यां ३ अमृतजल

सूर्यभात्तड़ागचक्रम्

ईशान २ जलनाश	पूर्व २ शोक	आग्ने. २ जलाधिक्य
उत्तर २ अमृतजल	मध्य ५ बहुजल	दक्षिण २ जलनाश
वायव्य ३ जलनाश	पश्चिम २ बहुजल	नैर्ऋत्य २ अमृतजल

गणनाक्रमः–मध्य–पूर्व–आग्नेय–दक्षिणादिक्रमेण बोध्यम्– अवशिष्टानि ६ नक्षत्राणि 'वारिवाह' संज्ञकानि सन्ति। तत्फलम्–वारिवाहे वारिहानिः। गणनाक्रमः– पूर्व, आग्नेय, दक्षिण, नैर्ऋत्य, पश्चिम, वायव्य, उत्तर, ईशान, मध्य में वारिवाह।

रोहिणीभात् वापीचक्रम्

ईशान अश्विनी, भरणी, कृत्तिका मध्यजलम्	पूर्व पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा जलाभावः	आग्ने. मघा, पू.फा., उ.षा. मध्यजलम्
उत्तर पू.भा., उ.भा., रेवती मिष्ठजलम्	मध्य रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा शीघ्रजलम्	दक्षिण हस्त, चित्रा., स्वाती जलाभाव
वायव्य श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा. क्षारजलम्	पश्चिम मूल, ,पू.षा., उ.षा. अमृतजलम्	नैर्ऋत्यां विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा बहुजलम्

जलाशयारामदेवप्रतिष्ठामुहूर्त्त

"देवतारामवाप्यादिप्रतिष्ठामुत्तरायणे। माघादिपञ्चमासेषु कृष्णेऽप्यापञ्चमीदिने।।
मातृ–भैरववाराहनारसिंहत्रिविक्रमाः। महिषासुरहंत्री च स्थाप्या वै दक्षिणायने।।"

अश्वि., रोहिणी, मृग., पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनु., श्रवण, धनि., शत., उत्तरा. 3, रेवती एषु भेषु कुजशनिवर्जितवारेषु २। ३। ५। ७। ८। १०। ११। १२। १३ तिथिषु शुक्ले १। २। ३। ५ तिथिषु कृष्णे, गुरुशुक्रयोः नीचनिर्ब–लास्तादिरहितकाले, कर्तुः सूर्यचन्द्रतारानुकूल्ये सति जन्मलग्नयोरष्टमराशिलग्नरहिते स्थिर (२। ५। ८। ११) लग्नेषु लग्नात् १। ४। ७। १०। ९। ५। २। ११ स्थानेषु शुभैः, ६। ११ सेन्दुभिः पापैः पूर्वाह्ने देवप्रतिष्ठा कार्या।

देवता–विशेषेण लग्नम्:– सिंहे सूर्यः शिवो द्वन्द्वे लग्ने स्थाप्यः स्त्रियां हरिः। कुम्भे वेधाश्चरे क्षुद्राद्यंगदेव्यः स्थिरेऽखिलाः।। यस्य देवस्य यत्तिथिवारनक्षत्रादिकं तद्दिनेयदि तस्य प्रतिष्ठा मुहूर्त्तो भवेत्तदा अत्युत्तमः।।

वास्तुशान्ति मुहूर्त्त

श्रव., धनि., मृग., मूल, अनु., रेवती, हस्त, चित्रा, स्वा., उत्तरा. 3, पुन., पुष्य, रोहि., अश्वि. एषु भेषु शुभेऽह्नि सत्तिथौ बलिदानपुरस्सरं वास्त्वर्चनं कार्यम्।

अग्नि का वास किस लोक में है

जिस दिन हवन करना हो, उस दिन तिथि और वार क संख्या जोड़कर एक ओर जोड़ना, पुनः ४ का भाग देना। यदि पूरा भाग लग जाए, (०–शेष रहे) अथवा तीन शेष रहे, तब अग्नि का वास पृथ्वी पर सुखकारक होता है, शेष १ बचने पर आकाश में प्राणहानिकारक, शेष २ बचने पर पाताल में धनहानि करता है। तिथि की गणना शुक्ल प्रतिपदा से तथा वार की गणना रविवार से करनी। इसके बाद आहुतिचक्र ज़रूर देखिए।

विशेषः– यात्राविवाहव्रतगोचरेषु चौलोपनीताद्याखिलव्रतेषु। दुर्गाविधानेषु सुतप्रसूतौ नैवाग्निचक्रं परिचिन्तनीयम्।। महारुद्रे व्रतेऽमायां ग्रस्तेन्द्वर्कास्तराहुणा। नित्यनैमित्तिके कार्ये अग्निचक्रं न दर्शयेत्।। दिग्दाहेप्यथवा घोरे ग्रहास्ते भूमिकम्पने। केतूनामुदये शान्तौ चक्रं यत्नेन चिन्तयेत्।। लक्षकोटिहवने मखेऽखिले चातिरुद्रकरणेमहाविधौ। देवखातभवने सुरालयादग्निचक्रमवलोकयेत्सुधीः।। दुर्गभंगे गृहे वापि विवादे शत्रुविग्रहे। शान्तिकार्ये नृपक्रोधे चक्रं तत्र निरीक्षयेत्।।

ग्रहमुखे होमाहुतिज्ञानाय चक्रम्
(सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनना)

ग्रहाः	सू.	बु.	शु.	श.	चं.	मं.	गु.	रा.	के.
नक्षत्र	३	३	३	३	३	३	३	३	३
फलम्	नेष्ट	श्रेष्ठ	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	नेष्ट

पापग्रहमुखे–हवने कृते शान्तिः–क्रूरग्रहमुखे चैव सञ्जाते हवने शुभे। शान्तिं विधाय गां दद्याद् ब्राह्मणाय कुटुम्बिने। आयसीं प्रतिमां कृत्वा निक्षिपेतामधोमुखीम्। गोमूत्र–मधुगन्धाद्यैरर्चितां प्रतिमां ततः। कुण्डे निधाय सम्पूज्य तत्र होमो विधीयते।।

अथ ऋणी–धनी विचार– स्ववर्गं द्विगुणं कृत्वा परवर्गेण योजयेत्। अष्टभिश्च हरेद् भागं योऽधिकः स ऋणी भवेत्।।(अर्थात् अपने वर्ग को दूना कर, दूसरे के वर्ग में जोड़ना, फिर ८ का भाग देना। फिर दूसरे का वर्ग दूना करके, अपना वर्ग जोडना, फिर ८ का भाग देना। जिसका शेषांक अधिक बचे, वह दूसरे का ऋणी होगा।), लेकिन वशिष्ठ आदि का मत है कि जिसका शेषांक कम बचे, वह दूसरे का ऋणी होता है– यही प्रामाणिक है।

हलप्रवहण मुहूर्त्त

मृग., रेव., चित्रा, अनु., रोहि., उत्तरा.३, हस्त, अश्वि., पुष्य, अभि., स्वा., पुन., श्रवण, धनि., श., मूल, मघा, विशा. एषु भेषु रिक्तामाषष्ट्यष्ठमीरहित सत्तिथौ शुभ–ग्रहस्य वासरे, १। ५। ७। १०। ११ लग्नेषु भूमिशयन–भद्रादीन् वर्जयित्वा हलचक्रशुद्धौ सत्यां हलप्रवहणं शुभम्।

हलचक्रम्					बीजवपने राहुचक्रम्								
सूर्यभुक्तनक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनें					राहुनक्षत्रात् दिनभं यावत् गणना कार्या								
नक्षत्र	३	७	९	८	८	३	१	३	१	३	१	३	४
फल	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ

बीजवपने मुहूर्त्त

हस्त, अश्वि., पुष्य, उत्तरा. 3, चित्रा, अनु., मृग., रेवती, स्वा., धनि., मघा, मूल एषु भेषु सत्तिथौ भौमातिरिक्तवारेषु सुशकुने राहुचक्रशुद्धौ सत्यां शुभः।

विशेषः– रवौ रौद्रा(आर्द्रा) द्यपादस्थे भूमेः संजायते रजः।
तस्माद्दिनत्रयं तत्तु बीजवापे परित्यजेत्।।

नवान्न–भक्षण–मुहूर्त्त

मृग., रेवती, चित्रा, अनु., हस्त, अश्वि., पुष्य, अभि., स्वा., पुन., श्रवण, धनि., शत. एवम् विषघटी रहित नक्षत्रों में शुभ है, नन्दा–रिक्ता तिथियों और पौष–चैत्र को छोड़कर अन्य मासों में सू., बु., गु., शुक्रवार शुभ है।

गौ, बैल आदि पशु लेने का मुहूर्त्त

अश्वि., पुन., पुष्य, हस्त, विशा., ज्ये., धनि., शत., रेव. नक्षत्र में गौ लेना–बेचना। अन्य पशु पुन., पूर्वा. 3, हस्त, अनु., ज्ये., मूल, धनि., रेवती में लेना–बेचना शुभ है। गाय लेनी हो तो उ.फा. से दिन नक्षत्र तक गिने। ३ तक लाभदायक, ५ तक हानि, ११ तक अर्थलाभ, १६ तक सुख, २२ तक महालाभ, २३ तक वृद्धि, २७ तक भय होता है। वृषभ (बैल) लेना हो तो ६ नक्षत्र लाभदायक; फिर दो–दो के क्रम से गाय के समानफल जानें। महिषी (भैंस) लेनी हो तो भी गौ नक्षत्रगणना क्रम से शुभाशुभफल हेतु सूर्य नक्षत्र तक गिनें– नौमी चौदस चौथ चौपाया। मंगल हान करे घर आया।।

सूर्यनक्षत्रात्काष्ठादि (गुहारा आदि) संस्थापनचक्रम्							
नक्षत्र संख्या	६	२	४	४	४	४	४
	उत्तमपाक	शवदहन	सर्पभय	मित्रलाभ	रोगभय	क्वाथकर्म	सुख
फल	शुभ	नेष्ट	नेष्ट	शुभ	नेष्ट	नेष्ट	शुभ

लतावृक्षाद्यारोपण मुहूर्त्त

मृग., रेवती, चित्रा, अनु., उत्तरा. 3, रोहि., हस्त., पुष्य, अश्वि., शत., मूल, विशा. नक्षत्रों में रिक्तामारहित शुभ तिथियों में और चं., बु., बृ., शुक्रवार हों, शुक्लपक्ष में ४। १०। ११। १२ लग्न में शुभ हैं।

तृणकाष्ठादिसंग्रहे निषेधः – तृण–काष्ठ का सञ्चय और पलंग बनवाना आदि कर्म कुम्भ–मीन के चन्द्रमा (पञ्चककाल) में नहीं करना चाहिए।

औषधसेवन का मुहूर्त्त

हस्त, अ., पुष्य, अभि., मृग., रेवती, चित्रा, अनु., स्वा., पुन., श्रव., धनि., शत. व मूल में जन्मनक्षत्र को छोड़कर, इन नक्षत्रों में ४। ९। १४ को छोड़कर, शुभ तिथियों में, भौम–शनि को छोड़कर, अन्यवारों में शुभ है।

अथ यात्रा–मुहूर्त–विचारः

हस्त, मघा, श्रव., अश्वि., पुष्य, पुन., धनि., अनु., रेवती, एषु भेषु यात्रा अत्युत्तमा; रोहि., उत्तरा. ३, पूर्वा. ३, एषु भेषु मध्या; भरणी, कृत्ति., आर्द्रा, आश्ले., मघा, चित्रा, स्वा., विशा., ज्ये., एतद्भेषु निन्द्याः। तत्रात्यावश्यकेऽपि यात्रायां भरण्यादि भानां क्रमात् ७। २१। १४। १४। ११। ४०। १४। १४। १४ एता घटिकाः गमन कर्मण्यवश्यं वर्जनीयाः। २। ३। ५। ७। १०। ११। १२ कृष्णपक्षस्य प्रतिपत्सु द्विग्द्वारलग्नेषु वा यात्रा शुभा।

द्विग्द्वारलग्नानि

दिशा→	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
शुभम्→	१। ५। ९	२। ६। १०	३। ७। ११	४। ८। १२
मध्यमम्→	२। ६ १०	३। ७। ११	४। ८। १२	१। ५। ९
भयम्→	४। ८ १२	१। ५। ९	२। ६। १०	३। ७। ११
महद्भयम्→	३। ७। ११	४। ८। १२	१। ५। ९	२। ६। १०

यात्रा में शुभाशुभ लग्नः– जन्मलग्न और जन्मराशि से अष्टमलग्न तथा कुम्भ या कुम्भ के नवांश में यात्रा कदापि न करें। शुभलग्न वह है, जब १। ४। ५। ७। ९। १० स्थानों में शुभ ग्रह और ३। ६। १०। ११ वें पापग्रह हों। अशुभ लग्न वह है– जब १। ६। ८। १२वें चन्द्रमा, १०वें शनि, ६वें शुक्र, १२। ६। ८वें लग्नेश हो। **अन्यच्च–** यात्रायामष्टमं शुद्धं विवाहे सप्तमं तथा। दशमं तु गृहारम्भे चतुर्थं तु प्रवेशने।।

जन्मलग्नेश, दशेश अस्त हों व मारकदशा हो तो सुमुहूर्त में भी दूर की यात्रा न करें, प्रथम तीर्थयात्रा व देवदर्शन गुरु–शुक्रास्त में वर्जित है।

दिक्शूलज्ञानाय चक्रम्									नक्षत्रशूलचक्रम्			
दिशा	पूर्व	आ.	दक्षि.	नैर्ऋ.	पश्चि.	वाय.	उत्तर	ईशा.	पू.	द.	प.	उ.
वार	चं.,श.	चं.,बृ.	गुरु	सू.,शु.	सू.,शु.	भौम	मं.	बु.,श.	ज्ये.	पू.भा.	रोहि.	उ.फा.

दिक्शूलपरिहारः– न वारदोषाः प्रभवन्ति रात्रौ देवेज्यदैत्येज्यदिवाकराणाम्। दिवा शशांकार्कजभूसुतानां सर्वत्र निन्द्यो बुधवारदोषः॥१॥ सूर्यवारे घृतं प्राश्य चन्द्रवारे पयस्तथा। गुड़मंगारके वारे बुधवारे तिलानपि। गुरुवारे दधि प्राश्यं शुक्रवारे यवानपि। माषानभुक्त्वा शनेर्वारे शूले गच्छञ्छूले न दोषभाक् ॥२॥

यात्रायां कालज्ञान चक्रम्

सम्मुखे	शनौ	शुक्रे	गुरौ	बुधे	भौमे	चन्द्रे	रवौ
नेष्टः	पूर्वे	आग्नेय्यां	दक्षिणे	नैर्ऋत्यां	पश्चिमे	वायव्ये	उत्तरे

योगिनीवास–चक्रम्

दिशा	पूर्व	आग्ने.	दक्षि.	नैर्ऋ.	पश्चि.	वाय.	उत्तर	ईशा.
तिथि	१। ६	३। ११	५। १३	४। १२	६। १४	७। १५	२। १०	८। ३०

योगिनी साधारण यात्रा में सामने और दाहिने अशुभ होती है, पीछे और बाएं की शुभ किंवा युद्ध यात्रा में बाएं ओर की और सम्मुख की विशेष त्याज्य है।

समयशूलः– उषाकाल में पूर्व को, गोधूलि में पश्चिम को, अर्द्धरात्रि में उत्तर को और मध्याह्नकाल में दक्षिण को नहीं जाना चाहिए।

गर्ग–गुरु–अङ्गिरामत– गर्ग जी के मत से ५ या ४ घड़ी रात रहे तो गमन करें। बृहस्पति के मत से अच्छा शकुन मिलने पर यात्रा करें। अङ्गिरा के मत से जब मन प्रफुल्लित हो तब ही चला जाए। भगवान् के मत से ब्राह्मण की आज्ञा लेकर यात्रा करने से शुभ होता है। पंच–पंच (५५) उषाकालः सप्तपञ्चाशद (५७) रुणोदयः। अष्ट पंच (५८) भवेत्प्रातः शेषः सूर्योदयो भवेत्।।

चन्द्रवासचक्रम्

पूर्वे	दक्षि.	पश्चि.	उत्तरे
मेष	वृष	मिथुन	कर्क
सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.
धनु	मकर	कुम्भ	मीन

एकस्मिन् राशौ आवश्यके तात्कालिक–यात्रायां घट्यात्मकं चन्द्रवासचक्रम्

दिशा	पू.	द.	प.	उ.	पू.	द.	प.	उ.
घटी	१७	१५	२१	१६	१७	१५	२०	१४

घट्यात्मक चन्द्रवास

जिस दिशा का चन्द्र होवे उस दिशा से गिनना चाहिए। कुम्भ और मीन के चन्द्रमा में दक्षिण को कदापि न जाएं।

चन्द्रफलम्ः– सम्मुखे अर्थलाभाय दक्षिणे सुख–सम्पदः। पृष्ठतो मरणं [illegible] ॥१॥ सर्वे दोषाःलयं यान्ति पूर्णचन्द्रे हि सम्मुखे॥

सम्मुखे चन्द्रप्रशंसा–भगणदोषं वार–संक्रान्ति–दोषं कुतिथिकुलिकदोषं यामयामार्धदोषम्। कुजशनिरविदोषं राहुकेत्वादि दोषं हरति सकलदोषं चन्द्रमाः सम्मुखस्थः॥

सर्वाङ्गसिद्धियोग–यात्राकालिक शुक्लादि तिथि तथा वार की संख्या को जोड़कर तीन जगह रखें। क्रमशः ७। ८। ३ का भाग दें। शेष प्रथम स्थान में शून्य हो तो क्लेश, मध्य में हो तो धनक्षति और अन्त में हो तो मृत्यु होती है। सर्वत्र अङ्क आने से सौख्य, जयलाभ हो। विजयादशमी को बिना सर्वांकादि मुहूर्त के भी यात्रा सफल होती है। बायां स्वर चलते समय पूर्व व ईशान को, दायां चलते समय दक्षिण व नैर्ऋत्य को मत जाएं, हानि होती है। जाने वाले का अच्छे मुहूर्त्त और अच्छे शकुन में भी जाने को मन न चाहे तो भी कदापि न जाएं, क्योंकि मुहूर्त्त एवम् शकुन से मन की इच्छा प्रबल है।

वर्ण के क्रम से प्रस्थान का विधान– यदि यात्रा मुहूर्त्त में किसी अत्यावश्यक कार्यवश विलम्ब हो जाय, तो उसी मुहूर्त्त में ब्राह्मण जनेऊ, माला, क्षत्रिय शस्त्र, वैश्य मधु–घृत व रुपया और शूद्र फल को अपने वस्त्र में बांध, किसी घर के या नगर के बाहर जाने की दिशा में प्रस्थान के समय रखे। अथवा मन की सबसे प्यारी वस्तु को रख देना चाहिए।

यात्रा से पहले त्याज्य वस्तुः– यात्रा के तीन दिन पहले दूध त्याग दें, पांच दिन पूर्व हजामत, तीन दिन पूर्व तैल, सात दिन पूर्व मैथुन और समर्थ न हो तो एक दिन पहले तो सब त्याज्य वस्तुओं का त्याग अवश्य ही करें।

दिने चतुर्घटिका मुर्हूत्तम्		रात्रौ चतुर्घटिका मुर्हूत्तम्
सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि	घटि.	सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि
उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर, काल	३॥।	शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ
चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ	७॥	अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग
लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग	११।	चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ
अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग	१५	रोग, लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत
काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर	१८॥।	काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर,
शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ	२२॥	लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग
रोग, लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत	२६।	उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर, काल
उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर, काल	३०	शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ

सूचनाः– यदि ३० घटी से न्यूनाधिक दिन या रात्रि का मान हो तो उसमें ८ का भाग देने से एक भाग के घटी–पल ज्ञात होंगे।

यात्रा में शुभ शकुन– मृग बाएं ते दाहिने जो आवे तत्काल। अन्न धन लक्ष्मी बहू मिले चलते प्रातःकाल॥ विप्र, दो अश्व, गजमद, फल, अन्न, दुग्ध, गोदधि, सर्षप, कमल, निर्मलवस्त्र, वाद्य, वेश्या, मयूर, नकुल, सिंहासन, शस्त्र, मांस, दीप्ताग्नि, मत्स्य, ससुत–स्त्री, गोरी कन्या, धोबी, कार्यसिद्धि वाक्य, जलपूर्णघट। यात्रा पश्चात् रिक्तघट यात्रा के समय देखने में शुभ है।

यात्रा में अशुभ शकुन:– बन्ध्या स्त्री, चर्म, अस्थि, इन्धन, संन्यासी, भैंसों का युद्ध, सर्प, शत्रु, मार्जारयुद्ध, कुटुम्बकलह, विधवास्त्री, जातिभ्रष्ट, अङ्गहीन, छिक्का, दुष्टवाणी यात्रा के समय देखना अशुभ तथा कष्टप्रद है।

आवश्यके रामदैवज्ञोक्त यात्रामुहूर्त्तचक्रम्

पौ.	मा.	फा.	चै.	वै.	ज्ये.	आ.	श्रा.	भा.	आ.	का.	मा.	पूर्व	दक्षिण	पश्चि.	उत्तर
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	सौख्य	क्लेश	भीति	लाभ
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	शून्य	दारिद्रय	दारिद्रय	मिश्र
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	हानि	दुःख	लाभ	लाभ
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	लाभ	सौख्य	शुभ	लाभ
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	लाभ	लाभ	लाभ	सुख
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	भय	लाभ	मृत्यु	लाभ
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	लाभ	कष्ट	लाभ	सुख
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	कष्ट	सौख्य	क्लेश	सुख
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	सौख्य	लाभ	सिद्धि	कष्ट
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	क्लेश	सिद्धि	लाभ	धन
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	मृत्यु	लाभ	लाभ	शुभ
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	शुभ	सौख्य	मृत्यु	कष्ट

तृतीया–त्रयोदशी, चतुर्थी–चतुर्दशी, पञ्चमी–पूर्णमासी का फल समान जानना। अमावस्या में यात्रा वर्जित है, पक्ष का विचार नहीं है।

यात्रा में सदैव चल रही नासिका के श्वास की ओर का पांव आगे उठाकर चले, इसी तरह सवारी पर चढ़े। कार्य सिद्ध हो, यात्रा सफल होगी।

नौकायात्रा—मुहूर्त्तः

चित्रा, हस्त, पु., मृग., पूर्वा. ३, अनु., श्रव., धनि.—एषु भेषु सत्तिथौ शुभेऽहिन चन्द्र—तारानुकूल्ये सति शुभः।

यात्रानिवृत्तौ प्रवेशमुहूर्त्तः

मृग., रेवती, अनु., रोहि., उत्तरा. ३, हस्त, अश्वि., पुष्य, स्वा., श्रवण, धनि. —एषु भेषु; चं., बु., बृ., शु., श. वारेषु; १। २। ३। ५। ७। १०। ११। १३ तिथिषु; ३। ५। ८। ९। ११। १२ एषु लग्नेषु; १। ४। ७। १०। ५। ९ स्थानेषु शुभैः; ३। ६। ११ स्थानेषु पापैः; ४। ८ शुद्धौ शुभः। विशा., कृत्ति., पूर्वा. ३, भरणी, मघा, मूल, ज्ये., आर्द्रा, आश्ले., नक्षत्राणि; ४। ९। १४। ६। १२। ८। ३० तिथयः; सू., मं. वारौ; १। ४। ७। १० लग्नानि सर्वदा वर्जनीयानि।

मंगलवार को मिलाप कष्टप्रद सिद्ध होता है।

विशेषः— प्रवेशान्निर्गमश्चैव निर्गमाच्च प्रवेशनम्। नवमे जातु नो कुर्याद्दिने वारे तिथाविति।।

अथ घातचन्द्रवारादीनां चक्रम्

राशि→	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
घात चन्द्र	मे.	क.	कुं.	सिं.	म.	मि.	ध.	वृष	मी.	सिंह	ध.	कुम्भ
घात वार	र.	श.	चं.	बु.	श.	श.	बृ.	शु.	शु.	मं.	बृ.	शु.
घात नक्षत्र	म.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	श्र.	श.	रे.	भ.	रो.	आ.	आश्ले.
स्त्री चन्द्रघात	मे.	ध.	ध.	मि.	वृश्चि.	वृश्चि.	मी.	ध.	कन्या	वृश्चि.	मि.	मेष
घात मास	का.	मार्ग.	पौ.	मा.	फा.	चैत्र	वैशा.	ज्ये.	आषा.	श्रावण	भाद्र.	आ.
घातयोग	वि.	सु.	प.	धृ.	प्री.	सु.	अ.गं.	वृ.	वै.	गं.	व्या.	वै.
घातलग्न	१	२	४	७	१०	१२	६	८	९	११	३	५
घाततिथि	१	५	२	२	३	५	४	१	३	४	३	५
घाततिथि	६	१०	७	७	८	१०	९	६	८	९	८	१०
घाततिथि	११	१५	१२	१२	१३	१५	१४	११	१३	४	१३	१५

युद्ध, विवाद, राजसेवा,वाहन, रोगादि कार्यों में घातचक्र देखना और तीर्थयात्रा तथा विवाहादि शुभ कार्यों में घाततिथि आदि देखने की आवश्यकता नहीं होती। **"घाततिथिर्घातवारः घातनक्षत्रमेव च। यात्रायां वर्जयेत्प्राज्ञैरन्यकर्मसु शोभनम्।।"**

वाम—दक्षिणनिर्देश

अग्रे चक्रोक्त सर्व फल पुरुषों के दक्षिण अंग में और स्त्रियों के वामांग में विचार करना, पुरुषों के वाम भाग में और स्त्रियों के दक्षिण भाग में विपरीत अशुभ, भयकारी फल होता है। जो फल पल्लीपात का है, वही सरट (गिरगिट) के चढ़ने का समझें। सरट के गिरने का तथा पल्ली के चढ़ने का फल वृथा होता है।

अथाङ्ग विभाग में पल्ली—(छिपकली, कोढ़किरली) पतन का फल

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
शिरसि	राज्यलाभः	भ्रूमध्ये	राज्यसंबंधः	वामपादे	नाशः
नासाग्रे	व्याधिः	वामकर्णे	बहुलाभः	अधरोष्ठे	ऐश्वर्यलाभः
वामभुजे	राज्यभयम्	स्तनयोः	दौर्भाग्यम्	दक्षिणभुजे	नृपतुल्यता
जानद्वये	शुभागमः	हस्तयोः	वस्त्रलाभः	पृष्ठदेशे	बुद्धिनाशः
कटिभागे	अश्वलाभः	वा. मणिबंधे	कीर्तिनाशः	नाभौ	बहुधनम्
गुल्फद्वये	बन्धनम्	दक्षिणपादे	गमनम्	मुखे	मिष्ठान्नभोजनम्
ललाटे	बन्धुदर्शनम्	उत्तरोष्ठे	धननाशः	पादमध्ये	स्त्रीनाशः
दक्षिणकर्णे	आयुवृद्धिः	नेत्रयोः	धनप्राप्तिः	पादान्ते	मृत्युः
कण्ठे	शत्रुनाशः	उदरे	भूषणलाभः	केशान्ते	रणम्
जंघयोः	शुभम्	स्कन्धयोः	विजयः	नखेषु	धान्यलाभः
द.मणिबंधे	मनस्तापः	हृदये	धनलाभः	दक्षिणांगुष्ठे	धनलाभः

पल्लीपतने प्रशस्तवारतिथ्यर्क्षाणि

यदि छिपकली १। २। ३। ५। ६। १०। ११। १२। १३— इन तिथियों में गिरे तो श्रेष्ठ फलदायक है तथा चं., बु., गु., शु.— इन वारों में भी शुभ फल देती है। पुष्य, अश्वि., रोहि., मूल, पुन., उ.फा., हस्त, चित्रा, स्वा., धनि., रेवती, अनु., शत.— ये नक्षत्र शुभफलदायक हैं। इसके अलावा अन्य नक्षत्रों में गिरे तो शुभ [illegible]

पल्ली (किरली) पतनोपरान्त कर्तव्य—पल्ली (किरली) तथा सरट (गिरगिट) स्पर्श होने पर वस्त्रसहित स्नान करें। जन्मनक्षत्र, मृत्युयोग, दग्धा–तिथि, भद्रा आदि से दूषित दिन को पापग्रहयुक्त लग्न में तथा अष्टम चन्द्रमा से पल्ली आदि के स्पर्श होने से अरिष्ट होता है। उसकी शान्ति के लिए जप, होम, मृत्युञ्जय जाप एवम् तिल, स्वर्ण, दान और पञ्चगव्य से स्नान तथा घृत का छायापात्र दान भी करना उत्तम है।

छिक्का फलम्

छिक्का प्रायः सब दिशाओं की नेष्ट होती है। गौ की छिक्का मरण करती है– **"मदिरा के योग अथवा छींक सूंघनी छल कर लीन्हीं, पीन सरदी घास फल हीनी। छींक पीठी की कुशवाल उचारे; बाईं कारज सवै सवारे॥१॥ सम्मुख छींक लड़ाई भाषै; छींक दाहिनी द्रव्य विनाशै ॥२॥ ऊंची छींक कहे जयकारी; नीची छींक होय भयकारी। अपनी छींक महा दुखदाई; ऐसे छींक विचारो भाई ॥३॥**

कन्या, विधवा, मालिन, धोबिन, रजस्वला, वैश्या, चमारी की छींक विशेष अशुभप्रद होती है। भोजनान्त में छींक होय तो दूसरे दिन प्रिय भोजन मिले।

अथ शुभ छिक्काः— आसने शयने शौचे दाने चैव तु भोजने। वामांगे पृष्ठतश्चैव षट् छिक्कास्तु शुभावहाः। एक नाक से दो छींक भी शुभ मानी जाती है– **एक नाक दो छींक; काम बने सब ठींक॥**

तीर्थ में मुण्डनविचार

मुण्डनं चोपवासञ्च सर्वतीर्थेष्वयं विधिः। वर्जयित्वा कुरुक्षेत्रं विशालां (उज्जयिनीं) गिरिजां गयाम्।।

अथ वारपरत्वेन तैलाभ्यंगे फलं–विधिश्च							
सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	वाराः
नापम्ः	सुकीर्ति	मृति	श्री.	वित्त हानि	विपत्ति	सुख सुयोग	फलम्
पृष्पं	०	मृत्तिका	०	दूर्वा	गोमय	०	पातनम्

तैलाभ्यंगे वर्ज्यानि

तदत्राह–
रवौ भोमे व्यतिपाते संक्रांति–वैधृतावपि । षष्ट्यष्टम्योश्च विष्ट्यां च तैलाभ्यंगो न पर्वसु।।

विशेष— यदि प्रतिदिन तेल लगाने का स्वभाव हो तब अथवा उत्सव के दिन व वातरोग में तेल लगाने में दोष नहीं है। अभिमन्त्रित औषधि में पकाया हुआ सरसों का तेल व सुगंधित तेल लगाने से किसी दिन दोष नहीं है।

अंग–स्फुरण का फल

पुरुषों का दायां और स्त्रियों का बायां अंग फरकना शुभ है।
मस्तक का स्फुरण (फरकना) स्त्री–पुरुष दोनों के लिए शुभ है।

स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल
मस्तक	पृथ्वीलाभ	वक्षस्थल	विजय	ओष्ठ	प्रियवस्तुप्राप्ति
ललाट	स्थानलाभ	हृदय	इष्टसिद्धि	हनु	महाभाग्य
स्कन्ध	भोगवृद्धि	कटि	प्रमाद	कण्ठ	ऐश्वर्यलाभ
भ्रूमध्य	सुखप्राप्ति	कटिपार्श्व	प्रीति	ग्रीवाधोभाग	शत्रुभय
भ्रूयुग्म	महत्सौख्य	नाभि	स्त्रीनाश	पृष्ठ	पराजय
कपोल	शुभप्राप्ति	आंत्रिक	कोषवृद्धि	मुख	मित्रप्राप्ति
नेत्र	धनप्राप्ति	भग	पतिप्राप्ति	भुज	मधुरभोजन
नेत्रकोण	लक्ष्मीलाभ	कुक्ष	सुप्रीति	भुजमध्य	धनागम
नेत्रसमीप	प्रियसंगम	उदर.	कोषलाभ	वस्तिदेश	भाग्योन्नति
नेत्रपक्षम	राज्यलाभ	लिंग	स्त्रीलाभ	ऊरु	वस्त्रलाभ
हस्त	सद्द्रव्यलाभ	गुदा	वाहनलाभ	जानु	शत्रुवृद्धि
नेत्रोर्ध्व	विजय	वृषण	पुत्रलाभ	जंघा	स्वामीप्रीति
पादोर्ध्व	स्थानलाभ	पादतल	नृपत्व–बुद्धि		

इन्हीं अंगों में तिल, लसन, मस्सा हो व खुजली उठे तो भी चक्रोक्त फल जाने। पैर के तलुओं में खुजली उठे तो यात्रा हो। राजाओं के हाथ में तिल व खाज हो तो जय होती है। साधारण व्यक्ति को लाभ होता है।

काकस्पर्श का फल

मस्तक पर काक स्पर्श धननाश, मरण तथा कलह करता है। कमर, कन्धे पर अशुभ होता है। स्त्री के मस्तक पर काक बैठना पति–पुत्र का नाश करता है। वृक्ष के नीचे दहीं आदि के उत्तभ भोजन के कारण काक का स्पर्श दोषकारक नहीं होता, किन्तु अकस्मात् स्पर्श दोष करता है। काकमैथुन का देखना छः मास में मृत्यु अथवा मृत्युतुल्य कष्ट व इच्छितकार्य का नाश करता है। इसके दोष दूर करने के निमित्त उड़द के आटे की काकप्रतिमा मृण्मय (मिट्टी के) पात्र में स्थापित कर उड़द, चावल, घी, मीठे का नैवेद्य देवें। ग्राम में दक्षिण की ओर बाहर चौराहे पर गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, दक्षिणादि से पूजन कर मृत्युञ्जय मन्त्र का यथाशक्ति जप करें (या करावें), घृतच्छाया–पात्र दान, पञ्चगव्य से स्नान भी करे। इस विधान के करने से सम्पूर्ण दोष नष्ट होते हैं।

काकविष्ठा विचार:— शिरसि–मृत्युः वा कष्टम्। स्कन्धयोः रोगः। भुजयोः प्रियार्तिः। उदरे शोकः। गुह्ये सन्तानकष्टम्। जंघयोः वाहनपीडा। पादयोः प्रवासः।

कौवा उड़ता हुआ या किसी सूखे पेड़ पर बैठा हुआ किंवा पूर्व की तरफ बैठा हुआ अथवा दक्षिण दिशा की ओर मुंह किए किसी के ऊपर काली बीठ कर दे तो अशुभ होता है। यदि किसी हरे–भरे या फूले–फले पीपल, बड आदि श्रेष्ठ पेड़ पर बैठा हुआ सफेद बीठ कर दे तो शुभ जानिए।

....

विवाहादि मुहूर्त (सं. 2064वि.)

प्रो. प्रियव्रत शर्मा, 59/6 (अभिजित्), P.O. पंचकूला-134 109;

(इन विवाहादि मुहूर्तों के शोधन में नाला बलोग (पंचकूला) निवासी, मेरे योग्य शिष्य चि. सुरेशानन्द शर्मा B.A. का पर्याप्त सहयोग मिला है।)

—: समय शुद्धि :—

शुक्र अस्त :- श्राव. कृ. ६, मं. से श्राव. शु. ९,बु. (७ से २२ अग., २००७ ई.) तक शुक्र पश्चिम में अस्त रहेगा।

गुरु अस्त :- मार्ग. शु. १, चं. से पौष कृ. १०, गु. (१० दिसं.२००७ ई. से ३ जन., २००८ ई.) तक गुरु अस्त रहेगा।

अधिक मास:- प्र.(अधि.) ज्ये. शु.१ से द्वि.(अधि.) ज्ये. कृ. ३० (१७ मई से १५ जून, २००७ ई.) तक ज्येष्ठ अधिक मास होने के कारण इसमें विवाहादि शुभकृत्य नहीं होंगे।

त्रयोदश दिनपक्ष:- इस वर्ष श्रावण कृ. पक्ष (३१ जुला. से १२ अग., २००७ ई. तक) दो तिथियों के क्षय के कारण १३ दिन का होने से इस पक्ष में विवाहादि शुभकृत्य वर्जित होंगे।

गुरु-शुक्र के अस्त का यह उपरोक्त काल पंजाब, हरियाणा, हि.प्र., दिल्ली आदि के लिए है। क्योंकि अक्षांशभेद से इन ग्रहों के अस्त-उदय की तारीखें भिन्न-भिन्न होती हैं। इसलिए अपने अभीष्ट प्रान्त के गुरु-शुक्र अस्तकाल का निर्णय नीचे दिए गए कोष्ठक से जानकर विवाहादि मुहूर्तों का दैवज्ञ को निर्णय करना चाहिए।

अक्षांशभेद से भारत के विभिन्न स्थलों पर गुरु-शुक्र का उदय-अस्त 'सं. २०६४ वि.'

अक्षांश →	+१०°	+२०°	+३०°	+३५°
शुक्र पश्चिम में अस्त	११ अग., '०७ ई.	९ अग., '०७ ई.	७ अग., '०७ ई.	५ अग., '०७ ई.
शुक्र पूर्व में उदित	२२ अग., '०७ ई.	२२ अग., '०७ ई.	२३ अग., '०७ ई.	२४ अग., '०७ ई.
गुरु अस्त	१२ दिसं., '०७ ई.	११ दिसं., '०७ ई.	१० दिसं., '०७ ई.	९ दिसं., '०७ ई.
गुरु उदित	३ जन., '०८ ई.	३ जन., '०८ ई.	४ जन., '०८ ई.	५ जन., '०८ ई.

गुरु-शुक्र के अस्तकाल में तो शुभकृत्य वर्जित रहते ही हैं, इनके अस्त से ३ दिन पूर्व वार्धक्यदोष और उदय होने के ३ दिन बाद तक भी बाल्यदोष के कारण शुभकृत्य नहीं किए जाते।

ध्यान दें - मुहूर्तों में जिस लग्न का कुछ भाग किसी विशेष दोष के कारण वर्जित है, उस लग्न के आगे कोष्ठक में भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम के अनुसार यह निर्देश दिया गया है कि, इस लग्न को इस टाईम के बाद अथवा पहले ही मुहूर्तों में स्वीकार करें।

यहां मुहूर्तों में क्रान्तिसाम्य (महापात) दोष का विचार सूक्ष्मगणित से किया गया है। सूर्य एवं चन्द्र की राशियों के आधार पर निर्णीत क्रान्तिसाम्य नितांत स्थूल होता है। भास्कर आदि आचार्यों ने इसके निर्णय के लिए एक विशेष गणितप्रक्रिया (महापात-गणित) निर्दिष्ट की है। कई पंचांगकार इसकी जटिल गणित-प्रक्रिया से डरकर स्थूल क्रान्तिसाम्य के आधार पर ही मुहूर्तों का निर्णय कर देते हैं, जो सर्वथा भ्रामक है। सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य का प्रारम्भ और समाप्तिकाल पृष्ठ ४५ पर दिया गया है।

यहां दिए गए मुहूर्तों में जहां युति, वेध, कर्त्तरी, दग्धातिथि, अष्टमस्थ भौम, षष्ठाष्टमस्थ चन्द्र-शुक्र आदि दोषों के परिहार मिल गए हैं, उन मुहूर्तों को शास्त्रानुसार शुद्ध माना गया है और वहां विवाह-लग्न लगा दिए गए हैं।

ध्यान रहे -यहां मुहूर्तों में दी गईं अंग्रेजी तारीखें सूर्योदयकालिक हैं। जो मुहूर्त्तकाल (लग्न) रात के १२ बजे के बाद और सूर्योदय से पहिले पड़ता है, वहां अंग्रेजी तारीख अग्रिम (परवर्ती) समझनी चाहिए।

इन विवाहमुहूर्त्तों में प्रयुक्त सांकेतिक शब्दों का स्पष्टीकरण

- **आवश्यके** = लग्न निर्बल है। अत्यावश्यकता में इस लग्न में विवाह किया जा सकता है।
- **दि.ल.** = दिन का लग्न। **ल.** = रात्रि का लग्न।
- **पादवेध** = विवाहलग्नकालिक नक्षत्रचरण को शुभग्रह का वेध है।
- **पादवेधाभाव** = विवाहलग्नकालिक नक्षत्रचरण को शुभग्रह का वेध नहीं है।
- **दा.** =इस ग्रह का दान करके इस लग्न में विवाह किया जा सकता है। जैसे "मं.दा." का अभिप्राय है, इस विवाह लग्न में मंगल का दान आवश्यक है।

शुद्ध विवाह मुहूर्त्त (सं. २०६४ वि.)

मास -तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख २००७ ई.	विवाह नक्षत्र	विवाह लग्न के समय			लत्ता आदि दस दोष-रेखाएं	शुद्धलग्न, ग्रह-दान-पूजा आदि विवरण (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
				चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि		
वैशा. शु. २ गु.	वैशा. ६	अप्रै. १९	रोहि.	वृष	मेष	वृश्चि.	।। ऽसू. ।। । ।। ।।	ल. १२ (शु.दा.),
वैशा. शु. ३ शु.	वैशा. ७	अप्रै. २०	रोहि.	वृष	मेष	वृश्चि.	।। ऽसू. ।। । ।। ।।	दि.ल. ३,
वैशा. शु. ३ शु.	वैशा. ७	अप्रै. २०	मृग.	वृष	मेष	वृश्चि.	ऽरा. ।।। ऽगु. ऽचौ. ।ऽ।।	ल. १२ (शु.दा.),
वैशा. शु. ५ श.	वैशा. ८	अप्रै. २१	मृग.	वृष/मिथुन	मेष	वृश्चि.	ऽरा. ।।। ऽगु. ऽचौ. ।ऽ।।	दि.ल. ३, गोधू.,

शुद्ध विवाह मुहूर्त्त (सं. २०६४ वि.)

मास -तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख २००७ ई.	विवाह नक्षत्र	विवाह लग्न के समय चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि	लत्ता आदि दस दोष-रेखाएं	शुद्धलग्न, ग्रह-दान-पूजा आदि विवरण (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
वैशा. शु. १० गु.	वैशा. १३	अप्रै. २६	मघा	सिंह	मेष	वृश्चिक	।ऽ ।।। ऽअ. ।ऽ ।।	दि.ल. २(गु.मं.दा.), ३(६/३६ तक), गोधू.,(६/३६ से १४/१० तक क्रान्तिसाम्य),
शा. शु. १२ श.	वैशा. १५	अप्रै. २८	उ.फा.	कन्या	मेष	वृश्चिक	।। ।। ऽमं. ।ऽ ।।।	ल. गोधू., १२(चं. शु. दा.),
शा. शु. १२ र.	वैशा. १६	अप्रै. २६	उ.फा.	कन्या	मेष	वृश्चिक	।। ।। ऽमं. ।ऽ ।।।	दि.ल. २(मं.गु.दा.), ३(१०/०६ तक),
शा. शु. १२ र.	वैशा. १६	अप्रै. २६	हस्त	कन्या	मेष	वृश्चिक	ऽसू. ऽ ।।। ऽचौ. ।। ।।	ल. गोधू., १२(चं. शु. दा.),
शा. शु. १३ चं.	वैशा. १७	अप्रै. ३०	हस्त	कन्या	मेष	वृश्चिक	ऽसू. ऽ ।।। ऽचौ. ।। ।।	दि.ल. २(मं.गु.दा.), ३(६/५६ तक),
.ज्ये. कृ. ३ श.	वैशा. २२	मई ५	मूल	धनु	मेष	वृश्चिक	।। ।। ऽशु. ।। ऽ ।।	ल.१२ (२८/०० बाद),
.ज्ये. कृ. ४ र.	वैशा. २३	मई ६	मूल	धनु	मेष	वृश्चिक	।। ।। ऽशु. ऽनृ. ।ऽ ।।	दि.ल. ३ (चं.दा.), गोधू., १२(२७/३५ तक),
प्र.ज्ये. कृ. ६ मं.	वैशा. २५	मई ८	उ.षा.	मकर	मेष	वृश्चिक	ऽचं. ऽ।ऽशु. ।। ।। ।ऽ	ल. गोधू.,(५/५५ से १२/०८ तक शुक्र-पादवेध),
प्र.ज्ये. कृ. ७ बु.	वैशा. २६	मई ६	श्रव.	मकर	मेष	वृश्चिक	।। ।। ।ऽचौ. ।ऽ ।।	ल. गोधू.,
द्वि.ज्ये. शु. ५ मं.	आषा. ५	जून १६	मघा	सिंह	मिथुन	वृश्चिक	।ऽ ।।। ऽनृ. ।। ।।	ल. गोधू., २(गु.शु.दा.), (वृष लग्न अत्यावश्यके),
द्वि.ज्ये. शु. ७ शु.	आषा. ८	जून २२	हस्त	कन्या	मिथुन	वृश्चिक	।। ।। ।। ।। ।ऽ	ल.१२(२५/१२ बाद) (चं. दा.), २(गु.शु.दा.), (वृष लग्न अत्यावश्यके),
द्वि.ज्ये. शु. ८ श.	आषा. ६	जून २३	हस्त	कन्या	मिथुन	वृश्चिक	।। ।। ।ऽरो. ।। ।।	ल. गोधू., १२(चं.दा.),
द्वि.ज्ये. शु. ६ र.	आषा.१०	जून २४	चित्रा	तुला	मिथुन	वृश्चिक	।। ।। ।ऽरो. ऽ। ।।	ल. गोधू.,
द्वि.ज्ये. शु. १२ बु.	आषा.१३	जून २७	अनु.	वृश्चिक	मिथुन	वृश्चिक	ऽसू. ।। ।। ऽअ. ।। ।।	ल. गोधू., १२, २(चं. गु. शु. दा.), (वृष लग्न अत्यावश्यके),
आषा. कृ. १ र.	आषा.१७	जुला. १	उ.षा.	धनु/मकर	मिथुन	वृश्चिक	।। ।। ।ऽचौ. ।। ।।	ल.१२,
आषा. कृ. २ चं.	आषा.१८	जुला. २	श्रव.	मकर	मिथुन	वृश्चिक	।ऽ ।। ।। ।। ।।	ल. २ (गु.शु.दा.) (अत्यावश्यके),
आषा. कृ. ६ शु.	आषा.२२	जुला. ६	उ.षा.	मीन	मिथुन	वृश्चिक	ऽचं. ।। ।। ऽअ. ।। ।।	ल. २ (गु.दा.),
आषा. कृ. ७ श.	आषा.२३	जुला. ७	रेव.	मीन	मिथुन	वृश्चिक	ऽबु. ।। ।। ।। ऽ।ऽ	ल. गोधू., २ (गु.दा.),
आषा. कृ. १२ बु.	आषा.२७	जुला. ११	रोहि.	वृष	मिथुन	वृश्चिक	ऽमं. ऽ ।। ।। ।। ।।	ल.१२ (२३/३३ तक),
आषा. शु. ५ गु.	श्राव. ४	जुला. १६	उ.फा.	कन्या	कर्क	वृश्चिक	।। ।। ।ऽअ. ।। ।ऽ	ल.१२ (चं.दा.), २ (गु.दा.), ३ (शु.दा.),
आषा. शु. ६ शु.	श्राव. ५	जुला. २०	हस्त	कन्या	कर्क	वृश्चिक	।। ।। ।। ।। ।।	ल. गोधू., १२(चं.दा.), २ (गु.दा.),३ (शु.दा.),
आषा. शु. ७ श.	श्राव. ६	जुला. २१	चित्रा	कन्या	कर्क	वृश्चिक	।। ।। ।ऽनृ. ।ऽ ।।	ल. गोधू.,
आषा. शु. १० मं.	श्राव. ६	जुला. २४	अनु.	वृश्चिक	कर्क	वृश्चिक	ऽश. ।ऽगु. ।ऽमं. । ।। ।।	ल.१२, २ (चं.गु.दा.), ३ (शु.दा.),
आषा. शु. ११ गु.	श्राव. ११	जुला. २६	मूल	धनु	कर्क	वृश्चिक	ऽसू. ।। ऽबु. ।। ।। ।।	ल.३ (चं.शु.दा.), (बुध-पादवेधाभाव),
आषा. शु. १३ श.	श्राव. १३	जुला. २८	उ.षा.	धनु	कर्क	वृश्चिक	।। ।। ऽबु. ऽअ. ।। ।।	ल.३ (चं.शु.दा.),
आषा. शु. १४ र.	श्राव. १४	जुला. २६	उ.षा.	मकर	कर्क	वृश्चिक	।। ।। ऽबु. । ।। ।।	ल. १२,

शुद्ध विवाह मुहूर्त (सं. २०६४ वि.)

मास -तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख २००७ ई.	विवाह नक्षत्र	विवाह लग्न के समय चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि	लत्ता आदि दस दोष-रेखाएं	शुद्धलग्न, ग्रह-दान-पूजा आदि विवरण (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
श्राव. शु. १४ चं.	भाद्र. ११	अग. २७	धनि.	मकर	सिंह	वृश्चिक	।। ।ऽशु. ऽशु.। ऽ। ।।	दि.ल. ६(१६/०५ तक) (१६/०५ से २१/४६ तक शुक्र-पादवेध), (२०/१८ बाद मृत्युबाण),
भाद्र. कृ. २ गु.	भाद्र. १४	अग. ३०	उ.भा.	मीन	सिंह	वृश्चिक	।। ।। ।। ।। ।।	दि.ल. ६, गोधू.,
भाद्र. कृ. ७ चं.	भाद्र. १८	सितं. ३	रोहि.	वृष	सिंह	वृश्चिक	।ऽ ऽमं. ।। ऽरो. ।। ।।	ल. ३, ४,
भाद्र. कृ. ८ मं.	भाद्र. १९	सितं. ४	रोहि.	वृष	सिंह	वृश्चिक	।ऽ ऽमं. ।। ऽरो. ।। ।।	दि. ल. ६(श.दा.),
भाद्र. कृ. ८ मं.	भाद्र. १९	सितं. ४	मृग.	वृष	सिंह	वृश्चिक	ऽशु.रा. ।।। ऽगु. ।ऽऽ ।।	ल. गोधू. (१८/३१ बाद), ३, ४,
भाद्र. कृ. ९ बु.	भाद्र. २०	सितं. ५	मृग.	मिथुन	सिंह	वृश्चिक	ऽशु.रा. ।।। ऽगु. ।ऽऽ ।।	दि. ल. ६(श.दा.), ६ (चं.दा.),
भाद्र. शु. १ बु.	भाद्र. २७	सितं. १२	उ.फा.	कन्या	सिंह	वृश्चिक	।। ।। ।। ।। ।।	ल. ३ (२३/४१ तक),
भाद्र. शु. २ गु.	भाद्र. २८	सितं. १३	हस्त	कन्या	सिंह	वृश्चिक	।। ऽबु. ।। ऽरो. ।। ।।	दि. ल. ६, रा. ल. ३, ४,
भाद्र. शु. २ गु.	भाद्र. २८	सितं. १३	चित्रा	कन्या	सिंह	वृश्चिक	।। ।। ।ऽरो. ।। ।।	ल. ४ (२७/३१ बाद),
भाद्र. शु. ३ शु.	भाद्र. २९	सितं. १४	चित्रा	कन्या/तुला	सिंह	वृश्चिक	।। ।। ।ऽरो. ।। ।।	दि.ल. ६, गोधू., ३, ४,
भाद्र. शु. ६ मं.	आश्वि. २	सितं. १८	अनु.	वृश्चिक	कन्या	वृश्चिक	ऽश. । ।। ।। ।। ।।	दि. ल. ७, (११/४२ बाद मृत्युबाण),
भाद्र. शु. ८ गु.	आश्वि. ४	सितं. २०	मूल	धनु	कन्या	वृश्चिक	।। ।। ऽमं. ऽअ. ।ऽ ।ऽ	दि. ल. ७, गोधू. (१८/१४ तक),
भाद्र. शु. ११ र.	आश्वि. ७	सितं. २३	धनि.	मकर	कन्या	वृश्चिक	ऽसू.गु. ।। ऽशु.ऽशु. ऽचौ. ।।।।	ल. २ (गु.शु.दा.), ४ (२६/१६ तक) (चं.दा.), (२६/१६ से २७!०१ तक शुक्र-पादवेध),
भाद्र. शु. १२ चं.	आश्वि. ८	सितं. २४	धनि.	मकर/कुम्भ	कन्या	वृश्चिक	ऽसू.गु. ।। ऽशु.ऽशु. ऽचौ. ।।।।	दि. ल. ७, गोधू. (१८/१७ तक), (शुक्र-पादवेधाभाव),
आश्वि. शु. ३ र.	आश्वि.२८	अक्तू. १४	अनु.	वृश्चिक	कन्या	वृश्चिक	।। ।। ।ऽरो. ।। ।।	ल. २ (चं.गु.दा.), ४,
आश्वि. शु. ४ चं.	आश्वि.२९	अक्तू. १५	अनु.	वृश्चिक	कन्या	वृश्चिक	।। ।। ।। ।। ।।	दि. ल. ७ (७/१० तक), २ (२०/२३ से २०/४३ तक) (चं.गु.दा.),
आश्वि. शु. ८ शु.	कार्त्ति. ३	अक्तू. १९	उ.षा.	मकर	तुला	वृश्चिक	।। ।। ।ऽअ. ।ऽ ।।	ल. ४(२३/२५ बाद) (चं.दा.), ६(२८/३३ तक)(श.मं.दा.)(कन्यालग्न अत्यावश्यके) (२३/२५ तक मृत्युबाण),
आश्वि. शु. १३ बु.	कार्त्ति. ८	अक्तू. २४	उ.भा.	मीन	तुला	वृश्चिक	ऽसू. ।। ।। ऽचौ. ।। ।।	ल. गोधू., २ (गु.दा.),
आश्वि. शु. १३ बु.	कार्त्ति. ८	अक्तू. २४	रेव.	मीन	तुला	वृश्चिक	।ऽ ।। ।ऽचौ. ।। ।।	ल ४ (२४/०१ बाद), ६(चं.मं.श.दा.) (कन्यालग्न अत्यावश्यके),
आश्वि. शु. १४ गु.	कार्त्ति. ९	अक्तू. २५	अश्वि.	मेष	तुला	वृश्चिक	।। ।ऽशु. ऽबु. ।ऽऽ ।।	ल. ४ (२४/१५ बाद), (२६/२२ बाद शुक्र-पादवेध),
कार्त्ति. कृ. ३ र.	कार्त्ति. १२	अक्तू. २८	रोहि.	वृष	तुला	वृश्चिक	।। ।। ।ऽअ. ।। ।।	ल. ४ (२४/२२ बाद), (२४/२२ तक मृत्युबाण),
कार्त्ति. कृ. ४ चं.	कार्त्ति. १३	अक्तू. २९	मृग.	वृष/मिथुन	तुला	वृश्चिक	ऽरा. ।। ।ऽगु. ऽअ. ऽऽ ।।	ल. गोधू., ४, ६(श.मं.दा.) (कन्यालग्न अत्यावश्यके),
कार्त्ति. कृ. ९ श.	कार्त्ति. १८	नवं. ३	मघा	सिंह	तुला	वृश्चिक	।। ऽके. ।। ऽरो. ।ऽ ।।	ल. गोधू., २ (गु.दा.), ४ (शु.दा.), ६(२८/१२ तक) (मं.श.दा.) ([illegible] तक क्रान्तिसाम्य),

शुद्ध विवाह मुहूर्त्त (सं. २०६४ वि.)

मास - तिथि - वार	प्रविष्टा	तारीख २००७-०८ ई.	विवाह नक्षत्र	विवाह लग्न के समय			लत्ता आदि दस दोष-रेखाएं	शुद्धलग्न, ग्रह-दान-पूजा आदि विवरण (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
				चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि		
कार्त्ति. शु. १ र.	कार्त्ति.२६	नवं. ११	अनु.	वृश्चिक	तुला	वृश्चिक	ऽश. ।। ।। ऽचौ. ।। ।।	ल. गोधू., २(१८/१७ तक) (चं.गु.दा.), ४(शु.दा.),६(२६/४० तक)-(श.मं.दा.),
कार्त्ति. शु. ३ मं.	कार्त्ति.२८	नवं. १३	मूल	धनु	तुला	वृश्चिक	।। ।। ।ऽरो. ।। ।।	ल. गोधू.,
कार्त्ति. शु. १० मं.	मार्ग. ५	नवं. २०	उ.भा.	मीन	वृश्चिक	वृश्चिक	।। ।ऽशु. ।। ऽऽ ।।	ल. गोधू., (१७/५५ से २३/२८ तक शुक्र-पादवेध),
कार्त्ति. शु. ११ बु.	मार्ग. ६	नवं. २१	रेव.	मीन	वृश्चिक	वृश्चिक	।। ।। ऽशु. ऽनृ. ।। ।।	ल. गोधू., ४ (शु.दा.), ६ (चं.मं.श.दा.),
कार्त्ति. शु. १५ श.	मार्ग. ९	नवं. २४	रोहि.	वृष	वृश्चिक	धनु	।। ।। ऽसू. ऽरो. ।ऽ ।।	ल. ६ (मं.श.दा.),
मार्ग. कृ. १ र.	मार्ग. १०	नवं. २५	मृग.	वृष	वृश्चिक	धनु	ऽरा. ।। ।। ऽरो. ।। ।।	ल. ४ (शु.दा.), ६ (मं.श.दा.),
मार्ग. कृ. ८ र.	मार्ग. १७	दिसं. २	उ.फा.	सिंह/कन्या	वृश्चिक	धनु	।। ।। ।ऽचौ. ।ऽ ।।	ल. गोधू., ४, ७,
मार्ग. कृ. ९ चं.	मार्ग. १८	दिसं. ३	उ.फा.	कन्या	वृश्चिक	धनु	।। ।। ।। ।। ।ऽ	ल. गोधू.,
मार्ग. कृ. ९ चं.	मार्ग. १८	दिसं. ३	हस्त	कन्या	वृश्चिक	धनु	।। ।। ।ऽरो. ।ऽ ।ऽ	ब्र. ४ (२१/४६ तक),
मार्ग. कृ. १० मं.	मार्ग. १९	दिसं. ४	हस्त	कन्या	वृश्चिक	धनु	।। ।। ।ऽरो. ।ऽ ।।	ल. गोधू., ४ (२१/०५ तक),
मार्ग. कृ. १० मं.	मार्ग. १९	दिसं. ४	चित्रा	कन्या	वृश्चिक	धनु	।। ऽशु. ।। ऽरो. ।ऽ ।ऽ	ल. ४ (२२/१७ बाद), ७,
पौष शु. १२ श.	माघ ६	जन. १९	रोहि.	वृष	मकर	धनु	ऽरा. ।। ।। ऽनृ. ।। ।ऽ	दि.ल. १२,
माघ कृ. २ गु.	माघ ११	जन. २४	मघा	सिंह	मकर	धनु	।। ऽके. ऽसू. ऽरा. ।।। ।।	दि.ल. १, गोधू., (१६/५७ बाद सूर्यवेध एवं मृत्युबाण),
माघ कृ. ४ श.	माघ १३	जन. २६	उ.फा.	सिंह/कन्या	मकर	धनु	।। ।। ।ऽअ. ।ऽ ।।	दि.ल. १, गोधू., ७ (शु.दा.),
माघ कृ. ५ र.	माघ १४	जन. २७	उ.फा.	कन्या	मकर	धनु	।। ।। ।। ।ऽ ।।	दि.ल. १२ (१०/३२ तक) (चं.दा.),
माघ कृ. ५ र.	माघ १४	जन. २७	हस्त	कन्या	मकर	धनु	।। ।। ।ऽनृ. ।ऽ ।।	ल. गोधू., ७ (शु.दा.),
माघ कृ. ६ चं.	माघ १५	जन. २८	हस्त	कन्या	मकर	धनु	।। ।। ।ऽनृ. ।ऽ ।।	दि.ल. १२ (चं.दा.),
माघ कृ. ६ चं.	माघ १५	जन. २८	चित्रा	कन्या	मकर	धनु	ऽचं. ।। ।। ऽनृ. ।। ।।	ल. गोधू.,
माघ कृ. ७ मं.	माघ १६	जन. २९	चित्रा	तुला	मकर	धनु	ऽचं. ।। ।। ।।। ।।	दि.ल. १ (चं.दा.),
माघ कृ. ९ गु.	माघ १८	जन. ३१	अनु.	वृश्चिक	मकर	धनु	ऽबु.श. ।। ।। ऽरो. ।ऽ ।।	ल. ६ (२२/१२ बाद) (मं.श.दा.), ७ (शु. दा.),
माघ कृ. १० शु.	माघ १९	फर. १	अनु.	वृश्चिक	मकर	धनु	ऽबु.श. ।। ।। ऽरो. ।ऽ ।।	दि.ल. १२,
माघ कृ. १२ र.	माघ २१	फर. ३	मूल	धनु	मकर	धनु	।। ।। ।ऽअ. ऽऽ ।ऽ	ल. ६(मं.श.दा.), ७ (शु.दा.), (१६/१२ तक मृत्युबाण),
माघ शु. ४ र.	माघ २८	फर. १०	उ.भा.	मीन	मकर	धनु	।। ।। ।ऽरो. ।। ।।	दि.ल. १,
माघ शु. ५ चं.	माघ २९	फर. ११	रेव.	मीन	मकर	धनु	।ऽ ।। ।। ।ऽ ।।	दि.ल. १, (१३/३६ बाद मृत्युबाण),
माघ शु. १० श.	फाल्गु. ४	फर. १६	मृग.	मिथुन	कुम्भ	धनु	।ऽऽमं. ऽशु. ।ऽअ. ।ऽ ।।	दि.ल. १ (१०/२७ बाद), गोधू., ६(२०/३५ तक) (मं.श.दा.), (१०/२७ तक शुक्र-पादवेध),
माघ शु. १४ बु.	फाल्गु. ८	फर. २०	मघा	सिंह	कुम्भ	धनु	।। ऽश.के. ऽबु. ऽरा. ।।ऽ।।	ल. ६ (२१/२० बाद) (मं.श.दा.), ७, (३०/५० बाद बुध-पादवेध),

शुद्ध विवाह मुहूर्त्त (सं. २०६४ वि.)

मास–तिथि–वार	प्रविष्टा	तारीख २००८ ई.	विवाह नक्षत्र	विवाह लग्न के समय			लत्ता आदि दस दोष–रेखाएं	शुद्धलग्न, ग्रह-दान-पूजा आदि विवरण (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
				चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि		
फाल्गु. कृ. १ शु.	फाल्गु. १०	फर. २२	उ.फा.	सिंह	कुम्भ	धनु	॥ ॥ ॥ ॥ ॥	ल. ६ (मं.श.दा.), ७,
फाल्गु. कृ. २ श.	फाल्गु. ११	फर. २३	उ.फा.	कन्या	कुम्भ	धनु	॥ ॥ ॥ ॥ ॥	दि.ल. १२ (चं.दा.), (१०/५६ बाद मृत्युबाण),
फाल्गु. कृ. ३ र.	फाल्गु. १२	फर. २४	चित्रा	कन्या	कुम्भ	धनु	।ऽ ॥ ।ऽअ. ।ऽ ।ऽ	ल. ७ (२२/३५ बाद),
फाल्गु. कृ. ४ चं.	फाल्गु. १३	फर. २५	चित्रा	कन्या/तुला	कुम्भ	धनु	।ऽ ॥ ।ऽअ. ।ऽ ।ऽ	दि.ल. १२ (चं.दा.), गोधू., ६ (मं.श.दा.),
फाल्गु. कृ. ७ गु.	फाल्गु. १६	फर. २८	अनु.	वृश्चिक	कुम्भ	धनु	॥ ॥ ।ऽचौ. ऽऽ ॥	दि.ल. १२ , १, गोधू., ६ (मं.श.दा.), ७,
फाल्गु. कृ. ८ शु.	फाल्गु. १७	फर. २६	अनु.	वृश्चिक	कुम्भ	धनु	॥ ॥ ।ऽचौ. ऽऽ ॥	दि.ल. १२ (८/०६ तक),
फाल्गु. कृ. ६ श.	फाल्गु. १८	मार्च १	मूल	धनु	कुम्भ	धनु	॥ ॥ ऽमं. ऽरो. ऽऽ ॥	ल. गोधू., ६ (मं.श.दा.), ७,
फाल्गु. कृ. १० र.	फाल्गु. १६	मार्च २	मूल	धनु	कुम्भ	धनु	॥ ॥ ऽमं. ऽरो. ऽऽ ॥	दि.ल. १२, १,
फाल्गु. शु. १ श.	फाल्गु. २५	मार्च ८	उ.भा.	मीन	कुम्भ	धनु	॥ ॥ ।ऽचौ. ॥ ॥	ल. ६ (चं.मं.श.दा.), (२४/५६ से २८/२८ तक क्रान्तिसाम्य),
फाल्गु. शु. २ र.	फाल्गु. २६	मार्च ६	उ.भा.	मीन	कुम्भ	धनु	॥ ॥ ॥ ॥ ॥	दि.ल. १,
फाल्गु. शु. २ र.	फाल्गु. २६	मार्च ६	रेव.	मीन	कुम्भ	धनु	॥ ॥ ॥ ॥ ॥	ल. ६ (चं.मं.श.दा.),
फाल्गु. शु. ३ चं.	फाल्गु. २७	मार्च १०	रेव.	मीन	कुम्भ	धनु	॥ ॥ ॥ ॥ ॥	दि.ल. १,
फाल्गु. शु. ३ चं.	फाल्गु. २७	मार्च १०	अश्वि.	मेष	कुम्भ	धनु	॥ ॥ ।ऽरो. ॥ ।ऽ	ल. गोधू., ७ (चं.दा.),

आगामी वर्ष (संवत् २०६५ वि.) में समयशुद्धि :- अगले वर्ष (संवत् २०६५ वि. में) लगभग २७ अप्रैल से ६ जुलाई (सन् २००८ ई.) तक **शुक्रास्त एवम्** लगभग १२ जनवरी से ११ फरवरी, २००६ ई. तक **गुरु अस्त** रहेगा। अतः **इन** समयावधियों में मंगलकृत्य नहीं हो सकेंगे।

लत्ता आदि दस दोष–रेखाएं

शुद्धविवाहलग्न बतलाने वाले ऊपर दिए गए कोष्ठक में "लत्ता आदि दस दोष रेखाएं" शीर्षक वाला एक स्तम्भ दिया रहता है। इसमें जो दस रेखाएं दी जाती हैं, उनका स्पष्टीकरण पाठकों के लिए नीचे दिया जा रहा है - शुद्ध विवाहकाल (लग्न) जानने के लिए तिथि, नक्षत्र, योग, भद्रा, गुरु-शुक्रास्त, संक्रान्ति, अधिकमास आदि के विचार के अलावा (१) लत्ता, (२) पात, (३) युति, (४) वेध, (५) यामित्र, (६) बाण, (७) एकार्गल, (८) उपग्रह, (६) क्रान्तिसाम्य, (१०) दग्धातिथि- इन दस दोषों का विचार भी सूर्य आदि ग्रहों के नक्षत्रादि के आधार पर किया जाता है। ये दस रेखाएं क्रमशः दस दोषों के भाव (अस्तित्व) एवं अभाव को विवाहलग्न के समय दर्शाती हैं। पहली रेखा लत्तादोष का, दूसरी पात का, तीसरी युति का, इसी प्रकार शेष चौथी आदि रेखाएं भी यथाक्रम वेध आदि दोषों का विवाहलग्न के समय भाव या अभाव बतलाती हैं। सीधी (।) रेखा दोष का अभाव और टेढ़ी (ऽ) रेखा दोष का अस्तित्व प्रकट करती है। जैसे - इस वर्ष (सं. २०६४ वि. में) आषाढ़ शु. ११ गु. को मूल नक्षत्र वाले शुद्ध विवाहमुहूर्त्त में (पृष्ट २४१ पर) "लत्ता आदि दस दोष रेखाएं " इस प्रकार हैं- ऽसू. ॥ ऽबु. ॥ ॥ ॥, इस का अभिप्राय है कि इस विवाहमुहूर्त्त (लग्न) में लत्ता आदि दस दोषों में पहले (लता) और चौथे (वेध) दोष को छोड़कर शेष कोई दोष नहीं है। ध्यान रहे - इन दस दोषों में पात, युति, वेध, बाण, क्रांतिसाम्य, और दग्धातिथि दोषों को अपेक्षाकृत अधिक अमंगलकारी माना गया है। इनमें से 'भुजंग' नामक पात, मृत्यु नामक बाण और 'क्रांतिसाम्य' दोषों का कोई परिहार नहीं है। जबकि क्रूरग्रह की युति, सौम्यग्रह के वेध एवं दग्धातिथि का परिहार कई ग्रह-स्थितियों में हो जाता है। इनका परिहार हो जाने की स्थिति में विवाहमुहूर्त्त ग्राह्य माना जाता है। लेकिन इन परिहृत दोषों की टेढ़ी रेखाओं को सीधी रेखाओं में बदलने की परम्परा नहीं है। अर्थात् दोष का परिहार हो जाने पर भी उस दोष की रेखा टेढ़ी ही रखी जाती है।

विवाहादि मुहूर्त्तों की शुद्धि–अशुद्धि के बारे में उत्पन्न शंका के समाधान के लिए मुझे जवाबी पत्र दीजिए–

प्रियव्रत शर्मा . 59 / 6.(अभिजित्). P.O. पंचकूला – 134 109

सं. २०६४ वि. में भिन्न-भिन्न राशि वाले वरों और कन्याओं के विवाह-निर्णय के लिए त्रिबल-शुद्धि

(अर्थात् किस राशि वाले वर और कन्या के लिए सं. २०६४ वि. में कुल कितने विवाह मुहूर्त्त किन-किन तारीखों को शुद्ध (ग्राह्य) बनते हैं ?)

लोग अपनी सुविधा के अनुसार किसी खास महीने में या किसी खास तारीख के आस-पास ही विवाह-मुहूर्त्त (साहा) निकालने के लिए ज्योतिषियों से अनुरोध किया करते हैं। ऐसी स्थिति में ज्योतिषी को विवाह मुहूर्त्तों में जगह-जगह त्रिबल-शुद्धि जानने का झंझट करना पड़ता है। इस झंझट से ज्योतिषियों को छुटकारा दिलाने के लिए हम यहां नीचे 'त्रिबलशुद्धि कोष्ठक' दे रहे हैं। संवत् २०६४ वि. के शुद्ध विवाह-मुहूर्त इस पंचांग में पृ.२४० पर दिए गए हैं। किस-किस महीने में किस-किस तारीख वाले विवाहमुहूर्त्त में, किस-किस राशि वाले लड़के-लड़कियों के विवाह हो सकते हैं, यह त्रिबलशुद्धि के अनुसार नीचे दिए गए 'त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक' में लिख दिया गया है। अमुक राशि वाले लड़के (वर) और अमुक राशि वाली कन्या के लिए इस वर्ष कुल कितने विवाहमुहूर्त्त किन-किन तारीखों को बनते हैं- इस कोष्ठक द्वारा साधारण व्यक्ति भी एक ही नजर में यह तुरन्त जान सकता है। इस कोष्ठक से यह भी तुरन्त जाना जा सकता है, कि अमुक राशि वाली लड़कियों और लड़कों का विवाह इस वर्ष किन-किन तारीखों वाले विवाह मुहूर्त्तों में हो सकता है। वर के लिए 'सूर्य की पूजा' और कन्या के लिए 'गुरु की पूजा' वाला समय भी इस कोष्ठक में दिया गया है।

लड़का-लड़की की राशियों वाले कॉलमों/कोष्ठकों में जो-जो तारीखें समान रूप से मिलती हों, उन तारीखों वाले विवाहमुहूर्त्तों में उस लड़के-लड़की का विवाह हो सकता है। जैसे- मेषराशि वाले लड़के और मिथुनराशि वाली लड़की का विवाह सं. २०६४ वि. में जुला. (२००७ ई.) के महीने में किन-किन तारीखों वाले विवाहमुहूर्त्तों में हो सकता है-यह मालूम करना है। नीचे 'त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक' देखें,-लड़के वाले कॉलम में जन्मराशि मेष के आगे जुलाई, २००७ ई. की केवल १, २, ६, ७, ११ तारीखें हैं, जबकि लड़की वाले कॉलम में जन्मराशि मिथुन के आगे जुलाई की १, ६, ७, ११, २४, २६, २८ तारीखें हैं। **इसलिए यह समझना चाहिए कि जुलाई, २००७ ई. में मेष राशि वाले लड़के और मिथुन राशि वाली लड़की का विवाह त्रिबल शुद्धि के अनुसार जुलाई की केवल १, ६, ७, ११ तारीखों वाले विवाहमुहूर्त्तों में ही हो सकता है, क्योंकि जुलाई की केवल यही तारीखें, दोनों (लड़का-लड़की) की राशियों (मेष-मिथुन) वाले कॉलमों (कोष्ठकों) में एक-सी मिलती हैं।** इस प्रकार विवाह की तारीखों का निश्चय करके शुद्ध विवाह-मुहूर्त्तों से उस दिन विवाह के लग्न का निर्णय कर लीजिए। क्योंकि, आजकल लड़कियों का विवाह बड़ी अवस्था में होता है, अतः चतुर्थ-अष्टम-द्वादश गुरु को शास्त्रनिर्देशानुसार नेष्ट न मानकर पूज्य ही माना गया है।

ध्यान दें- लड़के की राशि से १, २, ५, ७, ९ वें स्थित सूर्य एवं कन्या की राशि से १, ३, ४, ६, ८, १०, १२ वें स्थित गुरु यदि स्वराशि, मित्रराशि या स्वोच्चराशि में हो तो उन्हें शास्त्र-निर्देशानुसार यहां पूज्य न मानकर **शुभ ही माना गया है।** इस वर्ष (सं. २०६४ वि. में) गुरु वृश्चिक (मित्रराशि) एवम् धनु (स्वराशि) में संचार करेगा; अतः इस कालावधि में शास्त्रानुसार यह सभी राशि वाली कन्याओं के लिए पूज्य न होकर शुभ ही माना जाएगा।

त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक (सं. २०६४ वि.) (२० मार्च, सन् २००७ ई. से ६ अप्रैल, सन् २००८ ई. तक)
(कोष्ठकों में दिया गया काल भा. स्टैं. टा. है)

नाम/जन्म-राशि	लड़का	सौर मास, जिनमें लड़के के लिए सूर्य पूज्य है।	लड़की	इस वर्ष जिस राशि में स्थित गुरु लड़की के लिए पूज्य है।
मेष	अप्रै. १९, २०, २१, २६, २८, २९, ३०; मई ५, ६, ८, ९; जून १९, २२, २३, २४; जुला. १, २, ६, ७, ११; अग. २७, ३०; सितं. ३, ४, ५, १२, १३, १४, २०, २३, २४; अक्तू. १९, २३, २४, २५, २८, २९; नवं. ३, १३; जन. १९, २४, २६, २७, २८, २९; फर. ३, १०, ११, १६, २०, २२, २३, २४, २५; मार्च १, २, ८, ९, १०;	ज्येष्ठ , कार्तिक ,	अप्रै. १९, २०, २१, २६, २८, २९, ३०; मई ५, ६, ८, ९; जून १९, २२, २३, २४; जुला. १, २, ६, ७, ११, १९, २०, २१, २६, २८, २९; अग. २७, ३०; सितं. ३, ४, ५, १२, १३, १४, २०, २३, २४; अक्तू. १९, २३, २४, २५, २८, २९; नवं. ३, १३, २०, २१, २४, २५; दिसं. २, ३, ४; जन. १९, २४, २६, २७, २८, २९; फर. ३, १०, ११, १६, २०, २२, २३, २४, २५; मार्च १, २, ८, ९, १०;	– –
वृष	जून २२, २३, २४, २७; जुला. १ (२३/५६ बाद), २, ६, ७, ११, १९, २०, २१, २४, २९; सितं. १८, २३, २४; अक्तू. १४, १५, १९, २३, २४, २५, २८, २९; नवं. ११, २०, २१, २४, २५; दिसं. २(२३/३३ बाद), ३, ४; जन. १९, २६(१६/३५ बाद), २७, २८, २९, ३१; फर. १, १०, ११, १६, २३, २४, २५, २८, २९; मार्च ८, ९, १०;	ज्येष्ठ , आषाढ़ , आश्विन , माघ ,	अप्रै. १९, २०, २१, २८, २९, ३०; मई ८, ९; जून २२, २३, २४, २७; जुला. १, (२३/५६ बाद), २, ६, ७, ११, १९, २०, २१, २४, २९; अग. २७, ३०; सितं. ३, ४, ५, १२, १३, १४, १८, २३, २४; अक्तू. १४, १५, १९, २३, २४, २५, २८, २९; नवं. ११, २०, २१, २४, २५; दिसं. २(२३/३३ बाद); ३, ४; जन. १९, २६ (१६/३५ बाद), २७, २८, २९, ३१; फर. १, १०, ११, १६, २३, २४, २५, २८, २९; मार्च ८, ९, १०;	– –
मिथुन	अप्रै.१९, २०, २१, २६; मई ५, ६; जून १९, २४, २७; जुला. १ (२३/५६ तक), ६, ७, ११, २४, २६, २८; अग. ३०; सितं. ३, ४, ५, १४ (१६/५६ बाद); अक्तू. २३, २४, २५, २८, २९; नवं. ३, ११, १३, २०, २१, २४, २५; दिसं. २ (२३/३३ तक); फर. १६,२०, २२, २५ (११/४० बाद), २८, २९; मार्च १, २, ८, ९, १०;	आषाढ़ , कार्तिक, फाल्गुन ,	अप्रै.१९, २०, २१, २६; मई ५, ६; जून १९, २४, २७; जुला. १ (२३/५६ तक), ६, ७, ११, २४, २६, २८; अग. ३०; सितं. ३, ४, ५, १४ (१६/५६ बाद), १८, २०, २४ (८/०७ बाद); अक्तू. १४, १५, २३, २४, २५, २८, २९; नवं. ३, ११, १३, २०, २१, २४, २५; दिसं. २ (२३/३३ तक); जन. १९, २४, २६ (१६/३५ तक), २९, ३१; फर. १, ३, १०, ११, १६,२०, २२, २५(११/४० बाद), २८, २९; मार्च १, २, ८, ९, १०;	– –
कर्क	अप्रै. १९, २०, २१, २६, २८, २९, ३०; मई ५, ६, ८, ९ ; जून १९, २०, २१, २४, २६, २८, २९, ; अग. २७, ३०; सितं. ३, ४, ५, १२, १३. १४(१६/५६ तक), १८, २०, २३, २४(८/०७ तक); अक्तू. १४, १५; नवं.२०, २१, २४, २५; दिसं. २, ३, ४; जन. १९, २४, २६, २७, २८, ३१; फर. १, ३, १०,११,	माघ,	अप्रै.१९, २०, २१, २६, २८, २९, ३०; मई ५, ६, ८, ९; जून १९, २२, २३, २७; जुला. १, २, ६, ७, ११, १९, २०, २१, २४, २६, २८, २९; अग. २७, ३०; सितं. ३, ४, ५, १२, १३, १४ (१६/५६ तक), १८, २०, २३, २४ (८/०७ तक); अक्तू. १४, १५, १९, २३, २४, २५, २८, २९; नवं. ३, ११, १३, २०, २१, २४, २५; दिसं. २, ३, ४; जन. १९, २४, २६ २७, २८, ३१; फर. १, ३, १०, ११, १६, २०, २२, २३, २४, २५(११/४० तक), २८, २९; मार्च १, २, ८, ९, १०;	– –

त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक ([illegible]) ([illegible] मार्च, सन् २००७ ई. से [illegible] अप्रैल, सन् २००८ ई. तक)

(कोष्ठकों में दिया गया काल भा. स्टैं. टा. है)

नाम/जन्म-राशि	लड़का	सौर मास, जिनमें लड़के के लिए सूर्य पूज्य है।	लड़की	इस वर्ष जिस राशि में स्थित गुरु लड़की के लिए पूज्य है।
सिंह	अप्रै.१९, २०, २१, २६, २८, २९, ३०; मई ५, ६, ८, ९; जून १९, २२, २३, २४; जुला. १, २, ११; अग. २७; सितं. ३, ४, ५, १२, १३, १४, २०, २३, २४; अक्तू. १९, २५, २८, २९; नवं. ३, १३; जन. १९, २४, २६ २७, २८, २९; फर. ३, १६, २०, २२, २३, २४, २५; मार्च १, २, १० (११/४६ बाद);	आश्विन, फाल्गुन,	अप्रै.१९, २०, २१, २६, २८, २९, ३०; मई ५, ६, ८, ९; जून १९, २२, २३, २४; जुला. १, २, ११, १९, २०, २१, २६, २८, २९; अग. २७; सितं. ३, ४, ५, १२, १३, १४, २०, २३, २४; अक्तू. १९, २५, २८, २९; नवं. ३, १३, २४, २५; दिसं. २, ३, ४; जन. १९, २४, २६, २७, २८, २९; फर. ३, १६, २०, २२, २३, २४, २५; मार्च १, २, १० (११/४६ बाद);	– –
कन्या	जून १९, २२, २३, २४, २७; जुला. १ (२३/५६ बाद), २, ६, ७, ११, १९, २०, २१, २४, २९; सितं. १८, २३, २४; अक्तू. १४, १५, १९, २३, २४, २८, २९; नवं. ३, ११, २०, २१, २४, २५; दिसं. २, ३, ४; जन. १९, २४, २६, २७, २८, २९, ३१; फर. १, १०, ११, १६, २०, २२, २३, २४, २५, २८, २९; मार्च ८, ९, १० (११/४६ तक);	ज्येष्ठ, आश्विन कार्त्तिक, माघ,	अप्रै.१९, २०, २१, २६, २८, २९, ३०; मई ८, ९; जून १९, २२, २३, २४, २७; जुला. १ (२३/५६ बाद), २, ६, ७, ११, १९, २०, २१, २४, २९; अग. २७, ३०; सितं. ३, ४, ५, १२, १३, १४, १८, २३, २४; अक्तू. १४, १५, १९, २३, २४, २८, २९; नवं. ३, ११, २०, २१, २४, २५; दिसं. २, ३, ४; जन. १९, २४, २६ २७, २८, २९, ३१; फर. १, १०, ११, १६, २०, २२, २३, २४, २५, २८, २९; मार्च ८, ९, १०(११/४६ तक);	– –
तुला	अप्रै.२१ (१३/०० बाद), २६, २८, २९, ३०; मई ५, ६; जून १९, .२२, २३, २४, २७; जुला. १(२३/५६ तक), ६, ७, १९, २०, २१, २४, २६, २८,; अग. ३०; सितं. ५, १२, १३, १४; अक्तू. २३, २४, २५, २९ (२०/१९ बाद); नवं. ३, ११, १३, २०, २१; दिसं. २, ३, ४; फर. १६, २०, २२, २३, २४, २५, २८, २९; मार्च १, २, ८, ९, १०;	आषाढ़ , कार्त्तिक, फाल्गुन,	अप्रै.२१ (१३/०० बाद), २६, २८, २९, ३०; मई ५, ६; जून १९, २२, २३, २४, २७; जुला. १ (२३/५६ तक), ६, ७, १९, २०, २१, २४, २६, २८; अग. ३०; सितं. ५, १२, १३, १४, १८, २०, २४(८/०७ बाद); अक्तू. १४, १५, २३, २४, २५, २९ (२०/१९ बाद); नवं. ३, ११, १३, २०, २१; दिसं. २, ३, ४; जन. २४, २६ २७, २८, २९, ३१; फर. १, ३, १०, ११, १६, २०, २२, २३, २४, २५, २८, २९; मार्च १, २, ८, ९, १०;	– –
वृश्चिक	अप्रै.१९, २०, २१ (१३/०० तक), २६, २८, २९, ३०; मई ५, ६, ८, ९; जुला. १९, २०, २१, २४, २६, २८, २९; अग. २७, ३०; सितं. ३, ४, १२, १३, १४, १८, २०, २३, २४ (८/०७ तक); अक्तू. १४, १५; नवं. २०, २१, २४, २५; दिसं. २, ३, ४; जन. १९, २४, २६ २७, २८, २९, ३१; फर. १, ३, १०, ११;	ज्येष्ठ,	अप्रै.१९, २०, २१ (१३/०० तक), २६, २८, २९, ३०; मई ५, ६, ८, ९; जून १९, २२, २३, २४, २७; जुला. १, २, ६, ७, ११, १९, २०, २१, २४, २६, २८, २९; अग. २७, ३०; सितं. ३, ४, १२, १३, १४, १८, २०, २३, २४ (८/०७ तक); अक्तू. १४, १५, १९, २३, २४, २५, २८, २९(२०/१९ तक); नवं. ३, ११, १३, २०, २१, २४, २५; दिसं. २, ३, ४; जन. १९, २४, २६ २७, २८, २९, ३१; फर. १, ३, १०, ११, २०, २२, २३, २४, २५, २८, २९; मार्च १, २, ८, ९, १०;	– –
धनु	अप्रै.१९, २०, २१, २६, २८, २९, ३०; मई ५, ६, ८, ९; जून १९, २२, २३, २४, २७; जुला. १, २, ११; अग. २७; सितं. ३, ४, ५, १२, १३, १४, १८, २०, २३, २४ ; अक्तू. १४, १५, १९, २५, २८, २९; नवं. ३, ११, १३; जन. १९, २४, २६ २७, २८, २९, ३१; फर. १, ३, १६, २०, २२, २३, २४, २५, २८, २९; मार्च १, २, १० (११/४६ बाद);	आषाढ़ , माघ,	अप्रै.१९, २०, २१ , २६, २८, २९, ३०; मई ५, ६, ८, ९; जून १९, २२, २३, २४, २७; जुला. १, २, ११, १९, २०, २१, २४, २६, २८, २९; अग. २७; सितं. ३, ४, ५, १२, १३, १४, १८, २०, २३, २४; अक्तू. १४, १५, १९, २५, २८, २९; नवं. ३, ११, १३, २४, २५; दिसं. २, ३, ४; जन. १९, २४, २६ २७, २८, २९, ३१; फर. १, ३, १६, २०, २२, २३, २४, २५, २८, २९; मार्च १, २, १ ० (११/४६ बाद);	– –
मकर	जून २२, २३, २४, २७; जुला. १, २, ६, ७, ११, १९, २०, २१, २४, २६, २८, २९;; सितं. १८, २०, २३, २४; अक्तू. १४, १५, १९, २३, २४, २५, २८, २९; नवं. ११, १३, २०, २१, २४, २५; दिसं. २(२३/३३ बाद), ३, ४; जन. १९, २६(१६/३५ बाद) २७, २८, २९, ३१; फर. १, ३, १०, ११, १६, २३, २४, २५, २८, २९; मार्च १, २, ८, ९, १०(११/४६ तक);	ज्येष्ठ , आश्विन, माघ ,फाल्गुन,	अप्रै.१९, २०, २१, २८, २९, ३०; मई ५, ६, ८, ९; जून २२, २३, २४, २७; जुला. १, २, ६, ७, ११, १९, २०, २१, २४, २६, २८, २९; अग. २७, ३०; सितं. ३, ४, ५, १२, १३, १४, १८, २०, २३, २४; अक्तू. १४, १५, १९, २३, २४, २८, २९; नवं. ११, १३, २०, २१, २४, २५; दिसं. २ (२३/३३ बाद) , ३, ४; जन. १९, २६(१६/३५ बाद), २७, २८, २९, ३१; फर. १, ३, १०, ११, १६, २३, २४, २५, २८, २९; मार्च १, २, ८, ९, १० (११/४६ तक);	– –
कुम्भ	अप्रै.२१ (१३/०० बाद), २६; मई ५, ६, ८, ९; जून १९, २४, २७; जुला. १, २, ६, ७, २४, २६, २८, २९; अग. २७, ३०; सितं. ५, १४ (१६/५६ बाद); अक्तू. १९, २३, २४, २५, २९ (२०/१९ बाद); नवं. ३, ११, १३, २०, २१; दिसं. २ (२३/३३ तक) ; फर. १६, २०, २२, २५(११/४० बाद), २८, २९; मार्च १, २, ८, ९, १०;	आषाढ़ , कार्त्तिक, फाल्गुन,	अप्रै.२१ (१३/०० बाद), २६; मई ५, ६, ८, ९; जून १९, २४, २७; जुला. १, २, ६, ७, २४, २६, २८, २९; अग. २७, ३०; सितं. ५, १४ (१६/५६ बाद), १८, २०, २३, २४; अक्तू. १४, १५, १९, २३, २४, २५, २९ (२०/१९ बाद); नवं. ३, ११, १३, २०, २१; दिसं. २(२३/३३ तक); जन. २४, २६(१६/३५ तक), २९, ३१; फर. १, ३, १०, ११, १६, २०, २२, २५(११/४० बाद), २८, २९; मार्च १, २, ८, ९, १०;	– –
मीन	अप्रै.१९, २०, २१ (१३/०० तक), २६, २८, २९, ३०; मई ५, ६, ८, ९; जुला. १९, २०, २१, २४, २६, २८, २९; अग. २७, ३०; सितं. ३, ४, १२, १३, १४ (१६/५६ तक), १८, २०, २३, २४ ; अक्तू. १४, १५; नवं. २०, २१, २४, २५; दिसं. २, ३, ४; जन. १९, २४, २६ २७, २८, ३१; फर. १, ३, १०, ११ ;	आश्विन,	अप्रै.१९, २०, २१ (१३/०० तक), २६, २८, २९, ३०; मई ५, ६, ८, ९; जून १९, २२, २३, २७; जुला. १, २, ६, ७, ११, १९, २०, २१, २४, २६, २८, २९; अग. २७, ३०; सितं. ३, ४, १२, १३, १४ (१६/५६ तक), १८, २०, २३, २४; अक्तू. १४, १५, १९, २३, २४, २५, २८, २९ (२०/१९ तक); नवं. ३, ११, १३, २०, २१, २४, २५; दिसं. २, ३, ४; जन. १९, २४, २६ २७, २८, ३१; फर. १, ३, १०, ११, २०, २२, २३, २४, २५(११/४० तक), २८, २९; मार्च १, २, ८, ९, १०;	– –

अशुद्ध विवाह मुहूर्त्त (सं. २०६४ वि.)

प्रतिवर्ष हमें ज्योतिषियों एवं अन्य लोगों के ऐसे अनेकों पत्र उपलब्ध होते हैं, जिनमें वे ऐसे अनेक विवाहमुहूर्त्तों के बारे में हमसे स्पष्टीकरण चाहते हैं, जिन्हें हमने अपने पंचांग में तो अशुद्ध विवाहमुहूर्त्तों की कोटि में रखा होता है, लेकिन किसी अन्य पंचांग में उन्हें शुद्ध विवाह मुहूर्त्त मानकर, उनमें विवाहलग्न लगाए होते हैं। इस समस्या को दृष्टि में रखकर अशुद्ध विवाहमुहूर्त्तों का स्पष्टीकरण हम इस स्तम्भ में दिया करते हैं। यह स्तम्भ ज्योतिषियों को शुद्ध और अशुद्ध विवाहमुहूर्त्त सम्बन्धी दुविधा से मुक्त कराने में काफी हद तक समर्थ सिद्ध हुआ है और इससे ज्योतिषी लोग स्वयं यह भलीभांति जान सकते हैं कि– अमुक दिन या अमुक समय में विवाह करना शास्त्रविरुद्ध क्यों है। यहां साथ–साथ उन दोषों का निर्देश भी किया गया है, जिनके कारण विवाहनक्षत्र होते हुए भी, वहां विवाह नहीं किया जा सकता। जहां भद्रा, व्यतीपात, क्रूरग्रहवेध आदि दोषों से रहित होने से विवाहनक्षत्र का काल शुद्ध होने पर भी षष्ठाष्टमस्थ शुक्र, चन्द्र, भौम और लग्नेश आदि के कारण शुद्ध लग्न नहीं बन सका, वहां लग्नाभाव दोष लिखा गया है। *ध्यान रहे–* यहां जिन युति, वेध आदि दोषों का निर्देश किया गया है, वे सभी ऐसे हैं, जिनका कोई परिहार नहीं है। नीचे सं. २०६४ वि. के अशुद्ध विवाहमुहूर्त्त दिए जा रहे हैं– प्रियव्रत शर्मा ।

तिथि-वार		तारीख २००७ ई.	विवाह नक्षत्र	दोष
वैशाख कृ. ११ श. (१४ अप्रै., २००७ ई.) तक सूर्य मीनस्थ है।				
वैशा. शु. ९	बु.	अप्रै. २५	मघा	लग्नाभाव,
वैशा. शु. १३	चं.	अप्रै. ३०	चित्रा	भौमवेध,
वैशा. शु. १४	मं.	मई १	चित्रा	भौमवेध,
वैशा. शु. १४	मं.	मई १	स्वा.	राहुवेध,
वैशा. शु. १५	बु.	मई २	स्वा.	राहुवेध,
प्र.ज्ये.कृ. १	गु.	मई ३	अनु.	सूर्यवेध,
प्र.ज्ये.कृ. २	शु.	मई ४	अनु.	सूर्यवेध,
प्र.ज्ये.कृ. ७	बु.	मई ९	उ.षा.	नक्षत्रान्त, भद्रा,
प्र.ज्ये.कृ. ८	गु.	मई १०	श्रव.	नक्षत्रान्त,
प्र.ज्ये.कृ. ८	गु.	मई १०	धनि.	शनिवेध,
प्र.ज्ये.कृ. ९	शु.	मई ११	धनि.	नक्षत्रान्त, शनिवेध,
प्र.ज्ये.कृ. १०	श.	मई १२	उ.भा.	ग्रहणनक्षत्र, मंगलयुति, अपरिहार्य,
प्र.ज्ये.कृ. ११	र.	मई १३	उ.भा.	ग्रहणनक्षत्र, मंगलयुति, अपरिहार्य,
प्र.ज्ये.कृ. ११	र.	मई १३	रेव.	मृत्युबाण,
प्र.ज्ये.कृ. १२	चं.	मई १४	रेव.	मासान्त,
ज्येष्ठ अधिक मासः- १७ मई से १५ जून, सन् २००७ ई. तक				
द्वि.ज्ये.शु. ६	बु.	जून २०	मघा	लग्नाभाव,
द्वि.ज्ये.शु. ७	गु.	जून २१	उ. फा.	लग्नाभाव,
द्वि.ज्ये.शु. ७	शु.	जून २२	उ. फा.	व्यतीपात, भद्रा, नक्षत्रान्त,
द्वि.ज्ये.शु. ८	श.	जून २३	चित्रा	परिघार्ध,
द्वि.ज्ये.शु. १०	चं.	जून २५	चित्रा	लग्नाभाव,
द्वि.ज्ये.शु. १०	चं.	जून २५	स्वा.	राहुवेध,
द्वि.ज्ये.शु. ११	मं.	जून २६	स्वा.	भद्रा, राहुवेध,
द्वि.ज्ये.शु. १३	गु.	जून २८	अनु.	लग्नाभाव,
द्वि.ज्ये.शु. १४	शु.	जून २९	मूल	लग्नाभाव,
द्वि.ज्ये.शु. १५	श.	जून ३०	मूल	लग्नाभाव,
आषा. कृ. २	चं.	जुला. २	उ.षा.	वैधृति,
आषा. कृ. ३	मं.	जुला. ३	श्रव.	लग्नाभाव,
आषा. कृ. ३	मं.	जुला. ३	धनि.	शनिवेध,
आषा. कृ. ४	बु.	जुला. ४	धनि.	शनिवेध,
आषा. कृ. ७	श.	जुला. ७	उ. भा.	लग्नाभाव,
आषा. कृ. ८	र.	जुला. ८	रेव.	लग्नाभाव,
आषा. कृ. ८	र.	जुला. ८	अश्वि.	केतुवेध,
आषा. कृ. ९	चं.	जुला. ९	अश्वि.	केतुवेध,
आषा. शु. २	चं.	जुला. १६	मघा	संक्रान्ति,
आषा. शु. ३	मं.	जुला. १७	मघा	लग्नाभाव,
आषा. शु. ६	शु.	जुला. २०	उ. फा.	लग्नाभाव,
आषा. शु. ७	श.	जुला. २१	हस्त	लग्नाभाव,
आषा. शु. ८	र.	जुला. २२	चित्रा	लग्नाभाव,
आषा. शु. ८	र.	जुला. २२	स्वा.	राहुवेध,
आषा. शु. ९	चं.	जुला. २३	स्वा.	राहुवेध,
आषा. शु. ११	बु.	जुला. २५	अनु.	लग्नाभाव,
आषा. शु. १२	शु.	जुला. २७	मूल	लग्नाभाव,
आषा. शु. १४	र.	जुला. २९	श्रव.	शनिवेध,
आषा. शु. १५	चं.	जुला. ३०	श्रव.	शनिवेध,
आषा. शु. १५	चं.	जुला. ३०	धनि.	लग्नाभाव,
त्रयोदश दिनात्मक श्रावण कृष्ण. पक्षः- ३१ जुला. से १२ अग., २००७ ई. तक। शुक्रास्तः- श्रा. कृ. ९, मं. से श्राव. शु. ९, बु. (७ से २२ अग., सन् २००७ ई.) तक शुक्र अस्त रहेगा।				
श्राव. शु. १३	र.	अग. २६	उ. षा.	शुक्रबाल्य, नक्षत्रान्त,
श्राव. शु. १३	र.	अग. २६	श्रव.	सूर्यवेध, शनिवेध, केतुवेध,
श्राव. शु. १४	चं.	अग. २७	श्रव.	[illegible], शनिवेध, केतुवेध,
श्राव. शु. १५	मं.	अग. २८	धनि.	मृत्युबाण,
भाद्र. कृ. १	बु.	अग. २९	उ. भा.	लग्नाभाव,
भाद्र. कृ. २	गु.	अग. ३०	रेव.	भद्रा, भुजंगपात,
भाद्र. कृ. ३	शु.	अग. ३१	रेव.	भुजंगपात,
भाद्र. कृ. ३	शु.	अग. ३१	अश्वि.	सूर्यवेध,

अशुद्ध विवाह मुहूर्त्त (सं. २०६४ वि.)

तिथि-वार		तारीख २००७ ई.	विवाह नक्षत्र	दोष
भाद्र. कृ. ५	श.	सितं. १	अश्वि.	सूर्यवेध,
भाद्र. शु. १	बु.	सितं. १२	हस्त	लग्नाभाव,(२४/०२ से २८/२० तक क्रान्तिसाम्य)
भाद्र. शु. ४	श.	सितं. १५	चित्रा	नक्षत्रान्त,
भाद्र. शु. ४	श.	सितं. १५	स्वा.	राहुवेध,
भाद्र. शु. ५	र.	सितं. १६	स्वा.	मासान्त, राहुवेध,
भाद्र. शु. ६	चं.	सितं. १७	अनु.	संक्रान्ति,
भाद्र. शु. ७	बु.	सितं. १९	मूल	लग्नाभाव,
भाद्र. शु. ९	शु.	सितं. २१	उ.षा.	भौमवेध,
भाद्र. शु. १०	श.	सितं. २२	उ.षा.	भौमवेध,
भाद्र. शु. १०	श.	सितं. २२	श्रव.	केतुवेध
भाद्र. शु. ११	र.	सितं. २३	श्रव.	केतुवेध,
श्राद्ध (महालय) पक्षः- २७ सितं. से ११ अक्तू., २००७ ई. तक				
आश्वि. शु. १	शु.	अक्तू. १२	चित्रा	वैधृति, क्षीणचन्द्र,
आश्वि. शु. १	शु.	अक्तू. १२	स्वा.	राहुवेध,
आश्वि. शु. २	श.	अक्तू. १३	स्वा.	राहुवेध,
आश्वि. शु. ५	मं.	अक्तू. १६	मूल	मासान्त,
आश्वि. शु. ६	बु.	अक्तू. १७	मूल	संक्रान्ति,
आश्वि. शु. ७	गु.	अक्तू. १८	उ.षा.	भद्रा,
आश्वि. शु. ८	शु.	अक्तू. १९	श्रव.	शनि- केतुवेध,
आश्वि. शु. ९	श.	अक्तू. २०	श्रव.	शनि- केतुवेध,
आश्वि. शु. ९	श.	अक्तू. २०	धनि.	भुजंगपात,
आश्वि. शु.१०	र.	अक्तू. २१	धनि.	भुजंगपात,
आश्वि. शु.१२	मं.	अक्तू. २३	उ.भा.	लग्नाभाव,
आश्वि. शु.१४	गु.	अक्तू. २५	रेव.	लग्नाभाव,

तिथि-वार		तारीख २००७ ई.	विवाह नक्षत्र	दोष
आश्वि. शु. १५	शु.	अक्तू. २६	अश्वि.	लग्नाभाव, (७/३६ तक शुक्रपादवेध)
कार्ति. कृ. ४	चं.	अक्तू. २९	रोहि.	परिघार्ध,
कार्ति. कृ. ५	मं.	अक्तू. ३०	मृग.	नक्षत्रान्त,
कार्ति. कृ. १०	र.	नवं. ४	मघा	भद्रा,
कार्ति. कृ. ११	चं.	नवं. ५	उ.फा.	लग्नाभाव,
कार्ति. कृ. १२	मं.	नवं. ६	उ.फा.	वैधृति,
कार्ति. कृ. १२	मं.	नवं. ६	हस्त	मृत्युबाण,
कार्ति. शु. २	चं.	नवं. १२	मूल	मूलाद्यषटीद्वयदोष,
कार्ति. शु. ४	बु.	नवं. १४	मूल	भद्रा,
कार्ति. शु. ५	गु.	नवं. १५	उ.षा.	मासान्त,
कार्ति. शु. ६	शु.	नवं. १६	उ.षा.	संक्रान्ति,
कार्ति. शु. ६	शु.	नवं. १६	श्रव.	संक्रान्ति, केतुवेध,
कार्ति. शु. ७	श.	नवं. १७	श्रव.	केतुवेध,
कार्ति. शु. ७	श.	नवं. १७	धनि.	लग्नाभाव, २२/४० बाद मृत्युबाण,
कार्ति. शु. ८	र.	नवं. १८	धनि.	मृत्युबाण,
कार्ति. शु. ११	बु.	नवं. २१	उ.भा.	भद्रा,
कार्ति. शु. १२	गु.	नवं. २२	रेव.	व्यतीपात,
कार्ति. शु. १२	गु.	नवं. २२	अश्वि.	शनिवेध,
मार्ग. कृ. १	र.	नवं. २५	रोहि.	लग्नाभाव,
मार्ग. कृ. २	चं.	नवं. २६	मृग.	लग्नाभाव
मार्ग. कृ. ७	शु.	नवं. ३०	मघा	लग्नाभाव,
मार्ग. कृ. ८	श.	दिसं. १	मघा	वैधृति,
मार्ग. कृ. ११	बु.	दिसं. ५	चित्रा	लग्नाभाव, (१७/४५ बाद मृत्युबाण),
मार्ग. कृ. ११	बु.	दिसं. ५	स्वा.	राहुवेध,

तिथि-वार		तारीख	विवाह नक्षत्र	दोष
मार्ग. कृ. १२	गु.	दिसं. ६	स्वा.	राहुवेध,
गुरु अस्तः- मार्ग. शु. १, चं. से पौष कृ. १० गु. (१० दिसं., २००७ से ३ जन., २००८ ई.) तक गुरु अस्त रहेगा। धनुःस्थ सूर्यः- मार्ग. शु. ७, र. से पौष शु., ५ र. (१६ दिसं. २००७ से १३ जन. २००८ ई.) तक।				
पौष शु. ७	मं.	जन. १५	रेव.	लग्नाभाव,
पौष शु. ७	मं.	जन. १५	अश्वि.	शनिवेध,
पौष शु. ८	बु.	जन. १६	अश्वि.	शनिवेध, मृत्युबाण,
पौष शु. १०	शु.	जन. १८	रोहि.	लग्नाभाव,
पौष शु. १२	श.	जन. १९	मृग.	सूर्यवेध,
पौष शु. १३	र.	जन. २०	मृग.	सूर्यवेध,
माघ कृ. ३	शु.	जन. २५	मघा	भद्रा, सूर्यवेध,
माघ कृ. ७	मं.	जन. २९	स्वा.	भुजंगपात,
माघ कृ. ८	बु.	जन. ३०	स्वा.	भुजंगपात,
माघ कृ. ११	श.	फर. २	मूल	मृत्युबाण,
माघ कृ. १२	चं.	फर. ३	उ.षा.	क्षीणचन्द्र,
माघ शु. २	श.	फर. ९	उ.भा.	कालाल्पता,
माघ शु. ४	र.	फर. १०	रेव.	लग्नाभाव,
माघ शु. ५	चं.	फर. ११	अश्वि.	मृत्युबाण,
माघ शु. ६	मं.	फर. १२	अश्वि.	मासान्त,
माघ शु. ८	गु.	फर. १४	रोहि.	मृत्युबाण,
माघ शु. ९	शु.	फर. १५	रोहि.	मृत्युबाण,
माघ शु. ९	शु.	फर. १५	मृग.	वैधृति,
माघ शु. १५	गु.	फर. २१	मघा	१२/५३ तक बुध पादवेध, १२/५३ से १८/५५ तक शुक्रपादवेध,

अशुद्ध विवाह मुहूर्त्त (सं. २०६४ वि.)

तिथि-वार	तारीख २००८ ई.	विवाह नक्षत्र	दोष	तिथि-वार	तारीख २००८ ई.	विवाह नक्षत्र	दोष
फाल्गु. कृ. २ श.	फर. २३	हस्त	भुजंगपात, मृत्युबाण,	फाल्गु. कृ. १२ मं.	मार्च ४	उ.षा.	भौमवेध, मृत्युबाण,
फाल्गु. कृ. ३ र.	फर. २४	हस्त	भुजंगपात, मृत्युबाण,	फाल्गु. कृ. १२ मं.	मार्च ४	श्रव.	परिघार्ध, क्षीणचन्द्र, शनि-केतुवेध,
फाल्गु. कृ. ४ चं.	फर. २५	स्वा.	सूर्यवेध,	फाल्गु. शु. ४ मं.	मार्च ११	अश्वि.	भद्रा,
फाल्गु. कृ. ५ मं.	फर. २६	स्वा.	सूर्यवेध,	फाल्गु. शु. ५ बु.	मार्च १२	रोहि.	मृत्युबाण,
फाल्गु. कृ. ६ बु.	फर. २७	अनु.	लग्नाभाव,	फाल्गु. शु. ६ गु.	मार्च १३	रोहि.	मासान्त, मृत्युबाण,
फाल्गु. कृ. ११ चं.	मार्च ३	उ.षा.	भौमवेध, मृत्युबाण,				

मीनस्थ सूर्यः- फाल्गु. शु. ८, शु. (१४ मार्च, २००८ ई.) से वर्षान्त तक।

विवाहमुहूर्त्तों के शोधन में वेध–युति आदि दोषों के शास्त्रीय–परिहार

इस पंचांग में दिए जाने वाले विवाहमुहूर्त्तों में जहां वेध, युति, कर्त्तरी, दग्धातिथि, षष्ठाष्टमस्थ-चन्द्र, भौम, शुक्र के दोषों के परिहार मिल जाते हैं, वहां उन मुहूर्त्तों को शास्त्रानुसार शुद्ध मान लिया जाता है और विवाह लग्न लगा दिए जाते हैं। इन दोषों के परिहार निम्नांकित स्थितियों में माने गए हैं:- ***वेध परिहार-*** सप्तशलाका एवं पंचशलाका वेध में क्रूरग्रह द्वारा विद्ध नक्षत्र के तो चारों चरण दूषित माने जाते हैं, वेध का वहां परिहार नहीं है। सौम्य ग्रह द्वारा वेध होने पर पादवेधपद्धति से केवल विद्ध चरण को ही दूषित माना जाता है। वहां शेष तीनों चरण वेधदोष से मुक्त रहते हैं। पादवेधपद्धति में वेधक सौम्यग्रह नक्षत्र के पहिले चरण में हो तो वह वेध्य नक्षत्र के चौथे चरण को, चतुर्थ चरण में स्थित वेधक सौम्य ग्रह वेध्य नक्षत्र के पहिले चरण को, द्वितीय चरणस्थ वेधक ग्रह वेध्य नक्षत्र के तृतीय चरण को एवं तृतीय चरणस्थ वेधक ग्रह वेध्य नक्षत्र के द्वितीय चरण को विद्ध करता है। ***युति दोष का परिहार-*** नक्षत्र के साथ सौम्यग्रह की युति का दोष सामान्य माना जाता है, लेकिन क्रूरग्रह की युति बहुत ही अशुभ फलप्रद मानी जाती है। यदि चन्द्रमा अपनी उच्च राशि (वृष) या मित्र राशि (सिंह, मिथुन, कन्या) में हो तो क्रूरग्रह की युति का दोष भी समाप्त हो जाता है। ***कर्त्तरीदोष का परिहार-*** मुहूर्त्त के लग्न से सप्तम रहित केन्द्र या त्रिकोण में गुरु, शुक्र या बुध स्थित हो तो कर्त्तरीदोष का परिहार हो जाता है। कर्त्तरी बनाने वाले ग्रह यदि शत्रुराशि या अपनी नीचराशि में हों या दोनों अस्त हों, तो भी लग्न का कर्त्तरीदोष नहीं रहता। यदि मुहूर्त्तलग्न से द्वितीय भाव में कोई शुभ ग्रह बैठा हो अथवा बारहवें भाव में गुरु बैठा हो तो भी कर्त्तरीदोष निष्प्रभाव हो जाता है और ऐसा कर्त्तरीदोष विवाहमुहूर्त्त को अग्राह्य नहीं बना सकता। चन्द्र कर्त्तरीदोष का परिहार भी चन्द्रमा के स्थान को लग्न समझकर, इन्हीं योगों से देखना चाहिए। ***दग्धातिथि का परिहार-*** मुहूर्त्त के लग्न से सप्तमरहित केन्द्र या त्रिकोण में गुरु, शुक्र या बुध बैठा हो, तो दग्धातिथि का परिहार हो जाता है, इस परिहार की स्थिति में दग्धातिथि में विवाहलग्न शुद्ध माना जाता है। ***षष्ठाष्टमस्थ चन्द्र का परिहार-*** नीच राशि (वृश्चिक) में चन्द्रमा हो तो वह लग्न से छठे या आठवें भाव में होने पर भी दोषकारक नहीं होता। यदि चन्द्रमा लग्नेश होकर षष्ठाष्टमस्थ हो, तब तो उसका कोई परिहार शास्त्रों में नहीं मिलता। ***अष्टमस्थ मंगल का परिहार-*** मंगल अस्त (अदृश्य) हो या वह नीचराशि (कर्क) अथवा शत्रु राशि (मिथुन या कन्या) में हो, तो लग्न से अष्टमस्थ होने पर भी वह दोषकारक नहीं होता। यदि मंगल लग्नेश होकर अष्टम में हो, तो किसी भी स्थिति में उसके दोष का परिहार नहीं माना जाता। ***षष्ठाष्टमस्थ शुक्र का परिहार-*** शुक्र यदि नीचराशि (कन्या) अथवा शत्रुराशि (कर्क या सिंह) में हो, तो वह षष्ठाष्टमस्थ होने पर भी अशुभ फल नहीं करता। यदि शुक्र लग्नेश होकर षष्ठाष्टमस्थ हो, तो उसका भी कोई परिहार नहीं है- मार्त्तण्ड पंचांग में दिए जाने वाले मुहूर्त्तों में उपरोक्त सभी दोषों के परिहारों का प्रयोग किया जाता है।

मुण्डनादि मुहूर्त्त (सं. २०६४ वि.) (सर्वत्र भा.स्टै.टा. दिया गया है)

मुण्डन मुहूर्त्त (सन् २००७-०८ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टै.टा.)
वैशा. शु. ७ चं.	वैशा. १०	अप्रै. २३	पुन.	
वैशा. शु.१३ चं.	वैशा. १७	अप्रै. ३०	हस्त	६/५६ तक,
माघ शु. ५ चं.	माघ २९	फर. ११	रेव.	
माघ शु.१२ चं.	फाल्गु. ६	फर. १८	पुन.	१२/१० बाद,
फाल्गु.कृ. ४ चं.	फाल्गु.१३	फर. २५	चित्रा	११/४५ बाद,
फाल्गु.शु. ३ चं.	फाल्गु.२७	मार्च १०	रेव.	१०/३४ तक,

मुण्डन में विशेषः- किसी देवस्थल तीर्थ पर बिना मुहूर्त के भी मुण्डन करवाना शुभ माना गया है। नवरात्रों के दिनों में भी शक्तिपीठों (देवी-मन्दिरों) के समीप मुण्डन करवाने की पंजाब, हि.प्र. आदि प्रदेशों में पुरानी परम्परा है।

उपनयन मुहूर्त्त (सन् २००७-०८ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल
द्वि.ज्ये.शु. ३ र.	आषा. ३	जून १७	पुन.	
माघ कृ. ५ र.	माघ १४	जन. २७	उ.फा.	१०/३२ तक,
माघ शु. ५ चं.	माघ २९	फर. ११	रेव.	
फाल्गु.शु. २ र.	फाल्गु.२६	मार्च ९	उ.भा.	
फाल्गु.शु. ३ चं.	फाल्गु.२७	मार्च १०	रेव.	६/४६ तक,

अक्षरारम्भ मुहूर्त्त (सन् २००८ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल
माघ कृ. ६ चं.	माघ १५	जन. २८	हस्त	१२/३६ तक,
माघ कृ. १० शु.	माघ १९	फर. १	अनु.	१५/३१ तक,
माघ शु. ५ चं.	माघ २९	फर. ११	रेव.	

विद्यारम्भ मुहूर्त्त (सन् २००७ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल
वैशा. शु. ३ शु.	वैशा. ७	अप्रै. २०	रोहि.	६/२५ तक,
वैशा. शु. ६ र.	वैशा. ९	अप्रै. २२	आर्द्रा	
वैशा. शु.१२ र.	वैशा. १६	अप्रै. २९	उ.फा.	८/१० तक,
प्र.ज्ये.कृ. २ शु.	वैशा. २१	मई ४	अनु.	१३/०५ तक,
द्वि.ज्ये.शु. ३ र.	आषा. ३	जून १७	पुन.	१६/५५ तक,

विद्यारम्भ मुहूर्त्त (सन् २००८ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टै.टा.)
माघ कृ. २ गु.	माघ ११	जन. २४	आश्ले.	८/१९ तक,
माघ कृ. ५ र.	माघ १४	जन. २७	उ.फा.	१०/३२ तक,
माघ कृ. ५ र.	माघ १४	जन. २७	हस्त	११/४४ बाद,
माघ कृ.१० शु.	माघ १९	फर. १	अनु.	१५/३१ तक,
माघ कृ.१२ र.	माघ २१	फर. ३	मूल	

अक्षरारम्भ और विद्यारम्भ के मुहूर्त्तों का प्रयोगः- बच्चे को वर्णमाला का ज्ञान करवाने के लिए अक्षारम्भ के और संस्कृत, अंग्रेजी, गणित, रसायन आदि विषयों का अध्ययन प्रारम्भ करने के लिए विद्यारम्भ के मुहूर्त्तों का प्रयोग करना चाहिए।

द्विरागमन मुहूर्त्त (सन् २००७-०८ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल
वैशा. शु. ३ शु.	वैशा. ७	अप्रै. २०	रोहि.	६/२५ तक,
वैशा. शु. ७ चं.	वैशा. १०	अप्रै. २३	पुन.	२२/५४ तक,
वैशा. शु.१३ चं.	वैशा. १७	अप्रै. ३०	हस्त	६/५६ तक,
प्र.ज्ये.कृ. ७ बु.	वैशा. २६	मई ९	श्रव.	१०/३५ से २२/२३ तक,
मार्ग. कृ. २ चं.	मार्ग. ७	नवं. २२	मृग.	१६/२७ तक,
मार्ग. कृ. ४ बु.	मार्ग. १३	नवं. २८	पुन.	७/३५ से १२/०१ तक,
मार्ग. कृ. ९ चं.	मार्ग. १८	दिसं. ३	उ.फा.	८/३८ से १८/१४ तक,
मार्ग. कृ. ११ बु.	मार्ग. २०	दिसं. ५	चित्रा	१३/२६ से २४/०६ तक,
माघ शु. १२ चं.	फाल्गु. ६	फर. १८	पुन.	१७/२८ तक,
फाल्गु.कृ. १ शु.	फाल्गु. १०	फर. २२	उ.फा.	१९/३५ बाद,
फाल्गु.कृ. ७ गु.	फाल्गु. १६	फर. २८	अनु.	१८/३४ तक,

द्विरागमन में विशेष- विवाह के दिन से १६ दिन के भीतर द्विरागमन के उपरोक्त मुहूर्त्तों के बिना भी द्विरागमन हो सकता है। यदि नव-विवाहित वधू का द्विरागमन दिवाली के दिन प्रदोष के समय दीपकों के प्रकाश में हो, तो अच्छा माना जाता है।

गृहारम्भ मुहूर्त्त (सन् २००७ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल
वैशा.शु. १२ श.	वैशा. १५	अप्रै.२८	उ.फा.	११/३२ बाद,
कार्त्ति.शु. ११ बु.	मार्ग. ६	नवं. २१	रेव.	१०/३३ बाद,

गृहारम्भ मुहूर्त्त (सन् २००७-०८ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल(भा.स्टै.टा.)
मार्ग.कृ. २ चं.	मार्ग. ११	नवं. २६	मृग.	१६/२७ तक,
पौष शु. १२ श.	माघ ६	जन. १९	रोहि.	१५/२४ तक,
माघ शु. १० श.	फाल्गु. ४	फर. १६	मृग.	१३/३० बाद,
फाल्गु.कृ. २ श.	फाल्गु.११	फर. २३	उ.फा.	
फाल्गु.कृ. ४ चं.	फाल्गु.१३	फर. २५	चित्रा	११/४५ बाद,

नूतन-गृहप्रवेश मुहूर्त्त (सन् २००७-०८ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल
वैशा.शु. १२ श.	वैशा. १५	अप्रै. २८	उ.फा.	११/३२ बाद,
माघ कृ. ६ गु.	माघ १८	जन. ३१	अनु.	२६/२० बाद,
माघ कृ. १० शु.	माघ १९	फर. १	अनु.	१५/३१ तक,
गाघ शु. १० श.	फाल्गु. ४	फर. १६	मृग.	२०/३५ तक,

पुरातन गृहप्रवेश मुहूर्त्त (सन् २००७ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल
वैशा. शु ३ शु.	वैशा. ७	अप्रै. २०	रोहि.	६/२५ तक,
वैशा.शु. ५ श.	वैशा. ८	अप्रै. २१	मृग.	१२/४० तक, १५/०४ से २३/१३ तक,
वैशा.शु. १२ श.	वैशा. १५	अप्रै. २८	उ.फा.	११/३२ बाद,
वैशा.शु. १५ बु.	वैशा. १९	मई २	स्वा.	११/५३ तक,
प्र.ज्ये.कृ १ गु.	वैशा. २०	मई ३	अनु.	२२/५५ बाद,
प्र.ज्ये.कृ २ शु.	वैशा. २१	मई ४	अनु.	१३/०५ तक,
प्र.ज्ये.कृ ८ गु.	वैशा. २७	मई १०	धनि.	६/३८ से २१/२१ तक,
प्र.ज्ये.कृ. ९ शु.	वैशा. २८	मई ११	शत.	१९/४४ से २७/४८ तक,
प्र.ज्ये.कृ.१० श.	वैशा. २९	मई १२	उ.भा.	२७/२० बाद,
प्र.ज्ये.शु १ गु.	ज्ये. ३	मई १७	रोहि.	१४/२५ बाद,
प्र.ज्ये.शु. २ शु.	ज्ये. ४	मई १८	रोहि.	१०/५१ तक,
प्र.ज्ये.शु २ शु.	ज्ये. ४	मई १८	मृग.	१२/०३ बाद,
प्र.ज्ये.शु ३ श.	ज्ये. ५	मई १९	मृग.	८/५६ तक,
प्र.ज्ये.शु ५ चं.	ज्ये. ७	मई २१	पुष्य	८/३३ तक,

पुरातन गृह प्रवेश मुहूर्त्त (सन् २००७ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
प्र.ज्ये.शु ६ शु.	ज्ये. ११	मई २५	उ.फा.	१७/२६ बाद,
प्र.ज्ये.शु. १० श.	ज्ये. १२	मई २६	उ.फा.	१६/३६ तक,
प्र.ज्ये.शु. १२ चं.	ज्ये. १४	मई २८	चित्रा	१८/१० से २२/४५ तक,
प्र.ज्ये.शु. १२ चं.	ज्ये. १४	मई २८	स्वा.	२३/५७ बाद,
प्र.ज्ये.शु. १५ गु.	ज्ये. १७	मई ३१	अनु.	१७/४८ बाद,
प्र.ज्ये.शु. १५ शु.	ज्ये. १८	जून १	अनु.	६/१२ तक,
द्वि.ज्ये.कृ. ५ बु.	ज्ये. २३	जून ६	धनि.	१२/१३ से १५/४३ तक,
द्वि.ज्ये.कृ. ६ गु.	ज्ये. २४	जून ७	शत.	१८/३६ बाद,
द्वि.ज्ये.कृ. ७ शु.	ज्ये. २५	जून ८	शत.	१०/११ तक,
द्वि.ज्ये.कृ. ९ श.	ज्ये. २६	जून ९	उ.भा.	२६/१० बाद,
द्वि.ज्ये.शु. ७ गु.	आषा. ७	जून २१	उ.फा.	२२/३० से २३/४४ तक,
द्वि.ज्ये.शु. १० चं.	आषा.११	जून २५	चित्रा	६/०१ तक,
द्वि.ज्ये.शु. १० चं.	आषा.११	जून २५	स्वा.	७/१३ से २५/५३ तक,
द्वि.ज्ये.शु. १२ बु.	आषा.१३	जून २७	अनु.	१२/३४ बाद,
द्वि.ज्ये.शु. १३ गु.	आषा.१४	जून २८	अनु.	१३/२५ तक,
श्राव. शु. ३ बु.	श्राव. ३१	अग. १५	उ.फा.	१५/१० बाद,
श्राव. शु. ५ श.	भाद्र. २	अग. १८	चित्रा	२१/४८ तक,
श्राव. शु. ५ श.	भाद्र. २	अग. १८	स्वा.	२३/०० बाद,
श्राव. शु. ७ चं.	भाद्र. ४	अग. २०	अनु.	२८/५० बाद,
श्राव. शु. १२ श.	भाद्र. ९	अग. २५	उ.षा.	११/१३ बाद,
श्राव. शु. १४ चं.	भाद्र. ११	अग. २७	धनि.	२९/१० बाद,
कार्त्ति. कृ. ४ चं.	कार्त्ति. १३	अक्तू. २९	मृग.	२०/०१ बाद,
कार्त्ति. कृ. ६ बु.	कार्त्ति.१५	अक्तू. ३१	पुष्य	२९/२८ बाद,
कार्त्ति. कृ. ७ गु.	कार्त्ति.१६	नवं. १	पुष्य	२८/३० तक,
कार्त्ति. कृ. ११ चं.	कार्त्ति.२०	नवं. ५	उ.फा.	१०/३७ से १३/३० तक,
कार्त्ति. कृ. १३ बु.	कार्त्ति.२२	नवं. ७	चित्रा	१६/०६ से ३३/२८ तक
कार्त्ति. शु. १ श.	कार्त्ति.२५	नवं. १०	अनु.	२५/०२ बाद,
कार्त्ति. शु. ७ श.	मार्ग. २	नवं. १७	धनि.	१३/३३ से १६/०७ तक, २७/५६ बाद,

पुरातन गृहप्रवेश मुहूर्त्त (सन् २००७-०८ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
कार्त्ति.शु. ११ बु.	मार्ग. ६	नवं. २१	रेव.	१०/३३ बाद,
कार्त्ति.शु. १५ श.	मार्ग. ९	नवं. २४	रोहि.	२३/१३ बाद,
मार्ग. कृ. २ चं.	मार्ग. ११	नवं. २६	मृग.	१६/२७ तक,
मार्ग. कृ. ४ बु.	मार्ग. १३	नवं. २८	पुष्य	१४/१३ बाद,
मार्ग. कृ. ६ गु.	मार्ग. १४	नवं. २९	पुष्य	१२/२७ तक,
मार्ग. कृ. ९ चं.	मार्ग. १८	दिसं. ३	उ.फा.	८/३८ से १८/१४ तक,
मार्ग. कृ. ११ बु.	मार्ग. २०	दिसं. ५	चित्रा	२४/०६ तक,
मार्ग. कृ. ११ बु.	मार्ग. २०	दिसं. ५	स्वा.	२५/१८ बाद,
मार्ग. कृ. १२ गु.	मार्ग. २१	दिसं. ६	स्वा.	२१/१५ तक, २३/३९ से २७/०८ तक,
मार्ग. शु. ३ बु.	मार्ग. २७	दिसं. १२	उ.षा.	१६/३२ से २७/५० तक,
मार्ग. शु. ५ शु.	मार्ग. २९	दिसं. १४	धनि.	१९/१४ बाद,
माघ कृ. १ बु.	माघ १०	जन. २३	पुष्य	८/५५ तक,
माघ कृ. ४ श.	माघ १३	जन. २६	उ.फा.	१६/२२ बाद,
माघ कृ. ६ चं.	माघ १५	जन. २८	चित्रा	१३/४८ से १९/०८ तक,
माघ कृ. ८ बु.	माघ १७	जन. ३०	स्वा.	७/५७ तक, १०/२१ से १८/०२ तक,
माघ कृ. ९ गु.	माघ १८	जन. ३१	अनु.	२६/२० बाद,
माघ कृ. १० शु.	माघ १९	फर. १	अनु.	१५/३१ तक,
माघ शु. ५ चं.	माघ २९	फर. ११	रेव.	२७/३७ तक,
माघ शु. १० श.	फाल्गु. ४	फर. १६	मृग.	२०/३५ से २६/५० तक,
माघ शु. १२ चं.	फाल्गु. ६	फर. १८	पुष्य	१९/४० बाद,
फाल्गु. कृ. १ शु.	फाल्गु. १०	फर. २२	उ.फा.	१६/३५ बाद,
फाल्गु. कृ. २ श.	फाल्गु. ११	फर. २३	उ.फा.	१४/१२ तक, १६/१२ से १९/३७ तक,
फाल्गु. कृ. ४ चं.	फाल्गु. १३	फर. २५	चित्रा	११/४५ से २३/४० तक,
फाल्गु. कृ. ४ चं.	फाल्गु. १३	फर. २५	स्वा.	२४/५२ बाद,
फाल्गु. कृ. ६ बु.	फाल्गु. १५	फर. २७	अनु.	३०/२५ बाद,
फाल्गु. कृ. ७ गु.	फाल्गु. १६	फर. २८	अनु.	

पुरातन गृहप्रवेश मुहूर्त्त (सन् २००८ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल(भा.स्टैं.टा.)
फाल्गु. कृ. ८ शु.	फाल्गु. १७	फर. २९	अनु.	८/०६ तक,
फाल्गु. कृ.११ चं.	फाल्गु. २०	मार्च ३	उ.षा.	१७/३० बाद,
फाल्गु. कृ.१३ बु.	फाल्गु. २२	मार्च ५	धनि.	१७/४५ से २५/३१ तक,
फाल्गु. शु. १ श.	फाल्गु. २५	मार्च ८	उ.भा.	१५/२१ बाद,
फाल्गु. शु. ३ चं.	फाल्गु. २७	मार्च १०	रेव.	१०/३४ तक,
फाल्गु. शु. ५ बु.	फाल्गु. २९	मार्च १२	रोहि.	३०/०२ बाद,

नोट :- सरकारी या अन्य नौकरी वाले तथा दूसरे लोग भी ट्रांसफर आदि के कारण अक्सर किराये वाले पुराने मकानों में यदा-कदा प्रवेश करते रहते हैं। ऐसे लोगों के लिए ही ये पुरातन-गृहप्रवेश मुहूर्त्त हैं। इन मुहूर्त्तों में गुरु-शुक्र अस्त और अधिकमास का दोष नहीं माना जाता। सिंहस्थ गुरु का सिंहांशक भी यहां विचारा नहीं जाता, इसलिए इनका इन मुहूर्त्तें में विचार नहीं किया गया है। कलश-चक्र का विचार भी यहां नहीं किया जाता ।

सर्वदेव-प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (सन् २००७-०८ ई.)

वैशा. शु. ३ शु.	वैशा. ७	अप्रै. २०	रोहि.	६/२५ तक,
वैशा. शु. ७ चं.	वैशा. १०	अप्रै. २३	पुन.	
वैशा. शु.१२ र.	वैशा. १६	अप्रै. २९	उ.फा.	१०/०६ तक,
वैशा. शु.१३ चं.	वैशा. १७	अप्रै. ३०	हस्त	९/५९ तक,
प्र.ज्ये.कृ. ७ बु.	वैशा. २६	मई ९	श्रव.	१०/३५ बाद,
प्र.ज्ये.कृ. ८ गु.	वैशा. २७	मई १०	धनि.	१०/१५ बाद,
द्वि.ज्ये.शु. ३ र.	आषा. ३	जून १७	पुन.	
पौष शु. ८ बु.	माघ ३	जन. १६	अश्वि.	
माघ कृ. १ बु.	माघ १०	जन. २३	पुष्य	८/५५ तक,
माघ कृ. ५ र.	माघ १४	जन. २७	उ.फा.	१०/३२ तक,
माघ कृ. ६ चं.	माघ १५	जन. २८	हस्त	१२/३६ तक,
माघ कृ. ८ बु.	माघ १७	जन. ३०	स्वा.	१०/२१ बाद,
माघ कृ. १० शु.	माघ १९	फर. १	अनु.	
माघ शु. ५ चं.	माघ २९	फर. ११	रेव.	
माघ शु. १२ चं.	फाल्गु. ६	फर. १८	पुन.	
फाल्गु. कृ. ७ गु.	फाल्गु. १६	फर. २८	अनु.	

सत्देवप्रतिष्ठा मुहूर्त (सन् २००८ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
फाल्गु. कृ. ८ शु.	फाल्गु.१७	फर. २९	अनु.	८/०६ तक,
फाल्गु. कृ.१३ बु.	फाल्गु.२२	मार्च ५	श्रव.	
फाल्गु. शु. २ र.	फाल्गु.२६	मार्च ९	उ.भा.	
फाल्गु. शु. ३ चं.	फाल्गु.२७	मार्च १०	रेव.	१०/३४ तक,

तामसदेवप्रतिष्ठा मुहूर्त (सन् २००७ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
द्वि.ज्ये.शु. १० चं.	आषा. ११	जून २५	चित्रा	६/०१ तक,
द्वि.ज्ये.शु. १२ गु.	आषा. १४	जून २८	अनु.	
आषा. कृ. ८ र.	आषा. २४	जुला. ८	रेव.	९/१७ तक,
आषा. कृ. १३ गु.	आषा. २८	जुला.१२	मृग.	६/४० बाद,
आषा. शु. ५ गु.	श्राव. ४	जुला.१९	उ.फा.	६/५३ से ९/१० तक,
आषा. शु. ६ शु.	श्राव. ५	जुला.२०	उ.फा.	८/०५ तक,
आषा. शु. ६ शु.	श्राव. ५	जुला.२०	हस्त	९/१७ बाद,
मार्ग. कृ. १ र.	मार्ग. १०	नवं. २५	रोहि.	
मार्ग. कृ. २ चं.	मार्ग. ११	नवं. २६	मृग.	
मार्ग. कृ. ४ बु.	मार्ग. १३	नवं. २८	पुन.	७/३५ बाद,
मार्ग. कृ. ६ गु.	मार्ग. १४	नवं. २९	पुष्य	
मार्ग. कृ. ९ चं.	मार्ग. १८	दिसं. ३	उ.फा.	८/३८ बाद,
मार्ग. कृ. ११ बु.	मार्ग. २०	दिसं. ५	चित्रा	

श्रीगणेश प्रतिष्ठा मुहूर्त (सन् २००७ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
प्र.ज्ये. कृ. ४ र.	वैशा. २३	मई ६		
आषा. कृ. ४ बु.	आषा. २०	जुला. ४		
मार्ग. कृ. ३ मं.	मार्ग. १२	नवं. २७		९/५२ बाद,
माघ कृ. ४ श.	माघ १३	जन. २६		
फाल्गु. कृ. ३ र.	फाल्गु.१२	फर. २४		१०/१४ बाद,

श्रीदुर्गा प्रतिष्ठा मुहूर्त (सन् २००७ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा.शु. ९ बु.	वैशा. १२	अप्रै. २५		८/५९ बाद,
प्र.ज्ये. कृ. ४ र.	वैशा. २३	मई ६	मूल	
द्वि.ज्ये.शु. ८ श.	आषा. ९	जून २३		७/५४ बाद,

श्रीदुर्गा प्रतिष्ठा मुहूर्त (सन् २००७-०८ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
द्वि.ज्ये.शु.१५ श.	आषा. १६	जून ३०	मूल	७/०९ बाद,
आषा. शु. ९ चं.	श्राव. ८	जुला. २३		
माघ कृ. १२ र.	माघ २१	फर. ३	मूल	
माघ शु. ९ शु.	फाल्गु. ३	फर. १५		
फाल्गु.कृ. १० र.	फाल्गु. १६	मार्च २	मूल	११/५४ तक,

श्रीशिव प्रतिष्ठा मुहूर्त (सन् २००७-०८ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा. शु. ६ र.	वैशा. ९	अप्रै. २२	आर्द्रा	
द्वि.ज्ये.शु. १ श.	आषा. २	जून १६	आर्द्रा	
आषा. कृ. १४ शु.	आषा. २९	जुला. १३	आर्द्रा	८/१४ बाद,
मार्ग. कृ. ३ मं.	मार्ग. १२	नवं. २७	आर्द्रा	९/५२ बाद,
मार्ग. कृ. १४ श.	मार्ग. २३	दिसं. ८		७/४९ बाद,
माघ कृ. १४ बु.	माघ २४	फर. ६		९/२६ तक,
फाल्गु.कृ. १४ गु.	फाल्गु. २३	मार्च ६		श्रीमहाशिवरात्रि,

श्रीगौरी प्रतिष्ठा मुहूर्त (सन् २००७-०८ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा. शु. २ गु.	वैशा. ६	अप्रै. १९		९/४० बाद,
द्वि.ज्ये.शु. ३ र.	आषा. ३	जून १७		
आषा.शु. ३ मं.	श्राव. २	जुला. १७		९/३३ तक,
माघ शु. २ श.	माघ २७	फर. ९		७/२६ बाद,
फाल्गु.शु. ३ चं.	फाल्गु. २७	मार्च १०		

अभिजित् मुहूर्त

स्थानीय दिनमानार्ध के घं. मि. को स्थानीय सूर्योदयकाल में जोड़ने पर 'स्पष्ट दिनार्ध' होता है, दिनमान का ३०वां भाग मुहूर्त्तार्ध कहलाता है। मुहूर्त्तार्ध को स्पष्ट दिनार्ध में घटाने और जोड़ने पर अभिजित् मुहूर्त्त का क्रमशः प्रारम्भ और समाप्तिकाल ज्ञात हो जाता है। इस काल में लगभग सभी दोषों को समाप्त कर डालने की अद्भुत शक्ति मानी गयी है। जब मुण्डन, अक्षरारम्भ आदि मुहूर्त्तों में शुद्ध लग्न न मिल रहा हो, तब अभिजित् मुहूर्त्तों को प्रयोग में लाना चाहिए।

देव प्रतिष्ठा के विशेष मुहूर्त्तों के बारे में स्पष्टीकरण

श्री विष्णु, राम, कृष्ण, शिव, गणेश, गौरी आदि सात्त्विक देवता हैं, इसलिए इनकी प्रतिष्ठा यद्यपि यहां निर्दिष्ट " सात्त्विक देव प्रतिष्ठा " वाले मुहूर्तों में हो सकती है, फिर भी मुहूर्त्तशास्त्रों में इनकी प्रतिष्ठा के लिए विशेष मुहूर्त्त काल बताए गए हैं, जिनका निर्देश हमने यहां अलग से किया है। यहां यह समझ लेना चाहिए कि सात्त्विक देव प्रतिष्ठा वाले मुहूर्त्त श्री विष्णु, राम, कृष्ण, गणेश, शिव, सरस्वती आदि सभी सत्त्वप्रधान प्रकृति वाले देवी-देवताओं के लिए समान रूप से प्रयोग में लाये जा सकते हैं, जबकि श्री गणेश, दुर्गा, गौरी, शिव आदि देवी-देवताओं के लिए यहां पृथक् रूप में लिखे गए प्रतिष्ठामुहूर्त्त केवल इन्हीं के लिए हैं। सभी देवताओं की प्रतिष्ठा पूर्वाह्णकाल में (मध्याह्न से पूर्व) ही की जाती है।

ध्यान दें- गौरी, गणेश, दुर्गा और शिव की प्रतिष्ठा के मुहूर्त्त के लिए शास्त्रों में क्रमशः शुक्ल तृतीया, कृष्ण चतुर्थी, शुक्ल नवमी और कृष्ण चतुर्दशी तिथियां शुभ मानी गई हैं, तदनुसार ही यहां इनके विशेष मुहूर्त्तों में केवल इन तिथियों का निर्देश किया गया है, नक्षत्रों का नहीं । किञ्च दुर्गा प्रतिष्ठा के लिए मूल और शिव प्रतिष्ठा के लिए आर्द्रा नक्षत्र भी शुभ माना जाता है, अतः यहां इन नक्षत्रों में भी क्रमशः दुर्गा और शिव की प्रतिष्ठा के मुहूर्त्त लगाए गए हैं । इन मुहूर्त्तों में भी गुरु-शुक्रास्त काल आदि को वर्जित किया जाता है।

दशावतार प्रतिष्ठा

श्रीराम, कृष्ण आदि देवताओं की मूर्ति-प्रतिष्ठा इन देवताओं की अपनी -अपनी अवतार तिथियों (श्रीरामनवमी आदि) के दिन पूर्वाह्नकाल में बिना पंचांग-शुद्धि के भी की जा सकती है । अवतार की तिथि यदि गुरु-शुक्रास्तकाल में पड़े, तब तो उस दिन मूर्ति-प्रतिष्ठा नहीं करनी चाहिए ।

विपणि (दुकान खोलने का) मुहूर्त्त (सन् २००७-०८ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)	तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)	तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल(भा.स्टैं.टा.)
वैशा. शु. ३ शु.	वैशा. ७	अप्रै. २०	रोहि.	६/२५ तक,	भाद्र. कृ. १२ श.	भाद्र. २३	सितं. ८	पुष्य	१५/३३ से १६/५६ तक,	पौष शु. १२ श.	माघ ६	जन. १६	रोहि.	१५/२४ तक,
वैशा. शु. ५ श.	वैशा. ८	अप्रै. २१	मृग.	१२/४० तक, १५/०४ बाद,	भाद्र. शु. २ गु.	भाद्र. २८	सितं. १३	हस्त		माघ कृ. ४ श.	माघ १३	जन. २६	उ.फा.	१६/२२ बाद,
वैशा. शु. १२ श.	वैशा. १५	अप्रै. २८	उ.फा.	११/३२ बाद,	भाद्र. शु. ३ शु.	भाद्र. २६	सितं. १४	चित्रा		माघ कृ. ५ र.	माघ १४	जन. २७	उ.फा.	१०/३२ तक,
वैशा. शु. १२ र.	वैशा. १६	अप्रै. २६	उ.फा.	१०/०६ तक,	आश्वि.शु. १३ बु.	कार्त्ति. ८	अक्तू.२४	उ.भा.	६/५८ से १७/४४ तक,	माघ कृ. ५ र.	माघ १४	जन. २७	हस्त	११/४४ से १७/२६ तक,
वैशा. शु. १३ चं.	वैशा. १७	अप्रै. ३०	हस्त	१०/४६ तक,	कार्त्ति. कृ. ३ र.	कार्त्ति.१२	अक्तू.२८	रोहि.	११/५६ से १२/५२ तक,	माघ कृ. १० शु.	माघ १६	फर. १	अनु.	१५/३१ तक,
द्वि.ज्ये.शु. ६ र.	आषा. १०	जून २४	चित्रा	१३/५७ बाद,	कार्त्ति. कृ. ७ गु.	कार्त्ति.१६	नवं. १	पुष्य	१४/५७ तक,	माघ शु. ५ चं.	माघ २६	फर. ११	रेव.	
द्वि.ज्ये.शु.१० चं.	आषा. ११	जून २५	चित्रा	६/०१ तक,	कार्त्ति. कृ. १३ बु.	कार्त्ति.२२	नवं. ७	हस्त	१४/५४ तक,	माघ शु. १० श.	फाल्गु. ४	फर. १६	मृग.	१५/४७ तक,
आषा.कृ. १२ बु.	आषा. २७	जुला. ११	रोहि.	८/१८ बाद,	कार्त्ति. शु. १ र.	कार्त्ति.२६	नवं. ११	अनु.	७/०१ बाद,	फाल्गु.कृ. ४ चं.	फाल्गु. १३	फर. २५	चित्रा	११/४५ बाद,
आषा. कृ.१३ गु.	आषा.२८	जुला. १२	मृग.	६/४० बाद,	कार्त्ति. शु.११ बु.	मार्ग. ६	नवं. २१	रेव.	१०/३३ बाद,	फाल्गु.कृ. ७ गु.	फाल्गु. १६	फर. २८	अनु.उ.	
आषा.शु. ५ गु.	श्राव. ४	जुला. १६	उ.फा.	६/५३ से ६/१० तक,	मार्ग. कृ. १ र.	मार्ग. १०	नवं. २५	रोहि.	१६/१५ बाद,	फाल्गु.शु. २ र.	फाल्गु. २६	मार्च ६	भा.	१२/२८ तक,
आषा.शु. ७ श.	श्राव. ६	जुला. २१	हस्त	११/५३ तक,	मार्ग. कृ. २ चं.	मार्ग. ११	नवं. २६	मृग.	१६/२७ तक	फाल्गु.शु. २ र.	फाल्गु. २६	मार्च ६	रेव.	१३/४० बाद,
आषा. शु. ७ श.	श्राव. ६	जुला. २१	चित्रा	१२/०५ बाद,	मार्ग. कृ. ४ बु.	मार्ग. १३	नवं. २८	पुष्य	१४/१३ बाद,	फाल्गु.शु. ३ चं.	फाल्गु. २७	मार्च १०	रेव.	१०/३४ तक,
भाद्र. कृ. २ गु.	भाद्र. १४	अग. ३०	उ.भा.	७/०४ तक, ६/०४ बाद,	मार्ग. कृ. ६ चं.	मार्ग. १८	दिसं. ३	उ.फा.	८/३८ बाद,	फाल्गु.शु. ३ चं.	फाल्गु. २७	मार्च १०	अश्वि.	११/४६ से १५/२८ तक,
भाद्र. कृ. ११ शु.	भाद्र. २२	सितं. ७	पुष्य	१७/३२ बाद,	मार्ग. कृ. ११ बु.	मार्ग. २०	दिसं. ५	चित्रा	१३/२६ बाद,					

ध्यान दें:—उक्त मुण्डनादि मुहूर्त्तों में क्रूरग्रहयुति, क्रूरग्रहवेध, क्रान्तिसाम्य आदि सभी दोषों का अच्छी तरह विचार किया गया है। अतः ये सभी मुहूर्त्त पूर्णतः शुद्ध हैं। कुछ पंचांगकार इन मुहूर्त्तों में क्रूरग्रहयुति, क्रूरग्रहवेध एवं क्रान्तिसाम्य का विचार नहीं करते, जो कि शास्त्रसम्मत नहीं है।

सर्वार्थसिद्धि योग (सं. २०६४ वि.) (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ		समाप्त		प्रारम्भ		समाप्त		प्रारम्भ		समाप्त		प्रारम्भ		समाप्त	
२००७ ई.	घं. मि.	२००७ ई.	घं. मि.	२००७ ई.	घं. मि.	२००७ ई.	घं. मि.	२००७ ई.	घं. मि.	२००७ ई.	घं. मि.	२००७ ई.	घं. मि.	२००७ ई.	घं. मि.
(मार्च २४	सू. उ.	मार्च २४	१७ ००)श.	जून २८	सू. उ.	जून २८	१४ ३७	सितं. ७	सू. उ.	सितं. ७	१७ ३२	(नवं. २९	सू. उ.	नवं. २९	१३ ३९)गु.
अप्रै. १	सू. उ.	अप्रै. २	५ १५	जुला. १	१७ ५१	जुला. २	सू. उ.	सितं. १३	० ५३	सितं. १३	सू. उ.	दिसं. २	१६ ५९	दिसं. ३	सू.उ.
अप्रै. ८	२१ ३०	अप्रै. ९	सू. उ.	जुला. २	१८ ०३	जुला. ३	सू. उ.	सितं. १५	६ २४	सितं. १६	सू. उ.	दिसं. १४	सू. उ.	दिसं. १४	१९ १४
अप्रै. १५	१७ ५७	अप्रै. १६	सू. उ.	जुला. ८	१३ १३	जुला. ९	सू. उ.	सितं. १७	१२ २४	सितं. १८	सू. उ.	दिसं. १८	सू. उ.	दिसं. १८	१८ ४१
(अप्रै. १७	१२ ११	अप्रै. १८	सू. उ.)मं.	जुला. १०	१० ००	जुला. ११	सू. उ.	सितं. २२	२० ५९	सितं. २३	सू. उ.	दिसं. २०	सू. उ.	दिसं. २०	१५ ०७
अप्रै. २४	० ०६	अप्रै. २४	सू. उ.	जुला. ११	सू. उ.	जुला. १२	सू. उ.	सितं. २७	१२ ५६	सितं. २८	सू. उ.	दिसं. २२	१० ०५	दिसं. २३	सू.उ.
अप्रै. २५	१ ११	अप्रै. २५	सू. उ.	जुला. १४	४ ०६	जुला. १४	सू. उ.	(सितं. २८	सू. उ.	सितं. २८	१० १०)शु.	दिसं. २८	२३ ४३	दिसं. २९	सू.उ.
अप्रै. २७	सू. उ.	अप्रै. २८	सू. उ.	जुला. १५	सू. उ.	जुला. १६	३ १८	अक्तू. १	सू. उ.	अक्तू. २	० ४६	दिसं. ३०	सू. उ.	दिसं. ३१	सू.उ.
अप्रै. २९	सू. उ.	अप्रै. २९	११ १८	(जुला. २५	सू. उ.	जुला. २५	२२ ५०)बु.	अक्तू. ४	सू. उ.	अक्तू. ४	२३ ००	सन् २००८ ई.			
(अप्रै. २९	११ १८	अप्रै. ३०	सू. उ.)र.	जुला. २९	सू. उ.	जुला. ३०	१ ४६	अक्तू. ४	२३ ००	अक्तू. ५	२ ३५	जन. ६	१६ २४	जन. ७	सू. उ.
मई ३	२२ ५५	मई ४	सू. उ.	जुला. ३०	सू. उ.	जुला. ३१	१ १२	(अक्तू. ५	२ ३५	अक्तू. ५	सू. उ.)गु.	जन. १४	१ ०८	जन. १४	सू. उ.
मई ६	सू. उ.	मई ७	४ ४७	अग. ३	२० ०८	अग. ४	सू. उ.	अक्तू. १०	७ २२	अक्तू. ११	सू. उ.	(जन. १५	२३ २६	जन. १६	सू.उ.)मं.
मई १३	सू. उ.	मई १४	१ ११	अग. ५	सू. उ.	अग. ५	१७ ०४	अक्तू. १३	सू. उ.	अक्तू. १३	१६ ००	(जन. १९	सू. उ.	जन. १९	१६ ३६)श.
(मई १५	सू. उ.	मई १५	१९ ५५)मं.	अग. ७	सू. उ.	अग. ७	१४ १७	अक्तू. १५	सू. उ.	अक्तू. १५	२१ ५५	जन. २५	९ ३३	जन. २६	सू. उ.
मई १६	१७ ०६	मई १७	सू. उ.	अग. ८	सू. उ.	अग. ९	सू. उ.	अक्तू. २०	५ ४५	अक्तू. २०	सू. उ.	जन. २७	सू. उ.	जन. २७	११ ४४
मई २१	८ ३३	मई २२	सू. उ.	अग. १०	११ ३५	अग. ११	सू. उ.	अक्तू. २०	सू. उ.	अक्तू. २१	६ ०६	जन. ३१	२२ १२	फर. १	सू. उ.
मई २२	८ ५९	मई २३	सू. उ.	अग. १२	सू. उ.	अग. १२	११ ३१	अक्तू. २४	२ ३०	अक्तू. २४	सू. उ.	फर. ३	सू. उ.	फर. ४	५ ३४
मई २५	सू. उ.	मई २५	१४ ५०	अग. १८	२३ ००	अग. १९	सू. उ.	अक्तू. २५	सू. उ.	अक्तू. २५	२१ ०८	फर. १०	सू. उ.	फर. ११	६ ०४
(मई २७	सू. उ.	मई २७	२० ५५)र.	अग. २१	४ ५०	अग. २१	सू. उ.	अक्तू. २६	सू. उ.	अक्तू. २६	१८ ०३	(फर. १२	सू. उ.	फर. १३	२ १६)मं.
(मई ३१	५ १७	मई ३१	सू. उ.)बु.	(अग. २२	सू. उ.	अग. २२	७ १९)बु.	अक्तू. २९	सू. उ.	अक्तू. २९	९ २५	फर. १३	२ १६	फर. १३	३ २७
मई ३१	सू. उ.	जून १	सू. उ.	अग. २६	सू. उ.	अग. २६	११ ०७	(अक्तू. २९	९ २५	अक्तू. ३०	सू. उ.)चं.	फर. १४	२ ००	फर. १४	सू.उ.
जून ३	सू. उ.	जून ३	१० २८	अग. २७	सू. उ.	अग. २७	१० २४	(नवं. १	सू. उ.	नवं. २	५ ४२)गु.	फर. १८	१९ ४०	फर. १९	सू.उ.
जून १०	सू. उ.	जून १०	८ ५२	अग. ३१	३ २०	अग. ३१	सू. उ.	नवं. ७	सू. उ.	नवं. ७	१६ ०६	फर. १९	१९ ०१	फर. २०	सू.उ.
जून १३	२ ३९	जून १४	सू. उ.	(अग. ३१	सू. उ.	सितं. १	१ ११)शु.	नवं. १६	१२ ३३	नवं. १७	सू. उ.	फर. २२	सू. उ.	फर. २२	१९ ३५
जून १७	१८ ०७	जून १८	१८ ०४	सितं. ३	१९ ४२	सितं. ४	सू. उ.	नवं. २०	१२ २२	नवं. २१	सू. उ.	(फर. २४	सू. उ.	फर. २४	२२ ३५)र.
जून १९	सू. उ.	जून १९	१८ ४८	सितं. ५	सू. उ.	सितं. ५	१७ ४४	नवं. २२	सू. उ.	नवं. २३	५ २२	(फर. २८	६ २५	फर. २८	सू.उ.)बु.
(जून २७	१२ ३४	जून २८	सू. उ.)बु.	सितं. ६	१७ २५	सितं. ७	सू. उ.	(नवं. २६	सू. उ.	नवं. २६	१७ ३९)चं.	फर. २८	सू. उ.	फर. २९	सू.उ.

सर्वार्थसिद्धि योग (सं. २०६४ वि.) (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ		समाप्त	
२००७ ई.	घं. मि.	२००७ ई.	घं. मि.
मार्च २	सू. उ.	मार्च २	१४ २५
मार्च ९	सू. उ.	मार्च ९	१३ ४०
(मार्च ११	सू. उ.	मार्च ११	९ ४७)मं.
मार्च १२	७ १०	मार्च १३	६ ०२
मार्च १७	१ ४६	मार्च १७	सू. उ.
मार्च १७	सू. उ.	मार्च १८	१ ३७
मार्च १८	सू. उ.	मार्च १९	१ ५०
(मार्च २३	सू. उ.	मार्च २३	६ ४०)र.
(मार्च २६	१४ १४	मार्च २७	सू. उ.)बु.
मार्च २७	सू. उ.	मार्च २७	१७ १२
मार्च ३१	१ ०१	मार्च ३१	सू. उ.
अप्रै. १	२ ३७	अप्रै. १	सू. उ.

रवि योग (सं. २०६४ वि.)

मार्च २१	२२ २७	मार्च २२	२० ०६
मार्च २३	१८ १५	मार्च २४	१७ ००
मार्च २६	१६ ३६	मार्च २७	१७ २७
मार्च २७	१७ २७	मार्च २८	१८ ५७
मार्च ३०	२३ २९	मार्च ३१	२३ ०७
अप्रै. १	२ १७	अप्रै. २	५ १५
अप्रै. ८	२१ २९	अप्रै. ९	२२ ५८
अप्रै. २०	३ ४६	अप्रै. २१	१ ४५
अप्रै. २२	० २५	अप्रै. २२	२३ ५०
अप्रै. २५	१ ११	अप्रै. २६	३ ००
अप्रै. २६	३ ००	अप्रै. २७	५ २४
अप्रै. २८	४ १५	अप्रै. २८	८ १४
अप्रै. ३०	१४ २५	मई १	१७ २७

रवि योग (सं. २०६४ वि.) (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ		समाप्त		प्रारम्भ		समाप्त		प्रारम्भ		समाप्त	
२००७ ई.	घं. मि.	२००७ ई.	घं. मि.	२००७ ई.	घं. मि.	२००७ ई.	घं. मि.	२००७ ई.	घं. मि.	२००७ ई.	घं. मि.
मई ८	५ ५६	मई ९	६ ३३	अग. २३	९ १८	अग. २४	१० ३६	दिसं. १८	१८ ४१	दिसं. १९	१७ ०८
मई १९	१० ११	मई २०	८ ५९	अग. २६	११ ०८	अग. २७	१० २५	दिसं. १९	१७ ०८	दिसं. २०	१५ ०७
मई २१	८ ३३	मई २२	८ ५९	सितं. २	२१ १६	सितं. ३	१९ ४२	दिसं. २२	१० ०५	दिसं. २३	७ २४
मई २४	१२ १५	मई २५	१८ ३६	सितं. १५	६ २४	सितं. १६	९ २४	दिसं. २८	२३ ४३	दिसं. २९	१५ ४५
मई २५	१८ ३६	मई २६	१७ ४८	सितं. १७	१२ २४	सितं. १८	१५ ११	दिसं. ३०	० ५७	दिसं. ३१	२ ५५
मई २६	१७ ४८	मई २७	२० ५५	सितं. २०	१९ २६	सितं. २१	२० ३५	सन् २००८ ई.			
मई ३०	२ ४७	मई ३१	५ १७	सितं. २१	२० ३५	सितं. २२	२० ५९	जन. ११	० ५८	जन. ११	१७ ३९
जून ६	१२ १३	जून ७	१२ ०१	सितं. २४	१९ २९	सितं. २५	१७ ४५	जन. १२	१ २४	जन. १३	१ २७
जून १७	१८ ०७	जून १८	१८ ०४	अक्तू. २	० ४६	अक्तू. २	२३ ३२	जन. १४	१ ०८	जन. १५	० २८
जून १९	१८ ४८	जून २०	२० १८	अक्तू. १४	१९ ००	अक्तू. १५	२१ ५५	जन. १६	२२ ०४	जन. १७	२० २६
जून २४	४ ११	जून २५	७ १३	अक्तू. १७	० ३६	अक्तू. १८	२ ५३	जन. १७	२० २६	जन. १८	१८ ३४
जून २५	७ १३	जून २६	१० ०४	अक्तू. २०	५ ४५	अक्तू. २१	६ ०६	जन. २०	१४ ३८	जन. २१	१२ ४८
जून २८	१४ ३७	जून २९	१६ १०	अक्तू. २१	६ ०६	अक्तू. २२	५ ३८	जन. २८	१३ ४८	जन. २९	१६ २२
जुला. ५	१६ ४६	जुला. ६	१५ ०७	अक्तू. २४	२ ३०	अक्तू. २४	१९ ०४	फर. १०	७ ०८	फर. ११	६ ०४
जुला. ६	१५ ४८	जुला. ७	१४ ३७	अक्तू. २५	० ०१	अक्तू. २५	२१ ०८	फर. १२	४ ४९	फर. १३	३ २७
जुला. १७	३ ५०	जुला. १८	५ ०२	अक्तू. ३१	६ ०२	नवं. १	५ २८	फर. १५	० ३२	फर. १५	२३ ०७
जुला. १९	६ ५३	जुला. २०	९ १७	नवं. १३	६ ३१	नवं. १४	८ ५६	फर. १५	२३ ०७	फर. १६	२१ ४७
जुला. २०	१४ ३४	जुला. २१	१२ ०५	नवं. १५	१० ५८	नवं. १६	१२ ३३	फर. १८	१९ ४०	फर. १९	१९ ०१
जुला. २३	१८ ००	जुला. २४	२० ३८	नवं. १८	१३ ५३	नवं. १९	१३ २९	फर. २०	३ ३५	फर. २०	१८ ४४
जुला. २४	२० ३८	जुला. २५	२२ ५०	नवं. १९	१३ २९	नवं. २०	१२ २२	फर. २७	३ ३२	फर. २८	६ २५
जुला. २८	१ २८	जुला. २९	१ ५४	नवं. २०	१२ २२	नवं. २१	१० ३३	मार्च १०	११ ४६	मार्च ११	९ ४७
अग. ४	१८ ३६	अग. ५	१७ ०४	नवं. २३	५ २२	नवं. २४	२ १९	मार्च १२	७ ५०	मार्च १३	६ ०२
अग. १५	१५ ११	अग. १६	१७ २६	नवं. २९	१३ ३९	नवं. ३०	१३ ५८	मार्च १५	३ १३	मार्च १६	२ १९
अग. १७	११ १०	अग. १७	२० ०५	दिसं. १२	१६ ३२	दिसं. १३	१८ ०५	मार्च १६	२ १९	मार्च १७	१ ४६
अग. १८	२३ ०१	अग. २०	२ ००	दिसं. १४	१९ १४	दिसं. १५	१९ ५५	मार्च १७	१८ १९	मार्च १८	१ ३७
अग. २२	७ २०	अग. २३	९ १८	दिसं. १६	१३ २८	दिसं. १६	२० ०५	मार्च २०	२ २७	मार्च २१	३ २७
								मार्च २७	१७ १२	मार्च २८	२० ०७

सिद्धि योग (सं. २०६४ वि.) (भा.स्टैं. टा.)

प्रारम्भ		समाप्त	
२००७ ई.	घं. मि.	२००७ ई.	घं. मि.
मार्च ३०	२३ २९	मार्च ३१	सू. उ.
अप्रै. ८	२१ २९	अप्रै. ९	सू. उ.
अप्रै. २७	सू. उ.	अप्रै. २८	सू. उ.
मई ६	सू. उ.	मई ७	४ ४७
मई १६	१७ ०६	मई १७	सू. उ.
मई २५	सू. उ.	मई २५	१४ ५०
जून ३	सू. उ.	जून ३	१० २८
जून १३	सू. उ.	जून १४	० २१
जुला. २	१८ ०३	जुला. ३	सू. उ.
जुला. ११	सू. उ.	जुला. ११	८ १८
जुला. ३०	सू. उ.	जुला. ३१	१ १२
अग. १८	२३ ००	अग. १९	सू. उ.
अग. २७	सू. उ.	अग. २७	१० २४
अक्तू. ४	सू. उ.	अक्तू. ४	२३ ००
अक्तू. १३	सू. उ.	अक्तू. १३	१६ ००
अक्तू. २४	२ ३०	अक्तू. २४	सू. उ.
नवं. २०	१२ २२	नवं. २१	सू. उ.
दिसं. १८	सू. उ.	दिसं. १८	१८ ४१
सन् २००८ ई.			
जन. ६	१९ २४	जन. ७	सू. उ.
जन. २५	९ ३३	जन. २६	सू. उ.
फर. ३	सू. उ.	फर. ४	५ ३४
फर. १४	२ ००	फर. १४	सू. उ.
फर. २२	सू. उ.	फर. २२	१९ ३५

प्रारम्भ		समाप्त	
२००८ ई.	घं. मि.	२००८ ई.	घं. मि.
मार्च २	सू. उ.	मार्च २	१४ २५
मार्च १२	७ ५०	मार्च १३	६ ०२
अप्रै. १	२ ३७	अप्रै. १	सू. उ.

त्रिपुष्कर योग (सं. २०६४ वि.) (भा.स्टैं. टा.)

अप्रै. १४	२० २०	अप्रै. १५	३ ५३
अप्रै. २६	सू. उ.	अप्रै. २६	८ १०
मई ८	सू. उ.	मई ९	२२ २३
जून १६	१८ ५४	जून १७	४ १९
जून २६	१४ ५९	जून २७	सू. उ.
जुला. १	१९ ११	जुला. २	सू. उ.
जुला. ११	२ ०१	जुला. ११	सू. उ.
अक्तू. २३	सू. उ.	अक्तू. २३	२० ४९
अक्तू २७	सू. उ.	अक्तू २७	१४ ५६
नवं. ६	सू. उ.	नवं. ६	१३ १४
दिसं. १६	२० ०५	दिसं. १७	सू. उ.
दिसं. २५	सू. उ.	दिसं. २६	० ४८
दिसं. ३०	सू. उ.	दिसं. ३१	० २४
सन् २००८ ई.			
फर. १७	२० ३७	फर. १८	सू. उ.
फर. २३	सू. उ.	फर. २९	६ १६
मार्च ४	सू. उ.	मार्च ४	१७ १९

द्विपुष्कर योग (सं. २०६४ वि.) (भा.स्टैं. टा.)

प्रारम्भ		समाप्त	
२००७ ई.	घं. मि.	२००७ ई.	घं. मि.
मार्च २४	१७ ००	मार्च २५	सू. उ.
अप्रै. ४	१ १९	अप्रै. ४	सू. उ.
मई २७	२२ २५	मई २८	सू. उ.
जुला. २१	१२ ०५	जुला. २१	२२ ४६
जुला. ३१	सू. उ.	अग. १	० १५
अग. १९	१३ ५५	अग. २०	१ ५९
सितं. २३	२० ३६	सितं. २४	सू. उ.
अक्तू. २	सू. उ.	अक्तू. २	२३ ३२
सन् २००८ ई.			
जन. १९	१६ ३६	जन. २०	२ १५
जन. २९	सू. उ.	जन. २९	१६ २२
मार्च २३	६ ४०	मार्च २४	२ ५४

अमृतसिद्धि योग (सं. २०६४ वि.) (भा.स्टैं. टा.)

(मार्च २४	सू. उ.	मार्च २४	१७ ००)श.
(अप्रै. १७	१२ ११	अप्रै. १८	सू. उ.)मं.
(अप्रै. २९	११ १८	अप्रै. ३०	सू.उ.)र.
(मई १५	सू. उ.	मई १५	१९ ५५)मं.
(मई २७	सू. उ.	मई २७	२० ५५)र.
(मई ३१	५ १७	मई ३१	सू.उ.)बु.
(जून २७	१२ ३४	जून २८	सू.उ.)बु.
(जुला. २५	सू. उ.	जुला. २५	२२ ५०)बु.
(अग. २२	सू. उ.	अग. २२	७ १९)बु.

अमृतसिद्धि योग (सं. २०६४ वि.) (भा.स्टैं. टा.)

प्रारम्भ		समाप्त	
२०८७ ई.	घं. मि.	२००७ ई.	घं. मि.
(अग. ३१	सू. उ.	सितं. १	१ ११) शु.
(सितं. २८	सू. उ.	सितं. २८	१० १०)शु.
(अक्तू. ५	२ ३५	अक्तू. ५	सू. उ.) गु.
(अक्तू. २९	६ २५	अक्तू. ३०	सू. उ.) चं.
(नवं. १	सू. उ.	नवं. २	५ ४२) गु.
(नवं. २६	सू. उ.	नवं. २६	१७ ३६)चं.
(नवं. २९	सू. उ.	नवं. २९	१३ ३९)गु.
सन् २००८ ई.			
(जन. १५	२३ २६	जन. १६	सू. उ.) मं.
(जन. १९	सू. उ.	जन. १९	१६ ३६)श.
(फर. १२	सू. उ.	फर. १३	२ १६) मं.
(फर. २४	सू. उ.	फर. २४	२२ ३५)र.
(फर. २८	६ २५	फर. २८	सू. उ.) बु.
(मार्च ११	सू. उ.	मार्च ११	९ ४७) मं.
(मार्च २३	सू. उ.	मार्च २३	६ ४०) र.
(मार्च २६	१४ १४	मार्च २७	सू. उ.) बु.

श्रीमार्त्तण्ड पंचांग' सं. 2064 विक्रमी
का
लग्न–विशेषांक

उत्तरभारत के जम्मू–काश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश,
उत्तरांचल, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान,
बिहार, प. बंगाल, आसाम, छत्तीसगढ़,
मध्यप्रदेश, झारखण्ड, मणिपुर,
मेघालय, मिज़ोरम, अरुणाचल,
गुजरात, सिक्किम प्रदेश
तथा
नेपाल, भूटान, पाकिस्तान और बंगलादेश
के किसी भी नगर, उपनगर या ग्राम में अभीष्ट तारीख
को सूक्ष्मतम लग्न प्रारम्भकाल (घं. मि. से.)
केवल एक मिनट में
जानने के लिए दैवज्ञों को
एक

अद्वितीय उपहार

लेखक एवम् सम्पादक
प्रो. प्रियव्रत शर्मा
59/6 (अभिजित्), P.O. पंचकूला (हरियाणा)
PIN- 134 109
T. Phone- 0172-2565 303

श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग का
यह
लग्न विशेषांक

पाठकों से मैं क्षमा चाहता हूँ– गतवर्ष के पञ्चांग में, इसवर्ष "आयुसाधन–विशेषांक" प्रकाशित करने की सूचना दी गई थी, लेकिन स्वास्थ्य ठीक न होने के कारण, इस श्रमसाध्य विशेषांक को इसवर्ष प्रकाशित कर सकना सम्भव न हो सका। अब आयुसाधनसम्बन्धी यह विशेषांक स. 2065 वि. के पञ्चांग में प्रकाशित किया जाएगा।

इस "लग्न विशेषांक" में दी गई ये लग्न–सारणियां मेरी पुस्तक "शताब्दी विश्वकुण्डली दर्पण" से ली गई हैं, जिसमें पूरे विश्व की (0° से 66° उत्तरी एवम् दक्षिणी अक्षांशों की) लग्नसारणियां तथा सन् 1951 से 2050 ई. तक का सभी ग्रहों का राशिप्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.) दिया गया है। इस पुस्तक की मदद से इस 100 वर्ष की अवधि में विश्व के किसी भी स्थान पर उत्पन्न जातक की जन्मकुण्डली गुणा–भाग की प्रक्रिया के बिना तीन–चार साधारण जोड़–घटाव द्वारा ही केवल दो–तीन मिनट में कोई भी दैवज्ञ बना सकता है;– इसमें अतिशयोक्ति नहीं है।

पञ्चांग के इस विशेषांक भाग में उत्तर भारत के किसी भी प्रदेश में उत्पन्न जातक की इष्टकालिक लग्नराशि जानने के लिए 21° से 34° कलान्त उत्तर अक्षांशों की 14 लग्नसारणियां दी गई हैं। साथ ही जातक की जन्मकालिक लग्नराशि ज्ञात करने के लिए विस्तारपूर्वक अपेक्षित गणितप्रक्रिया, जिसमें जोड़–घटाव के अतिरिक्त और कुछ नहीं, 15–16 उदाहरणों सहित दी गई है। धैर्य से ये उदाहरण समझ लीजिए। आप देखेंगे, इन लग्नसारणियों से इष्टकालिक लग्नराशि जानने में वस्तुतः एक मिनट से अधिक समय नहीं लगता है। इन सारणियों से सन्धिगत (सन्देहास्पद) लग्नराशि ज्ञात करना भी इतना ही आसान है। इसका उदाहरण भी यहां देखिए। इसके लिए भी 1½ मिनट से अधिक समय अपेक्षित नहीं है।

विस्मयावह द्रुतगति एवं सरलता से परम सूक्ष्मतापूर्वक लग्नज्ञान के लिए मेरी यह पुस्तक "शताब्दी विश्वकुण्डली दर्पण" दैवज्ञों के लिए सचमुच एक वरदान है;– पंचांग का यह "लग्न विशेषांक" भाग इसे प्रमाणित करता है। इस पुस्तक का विस्तृत विज्ञापन इस पंचांग के अन्तिम पृष्ठों में देखिए।

इस विशेषांक की पाण्डुलिपिलेखन, उदाहरणों के चयन, तत्सम्बन्धी गणितप्रक्रिया एवम् उसकी शुद्धि–परीक्षा में नालाबलोग (पंचकूला) के निवासी मेरे प्रिय शिष्य चि. सुरेशानन्द गौतम से पर्याप्त सहयोग प्राप्त हुआ है। तदर्थ उसे मेरा हार्दिक आशीर्वाद है।

प्रियव्रत शर्मा,

59/6 (अभिजित्), पंचकूला–134 109

लग्न विशेषांक (सं. 2064 वि.)

विस्तृत विषयसूची

उत्तर भारत में मेषादि लग्नों का प्रारम्भकाल

(उत्तर भारत के किसी भी नगर, उपनगर एवम् गांव में अभीष्ट तारीख को अभीष्ट समय पर वर्तमान लग्नराशि सूक्ष्मता से ज्ञात कीजिए।)

जातक जब पैदा हुआ है, उस समय मेषादि लग्नों में से कौन–सा लग्न वहां विद्यमान है– यह आसानी से सूक्ष्मतापूर्वक जानने के लिए यहां पृ. **275** से **288** तक उत्तर अक्षांश 21° से 34° तक के लिए 14 लग्नसारणियां (लग्नारम्भसाधन सारणियां) दी जा रही हैं। ये सारणियां अक्षांश की प्रत्येक कला के लिए बनाई गई हैं; जिनसे उत्तर अक्षांश 21° से 34° के मध्य बसे उत्तर भारत (जम्मू–काश्मीर, हि. प्र., पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, दिल्ली, उत्तरांचल, उत्तरप्रदेश, मध्य प्रदेश, झारखण्ड, बिहार, प. बंगाल, मणिपुर, आसाम, मिज़ोरम, छत्तीसगढ़, अरुणाचल, नागालैण्ड, उड़ीसा व गुजरात) के किसी भी नगर, उपनगर, एवम् छोटे से छोटे गांव में उत्पन्न जातक का जन्मकालिक लग्न गुणा–भाग की प्रक्रिया के बिना, पांच–छः साधारण जोड़–घटाव द्वारा ही, अत्यन्त सरलतापूर्वक सूक्ष्मता से ज्ञात हो जाता है [1]।

लग्नसारणियों वाली अधिकतर पुस्तकों में लग्नसारणियां एक–एक या आधे–आधे अक्षांश के अन्तर पर दी रहती हैं, जिससे जातक के जन्मस्थलीय वास्तविक अक्षांश की लग्नसारणी के अभाव में ज्योतिषी लोग उस अक्षांश के समीपस्थ अक्षांश की लग्नसारणी का प्रयोग करने के लिए बाधित हो जाते हैं। इससे लग्नज्ञान सूक्ष्मता से नहीं हो पाता। **उदाहरणार्थ–** जातक के जन्मस्थल का अक्षांश यदि 30° 05′ अथवा 30° 55′ है तो इन अक्षांशों की लग्नसारणियों के अभाव में ज्योतिषी को क्रमशः अक्षांश 30° 00′ एवम् अक्षांश 31° 00′ की लग्नसारणी से ही लग्न का निर्णय करना पड़ेगा। परिणामस्वरूप, लग्नसाधन सूक्ष्मता से नहीं हो पाएगा। सन्धिगत लग्न की स्थिति में तो वहां लग्नराशि के गलत होने की भी पूरी सम्भावना रहती है। लेकिन यहां दी गईं लग्नसारणियां तो जन्मस्थल के कलान्त शुद्ध अक्षांश–अनुसार ही लग्ननिर्णय करती हैं। जन्मस्थलीय अक्षांश यदि 30° 05′ है तो ठीक 30° 05′ अक्षांश के अनुसार, अक्षांश यदि 30° 55′ है तो ठीक 30° 55′ अक्षांश के अनुसार ही लग्न का निर्धारण इन सारणियों द्वारा किया जाता है, जिससे स्थूलता या गलती का यहां कोई अवसर ही नहीं है।

यहां दी जा रही ये लग्नसारणियां (लग्नारम्भसाधन सारणियां) साम्पातिककाल (सां.का.) [2] द्वारा लग्न का प्रारम्भकाल बतलाती हैं। इन सारणियों में मेष, वृष आदि लग्नों के नीचे दिए गए घं. मि. से बाईं ओर पहले कॉलम में लिखे अक्षांशों के लिए इन लग्नों का प्रारम्भ(उदय)कालिक साम्पातिककाल है। जैसे– पृष्ठ **275** अक्षांश 21° 04′ के आगे मेष (मेष लग्न) के नीचे 19घं. 13मि. 38से. लिखा है, जो 21° 04′ अक्षांश वाले स्थल के लिए **मेष लग्न** का **प्रारम्भकालिक (उदयकालिक)** सां. का. है।

स्पष्ट है–इन सारणियों से इष्टकालिक लग्न जानने के लिए इष्टकालिक सां. का. जानना जरूरी है। इष्टकालिक सां. का. जानने की प्रक्रिया, जो अत्यन्त सरल है, इस प्रकार है–

इष्टकालिक साम्पातिककाल–साधन

इष्टकालिक साम्पातिककाल–साधन की प्रक्रिया में (जिसका निर्देश हम आगे करने जा रहे हैं) स्थानीय मध्यमकाल (स्था. म. का.) का ही प्रयोग होता है, स्टैण्डर्ड टाईम (स्टैं. टा.) का नहीं। अतः सबसे पहले क्षेत्रीय स्टैं. टा. को स्था. म. का. में आगे दी प्रक्रिया अनुसार बदलना होगा।

---

[1] *यहां पाठक को यह बतलाना जरूरी है कि– यहां दी गई ये लग्न सारणियां (लग्नारम्भसाधन सारणियां) भूकैन्द्रिक अक्षांशों के आधार पर बनाई गई हैं। अर्थात् इन सारणियों के बाईं ओर वाले पहले कॉलम में लिखे अक्षांश (अक्षांश कलाएं) भूकैन्द्रिक हैं। अतः इन सारणियों से लग्न ज्ञान के लिए जातक के जन्मस्थल के अक्षांशों को भूकैन्द्रिक संस्कार द्वारा भूकैन्द्रिक बना लेना चाहिए। ध्यान रहे, सभी एटलसों में दिए गए नगरों के अक्षांश भौगोलिक होते हैं। इस पंचांग में दी गई "अक्षांशादि सारणी" में दिए गए नगरों के अक्षांश भी भौगोलिक हैं। भूकैन्द्रिक संस्कार द्वारा ये भूकैन्द्रिक हो जाते हैं। भूकैन्द्रिक संस्कार के लिए पृष्ठ* ***274*** *पर दी गई* ***"अक्षांश में भूकैन्द्रिक संस्कार सारणी"*** *देखें।*

[2] *साम्पातिककाल किसे कहते हैं, यह कैसे बनाया जाता है– यह हम अभी आगे चलकर पाठक को स्पष्ट कर देंगे।*

स्थानीय मध्यमकाल जानने के लिए क्षेत्रीय स्टैं. टा. में इष्टस्थलीय (जातक के जन्मस्थलीय) स्टैण्डर्ड अन्तर (स्टैं. अं.) को चिह्न के अनुसार जोड़िए या घटाइए। यहां (पृष्ठ **177** से **186** तक) अक्षांशादि सारणी में भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश–रेखांशों के साथ उनका स्टैं. अं. भी चिह्नसहित दिया गया है। क्षेत्रीय स्टैं. टा. में स्टैं. अं. के मिनट–सैकण्डों को चिह्न के अनुसार जोड़ने–घटाने से प्राप्त **घं. मि. से. ही स्था. म. का. कहलाता है। स्पष्टता के लिए स्था. म. का. बनाने के ये दो उदाहरण देखिए–**

उदाहरण (1)– यदि जातक का जन्म अलीगढ़ (भारत) में 5 अप्रैल, सन् 1998 ई. को प्रातः 10घं. 30 मि. (भा. स्टैं. टा.) पर हुआ हो तो उसके जन्म का स्था. म. का. इस प्रकार जाना जाएगा–

घं.	मि.	से.	
10	30	00	(जन्म का क्षेत्रीय स्टैं. टा. = भा.स्टैं.टा.)
	–17	40	(अलीगढ़ का स्टैं. अं.)
10	**12**	**20**	**(जन्म का स्था. म. का.)**

उदाहरण (2)– जातक का जन्म पटना (भारत) में 14 अप्रैल, सन् 2000 ई. को 16घं. 45मि. (भा.स्टैं.टा.) पर हुआ हो तो उसके जन्म का स्था. म. का. इस प्रकार जानिए–

घं.	मि.	से.	
16	45	00	(जन्म का भा.स्टैं.टा.)
	+10	52	(पटना का स्टैं. अं.)
16	**55**	**52**	**(जन्म का स्था. म. का.)**

ध्यान दें– जब जातक का जन्म तारीख के प्रारम्भ/ समाप्ति (यानी क्षेत्रीय स्टैं. टा. के अनुसार 0घं. 0मि.) के आस–पास होता है, तब उसकी जन्मकालिक क्षेत्रीय स्टैं. टा. वाली (क्षे. स्टैं. टा. अनुसारी) तारीख[3] और स्था. म. का. वाली (स्था. म. का. अनुसारी) तारीख में अनेकदा एक दिन का अन्तर हो जाता है। **इस प्रकार के ये दो उदाहरण देखिए–**

उदाहरण (i)– कोलकाता में यदि कोई जातक 29 जुलाई, सन् 1981 ई. को 23 घं. 55 मि. (भा.स्टैं.टा.) पर पैदा हुआ हो तो उसकी क्षेत्रीय स्टैं. टा. और स्था.म.का. वाली तारीखें भिन्न–भिन्न होंगी। देखिए–

ता.	घं.	मि.	से.	
29	23	55	00	(भा.स्टैं.टा.; 29–7–1981)
		+24	00	(कोलकाता का स्टैं. अं.)
30	0	19	00	(स्था. म. का.; 30–7–1981)

देखिए–यहां क्षेत्रीय स्टैं. टा. वाली तारीख से स्था. म. का. वाली तारीख एक दिन आगे चली गई है।

उदाहरण (ii)– शिमला (हि.प्र.) में जातक का जन्म 15 अगस्त, सन् 2000 ई. को 0घं. 10 मि. (भा.स्टैं.टा.) पर हुआ। लेकिन स्थानीय मध्यमकालानुसार इस जातक की जन्म तारीख 14 अगस्त, सन् 2000 ई. है। देखिए–

ता.	घं.	मि.	से.	
15	0	10	00	(भा.स्टैं.टा.; 15–8–2000)
		–21	20	(शिमला का स्टैं. अं.)
14	23	48	40	(स्था. म. का.; 14–8–2000)

यहां यह विशेषरूप से दैवज्ञ को जान लेना चाहिए कि– **जहां क्षेत्रीय स्टैं. टा. और स्था. म. का. की तारीखों में अन्तर हो वहां साम्पातिककाल–साधनप्रक्रिया में (जिसका निर्देश हम अभी आगे करने जा रहे हैं) स्था. म. का. के साथ तारीख भी स्था. म. का. अनुसारी ही प्रयोग में लाई जाती है।**

इस प्रकार स्था. म. का. ज्ञात कर लेने पर इष्टकालिक साम्पातिककाल (सां.का.) जानना अत्यन्त सरल है। पृष्ठ **271** और **272** पर साम्पातिककाल–सारणियां दी गई हैं। इनके प्रयोग से इष्टकालिक सां.का. साधन साधारण जोड़–घटाव द्वारा लगभग एक मिनट में ही सरलता से किया जा सकता है।

[3] *लोगों द्वारा दैनिक व्यवहार में लाई जाने वाली तारीखें ही क्षेत्रीय स्टैं. टा. वाली तारीखें होती हैं।*

इष्टकालिक साम्पातिककाल—साधनप्रक्रिया

'साम्पातिककाल सारणी' (1) से अभीष्ट तारीख के घं. मि. से. उठाइए। इनमें **सारणी (2)** से अभीष्ट वर्षीय वर्षसंस्कार के मि. से. लेकर जोड़िए। इस योगफल में **सारणी (3)** से जन्मस्थलीय रेखांशों द्वारा प्राप्त रेखांशसंस्कार के सेकण्ड चिह्नानुसार जोड़ें या घटाएं। इस तरह प्राप्त घं. मि. से. में इष्टकालिक स्था.म.का. (जिसका साधनप्रकार हम पीछे बतला चुके हैं) के घं.मि.से. भी जोड़ दें। प्राप्त घं.मि.से. में स्था.म.का. के घं.मि. द्वारा **'साम्पातिककाल सारणी' (4)** से प्राप्त **'कालसंस्कार'** के मि. से. जोड़ दीजिए। बस यह **'इष्टकालिक साम्पातिककाल'** बन जाएगा।

साम्पातिककाल सारणियों से इष्टकालिक साम्पातिककाल बनाते समय निम्नलिखित निर्देशों को अवश्य ध्यान में रखें—

(i) यहां इन सारणियों से साम्पातिककाल—साधन की प्रक्रिया में केवल स्था. म. का. एवं स्था. म. का. अनुसारी वर्ष, मास और तारीख का ही प्रयोग होगा।

(ii) यदि स्था. म. का. अनुसारी जन्मवर्ष लीपइयर हो तो फरवरी के बाद (मार्च से दिसम्बर मास तक) की अभीष्ट तारीख में 1 जोड़कर **'साम्पातिककाल सारणी (1)** का प्रयोग करना चाहिए।

(iii) इन सारणियों से बनाए गए साम्पातिककाल के घण्टे यदि 24 या 24 से अधिक हों तो उनमें से 24 घण्टे घटाकर शेष को साम्पातिककाल समझना चाहिए।

स्पष्टता के लिए साम्पातिककाल साधन के तीन उदाहरण नीचे दिए जा रहे हैं—

उदाहरण (1)— अलीगढ़ (भारत) में 5 अप्रै., सन् 1998 ई. को प्रातः 10 घं. 30 मि. भा.स्टैं.टा. (10 घं. 12 मि. 20 से. स्था. म. का.) पर जन्मे जातक का जन्मकालीन साम्पातिककाल इस प्रकार बनेगा—

घं.	मि.	से.	
12	47	28	[सारणी (1), 5 अप्रैल]
	+04	55	[सारणी (2), वर्षसंस्कार, 1998 ई.]
12	52	23	
		−51	[सारणी (3), रेखांशसंस्कार, रेखांश 78° 05′ पू.]
12	51	32	
+10	12	20	[स्था. म. का.]
23	03	52	
	+01	40	[सारणी (4), कालसंस्कार, 10घं. 12मि.]
23	**05**	**32**	**[जन्मकालिक साम्पातिककाल]**

उदाहरण (2)— कोलकाता (भारत) में 29 जुलाई, सन् 1981 ई. को 23 घं. 55 मि. (भा. स्टैं. टा.) (0 घं. 19 मि. 00 से. स्था. म. का., 30 जुलाई, 1981 ई.) पर पैदा हुए जातक का जन्मकालिक साम्पातिककाल इस प्रकार जानेंगे—

घं.	मि.	से.	
20	24	49	[सारणी (1), 30 जुलाई]
	+05	23	[सारणी (2), वर्षसंस्कार, 1981 ई.]
20	30	12	
		−58	[सारणी (3), रेखांशसंस्कार, रेखांश 88° 24′ पू.]
20	29	14	
+ 0	19	00	[स्था. म. का.]
20	48	14	
	−00	03	[सारणी (4), कालसंस्कार, 0घं. 19मि.]
20	**48**	**17**	**[जन्मकालिक साम्पातिककाल]**

ध्यान दें–यहां क्षेत्रीय स्टैं. टा. के अनुसार जातक का जन्म 29 जुलाई, सन् 1981 ई. को और स्था. म. का. के अनुसार 30 जुलाई, 1981 ई. कों हुआ है। पूर्वोक्त नियमानुसार साम्पातिककाल–साधनार्थ हमने स्था. म. का. अनुसारी तारीख (30 जुलाई, 1981 ई.) का ही यहां प्रयोग किया है।

उदाहरण (3)– शिमला (हि.प्र.) में जातक 15 अगस्त, सन् 2000 ई. को 0 घं. 10 मि. (भा. स्टैं. टा.) (23घं. 48मि. 40 से. स्था. म. का., 14 अगस्त, सन् 2000 ई.) पर उत्पन्न हुआ। इसका जन्मकालिक साम्पातिककाल इस प्रकार प्राप्त होगा–

घं.	मि.	से.	
21	27	54	[सारणी (1), 15 अगस्त]
	+03	00	[सारणी (2), वर्षसंस्कार, 2000 ई.]
21	30	54	
		−50	[सारणी (3), रेखांशसंस्कार, रेखांश 77° 10′ पू.]
21	30	04	
+23	48	40	[स्था. म. का.]
45	18	44	
	+03	55	[सारणी (4), कालसंस्कार, 23घं. 49मि.]
45	22	39	
−24	00	00	[24 घण्टों से अधिक होने पर 24 घण्टे घटा दिए गए हैं।]
21	**22**	**39**	**[जन्मकालिक साम्पातिककाल]**

ध्यान दीजिए– यहां क्षेत्रीय स्टैं. टा. के अनुसार जातक का जन्म 15 अग., सन् 2000 ई. को और स्था. म. का. के अनुसार 14 अग., सन् 2000 ई. को हुआ है। पूर्वोक्त नियमानुसार साम्पातिककाल–साधन हेतु स्था. म. का. वाली तारीख 14 अग., सन् 2000 ई. को ही यहां उसका जन्म माना है, लेकिन लीपइयर एवं फरवरी के बाद की तारीख होने के कारण यहां सारणी (1) के प्रयोग के लिए अगली तारीख (15 अगस्त) को ही ग्रहण किया गया है।

इष्टकालिक साम्पातिककाल द्वारा लग्नराशि–निर्णय

उपरोक्त प्रकार से ज्ञात इष्टकालिक साम्पातिककाल द्वारा इष्टकालिक लग्नराशि ज्ञात करना नितान्त आसान है–

पृष्ठ **275** से **288** तक उत्तरी अक्षांश 21° 00′ से 34° 00′ तक की लग्नसारणियां (लग्नारम्भ–सारणिया) दी गईं हैं। हमारा इष्टकालिक सां. का. हमारे इष्टस्थल के भूकैन्द्रिक अक्षांश (अक्षांश कला) के आगे किन दो लग्नों के प्रारम्भकालिक साम्पातिककालों के मध्य पड़ता है, यह लग्नसारणी में देखिए। बस, इतने से ही आप तुरन्त जान लेंगे कि– आपका इष्टकालिक लग्न कौन–सा है। **उदाहरणार्थ**– यदि हमारा इष्टकालिक सां. का. कर्क एवं सिंह लग्नों के प्रारम्भकालिक साम्पातिककालों के मध्य पड़ता है तो स्पष्ट है, हमारा इष्टकालिक लग्न कर्क है। **अपि च**– उपरोक्त सां.का. साधन के उदाहरण में 5 अप्रैल, 1998 ई. को अलीगढ़ में 10 घं. 30 मि. (भा.स्टैं.टा.) पर सां. का. 23घं. 05मि. 32से. ज्ञात किया गया है। अलीगढ़ के भूकैन्द्रिक अक्षांश 27° 43′ (उत्तर) हैं। पृष्ठ **281** पर **'लग्नारम्भसाधन सारणी'** में 23घं. 05 मि. 32 से. सां. का. मिथुन और कर्क लग्नों के प्रारम्भकालिक साम्पातिककालों (22 घं. 40 मि. 32 से. और 0 घं. 55 मि. 08 से.) के मध्य पड़ता है। **स्पष्ट है**– जातक का यह जन्मकालिक सां. का. मिथुनलग्न की अवधि में है। अतः यहां जातक का जन्मकालिक लग्न मिथुन है– यह स्पष्ट हो गया।

लीजिए– अब उपरोक्त विभिन्न प्रक्रियाओं को और भी स्पष्ट करने के लिए यहां नीचे अनेक उदाहरण दे रहे हैं, जिनमें जातक के जन्मकालिक **स्थानीय मध्यमकाल** और **साम्पातिककाल** का साधन करते हुए तात्कालिक लग्नराशि का निर्णय किया जाएगा।

उदाहरण (1)–5 अप्रैल, 1998 ई. को प्रातः 10 घं. 36 मि. (भा.स्टैं.टा.) पर पंजाब के सनौर (पटियाला) में उत्पन्न जातक का जन्मकालिक स्थानीय मध्यमकाल (स्था.म.का.), साम्पातिककाल (सां. का.) और लग्नराशि ज्ञात करनी है।

स्थानीय मध्यमकाल–साधनः–

घं.	मि.	से.	
10	36	00	(भा. स्टैं. टा.)
	−24	08	(स्टैं. अं.)
10	11	52	(स्था. म. का.)

साम्पातिककाल–साधनः–

घं.	मि.	से.	
12	47	28	[सां.का.सारणी (1), 5 अप्रैल]
	+04	55	[सां.का.सारणी (2), वर्षसंस्कार, 1998 ई.]
12	52	23	
		−50	[सां.का.सारणी (3), रेखांशसंस्कार, रेखांश 76° 28′ पू.]
12	51	33	
+10	11	52	[स्था. म. का.]
23	03	25	
	+01	40	[सां.का.सारणी (4), कालसंस्कार, 10घं. 12मि.]
23	05	05	[इष्टकालिक साम्पातिककाल]

इस उदाहरण में हमारा इष्टकालिक साम्पातिककाल 23 घं. 05 मि. 05 से. है। पृष्ठ 284 पर दी गई "लग्नारम्भ–साधनसारणी" में हमारे अभीष्ट स्थान (सनौर) के भूकैन्द्रिक अक्षांश 30° 08′(उ.) के आगे मिथुन लग्न का प्रारम्भकालिक साम्पातिककाल 22 घं. 34 मि. 56 से. और कर्क लग्न का प्रारम्भकालिक साम्पातिककाल अर्थात् मिथुन का समाप्तिकालिक साम्पातिककाल 0 घं. 50 मि. 04 से. है। यहां स्पष्ट है– हमारा इष्टकालिक साम्पातिककाल (23 घं. 05 मि. 05 से.) मिथुन लग्न के काल में पड़ता है। इस प्रकार ज्ञात हुआ कि– हमारी इष्टकालिक लग्नराशि मिथुन है।

उदाहरण (2)– पंजाब के करतारपुर (जालन्धर) में 15 नवम्बर, 1988 ई. को 13 घं. 31 मि. (भा.स्टैं.टा.) पर उत्पन्न जातक का स्थानीय मध्यमकाल, साम्पातिककाल और लग्नराशि ज्ञात करें?

स्थानीय मध्यमकाल–साधनः–

घं.	मि.	से.	
13	31	00	(भा. स्टैं. टा.)
	−28	00	(स्टैं. अं. करतारपुर)
13	03	00	(स्था. म. का.)

साम्पातिककाल–साधनः–

घं.	मि.	से.	
3	34	33	[सां.का.सारणी (1), 16 नवं.[4]]
	+02	38	[सां.का.सारणी (2), वर्षसंस्कार, 1988 ई.]
3	37	11	
		−50	[सां.का.सारणी (3), रेखांशसंस्कार, रेखांश 75° 30′ पू.]
3	36	21	
+13	03	00	[स्था. म. का.]
16	39	21	
	+02	08	[सां.का.सारणी (4), कालसंस्कार, 13घं. 03मि.]
16	41	29	[इष्टकालिक साम्पातिककाल]

[4] *क्योंकि 1988 लीप इयर है और हमारी अभीष्ट तारीख फरवरी के बाद की है, अतः यहां पूर्वोक्त नियमानुसार 15 नवं. के स्थान पर 16 नवं. के घं. मि. सारणी (1 से लिए गए हैं।)*

लग्नराशि–निर्णय– करतारपुर (पं.) के भूकैन्द्रिक अक्षांश 31° 17′(उ.) के आगे "लग्नारम्भ–साधनसारणी" में कुम्भलग्न का प्रारम्भकालिक साम्पातिककाल 16 घं. 18 मि. 08 से. और इसका समाप्तिकालिक (मीन का प्रारम्भकालिक) सां. का. 17 घं. 43 मि. 07 से. है। यहां हमारा इष्टकालिक सां. का. (16 घं. 41 मि. 29 से.) कुम्भलग्न के काल (सां.का.) के मध्य पड़ता है। इसलिए यहां **इष्टकालिक लग्नराशि कुम्भ है**– यह स्पष्ट है।

उदाहरण (3)– साधुगढ़ (फतेहगढ़ साहिब) में 31 दिसम्बर, 2004 ई. को 1 घं. 05 मि. (भा. स्टैं. टा.) पर स्था. म. का., सां. का. और लग्नराशि का निर्णय करें ?

स्थानीय मध्यमकाल–साधनः–

घं.	मि.	से.	
1	05	00	(भा. स्टैं. टा.)
	–24	12	(स्टैं. अं. साधुगढ़)
0	40	48	(स्था. म. का.)

साम्पातिककाल–साधनः–

घं.	मि.	से.	
6	35	55	[सां.का.सारणी (1), 32 दिसं.[5]]
	+03	08	[सां.का.सारणी (2), वर्षसंस्कार, 2004 ई.]
6	39	03	
		–50	[सां.का.सारणी (3), रेखांशसंस्कार, रेखांश 76° 27′ पू.]
6	38	13	
+0	40	48	[स्था. म. का.]
7	19	01	
	+00	07	[सां.का.सारणी (4), कालसंस्कार, 0घं. 40मि.]
7	19	08	**[इष्टकालिक साम्पातिककाल]**

लग्नराशि–निर्णयः– साधुगढ़ (फतेहगढ़ साहिब) के भूकेन्द्रिक अक्षांश 30° 25′ (उ.) के आगे **'लग्नारम्भ – साधनसारणी'** में देखने से हमारा इष्टकालिक साम्पातिककाल (7 घं. 19 मि. 08 से.) **कन्यालग्न के साम्पातिककाल में** मिला। अतः यहां **इष्टकालिक लग्न कन्या है**– यह स्पष्ट है।

उदाहरण (4)– बारामूला(श्रीनगर) में 15 सितं., सन् 1954 ई. को 0 घं. 27 मि. (भा.स्टैं.टा.) पर स्था. म. का. सां. का. और लग्नराशि ज्ञात करनी है।

स्थानीय मध्यमकाल–साधनः–

ता.	घं.	मि.	से.	
15	0	27	00	(भा. स्टैं. टा.; 15–9–1954 ई.)
		–32	24	(स्टैं. अं. बारामूला)
14	23	54	36	(स्था. म. का.; 14–9–1954 ई.)

देखिए– यहां क्षेत्रीय स्टैं. टा. (भा. स्टैं. टा.) और स्था. म. का. की तारीखों में अन्तर है। भा. स्टैं. टा. के अनुसार यहां 15 सितंबर और स्था. म. का. के अनुसार 14 सितंबर है। **यह विशेष ध्यान देने योग्य है कि– साम्पातिककाल साधन करने के लिए पृष्ठ 271 पर दी गई साम्पातिककाल सारणी (1), (2) और (4) को प्रयोग में लाते हुए स्था. म. का. एवम् स्था. म. का. अनुसारी सन्, मास, तारीख का ही प्रयोग होता है**– यह पहिले भी स्पष्ट किया जा चुका है।

---

[5] ***ध्यान दें– लीप इयर में 31 दिसं. की जगह 32 दिसं. वाले घं. मि. ही "साम्पातिककाल सारणी" (1) से उक्त उदाहरण की तरह उद्धृत करने चाहिएं।***

साम्पातिककाल साधन–

घं.	मि.	से.	
23	26	10	[सां.का.सारणी (1), 14 सितं.(स्था.म.का. अनुसारी तारीख)]
	+03	34	[सां.का.सारणी (2), वर्षसंस्कार, 1954 ई.]
23	29	44	
		–49	[सां.का.सारणी (3), रेखांशसंस्कार, रेखांश 74° 24′ पू.]
23	28	55	
+23	54	36	[स्था. म. का.]
47	23	31	
	+03	56	[सां.का.सारणी (4), कालसंस्कार, 23घं. 54मि.,]
47	27	27	
–24	00	00	[24 घण्टों से अधिक होने पर 24 घण्टे घटा दिए गए हैं।]
23	27	27	**[इष्टकालिक साम्पातिककाल,]**

लग्नराशि–निर्णयः– बारामूला के भूकैन्द्रिक अक्षांश 34° 01′(उ.) के आगे 'लग्नारम्भ–साधनसारणी' में देखने से स्पष्ट हो जाता है कि हमारा इष्टकालिक साम्पातिककाल **मिथुनलग्न** में पड़ता है। अतः यहां इष्टकालिक लग्न **मिथुन** है।

उदाहरण (5)– उत्तरप्रदेश के बीसलपुर (बरेली) में 1 दिसं., 2001 ई. को 0 घं. 02 मि. भा. स्टैं. टा. पर स्था. म. का., सां. का. एवम् लग्नराशि मालूम कीजिए ?

स्थानीय मध्यमकाल–साधनः–

मास	ता.	घं.	मि.	से.	
12	1	0	02	00	(भा. स्टैं. टा.; 1–12–2001 ई.)
			–10	48	(स्टैं. अं. बीसलपुर)
11	30	23	51	12	**(स्था. म. का., 30–11–2001 ई.)**

देखिए– यहां क्षेत्रीय स्टैं. टा. और स्था. म. का. अनुसारी मास में भी अन्तर आ गया है।

साम्पातिककाल–साधनः–

घं.	मि.	से.	
4	29	45	[सां.का.सारणी (1), 30 नवं.(स्था.म.का. अनुसारी तारीख)]
	+05	59	[सां.का.सारणी (2), वर्षसंस्कार, 2001 ई.]
4	35	44	
		–53	[सां.का.सारणी (3), रेखांशसंस्कार, रेखांश 79° 48′ पू.]
4	34	51	
+23	51	12	[स्था. म. का.]
28	26	03	
	+03	55	[सां.का.सारणी (4), कालसंस्कार, 23घं. 51मि.,]
28	29	58	
–24	00	00	[24 घण्टों से अधिक होने पर 24 घण्टे घटा दिए हैं।]
4	29	58	**[इष्टकालिक साम्पातिककाल,]**

लग्नराशि–निर्णयः– बीसलपुर (उ.प्र.) के भूकैन्द्रिक अक्षांश 28° 08′ (उ.) के आगे 'लग्नारम्भ–साधनसारणी' में देखने से पता चलता है कि– हमारा इष्टकालिक साम्पातिककाल **सिंहलग्न** के काल में पड़ता है। अतः यहां इष्टकालिक लग्न **सिंह** है।

उदाहरण (6)– हि.प्र. के चामुण्डा जी (कांगड़ा) में 1 मार्च, 2004 ई. को 0 घं. 15 मि. (भा. स्टैं.टा.) पर जन्मे जातक का जन्मकालिक स्था.म.का., सां.का. और लग्नराशि का निर्णय कीजिए?

स्थानीय मध्यमकाल–साधनः–

मास	ता.	घं.	मि.	से.	
3	1	0	15	00	(भा. स्टैं. टा.; 1– 3–2004 ई.)
			–24	28	(स्टैं. अं. चामुण्डा जी)
2	29	23	50	32	(स्था. म. का., 29– 2–2004 ई.)

देखिए– यहां स्था. म. का. अनुसारी तारीख एक पीछे चली गई है। अतः पूर्वोक्त निर्देशानुसार यहां सां.का. सारणियों के प्रयोग में इसी (29 फर., 04) तारीख का प्रयोग होगा।

साम्पातिककाल–साधनः–

घं.	मि.	से.	
10	29	29	[सां.का.सारणी (1), 29 फर.(स्था.म.का. अनुसारी तारीख)]
	+03	08	[सां.का.सारणी (2), वर्षसंस्कार, 2004 ई.]
10	32	37	
		–50	[सां.का.सारणी (3), रेखांशसंस्कार, रेखांश 76° 23′ पू.]
10	31	47	
+23	50	32	[स्था. म. का.]
34	22	19	
	+03	55	[सां.का.सारणी (4), कालसंस्कार, 23घं. 51मि.,]
34	26	14	
–24	00	00	[24 घण्टे घटा दिए गए हैं।]
10	26	14	**[इष्टकालिक साम्पातिककाल]**

लग्नराशि–निर्णयः– हमारे इष्टस्थल (चामुण्डा जी) के भूकेन्द्रिक अक्षांश 31° 57′ (उ.) के आगे **'लग्नारम्भ साधनसारणी'** में हमारा इष्टकालिक सां. का. वृश्चिक लग्नकाल के भीतर पड़ता है। अतः **इष्टकालिक लग्न वृश्चिक है।**

उदाहरण (7)– हरियाणा के पिहोवा (कुरुक्षेत्र) में 1 जनवरी, 1989 ई. को 0 घं. 15 मि. (भा. स्टैं. टा.) पर स्था. म. का., सां. का. और लग्नराशिसाधन कीजिए ?

स्थानीय मध्यमकाल साधन–

सन्	मास	ता.	घं.	मि.	से.	
1989	1	1	0	15	00	(भा. स्टैं. टा.; 1– 1–1989 ई.)
				–23	32	(स्टैं. अं. पिहोवा)
1988	12	31	23	51	28	(स्था. म. का., 31–12–1988 ई.)

स्पष्ट है– यहां स्थानीय मध्यमकाल अनुसार वर्ष, मास और तारीख, तीनों में अन्तर आ गया है। साम्पातिककाल–साधनार्थ स्थानीय मध्यमकाल अनुसारी वर्ष, मास एवम् तारीख प्रयोग में लाई जाएगी– यह पहिले ही बतला चुके हैं।

साम्पातिककाल–साधनः–

घं.	मि.	से.	
6	35	55	[सां.का.सारणी (1), 32 दिसं.[6]]
	+02	38	[सां.का.सारणी (2), वर्षसंस्कार, 1988 ई..(स्था.म.का. अनुसारी वर्ष)]
6	38	33	
		–50	[सां.का.सारणी (3), रेखांशसंस्कार, रेखांश 76° 37´ पू.]
6	37	43	
+23	51	28	[स्था. म. का.]
30	29	11	
	+03	55	[सां.का.सारणी (4), कालसंस्कार, 23घं. 51मि.]
30	33	06	
–24	00	00	[24 घण्टे घटा दिए गए हैं।]
6	33	06	[इष्टकालिक साम्पातिककाल.]

लग्नराशि–निर्णयः– **"लग्नारंभ–साधनसारणी"** में पिहोवा के भूकैन्द्रिक अक्षांश 29° 47´ के आगे देखने से ज्ञात होता है कि– हमारा इष्टकालिक सां. का. **कन्या लग्नकाल** के अन्तर्गत पड़ता है। सष्ट है, यहां इष्टकालिक **लग्न कन्या** है।

उदाहरण (8)– प. बंगाल के मैनागुड़ी (जलपाईगुड़ी) में 29 फर., 2004 ई. को 23 घं. 50 मि. (भा. स्टैं. टा.) पर स्था. म. का., सां. का. और लग्नराशि ज्ञात कीजिए ?

स्थानीय मध्यमकाल–साधनः–

मास	ता.	घं.	मि.	से.	
2	29	23	50	00	(भा. स्टैं. टा.; 29– 2–2004 ई.)
			+25	16	(स्टैं. अं. मैनागुड़ी)
3	1	0	15	16	(स्था. म. का., 1–3–2004 ई.)

ध्यान दीजिए– यहां क्षेत्रीय स्टैं. टा. अनुसार तारीख भले ही 29 फर., 2004 ई. है, तथापि स्थानीयमध्यमकाल–अनुसार 1 मार्च, 2004 ई. मानी जाएगी और इसी के अनुसार साम्पातिककाल सारणी (1), (2) और (4) का प्रयोग करते हुए साम्पातिककाल–साधन किया जाएगा– यह स्पष्ट है।

साम्पातिककाल–साधनः–

घं.	मि.	से.	
10	33	26	[सां.का.सारणी (1), 2 मार्च [7]]
	+03	08	[सां.का.सारणी (2), वर्षसंस्कार, 2004 ई.]
10	36	34	
		–58	[सां.का.सारणी (3), रेखांशसंस्कार, रेखांश 88° 49´ पू.]
10	35	36	
+ 0	15	16	[स्था. म. का.]
10	50	52	
	+00	02	[सां.का.सारणी (4), कालसंस्कार, 0 घं. 15 मि.]
10	50	54	[इष्टकालिक साम्पातिककाल.]

[6] ***ध्यान दें–लीप इयर होने के कारण यहां 31 दिसं. की जगह 32 दिसं. के घं. मि. से. "साम्पातिककाल सारणी" (1) से लिए गए हैं।***

[7] **लीप इयर होने के कारण 1 मार्च की जगह 2 मार्च के घं. मि. से. साम्पातिककाल सारणी (1) से उठाए गए हैं।**

लग्नराशि–निर्णयः– मैनागुड़ी (बं.) के भूकैन्द्रिक अक्षांश 26° 25′ (उ.) के आगे 'लग्नारम्भ–साधनसारणी' में हमारा इष्टकालिक सां.का. **वृश्चिक लग्नकाल** के भीतर पड़ता है। अतः **इष्टकालिक लग्न वृश्चिक** है।

उदाहरण (9)– झारखण्ड, मधुपुर (देवघर) में 15 मई, 2007 ई. को 14 घं. 36 मि. (भा.स्टैं.टा.) पर लग्नराशि ज्ञात कीजिए ?

स्थानीय मध्यमकाल–साधनः–

घं.	मि.	से.	
14	36	00	(भा. स्टैं. टा.)
	+16	36	(स्टैं. अं. मधुपुर)
14	52	36	(स्था. म. का.)

साम्पातिककाल–साधनः–

घं.	मि.	से.	
15	25	11	[सां.का.सारणी (1), 15 मई]
	+04	12	[सां.का.सारणी (2), वर्षसंस्कार, 2007 ई.]
15	29	23	
		−56	[सां.का.सारणी (3), रेखांशसंस्कार, रेखांश 86° 39′ पू.]
15	28	27	
+14	52	36	[स्था. म. का.]
30	21	03	
	+ 2	27	[सां.का.सारणी (4), कालसंस्कार, 14 घं. 53 मि.]
30	23	30	
−24	00	00	[24 घं. घटाए गए हैं।]
6	23	30	[इष्टकालिक साम्पातिककाल.]

लग्नराशि–निर्णयः– मधुपुर' (देवघर.), झारखण्ड के भूकैन्द्रिक अक्षांश 24° 07′ (उ.) के आगे 'लग्नारम्भ साधनसारणी' में देखने पर इष्टकालिक लग्न कन्या प्राप्त होता है।

उदाहरण (10)– झारखण्ड के बरकाकागा (रांची) में 10 जून, 2008 ई. को 0 घं. 20 मि. (भा.स्टैं.टा.) पर कौन–सा लग्न होगा ?

स्थानीय मध्यमकाल–साधनः–

घं.	मि.	से.	
0	20	00	(भा. स्टैं. टा.)
	+11	56	(स्टैं. अं. बरकाकागा)
0	31	56	(स्था. म. का.)

साम्पातिककाल–साधनः–

घं.	मि.	से.	
17	11	38	[सां.का.सारणी (1), लीपइयर की वजह से 11 जून के घं. मि. लिए गए हैं।]
	+03	15	[सां.का.सारणी (2), वर्षसंस्कार, 2008 ई.]
17	14	53	
		−56	[सां.का.सारणी (3), रेखांशसंस्कार, रेखांश 85° 29′ पू.]
17	13	57	
+ 0	31	56	[स्था. म. का.]
17	45	53	
	+ 0	05	[सां.का.सारणी (4), कालसंस्कार, 0 घं. 32 मि.]
17	45	58	[इष्टकालिक साम्पातिककाल.]

लग्नराशि–निर्णयः– बरकाकागा (झारखण्ड) के भूकैन्द्रिक अक्षांश 23° 28′ (उ.) के आगे **'लग्नारम्भ साधनसारणी'** में हमारा इष्टकालिक सां. का. मीन लग्न के भीतर पड़ता है। अतः यहां **इष्टकालिक लग्नराशि** मीन रहेगी।

सन्धिगत (सन्देहास्पद) लग्न

जब कभी हमारे इष्टकालिक साम्पातिककाल का हमारी अभीष्ट अक्षांश वाली **'लग्नारम्भ साधनसारणी'** में दिए गए लग्न के साम्पातिककाल (आरम्भकालिक साम्पातिककाल) से अन्तर 4 मिनट से कम उपलब्ध हो तब उस लग्न को सन्धिगत (सन्देहास्पद) स्थिति में मानना चाहिए। इस स्थिति में हमें उस लग्न के **'लग्नारम्भ–साधनसारणी'** वाले साम्पातिककाल में **अयनांश–संस्कार** करने की आवश्यकता होगी। '' **''अयनांश–संस्कार–सारणी''** पृष्ठ **273** पर दी गई है।

सन्धिगत (सन्देहास्पद) लग्न का भी एक उदाहरण यह लीजिए–

उदाहरण – घाटल (प. बंगाल) में 10 फरवरी, 1968 ई. को 17 घं. 44 मि. (भा. स्टैं. टा.) पर यथार्थ लग्नराशि ज्ञात करनी है।

स्थानीय मध्यमकाल–साधनः–

घं.	मि.	से.	
17	44	00	(भा. स्टैं. टा.)
	+20	52	(स्टैं. अं. घाटल)
18	**04**	**52**	**(स्था. म. का.)**

साम्पातिककाल–साधनः–

घं.	मि.	से.	
9	14	34	[सां.का.सारणी (1), 10 फरवरी]
	+02	01	[सां.का.सारणी (2), वर्षसंस्कार, 1968 ई.]
9	16	35	
		–58	[सां.का.सारणी (3), रेखांशसंस्कार, रेखांश 87° 43′ पू.]
9	15	37	
+18	04	52	[स्था. म. का.]
27	20	29	
	+02	58	[सां.का.सारणी (4), कालसंस्कार, 18 घं. 05 मि.]
27	23	27	
–24	00	00	[24 घं. घटाए गए हैं।]
3	**23**	**27**	**[इष्टकालिक साम्पातिककाल.]**

अब देखिए– **'लग्नारम्भ साधनसारणी'** में घाटल के भूकैन्द्रिक अक्षांश 22° 32′ (उ.) के आगे सिंहराशि का प्रारम्भकालिक सां. का. 3 घं. 21 मि. 17 से. है। इसका हमारे इष्टकालिक सां. का. से अन्तर केवल 2 मि. 10 से. (4 मि. से कम) है। अतः यहां सिंह लग्न सन्देहास्पद है। इसलिए अब सिंह राशि के प्रारम्भकालिक इस **साम्पातिककाल** (3 घं. 21 मि. 17 से.) में **''अयनांश संस्कारसारणी''** से अभीष्ट सन् 1968 और अभीष्ट लग्न सिंह द्वारा प्राप्त 1 मि. 30 से. के संस्कार को चिह्नानुसार घटाने पर सिंह लग्न का वास्तविक (सूक्ष्मतम) प्रारम्भकालिक साम्पातिककाल 3घं. 19 मि. 47 से. प्राप्त हुआ। हमारे इष्टकालिक साम्पातिककाल 3 घं. 23 मि. 27 से. से स्पष्ट है कि–यहां सिंहलग्न का प्रारम्भ 4 मिनट पहले ही हो चुका है। अतः हमारे इष्ट समय पर घाटल में सिंह लग्न ही था– यह स्पष्ट है।

साम्पातिककाल सारणी (1)

(लीप इयर हो तो फरवरी के बाद (मार्च से दिसंबर तक के महीनां में) अभीष्ट तारीख में एक जोड़ कर इस सारणी का प्रयोग करें।)

तारीख	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितंबर	अक्तूबर	नवंबर	दिसंबर
	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.
1	6 36 52	8 39 05	10 29 29	12 31 42	14 29 59	16 32 12	18 30 29	20 32 42	22 34 55	0 33 12	2 35 25	4 33 42
2	6 40 49	8 43 02	10 33 26	12 35 39	14 33 56	16 36 09	18 34 26	20 36 39	22 38 52	0 37 09	2 39 22	4 37 39
3	6 44 45	8 46 58	10 37 22	12 39 35	14 37 52	16 40 05	18 38 22	20 40 35	22 42 48	0 41 05	2 43 18	4 41 35
4	6 48 42	8 50 55	10 41 19	12 43 32	14 41 49	16 44 02	18 42 19	20 44 32	22 46 45	0 45 02	2 47 15	4 45 32
5	6 52 38	8 54 51	10 45 15	12 47 28	14 45 45	16 47 58	18 46 15	20 48 28	22 50 41	0 48 58	2 51 11	4 49 28
6	6 56 35	8 58 48	10 49 12	12 51 25	14 49 42	16 51 55	18 50 12	20 52 25	22 54 38	0 52 55	2 55 08	4 53 25
7	7 00 31	9 02 44	10 53 08	12 55 21	14 53 38	16 55 51	18 54 08	20 56 21	22 58 34	0 56 51	2 59 04	4 57 21
8	7 04 28	9 06 41	10 57 05	12 59 18	14 57 35	16 59 48	18 58 05	21 00 18	23 02 31	1 00 48	3 03 01	5 01 18
9	7 08 24	9 10 37	11 01 01	13 03 14	15 01 31	17 03 44	19 02 01	21 04 14	23 06 27	1 04 44	3 06 57	5 05 14
10	7 12 21	9 14 34	11 04 58	13 07 11	15 05 28	17 07 41	19 05 58	21 08 11	23 10 24	1 08 41	3 10 54	5 09 11
11	7 16 18	9 18 31	11 08 55	13 11 08	15 09 25	17 11 38	19 09 55	21 12 08	23 14 21	1 12 36	3 14 51	5 13 08
12	7 20 14	9 22 27	11 12 51	13 15 04	15 13 21	17 15 34	19 13 51	21 16 04	23 18 17	1 16 34	3 18 47	5 17 04
13	7 24 11	9 26 24	11 16 48	13 19 01	15 17 18	17 19 31	19 17 48	21 20 01	23 22 14	1 20 31	3 22 44	5 21 01
14	7 28 07	9 30 20	11 20 44	13 22 57	15 21 14	17 23 27	19 21 44	21 23 57	23 26 10	1 24 27	3 26 40	5 24 57
15	7 32 04	9 34 17	11 24 41	13 26 54	15 25 11	17 27 24	19 25 41	21 27 54	23 30 07	1 28 24	3 30 37	5 28 54
16	7 36 00	9 38 13	11 28 37	13 30 50	15 29 07	17 31 20	19 29 37	21 31 50	23 34 03	1 32 20	3 34 33	5 32 50
17	7 39 57	9 42 10	11 32 34	13 34 47	15 33 04	17 35 17	19 33 34	21 35 47	23 38 00	1 36 17	3 38 30	5 36 47
18	7 43 53	9 46 06	11 36 30	13 38 43	15 37 00	17 39 13	19 37 30	21 39 43	23 41 56	1 40 13	3 42 26	5 40 43
19	7 47 50	9 50 03	11 40 27	13 42 40	15 40 57	17 43 10	19 41 27	21 43 40	23 45 53	1 44 10	3 46 23	5 44 40
20	7 51 47	9 54 00	11 44 24	13 46 37	15 44 54	17 47 07	19 45 24	21 47 37	23 49 50	1 48 07	3 50 20	5 48 37
21	7 55 43	9 57 56	11 48 20	13 50 33	15 48 50	17 51 03	19 49 20	21 51 33	23 53 46	1 52 03	3 54 16	5 52 33
22	7 59 40	10 01 53	11 52 17	13 54 30	15 52 47	17 55 00	19 53 17	21 55 30	23 57 43	1 56 00	3 58 13	5 56 30
23	8 03 36	10 05 49	11 56 13	13 58 26	15 56 43	17 58 56	19 57 13	21 59 26	0 01 39	1 59 56	4 02 09	6 00 26
24	8 07 33	10 09 46	12 00 10	14 02 23	16 00 40	18 02 53	20 01 10	22 03 23	0 05 36	2 03 53	4 06 06	6 04 23
25	8 11 29	10 13 42	12 04 06	14 06 19	16 04 36	18 06 49	20 05 06	22 07 19	0 09 32	2 07 49	4 10 02	6 08 19
26	8 15 26	10 17 39	12 08 03	14 10 16	16 08 33	18 10 46	20 09 03	22 11 16	0 13 29	2 11 46	4 13 59	6 12 16
27	8 19 22	10 21 35	12 11 59	14 14 12	16 12 29	18 14 42	20 12 59	22 15 12	0 17 25	2 15 42	4 17 55	6 16 12
28	8 23 19	10 25 32	12 15 56	14 18 09	16 16 26	18 18 39	20 16 56	22 19 09	0 21 22	2 19 39	4 21 52	6 20 09
29	8 27 16	(10 29 29)	12 19 53	14 22 06	16 20 23	18 22 36	20 20 53	22 23 06	0 25 19	2 23 36	4 25 49	6 24 06
30	8 31 12	.	12 23 49	14 26 02	16 24 19	18 26 32	20 24 49	22 27 02	0 29 15	2 27 32	4 29 45	6 28 02
31	8 35 09	.	12 27 46	.	16 28 16	.	20 28 46	22 30 59	.	2 31 29	.	6 31 59
32	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	6 35 55

साम्पातिककाल सारणी (2) (वर्षसंस्कार)

सन्	मि. से.	सन्	मि. से.	सन्	मि. से.	सन्	मि. से.	सन्	मि. से.	सन्	मि. से.	सन्	मि. से.	सन्	मि. से.	सन्	मि. से.	सन्	मि. से.
1901	2 55	1921	3 32	1941	4 09	1961	4 46	1981	5 23	2001	5 59	2021	6 36	2041	7 13	2061	7 50	2081	8 27
1902	1 57	1922	2 34	1942	3 11	1962	3 48	1982	4 25	2002	5 02	2022	5 39	2042	6 16	7062	6 53	2082	7 30
1903	1 00	1923	1 37	1943	2 14	1963	2 51	1983	3 28	2003	4 05	2023	4 42	2043	5 19	2063	5 56	2083	6 33
1904	0 03	1924	0 40	1944	1 17	1964	1 54	1984	2 31	2004	3 08	2024	3 45	2044	4 21	2064	4 58	2084	5 35
1905	3 02	1925	3 39	1945	4 16	1965	4 53	1985	5 30	2005	6 07	2025	6 44	2045	7 21	2065	7 58	2085	8 35
1906	2 05	1926	2 42	1946	3 19	1966	3 56	1986	4 33	2006	5 10	2026	5 46	2046	6 23	2066	7 00	2088	7 37
1907	1 08	1927	1 45	1947	2 21	1967	2 58	1987	3 35	2007	4 12	2027	4 49	2047	5 26	2067	6 03	2087	6 40
1908	0 10	1928	0 47	1948	1 24	1968	2 01	1988	2 38	2008	3 15	2028	3 52	2048	4 29	2068	5 06	2088	5 43
1909	3 10	1929	3 46	1949	4 23	1969	5 00	1989	5 37	2009	6 14	2029	6 51	2049	7 28	2069	8 05	2089	8 42
1910	2 12	1930	2 49	1950	3 26	1970	4 03	1990	4 40	2010	5 17	2030	5 54	2050	6 31	2070	7 08	2090	7 45
1911	1 15	1931	1 52	1951	2 29	1971	3 06	1991	3 43	2011	4 20	2031	4 57	2051	5 34	2071	6 10	2091	6 47
1912	0 18	1932	0 55	1952	1 32	1972	2 08	1992	2 45	2012	3 22	2032	3 59	2052	4 36	2072	5 13	2092	5 50
1913	3 17	1933	3 54	1953	4 31	1973	5 08	1993	5 45	2013	6 22	2033	6 59	2053	7 35	2073	8 12	2093	8 49
1914	2 20	1934	2 57	1954	3 34	1974	4 10	1994	4 47	2014	5 24	2034	6 01	2054	6 38	2074	7 15	2094	7 52
1915	1 22	1935	2 00	1955	2 36	1975	3 13	1995	3 50	2015	4 27	2035	5 04	2055	5 41	2075	6 18	2095	6 55
1916	0 25	1936	1 02	1956	1 39	1976	2 16	1996	2 53	2016	3 30	2036	4 07	2056	4 44	2076	5 21	2096	5 57
1917	3 24	1937	4 01	1957	4 38	1977	5 15	1997	5 52	2017	6 29	2037	7 06	2057	7 43	2077	8 20	2097	8 57
1918	2 27	1938	3 04	1958	3 41	1978	4 18	1998	4 55	2018	5 32	2038	6 09	2058	6 46	2078	7 23	2098	7 59
1919	1 30	1939	2 07	1959	2 44	1979	3 20	1999	3 57	2019	4 34	2039	5 11	2059	5 48	2079	6 25	2099	7 02
1920	0 32	1940	1 09	1980	1 46	1980	2 23	2000	3 00	2020	3 37	2040	4 14	2060	4 51	2080	5 28	2100	8 05

साम्पातिककाल सारणी (3)

(रेखांश संस्कार)

रेखांश पूर्व अंश	संस्कार सेकण्ड	रेखांश पूर्व अंश	संस्कार सेकण्ड	रेखांश पूर्व अंश	संस्कार सेकण्ड	रेखांश पूर्व अंश	संस्कार सेकण्ड	रेखांश पश्चिम अंश	संस्कार सेकण्ड	रेखांश पश्चिम अंश	संस्कार सेकण्ड	रेखांश पश्चिम अंश	संस्कार सेकण्ड	रेखांश पश्चिम अंश	संस्कार सेकण्ड
0	0	46	-30	92	- 60	138	- 91	0	0	46	+ 30	92	+ 60	138	+91
2	- 1	48	32	94	62	140	92	2	+ 1	48	32	94	62	140	92
4	3	50	33	96	63	142	93	4	3	50	33	96	63	142	93
6	4	52	34	98	64	144	94	6	4	52	34	98	64	144	94
8	5	54	35	100	66	146	96	8	5	54	35	100	66	146	96
10	7	56	37	102	67	148	97	10	7	56	37	102	67	148	97
12	8	58	38	104	68	150	99	12	8	58	38	104	68	150	99
14	9	60	39	106	70	152	100	14	9	60	39	106	70	152	100
16	10	62	41	108	71	154	101	16	10	62	1	108	71	154	101
18	12	64	42	110	72	156	102	18	12	64	42	110	72	156	102
20	13	66	43	112	74	158	104	20	13	66	43	112	74	158	104
22	14	68	45	114	75	160	105	22	14	68	45	114	75	160	105
24	16	70	46	116	76	162	106	24	16	70	46	116	76	162	106
26	17	72	47	118	78	164	108	26	17	72	47	118	78	164	108
28	18	74	49	120	79	166	109	28	18	74	49	120	79	166	109
30	20	76	50	122	80	168	110	30	20	76	50	122	80	168	110
32	21	78	51	124	81	170	112	32	21	78	51	124	81	170	112
34	22	80	53	126	83	172	113	34	22	80	53	126	83	172	113
36	24	82	54	128	84	174	114	36	24	82	54	128	84	174	114
38	25	84	55	130	85	176	116	38	25	84	55	130	85	176	116
40	26	86	56	132	87	178	117	40	26	86	56	132	87	178	117
42	27	88	58	134	88	180	-118	42	27	88	58	134	88	180	+118
44	-29	90	- 59	136	- 89			44	+ 29	90	+ 59	136	+ 89		

साम्पातिककाल सारणी (4)

(काल संस्कार)

मि.→	0	5	10	15	20	25	30	35	40	45	50	55
घं.↓	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.
0	0 00	0 01	0 02	0 02	0 03	0 04	0 05	0 06	0 07	0 07	0 08	0 09
1	0 10	0 11	0 11	0 12	0 13	0 14	0 15	0 16	0 16	0 17	0 18	0 19
2	0 20	0 21	0 21	0 22	0 23	0 24	0 25	0 25	0 26	0 27	0 28	0 29
3	0 30	0 30	0 31	0 32	0 33	0 34	0 34	0 35	0 36	0 37	0 38	0 39
4	0 39	0 40	0 41	0 42	0 43	0 44	0 44	0 45	0 46	0 47	0 48	0 48
5	0 49	0 50	0 51	0 52	0 53	0 53	0 54	0 55	0 56	0 57	0 57	0 58
6	0 59	1 00	1 01	1 02	1 02	1 03	1 04	1 05	1 06	1 07	1 07	1 08
7	1 09	1 10	1 11	1 11	1 12	1 13	1 14	1 15	1 16	1 16	1 17	1 18
8	1 19	1 20	1 20	1 21	1 22	1 23	1 24	1 25	1 25	1 26	1 27	1 28
9	1 29	1 30	1 30	1 31	1 32	1 33	1 34	1 34	1 35	1 36	1 37	1 38
10	1 39	1 39	1 40	1 41	1 42	1 43	1 43	1 44	1 45	1 46	1 47	1 48
11	1 48	1 49	1 50	1 51	1 52	1 53	1 53	1 54	1 55	1 56	1 57	1 57
12	1 58	1 59	2 00	2 01	2 02	2 02	2 03	2 04	2 05	2 06	2 06	2 07
13	2 08	2 09	2 10	2 11	2 11	2 12	2 13	2 14	2 15	2 16	2 16	2 17
14	2 18	2 19	2 20	2 20	2 21	2 22	2 23	2 24	2 25	2 25	2 26	2 27
15	2 28	2 29	2 29	2 30	2 31	2 32	2 33	2 34	2 34	2 35	2 36	2 37
16	2 38	2 39	2 39	2 40	2 41	2 42	2 43	2 43	2 44	2 45	2 46	2 47
17	2 48	2 48	2 49	2 50	2 51	2 52	2 52	2 53	2 54	2 55	2 56	2 57
18	2 57	2 58	2 59	3 00	3 01	3 02	3 02	3 03	3 04	3 05	3 06	3 06
19	3 07	3 08	3 09	3 10	3 11	3 11	3 12	3 13	3 14	3 15	3 15	3 16
20	3 17	3 18	3 19	3 20	3 20	3 21	3 22	3 23	3 24	3 25	3 25	3 26
21	3 27	3 28	3 29	2 29	3 30	3 31	3 32	3 33	3 34	3 34	3 35	3 36
22	3 37	3 38	3 38	3 39	3 40	3 41	3 42	3 43	3 43	3 44	3 45	3 46
23	3 47	3 48	3 48	3 49	3 50	3 51	3 52	3 52	3 53	3 54	3 55	3 56
24	3 56	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -

अयनांश संस्कार सारणी

सन्	मेष, वृष, कुम्भ, मीन लग्नों के लिए संस्कार मि. से.	शेष लग्नों * के लिए संस्कार मि. से.	सन्	मेष, वृष, कुम्भ, मीन लग्नों के लिए संस्कार मि. से.	शेष लग्नों* के लिए संस्कार मि. से.	सन्	मेष, वृष, कुम्भ, मीन लग्नों के लिए संस्कार मि. से.	शेष लग्नों * के लिए संस्कार मि. से.	सन्	मेष, वृष, कुम्भ, मीन लग्नों के लिए संस्कार मि. से.	शेष लग्नों * के लिए संस्कार मि. से.
1951	−1 57	−2 31	1971	−1 01	−1 19	1991	−0 06	−0 07	2011	+0 50	+1 05
1952	−1 54	−2 27	1972	−0 59	−1 15	1992	−0 03	−0 04	2012	+0 53	+1 08
1953	−1 52	−2 24	1973	−0 56	−1 12	1993	−0 00	0 00	2013	+0 56	+1 12
1954	−1 49	−2 20	1974	−0 53	−1 08	1994	+0 03	+0 04	2014	+0 58	+1 15
1955	−1 46	−2 16	1975	−0 50	−1 05	1995	+0 06	+0 07	2015	+1 01	+1 19
1956	−1 43	−2 13	1976	−0 47	−1 01	1996	+0 08	+0 11	2016	+1 04	+1 22
1957	−1 40	−2 09	1977	−0 45	−0 57	1997	+0 11	+0 14	2017	+1 07	+1 26
1958	−1 38	−2 06	1978	−0 42	−0 54	1998	+0 14	+0 18	2018	+1 10	+1 30
1959	−1 35	−2 02	1979	−0 39	−0 50	1999	+0 17	+0 21	2019	+1 13	+1 33
1960	−1 32	−1 58	1980	−0 36	−0 47	2000	+0 19	+0 25	2020	+1 15	+1 37
1961	−1 29	−1 55	1981	−0 33	−0 43	2001	+0 22	+0 29	2021	+1 18	+1 40
1962	−1 26	−1 51	1982	−0 31	−0 39	2002	+0 25	+0 32	2022	+1 21	+1 44
1963	−1 24	−1 48	1983	−0 28	−0 36	2003	+0 28	+0 36	2023	+1 24	+1 48
1964	−1 21	−1 44	1984	−0 25	−0 32	2004	+0 31	+0 39	2024	+1 26	+1 51
1965	−1 18	−1 40	1985	−0 22	−0 29	2005	+0 33	+0 43	2025	+1 29	+1 55
1966	−1 15	−1 37	1986	−0 19	−0 25	2006	+0 36	+0 47	2026	+1 32	+1 58
1967	−1 13	−1 33	1987	−0 17	−0 21	2007	+0 39	+0 50	2027	+1 35	+2 02
1968	−1 10	−1 30	1988	−0 14	−0 18	2008	+0 42	+0 54	2028	+1 38	+2 06
1969	−1 07	−1 26	1989	−0 11	−0 14	2009	+0 45	+0 57	2029	+1 40	+2 09
1970	−1 04	−1 22	1990	−0 08	−0 11	2010	+0 47	+1 01	2030	+1 43	+2 13

*शेष लग्न= मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु और मकर।

बच्चे का जन्म जिस गांव में हुआ हो, उसी के अक्षांशों (अक्षांश कलाओं) के अनुसार ही उसके जन्मकालिक लग्न का निर्णय करना चाहिए। उस गांव के पार्श्ववर्ती किसी बड़े नगर के अक्षांशों को यहां प्रयोग में लाने पर लग्न का निर्णय सूक्ष्मता से नहीं हो सकेगा।

अक्षांश में भूकैन्द्रिक संस्कार

भौगोलिक अक्षांश (उत्तर या दक्षिण) अंश	संस्कार कला (–)	भौगोलिक अक्षांश (उत्तर या दक्षिण) अंश	संस्कार कला (–)	भौगोलिक अक्षांश (उत्तर या दक्षिण) अंश	संस्कार कला (–)	भौगोलिक अक्षांश (उत्तर या दक्षिण) अंश	संस्कार कला (–)	भौगोलिक अक्षांश (उत्तर या दक्षिण) अंश	संस्कार कला (–)
0	0	15	6	30	10	45	12	60	10
1	0	16	6	31	10	46	12	61	10
2	1	17	6	32	10	47	12	62	10
3	1	18	7	33	11	48	11	63	9
4	2	19	7	34	11	49	11	64	9
5	2	20	7	35	11	50	11	65	9
6	2	21	8	36	11	51	11	66	9
7	3	22	8	37	11	52	11	67	8
8	3	23	8	38	11	53	11	68	8
9	4	24	9	39	11	54	11	69	8
10	4	25	9	40	11	55	11	70	7
11	4	26	9	41	11	56	11	71	7
12	5	27	9	42	11	57	11		
13	5	28	10	43	12	58	10		
14	5	29	10	44	12	59	10		

एटलसों में दिए गए नगरों के अक्षांश भौगोलिक होते हैं। इस पंचांग में दी गई अक्षांशादि सारणी में दिए गए नगरों के अक्षांश भी भौगोलिक ही हैं। ध्यान रहे– यहां दी गईं 'लग्नारम्भसाधन सारणियों' से लग्न ज्ञात करने के लिए भूकैन्द्रिक अक्षांशों को ही प्रयोग में लाया जाएगा।

अभीष्ट नगर के भौगोलिक अक्षांश द्वारा ऊपर दी गई सारणी से प्राप्त संस्कारकलाओं को नगर के भौगोलिक अक्षांश में से घटा देने पर उस नगर का भूकैन्द्रिक अक्षांश बन जाता है। जैसे– शिमला का भौगोलिक अक्षांश 31° 06´ (उ.) है। भौगोलिक अक्षांश 31° द्वारा इस सारणी से प्राप्त 10´ अक्षांशसंस्कारकलाओं को 31° 06´ में से घटा देने पर 30° 56´ (उ.) शिमला का भूकैन्द्रिक अक्षांश बन गया।

उत्तरी एवम् दक्षिणी– दोनों अक्षांशों के लिए यह संस्कार ऋण (–) है।

लग्नारम्भसाधन सारणी

उत्तर अक्षांशीय लग्न

अक्षांश	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
अं. क.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.
21 00	19 13 41	20 55 38	22 54 46	01 08 01	03 23 00	05 33 17	07 42 16	09 55 24	12 10 52	14 17 03	16 05 38	17 40 54
21 01	19 13 40	20 55 37	22 54 44	01 07 59	03 22 59	05 33 17	07 42 17	09 55 26	12 10 54	14 17 05	16 05 39	17 40 54
21 02	19 13 40	20 55 35	22 54 42	01 07 57	03 22 58	05 33 16	07 42 18	09 55 27	12 10 56	14 17 07	16 05 40	17 40 54
21 03	19 13 39	20 55 33	22 54 40	01 07 55	03 22 57	05 33 16	07 42 18	09 55 29	12 10 58	14 17 08	16 05 42	17 40 54
21 04	19 13 38	20 55 32	22 54 38	01 07 53	03 22 56	05 33 16	07 42 19	09 55 30	12 11 00	14 17 10	16 05 43	17 40 55
21 05	19 13 37	20 55 30	22 54 36	01 07 52	03 22 55	05 33 16	07 42 20	09 55 32	12 11 02	14 17 12	16 05 44	17 40 55
21 06	19 13 37	20 55 29	22 54 34	01 07 50	03 22 54	05 33 16	07 42 21	09 55 34	12 11 04	14 17 14	16 05 45	17 40 55
21 07	19 13 36	20 55 27	22 54 32	01 07 48	03 22 53	05 33 15	07 42 21	09 55 35	12 11 06	14 17 16	16 05 46	17 40 55
21 08	19 13 35	20 55 26	22 54 30	01 07 46	03 22 51	05 33 15	07 42 22	09 55 37	12 11 08	14 17 17	16 05 47	17 40 55
21 09	19 13 34	20 55 24	22 54 28	01 07 44	03 22 50	05 33 15	07 42 23	09 55 38	12 11 10	14 17 19	16 05 48	17 40 56
21 10	19 13 34	20 55 22	22 54 26	01 07 43	03 22 49	05 33 15	07 42 24	09 55 40	12 11 12	14 17 21	16 05 49	17 40 56
21 11	19 13 33	20 55 21	22 54 24	01 07 41	03 22 48	05 33 15	07 42 24	09 55 41	12 11 14	14 17 23	16 05 51	17 40 56
21 12	19 13 32	20 55 19	22 54 22	01 07 39	03 22 47	05 33 14	07 42 25	09 55 43	12 11 16	14 17 25	16 05 52	17 40 56
21 13	19 13 31	20 55 18	22 54 20	01 07 37	03 22 46	05 33 14	07 42 26	09 55 45	12 11 18	14 17 27	16 05 53	17 40 56
21 14	19 13 31	20 55 16	22 54 18	01 07 35	03 22 45	05 33 14	07 42 27	09 55 46	12 11 20	14 17 28	16 05 54	17 40 57
21 15	19 13 30	20 55 15	22 54 16	01 07 33	03 22 44	05 33 14	07 42 27	09 55 48	12 11 22	14 17 30	16 05 55	17 40 57
21 16	19 13 29	20 55 13	22 54 14	01 07 32	03 22 42	05 33 14	07 42 28	09 55 49	12 11 24	14 17 32	16 05 56	17 40 57
21 17	19 13 28	20 55 11	22 54 12	01 07 30	03 22 41	05 33 13	07 42 29	09 55 51	12 11 26	14 17 34	16 05 57	17 40 57
21 18	19 13 28	20 55 10	22 54 10	01 07 28	03 22 40	05 33 13	07 42 30	09 55 52	12 11 28	14 17 36	16 05 58	17 40 57
21 19	19 13 27	20 55 08	22 54 08	01 07 26	03 22 39	05 33 13	07 42 30	09 55 54	12 11 30	14 17 37	16 05 59	17 40 58
21 20	19 13 26	20 55 07	22 54 06	01 07 24	03 22 38	05 33 13	07 42 31	09 55 56	12 11 32	14 17 39	16 06 01	17 40 58
21 21	19 13 25	20 55 05	22 54 04	01 07 22	03 22 37	05 33 13	07 42 32	09 55 57	12 11 34	14 17 41	16 06 02	17 40 58
21 22	19 13 25	20 55 04	22 54 02	01 07 21	03 22 36	05 33 12	07 42 33	09 55 59	12 11 36	14 17 43	16 06 03	17 40 58
21 23	19 13 24	20 55 02	22 54 00	01 07 19	03 22 35	05 33 12	07 42 33	09 56 00	12 11 38	14 17 45	16 06 04	17 40 58
21 24	19 13 23	20 55 00	22 53 58	01 07 17	03 22 34	05 33 12	07 42 34	09 56 02	12 11 40	14 17 47	16 06 05	17 40 59
21 25	19 13 22	20 54 59	22 53 56	01 07 15	03 22 32	05 33 12	07 42 35	09 56 03	12 11 42	14 17 48	16 06 06	17 40 59
21 26	19 13 22	20 54 57	22 53 54	01 07 13	03 22 31	05 33 12	07 42 36	09 56 05	12 11 44	14 17 50	16 06 07	17 40 59
21 27	19 13 21	20 54 56	22 53 52	01 07 12	03 22 30	05 33 11	07 42 36	09 56 07	12 11 46	14 17 52	16 06 08	17 40 59
21 28	19 13 20	20 54 54	22 53 50	01 07 10	03 22 29	05 33 11	07 42 37	09 56 08	12 11 48	14 17 54	16 06 10	17 40 59
21 29	19 13 19	20 54 52	22 53 48	01 07 08	03 22 28	05 33 11	07 42 38	09 56 10	12 11 50	14 17 56	16 06 11	17 41 00
21 30	19 13 19	20 54 51	22 53 46	01 07 06	03 22 27	05 33 11	07 42 39	09 56 11	12 11 52	14 17 58	16 06 12	17 41 00
21 31	19 13 18	20 54 49	22 53 44	01 07 04	03 22 26	05 33 11	07 42 39	09 56 13	12 11 54	14 17 59	16 06 13	17 41 00
21 32	19 13 17	20 54 48	22 53 42	01 07 02	03 22 25	05 33 10	07 42 40	09 56 14	12 11 56	14 18 01	16 06 14	17 41 00
21 33	19 13 16	20 54 46	22 53 40	01 07 01	03 22 23	05 33 10	07 42 41	09 56 16	12 11 58	14 18 03	16 06 15	17 41 00
21 34	19 13 16	20 54 45	22 53 38	01 06 59	03 22 22	05 33 10	07 42 42	09 56 18	12 12 00	14 18 05	16 06 16	17 41 01
21 35	19 13 15	20 54 43	22 53 36	01 06 57	03 22 21	05 33 10	07 42 42	09 56 19	12 12 02	14 18 07	16 06 17	17 41 01
21 36	19 13 14	20 54 41	22 53 34	01 06 55	03 22 20	05 33 10	07 42 43	09 56 21	12 12 04	14 18 09	16 06 19	17 41 01
21 37	19 13 13	20 54 40	22 53 32	01 06 53	03 22 19	05 33 09	07 42 44	09 56 22	12 12 06	14 18 10	16 06 20	17 41 01
21 38	19 13 13	20 54 38	22 53 30	01 06 51	03 22 18	05 33 09	07 42 45	09 56 24	12 12 08	14 18 12	16 06 21	17 41 01
21 39	19 13 12	20 54 37	22 53 28	01 06 50	03 22 17	05 33 09	07 42 45	09 56 26	12 12 10	14 18 14	16 06 22	17 41 02
21 40	19 13 11	20 54 35	22 53 26	01 06 48	03 22 16	05 33 09	07 42 46	09 56 27	12 12 12	14 18 16	16 06 23	17 41 02
21 41	19 13 10	20 54 34	22 53 24	01 06 46	03 22 14	05 33 09	07 42 47	09 56 29	12 12 14	14 18 18	16 06 24	17 41 02
21 42	19 13 10	20 54 32	22 53 22	01 06 44	03 22 13	05 33 08	07 42 48	09 56 30	12 12 16	14 18 20	16 06 25	17 41 02
21 43	19 13 09	20 54 30	22 53 20	01 06 42	03 22 12	05 33 08	07 42 48	09 56 32	12 12 18	14 18 21	16 06 26	17 41 02
21 44	19 13 08	20 54 29	22 53 18	01 06 40	03 22 11	05 33 08	07 42 49	09 56 33	12 12 20	14 18 23	16 06 28	17 41 03
21 45	19 13 07	20 54 27	22 53 15	01 06 39	03 22 10	05 33 08	07 42 50	09 56 35	12 12 22	14 18 25	16 06 29	17 41 03
21 46	19 13 07	20 54 26	22 53 13	01 06 37	03 22 09	05 33 08	07 42 51	09 56 37	12 12 25	14 18 27	16 06 30	17 41 03
21 47	19 13 06	20 54 24	22 53 11	01 06 35	03 22 08	05 33 07	07 42 51	09 56 38	12 12 27	14 18 29	16 06 31	17 41 03
21 48	19 13 05	20 54 22	22 53 09	01 06 33	03 22 07	05 33 07	07 42 52	09 56 40	12 12 29	14 18 31	16 06 32	17 41 03
21 49	19 13 04	20 54 21	22 53 07	01 06 31	03 22 05	05 33 07	07 42 53	09 56 41	12 12 31	14 18 32	16 06 33	17 41 04
21 50	19 13 03	20 54 19	22 53 05	01 06 29	03 22 04	05 33 07	07 42 54	09 56 43	12 12 33	14 18 34	16 06 34	17 41 04
21 51	19 13 03	20 54 18	22 53 03	01 06 28	03 22 03	05 33 07	07 42 54	09 56 45	12 12 35	14 18 36	16 06 35	17 41 04
21 52	19 13 02	20 54 16	22 53 01	01 06 26	03 22 02	05 33 06	07 42 55	09 56 46	12 12 37	14 18 38	16 06 37	17 41 04
21 53	19 13 01	20 54 14	22 52 59	01 06 24	03 22 01	05 33 06	07 42 56	09 56 48	12 12 39	14 18 40	16 06 38	17 41 04
21 54	19 13 00	20 54 13	22 52 57	01 06 22	03 22 00	05 33 06	07 42 57	09 56 49	12 12 41	14 18 42	16 06 39	17 41 05
21 55	19 13 00	20 54 11	22 52 55	01 06 20	03 21 59	05 33 06	07 42 57	09 56 51	12 12 43	14 18 43	16 06 40	17 41 05
21 56	19 12 59	20 54 10	22 52 53	01 06 18	03 21 57	05 33 06	07 42 58	09 56 53	12 12 45	14 18 45	16 06 41	17 41 05
21 57	19 12 58	20 54 08	22 52 51	01 06 17	03 21 56	05 33 05	07 42 59	09 56 54	12 12 47	14 18 47	16 06 42	17 41 05
21 58	19 12 57	20 54 07	22 52 49	01 06 15	03 21 55	05 33 05	07 43 00	09 56 56	12 12 49	14 18 49	16 06 43	17 41 05
21 59	19 12 57	20 54 05	22 52 47	01 06 13	03 21 54	05 33 05	07 43 00	09 56 57	12 12 51	14 18 51	16 06 44	17 41 06
22 00	19 12 56	20 54 03	22 52 45	01 06 11	03 21 53	05 33 05	07 43 01	09 56 59	12 12 53	14 18 53	16 06 46	17 41 06
अक्षांश	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन

लग्नारम्भसाधन सारणी

उत्तर अक्षांशीय लग्न

अक्षांश	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
अं. क.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.
22 00	19 12 56	20 54 03	22 52 45	01 06 11	03 21 53	05 33 05	07 43 01	09 56 59	12 12 53	14 18 53	16 06 46	17 41 06
22 01	19 12 55	20 54 02	22 52 43	01 06 09	03 21 52	05 33 05	07 43 02	09 57 00	12 12 55	14 18 54	16 06 47	17 41 06
22 02	19 12 54	20 54 00	22 52 41	01 06 07	03 21 51	05 33 04	07 43 03	09 57 02	12 12 57	14 18 56	16 06 48	17 41 06
22 03	19 12 54	20 53 59	22 52 39	01 06 05	03 21 50	05 33 04	07 43 03	09 57 04	12 12 59	14 18 58	16 06 49	17 41 06
22 04	19 12 53	20 53 57	22 52 37	01 06 04	03 21 48	05 33 04	07 43 04	09 57 05	12 13 01	14 19 00	16 06 50	17 41 07
22 05	19 12 52	20 53 55	22 52 35	01 06 02	03 21 47	05 33 04	07 43 05	09 57 07	12 13 03	14 19 02	16 06 51	17 41 07
22 06	19 12 51	20 53 54	22 52 33	01 06 00	03 21 46	05 33 04	07 43 06	09 57 08	12 13 05	14 19 04	16 06 52	17 41 07
22 07	19 12 51	20 53 52	22 52 31	01 05 58	03 21 45	05 33 03	07 43 06	09 57 10	12 13 07	14 19 05	16 06 54	17 41 07
22 08	19 12 50	20 53 51	22 52 29	01 05 56	03 21 44	05 33 03	07 43 07	09 57 12	12 13 09	14 19 07	16 06 55	17 41 07
22 09	19 12 49	20 53 49	22 52 27	01 05 54	03 21 43	05 33 03	07 43 08	09 57 13	12 13 11	14 19 09	16 06 56	17 41 08
22 10	19 12 48	20 53 47	22 52 25	01 05 53	03 21 42	05 33 03	07 43 09	09 57 15	12 13 13	14 19 11	16 06 57	17 41 08
22 11	19 12 48	20 53 46	22 52 23	01 05 51	03 21 41	05 33 03	07 43 10	09 57 16	12 13 15	14 19 13	16 06 58	17 41 08
22 12	19 12 47	20 53 44	22 52 21	01 05 49	03 21 39	05 33 02	07 43 10	09 57 18	12 13 17	14 19 15	16 06 59	17 41 08
22 13	19 12 46	20 53 43	22 52 19	01 05 47	03 21 38	05 33 02	07 43 11	09 57 20	12 13 19	14 19 17	16 07 00	17 41 08
22 14	19 12 45	20 53 41	22 52 16	01 05 45	03 21 37	05 33 02	07 43 12	09 57 21	12 13 21	14 19 18	16 07 01	17 41 09
22 15	19 12 45	20 53 39	22 52 14	01 05 43	03 21 36	05 33 02	07 43 13	09 57 23	12 13 24	14 19 20	16 07 03	17 41 09
22 16	19 12 44	20 53 38	22 52 12	01 05 41	03 21 35	05 33 02	07 43 13	09 57 24	12 13 26	14 19 22	16 07 04	17 41 09
22 17	19 12 43	20 53 36	22 52 10	01 05 40	03 21 34	05 33 01	07 43 14	09 57 26	12 13 28	14 19 24	16 07 05	17 41 09
22 18	19 12 42	20 53 35	22 52 08	01 05 38	03 21 33	05 33 01	07 43 15	09 57 28	12 13 30	14 19 26	16 07 06	17 41 09
22 19	19 12 42	20 53 33	22 52 06	01 05 36	03 21 31	05 33 01	07 43 16	09 57 29	12 13 32	14 19 28	16 07 07	17 41 10
22 20	19 12 41	20 53 31	22 52 04	01 05 34	03 21 30	05 33 01	07 43 16	09 57 31	12 13 34	14 19 30	16 07 08	17 41 10
22 21	19 12 40	20 53 30	22 52 02	01 05 32	03 21 29	05 33 01	07 43 17	09 57 32	12 13 36	14 19 31	16 07 09	17 41 10
22 22	19 12 39	20 53 28	22 52 00	01 05 30	03 21 28	05 33 00	07 43 18	09 57 34	12 13 38	14 19 33	16 07 11	17 41 10
22 23	19 12 38	20 53 27	22 51 58	01 05 29	03 21 27	05 33 00	07 43 19	09 57 36	12 13 40	14 19 35	16 07 12	17 41 10
22 24	19 12 38	20 53 25	22 51 56	01 05 27	03 21 26	05 33 00	07 43 19	09 57 37	12 13 42	14 19 37	16 07 13	17 41 11
22 25	19 12 37	20 53 23	22 51 54	01 05 25	03 21 25	05 33 00	07 43 20	09 57 39	12 13 44	14 19 39	16 07 14	17 41 11
22 26	19 12 36	20 53 22	22 51 52	01 05 23	03 21 23	05 32 59	07 43 21	09 57 40	12 13 46	14 19 41	16 07 15	17 41 11
22 27	19 12 35	20 53 20	22 51 50	01 05 21	03 21 22	05 32 59	07 43 22	09 57 42	12 13 48	14 19 42	16 07 16	17 41 11
22 28	19 12 35	20 53 19	22 51 48	01 05 19	03 21 21	05 32 59	07 43 22	09 57 44	12 13 50	14 19 44	16 07 17	17 41 11
22 29	19 12 34	20 53 17	22 51 46	01 05 17	03 21 20	05 32 59	07 43 23	09 57 45	12 13 52	14 19 46	16 07 19	17 41 12
22 30	19 12 33	20 53 15	22 51 44	01 05 16	03 21 19	05 32 59	07 43 24	09 57 47	12 13 54	14 19 48	16 07 20	17 41 12
22 31	19 12 32	20 53 14	22 51 42	01 05 14	03 21 18	05 32 58	07 43 25	09 57 48	12 13 56	14 19 50	16 07 21	17 41 12
22 32	19 12 32	20 53 12	22 51 40	01 05 12	03 21 17	05 32 58	07 43 26	09 57 50	12 13 58	14 19 52	16 07 22	17 41 12
22 33	19 12 31	20 53 11	22 51 38	01 05 10	03 21 15	05 32 58	07 43 26	09 57 52	12 14 00	14 19 54	16 07 23	17 41 12
22 34	19 12 30	20 53 09	22 51 36	01 05 08	03 21 14	05 32 58	07 43 27	09 57 53	12 14 02	14 19 55	16 07 24	17 41 13
22 35	19 12 29	20 53 07	22 51 34	01 05 06	03 21 13	05 32 58	07 43 28	09 57 55	12 14 04	14 19 57	16 07 25	17 41 13
22 36	19 12 29	20 53 06	22 51 31	01 05 04	03 21 12	05 32 57	07 43 29	09 57 56	12 14 07	14 19 59	16 07 27	17 41 13
22 37	19 12 28	20 53 04	22 51 29	01 05 03	03 21 11	05 32 57	07 43 29	09 57 58	12 14 09	14 20 01	16 07 28	17 41 13
22 38	19 12 27	20 53 03	22 51 27	01 05 01	03 21 10	05 32 57	07 43 30	09 58 00	12 14 11	14 20 03	16 07 29	17 41 13
22 39	19 12 26	20 53 01	22 51 25	01 04 59	03 21 09	05 32 57	07 43 31	09 58 01	12 14 13	14 20 05	16 07 30	17 41 14
22 40	19 12 25	20 52 59	22 51 23	01 04 57	03 21 07	05 32 57	07 43 32	09 58 03	12 14 15	14 20 07	16 07 31	17 41 14
22 41	19 12 25	20 52 58	22 51 21	01 04 55	03 21 06	05 32 56	07 43 32	09 58 04	12 14 17	14 20 09	16 07 32	17 41 14
22 42	19 12 24	20 52 56	22 51 19	01 04 53	03 21 05	05 32 56	07 43 33	09 58 06	12 14 19	14 20 10	16 07 33	17 41 14
22 43	19 12 23	20 52 55	22 51 17	01 04 51	03 21 04	05 32 56	07 43 34	09 58 08	12 14 21	14 20 12	16 07 35	17 41 14
22 44	19 12 22	20 52 53	22 51 15	01 04 50	03 21 03	05 32 56	07 43 35	09 58 09	12 14 23	14 20 14	16 07 36	17 41 15
22 45	19 12 22	20 52 51	22 51 13	01 04 48	03 21 02	05 32 56	07 43 35	09 58 11	12 14 25	14 20 16	16 07 37	17 41 15
22 46	19 12 21	20 52 50	22 51 11	01 04 46	03 21 01	05 32 55	07 43 36	09 58 12	12 14 27	14 20 18	16 07 38	17 41 15
22 47	19 12 20	20 52 48	22 51 09	01 04 44	03 20 59	05 32 55	07 43 37	09 58 14	12 14 29	14 20 20	16 07 39	17 41 15
22 48	19 12 19	20 52 47	22 51 07	01 04 42	03 20 58	05 32 55	07 43 38	09 58 16	12 14 31	14 20 22	16 07 40	17 41 15
22 49	19 12 19	20 52 45	22 51 05	01 04 40	03 20 57	05 32 55	07 43 39	09 58 17	12 14 33	14 20 23	16 07 41	17 41 16
22 50	19 12 18	20 52 43	22 51 03	01 04 38	03 20 56	05 32 55	07 43 39	09 58 19	12 14 35	14 20 25	16 07 43	17 41 16
22 51	19 12 17	20 52 42	22 51 01	01 04 36	03 20 55	05 32 54	07 43 40	09 58 21	12 14 37	14 20 27	16 07 44	17 41 16
22 52	19 12 16	20 52 40	22 50 59	01 04 35	03 20 54	05 32 54	07 43 41	09 58 22	12 14 39	14 20 29	16 07 45	17 41 16
22 53	19 12 16	20 52 38	22 50 56	01 04 33	03 20 53	05 32 54	07 43 42	09 58 24	12 14 42	14 20 31	16 07 46	17 41 16
22 54	19 12 15	20 52 37	22 50 54	01 04 31	03 20 51	05 32 54	07 43 42	09 58 25	12 14 44	14 20 33	16 07 47	17 41 17
22 55	19 12 14	20 52 35	22 50 52	01 04 29	03 20 50	05 32 54	07 43 43	09 58 27	12 14 46	14 20 35	16 07 48	17 41 17
22 56	19 12 13	20 52 34	22 50 50	01 04 27	03 20 49	05 32 53	07 43 44	09 58 29	12 14 48	14 20 36	16 07 49	17 41 17
22 57	19 12 12	20 52 32	22 50 48	01 04 25	03 20 48	05 32 53	07 43 45	09 58 30	12 14 50	14 20 38	16 07 51	17 41 17
22 58	19 12 12	20 52 30	22 50 46	01 04 23	03 20 47	05 32 53	07 43 45	09 58 32	12 14 52	14 20 40	16 07 52	17 41 18
22 59	19 12 11	20 52 29	22 50 44	01 04 22	03 20 46	05 32 53	07 43 46	09 58 33	12 14 54	14 20 42	16 07 53	17 41 18
23 00	19 12 10	20 52 27	22 50 42	01 04 20	03 20 45	05 32 53	07 43 47	09 58 35	12 14 56	14 20 44	16 07 54	17 41 18
अक्षांश	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन

लग्नारम्भसाधन सारणी

उत्तर अक्षांशीय लग्न

अक्षांश	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
अं. क.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.
23 00	19 12 10	20 52 27	22 50 42	01 04 20	03 20 45	05 32 53	07 43 47	09 58 35	12 14 56	14 20 44	16 07 54	17 41 18
23 01	19 12 09	20 52 26	22 50 40	01 04 18	03 20 43	05 32 52	07 43 48	09 58 37	12 14 58	14 20 46	16 07 55	17 41 18
23 02	19 12 09	20 52 24	22 50 38	01 04 16	03 20 42	05 32 52	07 43 48	09 58 38	12 15 00	14 20 48	16 07 56	17 41 18
23 03	19 12 08	20 52 22	22 50 36	01 04 14	03 20 41	05 32 52	07 43 49	09 58 40	12 15 02	14 20 50	16 07 57	17 41 19
23 04	19 12 07	20 52 21	22 50 34	01 04 12	03 20 40	05 32 52	07 43 50	09 58 42	12 15 04	14 20 51	16 07 59	17 41 19
23 05	19 12 06	20 52 19	22 50 32	01 04 10	03 20 39	05 32 52	07 43 51	09 58 43	12 15 06	14 20 53	16 08 00	17 41 19
23 06	19 12 06	20 52 17	22 50 30	01 04 08	03 20 38	05 32 51	07 43 52	09 58 45	12 15 08	14 20 55	16 08 01	17 41 19
23 07	19 12 05	20 52 16	22 50 28	01 04 07	03 20 37	05 32 51	07 43 52	09 58 46	12 15 10	14 20 57	16 08 02	17 41 19
23 08	19 12 04	20 52 14	22 50 25	01 04 05	03 20 35	05 32 51	07 43 53	09 58 48	12 15 13	14 20 59	16 08 03	17 41 20
23 09	19 12 03	20 52 13	22 50 23	01 04 03	03 20 34	05 32 51	07 43 54	09 58 50	12 15 15	14 21 01	16 08 04	17 41 20
23 10	19 12 02	20 52 11	22 50 21	01 04 01	03 20 33	05 32 51	07 43 55	09 58 51	12 15 17	14 21 03	16 08 05	17 41 20
23 11	19 12 02	20 52 09	22 50 19	01 03 59	03 20 32	05 32 50	07 43 55	09 58 53	12 15 19	14 21 05	16 08 07	17 41 20
23 12	19 12 01	20 52 08	22 50 17	01 03 57	03 20 31	05 32 50	07 43 56	09 58 54	12 15 21	14 21 06	16 08 08	17 41 20
23 13	19 12 00	20 52 06	22 50 15	01 03 55	03 20 30	05 32 50	07 43 57	09 58 56	12 15 23	14 21 08	16 08 09	17 41 21
23 14	19 11 59	20 52 04	22 50 13	01 03 53	03 20 28	05 32 50	07 43 58	09 58 58	12 15 25	14 21 10	16 08 10	17 41 21
23 15	19 11 59	20 52 03	22 50 11	01 03 52	03 20 27	05 32 50	07 43 58	09 58 59	12 15 27	14 21 12	16 08 11	17 41 21
23 16	19 11 58	20 52 01	22 50 09	01 03 50	03 20 26	05 32 49	07 43 59	09 59 01	12 15 29	14 21 14	16 08 12	17 41 21
23 17	19 11 57	20 52 00	22 50 07	01 03 48	03 20 25	05 32 49	07 44 00	09 59 03	12 15 31	14 21 16	16 08 14	17 41 21
23 18	19 11 56	20 51 58	22 50 05	01 03 46	03 20 24	05 32 49	07 44 01	09 59 04	12 15 33	14 21 18	16 08 15	17 41 22
23 19	19 11 56	20 51 56	22 50 03	01 03 44	03 20 23	05 32 49	07 44 02	09 59 06	12 15 35	14 21 20	16 08 16	17 41 22
23 20	19 11 55	20 51 55	22 50 01	01 03 42	03 20 22	05 32 48	07 44 02	09 59 07	12 15 37	14 21 21	16 08 17	17 41 22
23 21	19 11 54	20 51 53	22 49 58	01 03 40	03 20 20	05 32 48	07 44 03	09 59 09	12 15 39	14 21 23	16 08 18	17 41 22
23 22	19 11 53	20 51 52	22 49 56	01 03 38	03 20 19	05 32 48	07 44 04	09 59 11	12 15 42	14 21 25	16 08 19	17 41 22
23 23	19 11 52	20 51 50	22 49 54	01 03 36	03 20 18	05 32 48	07 44 05	09 59 12	12 15 44	14 21 27	16 08 20	17 41 23
23 24	19 11 52	20 51 48	22 49 52	01 03 35	03 20 17	05 32 48	07 44 05	09 59 14	12 15 46	14 21 29	16 08 22	17 41 23
23 25	19 11 51	20 51 47	22 49 50	01 03 33	03 20 16	05 32 47	07 44 06	09 59 16	12 15 48	14 21 31	16 08 23	17 41 23
23 26	19 11 50	20 51 45	22 49 48	01 03 31	03 20 15	05 32 47	07 44 07	09 59 17	12 15 50	14 21 33	16 08 24	17 41 23
23 27	19 11 49	20 51 43	22 49 46	01 03 29	03 20 13	05 32 47	07 44 08	09 59 19	12 15 52	14 21 35	16 08 25	17 41 23
23 28	19 11 49	20 51 42	22 49 44	01 03 27	03 20 12	05 32 47	07 44 09	09 59 20	12 15 54	14 21 37	16 08 26	17 41 24
23 29	19 11 48	20 51 40	22 49 42	01 03 25	03 20 11	05 32 47	07 44 09	09 59 22	12 15 56	14 21 38	16 08 27	17 41 24
23 30	19 11 47	20 51 38	22 49 40	01 03 23	03 20 10	05 32 46	07 44 10	09 59 24	12 15 58	14 21 40	16 08 29	17 41 24
23 31	19 11 46	20 51 37	22 49 38	01 03 21	03 20 09	05 32 46	07 44 11	09 59 25	12 16 00	14 21 42	16 08 30	17 41 24
23 32	19 11 45	20 51 35	22 49 36	01 03 19	03 20 08	05 32 46	07 44 12	09 59 27	12 16 02	14 21 44	16 08 31	17 41 24
23 33	19 11 45	20 51 34	22 49 33	01 03 18	03 20 07	05 32 46	07 44 12	09 59 29	12 16 04	14 21 46	16 08 32	17 41 25
23 34	19 11 44	20 51 32	22 49 31	01 03 16	03 20 05	05 32 46	07 44 13	09 59 30	12 16 07	14 21 48	16 08 33	17 41 25
23 35	19 11 43	20 51 30	22 49 29	01 03 14	03 20 04	05 32 45	07 44 14	09 59 32	12 16 09	14 21 50	16 08 34	17 41 25
23 36	19 11 42	20 51 29	22 49 27	01 03 12	03 20 03	05 32 45	07 44 15	09 59 34	12 16 11	14 21 52	16 08 36	17 41 25
23 37	19 11 42	20 51 27	22 49 25	01 03 10	03 20 02	05 32 45	07 44 16	09 59 35	12 16 13	14 21 54	16 08 37	17 41 26
23 38	19 11 41	20 51 25	22 49 23	01 03 08	03 20 01	05 32 45	07 44 16	09 59 37	12 16 15	14 21 55	16 08 38	17 41 26
23 39	19 11 40	20 51 24	22 49 21	01 03 06	03 20 00	05 32 45	07 44 17	09 59 38	12 16 17	14 21 57	16 08 39	17 41 26
23 40	19 11 39	20 51 22	22 49 19	01 03 04	03 19 58	05 32 44	07 44 18	09 59 40	12 16 19	14 21 59	16 08 40	17 41 26
23 41	19 11 39	20 51 21	22 49 17	01 03 02	03 19 57	05 32 44	07 44 19	09 59 42	12 16 21	14 22 01	16 08 41	17 41 26
23 42	19 11 38	20 51 19	22 49 15	01 03 01	03 19 56	05 32 44	07 44 19	09 59 43	12 16 23	14 22 03	16 08 42	17 41 27
23 43	19 11 37	20 51 17	22 49 13	01 02 59	03 19 55	05 32 44	07 44 20	09 59 45	12 16 25	14 22 05	16 08 44	17 41 27
23 44	19 11 36	20 51 16	22 49 10	01 02 57	03 19 54	05 32 44	07 44 21	09 59 47	12 16 27	14 22 07	16 08 45	17 41 27
23 45	19 11 35	20 51 14	22 49 08	01 02 55	03 19 53	05 32 43	07 44 22	09 59 48	12 16 30	14 22 09	16 08 46	17 41 27
23 46	19 11 35	20 51 12	22 49 06	01 02 53	03 19 51	05 32 43	07 44 22	09 59 50	12 16 32	14 22 11	16 08 47	17 41 27
23 47	19 11 34	20 51 11	22 49 04	01 02 51	03 19 50	05 32 43	07 44 23	09 59 51	12 16 34	14 22 12	16 08 48	17 41 28
23 48	19 11 33	20 51 09	22 49 02	01 02 49	03 19 49	05 32 43	07 44 24	09 59 53	12 16 36	14 22 14	16 08 49	17 41 28
23 49	19 11 32	20 51 07	22 49 00	01 02 47	03 19 48	05 32 42	07 44 25	09 59 55	12 16 38	14 22 16	16 08 51	17 41 28
23 50	19 11 32	20 51 06	22 48 58	01 02 45	03 19 47	05 32 42	07 44 26	09 59 56	12 16 40	14 22 18	16 08 52	17 41 28
23 51	19 11 31	20 51 04	22 48 56	01 02 44	03 19 46	05 32 42	07 44 26	09 59 58	12 16 42	14 22 20	16 08 53	17 41 28
23 52	19 11 30	20 51 03	22 48 54	01 02 42	03 19 44	05 32 42	07 44 27	10 00 00	12 16 44	14 22 22	16 08 54	17 41 29
23 53	19 11 29	20 51 01	22 48 52	01 02 40	03 19 43	05 32 42	07 44 28	10 00 01	12 16 46	14 22 24	16 08 55	17 41 29
23 54	19 11 28	20 50 59	22 48 50	01 02 38	03 19 42	05 32 41	07 44 29	10 00 03	12 16 48	14 22 26	16 08 56	17 41 29
23 55	19 11 28	20 50 58	22 48 47	01 02 36	03 19 41	05 32 41	07 44 29	10 00 05	12 16 51	14 22 28	16 08 58	17 41 29
23 56	19 11 27	20 50 56	22 48 45	01 02 34	03 19 40	05 32 41	07 44 30	10 00 06	12 16 53	14 22 30	16 08 59	17 41 29
23 57	19 11 26	20 50 54	22 48 43	01 02 32	03 19 39	05 32 41	07 44 31	10 00 08	12 16 55	14 22 31	16 09 00	17 41 30
23 58	19 11 25	20 50 53	22 48 41	01 02 30	03 19 37	05 32 41	07 44 32	10 00 10	12 16 57	14 22 33	16 09 01	17 41 30
23 59	19 11 25	20 50 51	22 48 39	01 02 28	03 19 36	05 32 40	07 44 33	10 00 11	12 16 59	14 22 35	16 09 02	17 41 30
24 00	19 11 24	20 50 49	22 48 37	01 02 26	03 19 35	05 32 40	07 44 33	10 00 13	12 17 01	14 22 37	16 09 03	17 41 30
अक्षांश	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन

लग्नारम्भसाधन सारणी

उत्तर अक्षांशीय लग्न

अक्षांश	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
अं. क.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.
24 00	19 11 24	20 50 49	22 48 37	01 02 26	03 19 35	05 32 40	07 44 33	10 00 13	12 17 01	14 22 37	16 09 03	17 41 30
24 01	19 11 23	20 50 48	22 48 35	01 02 25	03 19 34	05 32 40	07 44 34	10 00 14	12 17 03	14 22 39	16 09 05	17 41 30
24 02	19 11 22	20 50 46	22 48 33	01 02 23	03 19 33	05 32 40	07 44 35	10 00 16	12 17 05	14 22 41	16 09 06	17 41 31
24 03	19 11 21	20 50 45	22 48 31	01 02 21	03 19 32	05 32 40	07 44 36	10 00 18	12 17 07	14 22 43	16 09 07	17 41 31
24 04	19 11 21	20 50 43	22 48 29	01 02 19	03 19 30	05 32 39	07 44 37	10 00 19	12 17 09	14 22 45	16 09 08	17 41 31
24 05	19 11 20	20 50 41	22 48 26	01 02 17	03 19 29	05 32 39	07 44 37	10 00 21	12 17 12	14 22 47	16 09 09	17 41 31
24 06	19 11 19	20 50 40	22 48 24	01 02 15	03 19 28	05 32 39	07 44 38	10 00 23	12 17 14	14 22 49	16 09 10	17 41 32
24 07	19 11 18	20 50 38	22 48 22	01 02 13	03 19 27	05 32 39	07 44 39	10 00 24	12 17 16	14 22 51	16 09 12	17 41 32
24 08	19 11 17	20 50 36	22 48 20	01 02 11	03 19 26	05 32 39	07 44 40	10 00 26	12 17 18	14 22 52	16 09 13	17 41 32
24 09	19 11 17	20 50 35	22 48 18	01 02 09	03 19 25	05 32 38	07 44 40	10 00 28	12 17 20	14 22 54	16 09 14	17 41 32
24 10	19 11 16	20 50 33	22 48 16	01 02 07	03 19 23	05 32 38	07 44 41	10 00 29	12 17 22	14 22 56	16 09 15	17 41 32
24 11	19 11 15	20 50 31	22 48 14	01 02 05	03 19 22	05 32 38	07 44 42	10 00 31	12 17 24	14 22 58	16 09 16	17 41 33
24 12	19 11 14	20 50 30	22 48 12	01 02 04	03 19 21	05 32 38	07 44 43	10 00 33	12 17 26	14 23 00	16 09 17	17 41 33
24 13	19 11 14	20 50 28	22 48 10	01 02 02	03 19 20	05 32 38	07 44 44	10 00 34	12 17 28	14 23 02	16 09 19	17 41 33
24 14	19 11 13	20 50 26	22 48 07	01 02 00	03 19 19	05 32 37	07 44 44	10 00 36	12 17 31	14 23 04	16 09 20	17 41 33
24 15	19 11 12	20 50 25	22 48 05	01 01 58	03 19 18	05 32 37	07 44 45	10 00 37	12 17 33	14 23 06	16 09 21	17 41 33
24 16	19 11 11	20 50 23	22 48 03	01 01 56	03 19 16	05 32 37	07 44 46	10 00 39	12 17 35	14 23 08	16 09 22	17 41 34
24 17	19 11 10	20 50 21	22 48 01	01 01 54	03 19 15	05 32 37	07 44 47	10 00 41	12 17 37	14 23 10	16 09 23	17 41 34
24 18	19 11 10	20 50 20	22 47 59	01 01 52	03 19 14	05 32 36	07 44 47	10 00 42	12 17 39	14 23 12	16 09 24	17 41 34
24 19	19 11 09	20 50 18	22 47 57	01 01 50	03 19 13	05 32 36	07 44 48	10 00 44	12 17 41	14 23 13	16 09 26	17 41 34
24 20	19 11 08	20 50 16	22 47 55	01 01 48	03 19 12	05 32 36	07 44 49	10 00 46	12 17 43	14 23 15	16 09 27	17 41 34
24 21	19 11 07	20 50 15	22 47 53	01 01 46	03 19 11	05 32 36	07 44 50	10 00 47	12 17 45	14 23 17	16 09 28	17 41 35
24 22	19 11 07	20 50 13	22 47 51	01 01 44	03 19 09	05 32 36	07 44 51	10 00 49	12 17 47	14 23 19	16 09 29	17 41 35
24 23	19 11 06	20 50 12	22 47 48	01 01 43	03 19 08	05 32 35	07 44 51	10 00 51	12 17 50	14 23 21	16 09 30	17 41 35
24 24	19 11 05	20 50 10	22 47 46	01 01 41	03 19 07	05 32 35	07 44 52	10 00 52	12 17 52	14 23 23	16 09 32	17 41 35
24 25	19 11 04	20 50 08	22 47 44	01 01 39	03 19 06	05 32 35	07 44 53	10 00 54	12 17 54	14 23 25	16 09 33	17 41 35
24 26	19 11 03	20 50 07	22 47 42	01 01 37	03 19 05	05 32 35	07 44 54	10 00 56	12 17 56	14 23 27	16 09 34	17 41 36
24 27	19 11 03	20 50 05	22 47 40	01 01 35	03 19 04	05 32 35	07 44 55	10 00 57	12 17 58	14 23 29	16 09 35	17 41 36
24 28	19 11 02	20 50 03	22 47 38	01 01 33	03 19 02	05 32 34	07 44 55	10 00 59	12 18 00	14 23 31	16 09 36	17 41 36
24 29	19 11 01	20 50 02	22 47 36	01 01 31	03 19 01	05 32 34	07 44 56	10 01 01	12 18 02	14 23 33	16 09 37	17 41 36
24 30	19 11 00	20 50 00	22 47 34	01 01 29	03 19 00	05 32 34	07 44 57	10 01 02	12 18 04	14 23 34	16 09 39	17 41 37
24 31	19 10 59	20 49 58	22 47 31	01 01 27	03 18 59	05 32 34	07 44 58	10 01 04	12 18 06	14 23 36	16 09 40	17 41 37
24 32	19 10 59	20 49 57	22 47 29	01 01 25	03 18 58	05 32 34	07 44 58	10 01 06	12 18 09	14 23 38	16 09 41	17 41 37
24 33	19 10 58	20 49 55	22 47 27	01 01 23	03 18 56	05 32 33	07 44 59	10 01 07	12 18 11	14 23 40	16 09 42	17 41 37
24 34	19 10 57	20 49 53	22 47 25	01 01 21	03 18 55	05 32 33	07 45 00	10 01 09	12 18 13	14 23 42	16 09 43	17 41 37
24 35	19 10 56	20 49 52	22 47 23	01 01 20	03 18 54	05 32 33	07 45 01	10 01 11	12 18 15	14 23 44	16 09 44	17 41 38
24 36	19 10 56	20 49 50	22 47 21	01 01 18	03 18 53	05 32 33	07 45 02	10 01 12	12 18 17	14 23 46	16 09 46	17 41 38
24 37	19 10 55	20 49 48	22 47 19	01 01 16	03 18 52	05 32 33	07 45 02	10 01 14	12 18 19	14 23 48	16 09 47	17 41 38
24 38	19 10 54	20 49 47	22 47 17	01 01 14	03 18 51	05 32 32	07 45 03	10 01 16	12 18 21	14 23 50	16 09 48	17 41 38
24 39	19 10 53	20 49 45	22 47 14	01 01 12	03 18 49	05 32 32	07 45 04	10 01 17	12 18 23	14 23 52	16 09 49	17 41 38
24 40	19 10 52	20 49 43	22 47 12	01 01 10	03 18 48	05 32 32	07 45 05	10 01 19	12 18 26	14 23 54	16 09 50	17 41 39
24 41	19 10 52	20 49 42	22 47 10	01 01 08	03 18 47	05 32 32	07 45 06	10 01 21	12 18 28	14 23 56	16 09 52	17 41 39
24 42	19 10 51	20 49 40	22 47 08	01 01 06	03 18 46	05 32 31	07 45 06	10 01 22	12 18 30	14 23 58	16 09 53	17 41 39
24 43	19 10 50	20 49 38	22 47 06	01 01 04	03 18 45	05 32 31	07 45 07	10 01 24	12 18 32	14 23 59	16 09 54	17 41 39
24 44	19 10 49	20 49 37	22 47 04	01 01 02	03 18 44	05 32 31	07 45 08	10 01 25	12 18 34	14 24 01	16 09 55	17 41 39
24 45	19 10 48	20 49 35	22 47 02	01 01 00	03 18 42	05 32 31	07 45 09	10 01 27	12 18 36	14 24 03	16 09 56	17 41 40
24 46	19 10 48	20 49 33	22 47 00	01 00 58	03 18 41	05 32 31	07 45 10	10 01 29	12 18 38	14 24 05	16 09 57	17 41 40
24 47	19 10 47	20 49 32	22 46 57	01 00 56	03 18 40	05 32 30	07 45 10	10 01 30	12 18 41	14 24 07	16 09 59	17 41 40
24 48	19 10 46	20 49 30	22 46 55	01 00 54	03 18 39	05 32 30	07 45 11	10 01 32	12 18 43	14 24 09	16 10 00	17 41 40
24 49	19 10 45	20 49 28	22 46 53	01 00 53	03 18 38	05 32 30	07 45 12	10 01 34	12 18 45	14 24 11	16 10 01	17 41 41
24 50	19 10 44	20 49 27	22 46 51	01 00 51	03 18 36	05 32 30	07 45 13	10 01 35	12 18 47	14 24 13	16 10 02	17 41 41
24 51	19 10 44	20 49 25	22 46 49	01 00 49	03 18 35	05 32 30	07 45 13	10 01 37	12 18 49	14 24 15	16 10 03	17 41 41
24 52	19 10 43	20 49 23	22 46 47	01 00 47	03 18 34	05 32 29	07 45 14	10 01 39	12 18 51	14 24 17	16 10 05	17 41 41
24 53	19 10 42	20 49 22	22 46 45	01 00 45	03 18 33	05 32 29	07 45 15	10 01 40	12 18 53	14 24 19	16 10 06	17 41 41
24 54	19 10 41	20 49 20	22 46 43	01 00 43	03 18 32	05 32 29	07 45 16	10 01 42	12 18 55	14 24 21	16 10 07	17 41 42
24 55	19 10 40	20 49 18	22 46 40	01 00 41	03 18 31	05 32 29	07 45 17	10 01 44	12 18 58	14 24 23	16 10 08	17 41 42
24 56	19 10 40	20 49 17	22 46 38	01 00 39	03 18 29	05 32 29	07 45 17	10 01 45	12 19 00	14 24 25	16 10 09	17 41 42
24 57	19 10 39	20 49 15	22 46 36	01 00 37	03 18 28	05 32 28	07 45 18	10 01 47	12 19 02	14 24 27	16 10 10	17 41 42
24 58	19 10 38	20 49 13	22 46 34	01 00 35	03 18 27	05 32 28	07 45 19	10 01 49	12 19 04	14 24 28	16 10 12	17 41 42
24 59	19 10 37	20 49 12	22 46 32	01 00 33	03 18 26	05 32 28	07 45 20	10 01 50	12 19 06	14 24 30	16 10 13	17 41 43
25 00	19 10 37	20 49 10	22 46 30	01 00 31	03 18 25	05 32 28	07 45 21	10 01 52	12 19 08	14 24 32	16 10 14	17 41 43
अक्षांश	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन

लग्नारम्भसाधन सारणी

उत्तर अक्षांशीय लग्न

अक्षांश	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
अं. क.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.
25 00	19 10 37	20 49 10	22 46 30	01 00 31	03 18 25	05 32 28	07 45 21	10 01 52	12 19 08	14 24 32	16 10 14	17 41 43
25 01	19 10 36	20 49 08	22 46 28	01 00 29	03 18 23	05 32 27	07 45 21	10 01 54	12 19 10	14 24 34	16 10 15	17 41 43
25 02	19 10 35	20 49 07	22 46 25	01 00 27	03 18 22	05 32 27	07 45 22	10 01 56	12 19 13	14 24 36	16 10 16	17 41 43
25 03	19 10 34	20 49 05	22 46 23	01 00 25	03 18 21	05 32 27	07 45 23	10 01 57	12 19 15	14 24 38	16 10 18	17 41 43
25 04	19 10 33	20 49 03	22 46 21	01 00 24	03 18 20	05 32 27	07 45 24	10 01 59	12 19 17	14 24 40	16 10 19	17 41 44
25 05	19 10 33	20 49 02	22 46 19	01 00 22	03 18 19	05 32 27	07 45 25	10 02 01	12 19 19	14 24 42	16 10 20	17 41 44
25 06	19 10 32	20 49 00	22 46 17	01 00 20	03 18 17	05 32 26	07 45 25	10 02 02	12 19 21	14 24 44	16 10 21	17 41 44
25 07	19 10 31	20 48 58	22 46 15	01 00 18	03 18 16	05 32 26	07 45 26	10 02 04	12 19 23	14 24 46	16 10 22	17 41 44
25 08	19 10 30	20 48 57	22 46 13	01 00 16	03 18 15	05 32 26	07 45 27	10 02 06	12 19 25	14 24 48	16 10 23	17 41 45
25 09	19 10 29	20 48 55	22 46 10	01 00 14	03 18 14	05 32 26	07 45 28	10 02 07	12 19 28	14 24 50	16 10 25	17 41 45
25 10	19 10 29	20 48 53	22 46 08	01 00 12	03 18 13	05 32 26	07 45 29	10 02 09	12 19 30	14 24 52	16 10 26	17 41 45
25 11	19 10 28	20 48 52	22 46 06	01 00 10	03 18 12	05 32 25	07 45 29	10 02 11	12 19 32	14 24 54	16 10 27	17 41 45
25 12	19 10 27	20 48 50	22 46 04	01 00 08	03 18 10	05 32 25	07 45 30	10 02 12	12 19 34	14 24 56	16 10 28	17 41 45
25 13	19 10 26	20 48 48	22 46 02	01 00 06	03 18 09	05 32 25	07 45 31	10 02 14	12 19 36	14 24 58	16 10 29	17 41 46
25 14	19 10 25	20 48 47	22 46 00	01 00 04	03 18 08	05 32 25	0[illegible] 32	10 02 16	12 19 38	14 24 59	16 10 31	17 41 46
25 15	19 10 25	20 48 45	22 45 58	01 00 02	03 18 07	05 32 24	07 45 32	10 02 17	12 19 40	14 25 01	16 10 32	17 41 46
25 16	19 10 24	20 48 43	22 45 55	01 00 00	03 18 06	05 32 24	07 45 33	10 02 19	12 19 43	14 25 03	16 10 33	17 41 46
25 17	19 10 23	20 48 42	22 45 53	00 59 58	03 18 04	05 32 24	07 45 34	10 02 21	12 19 45	14 25 05	16 10 34	17 41 46
25 18	19 10 22	20 48 40	22 45 51	00 59 56	03 18 03	05 32 24	07 45 35	10 02 22	12 19 47	14 25 07	16 10 35	17 41 47
25 19	19 10 21	20 48 38	22 45 49	00 59 54	03 18 02	05 32 24	07 45 36	10 02 24	12 19 49	14 25 09	16 10 37	17 41 47
25 20	19 10 21	20 48 37	22 45 47	00 59 52	03 18 01	05 32 23	07 45 36	10 02 26	12 19 51	14 25 11	16 10 38	17 41 47
25 21	19 10 20	20 48 35	22 45 45	00 59 51	03 18 00	05 32 23	07 45 37	10 02 27	12 19 53	14 25 13	16 10 39	17 41 47
25 22	19 10 19	20 48 33	22 45 42	00 59 49	03 17 58	05 32 23	07 45 38	10 02 29	12 19 56	14 25 15	16 10 40	17 41 47
25 23	19 10 18	20 48 32	22 45 40	00 59 47	03 17 57	05 32 23	07 45 39	10 02 31	12 19 58	14 25 17	16 10 41	17 41 48
25 24	19 10 17	20 48 30	22 45 38	00 59 45	03 17 56	05 32 23	07 45 40	10 02 32	12 20 00	14 25 19	16 10 43	17 41 48
25 25	19 10 17	20 48 28	22 45 36	00 59 43	03 17 55	05 32 22	07 45 40	10 02 34	12 20 02	14 25 21	16 10 44	17 41 48
25 26	19 10 16	20 48 26	22 45 34	00 59 41	03 17 54	05 32 22	07 45 41	10 02 36	12 20 04	14 25 23	16 10 45	17 41 48
25 27	19 10 15	20 48 25	22 45 32	00 59 39	03 17 52	05 32 22	07 45 42	10 02 37	12 20 06	14 25 25	16 10 46	17 41 49
25 28	19 10 14	20 48 23	22 45 30	00 [illegible] 37	03 17 51	05 32 22	07 45 43	10 02 39	12 20 08	14 25 27	16 10 47	17 41 49
25 29	19 10 13	20 48 21	22 45 27	00 59 35	03 17 50	05 32 22	07 45 44	10 02 41	12 20 11	14 25 29	16 10 49	17 41 49
25 30	19 10 13	20 48 20	22 45 25	00 59 33	03 17 49	05 32 21	07 45 44	10 02 42	12 20 13	14 25 31	16 10 50	17 41 49
25 31	19 10 12	20 48 18	22 45 23	00 59 31	03 17 48	05 32 21	07 45 45	10 02 44	12 20 15	14 25 33	16 10 51	17 41 49
25 32	19 10 11	20 48 16	22 45 21	00 59 29	03 17 46	05 32 21	07 45 46	10 02 46	12 20 17	14 25 35	16 10 52	17 41 50
25 33	19 10 10	20 48 15	22 45 19	00 59 27	03 17 45	05 32 21	07 45 47	10 02 48	12 20 19	14 25 37	16 10 53	17 41 50
25 34	19 10 09	20 48 13	22 45 17	00 59 25	03 17 44	05 32 20	07 45 48	10 02 49	12 20 21	14 25 38	16 10 54	17 41 50
25 35	19 10 09	20 48 11	22 45 14	00 59 23	03 17 43	05 32 20	07 45 48	10 02 51	12 20 24	14 25 40	16 10 56	17 41 50
25 36	19 10 08	20 48 10	22 45 12	00 59 21	03 17 42	05 32 20	07 45 49	10 02 53	12 20 26	14 25 42	16 10 57	17 41 50
25 37	19 10 07	20 48 08	22 45 10	00 59 19	03 17 40	05 32 20	07 45 50	10 02 54	12 20 28	14 25 44	16 10 58	17 41 51
25 38	19 10 06	20 48 06	22 45 08	00 59 17	03 17 39	05 32 20	07 45 51	10 02 56	12 20 30	14 25 46	16 10 59	17 41 51
25 39	19 10 05	20 48 05	22 45 06	00 59 15	03 17 38	05 32 19	07 45 52	10 02 58	12 20 32	14 25 48	16 11 00	17 41 51
25 40	19 10 05	20 48 03	22 45 04	00 59 13	03 17 37	05 32 19	07 45 52	10 02 59	12 20 34	14 25 50	16 11 02	17 41 51
25 41	19 10 04	20 48 01	22 45 01	00 59 11	03 17 36	05 32 19	07 45 53	10 03 01	12 20 37	14 25 52	16 11 03	17 41 52
25 42	19 10 03	20 47 59	22 44 59	00 59 09	03 17 34	05 32 19	07 45 54	10 03 03	12 20 39	14 25 54	16 11 04	17 41 52
25 43	19 10 02	20 47 58	22 44 57	00 59 08	03 17 33	05 32 19	07 45 55	10 03 04	12 20 41	14 25 56	16 11 05	17 41 52
25 44	19 10 01	20 47 56	22 44 55	00 59 06	03 17 32	05 32 18	07 45 56	10 03 06	12 20 43	14 25 58	16 11 06	17 41 52
25 45	19 10 01	20 47 54	22 44 53	00 59 04	03 17 31	05 32 18	07 45 56	10 03 08	12 20 45	14 26 00	16 11 08	17 41 52
25 46	19 10 00	20 47 53	22 44 51	00 59 02	03 17 30	05 32 18	07 45 57	10 03 10	12 20 47	14 26 02	16 11 09	17 41 53
25 47	19 09 59	20 47 51	22 44 48	00 59 00	03 17 28	05 32 18	07 45 58	10 03 11	12 20 50	14 26 04	16 11 10	17 41 53
25 48	19 09 58	20 47 49	22 44 46	00 58 58	03 17 27	05 32 17	07 45 59	10 03 13	12 20 52	14 26 06	16 11 11	17 41 53
25 49	19 09 57	20 47 48	22 44 44	00 58 56	03 17 26	05 32 17	07 46 00	10 03 15	12 20 54	14 26 08	16 11 12	17 41 53
25 50	19 09 57	20 47 46	22 44 42	00 58 54	03 17 25	05 32 17	07 46 00	10 03 16	12 20 56	14 26 10	16 11 14	17 41 53
25 51	19 09 56	20 47 44	22 44 40	00 58 52	03 17 24	05 32 17	07 46 01	10 03 18	12 20 58	14 26 12	16 11 15	17 41 54
25 52	19 09 55	20 47 43	22 44 38	00 58 50	03 17 22	05 32 17	07 46 02	10 03 20	12 21 00	14 26 14	16 11 16	17 41 54
25 53	19 09 54	20 47 41	22 44 35	00 58 48	03 17 21	05 32 16	07 46 03	10 03 21	12 21 03	14 26 16	16 11 17	17 41 54
25 54	19 09 53	20 47 39	22 44 33	00 58 46	03 17 20	05 32 16	07 46 04	10 03 23	12 21 05	14 26 18	16 11 19	17 41 54
25 55	19 09 53	20 47 37	22 44 31	00 58 44	03 17 19	05 32 16	07 46 05	10 03 25	12 21 07	14 26 20	16 11 20	17 41 55
25 56	19 09 52	20 47 36	22 44 29	00 58 42	03 17 18	05 32 16	07 46 05	10 03 26	12 21 09	14 26 22	16 11 21	17 41 55
25 57	19 09 51	20 47 34	22 44 27	00 58 40	03 17 16	05 32 16	07 46 06	10 03 28	12 21 11	14 26 24	16 11 22	17 41 55
25 58	19 09 50	20 47 32	22 44 24	00 58 38	03 17 15	05 32 15	07 46 07	10 03 30	12 21 14	14 26 26	16 11 23	17 41 55
25 59	19 09 49	20 47 31	22 44 22	00 58 36	03 17 14	05 32 15	07 46 08	10 03 32	12 21 16	14 26 28	16 11 25	17 41 56
26 00	19 09 49	20 47 29	22 44 20	00 58 34	03 17 13	05 32 15	07 46 09	10 03 33	12 21 18	14 26 30	16 11 26	
अक्षांश	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन

लग्नारम्भसाधन सारणी

उत्तर अक्षांशीय लग्न

अक्षांश	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
अं. क.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.
26 00	19 09 49	20 47 29	22 44 20	00 58 34	03 17 13	05 32 15	07 46 09	10 03 33	12 21 18	14 26 30	16 11 26	17 41 56
26 01	19 09 48	20 47 27	22 44 18	00 58 32	03 17 12	05 32 15	07 46 09	10 03 35	12 21 20	14 26 32	16 11 27	17 41 56
26 02	19 09 47	20 47 26	22 44 16	00 58 30	03 17 10	05 32 14	07 46 10	10 03 37	12 21 22	14 26 33	16 11 28	17 41 56
26 03	19 09 46	20 47 24	22 44 14	00 58 28	03 17 09	05 32 14	07 46 11	10 03 38	12 21 24	14 26 35	16 11 29	17 41 56
26 04	19 09 45	20 47 22	22 44 11	00 58 26	03 17 08	05 32 14	07 46 12	10 03 40	12 21 27	14 26 37	16 11 31	17 41 56
26 05	19 09 45	20 47 20	22 44 09	00 58 24	03 17 07	05 32 14	07 46 13	10 03 42	12 21 29	14 26 39	16 11 32	17 41 57
26 06	19 09 44	20 47 19	22 44 07	00 58 22	03 17 06	05 32 14	07 46 13	10 03 43	12 21 31	14 26 41	16 11 33	17 41 57
26 07	19 09 43	20 47 17	22 44 05	00 58 20	03 17 04	05 32 13	07 46 14	10 03 45	12 21 33	14 26 43	16 11 34	17 41 57
26 08	19 09 42	20 47 15	22 44 03	00 58 18	03 17 03	05 32 13	07 46 15	10 03 47	12 21 35	14 26 45	16 11 35	17 41 57
26 09	19 09 41	20 47 14	22 44 00	00 58 16	03 17 02	05 32 13	07 46 16	10 03 49	12 21 38	14 26 47	16 11 37	17 41 58
26 10	19 09 40	20 47 12	22 43 58	00 58 14	03 17 01	05 32 13	07 46 17	10 03 50	12 21 40	14 26 49	16 11 38	17 41 58
26 11	19 09 40	20 47 10	22 43 56	00 58 12	03 17 00	05 32 13	07 46 17	10 03 52	12 21 42	14 26 51	16 11 39	17 41 58
26 12	19 09 39	20 47 09	22 43 54	00 58 10	03 16 58	05 32 12	07 46 18	10 03 54	12 21 44	14 26 53	16 11 40	17 41 58
26 13	19 09 38	20 47 07	22 43 52	00 58 08	03 16 57	05 32 12	07 46 19	10 03 55	12 21 46	14 26 55	16 11 41	17 41 58
26 14	19 09 37	20 47 05	22 43 50	00 58 06	03 16 56	05 32 12	07 46 20	10 03 57	12 21 48	14 26 57	16 11 43	17 41 59
26 15	19 09 36	20 47 03	22 43 47	00 58 04	03 16 55	05 32 12	07 46 21	10 03 59	12 21 51	14 26 59	16 11 44	17 41 59
26 16	19 09 36	20 47 02	22 43 45	00 58 02	03 16 53	05 32 11	07 46 21	10 04 01	12 21 53	14 27 01	16 11 45	17 41 59
26 17	19 09 35	20 47 00	22 43 43	00 58 00	03 16 52	05 32 11	07 46 22	10 04 02	12 21 55	14 27 03	16 11 46	17 41 59
26 18	19 09 34	20 46 58	22 43 41	00 57 58	03 16 51	05 32 11	07 46 23	10 04 04	12 21 57	14 27 05	16 11 48	17 41 59
26 19	19 09 33	20 46 57	22 43 39	00 57 57	03 16 50	05 32 11	07 46 24	10 04 06	12 21 59	14 27 07	16 11 49	17 42 00
26 20	19 09 32	20 46 55	22 43 36	00 57 55	03 16 49	05 32 11	07 46 25	10 04 07	12 22 02	14 27 09	16 11 50	17 42 00
26 21	19 09 32	20 46 53	22 43 34	00 57 53	03 16 47	05 32 10	07 46 26	10 04 09	12 22 04	14 27 11	16 11 51	17 42 00
26 22	19 09 31	20 46 51	22 43 32	00 57 51	03 16 46	05 32 10	07 46 26	10 04 11	12 22 06	14 27 13	16 11 52	17 42 00
26 23	19 09 30	20 46 50	22 43 30	00 57 49	03 16 45	05 32 10	07 46 27	10 04 13	12 22 08	14 27 15	[illegible]	17 42 01
26 24	19 09 29	20 46 48	22 43 28	00 57 47	03 16 44	05 32 10	07 46 28	10 04 14	12 22 10	14 27 17	16 11 55	17 42 01
26 25	19 09 28	20 46 46	22 43 25	00 57 45	03 16 43	05 32 10	07 46 29	10 04 16	12 22 13	14 27 19	16 11 56	17 42 01
26 26	19 09 28	20 46 45	22 43 23	00 57 43	03 16 41	05 32 09	07 46 30	10 04 18	12 22 15	14 27 21	16 11 57	17 42 01
26 27	19 09 27	20 46 43	22 43 21	00 57 41	03 16 40	05 32 09	07 46 30	10 04 19	12 22 17	14 27 23	16 11 58	17 42 01
26 28	19 09 26	20 46 41	22 43 19	00 57 39	03 16 39	05 32 09	07 46 31	10 04 21	12 22 19	14 27 25	16 12 00	17 42 02
26 29	19 09 25	20 46 39	22 43 17	00 57 37	03 16 38	05 32 09	07 46 32	10 04 23	12 22 21	14 27 27	16 12 01	17 42 02
26 30	19 09 24	20 46 38	22 43 14	00 57 35	03 16 36	05 32 08	07 46 33	10 04 25	12 22 24	14 27 29	16 12 02	17 42 02
26 31	19 09 23	20 46 36	22 43 12	00 57 33	03 16 35	05 32 08	07 46 34	10 04 26	12 22 26	14 27 31	16 12 03	17 42 02
26 32	19 09 23	20 46 34	22 43 10	00 57 31	03 16 34	05 32 08	07 46 34	10 04 28	12 22 28	14 27 33	16 12 05	17 42 02
26 33	19 09 22	20 46 33	22 43 08	00 57 29	03 16 33	05 32 08	07 46 35	10 04 30	12 22 30	14 27 35	16 12 06	17 42 03
26 34	19 09 21	20 46 31	22 43 06	00 57 27	03 16 32	05 32 08	07 46 36	10 04 31	12 22 32	14 27 37	16 12 07	17 42 03
26 35	19 09 20	20 46 29	22 43 03	00 57 25	03 16 30	05 32 07	07 46 37	10 04 33	12 22 35	14 27 39	16 12 08	17 42 03
26 36	19 09 19	20 46 27	22 43 01	00 57 23	03 16 29	05 32 07	07 46 38	10 04 35	12 22 37	14 27 41	16 12 09	17 42 03
26 37	19 09 19	20 46 26	22 42 59	00 57 21	03 16 28	05 32 07	07 46 39	10 04 37	12 22 39	14 27 43	15 12 11	17 42 04
26 38	19 09 18	20 46 24	22 42 57	00 57 19	03 16 27	05 32 07	07 46 39	10 04 38	12 22 41	14 27 45	16 12 12	17 42 04
26 39	19 09 17	20 46 22	22 42 55	00 57 17	03 16 26	05 32 07	07 46 40	10 04 40	12 22 43	14 27 47	16 12 13	17 42 04
26 40	19 09 16	20 46 21	22 42 52	00 57 15	03 16 24	05 32 06	07 46 41	10 04 42	12 22 46	14 27 49	16 12 14	17 42 04
26 41	19 09 15	20 46 19	22 42 50	00 57 13	03 16 23	05 32 06	07 46 42	10 04 43	12 22 48	14 27 51	16 12 16	17 42 04
26 42	19 09 14	20 46 17	22 42 48	00 57 11	03 16 22	05 32 06	07 46 43	10 04 45	12 22 50	14 27 53	16 12 17	17 42 05
26 43	19 09 14	20 46 15	22 42 46	00 57 09	03 16 21	05 32 06	07 46 43	10 04 47	12 22 52	14 27 55	16 12 18	[illegible]
26 44	19 09 13	20 46 14	22 42 43	00 57 07	03 16 19	05 32 05	07 46 44	10 04 49	12 22 54	14 27 57	16 12 19	[illegible]
26 45	19 09 12	20 46 12	22 42 41	00 57 05	03 16 18	05 32 05	07 46 45	10 04 50	12 22 57	14 27 59	16 12 20	[illegible]
26 46	19 09 11	20 46 10	22 42 39	00 57 03	03 16 17	05 32 05	07 46 46	10 04 52	12 22 59	14 28 01	16 12 22	[illegible]
26 47	19 09 10	20 46 08	22 42 37	00 57 01	03 16 16	05 32 05	07 46 47	10 04 54	12 23 01	14 28 03	16 12 23	17 42 06
26 48	19 09 10	20 46 07	22 42 35	00 56 59	03 16 15	05 32 05	07 46 48	10 04 56	12 23 03	14 28 05	16 12 24	17 42 06
26 49	19 09 09	20 46 05	22 42 32	00 56 57	03 16 13	05 32 04	07 46 48	10 04 57	12 23 06	14 28 07	16 12 25	17 42 06
26 50	19 09 08	20 46 03	22 42 30	00 56 55	03 16 12	05 32 04	07 46 49	10 04 59	12 23 08	14 28 09	16 12 27	17 42 06
26 51	19 09 07	20 46 02	22 42 28	00 56 53	03 16 11	05 32 04	07 46 50	10 05 01	12 23 10	14 28 11	16 12 28	17 42 07
26 52	19 09 06	20 46 00	22 42 26	00 56 51	03 16 10	05 32 04	07 46 51	10 05 02	12 23 12	14 28 13	16 12 29	17 42 07
26 53	19 09 05	20 45 58	22 42 24	00 56 49	03 16 08	05 32 03	07 46 52	10 05 04	12 23 14	14 28 15	16 12 30	17 42 07
26 54	19 09 05	20 45 56	22 42 21	00 56 47	03 16 07	05 32 03	07 46 52	10 05 06	12 23 17	14 28 17	16 12 31	17 42 07
26 55	19 09 04	20 45 55	22 42 19	00 56 45	03 16 06	05 32 03	07 46 53	10 05 08	12 23 19	14 28 19	16 12 33	17 42 07
26 56	19 09 03	20 45 53	22 42 17	00 56 43	03 16 05	05 32 03	07 46 54	10 05 09	12 23 21	14 28 21	16 12 34	17 42 08
26 57	19 09 02	20 45 51	22 42 15	00 56 41	03 16 03	05 32 03	07 46 55	10 05 11	12 23 23	14 28 23	16 12 35	17 42 08
26 58	19 09 01	20 45 49	22 42 12	00 56 39	03 16 02	05 32 02	07 46 56	10 05 13	12 23 26	14 28 25	16 12 36	17 42 08
26 59	19 09 01	20 45 48	22 42 10	00 56 37	03 16 01	05 32 02	07 46 57	10 05 15	12 23 28	14 28 27	16 12 38	17 42 08
27 00	19 09 00	20 45 46	22 42 08	00 56 35	03 16 00	05 32 02	07 46 57	10 05 16	12 23 30	14 28 29	16 12 39	17 42 09
अक्षांश	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन

लग्नारम्भसाधन सारणी

उत्तर अक्षांशीय लग्न

अक्षांश	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
अं. क.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.
27 00	19 09 00	20 45 46	22 42 08	00 56 35	03 16 00	05 32 02	07 46 57	10 05 16	12 23 30	14 28 29	16 12 39	17 42 09
27 01	19 08 59	20 45 44	22 42 06	00 56 33	03 15 59	05 32 02	07 46 58	10 05 18	12 23 32	14 28 31	16 12 40	17 42 09
27 02	19 08 58	20 45 42	22 42 04	00 56 31	03 15 57	05 32 01	07 46 59	10 05 20	12 23 34	14 28 33	16 12 41	17 42 09
27 03	19 08 57	20 45 41	22 42 01	00 56 29	03 15 56	05 32 01	07 47 00	10 05 21	12 23 37	14 28 35	16 12 42	17 42 09
27 04	19 08 56	20 45 39	22 41 59	00 56 27	03 15 55	05 32 01	07 47 01	10 05 23	12 23 39	14 28 37	16 12 44	17 42 09
27 05	19 08 56	20 45 37	22 41 57	00 56 25	03 15 54	05 32 01	07 47 01	10 05 25	12 23 41	14 28 39	16 12 45	17 42 10
27 06	19 08 55	20 45 36	22 41 55	00 56 23	03 15 52	05 32 01	07 47 02	10 05 27	12 23 43	14 28 41	16 12 46	17 42 10
27 07	19 08 54	20 45 34	22 41 52	00 56 21	03 15 51	05 32 00	07 47 03	10 05 28	12 23 46	14 28 43	16 12 47	17 42 10
27 08	19 08 53	20 45 32	22 41 50	00 56 19	03 15 50	05 32 00	07 47 04	10 05 30	12 23 48	14 28 45	16 12 49	17 42 10
27 09	19 08 52	20 45 30	22 41 48	00 56 17	03 15 49	05 32 00	07 47 05	10 05 32	12 23 50	14 28 47	16 12 50	17 42 11
27 10	19 08 52	20 45 29	22 41 46	00 56 15	03 15 47	05 32 00	07 47 06	10 05 34	12 23 52	14 28 49	16 12 51	17 42 11
27 11	19 08 51	20 45 27	22 41 44	00 56 13	03 15 46	05 32 00	07 47 06	10 05 35	12 23 54	14 28 51	16 12 52	17 42 11
27 12	19 08 50	20 45 25	22 41 41	00 56 10	03 15 45	05 31 59	07 47 07	10 05 37	12 23 57	14 28 53	16 12 54	17 42 11
27 13	19 08 49	20 45 23	22 41 39	00 56 08	03 15 44	05 31 59	07 47 08	10 05 39	12 23 59	14 28 55	16 12 55	17 42 11
27 14	19 08 48	20 45 22	22 41 37	00 56 06	03 15 43	05 31 59	07 47 09	10 05 41	12 24 01	14 28 57	16 12 56	17 42 12
27 15	19 08 47	20 45 20	22 41 35	00 56 04	03 15 41	05 31 59	07 47 10	10 05 42	12 24 03	14 28 59	16 12 57	17 42 12
27 16	19 08 47	20 45 18	22 41 32	00 56 02	03 15 40	05 31 58	07 47 11	10 05 44	12 24 06	14 29 01	16 12 58	17 42 12
27 17	19 08 46	20 45 16	22 41 30	00 56 00	03 15 39	05 31 58	07 47 11	10 05 46	12 24 08	14 29 03	16 13 00	17 42 12
27 18	19 08 45	20 45 15	22 41 28	00 55 58	03 15 38	05 31 58	07 47 12	10 05 48	12 24 10	14 29 05	16 13 01	17 42 12
27 19	19 08 44	20 45 13	22 41 26	00 55 56	03 15 36	05 31 58	07 47 13	10 05 49	12 24 12	14 29 07	16 13 02	17 42 13
27 20	19 08 43	20 45 11	22 41 23	00 55 54	03 15 35	05 31 58	07 47 14	10 05 51	12 24 15	14 29 09	16 13 03	17 42 13
27 21	19 08 42	20 45 09	22 41 21	00 55 52	03 15 34	05 31 57	07 47 15	10 05 53	12 24 17	14 29 11	16 13 05	17 42 13
27 22	19 08 42	20 45 08	22 41 19	00 55 50	03 15 33	05 31 57	07 47 15	10 05 55	12 24 19	14 29 13	16 13 06	17 42 13
27 23	19 08 41	20 45 06	22 41 17	00 55 48	03 15 31	05 31 57	07 47 16	10 05 56	12 24 21	14 29 15	16 13 07	17 42 14
27 24	19 08 40	20 45 04	22 41 14	00 55 46	03 15 30	05 31 57	07 47 17	10 05 58	12 24 24	14 29 17	16 13 08	17 42 14
27 25	19 08 39	20 45 02	22 41 12	00 55 44	03 15 29	05 31 56	07 47 18	10 06 00	12 24 26	14 29 19	16 13 10	17 42 14
27 26	19 08 38	20 45 01	22 41 10	00 55 42	03 15 28	05 31 56	07 47 19	10 06 01	12 24 28	14 29 21	16 13 11	17 42 14
27 27	19 08 37	20 44 59	22 41 08	00 55 40	03 15 26	05 31 56	07 47 20	10 06 03	12 24 30	14 29 23	16 13 12	17 42 14
27 28	19 08 37	20 44 57	22 41 05	00 55 38	03 15 25	05 31 56	07 47 20	10 06 05	12 24 32	14 29 25	16 13 13	17 42 15
27 29	19 08 36	20 44 55	22 41 03	00 55 36	03 15 24	05 31 56	07 47 21	10 06 07	12 24 35	14 29 28	16 13 15	17 42 15
27 30	19 08 35	20 44 54	22 41 01	00 55 34	03 15 23	05 31 55	07 47 22	10 06 08	12 24 37	14 29 30	16 13 16	17 42 15
27 31	19 08 34	20 44 52	22 40 59	00 55 32	03 15 22	05 31 55	07 47 23	10 06 10	12 24 39	14 29 32	16 13 17	17 42 15
27 32	19 08 33	20 44 50	22 40 56	00 55 30	03 15 20	05 31 55	07 47 24	10 06 12	12 24 41	14 29 34	16 13 18	17 42 16
27 33	19 08 33	20 44 48	22 40 54	00 55 28	03 15 19	05 31 55	07 47 25	10 06 14	12 24 44	14 29 36	16 13 20	17 42 16
27 34	19 08 32	20 44 47	22 40 52	00 55 26	03 15 18	05 31 54	07 47 25	10 06 15	12 24 46	14 29 38	16 13 21	17 42 16
27 35	19 08 31	20 44 45	22 40 50	00 55 24	03 15 17	05 31 54	07 47 26	10 06 17	12 24 48	14 29 40	16 13 22	17 42 16
27 36	19 08 30	20 44 43	22 40 47	00 55 22	03 15 15	05 31 54	07 47 27	10 06 19	12 24 50	14 29 42	16 13 23	17 42 16
27 37	19 08 29	20 44 41	22 40 45	00 55 20	03 15 14	05 31 54	07 47 28	10 06 21	12 24 53	14 29 44	16 13 24	17 42 17
27 38	19 08 28	20 44 40	22 40 43	00 55 18	03 15 13	05 31 54	07 47 29	10 06 23	12 24 55	14 29 46	16 13 26	17 42 17
27 39	19 08 28	20 44 38	22 40 41	00 55 16	03 15 12	05 31 53	07 47 30	10 06 24	12 24 57	14 29 48	16 13 27	17 42 17
27 40	19 08 27	20 44 36	22 40 38	00 55 14	03 15 10	05 31 53	07 47 30	10 06 26	12 24 59	14 29 50	16 13 28	17 42 17
27 41	19 08 26	20 44 34	22 40 36	00 55 12	03 15 09	05 31 53	07 47 31	10 06 28	12 25 02	14 29 52	16 13 29	17 42 18
27 42	19 08 25	20 44 33	22 40 34	00 55 10	03 15 08	05 31 53	07 47 32	10 06 30	12 25 04	14 29 54	16 13 31	17 42 18
27 43	19 08 24	20 44 31	22 40 32	00 55 08	03 15 07	05 31 52	07 47 33	10 06 31	12 25 06	14 29 56	16 13 32	17 42 18
27 44	19 08 23	20 44 29	22 40 29	00 55 06	03 15 05	05 31 52	07 47 34	10 06 33	12 25 09	14 29 58	16 13 33	17 42 18
27 45	19 08 23	20 44 27	22 40 27	00 55 04	03 15 04	05 31 52	07 47 35	10 06 35	12 25 11	14 30 00	16 13 34	17 42 18
27 46	19 08 22	20 44 26	22 40 25	00 55 02	03 15 03	05 31 52	07 47 35	10 06 37	12 25 13	14 30 02	16 13 36	17 42 19
27 47	19 08 21	20 44 24	22 40 23	00 54 59	03 15 02	05 31 52	07 47 36	10 06 38	12 25 15	14 30 04	16 13 37	17 42 19
27 48	19 08 20	20 44 22	22 40 20	00 54 57	03 15 00	05 31 51	07 47 37	10 06 40	12 25 18	14 30 06	16 13 38	17 42 19
27 49	19 08 19	20 44 20	22 40 18	00 54 55	03 14 59	05 31 51	07 47 38	10 06 42	12 25 20	14 30 08	16 13 39	17 42 19
27 50	19 08 18	20 44 19	22 40 16	00 54 53	03 14 58	05 31 51	07 47 39	10 06 44	12 25 22	14 30 10	16 13 41	17 42 20
27 51	19 08 18	20 44 17	22 40 14	00 54 51	03 14 57	05 31 51	07 47 40	10 06 45	12 25 24	14 30 12	16 13 42	17 42 20
27 52	19 08 17	20 44 15	22 40 11	00 54 49	03 14 55	05 31 51	07 47 40	10 06 47	12 25 27	14 30 14	16 13 43	17 42 20
27 53	19 08 16	20 44 13	22 40 09	00 54 47	03 14 54	05 31 50	07 47 41	10 06 49	12 25 29	14 30 16	16 13 44	17 42 20
27 54	19 08 15	20 44 12	22 40 07	00 54 45	03 14 53	05 31 50	07 47 42	10 06 51	12 25 31	14 30 18	16 13 46	17 42 20
27 55	19 08 14	20 44 10	22 40 05	00 54 43	03 14 52	05 31 50	07 47 43	10 06 52	12 25 33	14 30 21	16 13 47	17 42 21
27 56	19 08 13	20 44 08	22 40 02	00 54 41	03 14 50	05 31 50	07 47 44	10 06 54	12 25 36	14 30 23	16 13 48	17 42 21
27 57	19 08 13	20 44 06	22 40 00	00 54 39	03 14 49	05 31 49	07 47 45	10 06 56	12 25 38	14 30 25	16 13 49	17 42 21
27 58	19 08 12	20 44 05	22 39 58	00 54 37	03 14 48	05 31 49	07 47 45	10 06 58	12 25 40	14 30 27	16 13 51	17 42 21
27 59	19 08 11	20 44 03	22 39 56	00 54 35	03 14 47	05 31 49	07 47 46	10 06 59	12 25 42	14 30 29	16 13 52	17 42 22
28 00	19 08 10	20 44 01	22 39 53	00 54 33	03 14 45	05 31 49	07 47 47	10 07 01	12 25 45	14 30 31	16 13 53	17 42 22
अक्षांश	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन

लग्नारम्भसाधन सारणी

उत्तर अक्षांशीय लग्न

अक्षांश	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
अं. क.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.
28 00	19 08 10	20 44 01	22 39 53	00 54 33	03 14 45	05 31 49	07 47 47	10 07 01	12 25 45	14 30 31	16 13 53	17 42 22
28 01	19 08 09	20 43 59	22 39 51	00 54 31	03 14 44	05 31 49	07 47 48	10 07 03	12 25 47	14 30 33	16 13 54	17 42 22
28 02	19 08 08	20 43 57	22 39 49	00 54 29	03 14 43	05 31 48	07 47 49	10 07 05	12 25 49	14 30 35	16 13 56	17 42 22
28 03	19 08 08	20 43 56	22 39 46	00 54 27	03 14 42	05 31 48	07 47 50	10 07 07	12 25 52	14 30 37	16 13 57	17 42 22
28 04	19 08 07	20 43 54	22 39 44	00 54 25	03 14 40	05 31 48	07 47 50	10 07 08	12 25 54	14 30 39	16 13 58	17 42 23
28 05	19 08 06	20 43 52	22 39 42	00 54 23	03 14 39	05 31 48	07 47 51	10 07 10	12 25 56	14 30 41	16 13 59	17 42 23
28 06	19 08 05	20 43 50	22 39 40	00 54 21	03 14 38	05 31 47	07 47 52	10 07 12	12 25 58	14 30 43	16 14 01	17 42 23
28 07	19 08 04	20 43 49	22 39 37	00 54 18	03 14 37	05 31 47	07 47 53	10 07 14	12 26 01	14 30 45	16 14 02	17 42 23
28 08	19 08 03	20 43 47	22 39 35	00 54 16	03 14 35	05 31 47	07 47 54	10 07 15	12 26 03	14 30 47	16 14 03	17 42 24
28 09	19 08 03	20 43 45	22 39 33	00 54 14	03 14 34	05 31 47	07 47 55	10 07 17	12 26 05	14 30 49	16 14 04	17 42 24
28 10	19 08 02	20 43 43	22 39 31	00 54 12	03 14 33	05 31 47	07 47 55	10 07 19	12 26 07	14 30 51	16 14 06	17 42 24
28 11	19 08 01	20 43 42	22 39 28	00 54 10	03 14 32	05 31 46	07 47 56	10 07 21	12 26 10	14 30 53	16 14 07	17 42 24
28 12	19 08 00	20 43 40	22 39 26	00 54 08	03 14 30	05 31 46	07 47 57	10 07 22	12 26 12	14 30 55	16 14 08	17 42 24
28 13	19 07 59	20 43 38	22 39 24	00 54 06	03 14 29	05 31 46	07 47 58	10 07 24	12 26 14	14 30 57	16 14 09	17 42 25
28 14	19 07 58	20 43 36	22 39 21	00 54 04	03 14 28	05 31 46	07 47 59	10 07 26	12 26 17	14 31 00	16 14 11	17 42 25
28 15	19 07 57	20 43 34	22 39 19	00 54 02	03 14 27	05 31 45	07 48 00	10 07 28	12 26 19	14 31 02	16 14 12	17 42 25
28 16	19 07 57	20 43 33	22 39 17	00 54 00	03 14 25	05 31 45	07 48 00	10 07 30	12 26 21	14 31 04	16 14 13	17 42 25
28 17	19 07 56	20 43 31	22 39 15	00 53 58	03 14 24	05 31 45	07 48 01	10 07 31	12 26 23	14 31 06	16 14 15	17 42 26
28 18	19 07 55	20 43 29	22 39 12	00 53 56	03 14 23	05 31 45	07 48 02	10 07 33	12 26 26	14 31 08	16 14 16	17 42 26
28 19	19 07 54	20 43 27	22 39 10	00 53 54	03 14 22	05 31 44	07 48 03	10 07 35	12 26 28	14 31 10	16 14 17	17 42 26
28 20	19 07 53	20 43 26	22 39 08	00 53 52	03 14 20	05 31 44	07 48 04	10 07 37	12 26 30	14 31 12	16 14 18	17 42 26
28 21	19 07 52	20 43 24	22 39 05	00 53 50	03 14 19	05 31 44	07 48 05	10 07 38	12 26 33	14 31 14	16 14 20	17 42 26
28 22	19 07 52	20 43 22	22 39 03	00 53 48	03 14 18	05 31 44	07 48 06	10 07 40	12 26 35	14 31 16	16 14 21	17 42 27
28 23	19 07 51	20 43 20	22 39 01	00 53 46	03 14 17	05 31 44	07 48 06	10 07 42	12 26 37	14 31 18	16 14 22	17 42 27
28 24	19 07 50	20 43 18	22 38 59	00 53 43	03 14 15	05 31 43	07 48 07	10 07 44	12 26 39	14 31 20	16 14 23	17 42 27
28 25	19 07 49	20 43 17	22 38 56	00 53 41	03 14 14	05 31 43	07 48 08	10 07 46	12 26 42	14 31 22	16 14 25	17 42 27
28 26	19 07 48	20 43 15	22 38 54	00 53 39	03 14 13	05 31 43	07 48 09	10 07 47	12 26 44	14 31 24	16 14 26	17 42 28
28 27	19 07 47	20 43 13	22 38 52	00 53 37	03 14 11	05 31 43	07 48 10	10 07 49	12 26 46	14 31 26	16 14 27	17 42 28
28 28	19 07 47	20 43 11	22 38 49	00 53 35	03 14 10	05 31 42	07 48 11	10 07 51	12 26 49	14 31 28	16 14 28	17 42 28
28 29	19 07 46	20 43 10	22 38 47	00 53 33	03 14 09	05 31 42	07 48 11	10 07 53	12 26 51	14 31 30	16 14 30	17 42 28
28 30	19 07 45	20 43 08	22 38 45	00 53 31	03 14 08	05 31 42	07 48 12	10 07 55	12 26 53	14 31 33	16 14 31	17 42 28
28 31	19 07 44	20 43 06	22 38 43	00 53 29	03 14 06	05 31 42	07 48 13	10 07 56	12 26 55	14 31 35	16 14 32	17 42 29
28 32	19 07 43	20 43 04	22 38 40	00 53 27	03 14 05	05 31 42	07 48 14	10 07 58	12 26 58	14 31 37	16 14 33	17 42 29
28 33	19 07 42	20 43 02	22 38 38	00 53 25	03 14 04	05 31 41	07 48 15	10 08 00	12 27 00	14 31 39	16 14 35	17 42 29
28 34	19 07 41	20 43 01	22 38 36	00 53 23	03 14 03	05 31 41	07 48 16	10 08 02	12 27 02	14 31 41	16 14 36	17 42 29
28 35	19 07 41	20 42 59	22 38 33	00 53 21	03 14 01	05 31 41	07 48 16	10 08 03	12 27 05	14 31 43	16 14 37	17 42 30
28 36	19 07 40	20 42 57	22 38 31	00 53 19	03 14 00	05 31 41	07 48 17	10 08 05	12 27 07	14 31 45	16 14 39	17 42 30
28 37	19 07 39	20 42 55	22 38 29	00 53 17	03 13 59	05 31 40	07 48 18	10 08 07	12 27 09	14 31 47	16 14 40	17 42 30
28 38	19 07 38	20 42 53	22 38 26	00 53 14	03 13 58	05 31 40	07 48 19	10 08 09	12 27 12	14 31 49	16 14 41	17 42 30
28 39	19 07 37	20 42 52	22 38 24	00 53 12	03 13 56	05 31 40	07 48 20	10 08 11	12 27 14	14 31 51	16 14 42	17 42 30
28 40	19 07 36	20 42 50	22 38 22	00 53 10	03 13 55	05 31 40	07 48 21	10 08 12	12 27 16	14 31 53	16 14 44	17 42 31
28 41	19 07 36	20 42 48	22 38 20	00 53 08	03 13 54	05 31 40	07 48 22	10 08 14	12 27 18	14 31 55	16 14 45	17 42 31
28 42	19 07 35	20 42 46	22 38 17	00 53 06	03 13 52	05 31 39	07 48 22	10 08 16	12 27 21	14 31 57	16 14 46	17 42 31
28 43	19 07 34	20 42 44	22 38 15	00 53 04	03 13 51	05 31 39	07 48 23	10 08 18	12 27 23	14 32 00	16 14 47	17 42 31
28 44	19 07 33	20 42 43	22 38 13	00 53 02	03 13 50	05 31 39	07 48 24	10 08 20	12 27 25	14 32 02	16 14 49	17 42 32
28 45	19 07 32	20 42 41	22 38 10	00 53 00	03 13 49	05 31 39	07 48 25	10 08 21	12 27 28	14 32 04	16 14 50	17 42 32
28 46	19 07 31	20 42 39	22 38 08	00 52 58	03 13 47	05 31 38	07 48 26	10 08 23	12 27 30	14 32 06	16 14 51	17 42 32
28 47	19 07 30	20 42 37	22 38 06	00 52 56	03 13 46	05 31 38	07 48 27	10 08 25	12 27 32	14 32 08	16 14 52	17 42 32
28 48	19 07 30	20 42 35	22 38 03	00 52 54	03 13 45	05 31 38	07 48 28	10 08 27	12 27 35	14 32 10	16 14 54	17 42 33
28 49	19 07 29	20 42 34	22 38 01	00 52 52	03 13 44	05 31 38	07 48 28	10 08 29	12 27 37	14 32 12	16 14 55	17 42 33
28 50	19 07 28	20 42 32	22 37 59	00 52 49	03 13 42	05 31 38	07 48 29	10 08 30	12 27 39	14 32 14	16 14 56	17 42 33
28 51	19 07 27	20 42 30	22 37 56	00 52 47	03 13 41	05 31 37	07 48 30	10 08 32	12 27 41	14 32 16	16 14 58	17 42 33
28 52	19 07 26	20 42 28	22 37 54	00 52 45	03 13 40	05 31 37	07 48 31	10 08 34	12 27 44	14 32 18	16 14 59	17 42 33
28 53	19 07 25	20 42 27	22 37 52	00 52 43	03 13 38	05 31 37	07 48 32	10 08 36	12 27 46	14 32 20	16 15 00	17 42 34
28 54	19 07 25	20 42 25	22 37 50	00 52 41	03 13 37	05 31 37	07 48 33	10 08 38	12 27 48	14 32 23	16 15 01	17 42 34
28 55	19 07 24	20 42 23	22 37 47	00 52 39	03 13 36	05 31 36	07 48 33	10 08 39	12 27 51	14 32 25	16 15 03	17 42 34
28 56	19 07 23	20 42 21	22 37 45	00 52 37	03 13 35	05 31 36	07 48 34	10 08 41	12 27 53	14 32 27	16 15 04	17 42 34
28 57	19 07 22	20 42 19	22 37 43	00 52 35	03 13 33	05 31 36	07 48 35	10 08 43	12 27 55	14 32 29	16 15 05	17 42 35
28 58	19 07 21	20 42 18	22 37 40	00 52 33	03 13 32	05 31 36	07 48 36	10 08 45	12 27 58	14 32 31	16 15 06	17 42 35
28 59	19 07 20	20 42 16	22 37 38	00 52 31	03 13 31	05 31 35	07 48 37	10 08 47	12 28 00	14 32 33	16 15 08	17 42 35
29 00	19 07 19	20 42 14	22 37 36	00 52 29	03 13 30	05 31 35	07 48 38	10 08 48	12 28 02	14 32 35	16 15 09	17 42 35
अक्षांश	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन

लग्नारम्भसाधन सारणी

उत्तर अक्षांशीय लग्न

अक्षांश	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
अं. क.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.
29 00	19 07 19	20 42 14	22 37 36	00 52 29	03 13 30	05 31 35	07 48 38	10 08 48	12 28 02	14 32 35	16 15 09	17 42 35
29 01	19 07 19	20 42 12	22 37 33	00 52 26	03 13 28	05 31 35	07 48 39	10 08 50	12 28 05	14 32 37	16 15 10	17 42 35
29 02	19 07 18	20 42 10	22 37 31	00 52 24	03 13 27	05 31 35	07 48 39	10 08 52	12 28 07	14 32 39	16 15 12	17 42 36
29 03	19 07 17	20 42 08	22 37 29	00 52 22	03 13 26	05 31 35	07 48 40	10 08 54	12 28 09	14 32 41	16 15 13	17 42 36
29 04	19 07 16	20 42 07	22 37 26	00 52 20	03 13 24	05 31 34	07 48 41	10 08 56	12 28 12	14 32 43	16 15 14	17 42 36
29 05	19 07 15	20 42 05	22 37 24	00 52 18	03 13 23	05 31 34	07 48 42	10 08 57	12 28 14	14 32 46	13 15 15	17 42 36
29 06	19 07 14	20 42 03	22 37 22	00 52 16	03 13 22	05 31 34	07 48 43	10 08 59	12 28 16	14 32 48	16 15 17	17 42 37
29 07	19 07 13	20 42 01	22 37 19	00 52 14	03 13 21	05 31 34	07 48 44	10 09 01	12 28 19	14 32 50	16 15 18	17 42 37
29 08	19 07 13	20 41 59	22 37 17	00 52 12	03 13 19	05 31 33	07 48 45	10 09 03	12 28 21	14 32 52	16 15 19	17 42 37
29 09	19 07 12	20 41 58	22 37 15	00 52 10	03 13 18	05 31 33	07 48 45	10 09 05	12 28 23	14 32 54	16 15 21	17 42 37
29 10	19 07 11	20 41 56	22 37 12	00 52 08	03 13 17	05 31 33	07 48 46	10 09 06	12 28 26	14 32 56	16 15 22	17 42 37
29 11	19 07 10	20 41 54	22 37 10	00 52 05	03 13 15	05 31 33	07 48 47	10 09 08	12 28 28	14 32 58	16 15 23	17 42 38
29 12	19 07 09	20 41 52	22 37 08	00 52 03	03 13 14	05 31 33	07 48 48	10 09 10	12 28 30	14 33 00	16 15 24	17 42 38
29 13	19 07 08	20 41 50	22 37 05	00 52 01	03 13 13	05 31 32	07 48 49	10 09 12	12 28 33	14 33 02	16 15 26	17 42 38
29 14	19 07 07	20 41 49	22 37 03	00 51 59	03 13 12	05 31 32	07 48 50	10 09 14	12 28 35	14 33 04	16 15 27	17 42 38
29 15	19 07 07	20 41 47	22 37 01	00 51 57	03 13 10	05 31 32	07 48 51	10 09 15	12 28 37	14 33 07	16 15 28	17 42 39
29 16	19 07 06	20 41 45	22 36 58	00 51 55	03 13 09	05 31 32	07 48 51	10 09 17	12 28 40	14 33 09	16 15 30	17 42 39
29 17	19 07 05	20 41 43	22 36 56	00 51 53	03 13 08	05 31 31	07 48 52	10 09 19	12 28 42	14 33 11	16 15 31	17 42 39
29 18	19 07 04	20 41 41	22 36 54	00 51 51	03 13 07	05 31 31	07 48 53	10 09 21	12 28 44	14 33 13	16 15 32	17 42 39
29 19	19 07 03	20 41 40	22 36 51	00 51 49	03 13 05	05 31 31	07 48 54	10 09 23	12 28 47	14 33 15	16 15 33	17 42 40
29 20	19 07 02	20 41 38	22 36 49	00 51 47	03 13 04	05 31 31	07 48 55	10 09 25	12 28 49	14 33 17	16 15 35	17 42 40
29 21	19 07 01	20 41 36	22 36 47	00 51 44	03 13 03	05 31 31	07 48 56	10 09 26	12 28 51	14 33 19	16 15 36	17 42 40
29 22	19 07 01	20 41 34	22 36 44	00 51 42	03 13 01	05 31 30	07 48 57	10 09 28	12 28 54	14 33 21	16 15 37	17 42 40
29 23	19 07 00	20 41 32	22 36 42	00 51 40	03 13 00	05 31 30	07 48 57	10 09 30	12 28 56	14 33 23	16 15 38	17 42 40
29 24	19 06 59	20 41 30	22 36 40	00 51 38	03 12 59	05 31 30	07 48 58	10 09 32	12 28 58	14 33 26	16 15 40	17 42 41
29 25	19 06 58	20 41 29	22 36 37	00 51 36	03 12 58	05 31 30	07 48 59	10 09 34	12 29 01	14 33 28	16 15 41	17 42 41
29 26	19 06 57	20 41 27	22 36 35	00 51 34	03 12 56	05 31 29	07 49 00	10 09 35	12 29 03	14 33 30	16 15 42	17 42 41
29 27	19 06 56	20 41 25	22 36 33	00 51 32	03 12 55	05 31 29	07 49 01	10 09 37	12 29 05	14 33 32	16 15 44	17 42 41
29 28	19 06 55	20 41 23	22 36 30	00 51 30	03 12 54	05 31 29	07 49 02	10 09 39	12 29 08	14 33 34	16 15 45	17 42 42
29 29	19 06 55	20 41 21	22 36 28	00 51 28	03 12 52	05 31 29	07 49 03	10 09 41	12 29 10	14 33 36	16 15 46	17 42 42
29 30	19 06 54	20 41 20	22 36 26	00 51 25	03 12 51	05 31 28	07 49 03	10 09 43	12 29 12	14 33 38	16 15 48	17 42 42
29 31	19 06 53	20 41 18	22 36 23	00 51 23	03 12 50	05 31 28	07 49 04	10 09 45	12 29 15	14 33 40	16 15 49	17 42 42
29 32	19 06 52	20 41 16	22 36 21	00 51 21	03 12 48	05 31 28	07 49 05	10 09 46	12 29 17	14 33 42	16 15 50	17 42 43
29 33	19 06 51	20 41 14	22 36 19	00 51 19	03 12 47	05 31 28	07 49 06	10 09 48	12 29 19	14 33 45	16 15 51	17 42 43
29 34	19 06 50	20 41 12	22 36 16	00 51 17	03 12 46	05 31 28	07 49 07	10 09 50	12 29 22	14 33 47	16 15 53	17 42 43
29 35	19 06 49	20 41 10	22 36 14	00 51 15	03 12 45	05 31 27	07 49 08	10 09 52	12 29 24	14 33 49	16 15 54	17 42 43
29 36	19 06 49	20 41 09	22 36 12	00 51 13	03 12 43	05 31 27	07 49 09	10 09 54	12 29 26	14 33 51	16 15 55	17 42 43
29 37	19 06 48	20 41 07	22 36 09	00 51 11	03 12 42	05 31 27	07 49 09	10 09 55	12 29 29	14 33 53	16 15 57	17 42 44
29 38	19 06 47	20 41 05	22 36 07	00 51 08	03 12 41	05 31 27	07 49 10	10 09 57	12 29 31	14 33 55	16 15 58	17 42 44
29 39	19 06 46	20 41 03	22 36 05	00 51 06	03 12 39	05 31 26	07 49 11	10 09 59	12 29 33	14 33 57	16 15 59	17 42 44
29 40	19 06 45	20 41 01	22 36 02	00 51 04	03 12 38	05 31 26	07 49 12	10 10 01	12 29 36	14 33 59	16 16 00	17 42 44
29 41	19 06 44	20 40 59	22 36 00	00 51 02	03 12 37	05 31 26	07 49 13	10 10 03	12 29 38	14 34 02	16 16 02	17 42 45
29 42	19 06 43	20 40 58	22 35 58	00 51 00	03 12 36	05 31 26	07 49 14	10 10 05	12 29 40	14 34 04	16 16 03	17 42 45
29 43	19 06 42	20 40 56	22 35 55	00 50 58	03 12 34	05 31 25	07 49 15	10 10 06	12 29 43	14 34 06	16 16 04	17 42 45
29 44	19 06 42	20 40 54	22 35 53	00 50 56	03 12 33	05 31 25	07 49 15	10 10 08	12 29 45	14 34 08	16 16 06	17 42 45
29 45	19 06 41	20 40 52	22 35 50	00 50 54	03 12 32	05 31 25	07 49 16	10 10 10	12 29 47	14 34 10	16 16 07	17 42 45
29 46	19 06 40	20 40 50	22 35 48	00 50 51	03 12 30	05 31 25	07 49 17	10 10 12	12 29 50	14 34 12	16 16 08	17 42 46
29 47	19 06 39	20 40 48	22 35 46	00 50 49	03 12 29	05 31 25	07 49 18	10 10 14	12 29 52	14 34 14	16 16 10	17 42 46
29 48	19 06 38	20 40 47	22 35 43	00 50 47	03 12 28	05 31 24	07 49 19	10 10 16	12 29 55	14 34 16	16 16 11	17 42 46
29 49	19 06 37	20 40 45	22 35 41	00 50 45	03 12 26	05 31 24	07 49 20	10 10 17	12 29 57	14 34 19	16 16 12	17 42 46
29 50	19 06 36	20 40 43	22 35 39	00 50 43	03 12 25	05 31 24	07 49 21	10 10 19	12 29 59	14 34 21	16 16 13	17 42 47
29 51	19 06 36	20 40 41	22 35 36	00 50 41	03 12 24	05 31 24	07 49 22	10 10 21	12 30 02	14 34 23	16 16 15	17 42 47
29 52	19 06 35	20 40 39	22 35 34	00 50 39	03 12 23	05 31 23	07 49 22	10 10 23	12 30 04	14 34 25	16 16 16	17 42 47
29 53	19 06 34	20 40 37	22 35 32	00 50 37	03 12 21	05 31 23	07 49 23	10 10 25	12 30 06	14 34 27	16 16 17	17 42 47
29 54	19 06 33	20 40 36	22 35 29	00 50 34	03 12 20	05 31 23	07 49 24	10 10 27	12 30 09	14 34 29	16 16 19	17 42 48
29 55	19 06 32	20 40 34	22 35 27	00 50 32	03 12 19	05 31 23	07 49 25	10 10 28	12 30 11	14 34 31	16 16 20	17 42 48
29 56	19 06 31	20 40 32	22 35 25	00 50 30	03 12 17	05 31 22	07 49 26	10 10 30	12 30 13	14 34 33	16 16 21	17 42 48
29 57	19 06 30	20 40 30	22 35 22	00 50 28	03 12 16	05 31 22	07 49 27	10 10 32	12 30 16	14 34 36	16 16 23	17 42 48
29 58	19 06 29	20 40 28	22 35 20	00 50 26	03 12 15	05 31 22	07 49 28	10 10 34	12 30 18	14 34 38	16 16 24	17 42 48
29 59	19 06 29	20 40 26	22 35 17	00 50 24	03 12 13	05 31 22	07 49 29	10 10 36	12 30 21	14 34 40	16 16 25	17 42 49
30 00	19 06 28	20 40 25	22 35 15	00 50 22	03 12 12	05 31 22	07 49 29	10 10 38	12 30 23	14 34 42	16 16 26	17 42 49
अक्षांश	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन

लग्नारम्भसाधन सारणी

उत्तर अक्षांशीय लग्न

अक्षांश	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
अं. क.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.
30 00	19 06 28	20 40 25	22 35 15	00 50 22	03 12 12	05 31 22	07 49 29	10 10 38	12 30 23	14 34 42	16 16 26	17 42 49
30 01	19 06 27	20 40 23	22 35 13	00 50 19	03 12 11	05 31 21	07 49 30	10 10 40	12 30 25	14 34 44	16 16 28	17 42 49
30 02	19 06 26	20 40 21	22 35 10	00 50 17	03 12 10	05 31 21	07 49 31	10 10 41	12 30 28	14 34 46	16 16 29	17 42 49
30 03	19 06 25	20 40 19	22 35 08	00 50 15	03 12 08	05 31 21	07 49 32	10 10 43	12 30 30	14 34 48	16 16 30	17 42 50
30 04	19 06 24	20 40 17	22 35 06	00 50 13	03 12 07	05 31 21	07 49 33	10 10 45	12 30 32	14 34 51	16 16 32	17 42 50
30 05	19 06 23	20 40 15	22 35 03	00 50 11	03 12 06	05 31 20	07 49 34	10 10 47	12 30 35	14 34 53	16 16 33	17 42 50
30 06	19 06 23	20 40 13	22 35 01	00 50 09	03 12 04	05 31 20	07 49 35	10 10 49	12 30 37	14 34 55	16 16 34	17 42 50
30 07	19 06 22	20 40 12	22 34 58	00 50 07	03 12 03	05 31 20	07 49 35	10 10 51	12 30 40	14 34 57	16 16 36	17 42 51
30 08	19 06 21	20 40 10	22 34 56	00 50 04	03 12 02	05 31 20	07 49 36	10 10 52	12 30 42	14 34 59	16 16 37	17 42 51
30 09	19 06 20	20 40 08	22 34 54	00 50 02	03 12 00	05 31 19	07 49 37	10 10 54	12 30 44	14 35 01	16 16 38	17 42 51
30 10	19 06 19	20 40 06	22 34 51	00 50 00	03 11 59	05 31 19	07 49 38	10 10 56	12 30 47	14 35 03	16 16 39	17 42 51
30 11	19 06 18	20 40 04	22 34 49	00 49 58	03 11 58	05 31 19	07 49 39	10 10 58	12 30 49	14 35 06	16 16 41	17 42 51
30 12	19 06 17	20 40 02	22 34 47	00 49 56	03 11 57	05 31 19	07 49 40	10 11 00	12 30 51	14 35 08	16 16 42	17 42 52
30 13	19 06 16	20 40 01	22 34 44	00 49 54	03 11 55	05 31 19	07 49 41	10 11 02	12 30 54	14 35 10	16 16 43	17 42 52
30 14	19 06 16	20 39 59	22 34 42	00 49 52	03 11 54	05 31 18	07 49 42	10 11 04	12 30 56	14 35 12	16 16 45	17 42 52
30 15	19 06 15	20 39 57	22 34 39	00 49 49	03 11 53	05 31 18	07 49 42	10 11 05	12 30 59	14 35 14	16 16 46	17 42 52
30 16	19 06 14	20 39 55	22 34 37	00 49 47	03 11 51	05 31 18	07 49 43	10 11 07	12 31 01	14 35 16	16 16 47	17 42 53
30 17	19 06 13	20 39 53	22 34 35	00 49 45	03 11 50	05 31 18	07 49 44	10 11 09	12 31 03	14 35 19	16 16 49	17 42 53
30 18	19 06 12	20 39 51	22 34 32	00 49 43	03 11 49	05 31 17	07 49 45	10 11 11	12 31 06	14 35 21	16 16 50	17 42 53
30 19	19 06 11	20 39 49	22 34 30	00 49 41	03 11 47	05 31 17	07 49 46	10 11 13	12 31 08	14 35 23	16 16 51	17 42 53
30 20	19 06 10	20 39 48	22 34 27	00 49 39	03 11 46	05 31 17	07 49 47	10 11 15	12 31 11	14 35 25	16 16 53	17 42 54
30 21	19 06 09	20 39 46	22 34 25	00 49 36	03 11 45	05 31 17	07 49 48	10 11 16	12 31 13	14 35 27	16 16 54	17 42 54
30 22	19 06 09	20 39 44	22 34 23	00 49 34	03 11 43	05 31 16	07 49 49	10 11 18	12 31 15	14 35 29	16 16 55	17 42 54
30 23	19 06 08	20 39 42	22 34 20	00 49 32	03 11 42	05 31 16	07 49 49	10 11 20	12 31 18	14 35 31	16 16 57	17 42 54
30 24	19 06 07	20 39 40	22 34 18	00 49 30	03 11 41	05 31 16	07 49 50	10 11 22	12 31 20	14 35 34	16 16 58	17 42 55
30 25	19 06 06	20 39 38	22 34 15	00 49 28	03 11 39	05 31 16	07 49 51	10 11 24	12 31 22	14 35 36	16 16 59	17 42 55
30 26	19 06 05	20 39 36	22 34 13	00 49 26	03 11 38	05 31 16	07 49 52	10 11 26	12 31 25	14 35 38	16 17 00	17 42 55
30 27	19 06 04	20 39 35	22 34 11	00 49 23	03 11 37	05 31 15	07 49 53	10 11 28	12 31 27	14 35 40	16 17 02	17 42 55
30 28	19 06 03	20 39 33	22 34 08	00 49 21	03 11 36	05 31 15	07 49 54	10 11 30	12 31 30	14 35 42	16 17 03	17 42 55
30 29	19 06 02	20 39 31	22 34 06	00 49 19	03 11 34	05 31 15	07 49 55	10 11 31	12 31 32	14 35 44	16 17 04	17 42 56
30 30	19 06 02	20 39 29	22 34 04	00 49 17	03 11 33	05 31 15	07 49 56	10 11 33	12 31 34	14 35 47	16 17 06	17 42 56
30 31	19 06 01	20 39 27	22 34 01	00 49 15	03 11 32	05 31 14	07 49 56	10 11 35	12 31 37	14 35 49	16 17 07	17 42 56
30 32	19 06 00	20 39 25	22 33 59	00 49 13	03 11 30	05 31 14	07 49 57	10 11 37	12 31 39	14 35 51	16 17 08	17 42 56
30 33	19 05 59	20 39 23	22 33 56	00 49 11	03 11 29	05 31 14	07 49 58	10 11 39	12 31 42	14 35 53	16 17 10	17 42 57
30 34	19 05 58	20 39 22	22 33 54	00 49 08	03 11 28	05 31 14	07 49 59	10 11 41	12 31 44	14 35 55	16 17 11	17 42 57
30 35	19 05 57	20 39 20	22 33 52	00 49 06	03 11 26	05 31 13	07 50 00	10 11 43	12 31 46	14 35 57	16 17 12	17 42 57
30 36	19 05 56	20 39 18	22 33 49	00 49 04	03 11 25	05 31 13	07 50 01	10 11 44	12 31 49	14 36 00	16 17 14	17 42 57
30 37	19 05 55	20 39 16	22 33 47	00 49 02	03 11 24	05 31 13	07 50 02	10 11 46	12 31 51	14 36 02	16 17 15	17 42 58
30 38	19 05 54	20 39 14	22 33 44	00 49 00	03 11 22	05 31 13	07 50 03	10 11 48	12 31 54	14 36 04	16 17 16	17 42 58
30 39	19 05 54	20 39 12	22 33 42	00 48 58	03 11 21	05 31 12	07 50 04	10 11 50	12 31 56	14 36 06	16 17 18	17 42 58
30 40	19 05 53	20 39 10	22 33 39	00 48 55	03 11 20	05 31 12	07 50 04	10 11 52	12 31 58	14 36 08	16 17 19	17 42 58
30 41	19 05 52	20 39 06	22 33 37	00 48 53	03 11 18	05 31 12	07 50 05	10 11 54	12 32 01	14 36 10	16 17 20	17 42 58
30 42	19 05 51	20 39 07	22 33 35	00 48 51	03 11 17	05 31 12	07 50 06	10 11 56	12 32 03	14 36 13	16 17 22	17 42 59
30 43	19 05 50	20 39 05	22 33 32	00 48 49	03 11 16	05 31 12	07 50 07	10 11 57	12 32 06	14 36 15	16 17 23	17 42 59
30 44	19 05 49	20 39 03	22 33 30	00 48 47	03 11 14	05 31 11	07 50 08	10 11 59	12 32 08	14 36 17	16 17 24	17 42 59
30 45	19 05 48	20 39 01	22 33 27	00 48 44	03 11 13	05 31 11	07 50 09	10 12 01	12 32 11	14 36 19	16 17 26	17 42 59
30 46	19 05 47	20 38 59	22 33 25	00 48 42	03 11 12	05 31 11	07 50 10	10 12 03	12 32 13	14 36 21	16 17 27	17 43 00
30 47	19 05 47	20 38 57	22 33 23	00 48 40	03 11 10	05 31 11	07 50 11	10 12 05	12 32 15	14 36 24	16 17 28	17 43 00
30 48	19 05 46	20 38 55	22 33 20	00 48 38	03 11 09	05 31 10	07 50 11	10 12 07	12 32 18	14 36 26	16 17 29	17 43 00
30 49	19 05 45	20 38 53	22 33 18	00 48 36	03 11 08	05 31 10	07 50 12	10 12 09	12 32 20	14 36 28	16 17 31	17 43 00
30 50	19 05 44	20 38 52	22 33 15	00 48 34	03 11 06	05 31 10	07 50 13	10 12 11	12 32 23	14 36 30	16 17 32	17 43 01
30 51	19 05 43	20 38 50	22 33 13	00 48 31	03 11 05	05 31 10	07 50 14	10 12 12	12 32 25	14 36 32	16 17 33	17 43 01
30 52	19 05 42	20 38 48	22 33 11	00 48 29	03 11 04	05 31 09	07 50 15	10 12 14	12 32 27	14 36 34	16 17 35	17 43 01
30 53	19 05 41	20 38 46	22 33 08	00 48 27	03 11 02	05 31 09	07 50 16	10 12 16	12 32 30	14 36 37	16 17 36	17 43 01
30 54	19 05 40	20 38 44	22 33 06	00 48 25	03 11 01	05 31 09	07 50 17	10 12 18	12 32 32	14 36 39	16 17 37	17 43 02
30 55	19 05 39	20 38 42	22 33 03	00 48 23	03 11 00	05 31 09	07 50 18	10 12 20	12 32 35	14 36 41	16 17 39	17 43 02
30 56	19 05 39	20 38 40	22 33 01	00 48 20	03 10 58	05 31 08	07 50 19	10 12 22	12 32 37	14 36 43	16 17 40	17 43 02
30 57	19 05 38	20 38 38	22 32 58	00 48 18	03 10 57	05 31 08	07 50 19	10 12 24	12 32 40	14 36 45	16 17 41	17 43 02
30 58	19 05 37	20 38 37	22 32 56	00 48 16	03 10 56	05 31 08	07 50 20	10 12 26	12 32 42	14 36 48	16 17 43	17 43 02
30 59	19 05 36	20 38 35	22 32 54	00 48 14	03 10 54	05 31 08	07 50 21	10 12 28	12 32 44	14 36 50	16 17 44	17 43 03
31 00	19 05 35	20 38 33	22 32 51	00 48 12	03 10 53	05 31 08	07 50 22	10 12 29	12 32 47	14 36 52	16 17 45	17 43 03
अक्षांश	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन

लग्नारम्भसाधन सारणी

उत्तर अक्षांशीय लग्न

अक्षांश	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
अं. क.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.
31 00	19 05 35	20 38 33	22 32 51	00 48 12	03 10 53	05 31 08	07 50 22	10 12 29	12 32 47	14 36 52	16 17 45	17 43 03
31 01	19 05 34	20 38 31	22 32 49	00 48 10	03 10 52	05 31 07	07 50 23	10 12 31	12 32 49	14 36 54	16 17 47	17 43 03
31 02	19 05 33	20 38 29	22 32 46	00 48 07	03 10 50	05 31 07	07 50 24	10 12 33	12 32 52	14 36 56	16 17 48	17 43 03
31 03	19 05 32	20 38 27	22 32 44	00 48 05	03 10 49	05 31 07	07 50 25	10 12 35	12 32 54	14 36 58	16 17 49	17 43 04
31 04	19 05 31	20 38 25	22 32 41	00 48 03	03 10 48	05 31 07	07 50 26	10 12 37	12 32 57	14 37 01	16 17 51	17 43 04
31 05	19 05 31	20 38 23	22 32 39	00 48 01	03 10 46	05 31 06	07 50 27	10 12 39	12 32 59	14 37 03	16 17 52	17 43 04
31 06	19 05 30	20 38 21	22 32 37	00 47 59	03 10 45	05 31 06	07 50 27	10 12 41	12 33 01	14 37 05	16 17 53	17 43 04
31 07	19 05 29	20 38 20	22 32 34	00 47 56	03 10 44	05 31 06	07 50 28	10 12 43	12 33 04	14 37 07	16 17 55	17 43 05
31 08	19 05 28	20 38 18	22 32 32	00 47 54	03 10 42	05 31 06	07 50 29	10 12 45	12 33 06	14 37 09	16 17 56	17 43 05
31 09	19 05 27	20 38 16	22 32 29	00 47 52	03 10 41	05 31 05	07 50 30	10 12 46	12 33 09	14 37 12	16 17 57	17 43 05
31 10	19 05 26	20 38 14	22 32 27	00 47 50	03 10 40	05 31 05	07 50 31	10 12 48	12 33 11	14 37 14	16 17 59	17 43 05
31 11	19 05 25	20 38 12	22 32 24	00 47 48	03 10 38	05 31 05	07 50 32	10 12 50	12 33 14	14 37 16	16 18 00	17 43 06
31 12	19 05 24	20 38 10	22 32 22	00 47 45	03 10 37	05 31 05	07 50 33	10 12 52	12 33 16	14 37 18	16 18 01	17 43 06
31 13	19 05 23	20 38 08	22 32 20	00 47 43	03 10 36	05 31 04	07 50 34	10 12 54	12 33 18	14 37 20	16 18 03	17 43 06
31 14	19 05 23	20 38 06	22 32 17	00 47 41	03 10 34	05 31 04	07 50 35	10 12 56	12 33 21	14 37 23	16 18 04	17 43 06
31 15	19 05 22	20 38 04	22 32 15	00 47 39	03 10 33	05 31 04	07 50 35	10 12 58	12 33 23	14 37 25	16 18 05	17 43 06
31 16	19 05 21	20 38 03	22 32 12	00 47 37	03 10 32	05 31 04	07 50 36	10 13 00	12 33 26	14 37 27	16 18 07	17 43 07
31 17	19 05 20	20 38 01	22 32 10	00 47 34	03 10 30	05 31 04	07 50 37	10 13 02	12 33 28	14 37 29	16 18 08	17 43 07
31 18	19 05 19	20 37 59	22 32 07	00 47 32	03 10 29	05 31 03	07 50 38	10 13 03	12 33 31	14 37 31	16 18 09	17 43 07
31 19	19 05 18	20 37 57	22 32 05	00 47 30	03 10 28	05 31 03	07 50 39	10 13 05	12 33 33	14 37 34	16 18 11	17 43 07
31 20	19 05 17	20 37 55	22 32 02	00 47 28	03 10 26	05 31 03	07 50 40	10 13 07	12 33 36	14 37 36	16 18 12	17 43 08
31 21	19 05 16	20 37 53	22 32 00	00 47 26	03 10 25	05 31 03	07 50 41	10 13 09	12 33 38	14 37 38	16 18 13	17 43 08
31 22	19 05 15	20 37 51	22 31 58	00 47 23	03 10 24	05 31 02	07 50 42	10 13 11	12 33 40	14 37 40	16 18 15	17 43 08
31 23	19 05 15	20 37 49	22 31 55	00 47 21	03 10 22	05 31 02	07 50 43	10 13 13	12 33 43	14 37 42	16 18 16	17 43 08
31 24	19 05 14	20 37 47	22 31 53	00 47 19	03 10 21	05 31 02	07 50 44	10 13 15	12 33 45	14 37 45	16 18 18	17 43 09
31 25	19 05 13	20 37 45	22 31 50	00 47 17	03 10 20	05 31 02	07 50 44	10 13 17	12 33 48	14 37 47	16 18 19	17 43 09
31 26	19 05 12	20 37 44	22 31 48	00 47 15	03 10 18	05 31 01	07 50 45	10 13 19	12 33 50	14 37 49	16 18 20	17 43 09
31 27	19 05 11	20 37 42	22 31 45	00 47 12	03 10 17	05 31 01	07 50 46	10 13 21	12 33 53	14 37 51	16 18 22	17 43 09
31 28	19 05 10	20 37 40	22 31 43	00 47 10	03 10 16	05 31 01	07 50 47	10 13 22	12 33 55	14 37 54	16 18 23	17 43 10
31 29	19 05 09	20 37 38	22 31 40	00 47 08	03 10 14	05 31 01	07 50 48	10 13 24	12 33 58	14 37 56	16 18 24	17 43 10
31 30	19 05 08	20 37 36	22 31 38	00 47 06	03 10 13	05 31 00	07 50 49	10 13 26	12 34 00	14 37 58	16 18 26	17 43 10
31 31	19 05 07	20 37 34	22 31 35	00 47 03	03 10 12	05 31 00	07 50 50	10 13 28	12 34 02	14 38 00	16 18 27	17 43 10
31 32	19 05 06	20 37 32	22 31 33	00 47 01	03 10 10	05 31 00	07 50 51	10 13 30	12 34 05	14 38 02	16 18 28	17 43 11
31 33	19 05 06	20 37 30	22 31 31	00 46 59	03 10 09	05 31 00	07 50 52	10 13 32	12 34 07	14 38 05	16 18 30	17 43 11
31 34	19 05 05	20 37 28	22 31 28	00 46 57	03 10 08	05 30 59	07 50 52	10 13 34	12 34 10	14 38 07	16 18 31	17 43 11
31 35	19 05 04	20 37 26	22 31 26	00 46 55	03 10 06	05 30 59	07 50 53	10 13 36	12 34 12	14 38 09	16 18 32	17 43 11
31 36	19 05 03	20 37 25	22 31 23	00 46 52	03 10 05	05 30 59	07 50 54	10 13 38	12 34 15	14 38 11	16 18 34	17 43 11
31 37	19 05 02	20 37 23	22 31 21	00 46 50	03 10 04	05 30 59	07 50 55	10 13 40	12 34 17	14 38 13	16 18 35	17 43 12
31 38	19 05 01	20 37 21	22 31 18	00 46 48	03 10 02	05 30 59	07 50 56	10 13 42	12 34 20	14 38 16	16 18 36	17 43 12
31 39	19 05 00	20 37 19	22 31 16	00 46 46	03 10 01	05 30 58	07 50 57	10 13 43	12 34 22	14 38 18	16 18 38	17 43 12
31 40	19 04 59	20 37 17	22 31 13	00 46 43	03 10 00	05 30 58	07 50 58	10 13 45	12 34 25	14 38 20	16 18 39	17 43 12
31 41	19 04 58	20 37 15	22 31 11	00 46 41	03 09 58	05 30 58	07 50 59	10 13 47	12 34 27	14 38 22	16 18 40	17 43 13
31 42	19 04 57	20 37 13	22 31 08	00 46 39	03 09 57	05 30 56	07 51 00	10 13 49	12 34 30	14 38 25	16 18 42	17 43 13
31 43	19 04 57	20 37 11	22 31 06	00 46 37	03 09 55	05 30 57	07 51 01	10 13 51	12 34 32	14 38 27	16 18 43	17 43 13
31 44	19 04 56	20 37 09	22 31 03	00 46 35	03 09 54	05 30 57	07 51 01	10 13 53	12 34 35	14 38 29	16 18 44	17 43 13
31 45	19 04 55	20 37 07	22 31 01	00 46 32	03 09 53	05 30 57	07 51 02	10 13 55	12 34 37	14 38 31	16 18 46	17 43 14
31 46	19 04 54	20 37 05	22 30 59	00 46 30	03 09 51	05 30 57	07 51 03	10 13 57	12 34 39	14 38 34	16 18 47	17 43 14
31 47	19 04 53	20 37 03	22 30 56	00 46 28	03 09 50	05 30 56	07 51 04	10 13 59	12 34 42	14 38 36	16 18 49	17 43 14
31 48	19 04 52	20 37 02	22 30 54	00 46 26	03 09 49	05 30 56	07 51 05	10 14 01	12 34 44	14 38 38	16 18 50	17 43 14
31 49	19 04 51	20 37 00	22 30 51	00 46 23	03 09 47	05 30 56	07 51 06	10 14 03	12 34 47	14 38 40	16 18 51	17 43 15
31 50	19 04 50	20 36 58	22 30 49	00 46 21	03 09 46	05 30 56	07 51 07	10 14 04	12 34 49	14 38 42	16 18 53	17 43 15
31 51	19 04 49	20 36 56	22 30 46	00 46 19	03 09 45	05 30 55	07 51 08	10 14 06	12 34 52	14 38 45	16 18 54	17 43 15
31 52	19 04 48	20 36 54	22 30 44	00 46 17	03 09 43	05 30 55	07 51 09	10 14 08	12 34 54	14 38 47	16 18 55	17 43 15
31 53	19 04 47	20 36 52	22 30 41	00 46 14	03 09 42	05 30 55	07 51 10	10 14 10	12 34 57	14 38 49	16 18 57	17 43 16
31 54	19 04 47	20 36 50	22 30 39	00 46 12	03 09 41	05 30 55	07 51 11	10 14 12	12 34 59	14 38 51	16 18 58	17 43 16
31 55	19 04 46	20 36 48	22 30 36	00 46 10	03 09 39	05 30 54	07 51 11	10 14 14	12 35 02	14 38 54	16 18 59	17 43 16
31 56	19 04 45	20 36 46	22 30 34	00 46 08	03 09 38	05 30 54	07 51 12	10 14 16	12 35 04	14 38 56	16 19 01	17 43 16
31 57	19 04 44	20 36 44	22 30 31	00 46 06	03 09 36	05 30 54	07 51 13	10 14 18	12 35 07	14 38 58	16 19 02	17 43 17
31 58	19 04 43	20 36 42	22 30 29	00 46 03	03 09 35	05 30 54	07 51 14	10 14 20	12 35 09	14 39 00	16 19 03	17 43 17
31 59	19 04 42	20 36 40	22 30 26	00 46 01	03 09 34	05 30 53	07 51 15	10 14 22	12 35 12	14 39 03	16 19 05	17 43 17
32 00	19 04 41	20 36 38	22 30 24	00 45 59	03 09 32	05 30 53	07 51 16	10 14 24	12 35 14	14 39 05	16 19 06	17 43 17
अक्षांश	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन

लग्नारम्भसाधन सारणी

उत्तर अक्षांशीय लग्न

अक्षांश	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
अं. क.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.
32 00	19 04 41	20 36 38	22 30 24	00 45 59	03 09 32	05 30 53	07 51 16	10 14 24	12 35 14	14 39 05	16 19 06	17 43 17
32 01	19 04 40	20 36 37	22 30 21	00 45 57	03 09 31	05 30 53	07 51 17	10 14 26	12 35 17	14 39 07	16 19 08	17 43 17
32 02	19 04 39	20 36 35	22 30 19	00 45 54	03 09 30	05 30 53	07 51 18	10 14 28	12 35 19	14 39 09	16 19 09	17 43 18
32 03	19 04 38	20 36 33	22 30 16	00 45 52	03 09 28	05 30 53	07 51 19	10 14 30	12 35 22	14 39 12	16 19 10	17 43 18
32 04	19 04 38	20 36 31	22 30 14	00 45 50	03 09 27	05 30 52	07 51 20	10 14 31	12 35 24	14 39 14	16 19 12	17 43 18
32 05	19 04 37	20 36 29	22 30 11	00 45 48	03 09 26	05 30 52	07 51 21	10 14 33	12 35 27	14 39 16	16 19 13	17 43 18
32 06	19 04 36	20 36 27	22 30 09	00 45 45	03 09 24	05 30 52	07 51 21	10 14 35	12 35 29	14 39 18	16 19 14	17 43 19
32 07	19 04 35	20 36 25	22 30 06	00 45 43	03 09 23	05 30 52	07 51 22	10 14 37	12 35 32	14 39 21	16 19 16	17 43 19
32 08	19 04 34	20 36 23	22 30 04	00 45 41	03 09 21	05 30 51	07 51 23	10 14 39	12 35 34	14 39 23	16 19 17	17 43 19
32 09	19 04 33	20 36 21	22 30 01	00 45 39	03 09 20	05 30 51	07 51 24	10 14 41	12 35 37	14 39 25	16 19 18	17 43 19
32 10	19 04 32	20 36 19	22 29 59	00 45 36	03 09 19	05 30 51	07 51 25	10 14 43	12 35 39	14 39 27	16 19 20	17 43 20
32 11	19 04 31	20 36 17	22 29 56	00 45 34	03 09 17	05 30 51	07 51 26	10 14 45	12 35 42	14 39 30	16 19 21	17 43 20
32 12	19 04 30	20 36 15	22 29 54	00 45 32	03 09 16	05 30 50	07 51 27	10 14 47	12 35 44	14 39 32	16 19 23	17 43 20
32 13	19 04 29	20 36 13	22 29 51	00 45 30	03 09 15	05 30 50	07 51 28	10 14 49	12 35 47	14 39 34	16 19 24	17 43 20
32 14	19 04 28	20 36 11	22 29 49	00 45 27	03 09 13	05 30 50	07 51 29	10 14 51	12 35 49	14 39 36	16 19 25	17 43 21
32 15	19 04 27	20 36 09	22 29 46	00 45 25	03 09 12	05 30 50	07 51 30	10 14 53	12 35 52	14 39 39	16 19 27	17 43 21
32 16	19 04 27	20 36 08	22 29 44	00 45 23	03 09 11	05 30 49	07 51 31	10 14 55	12 35 54	14 39 41	16 19 28	17 43 21
32 17	19 04 26	20 36 06	22 29 41	00 45 21	03 09 09	05 30 49	07 51 31	10 14 57	12 35 57	14 39 43	16 19 29	17 43 21
32 18	19 04 25	20 36 04	22 29 39	00 45 18	03 09 08	05 30 49	07 51 32	10 14 59	12 35 59	14 39 45	16 19 31	17 43 22
32 19	19 04 24	20 36 02	22 29 36	00 45 16	03 09 06	05 30 49	07 51 33	10 15 00	12 36 02	14 39 48	16 19 32	17 43 22
32 20	19 04 23	20 36 00	22 29 34	00 45 14	03 09 05	05 30 48	07 51 34	10 15 02	12 36 04	14 39 50	16 19 34	17 43 22
32 21	19 04 22	20 35 58	22 29 31	00 45 12	03 09 04	05 30 48	07 51 35	10 15 04	12 36 07	14 39 52	16 19 35	17 43 22
32 22	19 04 21	20 35 56	22 29 29	00 45 09	03 09 02	05 30 48	07 51 36	10 15 06	12 36 09	14 39 54	16 19 36	17 43 23
32 23	19 04 20	20 35 54	22 29 26	00 45 07	03 09 01	05 30 48	07 51 37	10 15 08	12 36 12	14 39 57	16 19 38	17 43 23
32 24	19 04 19	20 35 52	22 29 24	00 45 05	03 09 00	05 30 47	07 51 38	10 15 10	12 36 14	14 39 59	16 19 39	17 43 23
32 25	19 04 18	20 35 50	22 29 21	00 45 02	03 08 58	05 30 47	07 51 39	10 15 12	12 36 17	14 40 01	16 19 40	17 43 23
32 26	19 04 17	20 35 48	22 29 19	00 45 00	03 08 57	05 30 47	07 51 40	10 15 14	12 36 19	14 40 03	16 19 42	17 43 24
32 27	19 04 17	20 35 46	22 29 16	00 44 58	03 08 55	05 30 47	07 51 41	10 15 16	12 36 22	14 40 06	16 19 43	17 43 24
32 28	19 04 16	20 35 44	22 29 14	00 44 56	03 08 54	05 30 46	07 51 42	10 15 18	12 36 24	14 40 08	16 19 45	17 43 24
32 29	19 04 15	20 35 42	22 29 11	00 44 53	03 08 53	05 30 46	07 51 42	10 15 20	12 36 27	14 40 10	16 19 46	17 43 24
32 30	19 04 14	20 35 40	22 29 09	00 44 51	03 08 51	05 30 46	07 51 43	10 15 22	12 36 29	14 40 12	16 19 47	17 43 25
32 31	19 04 13	20 35 38	22 29 06	00 44 49	03 08 50	05 30 46	07 51 44	10 15 24	12 36 32	14 40 15	16 19 49	17 43 25
32 32	19 04 12	20 35 36	22 29 04	00 44 47	03 08 49	05 30 46	07 51 45	10 15 26	12 36 34	14 40 17	16 19 50	17 43 25
32 33	19 04 11	20 35 34	22 29 01	00 44 44	03 08 47	05 30 45	07 51 46	10 15 28	12 36 37	14 40 19	16 19 51	17 43 25
32 34	19 04 10	20 35 33	22 28 59	00 44 42	03 08 46	05 30 45	07 51 47	10 15 30	12 36 39	14 40 22	16 19 53	17 43 25
32 35	19 04 09	20 35 31	22 28 56	00 44 40	03 08 44	05 30 45	07 51 48	10 15 32	12 36 42	14 40 24	16 19 54	17 43 26
32 36	19 04 08	20 35 29	22 28 54	00 44 37	03 08 43	05 30 45	07 51 49	10 15 34	12 36 44	14 40 26	16 19 56	17 43 26
32 37	19 04 07	20 35 27	22 28 51	00 44 35	03 08 42	05 30 44	07 51 50	10 15 36	12 36 47	14 40 28	16 19 57	17 43 26
32 38	19 04 06	20 35 25	22 28 49	00 44 33	03 08 40	05 30 44	07 51 51	10 15 38	12 36 49	14 40 31	16 19 58	17 43 26
32 39	19 04 05	20 35 23	22 28 46	00 44 31	03 08 39	05 30 44	07 51 52	10 15 39	12 36 52	14 40 33	16 20 00	17 43 27
32 40	19 04 05	20 35 21	22 28 44	00 44 28	03 08 38	05 30 44	07 51 53	10 15 41	12 36 54	14 40 35	16 20 01	17 43 27
32 41	19 04 04	20 35 19	22 28 41	00 44 26	03 08 36	05 30 43	07 51 53	10 15 43	12 36 57	14 40 38	16 20 02	17 43 27
32 42	19 04 03	20 35 17	22 28 38	00 44 24	03 08 35	05 30 43	07 51 54	10 15 45	12 36 59	14 40 40	16 20 04	17 43 27
32 43	19 04 02	20 35 15	22 28 36	00 44 22	03 08 33	05 30 43	07 51 55	10 15 47	12 37 02	14 40 42	16 20 05	17 43 28
32 44	19 04 01	20 35 13	22 28 33	00 44 19	03 08 32	05 30 43	07 51 56	10 15 49	12 37 05	14 40 44	16 20 07	17 43 28
32 45	19 04 00	20 35 11	22 28 31	00 44 17	03 08 31	05 30 42	07 51 57	10 15 51	12 37 07	14 40 47	16 20 08	17 43 28
32 46	19 03 59	20 35 09	22 28 28	00 44 15	03 08 29	05 30 42	07 51 58	10 15 53	12 37 10	14 40 49	16 20 09	17 43 28
32 47	19 03 58	20 35 07	22 28 26	00 44 12	03 08 28	05 30 42	07 51 59	10 15 55	12 37 12	14 40 51	16 20 11	17 43 29
32 48	19 03 57	20 35 05	22 28 23	00 44 10	03 08 26	05 30 42	07 52 00	10 15 57	12 37 15	14 40 53	16 20 12	17 43 29
32 49	19 03 56	20 35 03	22 28 21	00 44 08	03 08 25	05 30 41	07 52 01	10 15 59	12 37 17	14 40 56	16 20 14	17 43 29
32 50	19 03 55	20 35 01	22 28 18	00 44 06	03 08 24	05 30 41	07 52 02	10 16 01	12 37 20	14 40 58	16 20 15	17 43 29
32 51	19 03 54	20 34 59	22 28 16	00 44 03	03 08 22	05 30 41	07 52 03	10 16 03	12 37 22	14 41 00	16 20 16	17 43 30
32 52	19 03 53	20 34 57	22 28 13	00 44 01	03 08 21	05 30 41	07 52 04	10 16 05	12 37 25	14 41 03	16 20 18	17 43 30
32 53	19 03 53	20 34 55	22 28 11	00 43 59	03 08 19	05 30 40	07 52 05	10 16 07	12 37 27	14 41 05	16 20 19	17 43 30
32 54	19 03 52	20 34 53	22 28 08	00 43 56	03 08 18	05 30 40	07 52 05	10 16 09	12 37 30	14 41 07	16 20 20	17 43 30
32 55	19 03 51	20 34 51	22 28 05	00 43 54	03 08 17	05 30 40	07 52 06	10 16 11	12 37 32	14 41 10	16 20 22	17 43 31
32 56	19 03 50	20 34 49	22 28 03	00 43 52	03 08 15	05 30 40	07 52 07	10 16 13	12 37 35	14 41 12	16 20 23	17 43 31
32 57	19 03 49	20 34 47	22 28 00	00 43 49	03 08 14	05 30 39	07 52 08	10 16 15	12 37 38	14 41 14	16 20 25	17 43 31
32 58	19 03 48	20 34 45	22 27 58	00 43 47	03 08 13	05 30 39	07 52 09	10 16 17	12 37 40	14 41 16	16 20 26	17 43 31
32 59	19 03 47	20 34 43	22 27 55	00 43 45	03 08 11	05 30 39	07 52 10	10 16 19	12 37 43	14 41 19	16 20 27	17 43 32
33 00	19 03 46	20 34 41	22 27 53	00 43 43	03 08 10	05 30 39	07 52 11	10 16 21	12 37 45	14 41 21	16 20 29	17 43 32
अक्षांश	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन

लग्नारम्भसाधन सारणी

उत्तर अक्षांशीय लग्न

अक्षांश	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
अं. क.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.
33 00	19 03 46	20 34 41	22 27 53	00 43 43	03 08 10	05 30 39	07 52 11	10 16 21	12 37 45	14 41 21	16 20 29	17 43 32
33 01	19 03 45	20 34 39	22 27 50	00 43 40	03 08 08	05 30 38	07 52 12	10 16 23	12 37 48	14 41 23	16 20 30	17 43 32
33 02	19 03 44	20 34 37	22 27 48	00 43 38	03 08 07	05 30 38	07 52 13	10 16 25	12 37 50	14 41 26	16 20 32	17 43 32
33 03	19 03 43	20 34 36	22 27 45	00 43 36	03 08 06	05 30 38	07 52 14	10 16 27	12 37 53	14 41 28	16 20 33	17 43 33
33 04	19 03 42	20 34 34	22 27 43	00 43 33	03 08 04	05 30 38	07 52 15	10 16 29	12 37 55	14 41 30	16 20 34	17 43 33
33 05	19 03 41	20 34 32	22 27 40	00 43 31	03 08 03	05 30 37	07 52 16	10 16 31	12 37 58	14 41 32	16 20 36	17 43 33
33 06	19 03 40	20 34 30	22 27 37	00 43 29	03 08 01	05 30 37	07 52 17	10 16 33	12 38 01	14 41 35	16 20 37	17 43 33
33 07	19 03 40	20 34 28	22 27 35	00 43 27	03 08 00	05 30 37	07 52 18	10 16 35	12 38 03	14 41 37	16 20 39	17 43 34
33 08	19 03 39	20 34 26	22 27 32	00 43 24	03 07 59	05 30 37	07 52 18	10 16 37	12 38 06	14 41 39	16 20 40	17 43 34
33 09	19 03 38	20 34 24	22 27 30	00 43 22	03 07 57	05 30 36	07 52 19	10 16 39	12 38 08	14 41 42	16 20 41	17 43 34
33 10	19 03 37	20 34 22	22 27 27	00 43 20	03 07 56	05 30 36	07 52 20	10 16 41	12 38 11	14 41 44	16 20 43	17 43 34
33 11	19 03 36	20 34 20	22 27 25	00 43 17	03 07 54	05 30 36	07 52 21	10 16 43	12 38 13	14 41 46	16 20 44	17 43 35
33 12	19 03 35	20 34 18	22 27 22	00 43 15	03 07 53	05 30 36	07 52 22	10 16 45	12 38 16	14 41 49	16 20 46	17 43 35
33 13	19 03 34	20 34 16	22 27 20	00 43 13	03 07 52	05 30 35	07 52 23	10 16 47	12 38 18	14 41 51	16 20 47	17 43 35
33 14	19 03 33	20 34 14	22 27 17	00 43 10	03 07 50	05 30 35	07 52 24	10 16 49	12 38 21	14 41 53	16 20 48	17 43 35
33 15	19 03 32	20 34 12	22 27 14	00 43 08	03 07 49	05 30 35	07 52 25	10 16 50	12 38 24	14 41 56	16 20 50	17 43 36
33 16	19 03 31	20 34 10	22 27 12	00 43 06	03 07 47	05 30 35	07 52 26	10 16 52	12 38 26	14 41 58	16 20 51	17 43 36
33 17	19 03 30	20 34 08	22 27 09	00 43 03	03 07 46	05 30 34	07 52 27	10 16 54	12 38 29	14 42 00	16 20 53	17 43 36
33 18	19 03 29	20 34 06	22 27 07	00 43 01	03 07 45	05 30 34	07 52 28	10 16 56	12 38 31	14 42 03	16 20 54	17 43 36
33 19	19 03 28	20 34 04	22 27 04	00 42 59	03 07 43	05 30 34	07 52 29	10 16 58	12 38 34	14 42 05	16 20 55	17 43 37
33 20	19 03 27	20 34 02	22 27 02	00 42 56	03 07 42	05 30 34	07 52 30	10 17 00	12 38 36	14 42 07	16 20 57	17 43 37
33 21	19 03 26	20 34 00	22 26 59	00 42 54	03 07 40	05 30 33	07 52 31	10 17 02	12 38 39	14 42 09	16 20 58	17 43 37
33 22	19 03 26	20 33 58	22 26 56	00 42 52	03 07 39	05 30 33	07 52 32	10 17 04	12 38 42	14 42 12	16 21 00	17 43 37
33 23	19 03 25	20 33 56	22 26 54	00 42 49	03 07 38	05 30 33	07 52 32	10 17 06	12 38 44	14 42 14	16 21 01	17 43 38
33 24	19 03 24	20 33 54	22 26 51	00 42 47	03 07 36	05 30 33	07 52 33	10 17 08	12 38 47	14 42 16	16 21 02	17 43 38
33 25	19 03 23	20 33 52	22 26 49	00 42 45	03 07 35	05 30 32	07 52 34	10 17 10	12 38 49	14 42 19	16 21 04	17 43 38
33 26	19 03 22	20 33 50	22 26 46	00 42 43	03 07 33	05 30 32	07 52 35	10 17 12	12 38 52	14 42 21	16 21 05	17 43 38
33 27	19 03 21	20 33 48	22 26 44	00 42 40	03 07 32	05 30 32	07 52 36	10 17 14	12 38 54	14 42 23	16 21 07	17 43 39
33 28	19 03 20	20 33 46	22 26 41	00 42 38	03 07 31	05 30 32	07 52 37	10 17 16	12 38 57	14 42 26	16 21 08	17 43 39
33 29	19 03 19	20 33 44	22 26 38	00 42 36	03 07 29	05 30 31	07 52 38	10 17 18	12 39 00	14 42 28	16 21 09	17 43 39
33 30	19 03 18	20 33 42	22 26 36	00 42 33	03 07 28	05 30 31	07 52 39	10 17 20	12 39 02	14 42 30	16 21 11	17 43 39
33 31	19 03 17	20 33 40	22 26 33	00 42 31	03 07 26	05 30 31	07 52 40	10 17 22	12 39 05	14 42 33	16 21 12	17 43 40
33 32	19 03 16	20 33 38	22 26 31	00 42 29	03 07 25	05 30 31	07 52 41	10 17 24	12 39 07	14 42 35	16 21 14	17 43 40
33 33	19 03 15	20 33 36	22 26 28	00 42 26	03 07 23	05 30 30	07 52 42	10 17 26	12 39 10	14 42 37	16 21 15	17 43 40
33 34	19 03 14	20 33 34	22 26 25	00 42 24	03 07 22	05 30 30	07 52 43	10 17 28	12 39 13	14 42 40	16 21 17	17 43 40
33 35	19 03 13	20 33 32	22 26 23	00 42 22	03 07 21	05 30 30	07 52 44	10 17 30	12 39 15	14 42 42	16 21 18	17 43 41
33 36	19 03 12	20 33 30	22 26 20	00 42 19	03 07 19	05 30 30	07 52 45	10 17 32	12 39 18	14 42 44	16 21 19	17 43 41
33 37	19 03 11	20 33 28	22 26 18	00 42 17	03 07 18	05 30 29	07 52 46	10 17 34	12 39 20	14 42 47	16 21 21	17 43 41
33 38	19 03 11	20 33 26	22 26 15	00 42 15	03 07 16	05 30 29	07 52 47	10 17 36	12 39 23	14 42 49	16 21 22	17 43 41
33 39	19 03 10	20 33 24	22 26 12	00 42 12	03 07 15	05 30 29	07 52 48	10 17 38	12 39 26	14 42 51	16 21 24	17 43 42
33 40	19 03 09	20 33 22	22 26 10	00 42 10	03 07 14	05 30 29	07 52 48	10 17 40	12 39 28	14 42 54	16 21 25	17 43 42
33 41	19 03 08	20 33 20	22 26 07	00 42 08	03 07 12	05 30 28	07 52 49	10 17 42	12 39 31	14 42 56	16 21 26	17 43 42
33 42	19 03 07	20 33 18	22 26 05	00 42 05	03 07 11	05 30 28	07 52 50	10 17 44	12 39 33	14 42 58	16 21 28	17 43 42
33 43	19 03 06	20 33 16	22 26 02	00 42 03	03 07 09	05 30 28	07 52 51	10 17 46	12 39 36	14 43 01	16 21 29	17 43 43
33 44	19 03 05	20 33 14	22 25 59	00 42 01	03 07 08	05 30 28	07 52 52	10 17 48	12 39 38	14 43 03	16 21 31	17 43 43
33 45	19 03 04	20 33 12	22 25 57	00 41 58	03 07 07	05 30 27	07 52 53	10 17 50	12 39 41	14 43 05	16 21 32	17 43 43
33 46	19 03 03	20 33 10	22 25 54	00 41 56	03 07 05	05 30 27	07 52 54	10 17 52	12 39 44	14 43 08	16 21 33	17 43 43
33 47	19 03 02	20 33 08	22 25 52	00 41 54	03 07 04	05 30 27	07 52 55	10 17 54	12 39 46	14 43 10	16 21 35	17 43 44
33 48	19 03 01	20 33 06	22 25 49	00 41 51	03 07 02	05 30 27	07 52 56	10 17 57	12 39 49	14 43 12	16 21 36	17 43 44
33 49	19 03 00	20 33 04	22 25 46	00 41 49	03 07 01	05 30 26	07 52 57	10 17 59	12 39 51	14 43 15	16 21 38	17 43 44
33 50	19 02 59	20 33 02	22 25 44	00 41 46	03 06 59	05 30 26	07 52 58	10 18 01	12 39 54	14 43 17	16 21 39	17 43 44
33 51	19 02 58	20 33 00	22 25 41	00 41 44	03 06 58	05 30 26	07 52 59	10 18 03	12 39 57	14 43 19	16 21 41	17 43 45
33 52	19 02 57	20 32 58	22 25 39	00 41 42	03 06 57	05 30 26	07 53 00	10 18 05	12 39 59	14 43 22	16 21 42	17 43 45
33 53	19 02 56	20 32 56	22 25 36	00 41 39	03 06 55	05 30 25	07 53 01	10 18 07	12 40 02	14 43 24	16 21 43	17 43 45
33 54	19 02 55	20 32 54	22 25 33	00 41 37	03 06 54	05 30 25	07 53 02	10 18 09	12 40 05	14 43 27	16 21 45	17 43 45
33 55	19 02 54	20 32 52	22 25 31	00 41 35	03 06 52	05 30 25	07 53 03	10 18 11	12 40 07	14 43 29	16 21 46	17 43 46
33 56	19 02 54	20 32 50	22 25 28	00 41 32	03 06 51	05 30 25	07 53 04	10 18 13	12 40 10	14 43 31	16 21 48	17 43 46
33 57	19 02 53	20 32 48	22 25 26	00 41 30	03 06 49	05 30 24	07 53 05	[illegible]	12 40 12	14 43 34	16 21 49	17 43 46
33 58	19 02 52	20 32 46	22 25 23	00 41 28	03 06 48	05 30 24	07 53 06	10 18 17	12 40 15	14 43 36	16 21 51	17 43 46
33 59	19 02 51	20 32 44	22 25 20	00 41 25	03 06 47	05 30 24	07 53 06	10 18 19	12 40 18	14 43 38	16 21 52	17 43 47
34 00	19 02 50	20 32 41	22 25 18	00 41 23	03 06 45	05 30 24	07 53 07	10 18 21	12 40 20	14 43 41	16 21 53	17 43 47
अक्षांश	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन

लग्नारम्भसाधन सारणी

उत्तर अक्षांशीय लग्न

अक्षांश	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
अं. क.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.
34 00	19 02 50	20 32 41	22 25 18	00 41 23	03 06 45	05 30 24	07 53 07	10 18 21	12 40 20	14 43 41	16 21 53	17 43 47
34 01	19 02 49	20 32 39	22 25 15	00 41 21	03 06 44	05 30 23	07 53 08	10 18 23	12 40 23	14 43 43	16 21 55	17 43 47
34 02	19 02 48	20 32 37	22 25 12	00 41 18	03 06 42	05 30 23	07 53 09	10 18 25	12 40 25	14 43 45	16 21 56	17 43 47
34 03	19 02 47	20 32 35	22 25 10	00 41 16	03 06 41	05 30 23	07 53 10	10 18 27	12 40 28	14 43 48	16 21 58	17 43 48
34 04	19 02 46	20 32 33	22 25 07	00 41 13	03 06 39	05 30 23	07 53 11	10 18 29	12 40 31	14 43 50	16 21 59	17 43 48
34 05	19 02 45	20 32 31	22 25 05	00 41 11	03 06 38	05 30 22	07 53 12	10 18 31	12 40 33	14 43 52	16 22 01	17 43 48
34 06	19 02 44	20 32 29	22 25 02	00 41 09	03 06 37	05 30 22	07 53 13	10 18 33	12 40 36	14 43 55	16 22 02	17 43 48
34 07	19 02 43	20 32 27	22 24 59	00 41 06	03 06 35	05 30 22	07 53 14	10 18 35	12 40 39	14 43 57	16 22 03	17 43 49
34 08	19 02 42	20 32 25	22 24 57	00 41 04	03 06 34	05 30 22	07 53 15	10 18 37	12 40 41	14 44 00	16 22 05	17 43 49
34 09	19 02 41	20 32 23	22 24 54	00 41 02	03 06 32	05 30 21	07 53 16	10 18 39	12 40 44	14 44 02	16 22 06	17 43 49
34 10	19 02 40	20 32 21	22 24 51	00 40 59	03 06 31	05 30 21	07 53 17	10 18 41	12 40 46	14 44 04	16 22 08	17 43 49
34 11	19 02 39	20 32 19	22 24 49	00 40 57	03 06 29	05 30 21	07 53 18	10 18 43	12 40 49	14 44 07	16 22 09	17 43 50
34 12	19 02 38	20 32 17	22 24 46	00 40 55	03 06 28	05 30 21	07 53 19	10 18 45	12 40 52	14 44 09	16 22 11	17 43 50
34 13	19 02 37	20 32 15	22 24 44	00 40 52	03 06 27	05 30 20	07 53 20	10 18 47	12 40 54	14 44 11	16 22 12	17 43 50
34 14	19 02 36	20 32 13	22 24 41	00 40 50	03 06 25	05 30 20	07 53 21	10 18 49	12 40 57	14 44 14	16 22 13	17 43 50
34 15	19 02 35	20 32 11	22 24 38	00 40 47	03 06 24	05 30 20	07 53 22	10 18 51	12 41 00	14 44 16	16 22 15	17 43 51
34 16	19 02 34	20 32 09	22 24 36	00 40 45	03 06 22	05 30 20	07 53 23	10 18 53	12 41 02	14 44 19	16 22 16	17 43 51
34 17	19 02 33	20 32 07	22 24 33	00 40 43	03 06 21	05 30 19	07 53 24	10 18 55	12 41 05	14 44 21	16 22 18	17 43 51
34 18	19 02 33	20 32 05	22 24 30	00 40 40	03 06 19	05 30 19	07 53 25	10 18 57	12 41 08	14 44 23	16 22 19	17 43 51
34 19	19 02 32	20 32 03	22 24 28	00 40 38	03 06 18	05 30 19	07 53 26	10 18 59	12 41 10	14 44 26	16 22 21	17 43 52
34 20	19 02 31	20 32 01	22 24 25	00 40 36	03 06 16	05 30 19	07 53 27	10 19 01	12 41 13	14 44 28	16 22 22	17 43 52
34 21	19 02 30	20 31 59	22 24 22	00 40 33	03 06 15	05 30 18	07 53 27	10 19 03	12 41 15	14 44 30	16 22 24	17 43 52
34 22	19 02 29	20 31 57	22 24 20	00 40 31	03 06 14	05 30 18	07 53 28	10 19 06	12 41 18	14 44 33	16 22 25	17 43 52
34 23	19 02 28	20 31 55	22 24 17	00 40 28	03 06 12	05 30 18	07 53 29	10 19 08	12 41 21	14 44 35	16 22 26	17 43 53
34 24	19 02 27	20 31 53	22 24 15	00 40 26	03 06 11	05 30 18	07 53 30	10 19 10	12 41 23	14 44 38	16 22 28	17 43 53
34 25	19 02 26	20 31 51	22 24 12	00 40 24	03 06 09	05 30 17	07 53 31	10 19 12	12 41 26	14 44 40	16 22 29	17 43 53
34 26	19 02 25	20 31 49	22 24 09	00 40 21	03 06 08	05 30 17	07 53 32	10 19 14	12 41 29	14 44 42	16 22 31	17 43 53
34 27	19 02 24	20 31 46	22 24 07	00 40 19	03 06 06	05 30 17	07 53 33	10 19 16	12 41 31	14 44 45	16 22 32	17 43 54
34 28	19 02 23	20 31 44	22 24 04	00 40 16	03 06 05	05 30 17	07 53 34	10 19 18	12 41 34	14 44 47	16 22 34	17 43 54
34 29	19 02 22	20 31 42	22 24 01	00 40 14	03 06 04	05 30 16	07 53 35	10 19 20	12 41 37	14 44 50	16 22 35	17 43 54
34 30	19 02 21	20 31 40	22 23 59	00 40 12	03 06 02	05 30 16	07 53 36	10 19 22	12 41 39	14 44 52	16 22 37	17 43 54
34 31	19 02 20	20 31 38	22 23 56	00 40 09	03 06 01	05 30 16	07 53 37	10 19 24	12 41 42	14 44 54	16 22 38	17 43 55
34 32	19 02 19	20 31 36	22 23 53	00 40 07	03 05 59	05 30 16	07 53 38	10 19 26	12 41 45	14 44 57	16 22 39	17 43 55
34 33	19 02 18	20 31 34	22 23 51	00 40 05	03 05 58	05 30 15	07 53 39	10 19 28	12 41 47	14 44 59	16 22 41	17 43 55
34 34	19 02 17	20 31 32	22 23 48	00 40 02	03 05 56	05 30 15	07 53 40	10 19 30	12 41 50	14 45 01	16 22 42	17 43 55
34 35	19 02 16	20 31 30	22 23 45	00 40 00	03 05 55	05 30 15	07 53 41	10 19 32	12 41 53	14 45 04	16 22 44	17 43 56
34 36	19 02 15	20 31 28	22 23 43	00 39 57	03 05 53	05 30 15	07 53 42	10 19 34	12 41 55	14 45 06	16 22 45	17 43 56
34 37	19 02 14	20 31 26	22 23 40	00 39 55	03 05 52	05 30 14	07 53 43	10 19 36	12 41 58	14 45 09	16 22 47	17 43 56
34 38	19 02 13	20 31 24	22 23 37	00 39 53	03 05 50	05 30 14	07 53 44	10 19 38	12 42 01	14 45 11	16 22 48	17 43 56
34 39	19 02 12	20 31 22	22 23 35	00 39 50	03 05 49	05 30 14	07 53 45	10 19 40	12 42 03	14 45 13	16 22 50	17 43 57
34 40	19 02 11	20 31 20	22 23 32	00 39 48	03 05 48	05 30 14	07 53 46	10 19 42	12 42 06	14 45 16	16 22 51	17 43 57
34 41	19 02 10	20 31 18	22 23 29	00 39 45	03 05 46	05 30 13	07 53 47	10 19 44	12 42 09	14 45 18	16 22 52	17 43 57
34 42	19 02 09	20 31 16	22 23 27	00 39 43	03 05 45	05 30 13	07 53 48	10 19 47	12 42 11	14 45 21	16 22 54	17 43 57
34 43	19 02 08	20 31 14	22 23 24	00 39 41	03 05 43	05 30 13	07 53 49	10 19 49	12 42 14	14 45 23	16 22 55	17 43 58
34 44	19 02 08	20 31 12	22 23 21	00 39 38	03 05 42	05 30 13	07 53 50	10 19 51	12 42 17	14 45 25	16 22 57	17 43 58
34 45	19 02 07	20 31 09	22 23 19	00 39 36	03 05 40	05 30 12	07 53 51	10 19 53	12 42 19	14 45 28	16 22 58	17 43 58
34 46	19 02 06	20 31 07	22 23 16	00 39 33	03 05 39	05 30 12	07 53 52	10 19 55	12 42 22	14 45 30	16 23 00	17 43 59
34 47	19 02 05	20 31 05	22 23 13	00 39 31	03 05 37	05 30 12	07 53 53	10 19 57	12 42 25	14 45 33	16 23 01	17 43 59
34 48	19 02 04	20 31 03	22 23 11	00 39 29	03 05 36	05 30 11	07 53 53	10 19 59	12 42 27	14 45 35	16 23 03	17 43 59
34 49	19 02 03	20 31 01	22 23 08	00 39 26	03 05 35	05 30 11	07 53 54	10 20 01	12 42 30	14 45 37	16 23 04	17 43 59
34 50	19 02 02	20 30 59	22 23 05	00 39 24	03 05 33	05 30 11	07 53 55	10 20 03	12 42 33	14 45 40	16 23 06	17 44 00
34 51	19 02 01	20 30 57	22 23 03	00 39 21	03 05 32	05 30 11	07 53 56	10 20 05	12 42 35	14 45 42	16 23 07	17 44 00
34 52	19 02 00	20 30 55	22 23 00	00 39 19	03 05 30	05 30 10	07 53 57	10 20 07	12 42 38	14 45 45	16 23 08	17 44 00
34 53	19 01 59	20 30 53	22 22 57	00 39 16	03 05 29	05 30 10	07 53 58	10 20 09	12 42 41	14 45 47	16 23 10	17 44 00
34 54	19 01 58	20 30 51	22 22 55	00 39 14	03 05 27	05 30 10	07 53 59	10 20 11	12 42 43	14 45 50	16 23 11	17 44 01
34 55	19 01 57	20 30 49	22 22 52	00 39 12	03 05 26	05 30 10	07 54 00	10 20 13	12 42 46	14 45 52	16 23 13	17 44 01
34 56	19 01 56	20 30 47	22 22 49	00 39 09	03 05 24	05 30 09	07 54 01	10 20 16	12 42 49	14 45 54	16 23 14	17 44 01
34 57	19 01 55	20 30 45	22 22 47	00 39 07	03 05 23	05 30 09	07 54 02	10 20 18	12 42 51	14 45 57	16 23 16	17 44 01
34 58	19 01 54	20 30 43	22 22 44	00 39 04	03 05 21	05 30 09	07 64 03	10 20 20	12 42 54	14 45 59	16 23 17	17 44 02
34 59	19 01 53	20 30 40	22 22 41	00 39 02	03 05 20	05 30 09	07 54 04	10 20 22	12 42 57	14 46 02	16 23 19	17 44 02
35 00	19 01 52	20 30 38	22 22 38	00 39 00	03 05 18	05 30 08	07 54 05	10 20 24	12 42 59	14 46 04	16 23 20	17 44 02
अक्षांश	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन

अशुद्धि–संशोधन

विगत वर्ष (सं. 2063 वि.) के **'श्रीमार्त्तण्डपंचांग'** के विशेषांक भाग में निम्नांकित कुछ अशुद्धियां दृष्टिदोष एवम् अनवधानतावश रह गई थीं। इन्हें कृपया निम्नांकित प्रकार से शुद्ध कर लें।

[i] पृष्ठ 257 पर पंक्ति 23 से 30 तक ऐसे पढ़िए–

''.................'**सप्तवर्ग कोष्ठक**' के माध्यम से ज्ञात किया जा सकता है। अभीष्ट ग्रह का भोगांश इस कोष्ठक के रा. अं. क. वि. वाले कॉलम में दी गई, जिन दो रा. अं. क. वि. के मध्य पड़ता है, उनमें से परवर्ती (दूसरे) रा. अं. क. वि. के आगे लिखी राशियां ही उस ग्रह की क्रमशः गृह (स्वगृह), होरा, द्रेष्काण आदि की राशियां होंगी।

उदाहरणार्थ– मान लीजिए, हमारे अभीष्ट ग्रह चन्द्र (जिसका सप्तवर्ग ज्ञात करना है) के भोगांश $10^{रा}$ $19^{अ}$ $20^{क}$ $25^{वि}$ हैं। 'सप्तवर्ग कोष्ठक' के रा. अं. क. वि. वाले कॉलम में देखिए, चन्द्रमा का यह भोगांश $10^{रा}$ $18^{अ}$ $00^{क}$ $00^{वि}$ और $10^{रा}$ $20^{अ}$ $00^{क}$ $00^{वि}$ के मध्य पड़ता है। अतः उक्त निर्देशानुसार स्पष्ट है, कोष्ठक में $10^{रा}$ $20^{अ}$ $00^{क}$ $00^{वि}$ के आगे लिखी 11, 4, 3, 3, 12, 6, 3 राशियां हमारे अभीष्ट चन्द्र के क्रमशः स्वगृह, होरा, द्रेष्काण आदि की राशियां हैं। इसका अभिप्रायः यह है कि– हमारे अभीष्ट चन्द्र की स्वराशि (जिसमें चन्द्रमा स्थित है) कुम्भ, होराराशि कर्क, द्रेष्काण राशि मिथुन, सप्तमांश राशि मिथुन, नवमांशराशि मीन, द्वादशांशराशि कन्या और त्रिंशांश राशि मिथुन है। दूसरे शब्दों में हम कहेंगे, हमारा अभीष्ट चन्द्र शनि की राशि, अपनी ही होरा, बुध के द्रेष्काण, बुध के ही सप्तमांश, गुरु के नवमांश, बुध के द्वादशांश और बुध के ही त्रिंशांश में स्थित है।''

[ii] पृष्ठ 258, पंक्ति 1 से 9 तक इस प्रकार पढ़िए–

'' उदाहरणार्थ– हमारे **'उदाहरण जन्मपत्र'** में चि. अभिनव शर्मा के जन्मकालीन शुक्र के भोगांश $8^{रा}$ $11^{अं}$ $56^{क}$ $00^{वि}$ हैं। इसका सप्तवर्गबल ज्ञात करने के लिए **'सप्तवर्गबल कोष्ठक'** से शुक्र के सप्तवर्ग की राशियां पूर्वोक्त नियमानुसार क्रमशः इस प्रकार प्राप्त हुई–

(1) राशि (जिसमें शुक्र स्थित है) धनु, (2) होराराशि सिंह, (3) द्रेष्काणराशि मेष, (4) सप्तमांशराशि कुम्भ, (5) नवमांशराशि कर्क, (6) द्वादशांशराशि मेष और (7) त्रिंशांशराशि धनु है। इस प्रकार स्पष्ट है, शुक्र के सात वर्गों के स्वामी क्रमशः गुरु, सूर्य, मंगल, शनि, चन्द्र, मंगल और गुरु हैं। क्योंकि यहां राशि का स्वामी गुरु, शुक्र का शत्रु है; इसलिए राशिबल 6¼ ; होराराशि का स्वामी सूर्य शुक्र का सम है, अतः होराराशिबल 12½ ,द्रेष्काण का स्वामी मंगल मित्र, अतः द्रेष्काणबल 25; सप्तमांश का स्वामी शनि सम है; अतः सप्तमांशबल 12½ ; नवमांश का स्वामी चन्द्रमा अधिशत्रु होने से नवमांशबल केवल 3; द्वादशांश का स्वामी मंगल मित्र, अतः द्वादशबल 25; और त्रिंशांश का स्वामी गुरु शत्रु है, अतः शुक्र का त्रिंशांशबल 6¼ हुआ। इसप्रकार शुक्र का कुल सप्तवर्गबल 90½ बना।''

[iii] पृष्ठ 258 पर अन्तिम पंक्ति से पृष्ठ 259 की पंक्ति 2 तक इस प्रकार पढ़ें–

'' उदाहरणार्थ– यदि सूर्य भोगांश $4^{रा}$ $14^{अ}$ $20^{क}$ $20^{वि}$ हों तो सूर्य अपनी मूलत्रिकोणराशि, स्वराशि की होरा और स्वराशि के ही नवमांश में भी स्थित होगा। इस स्थिति में यहां सूर्य को मूलत्रिकोणराशि में स्थित होने का बल 75, स्वराशि की होरा का 50 और स्वराशि के नवमांश का भी 50 ही मिलेगा।''

[iv] पृष्ठ 259 पर **"उदाहरण जन्मपत्र "** में सभी ग्रहों का **"सप्तवर्गबल"** कोष्ठक में कुछ अशुद्धियां रह गई हैं। नीचे यह पूरा कोष्ठक हम संशोधित कर उद्धृत कर रहे हैं। इसमें जो अशुद्ध था, उसे शुद्ध करके **ब्लैक,बोल्ड टाईप** में दर्शाया गया है–

'उदाहरण जन्मपत्र' में सभी ग्रहों का सप्तवर्गबल

[कोष्ठक में दी गई 1 से 12 तक की संख्याएं सप्तवर्ग की राशियों को दर्शाती हैं। इन राशियों के साथ लिखे संक्षिप्तरूप (अ.मि.= अधिमित्र, मि.= मित्र, श.= शत्रु, अ.श.= अधिशत्रु, स्व.=स्ववर्ग, स=सम) सप्तवर्ग के राशीशों का ग्रहों से सम्बन्ध प्रकट करते हैं।]

ग्रह	मूलत्रिकोण	राशि	होरा	द्रेष्काण	सप्तमांश	नवमांश	द्वादशांश	त्रिशांश	बलयोग
सूर्य	जातक के जन्म के समय कोई भी ग्रह अपनी मूल–त्रिकोण –राशि में नहीं है।	**8 अ.मि. (37½)**	4 स. (12½)	**8 अ. मि. (37½)**	**2 स. (12½)**	**4 स. (12½)**	**8 अ. मि. (37½)**	2 स. (12½)	162½
चन्द्र		4 स्व. (50)	5 स. (12½)	12 मि. (25)	3 अ. मि. (37½)	10 मि. (25)	**1 मि. (25)**	10 मि. (25)	200
मंगल		6 स. (12½)	4 अ.मि. (37½)	10 श. (6)	3 स. (12½)	**2 मि. (25)**	11 श. (6)	12 स. (12½)	112
बुध		7 अ.मि. (37½)	5 अ.मि. (37½)	11 श. (6)	10 श. (6)	10 श. (6)	12 श. (6)	9 श. (6)	105
गुरु		2 अ. श. (3)	4 अ.मि. (37½)	6 अ. श. (3)	11 श. (6)	**2 अ.श. (3)**	7 अ.श. (3)	12 स्व. (50)	105½
शुक्र		9 श. (6)	5 स. (12½)	**1 मि. (25)**	11 स. (12½)	**4 अ. श. (3)**	**1 मि. (25)**	**9 श. (6)**	90
शनि		2 स. (12½)	4 स. (12½)	2 स. (12½)	8 अ.श. (3)	**11 स्व. (50)**	3 स. (12½)	2 स. (12½)	115½
कुल योग									890½

[v] पृष्ठ 259 पर पंक्ति 28 के बाद तीन पंक्तियों वाले पैराग्राफ (" पृष्ठ 279 पर दिए गए.......... ....यह कोष्ठक से स्पष्ट है।) को ऐसे पढ़ें–

" 'ओजयुग्मवल कोष्ठक' के स्पष्टग्रह वाले कॉलम में अभीष्ट ग्रह का भोगांश जिन दो रा. अं. क. के मध्य पड़ता है, उनमें से परवर्ती (दूसरे) रा. अं. क. के आगे लिखा बल ही उस ग्रह का ओजयुग्मबल है।

उदाहरणार्थ– यदि जन्मकालिक मंगल का भोगांश $5^{\text{रा.}}$ $17^{\text{अं.}}$ $10^{\text{क.}}$ है, तो 'ओजयुग्मबल कोष्ठक' में यह स्पष्टग्रह वाले कॉलम में $5^{\text{रा.}}$ $16^{\text{अं.}}$ $40^{\text{क.}}$ और $5^{\text{रा.}}$ $20^{\text{अं.}}$ $00^{\text{क.}}$ के मध्य पड़ता है। अतः उक्त नियमानुसार परवर्ती $5^{\text{रा.}}$ $20^{\text{अं.}}$ $00^{\text{क.}}$ के आगे मंगल के नीचे लिखा बल 25 मंगल का ओजयुग्मबल हुआ। यदि यहां यही भोगांश चन्द्र का हो तो स्पष्ट है, उसका भी यह बल 25 ही होगा।

[vi] पृष्ठ 279 पर दिए गए 'ओजयुग्मबल कोष्ठक' में भी कुछ अशुद्धियां रह गई हैं। इस कोष्ठक को संशोधित कर अगले पृष्ठ पर पूरा उद्धृत कर रहे हैं। इसका जो भाग अशुद्ध था, उसे **ब्लैक टाईप** में छापा गया है।

ओजयुग्मबल कोष्ठक

(सम–विषम राशि–नवांशबल)

स्पष्टग्रह	ओजयुग्मबल		स्पष्टग्रह	ओजयुग्मबल		स्पष्टग्रह	ओजयुग्मबल		स्पष्टग्रह	ओजयुग्मबल	
	सू., मं., बु. गु., श.	चं., शु.		सू., मं., बु. गु., श.	चं., शु.		सू., मं., बु. गु., श.	चं., शु.		सू., मं., बु. गु., श.	चं., शु.
रा. अं. क.			रा. अं. क.			रा. अं. क.			रा. अं. क.		
0 00 00	00	50	3 00 00	50	00	6 00 00	00	50	9 00 00	50	00
0 03 20	50	00	3 03 20	00	50	6 03 20	50	00	9 03 20	00	50
0 06 40	25	25	3 06 40	25	25	6 06 40	25	25	9 06 40	25	25
0 10 00	50	00	3 10 00	00	50	6 10 00	50	00	9 10 00	00	50
0 13 20	25	25	3 13 20	25	25	6 13 20	25	25	9 13 20	25	25
0 16 40	50	00	3 16 40	00	50	6 16 40	50	00	9 16 40	00	50
0 20 00	25	25	3 20 00	25	25	6 20 00	25	25	9 20 00	25	25
0 23 20	50	00	3 23 20	00	50	6 23 20	50	00	9 23 20	00	50
0 26 40	25	25	3 26 40	25	25	6 26 40	25	25	9 26 40	25	25
1 00 00	50	00	4 00 00	00	50	7 00 00	50	00	10 00 00	00	50
1 03 20	00	50	4 03 20	50	00	7 03 20	00	50	10 03 20	50	00
1 06 40	25	25	4 06 40	25	25	7 06 40	25	25	10 06 40	25	25
1 10 00	00	50	4 10 00	50	00	7 10 00	00	50	10 10 00	50	00
1 13 20	25	25	4 13 20	25	25	7 13 20	25	25	10 13 20	25	25
1 16 40	00	50	4 16 40	50	00	7 16 40	00	50	10 16 40	50	00
1 20 00	25	25	4 20 00	25	25	7 20 00	25	25	10 20 00	25	25
1 23 20	00	50	4 23 20	50	00	7 23 20	00	50	10 23 20	50	00
1 26 40	25	25	4 26 40	25	25	7 26 40	25	25	10 26 40	25	25
2 00 00	00	50	5 00 00	50	00	8 00 00	00	50	11 00 00	50	00
2 03 20	50	00	5 03 20	00	50	8 03 20	50	00	11 03 20	00	50
2 06 40	25	25	5 06 40	25	25	8 06 40	25	25	11 06 40	25	25
2 10 00	50	00	5 10 00	00	50	8 10 00	50	00	11 10 00	00	50
2 13 20	25	25	5 13 20	25	25	8 13 20	25	25	11 13 20	25	25
2 16 40	50	00	5 16 40	00	50	8 16 40	50	00	11 16 40	00	50
2 20 00	25	25	5 20 00	25	25	8 20 00	25	25	11 20 00	25	25
2 23 20	50	00	5 23 20	00	50	8 23 20	50	00	11 23 20	00	50
2 26 40	25	25	5 26 40	25	25	8 26 40	25	25	11 26 40	25	25
3 00 00	50	00	6 00 00	00	50	9 00 00	50	00	00 00 00	00	50

पाठक ध्यान दें– गतवर्ष (सं. 2063) के षड्बल विशेषांक में सप्तवर्गबल और ओजयुग्मबल साधन में जो कुछ अशुद्धियां रह गई थीं, उनका हमने ऊपर निर्देश कर दिया है। इन दोनों बलों से सम्बद्ध अशुद्धियों को पृष्ठ 259 पर दिए **'उदाहरण जन्मपत्र में ग्रहों का ओजयुग्मबल'**, पृष्ठ 260 पर दिए गए **'उदाहरण जन्मपत्र में ग्रहों का कुल स्थानबल'** एवम् पृष्ठ 274 पर दिए गए **'उदाहरण जन्मपत्र में सूर्यादिग्रहों के सप्तबल का योग'** कोष्ठकों में संशोधित कर लेना चाहिए।

प्रो. प्रियव्रत शर्मा द्वारा लिखित संग्रहणीय आगामी प्रकाशन

(i) **व्रतपर्व विवेक**
(दीपावली, दशहरा आदि हिन्दु व्रत–पर्वों की तिथियों के निर्णायक नियमों पर एक प्रामाणिक पुस्तक।) (फरवरी, 2007 ई. तक प्रकाशित हो रही है।)

(ii) **मुहूर्त्त–गजानन**
(विवाहादि संस्कारों तथा गृहारम्भ, गृहप्रवेश, यात्रादि के लिए शुभकाल के निर्धारण की प्रक्रिया का सरल एवं सुस्पष्ट विस्तृत प्रतिपादन।)
(मार्च, 2007 ई. तक प्रकाशित हो रहा है।)

(iii) **लघु लग्नसारणी** (मार्च, 2007 ई. तक प्रकाशित हो रही है।)

(iv) **भारतीय वास्तुशास्त्र के सिद्धान्त**
(भारतीय वास्तुशास्त्र के सिद्धान्तों की विश्लेषणात्मक, पूर्वाग्रहमुक्त समीक्षा।)

(v) **समस्या एवम् समाधान**
(गणित, फलित, मुहूर्त्त आदि ज्योतिष की विविध शाखाओं से सम्बद्ध लगभग दो सौ से अधिक ऐसी समस्याओं के सप्रपञ्च, सुबोध, सरल समाधान, जो दैवज्ञों को यत्र–तत्र अक्सर उलझाती रहती हैं।)

(vi) **ज्योतिर्निबन्धमाला**
(गणित, फलित आदि सम्बन्धी विचारोत्तेजक अनेक मौलिक, प्रौढ़, शोधपूर्ण ज्योतिर्निबन्धों का नवदिग्दर्शक महासंकलन।)

(vii) **नव्य जातकपद्धति**
(फलादेशोपयोगी ग्रह, भावबल आदि के निर्धारण की संशोधित नई विधाएं।)

सम्पर्कसूत्र–

श्रीमती वीना चतुर्वेदी, M.A. , M.Phill.,
'अभिजित् प्रकाशन', 59/6 (अभिजित्),
P.O. *पंचकूला–* 134 109 *(हरियाणा)।*
Phone: 0172-2565303

स्तरीय ज्योतिष साहित्य की प्रकाशन संस्था

'अभिजित् प्रकाशन'

59/6, पंचकूला (हरियाणा)

की

स्थापना के यशोधवल दशाब्द की पूर्ति पर

हम अपने प्रिय पाठकों का

हार्दिक अभिनन्दन करते हैं।

इस हर्षप्रद वेला के उपलक्ष्य में हम अपने प्रशंसक गुणज्ञ पाठकों को

22 सितम्बर, सन् 2007 ई. तक के लिए

अपने सभी प्रकाशनों पर 15 से 30 प्रतिशत की छूट

उपहार के रूप में दे रहे हैं।

प्रकाशनों की सूची विस्तृत परिचयसहित इन आगामी पृष्ठों पर देखिए।

अब हमारी पुस्तकें आप

V.P.P. से भी मंगवा सकते हैं।

ध्यान रहे– हमारे ये प्रकाशन केवल हमसे ही मिलेंगे। किसी भी अन्य बुक्सेलर को इन्हें बेचने का अधिकार हमने बिल्कुल नहीं दिया है। अतः इन्हें प्राप्त करने के लिए केवल हमसे ही सम्पर्क करें।

प्रकाशक

अभिजित् प्रकाशन,

59/6 (अभिजित्),

P.O. पंचकूला–134 109, (हरियाणा)

Phone- 0172- 2565 303

प्रोत्साहन के लिए शतशः धन्यवाद

"अभिजित् प्रकाशन, 59/6, पंचकूला (हरियाणा)" द्वारा प्रकाशित प्रो. प्रियव्रत शर्मा, **M.A.**, सिद्धान्तज्योतिषाचार्य, साहित्याचार्य, सम्पादक– **'श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग'** द्वारा तलान्त परिशीलनपूर्वक प्रणीत प्रामाणिक मौलिक, ज्योतिषसाहित्य के इन हमारे सभी प्रकाशनों को सभी विद्वानों ने उच्चस्तरीय माना है और इनकी मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है। मुद्रणादि तथा साज–सज्जा की दृष्टि से भी इन्हें प्रकाशन–विशेषज्ञों द्वारा उत्कृष्ट कोटि में रखा गया है। हमें परम हर्ष है– आज इस संस्था की स्थापना के दस वर्ष पूरे हो रहे हैं। इस अल्पकालावधि में ज्योतिःशास्त्रीय प्रकाशन के क्षेत्र में जो प्रकर्ष इसे मिला है, वह भविष्य में भी इसी प्रकार के मौलिक साहित्य के प्रकाशनार्थ हमें प्रोत्साहित करता है।

दशाब्दपूर्ति के इस प्रोत्साहक मांगलिक अवसर पर हम अपने पाठकों को अपने प्रकाशनों पर 15 से 30 प्रतिशत की छूट दे रहे हैं। **ध्यान रहे–** ग्राहकों को डाकव्यय तो अलग से देना ही होगा। यह भी जान लेना चाहिए कि– यह छूट केवल 22 सितम्बर, 2007 ई. तक ही लागू रहेगी। तदनन्तर ये प्रकाशन पाठकों को उनके वास्तविक मुद्रित मूल्य पर ही मिल सकेंगे।

पुस्तकों का डाकव्ययसहित मूल्य M.O. द्वारा अथवा **"अभिजित् प्रकाशन"** के नाम बनवाए गए **D.D. (D.D. drawn in favour of 'Abhijit Prakashan')** द्वारा भी भेजा जा सकता है। **अब आप V.P. P. से भी पुस्तकें मंगवा सकते हैं।** इसके लिए मूल्यराशि पहिले भेजने की आवश्यकता नहीं। आप हमें केवल पत्र लिखिए कि– आप कौन–कौन सी पुस्तकें चाहते हैं। हम पुस्तकें आपको V.P. P. द्वारा भेज देंगे। V.P. P. पहुंचने पर पोस्टमैन को पुस्तकों का मूल्य डाकव्ययसहित देकर आप पुस्तकों का पार्सल उससे प्राप्त कर सकेंगे। **ध्यान रहे–** V.P.P. के Charges जो प्रति पुस्तक लगभग 35 रु. होंगे, अलग से पोस्टमैन आपसे लेगा।

पाठकों को यह भी जान लेना चाहिए कि– हमारे यहां से प्रकाशित होने वाली ये पुस्तकें केवल हमसे ही आपको प्राप्त होंगी। इन्हें बेचने का अधिकार दिल्ली या अन्य किसी भी नगर के किसी भी बुक्सेलर को हमने बिल्कुल नहीं दिया है। इन्हें प्राप्त करने के लिए ग्राहक सीधा हम [अभिजित् प्रकाशन, 59/6, P. O. पंचकूला (हरियाणा)] से ही सम्पर्क करें। किसी अन्य बुक्सेलर से खरीदी गई पुस्तक की अपूर्णता, मुद्रण आदि सम्बन्धी अशुद्धि अथवा अन्य किसी भी त्रुटि के लिए हम कदापि उत्तरदायी नहीं होंगे। हमारी प्रत्येक पुस्तक पर 'अभिजित् प्रकाशन' का होलोग्राम लगा रहता है। इसके बिना पुस्तक नकली होगी।

ग्राहकों को M.O., D.D. आदि भेजते हुए अपना पता पिन–कोड और फोन नम्बरसहित साफ–साफ लिखना चाहिए।

अपने ऑर्डर, M.O., D.D. आदि निम्नलिखित पते पर भेजिए–

श्रीमती वीना चतुर्वेदी, M.A., M.Phil.,
'अभिजित् प्रकाशन,' 59/6 (अभिजित्),
P.O. पंचकूला (हरियाणा) – 134 109,
Phone: 0172-2565 303

पृष्ठ संख्या 160 (लगभग)
चिरस्थाई बहुमूल्य काग़ज़ पर मुद्रित

व्रतपर्व-विवेक

फरवरी, 2007 ई. तक प्रकाशित होगा।

साईज़-'मार्त्तण्ड पंचांग' के बराबर
सुदृढ़, आकर्षक टाईटल

[व्रतपर्वों की तिथियों (तारीखों) के निर्णायक नियमों पर सरल-सुबोध भाषा-शैली में लिखा एक प्रामाणिक अपूर्व प्रकाशन]

[सन् 2001 से 2050 ई. तक के रामनवमी, दशहरा, दीपावली आदि सभी हिन्दु व्रतपर्वों की तारीखों की तैयार लम्बी सूची।]

इस पुस्तक में हिन्दुओं के चैत्र आदि 12 मासों के व्रतपर्वों के निर्णय का विशद् विवेचन **कालमाधव, निर्णयसिन्धु, धर्मसिन्धु** आदि धर्मशास्त्रीय ग्रन्थों के प्रमाण-वाक्यों के आधार पर ऐसी सरल भाषा-शैली में किया गया है कि- हिन्दी जानने वाला कोई भी व्यक्ति इसे पढ़कर, किसी भी वर्ष के रामनवमी आदि किसी भी व्रतपर्व की तारीख का निर्णय आसानी से कर सकता है। विभिन्न पंचांगों में किसी व्रतपर्व की तारीख के बारे में मतभेद होने पर इस पुस्तक में दिए गए व्रतपर्व-निर्णायक नियमों के अनुसार यह निर्णय आप अधिकारपूर्वक कर सकते हैं कि- किस पंचांग की तारीख शुद्ध है।

व्रतपर्वों की तारीख का निर्णय पञ्चाङ्गकार किन नियमों के आधार पर करते हैं- यह सब शास्त्रीय प्रमाणों द्वारा विस्तारपूर्वक हिन्दी में समझाया गया है। व्रतपर्वों के निर्णायक धर्मशास्त्रीय सैकड़ों संस्कृतवाक्य, श्लोक हिन्दी-अनुवादसहित उद्धृत किए गए हैं। प्रातः, संगव, मध्याह्न, अपराह्न, सायं, प्रदोष, अरुणोदय, निशीथ, पूर्वविद्धा-परविद्धा तिथि आदि सभी पारिभाषिक कठिन शब्दों की (जिनका प्रयोग व्रतपर्व-निर्णय के प्रसंग में बार-बार आता है) सुस्पष्ट व्याख्या की गई है और इन्हें जानने की गणितप्रक्रिया से मुक्ति दिलाने वाले अनेक कोष्ठक आपको यहां मिलेंगे।

इस पुस्तक में दिए गए अनेक महत्वपूर्ण विषयों में से कुछेक की ओर हम पाठकों का ध्यान यहां आकृष्ट करते हैं:-

(i) हिन्दु व्रतपर्वों के निर्णायक नियमों-सिद्धान्तों की सरल व्याख्या दी गई है।

(ii) हिन्दु व्रतपर्वों में यदा-कदा पैदा होने वाले मतभेद के कारणों और उनके प्रतिकार बतलाए गए हैं।

(iii) चैत्रादि 12 चान्द्रमासों के 24 पक्षों में मनाए जाने वाले नवरात्रारम्भ, श्रीरामनवमी, अक्षयतृतीया, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, श्राद्धारम्भ-समाप्ति, दीपावली आदि सभी व्रतपर्वों के निर्णायक नियमों का विस्तृत विवेचन तथा धर्मशास्त्रों के सभी अपेक्षित व्रतपर्वनिर्धारक संस्कृत-प्रमाणवाक्यों को उद्धृत कर, इन व्रतपर्वों की तिथि (तारीख) का निर्धारण-प्रकार सोदाहरण स्पष्ट किया गया है।

(iv) किस व्रतपर्व के मनाने का शास्त्रीय-विधान क्या है ? व्रतदिन की चर्या कैसी हो ? व्रतदिन में पूजा-पाठ कैसे किया जाए ? व्रतदेवता की पञ्चोपचार या षोडशोपचार पूजा कैसे, किस मन्त्र से, किन उपकरणों (सामग्री) से की जाए, व्रत में देवता का ध्यानमन्त्र क्या है ? व्रत में क्या खाएं, क्या न खाएं ? व्रती के लिए क्या विधि-निषेध है ? व्रतपारणा (व्रत के अन्त में किए जाने वाले भोजन) का समय क्या है ? पारणा में कौन-कौन से पदार्थ भक्ष्य और कौन से वर्ज्य हैं ? सूतक-पातक में व्रत कैसे किया जाए ? रजस्वला स्त्री व्रत के दिन क्या करे ? व्रतभंग होने पर क्या प्रायश्चित्त है ? सूर्य-चन्द्रग्रहण के समय स्नान-दान-जपादि का क्या विधान है ? - इत्यादि पचासों ज्ञातव्य विषयों पर सप्रमाण पूर्ण प्रकाश डाला गया है।

(v) आधुनिक युग के व्यस्त जीवन को दृष्टि में रखते हुए व्रतदेवता की पूजादि का सारगर्भ संक्षिप्त विधान दिया गया है, जिसे 10-15 मिनटों में ही कोई भी व्यक्ति स्वयं कर्मकाण्डी विद्वान् की सहायता के बिना ही कर सकता है। नवरात्र-घटस्थापन, रामनवमी-पूजा, श्राद्ध-तर्पण, दीपावली पर महालक्ष्मी पूजनादि सभी व्रतपर्वसम्बन्धी अनुष्ठानों को आप स्वयं कर सकें- ऐसी बालबोध-शैली में समझाया गया है। लगभग सभी व्रतदेवताओं के संस्कृत-स्तोत्र भी दिए गए हैं।

(vi) करवाचौथ आदि व्रतपर्वों के उद्यापन की सरल प्रक्रिया बिना किसी विशेषज्ञ की मदद के कोई भी गृहिणी स्वयं कर सके-ऐसा सरल विधानसहित निर्देश है।

(vii) सन् 2001 से 2050 ई. तक के नवरात्रारम्भ, प्रदोषव्रत, एकादशीव्रत, दशहरा, दीपावली आदि लगभग सभी हिन्दु-व्रतपर्वों की अंग्रेजी तारीखों की लम्बी सूची दी गई है।

(viii) सन् 2001 से 2050 ई. तक के सूर्य-चन्द्रग्रहणों, हरिद्वार, प्रयाग, नासिक, उज्जैन के कुम्भपर्वों की तारीखें।

(ix) सन् 2001 से 2050 ई. तक के गुरु-शुक्रास्तकाल, गजच्छाया, अर्धोदय आदि पर्व।

(x) सन् 2001 से 2050 ई. तक के प्रमुख-प्रमुख जैन-पर्वों की तारीखें।

(xi) सन् 2001 से 2050 ई. तक के चैत्रादि मासों के चन्द्रदर्शन की तारीखें, तदनुसार मुहर्रम आदि मुस्लिम मासों की प्रारम्भ-तारीखें एवम् मुहर्रम, ईद-उल-फित्र आदि मुस्लिम त्योहारों की तारीखों का ज्ञानप्रकार।

(xii) सन् 2001 से 2050 ई. तक के सिक्ख-गुरुपर्वों की तारीखें।

(xiii) सन् 2001 से 2050 ई. तक के ईस्टर सण्डे, गुडफ्राईडे की तारीखें और तदनुसार अन्य क्रिश्चियन पर्वों की तारीखों का तुरन्त निर्णय करने वाली अद्भुत तालिका।

इन उपरोक्त विषयों के अलावा व्रतपर्वों से सम्बद्ध अन्य बीसों विषय आपको इस पुस्तक में मिलेंगे। **इसे खरीद लीजिए। बस, आगामी 43 वर्षों तक (सन् 2050 ई. तक) व्रतपर्वों की तारीखें जानने के लिए पंचांग, डायरी या कैलेण्डर खरीदने की आपको ज़रुरत नहीं होगी।**

इस पुस्तक का वास्तविक मूल्य **Rs. 400/- + Rs. 50/- डाकव्यय** है। इस पर 22 सितम्बर, 2007 ई. तक के लिए 30 प्रतिशत की छूट दी जा रही है। इस प्रकार -

पुस्तक का मूल्य (22 सितम्बर, 2007 ई. तक) = **Rs. 280/- + डाकव्यय Rs. 50/-**
पुस्तक का मूल्य (22 सितम्बर, 2007 ई. के बाद) = **Rs. 400/- + डाकव्यय Rs. 50/-**

पृष्ठ संख्या 120 (लगभग)
चिरस्थाई बहुमूल्य काग़ज़ पर मुद्रित

मुहूर्त्त गजानन

साईज़-'मार्त्तण्ड पंचांग' के बराबर

(मार्च, 2007 ई. तक प्रकाशित हो जाएगा–प्रतीक्षा कीजिए।)

लेखकः– प्रियव्रत शर्मा,

(गर्भाधान, पुंसवन, नामकरण, मुण्डन, उपनयन एवम् विवाहादि मुहूर्त्तों के साधन का सरल भाषा/शैली में विस्तृत प्रतिपादन)

वशिष्ठादि संहिताओं, मुहूर्त्तमार्त्तण्ड, मूहूर्त्तचिन्तामणि आदि ग्रन्थों में दिया गया मुहूर्त्त का साधन–प्रकार संस्कृत के विद्वान् दैवज्ञों को भी उलझाने वाला है। इस पुस्तक में सभी आवश्यक विभिन्न मुहूर्त्तों के ग्राह्य एवम् वर्ज्य काल आदि का विशद् विवेचन किया गया है, जिसे पढ़कर कोई भी व्यक्ति पंचांग में दिए गए तिथ्यादि के अनुसार अभीष्टकाल में अभीष्ट मुहूर्त का शुद्धकाल एवम् लग्न जान सकता है। किस मुहूर्त में कौन–सी तिथि–वार–नक्षत्र–योग ग्राहय हैं, कौन–सा काल लग्नमुहूर्त्त के लिए शास्त्रोक्त है, मृताशौच, जननाशौच जैसी प्रतिकूल स्थिति आ पड़ने पर मंगलकृत्य का विधान कैसे हो–इत्यादि मुहूर्त्तसम्बन्धी अनेक उलझे प्रश्नों के सुस्पष्ट समाधान मुहूर्त्तशास्त्रोक्त प्रमाणों द्वारा सुलझाए गए हैं।

शुभकृत्य के मुहूर्त्त को दूषित करने वाले अधिकमास, भद्रा, गुरु–शुक्रास्त, मासान्त–संक्रान्ति, ग्रहणशूल, क्रान्तिसाम्य आदि 57 दोष तथा उनके सम्भव परिहार भी सप्रमाण दिए गए हैं।

देवप्रतिष्ठा, गृहारम्भ, ग्रहप्रवेश, वधूप्रवेश, राज्याभिषेक, विपणि, यात्रा, पुनर्विवाह, मन्त्रदीक्षा, पशु आदि का क्रय–विक्रय आदि अनेकों आवश्यक कृत्यों के शुभमुहूर्त्त–ज्ञान का विस्तृत विवेचन शास्त्रीय प्रमाणवाक्यों–सहित किया गया है। सभी उद्धृत संस्कृत–प्रमाणवाक्यों को हिन्दी में सुस्पष्ट किया गया है।

यमघण्ट, क्रकच आदि कुयोग, सर्वार्थसिद्धि, द्विपुष्कर, त्रिपुष्कर आदि सुयोग तथा गृहप्रवेश, गृहारम्भादि में अपेक्षित वृषवास्तु, भूशयन तथा कलशशुद्धि–ज्ञापक बीसों मौलिक कोष्ठक इसमें दिए गए हैं।

मुहूर्त्तकालिक लग्न जानने के लिए 40 पृष्ठों की एवम् दैनिक लग्नारम्भ–समाप्ति–सारणी दी गई है, जिससे भारत के 1000 नगर एवम् उपनगरों में अभीष्ट तारीख को मेषादि लग्नों का प्रारम्भ एवम् समाप्तिकाल (भा.स्टैं.टा.) तुरन्त जाना जा सकता है।

इसका वास्तविक मूल्य Rs. 250/– + डाकव्यय Rs. 50/– है। इस पर 22 सितम्बर, 2007 ई. तक 30 प्रतिशत की छूट दी जा रही है। इस प्रकार –

पुस्तक का मूल्य (22 सितम्बर, 2007 ई. तक)	= **Rs. 175/– + डाकव्यय Rs. 50/–**
पुस्तक का मूल्य (22 सितम्बर, 2007 ई. के बाद)	= **Rs. 250/– + डाकव्यय Rs. 50/–**

पृष्ठ संख्या 144 (लगभग)
चिरस्थाई बहुमूल्य काग़ज़ पर मुद्रित

लघु लग्नसारणी

साईज़-'मार्त्तण्ड पंचांग' के बराबर

(मार्च, 2007 ई. तक प्रकाशित हो जाएगी–प्रतीक्षा कीजिए।)

लेखकः– प्रियव्रत शर्मा,

[साम्पातिककाल के 5–5 मिनट एवम् आधे–आधे अक्षांशों के अन्तर पर विश्वभर की लग्नसारणियां]

हमारी बड़ी लग्नसारणी (विश्वलग्नसारणी) में लग्नसाधन से सम्बद्ध सभी अपेक्षित छोटे से छोटे बीसों विषयों पर भी विस्तृत प्रकाश डाला गया है। उसकी लग्नसारणियां एक–एक मिनटान्तर पर तथा आधा–आधा अक्षांश (50° अक्षांश के बाद तो 15–15 अक्षांश–कलाओं) के अन्तर पर विकलान्त सूक्ष्म लग्नस्पष्ट बतलाती हैं। यह **'लघुलग्नसारणी'** उसका ही संक्षिप्त रूप है। इसमें आधे–आधे अक्षांश–अन्तर और 5–5 साम्पातिककाल मिनटान्तर पर कलान्त सूक्ष्म लग्नस्पष्ट दिया गया है, जो फलादेश के लिए पर्याप्त सूक्ष्म है। आजतक प्रकाशित राफेल आदि की सभी लग्नसारणियों से हमारी यह **'लघुसारणी'** सूक्ष्मता में काफी आगे है। प्रत्येक पृष्ठ पर प्रत्येक अक्षांश की लग्नसारणी के नीचे साम्पातिककाल के 1 से 5 मिनट तक की लग्नगति दी गई है, जिसके प्रयोग से 5–5 मिनटान्तर पर बनी इन लग्नसारणियों द्वारा एक–एक मिनटान्तर पर बनी विस्तृत लग्नसारणियों के समान ही सूक्ष्मलग्न बिना गणित के तुरन्त ज्ञात हो जाता है।

भारत के सभी (30)प्रान्तों के लगभग 1000 जिला, तहसील नगरों तथा अन्य महत्त्वपूर्ण नगरों–उपनगरों के अक्षांश, रेखांश, स्टैं. अं. (स्थानीय मध्यमकाल और स्टैण्डर्ड टाईम का अन्तर) दिया गया है, तथा इन सभी (1000) नगर–उपनगरों में मेषादि12 लग्नों का दैनिक प्रारम्भ–समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.) ज्ञात करने की एक विस्तृत (33 पृष्ठों की) सारणी दी गई है, जिसकी मदद से केवल दो–तीन मौखिक जोड़–घटाव द्वारा ही अभीष्ट स्थल पर अभीष्ट तारीख को अभीष्ट लग्न का सूक्ष्म प्रारम्भ–समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.) केवल आधा मिनट (30 सेकण्ड) में ही आप जान सकते हैं। **ध्यान रहे–** भारत के लगभग सभी प्रसिद्ध नगरों में दैनिक लग्नारम्भ–समाप्तिकाल इतनी सरलता से बतलाने वाली ऐसी सारणी हमारी बड़ी लग्नसारणी (विश्वलग्नसारणी) में भी नहीं है। यह विलक्षण दैनिक लग्नसारणी लेखक के भारी परिश्रम का परिणाम है।

विश्व के लगभग सभी देशों की स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन्स, अक्षांश, रेखांश तथा उन देशों के स्टैण्डर्ड टाईम का भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम एवम् G.M.T. से अन्तर बतलाने वाली सारणियां भी यहां दी गई हैं। अभीष्ट स्थल एवम् अभीष्ट समय पर दैनिक लग्नारम्भ–समाप्ति तथा स्पष्ट लग्न (रा.अ.क.) ज्ञात करने के अनेकों भारतीय एवम् विदेशी नगरों के उदाहरण दिए गए हैं, ताकि पाठक को कोई अस्पष्टता न रहे।

संक्षेप– सूक्ष्मता एवम् सरलता से इष्टकालिक लग्नारम्भ–समाप्ति तथा स्पष्ट लग्न बतलाने वाली यह **'लघु लग्नसारणी'** अपने आप में सचमुच अद्भुत है।

इसका वास्तविक मूल्य Rs. 350/– + डाकव्यय Rs. 50/– है। 22 सितम्बर, 2007 ई. तक इस पर 20 प्रतिशत की छूट दी जा रही है। इस प्रकार –

पुस्तक का मूल्य (22 सितम्बर, 2007 ई. तक)	= **Rs. 280/– + डाकव्यय Rs. 50/–**
पुस्तक का मूल्य (22 सितम्बर, 2007 ई. के बाद)	= **Rs. 350/– + डाकव्यय Rs. 50/–**

पृष्ठ सं. 604
चिरस्थायी बहुमूल्य कागज

साईज़-24x18½ सें.मी.
सुदृढ़, आकर्षक टाईटल

विश्वलग्न सारणी

विश्व के किसी भी स्थल का सूक्ष्म लग्न केवल साधारण जोड़–घटाव द्वारा बतलाने वाला लग्नसम्बन्धी प्रचुर सामग्री से समृद्ध अपूर्व प्रकाशन

(इस समय उपलब्ध है।)

(i) 0° से 50° अक्षांश तक 30–30 और 50° से 66° अक्षांश तक 15–15 अक्षांश–कलाओं के अन्तर पर बनाई गई 332 पृष्ठों पर फैली 166 लग्नसारणियां साम्पातिक काल के 1–1 मिनट के अन्तर पर विकलान्त सूक्ष्म लग्न बतलाती हैं। इनसे विश्व के किसी भी उत्तरी तथा दक्षिणी अक्षांश वाले नगर का इष्टकालिक राश्यादि लग्न स्पष्ट करने के लिए 2 मिनट से अधिक समय नहीं लगता है।

(ii) मेषादि बारह लग्नों का दैनिक प्रारम्भ तथा समाप्तिकाल बतलाने वाली 25 पृष्ठों की विलक्षण सारणियां 5–5 अक्षांश–कलाओं के अन्तर पर 0° से 60° अक्षांशों के लिए बनाई गई हैं, जिनसे विश्व के किसी भी नगर में किसी भी दिन (तारीख को) किसी भी सायन एवं निरयण लग्न का प्रारम्भ तथा समाप्तिकाल (अभीष्ट देश के स्टैं. टा. में) मात्र मौखिक जोड़–घटाव द्वारा तुरन्त (लगभग एक मिनट में ही) जाना जा सकता है। क्योंकि, ये सारणियां लग्न का प्रारम्भ तथा समाप्तिकाल सेकण्ड तक सूक्ष्म बतलाती हैं, अतः सन्दिग्ध (सन्धिगत) लग्न का निर्णय इन सारणियों से वस्तुतः चुटकियों में अनायास ही हो जाता है। सन्देहास्पद लग्नराशि के निर्णय का यह नवीनतम अत्यन्त सरल प्रकार है।

(iii) सन् 1900 से 2100 ई. तक का सेकण्ड तक सूक्ष्म साम्पातिक काल और स्पष्ट अयनांश दिया गया है।

(iv) भारत के 4,000 नगर/उपनगरों तथा विश्व के अन्य 210 देशों के प्रसिद्ध लगभग 5,000 नगरों के अक्षांश–रेखांश तथा स्था. म. का. और स्टैं. टा. का अन्तर 80 पृष्ठों पर दिया गया है।

(v) विश्व के लगभग छः सौ (600) देश / द्वीप/ उपद्वीपों की स्टैं. टाईम मेरिडियन्स तथा उनके स्टैं.टा. का G. M. T. एवं भा. स्टैं. टा. से अन्तर 21 पृष्ठों के विशाल कोष्ठक में विवरणसहित दिया है।

(vi) क्रान्ति और अक्षांश की 20–20 कलाओं के अन्तर पर 0° से 66° अक्षांशों के लिए सेकण्ड तक सूक्ष्म 24 पृष्ठों की मौलिक चरसारणी है, जिससे विश्व के किसी भी स्थल का सेकण्ड तक शुद्ध सूर्योदयास्तकाल आसानी से तुरन्त जाना जा सकता है।

(vii) अमेरिका, कनाडा आदि सभी विशाल देशों के अलग–अलग Time-Zones (कालक्षेत्रों) में पड़ने वाले सम्पूर्ण प्रान्तों (राज्यों) की लम्बी सूची दी गई है, जिससे स्पष्ट हो जाता है कि– इन देशों के किस प्रदेश में कौन सा टाईम प्रचलित है और उसका भा. स्टैं. टा. से कितना अन्तर है।

(viii) विश्व के विभिन्न देशों में 1940 ई. के बाद आज तक हुए सभी समय–परिवर्तनों के वर्षादि का विस्तृत रिकार्ड 7 पृष्ठों के कोष्ठक में अंकित हैं।

(ix) अमेरिका, कनाडा आदि देशों में प्रचलित समरटाईम (D.S.T.) के प्रारम्भ और समाप्ति की तारीखों तथा प्रथम/द्वितीय विश्वयुद्धों के दौरान विभिन्न देशों द्वारा किए गए सभी समय-परिवर्तनों के वर्ष–मास–तारीखों का विवरण 9 पृष्ठों पर दिया गया है।

(x) सारणियों से लग्नसाधन आदि की प्रत्येक गणित–प्रक्रिया को छः छः, सात–सात विभिन्नदेशीय नगरों के उदाहरणों द्वारा पूरी तरह स्पष्ट किया गया है।

अनेक उपयोगी क्रान्ति, वेलान्तर आदि के कोष्ठक तथा लग्न एवं द्वादशभावसाधन आदि से सम्बद्ध "सन्धिगत लग्न का निर्णय" "विषम विभागात्मकभाव–एक समीक्षा" आदि अनेक मौलिक लेख आप इस पुस्तक में पढ़ेंगे।

इस पुस्तक की सभी सारणियां Electronic Computer द्वारा बनाई और मुद्रित की गई हैं, जिससे इनमें गणित एवं मुद्रणसम्बन्धी अशुद्धि की कोई सम्भावना ही नहीं है।

लग्न पर ऐसी व्यापक जानकारी देने वाली परिपूर्ण, प्रौढ़ एवं प्रामाणिक पुस्तक आपको और कोई नहीं मिलेगी– यह हम विश्वासपूर्वक कह सकते हैं।

पुस्तक का वास्तविक मूल्य Rs. 750/– + डाकव्यय Rs. 60/– है। इस पर 22 सितम्बर, '07 ई. तक के लिए 30 प्रतिशत की छूट दी जा रही है। इस प्रकार–

पुस्तक का मूल्य (22 सितम्बर, 2007 ई. तक)	= **Rs. 525/– + डाकव्यय Rs. 60/–**
पुस्तक का मूल्य (22 सितम्बर, 2007 ई. के बाद)	= **Rs. 750/– + डाकव्यय Rs. 60/–**

THE PLANETARY EPHEMERIS FOR HUNDRED YEARS (1951 To 2050 A.D.)

साईज़ 28 × 21 सें. मी. (एटलस साईज़), पृष्ठसंख्या 722

चिरस्थायी **Imported** पेपर
आकर्षक **Colourful** टाईटल

शताब्दी ग्रहभोगांश

(सन् 1951 से 2050 ई. तक के सूक्ष्म स्पष्ट दैनिक ग्रह एवं उनका राशि–नक्षत्रप्रवेश व वक्र–मार्गकाल)
(इंग्लिश एवं हिन्दी–दोनों भाषाओं में) (इस समय उपलब्ध है।)

बड़े साईज के 722 पृष्ठों के इस विशाल ग्रन्थ में सन् 1951 से 2050 ई. तक के प्रातः 5 घं. 30 मि. (भा.स्टैं.टा.) कालिक विकलान्त सूक्ष्म दृक्सिद्ध दैनिक स्पष्ट सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, मध्यम राहु, स्पष्ट राहु, यूरेनस, नेप्च्यून, प्लूटो दिए गए हैं। चन्द्र के अलावा सभी ग्रहों का भा. स्टैं. टा. में राशि, नक्षत्र–प्रवेशकाल तथा वक्र–मार्गकाल भी दिया गया है। चन्द्र का केवल राशि–प्रवेशकाल ही दिया है। प्रत्येक मास की पहिली तारीख का स्पष्ट अयनांश भी दिया गया है।

इसकी गणित एवं मुद्रण दोनों **Computer Program** द्वारा ही किए गए हैं, जिससे यह किसी भी प्रकार की अशुद्धि से सर्वथा मुक्त है।

पुस्तक **English** एवं हिन्दी– एक साथ दोनों भाषाओं में है, **जिससे इन दोनों भाषाओं के वेत्ता इस एक ही ग्रन्थ से समानरूप में** लाभान्वित होंगे।

ज्योतिर्विदों का मन्तव्य है कि– यह प्रकाशन ज्योतिषजगत् के लिए वरदान है। इसमें वह सभी कुछ है, जिसका चिरकाल से हमारे पञ्चांगों में अभाव खटकता था। **भारत के अब तक के ज्योतिषजगत् के इतिहास में यह अपने ढंग का पहला प्रकाशन है,** जिसकी तुलना इस विषय के किसी भी पाश्चात्य प्रकाशन से की जा सकती है।

इस पुस्तक का मूल्य Rs.1000/- + डाकव्यय Rs. 60/- है। 22 सितम्बर, 2007 ई. तक इसके मूल्य पर 30 प्रतिशत की छूट दी जा रही है। इस प्रकार –

पुस्तक का मूल्य (22 सितम्बर, 2007 ई. तक)	= **Rs. 700/– + डाकव्यय Rs. 60/–**
पुस्तक का मूल्य (22 सितम्बर, 2007 ई. के बाद)	= **Rs. 1000/– + डाकव्यय Rs. 60/–**

साईज़ 24 × 18½ सें. मी. पृष्ठसंख्या 280

मनोहारी बहुरंगा टाईटल पुस्तक उपलब्ध है।

शताब्दी विश्व कुण्डली दर्पण

[एक ऐसी पुस्तक, जिसकी मदद से आप जातक के जन्मकालिक लग्न का निर्णय और उसकी जन्मकुण्डली का निर्माण कम्प्यूटर की सी द्रुतगति से कर सकते हैं।]

विश्व के किसी भी नगर/ग्राम में सन् 1951 से 2050 ई. के मध्य उत्पन्न
हुए/होने वाले जातक की जन्मकुण्डली 3–4 मिनट में ही बनाइए।

इस अद्भुत पुस्तक में 100 वर्ष (1951 से 2050 A.D. तक) का चन्द्रसहित सभी ग्रहों का सूक्ष्म राशिप्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.) दिया गया है, जिसे पुस्तक में दिए गए एक कोष्ठक की मदद से विश्व के किसी भी देश के स्टैं. टा. में तुरन्त बदला जा सकता है। 0° से 66½° अक्षांश तक प्रत्येक अक्षांश–कला के अन्तर पर (अर्थात् 0°–1′, 0°–2′, 0°–3′, 0°–4′, 0°–5′ अक्षांश ...... इस प्रकार विश्व के प्रत्येक अक्षांश–कला के लिए) मेषादि 12 लग्नों का दैनिक उदयकाल सेकण्ड तक सूक्ष्मता से बतला देने वाली 136 पृष्ठों की अपूर्व मौलिक सारणियां Computer द्वारा तैयार करके दी गई हैं, जिनकी मदद से आप विश्व के किसी भी दक्षिण या उत्तर अक्षांशीय नगर/ग्राम में उत्पन्न जातक की जन्मकालिक लग्नराशि अत्यन्त सूक्ष्मतापूर्वक वस्तुतः सिर्फ एक मिनट में ही जान सकते हैं। ध्यान रहे – **बच्चे का जन्म जिस ग्राम में हुआ हो, उसी के अक्षांशों (अक्षांश–कलाओं) के अनुसार ही उसके जन्मकालिक लग्न का निर्णय करना चाहिए। उस ग्राम के पार्श्ववर्ती किसी बड़े नगर के अक्षांशों को वहां प्रयोग में लाने पर लग्न के निर्णय में स्थूलता रहती है। इस पुस्तक में विश्व के हर ग्राम की अक्षांशकला की सूक्ष्मतम लग्नसारणी दी गई है, जिसके प्रयोग से यह स्थूलता नहीं रहती।**

यदि जातक का जन्म लग्नसन्धि में हुआ हो तो इस पुस्तक में दी गई दैनिक लग्नारम्भकाल बतलाने वाली जन्मस्थलीय अक्षांश की सारणी से आप तुरन्त (बिना गुणा–भाग किए, साधारण 2–3 मौखिक जोड़–घटाव द्वारा ही) अधिक से अधिक 1½ मिनट (90 सेकण्ड) में ही यह जान लेंगे कि– यह सन्धिगत लग्न (सन्देहास्पद लग्न) जातक के जन्मस्थल पर कब (कितने बजकर, कितने मिनट और कितने सेकण्ड पर) प्रारम्भ या समाप्त हो रहा है। भूगोल के किसी भी स्थल पर स्थित छोटे से छोटे ग्राम में भी (उस ग्राम के अपने कला तक शुद्ध वास्तविक अक्षांश के आधार पर) लग्नराशि का सेकण्ड तक शुद्ध प्रारम्भ एवं समाप्तिकाल आश्चर्यजनक सरलता से चुटकियों में बतलाने वाली ऐसी अद्भुत पुस्तक आपको विश्व की किसी भी भाषा में नहीं मिलेगी–यह हम प्रतिज्ञापूर्वक कह सकते हैं।

1951 से 2050 A.D. तक दुनिया के किसी भी कोने में उत्पन्न हुए अथवा उत्पन्न होने वाले किसी भी जातक की जन्मकुण्डली इस विलक्षण पुस्तक द्वारा आप सिर्फ 3–4 मिनटों में ही बिना गुणा–भाग किए आसानी से बना सकते हैं।

स्पष्टता के लिए देश–विदेश के विभिन्न नगरों में उत्पन्न जातकों के जन्मकालिक लग्न एवम् जन्मकुण्डलियां बनाने के 28 उदाहरण दिए गए हैं। भारत के प्रसिद्ध–प्रसिद्ध लगभग 1000 तथा विश्व के अन्य सभी देशों के लगभग सभी महानगरों के अक्षांश, रेखांश, स्टैं. अं. (स्था. म. का और क्षेत्रीय स्टैं. टा. का अन्तर) तथा G.M.T. एवं भा.स्टैं.टा. से उनके क्षेत्रीय स्टैण्डर्ड टाईम का अन्तर दिया गया है।

इस पुस्तक का मूल्य Rs.500/- + डाकव्यय Rs. 50/- है। 22 सितम्बर, 2007 ई. तक के लिए इसके मूल्य पर 30 प्रतिशत की छूट दी जा रही है। इस प्रकार –

पुस्तक का मूल्य (22 सितम्बर, 2007 ई. तक)	= **Rs. 350/– + डाकव्यय Rs. 50/–**
पुस्तक का मूल्य (22 सितम्बर, 2007 ई. के बाद)	= **Rs. 500/– + डाकव्यय Rs. 50/–**

ग्रहयोग एवम् दाम्पत्य जीवन

मेलापकसम्बन्धी प्रत्येक समस्या का परिपूर्ण समाधान करने वाला अद्वितीय प्रकाशन

[पहिला संस्करण समाप्त है, दूसरा संस्करण मार्च, '07 ई. तक छप जाएगा–प्रतीक्षा कीजिए।]

विवाह–सम्बन्ध के निर्णय के लिए वर और कन्या के अष्टकूटों के गुणों की गणना और उनकी कुण्डलियों के मिलान पर आज तक कोई प्रमाणिक पुस्तक नहीं लिखी गई है। " ग्रहयोग एवम् दाम्पत्य जीवन " पुस्तक इस अभाव की शतप्रतिशत पूर्ति करती है। यह पुस्तक छः अध्यायों में विभाजित है– **प्रथम अध्याय** में अष्टकूट का सांगोपांग विस्तृत विवेचन, **द्वितीय अध्याय** में कुज (मङ्गली) दोष पर विस्तृत विमर्श, **तृतीय अध्याय** में विवाहमुहूर्त्त के साधन की सुबोध प्रक्रिया दी गई है। **चतुर्थ अध्याय** में भारत के 800 प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश तथा ऐसे अनेक मौलिक कोष्ठक दिए गए हैं, जिनकी मदद से सन् 1971 ई. से 2000 ई. तक (30 वर्षों में) पैदा हुए वर–कन्याओं का जन्मलग्न, जन्मनक्षत्र, जन्मनवांश और जन्मकुण्डली बिना पुराने पंचांगों की सहायता के 10–15 मिनटों में ही जानकर दैवज्ञ उनकी ग्रहस्थितियों का मिलान तथा अष्टकूटों के गुण आदि का निर्णय सरलता से कर सकता है। **पंचम और छठे अध्याय** मे फलित एवं सिद्धान्त ज्योतिषसम्बन्धी शोधपूर्ण ज्ञानवर्धक ग्यारह (11) मौलिक निबन्ध दिए गए हैं, जो ज्योतिष के चौंका देने वाले अज्ञात रहस्य उद्घाटित करते हैं।

इस पुस्तक में दिए गए अनेक महत्त्वपूर्ण विषयों में से इन कुछेक विषयों पर दृष्टिपात कीजिएः-

(1) वर-कन्या के नक्षत्रचरणों के आधार पर बनाई गई विस्तृत गुणमिलान-सारणी36 बड़े पृष्ठों पर फैली है, जिसमें सभी अष्टकूटों के गुण और दोष तथा उनके परिहार एक ही दृष्टि में तुरन्त देखे जा सकते हैं। इस प्रकार की परमोपयोगी विलक्षण महान् मिलानसारणी का निर्माण सचमुच एक अपूर्व ऐतिहासिक प्रयास है। नितान्त श्रमसाध्य इस विशाल सारणी के निर्माण के लिए कम्प्यूटर का प्रयोग किया गया है। इस मिलानसारणी के अलावा दो और भिन्न प्रकार की मिलानसारणियां भी इस पुस्तक में दी गई हैं।

(2) वर्ण, गण, षडष्टक, नाड़ी आदि दोषपूर्ण कूटों के बारे में उपलब्ध अनेक परिहारवाक्यों का सोपपात्तिक सप्रमाण विवेचन तथा उनका तार्किक विश्लेषण एवं "नाड़ीदोषस्तु विप्राणाम्" और " एक नक्षत्रजातानां नाड़ीदोषो न विद्यते" आदि बीसों निराधार परिहारवाक्यों का सप्रमाण निराकरण किया गया है।

(3) मंगलदोष के बारे में प्रचलित 'द्वितीये भौमदोषस्तु युग्म-कन्यकयोर्विना" और "गुरु-मंगल संयोगे भौमदोषो न विद्यते" - आदि अनेक परिहारवाक्यों की प्रामाणिकता पर विस्तृत सप्रपञ्च विचार-विमर्श एवं इन परिहार-वाक्यों का विश्लेषण-पूर्वक सप्रमाण खण्डन-मण्डन किया गया है।

(4) कुज (मंगल) दोष की मात्रा का सूक्ष्मतापूर्वक यथार्थ निर्णय दैवज्ञों की भारी समस्या है। इसके लिए इस पुस्तक में सात 'कुजदोष कोष्ठक' दिए गए हैं, जिनकी सहायता से जोड़-घटावमात्र जानने वाला कोई भी दैवज्ञ मौखिक गणित द्वारा ही वर-कन्या के कुजदोष की मात्राओं के आंकिकमान (Numerical Values) 20-25 मिनटें में ही सरलतापूर्वक ज्ञात कर सकता है और उनकी तुलना द्वारा वह वर-कन्या के विवाहसम्बन्ध की शक्याशक्यता का निर्णय प्रामाणिक रुप में कर सकता है। कुजदोषमात्रा का आंकिक मान ज्ञात करने की प्रक्रिया को अनेक उदाहरणों द्वारा स्पष्ट किया गया है।

(5) मिलान में उपयोगी अन्य बीसों मौलिक सारणियां दी गई हैं, जो लेखक के विस्तृत, गम्भीर अध्ययन एवं अथक परिश्रम का परिणाम हैं।

(6) मिलान पर मिलने वाले विभिन्न मत–मतान्तरों का विश्लेषण विस्तारपूर्वक किया गया है। प्रतिपाद्य विषयों के खण्डन–मण्डन के समर्थन में लगभग 90 मूल ग्रन्थों (संहिता, होरा, मुहूर्त्त आदि) से सैकड़ों प्रमाणवाक्य (श्लोक) पदे–पदे उद्धृत किए गए हैं।

इसके अलावा इस पुस्तक में अनेक ऐसे विषय आपको मिलेंगे, जो गुणमिलान और कुण्डलीमिलान पर आपकी विशेष ज्ञानवृद्धि करेंगे। " नाड़ीदोष होने पर भी सम्बन्ध किया जा सकता है", " वर–कन्या की कुण्डलियों का मिलान न होने पर भी सम्बन्ध करने का ज्योतिषशास्त्र में निर्दिष्ट शास्त्रीय विधान क्या है?" – इस प्रकार की अनेक मिलान–सम्बन्धी समस्याओं का शास्त्रप्रतिपादित समाधान विस्तारपूर्वक इस पुस्तक में सप्रमाण प्रस्तुत किया गया है। विषकन्या योग और मंगलीक दोष के उद्गम तथा विकास पर विशेष ऐतिहासिक विवेचन दिया गया है।

यह पुस्तक आपको वह सब कुछ बतलाएगी, जो मिलान के लिए अपेक्षित है। इसे पढ़कर आपको आश्चर्य होगा कि– मिलान में अनेक मूर्धन्य दैवज्ञ भी कितनी अक्षम्य त्रुटियां करते हैं और इस विषय में उनका ज्ञान कितना अधूरा है।

पृष्ठ संख्या 272 साईज 24 X 18 सें. मी. उत्कृष्ट बहुमूल्य पेपर पर मुद्रित आकर्षक बहुरंगा आवरण

पुस्तक का वास्तविक मूल्य Rs. 500/– + डाकव्यय Rs. 50/– है। इस पर 22 सितम्बर, '07 ई. तक के लिए 20 प्रतिशत की छूट दी जा रही है। इस प्रकार–

पुस्तक का मूल्य (22 सितम्बर, 2007 ई. तक) = **Rs. 400/– + डाकव्यय Rs. 50/–**
पुस्तक का मूल्य (22 सितम्बर, 2007 ई. के बाद) = **Rs. 500/– + डाकव्यय Rs. 50/–**